MANTRAKOSHA

[तीन खण्डों में]

मन्त्रों का शोधात्मक संग्रह

एवं

परिवर्द्धित वर्ण-बीज-कोष

सम्पादक

'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, एम० ए०

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग, इलाहाबाद

अनुक्रमणिका

[१ मत्स्यावतार—द्वादशाक्षर, २ कूर्म—द्वा-विंशत्यक्षर, ३ वराह—एकाक्षर, अष्टाक्षर, त्रयो-विंशत्यक्षर ३९, ऊन-विंशति धरा हृदय, चतुर्विंशाक्षर धरा ४०, ४ नृसिंह—एकाक्षर, षडक्षर, अष्टाक्षर लक्ष्मी-नृसिंह, दशाक्षर ४०, त्रयोदशाक्षर, ऊन-विंशाक्षर सुदर्शन नृसिंह, द्वा-त्रिंशदक्षर ४१, त्रयस्त्रिंशदक्षर लक्ष्मी-नृसिंह, चतुस्त्रिंशाक्षर, अष्टा-षष्ट्यक्षर ज्वाला-माला नृसिंह ४२, ५ वामन—अष्टादशाक्षर दधि-वामन, द्वा-त्रिंशत्यक्षर सर्वज्ञेश्वर वामन ४३, द्वा-विंशत्यक्षर भोग-वामन, बालक-वामन, त्रयो-विंशत्यक्षर बलि-वामन, षड्-विंशत्यक्षर माया-बालक वामन, द्वात्रिंशदक्षर, ६ परशुराम—चतुर्विंशत्यक्षर परशुराम गायत्री ४४, परशुराम नाम-मन्त्र, ७ राम—एकाक्षर, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर, चतुरक्षर, पञ्चाक्षर ४५, षडक्षर, सप्ताक्षर, अष्टाक्षर, दशाक्षर ४६, द्वादशाक्षर, त्रयोदशाक्षर, अष्टादशाक्षर, द्वा-विंशदक्षर, द्वा-त्रिंशदक्षर ४७, सप्त-चत्वारिंशदक्षर-माला-मन्त्र, राम-गायत्री, षडक्षर सीता-मन्त्र, ८ कृष्ण—एकाक्षर ४८, बाल-गोपाल, द्व्यक्षर, त्र्यक्षर, चतुरक्षर, पञ्चाक्षर बाल-गोपाल ४९, षडक्षर, सप्ताक्षर बाल-गोपाल, अष्टाक्षर ५०, नवाक्षर बाल-गोपाल, दशाक्षर कृष्ण-बाल-गोपाल, एकादशाक्षर ५१, द्वादशाक्षर, त्रयोदशाक्षर, चतुर्दशाक्षर, पञ्च-दशाक्षर, षोडशाक्षर ५२, अष्टादशाक्षर, विंशत्यक्षर (रत्नाभिषेक), द्वा-विंशत्यक्षर, द्वा-त्रिंशदक्षर ५३, द्वि-पञ्चाशदक्षर, श्रीकृष्ण-गायत्री, ९ बुद्ध—द्वा-त्रिंशद ५४, १० कल्कि—षडक्षर ५५]

[हयग्रीव—एकाक्षर, त्र्यक्षर, अष्टाक्षर, दशाक्षर, द्वा-त्रिंशदक्षर ५५, त्रयस्त्रिंशदक्षर, चतुस्त्रिंशदक्षर, षट्-त्रिंशदक्षर, अष्टा-त्रिंशदक्षर, चतुर्विंशाक्षरी गायत्री, परमात्मा—एकादशाक्षर ५६, द्वि-शताक्षर ५७, अनन्त—षडक्षर, वेदव्यास—अष्टाक्षर, चतुर्दशाक्षर, श्रीकर—अष्टाक्षर ५८, गरुड—पञ्चाक्षर, सप्ताक्षर, षण्णवत्यक्षर, गरुड गायत्री, आयुधादि मन्त्र : शङ्ख—नवाक्षर, अष्टादशाक्षर, स-शर-धनु (शार्ङ्ग)—नवाक्षर ५९, त्रयोदशाक्षर, सुदर्शन—सप्ताक्षर, षोडशाक्षर, सप्त-चत्वारिंशाक्षर, एक-सप्तत्यक्षर, चतुस्सप्तत्यक्षर माला-मन्त्र ६०, खड्ग—द्वादशाक्षर, विंशत्यक्षर, गदा—पञ्च-विंशाक्षर, त्रयस्त्रिंशाक्षर, अंकुश—त्रयोदशाक्षर, ऊन-विंशाक्षर, मुसल—ऊन-विंशाक्षर, विंशाक्षर, पाश—ऊन-विंशाक्षर, षड्-विंशाक्षर, किरीट—सप्तत्यक्षर ६१, छत्र—षडक्षर, चामर—द्वा-त्रिंशदक्षर, ध्वज—द्वि-पञ्चाशदक्षर, पताका—पञ्चाशदक्षर, परशु—पञ्चादशाक्षर, दण्ड गायत्री, अङ्ग-देवता : धरणी—एकोन-विंशत्यक्षर ६२, सीता—षडक्षर, लक्ष्मण—सप्ताक्षर, भरत—सप्ताक्षर, शत्रुघ्न—सप्ताक्षर, हनुमान (आञ्जनेय)—अष्टादशाक्षर, द्वादशाक्षर, ६३, पञ्चाक्षर, राधा—षडक्षर, सप्ताक्षर, कामदेव—एकाक्षर, कामदेव गायत्री ६४]

५ भगवती शक्ति : भगवती शक्ति के मन्त्र

दश महा-विद्या खण्ड

दश-महा-विद्यायें

१ भगवती काली : भगवती काली के मन्त्र

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भगवान गणेश

भगवान् गणेश पञ्च-देवों में अग्र-गण्य हैं। सभी आध्यात्मिक अनुष्ठानों में सर्व प्रथम उन्हीं का स्मरण और पूजन किए जाने की शास्त्रीय विधि है, जिसका पालन व्यापक रूप से किया जाता है। गणेश का वैदिक नाम 'गण-पति' है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद (२,२३,१) में मिलता है। यथा—

गणानां त्वा गण - पतिं हवामहे, कविं कवीनामुप - श्रवस्तमम्।
ज्येष्ठ-राजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत, आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

गणेश देव मण्डल के गण-पति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वैदिक शिव अर्थात् रुद्र के गणों के वे अधीश्वर हैं। पुराणों में रुद्र के मरुत् आदि असंख्य गणों का उल्लेख है, जिनके नायक या स्वामी होने से गणेश को 'विनायक' या 'गण-पति' कहते हैं। इस प्रकार सृष्टि के आदि-काल से ही गणेश का सम्बन्ध आर्य-गणों, रुद्र-गणों व शिव-परिवार से रहा है। रुद्र से गणेश को विघ्न कारी जैसे भयङ्कर गुण और शिव से सिद्धि-कारी, मङ्गल दायक गुण मिले हैं, जिससे वे 'निग्रह' व 'अनुग्रह' दोनों शक्तियों से सम्पन्न हैं।

गणेश या गण पति के आविर्भाव के सम्बन्ध में अनेक कथायें हैं। किसी कथा में उन्हें शिव पार्वती के पुत्र माना है तो किसी में केवल पार्वती के। मूलतः वे 'शक्ति'-पुत्र के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं और 'आत्मा वै पुत्र जायते' इस सिद्धान्त के अनुसार गणेश साक्षात् शक्ति-स्वरूप ही हैं। गणेश का स्वरूप विलक्षण एवं अद्वितीय है—रक्त वर्ण, स्थूल शरीर, लम्बोदर, चतुर्भुज, गजानन, केवल एक दाँत, हाथों में शङ्ख-चक्र, गदा या अंकुश और कुमुदिनी तथा वाहन मूषक!

गजानन गणेश को उत्कृष्ट रूप में परात्पर ब्रह्म का अवतार माना गया है। परात्पर ब्रह्म के इस रूप का नाम है 'महा-गणाधिपति'। इस भावना के अनुसार महा-गणाधिपति ही स्वेच्छा शक्ति से अनन्त विश्व ब्रह्माण्डों की रचना कर प्रत्येक ब्रह्माण्ड में अपने अंश से ब्रह्मादि त्रिदेवों को उत्पन्न करते हैं। इसी दृष्टि से 'पञ्च-देवों' में से 'गणेश' को परात्पर इष्ट देव के रूप में ग्रहण किया जाता है।

गणेश के 'गजानन' और 'एक-दन्त' होने के सम्बन्ध में तीन रोचक कथायें प्रचलित हैं—

(१) पार्वती को अपने शिशु गणेश पर बड़ा गर्व था। उन्होंने शनि-देव से उस पर अपनी दृष्टि डालने को कहा। शनिदेव की दृष्टि पड़ते ही गणेश का सिर जलकर भस्म हो गया, जिससे पार्वती बहुत दुखी हुईं। ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि सर्व-प्रथम जो भी सिर मिले, उसे गणेश के गले पर रख दिया जाय। पार्वती को सबसे पहले हाथी का ही सिर मिला जिसे उन्होंने गणेश पर रख दिया। इस प्रकार वे 'गजानन' हो गए।

(२) एक बार पार्वती स्नान-गृह में थीं। उन्होंने गणेश को मुख्य द्वार पर नियुक्त कर दिया, इस निर्देश के साथ कि कोई भीतर न आने पाए। शिव जी आए, तो गणेश ने उन्हें रोका, जिससे क्रुद्ध होकर उन्होने गणेश का सिर काट दिया किन्तु पार्वती को सन्तुष्ट करने के लिए उन्हें सर्व-प्रथम उपलब्ध हाथी का सिर लगाकर गणेश को पुनर्जीवित करना पड़ा।

(३) पार्वती ने स्वयं ही गणेश का सिर हाथी का ही बनाया था।

'एक-दन्त' होने के सम्बन्ध में यह कथा प्रचलित है कि एक बार परशुराम कैलास मे शिव जी से मिलने गए, तो गणेश ने उन्हे रोक दिया। दोनो में युद्ध हुआ और परशुराम के परशु (फर्से) से गणेश का एक दाँत टूट गया।

इन कथाओं से भक्तो की श्रद्धा और भक्ति-भावना की अभिवृद्धि होती है। साथ ही इनकी दार्शनिक व्याख्याओं से बुद्धिमानो के ज्ञान का विकास होता है। क्योंकि इन सबका गूढ़ प्रतीकात्मक अर्थ है। उदाहरण के लिए गणेश का सिर हाथी के समान बड़ा है, जो बुद्धिमानी और गम्भीरता का द्योतक है। गणेश के आयुध दण्ड और न्याय के प्रतीक है। इत्यादि।

तन्त्र-शास्त्र में गणेश के विविध प्रकार के मन्त्र, उनसे सम्बन्धित अनेक प्रकार के ध्यान, विस्तृत पूजन-पद्धतियाँ और कवच, हृदय, शत - नाम, सहस्रनामादि स्तोत्र निर्दिष्ट है। यहाँ एक ध्यान-श्लोक से गणेश की वन्दना कर विचारणीय विषय की ओर अग्रसर होते है—

खर्वं स्थूल - तनुं गजेन्द्र - वदनं लम्बोदरं सुन्दरम्,
प्रस्यन्दन् मद-गन्ध-लुब्ध-मधुप-व्यालोल-गण्ड-स्थलम्।
दन्ताघात-विदारितारि - रुधिरैः सिन्दूर - शोभाकरम्,
वन्दे शैल-सुता-सुतं गण-पतिं सिद्धि-प्रदं कामदम्॥

भगवान् गणेश के मन्त्र

१—एकाक्षर गणेश (गण-पति) : [१] पञ्चान्तकं शशि-युक्तं बीजं गणपतेर्विदुः—गं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १३२ मे यह मन्त्र विधि-सहित प्रकाशित है। 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में देवता का नाम 'गण-पति' बताया है और ध्यान निम्न प्रकार निर्दिष्ट किया है—

रक्तो रक्ताङ्गरागांशुक - कुसुम - युतस्तुन्दिलश्चन्द्र - मौलि-
र्नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन - कर - चरणो बीज - पूरात्त-नासः।
हस्ताग्राकृष्ट - पाशांकुश - रद - वरदो नाग - वक्त्रोऽहि-भूषो,
देवः पद्मासनो नो भवतु नत - सुरो भूतये विघ्न - राजः॥

यहीं एक पाठान्तर दिया है—हस्ताग्राकृष्ट : हस्ताग्रक्लृप्त। आवरण-पूजा में नौ शक्तियाँ पूजनीया हैं—१ तीव्रा, २ ज्वालिनी, ३ नन्दा, ४ भोगदा, ५ काम-रूपिणी, ६ उग्रा, ७ तेजोवती, ८ सत्या, ९ विघ्न-विनाशिनी। शेष विधान 'हिन्दी-तन्त्रसार'-वत्।

पुरश्चरण के बाद प्रयोग—१ प्रातः प्रतिदिन ४४४ बार शुद्ध जल से गणपति का तर्पण करे, तो अभीष्ट फल-प्राप्ति। २ चतुर्थी के दिन नारिकेल से हवन करे, तो लक्ष्मी की प्रसन्नता। ३ तिल-युक्त चावलों से होम करे, तो धन-प्राप्ति।

[२] 'शारदा-तिलक' और 'हिन्दी-तन्त्रसार' में मन्त्रोद्धार में 'शशि-युक्तं' के स्थान पर 'शशि-धरं'। 'शारदा-तिलक' के अनुसार 'शशि' विसर्ग का भी द्योतक है—'सर्गः शक्तिर्निशाकरः'। अतः दूसरा एकाक्षर गणेश-मन्त्र है—**गः**

[३] 'प्रयोग-सार' : बीजमिन्दु-मदौ-युक्तं क-तृतीयं तथैव च—**गौं** ←

[४-६] 'नारायणीय' : खान्तं सान्त-विषं स-विन्दु स-कलं विन्द्वौ-युतं केवलं—इस उक्ति के अनुसार 'ग, गं, गँ, गौं, गौ' ये पाँच प्रकार के एकाक्षर मन्त्र हैं, जिनमें से दो ऊपर उल्लिखित हैं। शेष तीन है—**गं, गँ, गौ**

'शारदा-तिलक' में इस एकाक्षर मन्त्र का बीज 'ग', शक्ति 'विन्दु' या 'विसर्ग' बताया है। 'प्रयोग-सार' मे पञ्चाङ्ग-न्यास की भी विधि दी है। यथा—

१ गणं जयाय स्वाहा हृदयाय नमः। २ एक-दंष्ट्राय हुं फट् शिरसे स्वाहा। ३ अचल-कर्णिन् नमः शिखायै वषट्। ४ गज-वक्त्राय नमः कवचाय हुं। ५ महोदराय चण्डाय हुं फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान में ऊपर के बाएँ हाथ मे अंकुश, दाएँ हाथ मे पाश और नीचे के बाएँ हाथ में अपना दाँत, दाएँ हाथ में वर-मुद्रा का चिन्तन करे। सभी गण-पति एक दाँतवाले ध्येय हैं और वह दाँत दाएँ पार्श्व में है।

'गः' मन्त्र के गणेश का ध्यान निम्न प्रकार करे—

ध्याये स्वैक्येन देवं बृहदुदार - तनुं तं चतुर्बाहुमेक-
दन्तं पाशांकुशाढ्यं गज-मुखमरुणं दन्त-भक्ष्ये दधानम्।

'गौं' मन्त्र के गणेश का ध्यान निम्न प्रकार निर्दिष्ट है—

**रक्ताक्ष-माला-परशुं च दन्तं भक्ष्यं च दोर्भिः परितो दधानम्,
हेमाभ-कान्तिं त्रि-दृशं गजास्यं लम्बोदरं चैक-रदं नमामि।**

उक्त सभी छः एकाक्षर मन्त्रों के विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, पूजा-विधान आदि 'हिन्दी तन्त्रसार' के अनुसार ही है। 'शारदा-तिलक' में आसन-मन्त्र निम्न प्रकार दिया है—
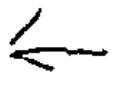
→ **ॐ गं सर्व-शक्ति-कमलासनाय नमः** । कर्णिका में पूजनीय 'गणेश' के स्थान पर 'गणेशान' और पद्म-दलो में पूजनीय 'एक-दन्त' के स्थान पर 'एक-दंष्ट्र' नाम का उल्लेख है। गणाधिपादि चार स्वरूपों का वर्ण क्रमशः पीत, गौर, रक्त और नील बताया है। पूजन-तर्पण में नामदि के पहले प्रणव-युक्त स्व-बीज लगाने की विधि निर्दिष्ट की है। यथा—'ॐ गं गणाधिपाय' इत्यादि।

२—एकाक्षर हरिद्रा-गणेश : [१] पञ्चान्तको धरा-सस्थो विन्दु-भूपित-मस्तकः, एकाक्षरो महा-मन्त्रः सर्व-काम-फल-प्रदः—ग्लं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४२। 'मन्त्र-महोदधि' मे इस मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है। यथा : शार्ङ्गी माम-स्थितः सेन्दुर्बीजमुक्त गणेशितुः, हरिद्राख्यस्य यजनं पूर्व-वत् प्रोदितं मनोः।
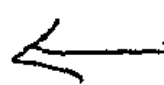
[२] मन्त्रोद्धारमहं वक्ष्ये शृणुष्व कमलानने, इन्द्र-बीजं समुद्धृत्य निज-बीजं समुद्धरेत्। चतुर्दश-स्वरेणाढ्यं विन्दु-भूपित-मस्तकं, एकाक्षरो महा-विद्या कथिता पद्म-योनिना—ग्लौं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४३।

३—द्व्यक्षर हरिद्रा-गणेश : [१] लक्ष्म्याद्या वाथ—श्रीं ग्लौं, [२] कूर्चाद्यां—हूं ग्लौं, [३] मायाद्यां वा जपेत् सुधीः— ह्रीं ग्लौं, [४] कामाद्यां— क्लीं ग्लौं, [५] वधू-वीजाद्यां—स्त्रीं ग्लौं, [६] वागाद्यां वा जपेत् सुधीः—ऐं ग्लौं, [७] ताराद्यां वा महा-विद्यां—ॐ ग्लौं, [८] निज-वीजादिकं तथा, द्व्यक्षरी च महा-विद्या—गं ग्लौं। (देखें 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४२-४३)

४—द्व्यक्षर विघ्नेश गण-नायक : इदमेव (एकाक्षरं—१) माया-वीजाद्यं—ह्रीं गं ←
इस मन्त्र का ध्यानादि राघव भट्ट ने शारदा-तिलक की पदार्थादर्श-टीका में दिया है। यथा—

अमृताम्भोधि-मध्ये तु वारिजे कुंकुम-प्रभे, ऋतु-संख्य-दलोपेते चिन्तयेद् गण-नायकम्।
पाशांकुश-धरं देवं जवा-कुसुम-सन्निभं, वाम-पार्श्व-गतां देवीमालिङ्गन्तं सु-लोचनम्।
सुवर्ण-चषकं शुभ्रं मधुना पूरितं सदा, पिबन्तीं वाम-हस्तेन योगिनीं मद-मोहिताम्।
रक्त-वर्णां महा-देवीमालिङ्गन्तीं सु-मध्यमां, बाहुनैकेन विघ्नेशं मत्तं रक्त-विलोचनम्॥

ध्यान के वाद 'गणपति-मुद्रा' दिखाये। यथा—'मुखात् प्रलम्बितं हस्तं कृत्वा संकुचितांगुलिं, मध्या तर्जनि-गताग्रांगुष्ठं चाधःस्थ-मध्यमम्। कुर्यान्मुद्रां गणेशस्य प्रोक्तेयं सर्व-सिद्धिदा।' अथवा 'तर्जनी-मध्यमा-सन्धि-निर्गतांगुष्ठ-मुष्टिका, अधोमुखी दीर्घ-रूपा मध्यमा विघ्न-मुद्रिका।' अथवा 'कुञ्चिताग्रस्य हस्तस्य मूले नासा-नियोगतः, गणेश्वरी भवेन्मुद्रा सर्व-गणपति-मन्त्र-साधारणी।'

होम के लिए निर्दिष्ट आठ द्रव्यों को प्रयोग में लाने से पूर्व उन्हें साफ कर गणेश-गायत्री से प्रोक्षित कर सुखा लेना चाहिए। गायत्री-मन्त्र है—

एक-दंष्ट्राय विद्महे वक्र-तुण्डाय धीमहि, तन्नो विघ्नः प्रचोदयात्। ←

पीठ की तीव्रा आदि शक्तियों का ध्यान निम्न प्रकार करना चाहिए—

पाशांकुशाञ्जलि-करा नव-कुंकुम-सन्निभाः, तीव्राद्याः पूजनीयाः स्युः शक्तयो मणि-भूषणाः।

पूजा-विधि एकाक्षर-मन्त्र के समान है। द्व्यक्षर-मन्त्र में षड्-दलों में 'आमोद' आदि का भी पूजन करना होता है। तर्पण-प्रयोग सभी मन्त्रों का एक जैसा है।

प्रयोग : पुरश्चरण के वाद शुक्ल प्रतिपदा से चतुर्थी तक चार दिन या सप्तमी तक सात दिन होम करने की विधि विशेष फल-दायक है। मधुर-त्रय से युक्त लाजा (धान के लावे) से हवन करने से कन्या श्रेष्ठ वर (पति) प्राप्त करती है। इस प्रकार होम स्त्रियाँ भी कर सकती हैं।

५—त्र्यक्षर हरिद्रा गणेश : [१] त्र्यक्षरी चास्त्र-संयुता (द्व्यक्षरी विद्याः)—श्रीं ग्लौं फट्, [२] हूं ग्लौं फट्, [३] ह्रीं ग्लौं फट्, [४] क्लीं ग्लौं फट्, [५] स्त्रीं ग्लौं फट्, [६] ऐं ग्लौं फट् [७] ॐ ग्लौं फट्, [८] गं ग्लौं फट्।

ये और क्रमाङ्क ६ के सभी मन्त्र विधि-सहित 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४२-४३ में द्रष्टव्य हैं।

६—चतुरक्षर हरिद्रा गणेश : चतुर्वर्णात्मिका विद्या वह्नि-जायावधि प्रिये (द्व्यक्षरी विद्याः)—[१] श्रीं ग्लौं स्वाहा, [२] हूं ग्लौं स्वाहा, [३] ह्रीं ग्लौं स्वाहा, [४] क्लीं ग्लौं स्वाहा, [५] स्त्रीं ग्लौं [illegible], [६] ऐं ग्लौं स्वाहा, [७] ॐ ग्लौं स्वाहा, [८] गं ग्लौं स्वाहा

७—चतुरक्षर हेरम्ब गणपति : पञ्चान्तको बिन्दु-युक्तो वाम - कर्ण - विभूषित , तारादिर्हृ-दयान्तोऽय हेरम्ब-मनुरीरित । चतुर्वर्णात्मको नृणा चतुर्वर्ग-फल-प्रद ---ॐ गूं नम·

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४० मे यह मन्त्र स-विधान दिया है। 'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' के अनुसार ध्यान मे दो पाठान्तर हैं-- १ नेत्रान्वितं--नेत्राञ्चितं, २ रदान् दक्षं--रदानञ्जं। आसन-मन्त्र का भी पाठान्तर है---'ॐ हुं हुं महा-सिंहासनाय हेरम्बाय नमः'।

हेरम्ब 'नागास्य' अर्थात् पञ्च-मुख और दश-भुज है।

प्रयोग : पुरश्चरण के बाद (१) षष्ठी के दिन ४ सहस्र या ४ सौ मोदक-होम कर, अष्टमी के दिन कुमुदो से और चतुर्दशी के दिन अपूप (पुओ) से होम करें, तो इष्ट-सिद्धि मिलती है। (२) पर्व-दिनो मे उक्त द्रव्यो से होम करे, तो सभी कामनाएँ पूर्ण होती है।

'शारदा-तिलक' मे इस मन्त्र के देवता का नाम 'हेरम्ब गणपति' है, ध्यानादि अन्य बातें 'हिन्दी तन्त्रसार' के समान है।

८--चतुरक्षर शक्ति-विनायक : माया त्रि-मूर्ति-चन्द्रस्थो पञ्चान्तक-हुताशनो, तारादि-शक्ति-बीजान्तो मन्त्रोऽयं चतुरक्षर ---ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं

'मन्त्र-महोदधि' मे। ऋषि भार्गव, छन्द विराट्, देवता शक्ति-गणाधिप, बीज 'ग्रीं', शक्ति 'ह्रीं' और विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। अङ्ग-न्यास---'ग्रा ग्री' इत्यादि। ध्यान--

विषाणांकुशावक्ष-सूत्रं च पाशं दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण।

स्व-पत्न्या युतं हेम-भूषा-भराढ्यं गणेशं समुद्यद्-दिनेशाममीडे॥

'मन्त्र-महोदधि' ध्यान का अन्तिम शब्द 'दिनेशमीडे 'छपा है, जो अशुद्ध है। शुद्ध पाठ 'मन्त्र-महार्णव' के अनुसार यहाँ दिया गया है।

पुरश्चरण मे ४ लाख जप कर मधु-युक्त अपूप (पुए) से दशाश (४०,०००) हवन, ४ हजार तर्पण, ४०० मार्जन एव ४० ब्राह्मणो को भोजन।

९--षडक्षर वक्र-तुण्ड : जल चक्री वह्नि-युत वर्णेन्द्राढ्या च कामिका, दारको दीर्घ-सयुक्तो वायु-कवच-पश्चिम । षडक्षरो मन्त्र-राजो भजतामिष्ट-सिद्धिद ---वक्र-तुण्डाय हुं

मन्त्र-महोदधि मे। ऋषि भार्गव छन्द अनुष्टुप् देवता विघ्नेश, बीज 'व', शक्ति 'य', विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। अङ्ग-न्यास मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को अनुस्वार-युक्त कर उसके आदि मे 'ॐ' और अन्त मे 'नम.' लगाकर करे। यथा—'ॐ वं नम , ॐ क्रं नम ' इत्यादि। इस प्रकार छहो अक्षरो से १ भ्रू-मध्य, २ कण्ठ, ३ हृदय, ४ नाभि, ५ लिङ्ग, ६ पाद-द्वय मे न्यास कर पूरे मन्त्र से सर्वाङ्ग मे न्यास करे। ध्यान—

उद्यद्-दिनेश्वर-रुचिं निज-हस्त-पद्मैः, पाशांकुशाभय-वरान् दधतं गजास्यम्।

रक्ताम्बरं सकल-दुःख-हरं गणेशं, ध्याये प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्॥

पुरश्चरण मे ६ लाख जप अष्ट-द्रव्यो से दशाश होम। अष्ट-द्रव्य हैं—१ गन्ना, २ सत्तू, ३ केला, ४ चिपिट, ५ तिल, ६ लड्डू, ७ नारियल, ८ धान की खील (लावा)।

प्रयोग : पुरश्चरण के बाद १ ब्रह्मचर्य के साथ प्रतिदिन १२ हजार जप करे, तो छः मास के भीतर दारिद्रय-नाश। २ कृष्णा चतुर्थी से शुक्ला चतुर्थी तक प्रति-दिन १० हजार जप कर घी मिले अन्न की १०८ आहुतियाँ दे, तो छः मास के भीतर धन-प्राप्ति। ३ प्रतिदिन नारियल या जीरा, सेंधा लवण, काली मिर्च युक्त अष्ट-द्रव्यो से एक हजार आहुतियाँ दे, तो १५ दिन के भीतर ऐश्वर्य की प्राप्ति। ४ प्रतिदिन मूल-मन्त्र से ४४४ तर्पण करे, तो मनोकामना की पूर्ति।

१०—षडक्षर गणेश : पद्म-नाभ-युतो भानुर्मेघा सद्य-समन्विता, लकावनन्तमारूढो वायुः पावक-गेहिनी। षडक्षरोऽयमादिष्टो भजतामिष्टदो मनुः—**मेघोल्काय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि' में। विधान 'षडक्षर वक्र-तुण्ड' के समान।

इस मन्त्र का उल्लेख 'शारदा-तिलक' के एक यन्त्र-प्रयोग मे किया गया है। यथा—भोज-पत्र पर दूर्वा द्वारा गोरोचन से षट्-कोण अङ्कित करे। उसके मध्य मे 'गं' बीज लिखे और छः कोणों में उक्त मन्त्र के छः अक्षरों मे से एक-एक अक्षर को लिखकर षट्कोण के बाहर पाश और अंकुश अङ्कित कर भूपुर से समस्त मण्डल को घेर दे। इस भूर्ज-यन्त्र की पूजा गन्ध-पुष्पादि से कर जो इसे शिर पर धारण करता है, वह विपुल लक्ष्मी प्राप्त करता है।

उल्लेखनीय है कि 'मन्त्र-महोदधि' और 'मन्त्र-महार्णव' में 'भानुर्मेधा' छपा है, जो अशुद्ध है। 'शारदा-तिलक' मे दिए मन्त्रोद्धार से यह बात स्पष्ट है—'एकारान्वित-काल-वर्णमथ युक् दन्तेन गान्त ततः, शक्रार्णं शिरसा वहन्नपि विधि-वद् दीर्घश्च पश्चाद् रसः। माया वायु-सखस्य मन्त्र-वरमालिख्याऽथ कोणेषु...।' इस उद्धार में 'गान्तं' पद 'घ' का ही बोधक है। अतः 'भानुर्मेघा' शुद्ध है।

हस्ति-दन्त की पूजा करे। दलो के वाहर पूर्वादि दिशाओ मे इन्द्रादि दिक्-पालो और उनके पास वज्रादि आयुधो का पूजन कर धूप-दीप प्रदान कर मूल-मन्त्र का जप करे। दशाश-क्रम के अनुसार १ लाख जप, १० हजार होम, १ हजार तर्पण, १ सौ मार्जन और १० ब्राह्मणो को भोजन कराने से पुरश्चरण होता है। होम तिलो मे करे और भोजन मे मोदक, खीर की मुख्यता रहे।

प्रयोग—पुरश्चरण के वाद (१) लाल चन्दन या श्वेत अर्क (मदार) की लकडी से अपने अँगूठे के आकार की गणेश-प्रतिमा ध्यान के अनुसार वनवा कर उसमे विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करे। कृष्णा चतुर्दशी मे शुक्ला चतुर्दशी तक प्रतिदिन गुड एव खीर निवेदित कर एकान्त मे जूठे मुख और निर्वस्त्र अपने को गणेश-स्वरूप ध्यान करता हुआ घृत-युक्त तिल से एक हजार आहुतियाँ दे। इस प्रयोग से १५ दिन के भीतर राजैश्वर्य प्राप्त होता है।

(२) प्रथम प्रयोग की ही विधि से कुम्हार के चाक की मिट्टी या गुड की वनी गणेश-प्रतिमा के पूजन से अभीष्ट फल मिलता है। नमक या नीम की लकडी की प्रतिमा का पूजन करे, तो शत्रु-वाधा दूर होती है।

(३) घी, शहद, शक्कर से युक्त लाजा (धान के लावे) द्वारा होम से वशीकरण।

(४) जूठे मुख शय्या मे लेटे हुये जप करने से भी वशीकरण।

लाल वस्त्र पहन या लाल चन्दन लगाकर पान खाते हुये या नैवेद्य के मोदकादि को खाते हुये जप करे। मोदक, फल, मास, पान आदि की नैवेद्य-वलि निम्न मन्त्र से प्रदान करे—सेन्दुः स्मृतिस्तथा-काश मन्विन्द्वाढ्यो च सृष्टि-न्तौ, पञ्चान्तक-शिवो तद्-वदुच्छिष्टग-भगान्वित । उमा-कान्त. शामभान्ते हाय-क्षाया स-विन्दु-य', वलिरित्येष कथितोन-विंशद्-वर्णो वलेर्मनु —ग हं क्लौं ग्लौं उच्छिष्ट-गणेशाय महा-यक्षायायं वलि

१२—नवाक्षर गणपति · ॐ गं गणपतये नम·

'मन्त्र महार्णव' मे 'वीरभद्रोड्डीश तन्त्र' से उद्धृत। कुम्हार के चाक की मिट्टी से गणेश-प्रतिमा वनाकर पञ्चोपचार से पूजाकर प्रतिदिन सहस्र जप करे, तो सात दिन मे मन्त्र सिद्ध होता है। फिर प्रतिदिन जप करे, तो बुद्धि का विकास होता है। एक मास जप करे, तो स्त्री लाभ। छ मास मे धन की प्राप्ति। जप अपराह्न या सन्ध्या-काल मे करना चाहिये।

१३—दशाक्षर उच्छिष्ट-गणेश : (१) ताराद्यश्च (नवार्ण)—ॐ हस्ति-पिशाचि लिखे स्वाहा। (२) गणेशाद्यो नवार्णो दश-वर्णक —ग हस्ति-पिशाचि लिखे स्वाहा।

'मन्त्र-कोष' मे केवल पहला दशाक्षर-मन्त्र उल्लिखित है, किन्तु मन्त्रोद्धार भिन्न शब्दो मे है—हस्ति-पद समुच्चार्य पिशाचीति त्वत पर, देव-राज स नेत्र च कान्तमीश-स्वरादित। वह्नि-जायावधि-र्मन्त्रस्ताराद्य सर्व-कामद ।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३६३ पर उक्त दोनो मन्त्र दिये हैं किन्तु उद्धार नही है। 'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार-सहित ये मन्त्र हैं। इन मन्त्रो की पूजा-विधि नवाक्षर-मन्त्र क्रमाङ्क ११ के समान है।

१४—दशाक्षर क्षिप्र-गणपति (विघ्न-राज) · मन्वन्तरो नेत्र-युक्त पार्श्वो वह्निवामनोत्थित, प्रसादनाय च हृन्मन्त्र स-बीजो दशाक्षर —ग क्षिप्र-प्रसादनाय नमः

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ १४१ पर यह मन्त्र सविधि द्रष्टव्य है। 'शारदा-तिलक' में इस मन्त्र का नाम 'क्षिप्र-प्रसाद' है; देवता का नाम 'क्षिप्र-प्रसादन-विघ्न' है। वीज 'गं' और शक्ति 'आय' वताई है। ध्यान में एक पाठ-भेद है—स्व-शुण्डाः स्व तुण्डा।

प्रयोग—पुरश्चरण के वाद (१) प्रतिदिन घृत और अन्न से होम करे, तो एक वर्ष के भीतर अन्न की वृद्धि होती है। (२) पायस से होम करे, तो सभी ऐश्वर्य मिलता है। (३) घी से होम करे, तो सभी वशीभूत होते है।

प्रयोग करते समय निम्न प्रकार ध्यान करने से विशेष लाभ होता है—

पाशांकुशौ कल्प-लतां स्व-दन्तं करैर्वहन्तं कनकाद्रि-कान्तं,
सोपान-पंक्त्या दिन-नाथ-बिम्बादायान्तमम्भोज-गतं चिन्तये।

१५—एकादशाक्षर शक्ति-गणपति : शक्ति-रुद्धं निजं वीजं वशमानय ठ-द्वयं, ताराद्यो मनुराख्यातो रुद्र-संख्याक्षरान्वितः—**ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १३६ पर यह मन्त्र 'महा-गणेश' के मन्त्र-रूप में दिया है। 'शारदा-तिलक' के ध्यान के अनुसार तीन पाठान्तर है—१ मिक्षु-दण्ड—मिन्दु-दण्ड, २ जवा-रक्तं—जपा-रक्तं, ३ विभुं—भजे।

पुरश्चरण में होम इक्षु-दण्ड (ईख के टुकड़ो) या पिष्टक से करे।

प्रयोग—पुरश्चरण के वाद (१) मधुर-त्रय से युक्त उक्त द्रव्यो से होम करे, तो वशीकरण। (२) चतुर्थी के दिन नारिकेल से होम करे, तो ऐश्वर्य की प्राप्ति। (३) मधु-युक्त लवण द्वारा होम से वशीकरण।

१६—द्वादशाक्षर महा-गणेश—शक्ति-रुद्धं निजं वीजं महा-गणपति वदेत्, ङेऽन्तमग्नि-वधूः प्रोक्तो मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः—**ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १३७ पर। 'शारदा-तिलक' मे इसे 'गणपति-मन्त्र' लिखा है।

प्रयोग—पुरश्चरण के वाद (१) इक्षु-खण्ड के होम से राज्य-श्री की प्राप्ति। (२) नारिकैल से होम करने के बाद पके केलों से होम करे, तो वशीकरण। (३) घी के होम द्वारा धन-प्राप्ति।

१७—द्वादशाक्षर उच्छिष्ट गणेश : ध्रुवो माया सेन्दु-शार्ङि-वीजाढ्यो नव-वर्णकः, द्वादशार्णो मनुः प्रोक्तः सर्वमस्य नवार्ण-वत्— **ॐ ह्रीं गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा**

यह मन्त्र 'मन्त्र-महोदधि' में दिया है। पूजा-विधि क्रमाङ्क ११ के नवाक्षर-मन्त्र-वत् है किन्तु 'मन्त्र-महार्णव' के अनुसार इस मन्त्र के ऋषि 'मनु', छन्द विराट्, देवता उच्छिष्ट गणपति, बीज 'गं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ह्रीं', विनियोग 'अखिलाप्ति' है। शेप नवाक्षर-मन्त्र के समान।

१८—द्वादशाक्षर गणपति : **ॐ गीं गूं गणपतये नमः स्वाहा**

'मन्त्र-महार्णव' में। भू-शय्या में ब्रह्मचर्य से रहते हुये एक लक्ष जप कर पञ्च-खाद्य से दशांश होम करे, तो विघ्नों का नाश होकर ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है।

१९—पञ्च-दशाक्षर ऋण-हर्तृ-गणेश—**ॐ गणेश ! ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्**

'मन्त्र-महार्णव' में 'कृष्ण-यामल तन्त्र' से उद्धृत। इस मन्त्र का जप इक्कीस वार 'श्रीऋ-ऋण-हरण-कर्तृ-गणपति-स्तोत्र-मन्त्र' के पाठ के वाद करना होता है। 'स्तोत्र-मन्त्र' के ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्री ऋण-हर्तृ-गणपति, वीज 'ग्लौ', शक्ति 'ग', कीलक 'गों' और विनियोग 'सकलर्ण-नाशन' है। मन्त्र के ४, ४, ३, १, २, डेढ (फट्) अक्षरों से क्रमशः अङ्ग-न्यास। इस मन्त्र को सार्ध-पञ्च-दशाक्षर लिखा है ('फट्' के 'ट्' को लेकर)। न्यास के वाद ध्यान कर स्तोत्र-पाठ करे, यथा—

ॐ सिन्दूर-वर्णं द्वि-भुजं गणेशं लम्बोदरं पद्म-दले निविष्टम्।
ब्रह्मादि-देवैः परि-सेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्॥

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फल-सिद्धये। सदैव पार्वती-पुत्रः ऋण-नाशं करोतु मे॥ १॥
त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः। ,, ,, ,, ॥ २॥
हिरण्य-कश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः। ,, ,, ,, ॥ ३॥
महिषस्य वधे देव्या गण-नाथः प्रपूजितः। ,, ,, ,, ॥ ४॥
तारकस्य वधात् पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः। ,, ,, ,, ॥ ५॥
भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छवि-सिद्धये। ,, ,, ,, ॥ ६॥
शशिना कान्ति-वृद्धयर्थं पूजितो गण-नायकः। ,, ,, ,, ॥ ७॥
पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः। ,, ,, ,, ॥ ८॥

इदं त्वृण-हर-स्तोत्रं तीव्र-दारिद्र्य-नाशनं, एक-वारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः।
दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुवेर-समतां व्रजेत्॥

अन्त में उक्त पञ्च-दशाक्षर मन्त्र का २१ वार जप करे। एक सहस्र आवृत्ति होने से छः मास में साधक ज्ञान में वृहस्पति के समान और धन में कुवेर के समान होता है। अयुत जप से इसका पुरश्चरण होता है। एक लाख आवृत्ति होने से वाञ्छित फल मिलता है। इसके स्मरण मात्र से भूत-प्रेत-पिशाच का नाश होता है।

२० एकोन-विंशत्यक्षर उच्छिष्ट-गणेश—ध्रुवो हृदुच्छिष्ट-गणेशाय ते तु नवाक्षरः, एकोन-विंशत्यर्णाढ्यो मनुर्मुन्यादि पूर्व-वत्—ॐ नमः उच्छिष्ट-गणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। इस मन्त्र के ३, ७, २, ३, २ एवं २ अक्षरों से क्रमशः षडङ्ग-न्यास करे। शेष नवाक्षर-मन्त्र के समान।

२१ षड्-विंशत्यक्षर विरि-गणपति : माया विरि-पद-द्वन्द्वं ततो गण-पतिं वदेत्, खड्गीश-पावकौ पश्चाद् वरदान्ते वदेत् पुनः। सर्व-लोकं मे पदान्ते वशमानय ठ-द्वयं, षड्-विंशत्यक्षरो मन्त्रो भजतां सुर-पादपः—ॐ ह्रीं विरि विरि गणपति वर वरद सर्व-लोकं मे वशमानय स्वाहा

'शारदा-तिलक' के अनुसार। इस मन्त्र के ऋषि गणक, छन्द गायत्री और देवता विरि गण-पति हैं। ध्यान—

सिन्दूराभमिभाननं त्रि-नयनं हस्तेषु पाशांकुशौ, विभ्राणं मधु-मत्-कपालमनिशं सार्धेन्दु-मौलिं भजे।
पुष्ट्याश्लिष्ट-तनुं ध्वजाग्र-करया पद्मोल्लसद्धस्तया, तद्-योन्याहित-पाणि-मात्त-वसु-मत्-पात्रोल्लसत्-पुष्करं॥

पुरश्चरण—४ लाख जप, गणेश-विधानोक्त अष्ट-द्रव्यों से दशांश होम।

प्रयोग—पुरश्चरण के वाद १ प्रफुल्ल कमलों के होम से वशीकरण। २ तिल-चावल के होम से धन-प्राप्ति। ३ मधुर-त्रय-युक्त लवण के होम से वशीकरण।

२२—**अष्टा-विंशत्यक्षर महा-गणपति : श्री-शक्ति-स्मर-भू-विघ्न-बीजानि प्रथम वदेत्, ङेऽन्तं गणपतिं** पश्चात् वरान्ते वरद-पद। उक्त्वा सर्व-जन मे ऽन्ते वश-मानय ठ-द्वय। अष्टा-विंशत्यक्षरोऽयं ताराद्यो मनुरीरितः (मन्त्र-कोष), (२) प्रणव-श्री-शक्ति-स्मर-भू-विघ्न-बीजानि ङेऽन्त गणपतिं वदेत्, वरान्ते वरद पश्चात् सर्व-जन मे वशमानय ठ-द्वय। अष्टाविंशत्यक्षरोऽयं महा-गणपतेर्मनुः (शारदातिलक)—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गण-पतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**

'शाक्त-प्रमोद' में प्रथम उद्धार ही है किन्तु 'ठ-द्वयं' का अर्थ 'स्वाहा' न देकर 'ठ ठ' दिया है।

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १३३ पर यह मन्त्र 'महा-गणेश' के नाम से दिया है। 'शारदा-तिलक' से ऊपर उद्धृत मन्त्रोद्धार (२) द्वारा 'गणपति' नाम का ही प्रतिपादन होता है, जिसका उल्लेख मन्त्र मे भी है। इसके ध्यान की पूर्व-पीठिका मे पर्याप्त पाठान्तर है। यथा—

पूर्वमिक्षु-रस - सिन्धु - मध्यगं तं गजाननं, नव-रत्न-मयं द्वीपं कल्प-वृक्ष-समाकुलम्।
तन्मध्ये पारिजातं च सर्वर्तु-परि-सेवितं, तस्याधस्तान्महा-पीठ तन्मध्ये मातृकाम्बुजम्।
तत्-कर्णिकायां सु-स्थितं षट्-कोणावृतं त्रिकोणं, तन्मध्ये देवं महा-गणपतिं सततं स्मरेत्॥

शेष ध्यान 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १३५ वत् ही है, केवल द्वितीय पंक्ति मे एक पाठ-भेद है। यथा : **सङ्गतं—सन्ततं।**

पूजन-विधान वही है। विशेष यह है कि 'शारदा-तिलक' मे **'श्री—श्रीपति'** आदि युगलो के ध्यान दिए है। यथा—

पद्म-युग्म-धरा पद्मा, शङ्ख-चक्र-धरो हरिः। पाशांकुश-धरा गौरी, टङ्क-शूल-धरो हरः।
रतिरुत्पल-हस्ताढ्या, कोदण्डास्त्र-धरः स्मरः। शुक-व्रीह्यग्र-हस्ता भूर्गदा-चक्र-धरः पतिः॥

इसी प्रकार **'सिद्धि-आमोद'** आदि के ध्यान निम्न प्रकार निर्दिष्ट है—

पाशाकुशाभीष्ट - धारिणोऽरुण - विग्रहाः, गण्ड-भित्ति - गलद्-दान - पूर-धौत-मुखाम्बुजाः।
विघ्नास्तत्-प्रमदाः सर्वा मदाघूर्णित-लोचनाः, एक-हस्त-धृताम्भोजा इतरालिङ्गित-प्रियाः॥

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद १ पद्म, उत्पल, कुमुद, पीपल-समिधा, उदुम्बर (गूलर) समिधा, प्लक्ष या वट-समिधा—इनमे से किसी द्वारा होम से वशीकरणी। २ मधु के होम से स्वर्ण-लाभ। ३ गो-दुग्ध के होम से गो धन की प्राप्ति। ४ घृत के होम से महती श्री का लाभ। ५ दधि के होम से सर्व-समृद्धि की प्राप्ति। ६ अन्न के होम से अन्न की वृद्धि। ७ कुसुम्भ के पुष्पो के होम से वस्त्र का लाभ।

तर्पण की विशेष विधि—श्री, शक्ति, रति, भू, लक्ष्मी को स्व-बीज से युक्त कर उनके प्रियतम-सहित चार-चार वार मूल-मन्त्र से तर्पण कराकर महा-गणपति का तर्पण करे। फिर शक्ति-सहित आमोदादि को स्व-बीज से युक्त कर तर्पण कराकर सशक्ति शङ्ख-निधि और पद्म-निधि को अलग-अलग ४-४ वार, नामादि-बीज-सहित तर्पण कराए। अन्त मे पुन महा-गणपति को स्व-बीज या मूल-मन्त्र से चार वार तर्पण कराये। इस तर्पण मे सभी कामनाओ की पूर्ति होती है।

२३—**अष्टा-विंशत्यक्षर लक्ष्मी-विनायक :** तारो रमा चन्द्र - युक्त खान्त सौम्या समीरणः, ङेऽन्तो गण-पतिस्तोय र-व-रान्ते द-सर्व च। जन मे वश-मा दीर्घो वायु पावन-कामिनी, अष्टा-विंशति-वर्णोऽयं मनुर्धन-समृद्धिद —**ॐ श्रीं गं सौम्याय गण-पतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। इस मन्त्र के ऋषि अन्तर्यामी, छन्द गायत्री, देवता लक्ष्मी-विनायक, बीज 'श्रीं', शक्ति 'स्वाहा' और विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धि' है। 'श्रां गां, श्रीं गीं' इत्यादि से क्रमशः अङ्ग-न्यास करे। 'मन्त्र-महार्णव' के अनुसार शुद्ध ध्यान निम्न प्रकार है—

दन्ताभये चक्र - वरौ दधानं कराग्रगं स्वर्ण - घटं त्रि - नेत्रम्,
धृताब्जयालिङ्गितमब्धि-पुत्र्या लक्ष्मी-गणेशं कनकाभमीडे।

'मन्त्र-महोदधि' मे 'चक्र-दरौ' छपा है, जो अशुद्ध है।

आवरण-पूजा मे अङ्ग-पूजा के बाद १ बलाका, २ विमला, ३ कमला, ४ वन-मालिका, ५ विभीषिका, ६ मालिनी, ७ शाङ्करी और ८ वसु-मालिका—इन अष्ट-शक्तियो की पूजा कर दाएँ-बाएँ क्रमश. शङ्ख-निधि और पद्म-निधि की पूजा करे। फिर बाहर लोक-पालो व उनके अस्त्रो की पूजा करे।

पुरश्चरण मे ४ लाख जप कर दशाश बिल्व-काष्ठ से होम करे।

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद १ हृदय-पर्यन्त जल मे खडे होकर सूर्य-मण्डल मे इष्ट-देव का ध्यान करते हुए ३ लाख जप करने से वैभव की प्राप्ति। २ बिल्व-वृक्ष के नीचे बैठकर ३ लाख जप करे, तो धन-प्राप्ति। ३ पायस (खीर) की आहुतियाँ देने से लक्ष्मी की कृपा होती है।

२४ अष्टा-विंशत्यक्षर वीरवर-गणपति : ' ह्रीं क्लीं वीर-वर-गणपतये वः वः इदं विश्वं मम वशमानय ॐ ह्रीं फट्

'मन्त्र-महार्णव' मे। रक्त-वस्त्र पहन, रक्त-चन्दन का त्रिपुण्ड्र लगा, गणपति का ध्यान कर १२ सहस्र जप करे। फिर प्रतिदिन पञ्चामृत से स्नान कर १०८ बार जप करे और तब तक होम किया करे, जब तक अष्ट-सिद्धियाँ प्राप्त न हो।

२५ त्रिंशदक्षर सर्व-विघ्न-हर गणपति : गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः

'मन्त्र-महार्णव' मे 'वीरभद्रोड्डीश तन्त्र' से उद्धृत। पुष्य नक्षत्र मे अर्क (मदार) की लम्बोदर चतुर्भुज मूर्ति बनाकर पूजन कर अपने घर मे स्थापित करे। प्रतिदिन क्षीर-मध्य मे स्थापित कर श्वेत पदार्थों से पूजा कर १०८ बार जप किया करे। एक मास के भीतर अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

२६ एक-त्रिंशदक्षर वक्र-तुण्ड : रायस्पोष - भृगुर्बिन्दुयो दयिता - मेष-सात्वती, सदृशौ दो-रत्न-धातु-मान् रक्षो गगन रति.। स-सद्या बल-शार्ङ्गी ख नो षडक्षर-संयुत, एक-त्रिंशद्-वर्ण-युक्तो मन्त्रोऽभीष्ट-प्रदायक —रायस्पोषस्य दयिता निधिदो रत्न-धातु-मान् रक्षोहणो बल-गहनो वक्र-तुण्डाय हुम्

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। ऋषि, ध्यान, पुरश्चरण आदि 'षडक्षर वक्र-तुण्ड' मन्त्र के समान। अङ्ग-न्यास मन्त्र के ५, ३, ८, ४, ५, ६ अक्षरो से क्रमश उनके आदि मे ॐ जोडकर करे। यथा—'ॐ रायस्पोषस्य अंगुष्ठाभ्यां नम.' इत्यादि। उल्लेखनीय है कि 'मन्त्र-महोदधि' मे 'दयिता' के स्थान पर ददिता' छपा है, जो अशुद्ध है।

२७ एक-त्रिंशदक्षर उच्छिष्ट-गणेश · ॐ नमो हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा

'मन्त्र-महार्णव' मे। यह मन्त्र पृष्ठ १३ के क्रमाक ३१ पर दिये ३७ अक्षर मन्त्र का ही भेद है।

प्रयोग—१ कटु निम्ब-मूल की गणेश-प्रतिमा बनाकर अष्टमी से अमावास्या तक ५०० जप प्रतिदिन करे। स्वय जूठे मुख हो गणेश के आगे थाली मे रक्त चन्दन, अक्षत, पुष्प रखकर उनसे पूजा कर

जूठे ही मुख से जप करना चाहिए। सात दिन इस प्रकार पूजन-पूर्वक जप कर आठवें दिन जूठे मुख होकर पञ्च-खाद्य से ५०० आहुतियो द्वारा होम करे। इससे अभीष्ट-प्राप्ति होकर गौरव की वृद्धि होती है। २ अभीष्ट व्यक्ति के चित्र पर गणेश की स्थापना कर प्रतिदिन १०८ जप करे, तो तीन दिन मे उसका आकर्षण हो। ३ उक्त गणेश-प्रतिमा को अपने द्वार के सामने वृक्ष की शाखा मे रखकर पूजन करे और १०८ बार जप करे तो घर मे अक्षय अन्न-भाण्डार होता है। ४ अन्न के ऊपर स्थापित कर १०८ बार जप करने से पर्याप्त अन्न की प्राप्ति होती है।

२८ द्वा-त्रिंशदक्षर हरिद्रा गणपति : तारो वर्म गणेशो भूर्हरिद्रा-गण-लोहित. आषाढी ये-वर-वर-सत्य सर्वज-तर्जनी। हृदय स्तम्भय-द्वन्द्व वरलभा स्वर्ण-रेतस —ॐ हुं गं ग्लौं **हरिद्रा-गण-पतये वर-वरद सर्व-जन-हृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। ऋषि मदन, छन्द अनुष्टुप्, देवता हरिद्रा-गण नायक और विनि-योग अभीष्ट - सिद्धि। मन्त्र के ४, ८, ५, ७, ६ एव २ अक्षरो से क्रमश अङ्ग - न्यास। ध्यान निम्न प्रकार करे—

पाशांकुशौ मोदकमेक - दन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम्,
हारिद्र-खण्ड - प्रतिमं त्रि - नेत्रं पीतांशुकं रात्रि-गणेशमीडे।

पूजन-विधान 'एकाक्षर गणेश' मन्त्र के समान। पुरश्चरण मे ४ लाख जप, हल्दी-मिश्रित चावलो से दशाश हवन।

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद १ शुक्ला चतुर्थी के दिन कन्या द्वारा पीसी हल्दी को शरीर मे लगाकर तीर्थादि जल मे स्नान कर गणेश-पूजन करे। फिर तर्पण कर उनके समक्ष जप करे। घी एव पुए से १०० आहुतियाँ देकर ब्रह्मचारियो (वटुको), कन्याओ तथा गुरु को भोजनादि से सन्तुष्ट करे, तो सभी कामनायें पूर्ण होती हैं। २ लाजा-होम से पत्नी या वर (पति) की प्राप्ति। ३ वन्ध्या (सन्तान-हीन) स्त्री ऋतु-स्नान कर गणेश पूजन-पूर्वक ४ तोले गो-मूत्र से दूधिया वच और हल्दी पीस कर उसे १०० बार अभिमन्त्रित करे। फिर कन्या एव वटुको को लड्डू खिलाकर उक्त औषधि को पी जाय, तो उसे पुत्र-लाभ होता है।

२९ द्वा-त्रिंशदक्षर उच्छिष्ट-गणेश : तारो हस्ति-मुखायाथ ङेऽन्तो लम्बोदरस्तथा, उच्छि-ष्टान्ते महात्मा-ङे पाशाकुश - शिवात्म-भू। माया वर्म च घे-घे-उच्छिष्टाय दहनाङ्गना, द्वा-त्रिंशदक्षरो मन्त्रो यजन पूर्व-वन्मतम्—**ॐ हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रो ह्रीं क्लीं ह्रीं हुं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। ऋषि, ध्यान और पुरश्चरण आदि ३७ अक्षर मन्त्रवत्। मन्त्र के ६, ५, ७, ६, ६ एवं २ अक्षरो से क्रमश अङ्ग-न्यास।

३० त्रयस्त्रिंशदक्षर त्रैलोक्य-मोहन गणेश : वक्र-वर्णेन्दु-युग् णान्तो डेक-दष्ट्राय मन्मथ., माया रमा गज-मुखो गणपान्ते मगी हरि। वर वालाग्नि-मत्या स-रेफाल्ह्ल जल स्थिरा, सेन्दुर्मेपो मे.वशान्ते मानयोपबुध-प्रिया—**वक्र-तुण्डैक दष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गण-पते वर-वरद सर्व-जन मे वशमानय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। ऋषि गणक, छन्द गायत्री, देवता त्रैलोक्य-मोहन-कर गणेश और विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। मन्त्र के १२, ४, ५, ४, ६ एवं २ अक्षरों से क्रमशः अङ्ग-न्यास। ध्यान निम्न प्रकार करे—

गदा-बीजपूरे धनुः शूल-चक्रे सरोजोत्पले पाश - धान्याग्र - दन्तान्,
करैः सन्दधानं स्व-शुण्डाग्र-राजन्-मणी-कुम्भमङ्काधिरूढं स्व-पत्न्या।
सरोजन्मनाभूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्त-तन्व्या समालिङ्गिताङ्गम्,
करीन्द्राननं चन्द्र-चूडं त्रि-नेत्रं जगन्मोहनं रक्त-कान्तिं भजेत् तम्॥

आवरण-पूजा में षडङ्ग-पूजा के बाद १ वामा, २ ज्येष्ठा, ३ रौद्री, ४ कलकाली, ५ बल-विकरिणी, ६ बल - प्रमथिनी, ७ सर्व - भूत - दमिनी, ८ मनोन्मनी—इन अष्ट-शक्तियों की पूजा कर दिशाओं में १ प्रमोद, २ सुमुख, ३ दुर्मुख और ४ विघ्न-नाशक की पूजा करे। तब क्रमशः अष्ट मातृकाओं, लोकपालों और वज्रादि अस्त्रों की पूजा करे।

'मन्त्र-महार्णव' में अष्ट-शक्तियों के नाम ये दिये हैं—१ वामा, २ ज्येष्ठा, ३ रौद्री, ४ काली, ५ कल-विकरिणी, ६ बल-प्रमथिनी, ७ सर्व-भूत-दमिनी ८ मनोन्मनी। साथ ही देवता के सम्मुख इन सब के पूजन का निर्देश किया है। 'विघ्न-नाशक' के स्थान पर उसमें 'विघ्न-नाश' नाम मिलता है।

पुरश्चरण में ४ लाख जप और तद्-दशांश होम अष्ट-द्रव्यों से।

३१ सप्त-त्रिंशदक्षर उच्छिष्ट-गणेश : तारो नमो भगवते झिण्टीशश्चतुराननः, दंष्ट्राय हस्ति-मुच्चार्य खाय लम्बोदराय च। उच्छिष्ट-म वियद्-दीर्घात्मने पाशाकुशः परा, सेन्दुः शार्ङ्गी भग-युते द्वे मेघे वह्नि-कामिनी—ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे-घे स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार। ऋषि गणक, छन्द गायत्री, देवता उच्छिष्ट गणपति, विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। 'मन्त्र-महार्णव' में बीज 'गं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'आं क्रों' का भी उल्लेख है। मन्त्र के ७, १०, ५, ७, ४ एवं ४ अक्षरों से क्रमशः अङ्ग-न्यास। ध्यान निम्न प्रकार करे—

शरान् धनुः पाश-सृणी स्व-हस्तैर्दधानमारक्त-सरोरुहस्थम्।
विवस्त्र-पत्न्यां सुरत - प्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बा-सुतमाश्रयेऽहम्॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दशांश घृताहुतियों से होम करे।

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद १ कृष्णाष्टमी से चतुर्दशी तक सात दिन नित्य ८५०० जप, दशांश (८५०) होम तथा तर्पण करने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि सुख एवं सौभाग्य। २ शुभ दिन में नीम की लकड़ी ले गणेश-मूर्ति बनाकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा कर पूजन-पूर्वक उसके समक्ष 'साध्य' का चिन्तन करते हुए जप करे, तो वशीकरण। ३ नदी के जल को २७ बार अभिमन्त्रित कर उससे मुख धोये, तो वाक्-सिद्धि। ४ श्वेत अर्क (मदार) या नीम की लकड़ी की मूर्ति का पूजन चतुर्थी की रात्रि में रक्त पुष्प एवं रक्त चन्दन से कर एक हजार जप करे और उस मूर्ति को नदी के किनारे छोड़ आवे, तो गणेश स्वप्न में अभीष्ट कार्य को बताते हैं। ५ चौथे प्रयोग के अनुसार पूजित मूर्ति को मद्य-पात्र के मध्य में रखकर एक हाथ नीचे भूमि में गाड़े और उसके ऊपर बैठकर अहर्निश जप करे, तो एक सप्ताह के भीतर सभी उपद्रव शान्त होकर धन-वैभव की प्राप्ति।

विशेष : 'उच्छिष्ट गणेश' के सभी मन्त्र गुरु से प्राप्त होते ही सिद्धि-दायक हो जाते हैं। उनके शोधनादि की आवश्यकता नहीं है। गोपनीयता का पालन आवश्यक है।

३२ एकाधिक-चत्वारिंशदक्षर उच्छिष्ट - महा - गणपति : **ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा**

'मन्त्र-महार्णव' मे 'रुद्रयामल तन्त्र' से उद्धृत। यह क्रमांक ३१ पर दिए सप्त-त्रिंशदक्षर-मन्त्र का ही विकसित रूप है। ऋषि मतङ्ग भगवान्, छन्द गायत्री, देवता उच्छिष्ट-महा-गणपति, बीज 'गं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ह्रीं', विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। शेष ३७ अक्षर मन्त्र-वत्।

३३ त्रयः-पञ्चाशदक्षर सिद्धि-विनायक : **ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा**

'मन्त्र-महार्णव' मे 'प्राकृत ग्रन्थ' से उद्धृत। प्रतिदिन १०८ बार जप करने से कर्म-सिद्धि। यात्रा के समय जप करे, तो मार्ग-भय दूर होकर सभी कार्य सिद्ध होते है।

३४ पञ्च-पञ्चाशदक्षर गणेश-माला-मन्त्र : शक्त्यंकुश ध्रुवान्ते स्यात् स्व-बीज हृदयं ततः, सर्व-विघ्नाधिपायान्ते ङेऽन्त सर्वार्थ-सिद्धिदं। प्रवदेत् सर्व-दुःख-प्रशमनाय पद ततः, एह्येहि भगवन् सर्वा आपदः स्तम्भय-द्वय। भुवनेशी स्व-बीजं गा नतिः पावक-वल्लभा, पुनरकुश-मायान्तं पञ्च-पञ्चाशदक्षरः—
ॐ ह्रीं क्रों गूं नमः सर्व-विघ्नाधिपाय सर्वार्थ-सिद्धिदाय सर्व-दुःख-प्रशमनाय एह्येहि भगवन् सर्वा आपदः स्तम्भय स्तम्भय ह्रीं गूं गां नमः स्वाहा क्रों ह्रीं

'शारदा-तिलक' के अनुसार। इस मन्त्र द्वारा अनेक प्रयोग साधक करते है। उदाहरण के लिए एक प्रयोग यह है कि भूर्ज-पत्र पर गोरोचन, गज-मद और कश्मीर द्वारा अष्ट-दल पद्म अङ्कित करे। उसकी कर्णिका मे गणेश के बीज-मन्त्र से पुटित साधक और कर्म-सहित साध्य का नाम लिखे। कर्णिका के बाहर पूजा के समान नेत्र-मन्त्रादि अङ्ग-मन्त्रों से शोभित किञ्जल्क की रचना करे। फिर उक्त मन्त्र के ४९ अक्षरो को सात भागो मे बाँटकर सात दलों में और शेप छः अक्षरों को आठवें दल में लिखे। शक्ति द्वारा एक आवृत्ति कर शकार द्वारा दूसरी आवृत्ति से पद्म को परिवृत करे।

इस प्रकार भूर्ज-यन्त्र प्रस्तुत कर उसमे विधिवत् पूजाकर उसे श्वेत वस्त्र मे वेष्ठित कर त्रिलौह (ताम्र, रजत, सुवर्ण) मे रख बाहु मे धारण करे, तो सभी कामनाएँ सिद्ध होती है।

आम्नाय-क्रम से गणेश-मन्त्र

'तन्त्र-शास्त्र' मे मन्त्रो को 'आम्नाय'-क्रम मे व्यवस्थित किया गया है। 'आम्नाय' को जानकर मन्त्र की साधना करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है। 'आम्नाय' का पूरा महत्व जानने के लिए 'साधना और आम्नाय' नामक पुस्तक द्रष्टव्य है। 'मेरु-तन्त्र' के १६ से २० तक के पाँच प्रकाशो मे भगवान् गणेश के मन्त्रो को पाँच आम्नायो मे विभक्त कर उनकी विशेष साधना बताई गई है। यहाँ इसी के आधार पर गणेश-मन्त्रों का परिचय दिया जाता है—

१ दक्षिणाम्नाय

१ एकाक्षर विघ्न-विनायक : 'गं'—इस मन्त्र के देवता का ध्यान निम्न प्रकार बताया है—

रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं रक्त-गन्धानुलेपनं, रक्त-पुष्पैः पूज्यमानं तुन्दिलं चन्द्र-मौलिनम्।
त्रिनेत्रं वामनं विघ्नाधीशं पूज्यं च शुण्डिनं, वामे दक्षे द्वयोः पाशांकुशौ पाण्योस्तु बिभ्रतम्।
पद्मासनं सर्व-भूषं ध्याये विघ्न-विनायकम्॥

अङ्ग-न्यास के मन्त्र पृष्ठ ३ के अनुसार हैं किन्तु विशेष अन्तर के साथ। यथा—

१ गणं जयाय स्वाहा, २ एक-दंष्ट्राय हुं फट्, ३ अचल-कर्णिने स्वाहा, ४ गज-वक्त्राय नमः, ५ महा-दशन-चण्डाय हुं, ६ वैरिकाय फट्।

२ त्र्यक्षर शक्ति-गणप : ह्रां ह्रीं ह्रीं

भार्गव ऋषि, विराट् छन्द, शक्ति-गणप देवता। 'गां, गीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

दक्षोर्ध्वे चांकुशं वामे पाशं वामे त्वधः करे, बीजपूरं स्वयं तत्तु दक्षिणे स्वर्ण-वर्णकम्।
पुष्करं मोदकान् बिभ्रत् कर्णयो दीर्घ-चामरे।

एक लक्ष जप से पुरश्चरण। दशांश होम घृताक्त पूप से।

३ चतुरक्षर शक्ति-गणप : ताराद्योऽयं (त्र्यक्षरः) चतुर्वर्णो—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं

इसमें छन्द गायत्री है। शेष क्रमांक २ के समान। ध्यान है—

हेमाभो हेम-वस्त्रवान् बृहज्जानुस्तुन्दिलश्च लम्ब-बाहुर्विलोचनः।
दक्षोर्ध्व-हस्त-पाशं चाधो वामे चाक्ष-सूत्रकं, दक्षिणाधो निजं दन्तमूर्ध्वे बाहौ तथा सृणिम्।
पुष्करेण तु बिभ्राणं मोदकं हेम-भूषणं, शक्ति-युक्तं विश्व-वन्द्यं गणेशं चिन्तयाम्यहम्॥

तीन लक्ष जप से पुरश्चरण। दशांश होम घृताक्त तिलों से।

४ चतुरक्षर हेरम्ब : ॐ गां नमः

गणक ऋषि, गायत्री छन्द, पञ्च-वक्त्र हेरम्ब देवता। ध्यान—

मुक्ता-विद्युन्मेघ-दुग्ध-काश्मीरी-सन्निभैर्मुखैः, गज-वत् पञ्चभिर्युक्तः किरीटी चासि-हस्तकः।
अंकुशं च त्रिशूलं च मुद्गरं च कपालकं, स्वयन्तमभयं चापि वरं मोदकमेव च।
परशुं चाक्ष-मालां च दधतं कर-पङ्कजैः, कोटि-सूर्य-प्रतीकाशं ध्यायेद्धेरम्बमव्ययम्॥

इनके पूजन में १७ अक्षरों का आसन-मन्त्र विशेष बताया है। यथा—

ॐ हूं हूं महा-सिंहाय गं हेरम्बमासनाय नमः।

तीन लक्ष जप से पुरश्चरण। मधुर-त्रय-युक्त तिलों से दशांश होम।

५ सप्ताक्षर सुब्रह्मण्य विनायक : तारोऽष्टेन्तो गणेशो हृत्-प्रोक्तः सप्ताक्षरो मनुः—ॐ गणेशाय नमः

६ अष्टाक्षर सुब्रह्मण्य विनायक : प्रणवान्तोऽष्ट-वर्णोऽयं—ॐ गणेशाय नमः ॐ

७ ,, ,, ,, : शक्ति-बीजादिकोऽपि वा (सप्ताक्षरः)—ह्रीं ॐ गणेशाय नमः

क्रमांक ५ से ७ तक तीनों मन्त्रों के ऋषि भर्ग, छन्द गायत्री और देवता सुब्रह्मण्य विनायक। 'गां गीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं रक्त-गन्धानुलेपनं, रक्त-पुष्पैः पूज्यमानं भक्त-पातक-हारिणम् ।
मुद्गरं च तथा शक्ति कमलं चांकुशं तथा, हस्तैर्दधानं चन्द्रास्यं नानाभूषण-भूषितम् ।
रिपु-क्षय-करं देवं सुब्रह्मण्य-गणाधिपम् ।।

एक लक्ष जप से पुरश्चरण । घृत, पायस से अयुत होम ।

८ दशाक्षर क्षिप्र-प्रसादन विनायक : गं क्षिप्र - प्रसादनाय हृदन्तोऽयं दशाक्षरः—**गं क्षिप्र-प्रसादनाय नमः**

ऋषि आदि पृष्ठ ७-८ के १४ वे मन्त्र के अनुसार । ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

पाशांकुशौ विलसतं पद्माग्रं च दधत्-करैः, बीजपूरं पुष्करे च त्रिनेत्रो रक्त-वस्त्रवान् ।
भक्तं सदा पूर्ण-चन्द्र-मौलिरव्याद् गणेश्वरः ।।

९ अष्टा-विंशदक्षर लक्ष्मी-गणेश : ताराद्योऽयं (ऊन-त्रिंशदक्षर)रमा-हीनस्तथाष्टा-विंशदक्षरः—**ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**

१० ऊन-त्रिंशदक्षर लक्ष्मी-गणेश : श्रीं गं सौम्याय चोच्चार्य महा-गणपति तथा, ङेऽन्तमुक्त्वा वर-वरदोक्त्वा सर्व-जनं वदेत् । मे वशमानय स्वाहेत्येको-न-त्रिशदक्षरः—**श्रीं गं सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**

पृष्ठ १० पर दिए २३ वें 'लक्ष्मी-विनायक' मन्त्र के समान ही क्रमांक ९, १० के इन दोनों मन्त्रों के ऋष्यादि है, केवल छन्द 'निवृदन्विता गायत्री' है । ध्यान भिन्न प्रकार दिया है । यथा—

हेमाभं पीत-वसनं शङ्ख-चक्र-गदाभयान्, दक्षोर्ध्व-करमारभ्य दक्षिणेऽधः-करावधि ।
दधतं शुण्डया स्वर्ण-घटं पद्मोपरि-स्थितं, वामाङ्के विष्णु-लक्ष्म्या चाश्लिष्टं दक्ष-भुजेन तु ।।

११ द्वा-त्रिंशदक्षर हरिद्रा-गणप : ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रेति चोक्त्वा गणपतये वदेत्, वर वरद इत्युक्त्वा सर्व-जन-पदं वदेत् । हृदयं स्तम्भय द्वन्द्वं स्वाहा द्वा-त्रिंशदर्णकः ।

इस मन्त्र का उद्धार पृष्ठ १२ पर दिए २८ वे 'हरिद्रा-गणपति' मन्त्र जैसा ही है । ऋष्यादि भी उसी के समान हैं केवल देवता का नाम 'हरिद्रा गणप' बताया है और ध्यान भी भिन्न दिया है, यथा—

पीताम्बरं पीत-वर्णं पीत-गन्धानुलेपनं, पीत-पुष्पैः पूज्यमानं मणि-सिंहासन-स्थितम् ।
पीत-भूषं त्रिनेत्रं च षड्-भुजं च वराभयं, क्रोध-मुद्रां सृणिं पाशं परशुं बिभ्रतं करैः ।।

षडङ्ग-न्यास 'गां गीं' इत्यादि से । शेष विधान 'हरिद्रा-गणपति' मन्त्र-वत् ।

२ ऊर्ध्वाम्नाय

१ अष्टा-विंशत्यक्षर महा-गणपति : *तार-श्री - बीज-हृल्लेखा कामो भू-बीजमेव च, गणेश-बीज गणपतये वर-वरेति च । द-सर्व-जन मे वशमानयाग्नि-वधूरिति अष्टा-विंशति-वर्णोऽय ।*

उद्धार और ऋष्यादि पृष्ठ १० पर उद्धृत २२वें मन्त्र के समान । यहाँ बीज 'गं' और शक्ति 'ह्रीं' का उल्लेख कर अङ्ग-न्यास 'गां, गीं' आदि द्वारा करने की विधि भी दी है । ध्यान भिन्न दिया है । यथा—

ऐशावे जलधेर्द्वीपे नव-रत्न - मये शुभे, तत्-तरङ्ग-लसत् - तोयैर्धौते शीते मही-तले ।
तत् तोय-गुण - सम्पृक्त-गन्ध-वाह-निषेविते, कल्प-पादप-पुष्पौघैः पतद्भिः समलंकृते ।
नाना-कुसुम-सङ्कीर्णे नाना-पक्ष-विराजिते, अनेक-फल-सङ्कीर्णे सेविते चाप्सरो-गणैः ।
ज्वाला-माला-सहस्राढ्ये चोद्यज्ज्योत्स्ना-समाकुले, विलसत्-पद्मरागौघ-कुट्टिमारण-भूतले ।

कल्प-पादप-पुष्पस्थ-षट्-पद-स्वन-मंजुले, पारिजातं कल्पतरुं तत्र मध्ये विचिन्तयेत् ।
युग-पट्टे तु पट्केन खचितं पुष्प-शोभितं, नव-रत्न-मयं तस्याधस्तात् सिंहासनं स्मरेत् ।
तन्मध्ये लिपि-पद्मं च षडारं तस्य मध्यतः, कर्णिकायां गणेशं च तत्संस्थं च महा-गणं ।
नाना-रत्न-विभूषाढ्यमेक-दन्तं गजाननं, चक्रं चांकुश-पद्मादीन् बीजपूरं गदां तथा ।
शरासनं च शूलं च बिभ्रन्तं हस्त-पङ्कजैः, पद्मोद्यत् करया शक्त्या चाश्लिष्टं वरदं प्रभुं ।
अर्धेन्दु-मौलिं त्र्यक्षं च दीप्यमानं कृपाकरं, पुष्करोद्धृत-रत्नौघ-मय-कुम्भ-मुख-च्युतान् ।
मणि-मुक्ता-प्रवालादीन् वर्षन्तं धारया मुहुः, सर्वतः साधकस्याग्रे स्व-दान-जल-लोलुपं ।
षट्-पदालीं कर्ण-तालैर्वारयन्तं मुहुर्मुहुः, अमरासुर-संसेव्यं सद्-रत्न - मुकुटोज्ज्वलं ।
ऊरू-करं गज-मुखं नानाभरण-भूषित ॥

२ त्रयस्त्रिंशदक्षर त्रैलोक्य-मोहन गणपति : वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं वदेत् ततः, गणपतिं वर-युग्मं दान्त सर्व-जन वदत् । मे वशमानय स्वाहा त्रयस्त्रिंशल्लिपिर्मनुः ।

उद्धार और ऋष्यादि पृष्ठ १२ पर उद्धृत ३० वें मन्त्र के समान, केवल ऋषि व देवता के नाम कुछ भिन्न है, यथा—'गणप ऋषि' और 'त्रैलोक्य-मोहन विघ्न' देवता । ध्यानादि 'महा-गणपति' मन्त्र-वत् ।

३ पूर्वाम्नाय

१ त्र्यक्षर शक्ति-गणेश : ह्रीं ग्रीं ह्रीं

भार्गव ऋषि, विराट् छन्द, शक्ति-गणेश देवता । ध्यान—

गजेन्द्र - वदनं साक्षाच्चतुर्बाहुं सुचामरं, हेम-वर्णं त्रिनेत्रं च पाशांकुश - धरं विभुम् ।
स्व-दन्तं दक्षिणे हस्ते बीजपूरं च वामके, पुष्करे मोदकाश्चैव धारयन्तं त्वनुस्मरेत् ॥

पुरश्चरण मे एक लक्ष जप । दशांश होम घृताक्त पूपों से ।

२ चतुरक्षर शक्ति-गणप : ताराद्यश्चतुरर्णकः (त्र्यक्षरः)—ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं

शुक ऋषि, गायत्री छन्द, शक्ति-गणप देवता । ध्यान—

हेमाभं हेम-वस्त्रं च त्रिनेत्रं तुन्दिल भुजैः, पाशाक्ष-सूत्र-दशनान् धारयन्त तथांकुशम् ।
पुष्करेण दधानं च मोदक हेम-भूषण, मध्याह्नादित्य-सङ्काश चारु-शक्त्या समन्वितम् ॥

पुरश्चरण मे एक लक्ष जप । दशांश होम घृताक्त तिलों से ।

३ षडक्षर वक्रतुण्ड : यह मन्त्र पृष्ठ ५ पर क्रमाङ्क ८ मे दिया है । ऋष्यादि सभी विधि उसी के समान, केवल देवता का नाम भिन्न है, यथा 'वक्र-तुण्ड' । ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

उद्यद्-दिनेश्वर-रुचिं पाशांकुश-वराभयं, हस्तैर्दधानं स्मेरास्यमरुणं चिन्तयेद् हृदि ।

स्त्रियों द्वारा इस मन्त्र के जप का विशेष फल कहा गया है ।

४ षडक्षर वक्रतुण्ड गणेश : मेघोल्काय तथा स्वाहा मन्त्रः प्रोक्तः षडक्षरः—यह मन्त्र पृष्ठ ६ पर क्रमाङ्क १० मे दिया है । इसका ऋष्यादि सभी विधान उसी के समान है, केवल देवता का नाम भिन्न दिया है, यथा—'वक्रतुण्ड गणेश' ।

५ एकादशाक्षर शक्ति-गणेश : यह मन्त्र पृष्ठ ८ पर क्रमांक १५ में दिया है। केवल ध्यान 'मेरु-तन्त्र' में भिन्न दिया है, यथा—

बन्धूकाभं त्रिनेत्रं च नागास्यं शशि - शेखरं, भोगि - मालं गुण - सृणी वरेक्षून् हस्त - पङ्कजैः।
दधानं शुण्डया स्पृष्ट - भगं चालिङ्गितं तथा, श्यामलाङ्ग्या लिङ्ग-पद्म-हस्तया भावयेद् हृदि ॥

६ द्वादशाक्षर शक्ति-विनायक : ह्रीं गं ह्रीं च महेत्युक्त्वा ङेऽन्तं गणपतिं पुनः, स्वाहान्तोऽर्क-वर्णकः।

इस मन्त्र का उद्धार एवं ऋष्यादि विधान पृष्ठ ८, क्रमांक १६ के अनुसार 'महा-गणेश' मन्त्र के समान है, केवल देवता का नाम यहाँ भिन्न है—'शक्ति-विनायक'। ध्यान भी दूसरा दिया है, यथा—

मुक्तावली-चन्द्र-धरं व्याल-नेत्रं च दक्षिणे, ऊर्ध्वाधरैः पद्म-सृणी दधानं वाम-ऊर्ध्वके।
दश-कुम्भं तलस्थेन प्रिया योनिं प्रसन्नयेत्, नाग-वक्त्रं मणि-मयं मुकुटं बिभ्रतं प्रभुम् ॥

७ पञ्च-विंशाक्षर विरि - विघ्नेश : विरि-युग्मं च गणपते वर-द्वयं, दकारं सर्व-लोकं मे वशमानय-द्वयम्, पञ्च-विंशाक्षरो मन्त्रः प्रोक्तोऽयं पुत्र-पौत्रदः—**विरि विरि गणपते वर-वरद सर्व-लोकं मे वशमानय स्वाहा**

गणक ऋषि, गायत्री छन्द, विरि-विघ्नेश देवता, दृष्टादृष्ट-फल-प्राप्ति विनियोग। मन्त्र के ४ ४, ५, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

सिन्दूराभं त्रि-नयनं वामोर्ध्व-पाश-धारिणं, दक्षोर्ध्वे चांकुशं दक्ष-तले मध्ये कपालकम्।
पुष्ट्या योनिं वाम-तल-हस्तेनैव च बिभ्रतं, चन्द्र-मौलिं हस्ति-मुखं दक्षिणेन करेण च।
पुष्ट्यालिङ्गित-सर्वाङ्गं स्पृशन्त्या वाम-पाणिना, लिङ्गाग्रं तु गणेशस्य ऊर्ध्वयोः करयोर्द्वयोः।
सन्दधानं पद्म-युगमेवं गणपतिं भजेत् ॥

८ षड्-विंशाक्षर विरिञ्चि-गणपति : ह्रीं विरिञ्चि-पदं प्रोच्य ङेऽन्तं गणपतिं पुनः, प्राग्वद् (पञ्च-विंशाक्षर-मन्त्र-वद्) वदेद् वरादीनि षड्विंशत्यर्णवो मनुः—**ह्रीं विरिञ्चि-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**

ऋष्यादि क्रमांक ५ मन्त्र-वत्। मन्त्र के ४, ५, ५, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास।
पुरश्चरण में पाँच लक्ष जप। मधुर-त्रय-युक्त अष्ट-द्रव्यों से दशांश होम।

४ पश्चिमाम्नाय

'मेरु-तन्त्र' में इस आम्नाय के अन्तर्गत 'महा-गणपति' के अंश-भूत ६४ विनायकों का उल्लेख है। प्रत्येक विनायक के साथ एक-एक 'योगिनी' और 'चेटिका' के मन्त्रादि की विधि निर्दिष्ट है। यहाँ उनमें से कुछ 'गणेश'-मन्त्र उद्धृत हैं—

१ षडक्षर विघ्न-गणेश : गं विघ्नाय नमः प्रोक्तो एष षडक्षरः—**गं विघ्नाय नमः**
इस मन्त्र का विधान पृष्ठ ७-८ के १४ वें 'क्षिप्र-प्रसादन' गणेश के मन्त्र के समान है।

२ अष्टाक्षर विनायक : विनायकाय हृदय ग-बीजाद्योऽष्ट-वर्णकः—गं विनायकाय नमः

३ अष्टाक्षर इभ-वक्त्र : गमुक्त्वा चेभ-वक्त्राय हृदयान्तो गजाक्षरः—गं इभ-वक्त्राय नमः

४ अष्टाक्षर एक-दन्त : गमेक-दन्तं ङेऽन्तं च हृदयान्तो गजाक्षरः—गं एक-दन्ताय नमः

५ अष्टाक्षर लम्बोदर : गं च लम्बोदरं ङेऽन्तंहृदयान्तोऽष्ट-वर्णकः—गं लम्बोदराय नमः

६ द्वादशाक्षर वरदाक्ष-विनायक : गमुक्त्वा प्रवदेन्ङेऽन्तं वरदाक्ष-विनायकं, हृदन्तो रुद्र-वर्णोऽयं मन्त्रः—गं वरदाक्ष-विनायकाय नमः

इसी प्रकार वाराणसी (काशी) स्थित 'वक्रतुण्ड' आदि गणेश-रूपों का उल्लेख उनकी चेटी-शक्ति-विधान के साथ है। इनके नामो के चतुर्थ-रूप के आदि में 'ॐ' और अन्त मे 'नमः' लगा कर इन सबके मन्त्र ग्रहण करने का निर्देश है। यथा 'ॐ वक्र-तुण्डाय नमः' आदि। इन रूपो के अन्य उल्लेखनीय नाम हैं—१ चण्ड - विनायक, २ देहलि - विनायक, ३ पाश - पाणि - विनायक, ४ खर्व-विनायक, ५ पूर्व-लम्बोदर, ६ कूट-दन्त गणेश, ७ कूष्माण्ड-विनायक, ८ मुण्ड-विनायक, ९ प्रवर-गणेश, १० पञ्चास्य-गजानन इत्यादि।

५ उत्तराम्नाय

१ नवाक्षर उच्छिष्ट-गणेश : वदेद् हस्ति-पिशाचीति लिः लिः स्वाहा नवाक्षरः—हस्ति-पिशाचि लिः लिः स्वाहा

कंकाल ऋषि, विराट् छन्द, उच्छिष्ट-गणेश देवता। मन्त्र के २, ३, १, १, २ अक्षरों से पञ्चाङ्ग न्यास। वक्र-तुण्ड (पृष्ठ ५, ९वाँ मन्त्र) के समान ध्यानादि। ९ लाख जप से पुरश्चरण।

२ दशाक्षर उच्छिष्ट-गणेश : तारो नमो उच्छिष्ट-गणेशाय दशाक्षरो मनुः—ॐ नमः उच्छिष्ट-गणेशाय

३ एकादशाक्षर उच्छिष्ट- गणेश : ॐ ह्री क्ली ह्री समुच्चार्य ह्रीं ह्रीं घें घें तथा च फट्, स्वाहान्तो भव-वर्णोऽस्य प्राग्-वद् ध्यानादिकं मतं—ॐ ह्री क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं घें घें फट् स्वाहा

४ द्वादशाक्षर उच्छिष्ट-गणेश : ॐ ह्री गं हस्ति-पिशाचि लिखेत् स्वाहेति मन्त्रकः—ॐ ह्रीं गं हस्ति-पिशाचि लिखे स्वाहा

५ एकोनविंशत्यक्षर उच्छिष्ट-गणेश : दशाक्षरस्यास्य चान्ते कथितश्चेन्नवाक्षरः, एकोनविंश-वर्णः स्यात् तदा मन्त्रः सुसिद्धि-कृत्—ॐ नमः उच्छिष्ट-गणेशाय हस्ति-पिशाचि लिः लिः स्वाहा

६ त्रयो-विंशत्यक्षर उच्छिष्ट-गणेश : चतुर्थ्यन्तं हस्ति-मुख-पद-मात्र (सप्त-विंशत्यक्षर-मन्त्र) यदोच्चरेत्, त्रयो-विंशति-वर्णस्तु तस्य मन्त्रः प्रकीर्तितः—एक-दंष्ट्राय उच्छिष्टात्मने हस्ति-मुखाय क्रां क्रं ह्रों ह्रीं घें घें स्वाहा

७ सप्त-विंशत्यक्षर उच्छिष्ट-गणेश : एक-दंष्ट्रायेति हस्ति-मुख-लम्बोदराय च, उक्त्वोच्छिष्टात्मने क्रा क्रूं ह्री ह्री घें घेऽग्नि-गेहिनी। सप्त-विंशति-वर्णोऽयं वक्रतुण्ड-षडर्ण-वत्—एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्टात्मने क्रां क्रूं ह्रीं ह्रीं घें घें स्वाहा

८ द्वा-त्रिंशदक्षर उच्छिष्ट-गणेश : तार हस्ति-मुखेति च ङेऽन्तं लम्बोदरम् वदेत्, उच्छिष्टेति महात्मेति ने आ क्रो ह्री समुच्चरेत्। क्ली ह्रीं हु घें-द्वय चापि उच्छिष्टायाग्नि-गेहिनी—ॐ हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रीं हुं घें घें उच्छिष्टाय स्वाहा

ऋष्यादि पूर्ववत् । मन्त्र के ६, ५, ७, ६, ६, ६ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास ।

९ षड्-त्रिंशदक्षर उच्छिष्ट-गणेश : तारो नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति च, मुख-लम्बोदरायेति तथोच्छिष्ट-महात्मने । क्रौं क्लौं ह्रीं ह्रं ततो घें घें स्वाहान्तोऽयं मनुर्मतः—ॐ **नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट- महात्मने क्रौं क्लौं ह्रीं ह्रं घें घें स्वाहा**

क्रमाङ्क २ से ६ तक के सभी मन्त्रों का ऋष्यादि-विधान नवाक्षर उच्छिष्ट गणेश के समान ही है । क्रमाङ्क ६, ७ और ९ के षडङ्ग-न्यास की विधि निम्न प्रकार है—

क्रौं हृदयाय नमः । क्लूं शिरसे स्वाहा । हुं शिखायै वषट् । घें कवचाय हुं । घें नेत्र-त्रयाय वौषट् । क्रौं क्लौं ह्रीं ह्रूं घें घें अस्त्राय फट् ।

अन्य मन्त्र

सप्ताक्षर सुब्रह्मण्य : तारः खड्गीश्वर : कूर्मो निःस्वरो शान्त ईरितः, भुवे नतिः सप्त-वर्णः सुब्रह्मण्यात्मको मनुः—**वचद्-भुवे नमः**

शारदा-तिलक में । ऋषि अग्नि, छन्द गायत्री, देवता सुब्रह्मण्य, बीज ॐ, शक्ति वकार । 'रां, रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

सिन्दूरारुण-कान्तिमिन्दु-वदनं केयूर-हारादिभिः, दिव्यैराभरणैर्विभूषित-तनुं स्वर्गस्य सौख्य-प्रदम् ।
अम्भोजाभय-शक्ति-कुक्कुट-धरं रक्ताङ्ग-रागांशुकं, सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीति-प्रणाशोद्यतम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप, दशांश होम घृताक्त हवि से । इस मन्त्र के प्रभाव से सन्तान, विजय, दीर्घायु, ऐश्वर्य और यश की प्राप्ति होती है ।

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है । यथा : अथ **सुब्रह्मणाख्यो मनुः कार्तिकेयस्याभिधीयते—ॐ वचद्-भुवे नमः** । षडङ्ग-न्यास 'वकार' से करने का निर्देश दिया है, जो ठीक नहीं प्रतीत होता क्योंकि शारदातिलक में अग्नि-बीज से न्यास करने का स्पष्ट वचन है । ध्यान में भी दो पाठान्तर हैं । यथा—(१) **कान्तिमिन्दु : मिन्दु-कान्ति, (२) स्वर्गस्य : स्वर्गस्थ ।**

गणेश-गायत्री : तत्पुरुषाय विद्महे वक्र-तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ ७० में ।

भगवान सूर्य

अदिति के बारह पुत्र 'आदित्य' नाम से प्रसिद्ध हैं। यथा—

धाता मित्रोऽर्यमा रुद्रो वरुण सूर्य एव च, भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशम स्मृत ।
एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते ।

अर्थात् १ धाता, २ मित्र, ३ अर्यमा, ४ रुद्र, ५ वरुण, ६ सूर्य, ७ भग, ८ विवस्वान्, ९ पूषा, १० सविता, ११ त्वष्टा और १२ विष्णु ।

उक्त १२ आदित्यो मे 'भगवान् सूर्य' देव-मण्डल मे प्रधान स्थान रखते है। ऋग्वेद के बारह सूक्तो मे इनकी स्तुति की गई है। इन्हे देवताओ का 'मुख' माना गया है, साथ ही 'नेत्र' भी। नेत्रो का 'सूर्य' से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह प्राणियो के शुभाशुभ कर्मों को देखते है और उन्हे पापो से मुक्त करते हैं। स्वास्थ्य से भी 'सूर्य' का गहरा सम्बन्ध है। विविध प्रकार के रोग उनकी उपासना से दूर होते हैं।

वेदो के अनुसार भगवान् सूर्य के रथ के सात घोडे हैं, जो किरणो के प्रतीक हैं। विश्व के विधान के सरक्षक-रूप मे 'सूर्य' की विशेष मान्यता है। उन्ही के द्वारा दिनो की गणना और 'काल' की धारणा की जाती है। जङ्गम और स्थावर—सभी के वे आत्मा-स्वरूप हैं।

ऋग्वेद से प्रकट होता है कि वैदिक काल मे 'सूर्य' की पूजा कई रूपो मे होती थी। वैदिक प्रार्थनाओ मे गायत्री (सावित्री) की प्रधानता थी। आज भी नित्य के सन्ध्या-वन्दन मे उसका स्थान सुरक्षित है। 'सौर सम्प्रदाय' का प्रथम उल्लेख महा-भारत मे है। जब युधिष्ठिर प्रात काल अपने शयनागार से बाहर निकले, तो एक सहस्र सूर्योपासक ब्राह्मण उनके सामने आए। इन ब्राह्मणो के आठ सहस्र अनुयायी थे (महाभारत, ७ ८२ १४-१६)।

भविष्य पुराण और वराह पुराण मे लिखा है कि कृष्ण के पुत्र शाम्ब को कुष्ट रोग होने पर सूर्य-पूजा द्वारा ही आरोग्य लाभ हुआ था। वाल्मीकि रामायण के युद्ध-काण्ड मे उल्लेख है कि अगस्त्य ऋषि ने राम को यह परामर्श दिया कि वे सूर्य की स्तुति 'आदित्य-हृदय' नामक स्तव द्वारा करें, तो उन्हे रावण पर विजय प्राप्त होगी। इससे स्पष्ट है कि भगवान् सूर्य की उपासना प्राचीन काल से चली आ रही है। मुलतान, मथुरा, मन्दसौर, इन्दौर, बुलन्दशहर, आरा, बहराइच, कोणार्क आदि अनेक स्थानो मे भगवान् सूर्य के मन्दिर रहे है, जिनका ऐतिहासिक महत्व है। सूर्योपासको के दो सम्प्रदाय प्रसिद्ध हैं—१ औदीच्य, २ दाक्षिणात्य। भगवान् सूर्य के दो स्वरूप मुख्यतः आराध्य है—१ रथारूढ, २ खडादेव-रूप। पहले स्वरूप मे एक पहिएवाला रथ एक से सात घोड़ो द्वारा गतिशील देखा जाता है और दूसरे मे वे नगे पाँव कमल के ऊपर खडे दिखाई देते है।

'सौर संहिता' मे सूर्योपासना के कर्म-काण्ड का विस्तृत विधान दिया है। सम्राट् हर्ष के राज-कवि मयूर का लिखा 'सूर्य-शतक' प्रसिद्ध है, जिसमे सूर्य को मोक्ष का उद्गम बताया है। बाण भट्ट ने 'हर्ष-चरित' के प्रारम्भ मे सूर्य की वन्दना की है। जैन कवि मानतुङ्ग ने भी सूर्य की स्तुति लिखी है। उडीसा मे लिखित 'साम्ब-पुराण' भी प्रसिद्ध है। अग्नि-पुराण और ब्रह्म-पुराण मे भी सौर धर्म-विज्ञान की चर्चा है।

'मेरु-तन्त्र' के २१ वें प्रकाश मे भगवान् शिव का वचन है कि—

चतुर्युगेषु प्रत्यक्षो देवोऽयं सर्व-सम्मत:, सर्वेषामेव देवाना नेत्र-जगत्-पति.।

अर्थात् चारो युगो मे प्रत्यक्ष-देवता के रूप मे 'सूर्य' की मान्यता रही है और समस्त देवताओ के नेत्र-स्वरूप इन्हे माना जाता है।

वही यह भी बताया है कि भगवान् सूर्य की उपासना एक-मात्र 'दक्षिणाम्नाय' के क्रमानुसार ही कर्तव्य है। इनकी पञ्च-मूर्तियाँ—(१) आदित्य (दिवाकर), (२) रवि, (३) भानु, (४) भास्कर और (५) सूर्य—इन नामो से सदैव पूजनीया हैं। साथ ही उनके सारथी 'अरुण' और 'चंद्रादि नव-ग्रह' की भी पूजा-विधि निर्दिष्ट है।

सनातन धर्म द्वारा मान्य 'पञ्च-देवो' मे 'भगवान् सूर्य' का अपना विशेष स्थान है। तदनुरूप उनके विविध मन्त्रो और पूजन-विधान का विस्तृत विवरण धर्म-शास्त्र मे उपलब्ध है। 'भगवान् सूर्य' को सनातन ब्रह्म, परमात्मा, स्वयम्भू, अज, सर्वात्मा, सबका मूल कारण और ससार का उद्गम माना जाता है। मोक्ष की कामना से तपस्वी उनकी उपासना करते है। वे वेद-स्वरूप और सर्व-देव-मय हैं। वे ब्रह्मा, विष्णु और शिव के भी प्रभु हैं।

भगवान् सूर्य के मन्त्र

१ द्व्यक्षर मार्तण्ड-भैरव : आकाशमग्नि पवन सत्याम्तोर्ध्वीश विन्दु-मत्, मार्तण्ड-भैरव नाम बीजमेतदुदाहृत। पुटित विश्व-बीजेन सर्व-काम - फल-प्रद। विश्व-बीज यथा—टान्त दहन-नेत्रेन्दु-सहित तदुदाहृत—ह्रिं ह्रप्

'हिन्दी तन्त्वसार', पृष्ठ ११५ मे उक्त उद्धार के अनुसार मार्तण्ड-भैरव मन्त्र का रूप दिया है—ह्, र्, प्, ओ, ऊं = ह्रपो ऊं किन्तु 'शारदातिलक' मे 'ह्रप्ं' बताया है, जो ठीक प्रतीत होता है। पूजा-

विधि 'हिन्दी तन्त्रसार' में द्रष्टव्य है, उसमे ध्यान के दो पाठान्तर 'शारदा-तिलक' के अनुसार हैं। यथा—(२) खट्वाङ्ग-चाप: : खट्वाङ्ग-पद्मं, (२) स-पाशं : च पाशं।

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' मे मार्तण्ड-भैरव बीज का उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है और 'विश्व-बीज' के स्थान पर 'बिम्ब-बीज' का उल्लेख है। यथा—आकाशमग्नि-पवन-सलिलोर्वीशमिन्दु-मत्, इति भवति मार्तण्ड-भैरवं नाम बीजं। एतद् बीज बिम्ब-पुटितं सर्व-काम-फल-प्रदम्।

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद (१) शालि, घृत, तिल, बिल्व से एक लक्ष होम करे, तो ऐश्वर्य की प्राप्ति। (२) राज-वृक्ष के पुष्पो से होम करे, तो शत्रु-नाश। (३) जपा-कुसुम के होम से वशीकरण। (४) मातुलुङ्ग फलो के होम से अभीष्ट धन-प्राप्ति।

२ त्र्यक्षर सूर्य : आकाशमग्नि-दीर्घेन्दु-सयुतो भुवनेश्वरी, सर्गान्वितो भृगुर्भानोस्त्र्यक्षरो मनुरीरितः—ह्रा ह्री सः

शारदातिलक में। 'मन्त्र-कोष' के उद्धार-वाक्य में दो पाठान्तर हैं—(१) संयुतो : सयुतं, (२) मनुरीरितः : अयमुदाहृतः। 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १५१ में इस मन्त्र की विधि द्रष्टव्य है। 'शारदातिलक' के अनुसार ध्यान मे एक पाठ-भेद है। यथा—वरान् : रदान्।

प्रयोग : पुरश्चरण के बाद उक्त मन्त्र द्वारा सूर्य को विधि-पूर्वक अर्घ्य देने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, वस्त्राभूषणादि ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

३ चतुरक्षर अर्क (सूर्य) : प्रणवो भुवनाधीशा हंस इत्यादिको मनुः, विसर्गान्तस्तथा प्रोक्तः काम-धुक् चतुरक्षरः—ॐ ह्रीं हंसः

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' मे। इस मन्त्र के ऋषि अज, छन्द गायत्री, देवता सूर्य-रूपिणी भुवनाधीशा, विनियोग अभीष्ट-सिद्धि है। 'ह्रा, ह्री' आदि से अङ्ग-न्यास करे। ध्यान—

> भास्वद् - रत्नौघ - मौलि स्फुरदमृत - रुचो रञ्जयच्चारु-रेखां,
> सद्यः सन्तप्त - कार्त - स्वर-कमल-जपा - भासुराभिः प्रभाभिः।
> विश्वाकाशावकाशं ज्वलदति - रुचिरं धर्तृ - पाशांकुशेष्टा-
> भीतीनां भङ्गि - तुङ्ग - स्तनमवतु जगन्मातुरार्कं वपुर्नः ॥

पुरश्चरण मे चार लाख जप कर दशांश कमलो से होम करे। अष्टाक्षर-मन्त्र-वत् पूजन। अर्घ्य-विधि के पालन से पुत्र, पौत्रादि सभी समृद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

४ अष्टाक्षर भानु (आदित्य) : तारो घृणिर्भृगुः पश्चाद् वाम - कर्ण-विभूषितः, वह्न्यासनो मरुच्छेपः सनेत्रोऽद्रिस्त्वपश्चिमः। अष्टाक्षरो मनुः प्रोक्तो भानोरमित-तेजस.—ॐ घृणिः सूर्य आदित्य

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १५१-५२। 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' के अनुसार इस मन्त्र के ऋषि 'भार्गव देव' हैं और 'शारदा-तिलक' के अनुसार 'देव-नाग'। 'शारदातिलक' की टीका मे इस मन्त्र के बीज 'रं' और शक्ति 'ॐ' का भी उल्लेख है।

प्रयोग—पुरश्चरण के बाद प्रतिदिन या रविवार के दिन प्रातःकाल रक्त-चन्दन द्वारा मण्डल (वृत्त) बनाकर उसमे सूर्य की पीठ-पूजा करे। फिर एक ताम्र-पात्र ले, जिसमे एक प्रस्थ जल आ सके। उसे अपने सम्मुख उक्त पूजित मण्डल पर रखकर उसे मूल-मन्त्र द्वारा शुद्ध जल से पूर्ण करे। जल में

कुकुम, गोरोचन, राई (सरसो), रक्त-चन्दन, वांस के बीज, करवीर पुष्प, जपा पुष्प, शालि, कुशाग्र, श्यामाक एव तन्दुल (अक्षत) छोडे। फिर 'सूर्य' मे उस सबके ऐक्य की भावना कर उस जल मे 'सूर्य' का षडङ्ग-पूजन करे। विधिवत् गन्ध-पुष्पादि से नैवेद्य तक के उपचार प्रदान करे। फिर उस पात्र को रक्त-वस्त्र से आच्छादित कर प्राणायाम व षडङ्ग न्यास कर १०८ वार मन्त्र का जप करे। पुनः गन्ध-पुष्पादि से जल की पूजा करे। फिर घुटनो के वल बैठकर उक्त पात्र को मस्तक तक उठाकर आकाश-स्थित सूर्य-मण्डल मे आवरण-सहित भगवान् सूर्य का दर्शन कर उनका मानस पूजन करे। उनसे आत्मैक्य की भावना करते हुये मन-ही-मन मूल-मन्त्र का तीन वार जप कर निम्न मन्त्र से अर्घ्य प्रदान करे—

मूल भगवते रवये अर्घ्यं कल्पयामि नमः।

अन्त मे सूर्य को पुष्पाञ्जलि देकर पुन १०८ वार मन्त्र का जप करे।

इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्य देनेवाले व्यक्ति के सभी मनोरथ पूरे होते है। उसके आयु-आरोग्य मे वृद्धि होकर उसे ज्ञान और वैभव की प्राप्ति होती है।

(५) दशाक्षर सूर्य · प्रणवो भुवनेशानी मेधा रेचिकयान्विता, उमाकान्तोऽक्षि-युक्-सर्गो सूर्य आदित्य इन्दिरा। दश-वर्णो मनु —ॐ ह्रीं घृणि सूर्य आदित्य श्रीं

'मन्त्र-महोदधि' मे। ऋषि देवभाग', छन्द 'गायत्री', देवता 'दिवसेश्वर' (सूर्य), बीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्री' और विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धि'।

उल्लेखनीय है कि 'मन्त्र-महोदधि' (प्राच्य प्रकाशन) की हिन्दी टीका मे ऋषि का नाम 'भृगु' प्रकाशित किया गया है, जो ठीक नही है। इस मन्त्र के षडङ्ग-न्यास के लिये १ सत्य, २ ब्रह्म, ३ विष्णु, ४ रुद्र ५ अग्नि, ६ सर्व—इन सबमे मे प्रत्येक के अन्त मे 'तेजोज्वाला-मणे हु फट् स्वाहा' जोड कर छ मन्त्र बना लेने चाहिये। ध्यान—

शोणाम्भोरुह-सस्थित त्रि-नयन वेद-त्रयी-विग्रह,
दानाम्भोज युगाभयानि दधत हस्तै· प्रवाल-प्रभम्।
केयूराङ्गद-हार-कङ्कण-धर कर्णोल्लसत कुण्डल,
लोकोत्पत्ति-विनाश-पालन-कर सूर्यं गुणाब्धि भजे॥

पुरश्चरण मे १० लाख जप, दशाश होम कमल या तिल से।

६ सूर्य गायत्री (१) आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्न सूर्य प्रचोदयात्।

हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१। मन्त्र-महोदधि' के अनुसार उक्त मन्त्र के आदि मे 'ॐ' है।

(२) सप्त-तुरङ्गाय विद्महे सहस्र-किरणाय धीमहि तन्नो रवि प्रचोदयात्। 'मेरु-तन्त्र' मे।

आम्नाय-क्रम से सूर्य-मन्त्र

'सूर्य' के मन्त्रो के सम्बन्ध म 'मेरु तन्त्र' म भगवान् शिव की उक्ति है कि 'एक एवास्य चाम्नायो दक्षिण. परिकीर्तित' अर्थात् इनकी उपासना के लिये केवल 'दक्षिणाम्नाय' ही निर्दिष्ट है। इस प्रसङ्ग मे अनेक मन्त्रो की विधि बताई गई है, जो निम्न प्रकार हैं—

१ द्व्यक्षर सूर्य · मन्त्र सूर्यस्य रा हु च द्व्यक्षरोऽय महा मनु'—रा हु

ऋषि अज, छन्द गायत्री, देवता भानु।

२ त्र्यक्षर सूर्य : त्र्यक्षरोऽस्य तु 'ह्रां ह्रीं सः' प्रोक्तः सर्वार्थ-दायकः

पृष्ठ २३ के क्रमांक २ में इस मन्त्र का उल्लेख हो चुका है। 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार इसके ऋषि 'अज', छन्द 'गायत्री' और देवता 'सविता' हैं। ध्यान करने के लिए यह निर्देश है कि—

स्थितः पद्मेऽरुणे त्र्यक्षोऽरुण-वर्ण-सुभूषण. । पद्म-द्वय-वराभीति-हस्तश्चारुण-सेवितः ।।

३ चतुरक्षर सूर्य : ॐ ह्री हंसश्चतुर्वर्णो मन्त्रः प्रोक्तः दिनेशितुः—

यह मन्त्र पृष्ठ २३ के क्रमांक ३ मे उल्लिखित है किन्तु 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार विवरण भिन्न है। यथा—ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता सूर्य। षडङ्ग न्यास 'ॐ ह्रां, ॐ ह्री' इत्यादि से। ध्यान—

देदीप्यमान-रत्नौघ-मुकुट-विराजितं । पाशांकुश-वराभीति-करं रक्तं भजे रविम् ।।

होम ब्रह्म-वृक्ष की समिधा में त्रिमधु-युक्त पुष्पो से।

४ षडक्षर दिनेश : हं खः खः खोल्कायेति—हं खः खः खोल्काय

ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता सवितृ। ध्यान—

रक्त-पद्मं द्वयं हस्तैर्बिभ्रतं च वराभये । बन्धूकाभं त्रिनेत्रं च रविं ध्यायेत् सुभूषितम् ।।

पुरश्चरण मे एक लक्ष जप। दशांश होम बिल्व, पलाश या उदुम्बर-समिधा में त्रि-मधु-युक्त हविष्य से।

अन्य मन्त्र (आठ ग्रह व अग्नि)

सूर्य के प्रकरण में 'चन्द्रादि' आठ ग्रहो और 'ग्रह-माताओं' के साथ 'अग्नि' तथा 'अजपा'-मन्त्र का वर्णन मिलता है। अतः इन सबका विवरण यहाँ उद्धृत है।

[१] आठ ग्रहों के मन्त्र

नौ ग्रहों के नाम हैं—१ रवि (सूर्य, आदित्य), २ सोम (चन्द्र), ३ मङ्गल (भौम), ४ बुध, ५ बृहस्पति (गुरु), ६ शुक्र, ७ शनैश्चर (मन्द), ८ राहु, ९ केतु। इनमें से 'सूर्य' की गणना पञ्च-देवों मे है। उनके मन्त्रों का विवरण दिया जा चुका है। शेष आठ ग्रहों के मन्त्रो का विवरण निम्न प्रकार है—

सोम (चन्द्र) के मन्त्र

१ एकाक्षर सोम : सोमित्येकाक्षरं वीजं चन्द्रस्य परिकीर्तितं—सौं

'मेरु-तन्त्र' में। ऋषि भार्गव, छन्द पंक्ति, देवता चन्द्रमा। 'आ सौं, ई सौं, ऊं सौं, ऐं सौं, औ सौं, अः सौं' से हृदयादि षडङ्ग कर 'चा, ची' इत्यादि से कर एवं षडङ्ग न्यास करे। ध्यान—

श्वेताब्ज-संस्थं रजत-कान्ति-हार-विराजितं, नील-केशं च कुमुदं वामे दक्ष-करे वरम् ।
दधानं भावयेद्देवं मृगाङ्कं मणि-मौलिकम् ।।

पुरश्चरण में छः लाख जप कर घृत-सिक्त हवि मे छ. सहस्र होम।

प्रयोग—(१) पुरश्चरण के बाद शिर में चन्द्रमा का ध्यान कर तीन सहस्र मन्त्र का जप करे, तो राजैश्वर्य-प्राप्ति। (२) चार लाख जप से भूमि-गत धन की प्राप्ति। (३) अयुत जप से ज्वर, शिरो-रोग, कृत्या और कामलादि रोगों की शान्ति। (४) पूर्णिमा के दिन यथा-शक्ति जप करने से सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति की प्राप्ति।

२ त्र्यक्षर सोम : व स वगिति चन्द्रस्य त्र्यर्णो मन्त्र.—**वं सं वं**

ऋषि एक-तत्व, छन्द श्री, देवता सोम, बीज 'वं', शक्ति 'आ'। बीज द्वारा षडङ्ग-न्यास। ध्यान षडक्षर मन्त्र-वत्।

प्रयोग—चन्द्र-मण्डल मे वकार को पुटित ध्यान कर उससे स्रवित अमृत द्वारा अपने शरीर को आप्लावित होने की भावना करे। इसी भावना से जल को अभिमन्त्रित कर उस जल को सूर्योदय से पूर्व पान करे, तो पाप-क्षय होकर आयु मे वृद्धि हो।

३ षडक्षर सोम (चन्द्र) : षड्गीशस्थो भृगुर्विन्दुर्मनु - स्वर - समन्वित:, सोमाय हृदयान्तोऽय मन्त्र: प्रोक्त षडक्षर:—**ॐ स्वौं सोमाय नम:**

'मन्त्र-रत्न-मजूषा' मे उक्त मन्त्र के 'स्वौं' बीज के स्थान पर 'सो' दिया है, जो 'शारदा-तिलक' मे दिए उक्त उद्धार के अनुसार अशुद्ध है। ऋषि भृगु, छन्द पक्ति, देवता सोम, बीज स्वौं, शक्ति 'आय' या 'नम:।' स्वां स्वीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कर्पूर - स्फटिकावदातमनिश पूर्णेन्दु-विम्बाननं, मुक्ता-दाम-विभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तम:।
हस्ताभ्यां कुमुदं वर विदधतं नीलालकोद्भासितं, स्वस्याङ्कस्थ-मृगोदिताश्रय-गुणं सोमं सुधाब्धि भजे॥

'मन्त्र-रत्न-मजूषा' मे ध्यान के दूसरे चरण मे 'तम' के स्थान पर 'तनु' छपा है, जो अशुद्ध है। 'शारदा-तिलक' मे चौथे चरण मे 'मृगोदिता' के स्थान पर 'मृगाङ्कोदिता' छपा है, जो अशुद्ध है क्योकि उससे एक अक्षर की वृद्धि हो जाती है। साथ ही अर्थ मे भी दोष आता है। 'कर्मठ गुरु' के अनुसार ध्यान मे दो पाठान्तर है। यथा—(१) वर विदधत : वर च दधत, (२) स्वस्याङ्कस्थ : स्वीयाङ्कस्थ।

पुरश्चरण मे १० लाख जप। १० हजार आहुतियाँ घृताक्त खीर से।

प्रयोग—(१) उक्त प्रकार हृदय मे ध्यान करते हुये तीन सहस्र प्रतिदिन जप करे, तो दरिद्र भी एक वर्ष मे राज्यैश्वर्य प्राप्त करता है। (२) मस्तक मे ध्यान करते हुये उतना ही जप करने से रोग, अकाल-मृत्यु और सभी दु खो से छूटकर दीर्घायु मिलती है। (३) ब्रह्मचर्य से रहते हुये शुद्धतापूर्वक चार लाख प्रतिदिन जप करने से अनायास भूमि मे गडी सम्पदा प्राप्त होती है। (४) जितेन्द्रिय होकर पूर्णिमा मे जप करने से सर्व-सौभाग्य-प्राप्ति। (५) पूर्णिमा मे निराहार रहकर चन्द्रोदय के समय पूर्व-पश्चिमाभिमुख तीन आयताकार मण्डल भूमि पर बनाये। उसके पश्चिम मे विहित आसन पर बैठकर मण्डल मे सोम-पूजा कर उस पर चाँदी के पात्र मे दूध भरकर रखे। उस पात्र का स्पर्श करते हुये १०८ बार मन्त्र जप करे। फिर निम्न विद्या-मन्त्र से शशाङ्क (चन्द्रमा) को सर्व-कामार्थ-सिद्धि के लिए अर्घ्य प्रदान करे—**ॐ विद्ये विद्या-मालिनि चन्द्रिणि चारु-मुखि स्वाहा।**

इस प्रकार प्रति मास पूर्णिमा के दिन करने से छ मास के भीतर सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। कन्या को उत्तम वर और वर को उत्तम कन्या, धन-धान्य, सौभाग्य, यश—सभी कुछ इस प्रयोग से मिलता है।

४ दशाक्षर सोम ॐ श्री श्री श्रू स-विन्दु स सो सोमायेत्यग्नि-गेहिनी, दशाक्षरश्चन्द्र-मन्त्रो जप्यश्चाग्रे दयायुतै—**ॐ श्रीं श्रीं श्रूं सं सोमाय स्वाहा**

ऋष्यादि विधान पूर्ववत्।

मंगल (भौम) के मन्त्र

१ षडक्षर मङ्गल : तारो वियद्-दीर्घ-विन्दु युक्तं चन्द्राङ्कितं पुनः, भृगुर्विसर्गी चण्डीशौ क्रमाद् रात्रीश-सर्गिणौ । षड्-वर्णो मनुराख्यातोऽभीष्ट-दायी ऋणापह.—ॐ ह्रां हंसः खं खः

'मन्त्र-महोदधि' मे । ऋषि विरूप, छन्द गायत्री, देवता धरात्मज (मङ्गल) । षडङ्ग-न्यास मन्त्र के एक-एक वर्ण से क्रमश. । ध्यान—

जपाभं शिव-स्वेदजं हस्त-पद्मे गदा-शूल-शक्तीर्वरं धारयन्तम् ।
अवन्ती-समुत्थं सु-मेषासनस्थं धरा-नन्दनं रक्त-वस्त्रं समीडे ॥

'मेरु-तन्त्र' मे इस मन्त्र के प्रसग मे निम्न ध्यान बताया है—

जपा-कुसुम-सङ्काशं शक्ति-शूल-गदा-धरं, मेष-संस्थं रक्त-वस्त्रं तं वन्देऽहं धरात्मजम् ।

पुरश्चरण मे छः लाख जप और खैर की समिधा मे दशाश तिल-होम ।

२ अष्टाक्षर भौम : अथ भौम-मनु वक्ष्ये सर्व-रोग-निवारण, अ च अङ्गारको ङेऽन्तो हृदन्तश्चाष्ट-वर्णकः—अं अङ्गारकाय नम.

'मेरु-तन्त्र' मे । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता भूमि-पुत्र । 'अं, आं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

नमाम्यङ्गारकं रक्तं रक्ताम्बर-विभूषण, जानुस्थ-वाम-हस्ताढ्य भाजनेतर-पाणिकम् ।

३ नवाक्षर अङ्गारक : ॐ अं अङ्गारकाय नमः

'कर्मठ-गुरु' मे । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता अङ्गारक, बीज 'अं', शक्ति 'आप.' । ध्यान—

नमाम्यङ्गारकं देवं रक्तामाम्बर-भूषण, जानुस्थ-वाम-हस्ताढ्य साभयेतर-पाणिकम् ।

४ दशाक्षर भौम : ॐ श्री क्लो मनुमुच्चार्य ङेऽन्तो भौमो हृदन्तक", दशाक्षरो मनुः प्रोक्त—ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः

'मेरु-तन्त्र' मे । ऋषि विरूपाक्ष, छन्द गायत्री, देवता मगल, बीज ह्रीं, शक्ति श्री, कीलक 'क्लीं' । 'ह्रां ह्रीं' इत्यादि से षडंग-न्यास । मन्त्र के दस वर्णों मे से एक-एक वर्ण का न्यास क्रमश. १ ब्रह्म-रन्ध्र, २ दक्ष-कर्ण, ३ वाम-कर्ण, ४ दक्ष नेत्र, ५ वाम-नेत्र, ६ दक्ष-नासा ७ वाम-नासा, ८ मुख, ९ लिंग, १० गुदा मे कर निम्न बीस नामो का न्यास क्रमश. १ शिखा, २ मूर्ध्नि, ३ मस्तक, ४ दोनो नेत्र, ५ दोनो कर्ण, ६ दोनो नासा, ७ मुख, ८ चिबुक, ९ कण्ठ, १० दोनो स्कन्ध, ११ दोनो बाहु, १२ दोनो हाथ, १३ उदर, १४ नाभि, १५ कटि, १६ लिंग, १७ स्फिच, १८ दोनो जानु. १९ दोनो जघा, २० दोनो अंघ्रि मे करे—

मङ्गलो भूमि-पुत्रश्च ऋण-हर्ता धन-प्रदः, स्थिरासनो महा-काय सर्व-कर्मावरोधकः ।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपा-करः, धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमि-नन्दनः ।
अङ्गारको यमश्चैव सर्व-रोगोपहारकः, वृष्टि-कर्त्तापहर्त्ता च सर्व-कर्म-फल-प्रद. ।

प्रत्येक नाम को चतुर्थ्यन्त कर नम.' जोड ले, यथा—'ॐ मङ्गलाय नमः, ॐ भूमि-पुत्राय नमः' इत्यादि । फिर ध्यान करे । यथा—

ध्याये भौमं रक्त-वर्णं रक्त-माल्यांशुकावृतं, कण्ठे कमल-मालाढ्यं करयोः शक्ति-शूलके ।
भगवन् ! देव-देवेश ! एह्येहि त्वं महा-प्रभो ! ऐश्वर्यं यशमायातु भू-तलेषु समार्पितम ।
मङ्गलानां मङ्गलं च सर्व-काम-फल-प्रदम् ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप, होम त्रि-मधु-युक्त करवीर, जपादि पुष्पों से।

५ **दशाक्षर भौम :** ॐ क्रां क्रीं क्रौं सविन्दुः सकुजायेत्यग्नि-गेहिनी, दशाक्षरो भौम-मन्त्रो जप्यश्चायं नवायुतं—**ॐ क्रां क्रीं क्रौं सं कुजाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' में। ऋष्यादि पूर्ववत्। पुरश्चरण में नौ अयुत जप।

६ **एकदशाक्षर भौम :** तारं मायां रमां म्लां च मं मंगल-पदं वदेत्, ङेऽन्तं हृदन्तं रुद्रार्णो प्रोक्तो भौम-प्रियो मनुः—**ॐ ह्रीं श्रीं म्लां मं मङ्गलाय नमः**

'मेरु-तन्त्र' में। ऋष्यादि पूर्ववत्। आवाहन निम्न मन्त्र से करे—

भगवन्! देव-देवेश! एह्येहि त्वं महा-प्रभो! ऐश्वर्यं वशमायातु भू-तलेषु समाश्रितम्।

प्रयोग—२१ दिन तक प्रतिदिन अष्टोत्तर-सहस्र जप करे और भौम-स्तोत्रादि का पाठ करे, तो सर्वाभीष्ट की पूर्ति होती है।

७ अङ्गारक-गायत्री : अङ्गारकाय-शब्दान्ते विद्महे-पदमुच्चरेत्, शक्ति-हस्ताय च पदं धीमहीति ततो वदेत्। तन्नो भौमः प्रचो-वर्णान् दयादिति च कीर्तयेत्—ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति-हस्ताय **धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्**

बुध (सौम्य) के मन्त्र

१ **सप्ताक्षर बुध :** ॐ बं बुधाय नमः

'कर्मठ गुरु' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द पंक्ति, देवता बुध, बीज 'बं,' शक्ति 'आपः'। ध्यान—

वन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बर-सुभूषणं, जानुस्थ-वाम-हस्ताढ्यं सभयेतर-पाणिकम्।

'मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र का उद्धार दिया है—'अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बुध-मन्त्रं महाद्भुतं बुं ङेऽन्तो बुध-शब्दश्च, हृदयान्तः षडर्णकः।' ध्यान उपर्युक्त ही दिया है, केवल 'हस्ताढ्यं' के स्थान पर 'हस्ताब्जं' है।

पुरश्चरण में सात हजार जप, दशांश होम घृत से।

२ **दशाक्षर सौम्य :** ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं स-विन्दुः स बुधायेत्यग्नि-गेहिनी—**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं सं बुधाय स्वाहा**

पुरश्चरण में एक लक्ष जप।

बृहस्पति (गुरु) के मन्त्र

१ **अष्टाक्षर गुरु :** (१) खड्गीशौ भारभूतिस्थौ तन्नाद्यः, क्रूर-संयुतः, नभो भृगुर्लोहितस्थो हरिर्वायुर्भगान्वितः। हृदयान्तोऽष्ट-वर्णोऽयं मनुः—बृं बृहस्पतये नमः

'मन्त्र-महोदधि' में। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता सुराचार्य। 'ब्रा ब्री' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रत्नाष्टापद-वस्त्र-राशिममलं दक्षात् किरन्तं, करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादि-राशौ परम्।
पीतालेपन-पुष्प-वस्त्रमखिलालङ्कार-सम्भूषितं, विद्या - सागर - पारगं सुर-गुरुं वन्दे सुवर्ण - प्रभम्॥

'मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र का उद्धार इस प्रकार दिया है—बृं बृहस्पतये हृच्च मन्त्राष्टाक्षरो मतः।' देवता का नाम 'बृहस्पति' बताया है और बीज 'बृं'। ध्यान भी भिन्न दिया है। यथा—

सुवर्णाभं पीत-वस्त्रं रत्न-स्वर्णाम्बरादिकं, किरन्तं दक्ष-हस्तेन रत्नादीन् वाम-पाणिना।
स्पृशन्तं सम्यगपरं वृपणौ कनकादिकं, नानालङ्कार-शोभाढ्यं विद्या-सागर-पारगम् ॥

पुरश्चरण में ८० हजार जप और अन्न या घृत से दशांश होम।

प्रयोग—(१)पुरचरण के बाद घृताक्त कुंकुम और हरिद्रा से तीन दिन २७०० आहुतियाँ दे, तो वस्त्र और मणियों की प्राप्ति। (२) शत्रु, रोगादि कष्टो में और स्वजनो के कलह की शान्ति के लिये पिप्पल की समिधा में होम करे तो अभीष्ट की सिद्धि होकर सर्व-सम्पदा की प्राप्ति होती है।

२ अष्टाक्षर बृहस्पति : ब्रूं बृहस्पतये नमः

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' में। पुरश्चरण में आठ सहस्र ज०, घृताक्त अन्न से उतना ही होम। 'ब्रां ब्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रत्न-स्वर्णांशुकादीन् निज-कर-कमलाद् दक्षिणादाकिरन्तं,
वासो-राशौ निधायापरममर-गुरुं पीत-वस्त्रादि-भूषम्।

प्रयोग—मन्त्र का १२० बार जप कर ही उतनी आहुतियाँ घृताक्त पुष्पो से तीन दिन देने से वस्त्र और स्वर्णादि की प्राप्ति होती है।

३ नवाक्षर बृहस्पति : ॐ बृं बृहस्पतये नमः

'कर्मठ गुरु' मे उक्त मन्त्र 'अष्टाक्षर' नाम से लिखा है। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता बृहस्पति, बीज 'बृं,' शक्ति 'नमः'। ध्यान—

तेजो-मयं शक्ति-त्रिशूल-हस्तं सुरेन्द्र-सङ्घ-स्तुत-पाद-पङ्कजम्।
मेधा-निधिं मत्स्य-गतं द्वि-बाहुं गुरुं भजे मानस-पङ्कजेऽहम् ॥

४ द्वादशाक्षर बृहस्पति : ॐ जां जीं जूं स-विन्दुः स चतुर्थ्यन्तो बृहस्पतिः, वह्नि-स्त्री विश्व-वर्णोऽयं जप्यः पञ्च-दशायुतं—ॐ जां जीं जूं सं बृहस्पतये स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' मे। पुरश्चरण मे पन्द्रह अयुत जप।

शुक्र के मन्त्र

१ नवाक्षर शुक्र : ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा

'कर्मठ-गुरु' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द पंक्ति, देवता शुक्र, बीज 'शुं,' शक्ति 'स्वाहा'। ध्यान—

सन्तप्त-काञ्चन-निभं द्वि-भुजं दयालुं, पीताम्बरं धृत-सरोरुह-केश-युग्मम्।
क्रौञ्चासनं असुर-सेवित-पाद-पद्मं, शुक्रं भजे द्वि-नयनं हृदि पङ्कजेऽहम् ॥

२ दशाक्षर शुक्र : ववयोरन्तरास्त्र मे देहि शुक्राक्षरा द्विठः—वस्त्रं मे देहि शुक्र स्वाहा

'मन्त्र- रत्न-मंजूषा' में। पुरश्चरण अयुत 'जप,' घृत मे एक सहस्र होम। ध्यान—

वासो-रत्नादि-कार्तस्वरमपि सततं साधकाय प्रयच्छन्,
व्याख्यान-मुद्रा-कलित-कर-वर.स्वापाणालिन्द-संस्थः।

३ दशाक्षर शुक्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सविन्दुः स शुक्रायेत्यग्नि-गेहिनी, दशाक्षरः शुक्र-मन्त्रो जप्योऽयं द्वादशायुतं—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सं शुक्राय स्वाहा।

४ एकादशाक्षर शुक्र : तारो वस्त्रं भगी सूर्यो देहि शुक्राय ठ-द्वयं, एकादशाक्षरो मन्त्रो हेम-वस्त्र-प्रदायकः—ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि' में। ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट्, देवता दैत्य-पूजित, बीज 'ॐ,' शक्ति 'स्वाहा'। मन्त्र के १, २, १, २, ३, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्वेताम्भोज-निषण्णमापण-तटे श्वेताम्बर-लेपनं, नित्यं भक्त-जनाय सम्प्रददतं वासो मणीन् हाटकम्।
वामेनैव करेण दक्षिण-करे व्याख्यान-मुद्राङ्कितं, शुक्रं दैत्य-वरार्चित स्मित-मुखं वन्दे सिताङ्ग-प्रभम्॥

'मेरु-तन्त्र' मे उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न रूप मे दिया है। यथा : वस्त्रं मे देहि शुक्राय हृदयान्तः शुमादिकः, एकादशाक्षरो मन्त्रः—**वस्त्रं मे देहि शुं शुक्राय नमः।**

ऋष्यादि पूर्ववत्, केवल देवता का नाम 'शुक्र' दिया है। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, १, २, १, ३, २ अक्षरो से। ध्यान भी भिन्न है—

शुक्र नमाम्यासनस्थं मुक्ताभरण-भूषितं, स्वर्ण-वासो रत्न-धारा चिन्मुद्रात्त-कर-द्वयम्।

पुरश्चरण मे १० हजार जप और घी से दशाश होम।

शनैश्चर के मन्त्र

१ अष्टाक्षर शनैश्चर : शनैश्चराय हृदयं समाद्यश्चाष्ट-वर्णकः—**शं शनैश्चराय नमः**

'मेरु-तन्त्र' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता शनैश्चर। 'शां, शीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—**वन्दे शनैश्चरं वक्र-दंष्ट्रं नील-विभूषणं, वाम-जानु - स्थितं वाम-करं दक्षे वरं दधत्।**

पुरश्चरण मे आठ सहस्र जप, उसका दशाश घृत से होम।

२ नवाक्षर शनि : ॐ शं शनैश्चराय नमः

'कर्मठ गुरु' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता शनैश्चर, बीज 'श,' शक्ति आयः। ध्यान—

नीलाञ्जनाभं मिहिरस्य पुत्रं ग्रहेश्वरं पाश-भुजङ्ग-पाणिम्।
सुराऽसुराणां भयदं द्वि-बाहुं भजे शनिं मानस-पङ्कजेऽहम्॥

३ द्वादशाक्षर शनैश्चर : ॐ प्रा प्री प्रौं स इत्युक्त्वा शनैश्चर-पदं वदेत्, ङेऽन्तं स्वाहा द्वादशार्णो जपः प्रगत-सम्मितः—**ॐ प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय स्वाहा**

इस मन्त्र के पुरश्चरण के होम मे शमी वृक्ष की समिधा प्रशस्त है।

राहु के मन्त्र

१ षडक्षर राहु . राहवे नमः उच्चरेत्, रां-पूर्वकः षडर्णोऽयं—**रां राहवे नमः**

'मेरु-तन्त्र' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता राहु। ध्यान सप्ताक्षर मन्त्र-वत्।

२ सप्ताक्षर राहु : ॐ रां राहवे नमः

'कर्मठ गुरु' मे। ऋषि ब्रह्मा, छन्द पंक्ति, देवता राहु, बीज 'रा,' शक्ति 'वेशः'। ध्यान—

वन्दे राहुं धूम्र-वर्णं अर्ध-कायं कृताञ्जलिं, विकृतास्यं रक्त-नेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम्॥

'मेरु-तन्त्र' मे ध्यान मे 'अर्ध-काय' के स्थान पर 'सर्प-कायं' छपा है। पुरश्चरण मे ७ हजार जप कर गो-घृत से होम करे।

३ दशाक्षर राहु : ॐ सा सी सौ स-विन्दुः स-राहवे वह्नि-गेहिनी, दशाक्षरो राहु-मन्त्रो अप्य-श्वायं दशायुत—**ॐ सां सीं सौं रां राहवे स्वाहा**

पुरश्चरण मे १० अयुत जप और दूर्वा से होम का विधान है। राहु की उपासना से यात्रा की सिद्धि होती है और सग्राम मे विजय मिलती है।

५ अष्टाक्षरा गुरु - माता धान्या : श्री धनदे समुच्चार्य धान्ये स्वाहाष्ट - वर्णकः—**श्रीं धनदे धान्ये स्वाहा**

'श्रा श्री' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। इस देवी से बढ़कर कोई देवता-धन-दाता नहीं है। तीन पुरश्चरण करने से साधक सब प्रकार से धन्य हो जाता है।

६ षोडशाक्षरा शुक्र-माता सिद्धा : ह्रीं सिद्धिदे सर्वं मम समुक्त्वा साधय-द्वयं, हृदन्तोऽयं षोडशार्णः—**ह्रीं सिद्धिदे सर्वं मम साधय साधय नमः**

'ह्रा ह्री' से षडङ्ग-न्यास। इस मन्त्र से सभी कामनाओं की संसिद्धि होती है।

७ अष्टाक्षरा मन्द (शनि) माता उल्का : ऐं ह्रीमुल्का-पदं पश्चाद् देव्यै हृच्चाष्ट-वर्णकः—**ऐं ह्रीं उल्का-देव्यै नमः**

'ऐं ह्री हृदयाय नमः, ऐं ह्री शिरसे स्वाहा' इत्यादि क्रम से अङ्ग-न्यासादि करे। यह मन्त्र धन और आरोग्य का देनेवाला है।

८ षोडशाक्षरा राहु-माता सङ्कटा : ह्रीं सङ्कटे च रोगं मे परमं नाशय-द्वय, षोडशार्णः—**ह्रीं सङ्कटे रोगं मे परमं नाशय नाशय**

कारागार मे १० लाख इस मन्त्र का जप करे, तो जेल से छुटकारा मिलता है। काशी में वीरेश्वर से पूर्व सङ्कटा देवी का स्थान है। वहाँ १६ लाख जप कर दूर्वा से होम करे, तो मन्त्र सिद्ध होता है।

९ एक-त्रिंशत्यक्षरा केतु-माता विकटा : तारो नमो भगवति विकटे वीर-पालिके, प्रसीद-युगल मन्त्रः प्रकृत्यर्णः प्रकीर्तितः—**ॐ नमः भगवति विकटे वीर-पालिके प्रसीद प्रसीद**

इस मन्त्र के साधक के हाथ के स्पर्श से ग्रह-पीड़ित बालक, पिता-माता से त्यक्त पुत्र अपने कष्टो से छूट जाते है और चिर-जीवी होते हैं, वन्ध्या स्त्री का उदर छूने से वह पुत्रवती होती है।

[३] अग्नि-मन्त्र

१ चतुर्विंशत्यक्षर अग्नि : उत्तिष्ठ पुरुष हरि-पिङ्गल लोहिताक्ष-पद वदेत् देहि मे ददापय ठ-द्वयं, चतुर्विंशत्यक्षरात्मा समृद्धि-मनुरीरितः—**उत्तिष्ठ पुरुष हरि-पिङ्गल लोहिताक्ष देहि मे ददापय स्वाहा**

ऋषि भृगु, छन्द गायत्र, देवता अनल। मन्त्र के ६, ५, ४, ३, ४, २, अक्षरो से अङ्ग-न्यास। ध्यान—

स्वर्णाश्वत्थ-विनिर्गतं हुत-वहं सिन्दूर-पुञ्ज-प्रभं, ज्वालाभिर्निचिताङ्ग-रोम-निचयं कान्त्या जगन्मोहनम्।
अश्वाकारमनर्घ्य-रत्न-विलसद्-भूषा - नमत्-कन्धरं, रत्नैरिन्द्रिय - निर्गतैर्वसुमतीमाच्छादयन्तम् स्मरे ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप, दशांश होम घृत से।

प्रयोग—(१) इस मन्त्र से अभिमन्त्रित 'वच' को नित्य प्रातः खाए, तो वाक्-सिद्धि। (२) एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित जल का प्रतिदिन पान करे तो जठराग्नि उद्दीप्त हो।

२ पञ्च-विंशत्यक्षर अग्नि : व्याहृति-त्रयमग्निः स्याज्जातवेद इहावह सर्व-कर्माणि सम्भाष्य साधयाग्नि-प्रिया ततः, तारायोऽयं मनुः प्रोक्तः पञ्च-विंशति-वर्ण-वान्—**ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निः जातवेद इहावह सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा**

ऋषि भृगु, छन्द गायत्र, देवता अनल। मन्त्र के ५, ६, ४, ५, ३, २ अक्षरो से अङ्ग-न्यास। ध्यान—

अंसासक्त-सुवर्ण-माल्यमरुण-स्रक्-चन्दनालंकृतं, ज्वाला-पुञ्ज-जटा-कलाप-विलसन्मौलिं सु-शुक्लांशुकम् ।
शक्ति-स्वस्तिक-दर्भ-मुष्टिक-जप-स्रक्स्रक्स्रु वाभीर्वरान्, दोर्भिर्बिभ्रतमिच्छत-त्रिनयनं रक्ताभमग्निं भजे ॥

पुरश्चरण में १२ सहस्र जप करते हुये प्रतिदिन वट-समिधा में घृत-सहित व्रीहि, तिल, राजी की हवि को १०८ आहुतियाँ १० दिनों तक देकर ग्यारहवें दिन ब्राह्मणों को तृप्त कर गुरुदेव को दक्षिणा दे।

अग्नि के पूजन में १ पीता, २ श्वेता, ३ अरुणा, ४ कृष्णा, ५ धूम्रा, ६ तीव्रा, ७ स्फुलिङ्गिनी, ८ रुचिरा और ९ ज्वालिनी—ये नौ शक्तियाँ और १ जात-वेद, २ सप्त-जिह्व, ३ हव्य-वाहन, ४ अश्वोदर, ५ वैश्वानर, ६ कौमार-तेज, ७ विश्व-मुख और ८ देव-मुख—ये आठ मूर्तियाँ पूजनीया है।

प्रयोग—(१) प्रतिदिन पूजन कर सहस्र जप करे, तो एक वर्ष के भीतर धन-धान्य-समृद्धि की प्राप्ति। (२) गो-घृत से छः मास तक होम करे, तो अक्षय कीर्ति और लक्ष्मी मिलती है।

[४] अजपा-मन्त्र

द्व्यक्षर अजपा-मन्त्र : वियदिन्दु-ललित तदादि सर्ग-संयुतः, अजपाख्यो मनुः प्रोक्तो द्व्यक्षर सुर-पादपः—हंसः

'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ १५६ में इस मन्त्र की विधि द्रष्टव्य है। 'शारदातिलक' के अनुसार उक्त मन्त्रोद्धार में 'ललितं' के स्थान पर 'लसित' है। ध्यान में दो पाठान्तर हैं—(१) पाशाभीति : पाशाभीती, (२) वरद-परशुं : वरद-परशु। इसी प्रकार आवरण-पूजन में 'ऋताय नमः' के स्थान पर 'ऋतवे नमः' और 'अब्जाये नमः' के स्थान पर 'अब्जजाये नमः' मिलता है।

प्रयोग : मन्त्राढ्य-मातृका-पद्म की रचना कर उसके ऊपर जल-पूर्ण कुम्भ स्थापित कर उसे बाएँ हाथ से ढँककर एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे। इस अभिमन्त्रित जल से जिसका अभिषेक किया जायगा, वह पाप-मुक्त होकर दीर्घायु, आरोग्य और वैभवशाली होगा। इसी विधि से विष से पीड़ित व्यक्ति भी अच्छा हो जायगा।

प्रयोग करते समय यह ध्यान करता रहे कि मन्त्र के अन्तिम दो बिन्दुओं (विसर्ग) से अमृत का स्राव होकर मन्त्र के आदि अक्षर पर स्थित बिन्दु (अनुस्वार) को आप्लावित करता है और वह परामृत से आर्द्र चन्द्रमा के समान पूरे मन्त्र को अमृत-मय कर रहा है। इस प्रकार मन्त्र का ध्यान कर उसका जप करने से सभी प्रकार के विषों, रोगों, उन्माद, अपमृत्यु, जरा आदि का निवारण होकर सुख-मय दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

भगवान विष्णु

सनातन धर्म के त्रि-देवों—'ब्रह्मा, विष्णु, महेश'—में से एक 'भगवान् विष्णु' है। पञ्चायतन में भी इन्हें प्रमुख स्थान प्राप्त है। वैदिक देवताओ के 'आदित्य वर्ग' में इनका उल्लेख है। ऋग्वेद का 'विष्णु-सूक्त' प्रसिद्ध है, जिसमें उनके तीन चरणों (त्रि-विक्रम,—उरु-क्रम) की महिमा है। ये बाल-सूर्य, मध्याह्न-सूर्य और सायं-सूर्य के तीन स्थानों के द्योतक हैं। उच्चतम स्थान मध्याह्न-सूर्य का है, जो परवर्ती विष्णु-लोक या गो-लोक का पूर्व-रूप है। वहाँ बहुत सींगोंवाली गाएँ विचरण करती है और मधु की धाराएँ बहती है।

भगवान् विष्णु दया-भाव से अपने चरण उठाते हैं। वे संसार को दुःखों से छुड़ाते हैं और पृथ्वी को आसुरी भावों से दूर रखते हैं। वे विश्व के रक्षक और संरक्षक हैं। भगवान् विष्णु के दस अवतार प्रसिद्ध हैं—१ मत्स्य, २ कूर्म, ३ वराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६ परशुराम, ७ राम, ८ कृष्ण, ९ बुद्ध और १० कल्कि।

मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह—ये चार अवतार भगवान् विष्णु के प्रारम्भिक रूप के प्रतीक हैं। पाँचवें अवतार 'वामन' के रूप में भगवान् विष्णु ने सारे विश्व को तीन पगों में नाप लिया था, जिसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। भगवान् विष्णु के महान् कार्यों का परिचय इन अवतारों से मिलता है। अन्य अवतारों—जमदग्नि-पुत्र परशुराम, दशरथ-नन्दन रामचन्द्र, वसुदेव-पुत्र श्रीकृष्ण और बुद्ध के द्वारा वैष्णव परम्परा का युग-युग में प्रतिपादन हुआ है। दसवाँ कल्कि अवतार भविष्य में होनेवाला है।

पुराणों में २४ अवतारों का भी उल्लेख है, जिससे उक्त दस अवतारों के अतिरिक्त १५ अन्य अवतार ज्ञात होते हैं—१ नारायण (विराट् पुरुष), २ ब्रह्मा, ३ सनक-सनन्दन-सनत्कुमार-सनातन, ४ नर-नारायण, ५ कपिल, ६ दत्तात्रेय, ७ सुयश, ८ हयग्रीव, ९ ऋषभ, १० पृथु, ११ हंस, १२ धन्वन्तरि, १३ मोहिनी, १४ वेदव्यास और १५ बलराम।

महा-भारत के अनुसार भगवान् विष्णु सर्वत्र व्याप्त हैं। वे सृष्टि के स्वामी हैं और आसुरी शक्तियों का संहार करते हैं। उनका एक नाम 'हरि' है, जिसका अर्थ है पापों और दुःखों को दूर करनेवाला। अथवा अज्ञान और उसके दुष्परिणामों को दूर करनेवाले 'हरि' है। दूसरा नाम 'शेष-शायी' या 'अनन्त-शायी' है। जब भगवान् विष्णु शयन करते हैं, तो सारा विश्व अव्यक्त अवस्था में पहुंच जाता है। व्यक्त सृष्टि के प्रतीक 'शेष' हैं, जो कुण्डली मारकर अनन्त जल-राशि पर तैरते रहते हैं। 'शेष-शायी विष्णु' का प्रसिद्ध नाम 'नारायण' है, जिसका अर्थ है 'नार' (जल) में आवास करनेवाले। अथवा जिनमें समस्त नरों का अयन (आवास) है, वे 'नारायण' कहलाते हैं।

विष्णु के दस स्वरूप प्रसिद्ध हैं—१ केशव : लम्बे केशवाले, २ नारायण : शेष-शायी, ३ माधव : माया-पति, ४ गोविन्द : पृथ्वी के रक्षक, ५ विष्णु : सर्व-व्यापक, ६ जनार्दन : भक्तों के रक्षक, ७ उपेन्द्र : इन्द्र के भाई, ८ हरि : दुःख, दारिद्रय, पाप आदि के हरण करनेवाले, ९ वासुदेव : अन्तर्यामी, १० कृष्ण : आकृष्ट करनेवाले। इनके अतिरिक्त राम : रमण-कर्ता और परशुराम भी लोक-प्रसिद्ध हैं।

भगवान् विष्णु के चार आयुध—१ शङ्ख, २ चक्र, ३ गदा, ४ पद्म और पीताम्बर प्रसिद्ध हैं। वाहन के रूप में 'गरुड़' प्रसिद्ध हैं, जो वैदिक मन्त्रों की शक्ति, गति और ज्योति के प्रतीक हैं। भगवान विष्णु के पार्षदों में विश्वक्-सेन (विश्व-विजेता) और अष्ट-विभूतियाँ प्रमुख हैं।

'महोपनिषद' के अनुसार 'नारायण' अर्थात् भगवान विष्णु ही अनन्त ब्रह्म हैं। उन्हीं से साख्य के २५ तत्व उत्पन्न हुए और शिव तथा ब्रह्मा उनके आश्रित देवता हैं, जो उनकी ध्यान-शक्ति से आविर्भूत हुए हैं।

भगवान् विष्णु के मन्त्र

१ त्र्यक्षर केशव : को ब्रह्मा तु समुद्दिष्टः, ईशः शो, वो हरिः स्मृतः, वर्ण-त्रयात्मको मन्त्रः—केशवः

'मेरु-तन्त्र'। मन्त्र के एक-एक अक्षर से क्रमशः षडङ्ग-न्यास और सम्पूर्ण मन्त्र से व्यापक न्यास।

ध्यान—शङ्ख-चक्रे हि शूले च त्वक्ष-मालां कमण्डलुं, भुजैष्षड्भिर्दधानं च रक्त-वर्णं सत्कटिम्।
अन्तर्वाह्योत्तरीयं च नाग-यज्ञोपवीतिनं, मयूर-मुकुटं रम्यं मकराकृति-कुण्डलम्॥

पुरश्चरण में ३ लाख जप कर मधुर-त्रय से होम। फल—इह लोक में सुख, मरने पर मोक्ष।

२ पञ्चाक्षर विष्णु : विष्णवे नम इत्येष मन्त्रः पञ्चाक्षरो मतः—विष्णवे नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता विष्णु। मन्त्र के एक-एक वर्ण और समस्त मन्त्र से षडङ्ग न्यास कर ध्यान करे—

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धरं लक्ष्मी-समावृतं, पीताम्बरं घन-श्यामं ध्यायेत् तं भूषणान्वितम्।

पुरश्चरण में पाँच-लाख जप कर त्रि-मधु से युक्त तिलों से होम।

प्रयोग—१ लाख पद्मों के होम से ऐश्वर्य-प्राप्ति, २ दूर्वा-होम से आरोग्य-लाभ, ३ तुलसी की मञ्जरी के होम से सभी कामनाओं की पूर्ति।

३ पञ्चाक्षर हरि : हरये नम इत्येष मन्त्रः पञ्चाक्षरो मतः—हरये नमः।

यह मन्त्र पापों को नष्ट कर देता है।

४ षडक्षर हरि : (१) श्री बीजाद्यश्च (पञ्चाक्षरः)—श्रीं हरये नमः। यह मन्त्र दारिद्रय-नाशक है। (२) लज्जा-बीजादिकश्च (पञ्चाक्षरः)—ह्रीं हरये नमः। यह मन्त्र भुक्ति-मुक्ति-दायक है। (३) ऐं-समन्वितः (पञ्चाक्षरः)—ऐं हरये नमः। यह मन्त्र ज्ञान-दायक है। (४) स (पञ्चाक्षरः) प्रणवाद्यः—ॐ हरये नमः। यह मन्त्र अज्ञान-नाशक है। (५) काम-पूर्वं (पञ्चाक्षरं)—क्लीं हरये नमः। यह मन्त्र वंश-वृद्धि-कारक है। (६) हुङ्कार-पूर्वकं (पञ्चाक्षरं)—हूं हरये नमः। इस मन्त्र से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'मेरु-मन्त्र'। उक्त पञ्चाक्षर हरि एवं षडक्षर हरि-मन्त्रों के ऋषि नारद, छन्द गायत्री और देवता हरि हैं। ध्यान—

मेघ-श्यामं सुनयनं काक - पक्ष - विराजितं, राधिकादि-प्रिया-युक्तं पर्यटन्तं वने वने।
विचित्र-परिधिं वंशीं दधतं वाम-दक्षयोः ।।

पुरश्चरण में आठ लाख जप और पञ्चामृत से होम।

५ षडक्षर गोविन्द : गोविन्दाय नमश्चेति षडर्णो मनुरीरितः—गोविन्दाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि शौनक, छन्द विराट्, देवता गोविन्द। मन्त्र के एक-एक वर्ण से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धरं ध्यायेत् किरीटिनं, गरुडोपरि-संस्थं च सनकाद्यैरुपासितम्।
लक्ष्मी-धराभ्यां सहितमुद्यदादित्य-कुण्डलं, लोक-रक्षा-करं दिव्यं दिव्य-माल्यानुलेपनम् ।।

पुरश्चरण मे एक लक्ष जप, उसका दशांश होम घृत से। फल—रोग-नाश।

प्रयोग—१ पत्नी-प्राप्ति के लिए लाजा से, धन-प्राप्ति के लिए बिल्व से, वस्त्र-प्राप्ति के लिए पुष्प से, आरोग्य-प्राप्ति के लिए तिल से होम करे।

२ रविवार के दिन नाभि-मात्र जल मे खड़े होकर १०८ बार जप करने से ज्वर-नाश।

६ अष्टाक्षर नारायण : तार नमः ब्रूयान्नरौ दीर्घ-समन्वितौ, पवनो णाय मन्त्रोऽयं प्रोक्तो वस्वक्षरः परः— ॐ नमो नारायणाय

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ १५८-१६८ मे पूरी विधि। 'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' मे उद्धार निम्न प्रकार है—'तारं नम पदं ब्रूयान्नारौ दीर्घ-समन्वितौ, पावनो नाम-मन्त्रोऽयं प्रोक्तो वस्वक्षरान्वितः।'

कवच मे 'अत्युल्काय' के स्थान पर 'धूल्काय', शेष 'हिन्दी तन्त्रसार'-वत्।

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'नमो नारायणायेति ताराद्यष्टाक्षरो-मनुः।' पञ्चाङ्ग-मन्त्र—१ कुब्जोल्क, २ महोल्क, ३ अविरक्तोल्क, ४ सहस्रोल्क, ५ स्वाहोल्क।

७ अष्टाक्षर हृषीकेश : १ काम-बीज हृषीकेशो ङे-हृदन्तो गजाक्षर —क्लीं हृषीकेशाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता हृषीकेश। 'क्लां क्लीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणं संस्मरेद् विभुं, गरुडोपरि-संविष्टं शुभ्र-वर्णं सुभूषणम्।

पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर घृताक्त कमलों से दशांश होम।

२ श्लोक-रूप मन्त्र : स्थाने हृषीकेश ! तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध-संघाः ।।

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि अर्जुन, छन्द अनुष्टुप्, देवता हृषीकेश। न्यास पूर्वोक्त मन्त्र-वत्, ध्यान—

प्रलयाब्धौ शेष-तल्पे लक्ष्मी-संवाहितांघ्रिकं, नाभि-पुष्कर-संस्थेन धात्रा स्तुतमरिन्दमम्।
पद्मं कौमोदकीं हस्तैर्दधतं दीप्त-तेजसं, पीताम्बर-धरं श्याममर्धोन्मीलित-लोचनम् ।।

क्रमाङ्क १४ मे लिखित श्रीधर-मन्त्र के समान जपादि।

८ अष्टाक्षर जनार्दन : जं जनार्दनाय नमो मन्त्रश्चाष्टाक्षरो मत —जं जनार्दनाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता जनार्दन। ध्यान—

वराभये चक्र-गदे दधतं पीत-वाससं, आलिङ्गितं च रमया नारदाद्यैरभिष्टुतम्।

अष्टाक्षर नारायण (क्रमाङ्क ६) मन्त्र-वत् जप होमादि।

९ नवाक्षर दामोदर : राधा-दामोदरायेति काम-बीजेन सम्पुटः, नवाक्षरो महा-मन्त्रो भोग-भाजा सु-सिद्धिदः—क्लीं राधा-दामोदराय क्लीं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि कामदेव, छन्द गायत्री, देवता राधा-दामोदर। काम-बीज से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

राधा-दामोदरः साक्षाद् भुक्ति-मुक्ति-फल-प्रदः, पीताम्बर-धरं श्यामं नानालङ्कार-भूषितम्।
व.मोत्सङ्ग-गतां राधां चालिङ्गन्तं मुदान्वितं, ध्याने संस्मरेद् देवं नाना-पुष्प-लता-युतम्।

पुरश्चरण में नौ लाख जप कर घृताक्त तण्डुलो से होम करे।

१० द्वादशाक्षर माधव : रमां बिन्दु-पदं चोक्त्वा माधवाय नमो नमः, द्वादशार्णो महा-मन्त्रः—**रमां बिन्दु-माधवाय नमो नमः**

'मेरु-तन्त्र'। पञ्चाङ्ग-न्यास क्रमशः मन्त्र के ५ पदो से कर ध्यान करे—

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धर पीताम्बरावृतं, बद्धाञ्जली रमा वामे वादयन्ती च वल्लकीम्।
नारदस्तुम्बुरुर्दक्ष-भागे तैरपि संयुतं, प्रसन्न-वदनं ध्यायेद् वर- दान - समुद्यतम्॥

पुरश्चरण में दन्त-लक्ष जप कर होम करे। फल—शान्त्यादि-गुण-सम्पन्न हो धनवान् होता है और अन्त मे मुक्ति प्राप्त करता है।

११ द्वादशाक्षर वासुदेव : प्रणवो हृद् भगवते वासुदेवाय, द्वादशाक्षरो मन्त्रः—**ॐ नमः भगवते वासुदेवाय**

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा'। हिन्दी तन्त्रसार, पृष्ठ २०४ में पूरी विधि दी है। 'मेरु-तन्त्र' में उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है, यथा—'तारो नमो भगवते वासुदेवाय।' ध्यान भी भिन्न बताया है, यथा—

दुग्धाम्भोधौ सित - द्वीपे दिव्य - योषा - विराजिते, तत्रास्तेऽसौ महा-रम्ये सर्वर्तु-द्रुम-संकुले।
तत्र कल्पद्रुमाधस्ताद् रत्न - मञ्चे तु पङ्कजं, स्वर्णाभं चिन्तयेत् तत्र वासुदेवं स्मिताननम्॥
चन्द्र - कान्ति शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-लसत् - करं, श्रीवत्साङ्गद-केयूर - मुकुटं चारु - कुण्डलम्।
स-कौस्तुभं पीत-वस्त्र धृत-ग्रैवेयकं कर्णं, सनकाद्यैः सिद्ध-सिद्ध - विद्याधर - गन्धर्व - सेवितम्॥

१२ त्रयोदशाक्षर मधुसूदन : तारो नमो भगवते ङेऽन्तश्च मधु-सूदनः, त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः—**ॐ नमो भगवते मधु-सूदनाय**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता भगवान् मधु-सूदन। मन्त्र के चार पदो और सम्पूर्ण मन्त्र से पञ्चाङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

नाभि-पद्म-स्थित-विधि शङ्ख-चक्र-गदा-धरं, पीताम्बरं घन-श्यामं मधु-कैटभ-मारकम्।

पुरश्चरण मे चार लाख जप, दशांश होम त्रि-मधु-युक्त पद्मो से।

१३ चतुर्दशाक्षर लक्ष्मी - वासुदेव : हृल्लेखा - बीज - युगलं रमा - बीज - द्वय तथा, लक्ष्म्यन्त-वासुदेवाय हृदन्तः प्रणवादिकः। चतुर्दशाक्षरः प्रोक्तो मन्त्रोऽयं सुर-पादपः—**ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी-वासुदेवाय नमः**

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २०४ में पूरी विधि। 'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है, यथा—'तारं माया-द्वयं लक्ष्मी-द्वयं लक्ष्मी-पदं वदेत्, वासुदेवाय हृदय शक्र-वर्ण-स्मृतो मनुः।' इसके सिवा 'नारद' के स्थान पर 'प्रजापति' को ऋषि बताया है। ध्यान भी भिन्न दिया है, यथा—

उद्यत्-सौदामिनी-कान्तिं नाना-भूषण-भूषितं, लक्ष्यालिङ्गनतश्चैकीभूतं चाङ्क-गतां हि ताम् ।
पुस्तकं दर्पणं पद्मं रत्न - कुम्भं रमां करैः, दधतीं शङ्ख - चक्राब्ज-गदा - हस्तं गदा-धरम् ।।

१४ षोडशाक्षर श्रीधर : रमां शक्ति काम-बीजं श्रीधराय ततो वदेत्, त्रैलोक-मोहनायेति नमोऽन्त. षोडशाक्षरः—**श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीधराय त्रैलोक्य-मोहनाय नमः**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता श्रीधर । 'श्रां श्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

दुग्धाब्धौ च सिते द्वीपे सर्वर्तु-फलित-द्रुमे, तत्र कल्पद्रुमाधस्तात् पक्षीन्द्र-रचितासने ।
शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-पाणिं चामीकर-द्युतिं, किरीटिनं कुण्डलिनं श्रीवत्साङ्कित-वक्षसम् ।
हृदि लक्ष्मी-धरं ध्यायेच्छ्री-धरं पुरुषार्थदम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृत से दशांश होम करे ।

१५ षोडशाक्षर हरिहर : तारो माया प्रासादं शङ्कर-नारायणाय नमः प्रासादं माया तारः—**ॐ ह्रीं ह्रौं शङ्कर-नारायणाय नमः ह्रौं ह्रीं ॐ**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २१५ में पूरी विधि दी है । 'मेरु-तन्त्र' में उद्धार भिन्न दिया है, यथा—'प्रणवं चापि हृल्लेखा ह्रों बीजं शङ्करेति च, नारायणाय च नमो ह्रों ह्रीं ॐ षोडशाक्षरः ।' इस उद्धार के अनुसार उक्त मन्त्र के 'ह्रौं' बीज के स्थान पर 'ह्रों' का निर्देश है । इसी प्रकार ध्यान मे भी दो पाठान्तर है, यथा—१ पाञ्चजन्यमभीतिं : पाञ्चजन्यमभयं, २ स्व-स्व-भूपाच्छ-लीलार्धं : स्व-स्वरूपार्धं-नीलार्धं । साथ ही 'नारद' के स्थान पर 'नारायण' को इस मन्त्र का ऋषि बताया गया है और पुरश्चरण में १६ लाख जप कर तिल-तण्डुल से दशांश होम करने का निर्देश दिया है ।

१६ विंशत्यक्षर त्रि-विक्रम : तारं नमो भगवते व्याहृति-त्रितयं वदेत्, व्यापकाय-पदं पश्चान्ङेऽन्तं चापि त्रि-विक्रमं, विंशत्यर्णो महा-मन्त्रो गत-राज्य-प्रदायकः—**ॐ नमो भगवते भूर्भुवः स्वः व्यापकाय त्रि-विक्रमाय**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि बालखिल्य, छन्द गायत्री, देवता विश्व-रूप त्रि-विक्रम । मन्त्र के पाँच पदो और सम्पूर्ण मन्त्र से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

दक्षांघ्रि-व्याप्त-पातालं वामांघ्रि-व्याप्त-भूतल, दक्षिणं पुनरुत्थाप्य स्वर्ग-व्याप्त-करं हरिं ।
बलि-दत्तैः कुश - तिलैस्तोयैः सम्प्रस्रवत्-करं, अभयं वाम-हस्तेन कुर्वन्तं च सुरेश्वरं ।
गङ्गौघ-धौत-पादाब्जं ध्यायेद् ब्रह्मादिकैः स्तुतम् ।।

पुरश्चरण मे बीस लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त तिल-तण्डुल-सर्षप से होम ।

१७ पञ्च-विंशाक्षर सङ्कर्षण : काम-बीज समुच्चार्य ङेऽन्तं त्रैलोक्य-मोहनं, ततश्चाप्रति-रूपाय च वदेत् पदम् । सङ्कर्षणात्मने हृच्च पञ्च-विंशाक्षरो मनुः—**क्लीं त्रैलोक्य-मोहनाय अप्रति-रूपाय पराय सङ्कर्षणात्मने नमः**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि त्रैमुनि, छन्द मित, देवता सङ्कर्षण । मन्त्र के छः पदो से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

अंकुशं दक्षिणे हस्ते वामेनामयमेव च, मेघ - श्यामं पीत - वासो नानाभरण - संयुतम् ।
नारदादि-युतं ध्यायेद् वाणी-लक्ष्म्यौ च पार्श्वयोः, सुवर्णमय्ये विपिने स्थितं कल्पद्रुमावृतेः ।।

पुरश्चरण मे नौ लाख जप कर, त्रि-मधु-युक्त तिलो से होम करे ।

अन्य मन्त्र

मत्स्यावतार

१ द्वादशाक्षर मत्स्य : तारो नमो भगवते म मत्स्याय रमा वदेत्, द्वादशाक्षर मन्त्रोऽय भुक्ति-मुक्ति-प्रदायकः—ॐ नमो भगवते मं मत्स्याय श्रीं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता मीन-विग्रह भगवान् रमा-नाथ, बीज 'श्री', कीलक 'म'। ध्यान—

नात्यधोरो हि न सम आकण्ठं वा नराकृति, घन-श्यामश्चतुर्बाहुः शङ्ख-चक्र-गदा-धरः।
शृङ्गि-मत्स्य-निभो मूर्ध्नि लक्ष्मीर्वक्षसि राजते, पद्म-चिह्नित-सर्वाङ्गः सुन्दरश्चारु-लोचनः॥

पुरश्चरण मे १२ सहस्र जप और त्रि-मधु-युक्त तिलो से होम।

कूर्मावतार

१ द्वाविंशत्यक्षर कूर्म : तारो नमो भगवते कुं कूर्माय धरा-धर-धुरन्धराय नत्यन्तः सिद्ध-वर्णों मनुः स्मृतः—ॐ नमो भगवते कुं कूर्माय धराधर-धुरन्धराय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि कश्यप, छन्द प्रकृति, देवता कच्छप-रूप भगवान् विष्णु, बीज 'क'। मन्त्र के वर्णों से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

शङ्ख-चक्र-गदा-धरं पीताम्बरं कूर्म-पृष्ठं लसल्लांगूल-शोभितं। दीर्घ-ग्रीव महा-ग्राहं गिररतं रक्त-लोचनम्॥

पुरश्चरण मे ४ लाख जप और घृत से होम।

वराहावतार

१ एकाक्षर वराह : इमित्येकाक्षरो मन्त्रो वराहस्य प्रकीर्तितः—इं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि हयग्रीव, छन्द अनुष्टुप्, देवता वराह।

ध्यान अष्टाक्षर वराह-वत्।

२ अष्टाक्षर-वराह : ॐ भूर्वराहाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द जगती, देवता वराह। मन्त्र के चार पदो और सम्पूर्ण मन्त्र से पञ्चाङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

कृष्णाङ्गं नील-वस्त्रं च मलिने पद्म संस्थितं, पृथ्वी-शक्ति युतं ध्यायेच्छङ्ख-चक्राम्बुज गदाम्।
भू-लक्ष्मी-कान्तिभिश्चैव समस्तैः परिवारितं, चर्मासि-मद्भिश्च कलौ द्रुत-सिद्धि - प्रदायकम्॥

३ त्रयोत्रिंशत्यक्षर वराह : तारो नमो भगवते वराहेति च सवदेत्, रूपाय भूर्भुवः सुवः पतये भूपतोति च। त्व मे देहि दापयेति स्वाहान्तः सुर-वर्णकः—ॐ नमो भगवते वराह-रूपाय भूर्भुव सुव पतये भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि भार्गव, छन्द अनुष्टुप्, देवता वराह। मन्त्र के ७, ६, ७, ५, ८ अक्षरो से पञ्चाङ्ग न्यास कर ध्यान करे। यथा—

पादाग्राज्जानु-पर्यन्तं स्वर्णाभं च ततः स्मरेत्, आनाभि-कर्पूर-निभं नाभिस्तु गलावधि।
अग्नि-वर्णं मस्तके च पूर्ण - चन्द्र-सम-द्युति, शङ्खारि-खड्गांश्च गदा वर-शक्ती तथैव च।
अभयं दष्ट्रया क्षोणीं दधतं श्वसनेऽनिलं, वागीशां हूं-कृती बाह्वोश्चन्द्र-सूर्यौ शिवं मुखे॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त पद्मो से होम अथवा बिल्व-वृक्ष मे समीप १२ हजार जप कर दशांश होम करे।

उक्त मन्त्र का उद्धार 'मन्त्र-कोष' में भिन्न दिया है, यथा—'तारं नमो भगवते वराह-पदमीरयेत्, रूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात् पतये तदनन्तरं। भू-पतित्वं मे तदन्ते देह्यन्ते च ददापय, वह्नि-जायावधिर्मन्त्रः स्यात् त्रयस्त्रिंशदक्षरः—ॐ नमो भगवते वराह-रूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भू-पतित्वं मे देहि ददापय स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ २१६ मे इस मन्त्र की पूरी विधि दी है, जिसमें देवता का नाम 'आदि-वराह' बताया है और ध्यान भी भिन्न दिया है, जो वहाँ द्रष्टव्य है।

४ ऊनविंशति धरा-हृदय : ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणी धरा, धूपे स्वाहेति मन्त्रोऽयमूनविंशति-वर्णकः—ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणी धरा धूपे स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वराह, छन्द निवृत्, देवता धरा। मन्त्र के ३, ७, ३, २, २, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

इन्दीवर-युतां शालि-मञ्जरीं दधतीं शुकं, धरां पद्मासीनां ध्यायेन्नाना-भूषण-भूषिताम्।

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृत-सिक्त ओदन (चावल) मे होम।

५ चतुर्विंशाक्षर धरा—ॐ ल्हो ग्लौ नमः प्रोच्य भगवत्यै पदं वदेत्, धरायै धरणी प्रोच्य धरे-युग्माग्नि-गेहिनी। ग्लौं ह्रीं तारं समुच्चार्य चतुर्विंशाक्षरो मनुः—ॐ लं ग्लौं नमः भगवत्यै धरायै धरणि-धरे धरे स्वाहा ग्लौं ह्रीं ॐ

'मेरु-तन्त्र'। ध्यानादि पूर्ववत्।

नृसिंहावतार

१ एकाक्षर नृसिंह : 'क्ष'-कारो वह्निमारूढो मनु-विन्दु-समन्वितः, एकाक्षरो मनुः प्रोक्तः सर्व-काम-फल-प्रदः—क्ष्रौं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २१४। 'मेरु-तन्त्र' मे इस मन्त्र के देवता का नाम 'नृहरि' बताया है और पुरश्चरण मे केवल एक लाख जप का निर्देश किया है। दशांश होम घृताक्त पायस से बताया है।

२ षडक्षर नृसिंह : पाश शक्तिर्नर-हाररंकुशो वर्म फट् मनुः, षडक्षरो नर-हरेः कथितः सर्व-कामद—आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट्

'हिन्दी-तन्त्रसार' पृष्ठ २१३। 'मेरु-तन्त्र' मे इस मन्त्र को भिन्न रूप में दिया है—'आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट्'। ध्यान भी भिन्न दिया है, यथा—

भीषणास्यः क्रोध-दीप्तो रक्त-वर्णेन्दु-शेखरः, सोम-सूर्याग्नि-नेत्रश्च नाना-मणि-विभूषितः।
दक्षाद्यूर्ध्व-क्रमेणैव चक्र-शङ्खौ गुणांकुशौ, वज्रं गदां धारयन्तं द्वाभ्यां दैत्येश्वरोदरम्॥

३ अष्टाक्षर नृसिंह : जय-द्वयं समुच्चार्य श्रीपूर्वो नृसिंह इत्यपि, अष्टाक्षरो मनुः प्रोक्तो भजतां कामदो मनुः—जय जय श्रीनृसिंह

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २१५ मे द्रष्टव्य।

४ अष्टाक्षर लक्ष्मी नृसिंह : ॐ श्री लक्ष्मी-नृसिंहाय मनुरष्टाक्षरो मतः—ॐ श्रीं लक्ष्मी-नृसिंहाय

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि प्रजापति, छन्द लक्ष्मी, देवता नृहरि। 'क्षां क्षीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान षडक्षर-मन्त्र-वत्। पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर घृताक्त पायस से दशांश होम।

५ दशाक्षर नृसिंह : ॐ क्ष्रौं महा-नृसिंहाय नमोऽन्तो दश-वर्णकः—ॐ क्ष्रौं महा-नृसिंहाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वामदेव, छन्द विराट्, देवता नृसिंह। ध्यानादि अष्टाक्ष लक्ष्मी-नृसिंह-वत।

६ त्रयोदशाक्षर नृसिंह : ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नरसिंहाय मन्त्रकः, त्रयोदशार्ण उद्दिष्टो भुक्ति-मुक्ति-प्रदायक.— ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नरसिंहाय

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वामदेव, छन्द जगती, देवता नरसिंह। ध्यानादि षडक्षर-वत्।

७ ऊनविंशाक्षर सुदर्शन नृसिंह : तार सहस्रार-ज्वाला-वर्तिने क्ष्रौं हन-द्वयं, हुं फट् स्वाहा चोन-विंश-वर्णो मन्त्र उदीरित.—ॐ सहस्रार-ज्वाला-वर्तिने क्ष्रौं हन हन हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि जयन्त, छन्द गायत्री, देवता सुदर्शन नृसिंह। 'चक्र-राजाय हृदयाय नमः, ज्वाला-चक्राय शिरसे स्वाहा, जगच्चक्राय शिखायै वषट्, असुरान्तक-कवचाय हुं, सुदर्शन-चक्राय अस्त्राय फट्' से पञ्चाङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

चतुर्भुजं निवृत्तास्य चतुश्चक्र-धरं हरिं, तप्त-काञ्चन-सङ्काशं त्रिनेत्रं चाद्य-विग्रहम्।
ध्यायेत् समस्त-दुःखघ्नं तादृग् लक्ष्म्या समन्वितम्॥

पुरश्चरण मे बारह लाख जप कर तिलो से दशांश होम करे।

८ द्वा-त्रिंशदक्षर नृसिंह : उग्रं वीरं वदेत् पूर्वं महा-विष्णुमनन्तरं, ज्वलन्तं पदमाभाष्य सर्वतोमुख-मीरयेत्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं वदेत् ततः, नमाम्यहमिति प्रोक्तो मन्त्र-राजः सुर-द्रुमः—उग्रं वीरं महा-विष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहं

'मन्त्र-कोष'। 'मेरु-तंत्र' मे 'भद्रं' के स्थान पर 'रुद्रं' है, इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता नृहरि बताये हैं। साथ ही काम्य-कर्म के अनुसार पाँच प्रकार के ध्यान दिये है। यथा—

उद्यत्-सहस्रार्क-भासं भीषणाकृति, वज्र-तुल्येक्षणं वह्नि-कान्तिं नाना-भुजैर्वृतम्।
नखैर्दारित-दैत्येशं रक्त-धाराक्त-कायकं, क्रूर-कर्मादि-विषये स्मरेदेवं भयानकम्॥ १॥
नृसिंहं तं महा-भीमं कालानल-सम-प्रभं, अन्त्र-माला-धरं रौद्रं कण्ठे हारेण शोभितम्।
नाग-यज्ञोपवीतं च पञ्चानन-सुशोभितं, चन्द्र-मौलिं नील-कण्ठं प्रति-वक्त्रे त्रिलोचनम्।
भुजैः परिघ-सङ्काशैर्दशभिश्चोप-शोभितं, अक्ष-सूत्रं गदां पद्मं शङ्खं गोक्षीर-सन्निभम्।
धनुश्च मुसलं चैव बिभ्राणं चक्रमुत्तमं, खड्गं शूलं च बाणं च नृहरिं रुद्र-गोपनम्।
इन्द्र-नीलक-नीलाभं चन्द्राभं वर्ण-सन्निभं, पूर्वोदयोत्तर-ज्वालादूर्ध्वास्यं सर्व-वर्णकम्।
एवमुग्र-हरिं ध्यायेत् सर्व-व्याधि-निवृत्तये॥ २॥
नृसिंहः सर्व-लोकेश सर्वाभरण-भूषितः, द्वौ विदारण-कर्माणौ द्वौ जनोद्धरण-क्षमौ।
शङ्ख-चक्र-धरौ रम्यावन्यौ बाण-धनुर्धरौ, खड्ग-खेटक-धरावन्यौ द्वौ गदा-पद्म-धारिणौ।
पाशांकुश-धरावन्यौ द्वौ रिपोर्मुकुटार्पितौ, इति षोडश-दोर्दण्ड-मण्डितं नृहरिं विभुम्।
ध्यायेदम्बुज-नीलाभमुग्र-कर्मण्यनन्य-धीः॥ ३॥
नृसिंहः सर्व-भूपाढ्य सर्व-सिद्धि-करः प्रभुः, दक्षिणे खड्ग-चक्रे च परशुं पाशमेव च।
हलं च मुसलं सम्यगभयं चांकुशं तथा, पट्टिशं भिन्दिपालं च खेट-तोमर-मुद्गरान्।
वाम-भाग-करैः शङ्खं पाशं च शूलकं, हुताशन-वरं शक्तिं सम्यङ् मृण्मय-कुण्डिकाम्।
कार्मुकं तर्जनी-मुद्रां गदां डमरुमप्यथकान्, कर-द्वन्द्वैः क्रमाच्चद्वोर्जानु-मस्तक-पत्तलम्।
ऊर्ध्वीकृताभ्यां हस्ताभ्यां चान्त्र-माला धरं हरिं, अधः स्थिताभ्यां हिरण्यक-विदारणम्।
प्रियङ्करं च भक्तानां दैत्यानां च भयङ्करं, नृसिंहं संस्मरेन्नित्यं महा-मृत्यु-भयापहम्॥४॥

विष-रोग-भियां मृत्योर्हरं शत्रु-भयापहं, स्वर्णौघ-तुल्य-गरुडे स्थितं पूर्णेन्दु-चन्द्रकम् ।
सुमुखं विद्युदाभासं नेत्र-त्रय-विराजितं, सुभूषं पीत-वसनं शङ्ख-चक्राभय-वरान् ।
धारयन्तं चतुर्भिश्च करैः क्षेत्रादि-नाशकं, अप-मृत्यु-महा-कृत्या-नाशकं नृहरिं स्मरेत् ।।५।।

'शारदा-तिलक' में भी उक्त उद्धार दिया है। उसमें देवता का नाम 'नर-सिंह', बीज 'हं' और शक्ति 'रं' बताया है। मंत्र के ४, ४, ८, ६, ६, ४ अक्षरों से अङ्ग-न्यास। ध्यान वही दिया है, जो 'हिन्दी तन्त्रसार' के ३४ अक्षर मन्त्र (क्रमाङ्क ८) का है, उसमें एक पाठान्तर है—शङ्ख-चक्रमनिशं : चक्र-शङ्ख-मनिशं।

९ त्रयस्त्रिंशदक्षर लक्ष्मी-नृसिंह : ॐ श्री ह्री श्री जय लक्ष्मी-प्रियाय नित्य-शब्दतः, प्रमुदित-पदं प्रोच्य चेतसे च ततो वदेत्। लक्ष्मी-श्रितार्ध-देहाय श्री ह्री श्री च ततो नमः, देव-वर्णो मनुः प्रोक्तो जपतां सर्व-कामदः।—ॐ श्रींह्रींश्रीं जय लक्ष्मी-प्रियाय नित्य-प्रमुदित-चेतसे लक्ष्मी-श्रितार्ध-देहाय श्रीं ह्रीं श्रीं नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि प्रजापति, छन्द अनुष्टुप्, देवता लक्ष्मी-नृसिंह, बीज 'श्री'। 'श्रां श्री' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर बारह नामों से 'पञ्जर' (कवच) पाठ करे। यथा—

पुरस्तात् केशवः पातु शङ्ख - चक्र-गदा-धरः, पश्चान्नारायणः शश्वन्नील - जीमूत-सन्निभः ।
इन्दीवर-दल-श्याम ऊर्ध्वं मे माधवो गदी, गोविन्दो दक्षिणे पार्श्वे धन्वी चन्द्र-प्रभो महान् ।
उत्तरे हल-धृग् विष्णुः पद्म-किञ्जल्क-सन्निभः, आग्नेयामरविन्दाक्षो मुसली मधु - सूदनः ।
त्रि-विक्रमः खड्ग-पाणिर्नैरृत्यां ज्वलन-प्रभुः, वायव्यां वामनो वज्री तरुणादित्य-दीप्तिमान्।
ऐशान्यां पुण्डरीकाक्षः श्रीधरः पट्टिशायुधः, विद्युत्-प्रभो हृषीकेशो वायव्यां दिशि मूर्द्धनि ।
हृत्पद्मं पद्म - नाभो मे सहस्रार्क - सम-प्रभः, सर्वायुधः सर्व - शक्तिः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ।
इन्द्रु-गोपक-सङ्काशः पाश - हस्तोऽपराजितः, स-बाह्यान्तरं देहं व्याप्य दामोदरः स्थितः ।
एवं सर्वत्र निश्छिद्रं नाम-द्वादश-पञ्जरं, प्रविष्टोऽहं न मे किञ्चिद् भयमस्ति कदाचन ।।

इसके बाद लक्ष्मी-नरहरि का ध्यान करे, यथा—

सर्पेन्द्र-भोग-शयनः सर्पेन्द्राभोग-छत्र-वान्, आलिङ्गितश्च रमया दीप्त-भासेन्दु-सन्निभः ।
पद्म-चक्र-वराभीति-धरस्त्र्यक्षेन्दु-शेखरः ।

पुरश्चरण में तीन लाख साठ जप कर मध्वक्त मल्लिका पुष्पों से दशांश होम।

१० चतुस्त्रिंशदक्षर—हृल्लेखा-सम्पुटश्चैतत् (द्वा-त्रिंशदक्षर-मन्त्रं) तु सर्व - काम - फल-प्रदः—
ह्रौं उग्रं वीरं महा-विष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहं ह्रौं

'मन्त्र-कोष'। यह मन्त्र क्रमाङ्क ८ का ही विकसित रूप है। 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २११-१२ में इस मन्त्र की पूरी विधि प्रकाशित है।

११ अष्टा-षष्ट्यक्षर ज्वाला-माला नृसिंह : ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नारसिंहाय संवदेत्, ज्वालेति मालिने दीप्त-दंष्ट्रायाग्नि-पदं वदेत्। नेत्राय सर्व-रक्षोघ्नाय सर्व-पदमुच्चरेत्, भूत-विनाशनो ङेऽन्तः सर्व-घोर-विनाशनः। ङेऽन्त एव द्विर्दहेति पच रक्ष-युगं तथा हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं षष्टि-षट्काक्षरी मतः—
ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नारसिंहाय ज्वाला-मालिने दीप्त-दंष्ट्राय अग्नि-नेत्राय सर्व-रक्षोघ्नाय सर्व-भूत-विनाशनाय सर्व-घोर-विनाशनाय दह दह पच पच रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' के उक्त उद्धार के अनुसार यह मन्त्र ६६ अक्षरोंवाला है, किन्तु वास्तव में यह है ६८ अक्षरों वाला। ऋषि प्रजापति, छन्द गायत्री, देवता हरि। ध्यान—

उद्यत्-कालानल-निभं प्रलयाब्द-सम-स्वनं, शङ्खं चक्रमसिं खेटं दधानं दैवत-स्तुतम् ।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दशांश होम कपिला-घृत से ।

'शारदातिलक' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न रूप में दिया है। यथा : 'बीजं नमो भगवते नरसिंहाय तत्-परं, स्याज्ज्वाला-मालिने पश्चाद् दीप्त - दंष्ट्राय तत्-परं। अग्नि-नेत्राय सर्वादि रक्षोघ्नाय पदं वदेत्, सर्व-भूत-विनाशान्तं नकारो दीर्घवान् महत् । सर्व-ज्वर-विनाशान्ते नायाणौ दह-युग्मकं, पच-द्वयं रक्ष-युग्मं हुं फट् स्वाहा ध्रुवादिकः। सप्त - षष्टचक्षरैः प्रोक्तो ज्वाला-माली महा-मनुः।' इस उद्धार के अनुसार मन्त्र मे दो पाठान्तर हैं—१ नारसिंहाय : नरसिंहाय, २ सर्व-घोर : सर्व-ज्वर ।

ऋष्यादि भी भिन्न बताये है। यथा—ऋषि ब्रह्मा, छन्द अति, देवता ज्वाला-माली नृसिंह, बीज क्ष्रौं, शक्ति स्वाहा। मन्त्र के १३, १०, ११, १८, १२, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। यहाँ भी मन्त्राक्षर ६७ बताए हैं, जो ठीक नहीं है। 'शारदातिलक' के टीकाकार ने भी इस त्रुटि की ओर संकेत किया है। अंग-न्यास में मन्त्र के अक्षरों का जो निर्देश किया गया है, उससे भी पुष्टि होती है कि यह मन्त्र ६८ अक्षरों-वाला है।

'शारदातिलक' में ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

उज्ज्वलत्-प्रलयानलाभमयुग्म-नेत्रमनारतं, भासुरं शिखिनः शिखाभिरुदग्र-दंष्ट्र-मुखाम्बुजम् ।

रक्षसां भयदं विकीर्ण-सटा-कलाप-विभीषणं, शङ्ख-चक्र-कृपाण-खेटक-धारिणं नृ-हरिं भजे ॥

वामनावतार

१ अष्टादशाक्षर वामन : *ॐ नमो विष्णवे ब्रूयात् सुरान्ते पतये महा, बलाय वह्नि-गृहिणी धृति-वर्णो मनुर्मतः*—ॐ नमो विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि इन्दु, छन्द विराट्, देवता वामन। मन्त्र के १, २, ३, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ज्वलन्मयूख-कनकच्छत्राधः पुण्डरीकगं, पूर्ण-चन्द्र-निभं ध्यायेच्छ्री-भूम्याश्लिष्ट-पार्श्वकम् ।

द्वीप्वंगुल्युच्छ्रायामो मयूख-स्फटिक-प्रभः, दध्यन्नं वाम-हस्तेन स्वर्णस्य चषकं दधत् ॥

पीयूष-पूर्ण-स्वर्णस्य कलशं दक्षिणे दधत् ।

पुरश्चरण में एक लाख जप और दशांश होम पायस से ।

'मन्त्र-कोष' में उक्त मन्त्र 'दधिवामन' के नाम से दिया है। उद्धार भी भिन्न शब्दों में है : तारा हृद् विष्णवे पश्चात् ङेऽन्तं सुर-पतिर्भवेत्, महा-बलाय ठ-द्वन्द्वं मनुरष्टादशाक्षर ।

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ २०६ मे इस मन्त्र की विधि द्रष्टव्य है। 'शारदातिलक' में उद्धार 'मन्त्र-कोष' के समान है और ध्यान 'हिन्दी तन्त्रसार' के समान, जिसमे एक पाठान्तर है—द्वितीय चरण में 'निवहैः' के स्थान पर 'निकरैः'। इन दोनों में देवता का नाम 'दधि-वामन' बताया है।

२ द्वा-विंशत्यक्षर सर्वज्ञेश्वर-वामन : ॐ क्लीं श्रीं वं समायोज्य पूर्व-मन्त्रो (अष्टादशाक्षरः) मनुर्मतः—ॐ क्लीं श्रीं वं ॐ नमो विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि च्यवन, छन्द गायत्री, देवता सर्वज्ञेश्वर वामन। ध्यान—

कर्पूर-धवलं देवं निविष्टं सरसीरुहे, प्रसन्नं च सुनेत्रं च चारु-स्मित - मनोहरम् ।

दण्डं चामृत-कुम्भं च शरच्चन्द्र-सम-प्रभं, दधि-मस्तं सोपदेशं मधु-पात्रं पवित्रकम् ।

चिन्तयेज्जगतां नाथं सर्वस्यार्ति-हरं हरिम् ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप और दशांश होम पायस से ।

३ द्वा-विंशत्यक्षर भोग-वामन : तारो नमो भगवते विष्णवे च दशाक्षरः, संयुक्तः पूर्व-मन्त्रः (अष्टादशाक्षरः) भवेद् द्वा-विंशदर्णकः—**ॐ नमो भगवते विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि कपिल, छन्द गायत्री, देवता भोग-वामन । मन्त्र के ३, ४, ३, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

नील-वर्णश्चतुर्बाहुः शङ्ख-चक्र-गदाब्ज-भृत्, सर्वान् भोगान् ददात्येष भक्तानां भोग-वामनः ।

पुरश्चरण में एक लाख जप और दशांश होम पायस से ।

४ द्वा-विंशत्यक्षर बालक-वामन : १ तारो हृदय-माये च बालकान्ते विष्णो पदं, पूर्व-मन्त्राग्रिमाद् वर्णाद् द्वाविंशत्यक्षरो मनुः—**ॐ नमः ह्रीं बालक-विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । मन्त्र के ३, १, ६, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

पीताम्बरोत्तरीयोऽसौ मौञ्जी-कौपीन-घुग्घरिः, कमण्डलुं च दध्यन्नं दण्डं छत्रं करैर्दधत् ।
यज्ञोपवीती नीलाभो ध्यातव्यश्छद्म-वामनः ।

पुरश्चरण में एक लाख जप और दशांश होम पायस से ।

५ त्रयो-विंशत्यक्षर बलि-वामन : तारो नमो भगवते वदेच्च बलि-वामनं, सर्वापत्ति-पदं प्रोच्य ङेऽन्तं विनाशनं वदेत् । ततः श्री-बीजमाभाष्य त्रयो-विंशति-वर्णकः—**ॐ नमो भगवते बलि-वामनाय सर्वापत्ति-विनाशनाय श्रीं**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वाङ्, छन्द जगती, देवता बलि-वामन । मन्त्र के छः पदों से षडङ्ग-न्यास । ध्यानादि पूर्व-वत् ।

६ षड्-विंशत्यक्षर माया-बालक-वामन : तारो नमो भगवते माया-बालेति विष्णवे, तदग्रिमे पूर्व-मन्त्रः षड्-विंशत्यक्षरो मनुः—**ॐ नमो भगवते माया-बाल-विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, बीज ॐ, शक्ति स्वाहा, देवता श्रीमाया-बालक-वामन मन्त्र के ३, ४, ७, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान, पुरश्चरणादि पूर्ववत् ।

७ द्वा-त्रिंशदक्षर वामन : तारो नमो भगवते बलि-सर्वस्व-हारिणे, अमुकं देहि ममाभीष्टमनेकं च वामन । मायां रमा समुच्चार्य मन्त्रो द्वा-त्रिंशदर्णकः—**ॐ नमो भगवते बलि-सर्वस्व-हारिणे अमुकं देहि ममाभीष्टमनेकं वामन ह्रीं श्रीं**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि काम, छन्द अनुष्टुप्, देवता वामन । मन्त्र के ७, ८, १२, ३, १, १ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

प्रगृह्णन्तं बलिं चार्थान् हर्षेण ददतं बलिं, पूर्ण-कामावुभौ ध्यायेदति-प्रीति-समन्वितौ ।

पुरश्चरण में एक कोटि जप कर, मधुर-त्रय-युक्त बिल्व-फलों से एक लक्ष होम करे । अथवा दिन-रात सतत मन्त्र का जप करे, तो सर्वाभीष्ट की पूर्ति होती है ।

परशुरामावतार

१ चतुर्विंशत्यक्षर परशुराम गायत्री : **ब्रह्म - क्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि भरद्वाज, छन्द गायत्री, देवता श्रीमान् परशुराम । मन्त्र के ८, ५, ३, २, २, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान तीन प्रकार के हैं—

१ सात्विक श्वेत-वर्णं च भस्मोद्धूलित-विग्रहं, किरीटिनं कुण्डलिन वर स्वक्ष-वराभयान् ।
करैर्दधानं तरलं विप्र क्षत्र-वधोद्यत, पीताम्बर-धर काम-रूप बाला-निरीक्षितम् ।।
२ ध्यायेच्च तामसं क्षत्र-रुधिराक्त-परश्वधं, आरक्त-नेत्रं कर्णस्थ-ब्रह्म-सूत्रं यम-प्रभम् ।।
३ धनुष्टङ्कार - निर्घोष - सन्त्रस्त - भुवन-त्रय, चतुर्बाहुं मुसलिन राजस क्रुद्धमेव च ।।

पुरश्चरण मे २४ लाख जप कर, दशाश होम सिताढ्य-घृत-पायस से। यहाँ उल्लेखनीय है कि सात्विक रूप का ध्यान कर वैदिक गायत्री के प्रथम पाद का जप कर उक्त परशुराम-गायत्री का जप करे और पुरश्चरण पूर्ण करे, तो सन्तान, विवाह, कृषि हेतु वर्षा, धन-सम्पत्ति, वाक्-सिद्धि आदि कामनाएँ पूर्ण होती हैं। वैदिक गायत्री के मध्यम पाद से युक्त कर उक्त परशुराम गायत्री का जप राजस-ध्यानपूर्वक करे और तिलौदन से होम करे, तो देश, ग्राम, पुर, बालकों, गायों की रक्षा हो तथा महामारी, शीतला आदि की शान्ति हो। वैदिक गायत्री के अन्तिम पाद से युक्त कर तामस ध्यान सहित पुरश्चरण कर सर्षप से होम करे, तो सर्व-शत्रु-नाश एव सर्व-रोगों का क्षय होता है।

२ परशुराम-नाम-मन्त्र ' आद्यो रामो जामदग्न्य क्षत्रियाणा कुलान्तक । परश्वध-धरो दाता मातृहा मातृ-जीवक ।। समुद्र-नीर-निलयो महेश-पठिताखिल । गो-याग-कृद् गो-प्रदाता विप्र-क्षत्रिय कर्म-कृत् ।। द्वादशैतानि नामानि त्रि-सन्ध्य य पठेन्नर । नाप मृत्युर्न दारिद्र्य न न वश-क्षया भवेत् ।।

'परशुराम तन्त्र' मे उक्त दोनो मन्त्र का विस्तृत विवरण दिया है।

रामावतार

१ एकाक्षर वह्निस्थ शयन विष्णोरर्द्ध-चन्द्र-विभूषित, एकाक्षरोऽय सम्प्रोक्तो मन्त्र-राजः सुर-द्रुम.—रां

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७२। 'शारदा-तिलक' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—'अनन्तोऽन्यासन' सेन्दुर्बीजम् ।'

२ द्व्यक्षर : वह्नि-नारायणेनाढ्यो जठर केवलस्तथा, द्व्यक्षरो मन्त्र-राजोऽय सर्वाभीष्ट-फल-प्रद.—राम

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७१।

३ त्र्यक्षर : तारो माया रमाऽनङ्ग - वाक् स्व - बीजैस्तु षड् - विध , त्र्यक्षरो मन्त्र - राजोऽय सर्वाभीष्ट-फल-प्रद --(१) ॐ राम, (२) ह्रीं राम, (३) श्रीं राम, (४) क्लीं राम, (५) ऐं राम (६) रां राम

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७२। 'मेरु-तन्त्र' म उक्त उद्धार का दूसरा चरण भिन्न शब्दा मे है, यथा—'द्व्यक्षरो मन्त्र-राजस्तु त्र्यक्षर परि-जायते ।'

पुरश्चरण मे एक लाख जप और दशाश होम पायस से।

३ द्वा-विंशत्यक्षर भोग-वामन : तारो नमो भगवते विष्णवे च दशाक्षरः, संयुक्तः पूर्व-मन्त्रः (अष्टादशाक्षरः) भवेद् द्वा-विंशदर्णकः—**ॐ नमो भगवते विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि कपिल, छन्द गायत्री, देवता भोग-वामन। मन्त्र के ३, ४, ३, ५, ५, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

नील-वर्णश्चतुर्बाहुः शङ्ख-चक्र-गदाब्ज-भृत्, सर्वान् भोगान् ददात्येष भक्तानां भोग-वामनः।

पुरश्चरण मे एक लाख जप और दशाश होम पायस से।

४ द्वा-विंशत्यक्षर बालक-वामन : १ तारो हृदय-माये च बालकान्ते विष्णो पदं, पूर्व-मन्त्राग्रिमाद् वर्णाद् द्वाविंशत्यक्षरो मनुः—ॐ नमः ह्रीं बालक-विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। मन्त्र के ३, १, ६, ५, ५, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

पीताम्बरोत्तरीयोऽसौ मौञ्जी-कौपीन-धृग्घरिः, कमण्डलुं च दध्यन्नं दण्डं छत्रं करैर्दधत्।
यज्ञोपवीती नीलाभो ध्यातव्यश्छद्म-वामनः।

पुरश्चरण में एक लाख जप और दशाश होम पायस से।

५ त्रयो-विंशत्यक्षर बलि-वामन : तारो नमो भगवते वदेच्च बलि-वामन, सर्वापत्ति-पदं प्रोच्य ङेऽन्तं विनाशनं वदेत्। ततः श्री-बीजमाभाष्य त्रयो-विंशति-वर्णकः—**ॐ नमो भगवते बलि-वामनाय सर्वापत्ति-विनाशनाय श्रीं**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वाङ्, छन्द जगती, देवता बलि-वामन। मन्त्र के छः पदो से षडङ्ग-न्यास। ध्यानादि पूर्व-वत्।

६ षड्-विंशत्यक्षर माया-बालक-वामन : तारो नमो भगवते माया-बालेति विष्णवे, तदग्रिमे पूर्व-मन्त्रः षड्-विंशत्यक्षरो मनुः—**ॐ नमो भगवते माया-बाल-विष्णवे सुर-पतये महा-बलाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, बीज ॐ, शक्ति स्वाहा, देवता श्रीमाया-बालक-वामन मन्त्र के ३, ४, ७, ५, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान, पुरश्चरणादि पूर्ववत्।

७ द्वा-त्रिंशदक्षर वामन : तारो नमो भगवते बलि-सर्वस्व-हारिणे, अमुकं देहि ममाभीष्टमनेकं च वामन। माया रमा समुच्चार्य मन्त्रो द्वा-त्रिंशदर्णकः—**ॐ नमो भगवते बलि-सर्वस्व-हारिणे अमुकं देहि ममाभीष्टमनेकं वामन ह्रीं श्रीं**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि काम, छन्द अनुष्टुप्, देवता वामन। मन्त्र के ७, ८, १२, ३, १, १ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

प्रगृह्णन्तं बलिं चार्थान् हर्षेण ददत बलिं, पूर्ण-कामावुभौ ध्यायेदति-प्रीति-समन्वितौ।

पुरश्चरण मे एक कोटि जप कर, मधुर-त्रय-युक्त बिल्व-फलो से एक लक्ष होम करे। अथवा दिन-रात सतत मन्त्र का जप करे, तो सर्वाभीष्ट की पूर्ति होती है।

परशुरामावतार

१ चतुर्विंशत्यक्षर परशुराम गायत्री : ब्रह्म - क्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि भरद्वाज, छन्द गायत्री, देवता श्रीमान् परशुराम। मन्त्र के ८, ५, ३, २, २, ४ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान तीन प्रकार के हैं—

१ सात्विकं श्वेत-वर्णं च भस्मोद्धूलित-विग्रहं, किरीटिनं कुण्डलिनं वरं स्वक्ष-वराभयान् ।
करैर्दधानं तरलं विप्रं क्षत्र-वधोद्यत, पीताम्बर-धर काम-रूपं बाला-निरीक्षितम् ।।
२ ध्यायेच्च तामसं क्षत्र-रुधिराक्त-परश्वधं, आरक्त-नेत्रं कर्णस्थ-ब्रह्म-सूत्रं यम-प्रभम् ।।
३ धनुष्टङ्कार - निर्घोष - सन्त्रस्त - भुवन-त्रयं, चतुर्बाहुं मुसलिन राजस क्रुद्धमेव च ।।

पुरश्चरण मे २४ लाख जप कर, दशाश होम सिताढ्य-घृत-पायस से । यहाँ उल्लेखनीय है कि सात्विक रूप का ध्यान कर वैदिक गायत्री के प्रथम पाद का जप कर उक्त परशुराम-गायत्री का जप करे और पुरश्चरण पूर्ण करे, तो सन्तान, विवाह, कृषि हेतु वर्षा, धन-सम्पत्ति, वाक्-सिद्धि आदि कामनाएँ पूर्ण होती हैं । वैदिक गायत्री के मध्यम पाद से युक्त कर उक्त परशुराम गायत्री का जप राजस-ध्यानपूर्वक करे और तिलौदन से होम करे, तो देश, ग्राम, पुर, बालको, गायो की रक्षा हो तथा महामारी, शीतला आदि की शान्ति हो । वैदिक गायत्री के अन्तिम पाद से युक्त कर तामस ध्यान सहित पुरश्चरण कर सर्षप से होम करे, तो सर्व-शत्रु-नाश एव सर्व-रोगो का क्षय होता है ।

२ परशुराम-नाम-मन्त्र : आद्यो रामो जामदग्न्य क्षत्रियाणा कुलान्तक । परश्वध-धरो दाता मातृहा मातृ-जीवक ।। समुद्र-नीर-निलयो महेश-पठिनाखिल । गो-त्राग-कृद् गो-प्रदाता विप्र-क्षत्रिय कर्म-कृत् ।। द्वादशैनानि नामानि त्रि-सन्ध्य य पटेन्नर । नाप मृत्युर्न दारिद्रच न च वश-क्षयो भवेत् ।।

'परशुराम तन्त्र' मे उक्त दोनो मन्त्र का विस्तृत विवरण दिया है ।

रामावतार

१ एकाक्षर - वह्निस्थ शयन विष्णोरर्द्ध-चन्द्र-विभूषित, एकाक्षरोऽय सम्प्रोक्तो मन्त्र-राजः सुर-द्रुम'—**रां**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७२ । 'शारदा-तिलक' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—'अनन्तोऽन्यासन सेन्दुर्वीजम् ।'

२ द्व्यक्षर : वह्नि-नारायणेनाढ्यो जठर केवलस्तथा, द्व्यक्षरो मन्त्र-राजोऽय सर्वाभीष्ट-फल-प्रदः—**राम**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७१ ।

३ त्र्यक्षर : तारो माया रमाऽनङ्ग - वाक् स्व - बीजैस्तु षड् - विधः, त्र्यक्षरो मन्त्र - राजोऽय सर्वाभीष्ट-फल-प्रद –(१) ॐ राम, (२) ह्रीं राम, (३) श्रीं राम, (४) क्लीं राम, (५) ऐं राम, (६)

मध्ये वने कल्पतरोर्मूले वै पुष्पकासने, लक्ष्मणेन प्रगुणितं चाक्ष्णः कोणेन सायकम् ।
अवेक्षमाणं जानक्या कृत-व्यजनमीश्वरं, जटा-भार-लसच्छीर्षं श्यामं मुनि-गणावृतम् ।
लक्ष्मणेन धृतच्छत्रमथ वा पुष्पकोपरि, दशास्य-मथनं शान्तं स-सुग्रीव-विभीषणम् ।।

पुरश्चरण मे पाँच लाख जप कर दशांश होमादि करे ।

६ षडक्षर : १ पञ्चाशन्मातृका-वर्ण-प्रत्येक-पूर्वको मनुः, लक्ष्मी-वाङ्-मन्मथ-आदिश्च तारादिः स्यादनेकधा—(१) अं रामाय नमः, (२) आं रामाय नमः इत्यादि पचास मन्त्र ।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६८ ।

२ अनन्तोऽग्न्यासनः चेन्दु-बीजं रामाय हृन्मनुः, षडक्षरो मयादिष्टो भजता कामदो मनुः— **रां रामाय नमः** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६८ ।

३ चतुर्वर्ण. स एव स्यात् षड् - वर्णो वाञ्छित-प्रदः, स्वाहान्तो हुं फडन्तो वा नमोऽन्तो वा भवेन्मनुः—(१) श्रीं राम श्रीं स्वाहा, (२) श्रीं राम श्रीं हुं फट्, (३) श्रीं राम श्रीं नम., (४) ह्रीं राम ह्रीं हुं फट्, (५) ह्रीं राम ह्रीं नमः, (६) क्लीं राम क्लीं स्वाहा, (७) क्लीं राम क्लीं हुं फट् (८) क्लीं राम क्लीं नमः 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७१ ।

४ स्व-काम-शक्ति-वाग्-लक्ष्मी-ताराद्यः पञ्च-वर्णकः, षडक्षरः षड्-विधः स्याच्चतुर्वर्ग-फल-प्रदः—(१) रां रामाय नमः (२) क्लीं रामाय नमः, (३) ह्रीं रामाय नमः, (४) ऐं रामाय नमः, (५) श्रीं रामाय नमः, (६) ॐ रामाय नमः 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७० ।

७ सप्ताक्षर : १ एते (मातृका-पुटित-षडक्षराः) मन्त्राः श्री-बीजादयश्चेति सप्ताक्षरः—(१) **श्रीं अं रामाय नमः, (२) ऐं अं रामाय नमः** इत्यादि

२ रामचन्द्रो रामभद्रो ङेऽन्तो नति-युतो द्विधा, सप्ताक्षरो निगदितो मन्त्रः सप्तर्षि-सेवितः—**(१) रामचन्द्राय नमः, (२) रामभद्राय नमः**

'मेरु-तन्त्र' । ध्यान, पूजा-प्रयोगादि षडक्षर-मन्त्र के समान ।

८ अष्टाक्षरः : १ तारादि-षड्भिः संयुक्तो द्विधा सप्ताक्षरो मत., अष्टाक्षरो द्वादशधा कीर्तितो वाञ्छितार्थदः—(१) **ॐ रामचन्द्राय नमः, (२) ॐ रामभद्राय नमः** इत्यादि

'मेरु-तन्त्र', ध्यान-पूजादि षडक्षर-मन्त्र-वत् ।

२ क्रूं ह्रीं नमश्च रामाय ह्रीमित्यष्टाक्षरः पर.—**क्रूं ह्रीं नमः रामाय ह्रीं**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि सदाशिव, छन्द गायत्री, देवता रामचन्द्र । ध्यान—

राम त्रिनेत्रं सोमार्ध - धारिणं शूलिनं वरं, भस्मोद्धूलित - सर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे ।
रामाभिरामां सौन्दर्य-सीमां सोमावतंसिनीं, पाशांकुश-धनुर्बाण-धरां ध्याये त्रिलोचनाम् ।।

पुरश्चरण मे आठ लाख जप । होमादि षडक्षर-मन्त्र के समान ।

९ दशाक्षर १ जानकी - वल्लभ ङेऽन्तं वह्नि - जाया हुमादिकं, दशाक्षरोऽयं रामस्य मन्त्रः—**हूं जानकी-वल्लभाय स्वाहा**

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १७० । 'मेरु-तन्त्र' मे इस मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दो में दिया है—जानकी-वल्लभो ङेऽन्तः स्वाहान्तश्च हूमादिकः ।' छन्द भी भिन्न बताया है—'स्वराट्' और देवता का नाम 'सीता-पाणि-परिग्रह रामः' लिखा है । ध्यान मे छ पाठान्तर हैं । यथा—

१ रम्ये रत्न-सौन्दर्य-मण्डपे : चैव विचित्रे स्वर्ण-मण्डपे, २ वितान-तोरणान्विते : विताने तोरणाञ्चिते, ३ सिंहासन : सिंहासने, ४ यान-गतेः : यान-गते., ५ सर्वज्ञैः परिशोभितं; प्रहृष्टैरुप - सेवितं ६ लक्ष्मणेनोप-सेवितं : लक्ष्मणेनोप-शोभितं ।

पुरश्चरण में दस लाख का जप निर्दिष्ट किया है। शेष 'हिन्दी तन्त्रसार' के समान।

२ रामो ङेऽन्तो धनुष्पाणिस्तथा स्याद् वह्नि-सुन्दरी—**रामाय धनुष्पाणये स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट्, देवता 'राक्षसान्त-करः रामः'; बीज रां, शक्ति 'स्वाहा', स्व-बीज (रां) से षडङ्ग-न्यास। ध्यान मे धनुष-बाण धारण किए राम का ध्यान करना चाहिए। पुरश्चरण की विधि पूर्वोक्त दशाक्षर-मन्त्र के समान।

१० द्वादशाक्षर : ॐ हृद् भगवते रामचन्द्रायेति मनुर्मतः,अर्कार्णो—**ॐ नमः भगवते राम-चन्द्राय**

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि एव पुरश्चरण-विधि दशाक्षर मन्त्र के समान।

११ त्रयोदशाक्षर : अथ वक्ष्ये वायु-जातोपासितं मन्त्र-नायक—**श्रीराम, जय राम, जय राम जय**

'मेरु तन्त्र'। यह हनुमान द्वारा उपासित मन्त्र है। इस मत्र के तीन पदो की द्विरावृत्ति-द्वारा षडङ्ग-न्यास। शेष विधि दशाक्षर-मन्त्र-वत्।

१२ अष्टादशाक्षर : स-तारं हृद् भगवते रामो ङेऽन्तो महा ततः, पुरुषाय पद पश्चाद् द्विठान्तोऽष्टादशाक्षरः—**ॐ नमः भगवते रामाय महा-पुरुषाय स्वाहा**

'मेरु-तंत्र'। यह भरत द्वारा उपासित मत्र है। इसके ऋषि विश्वामित्र, छन्द गायत्री, देवता 'दशास्य-दलनो राम-भद्रः', बीज 'ॐ', शक्ति 'नम.'। ध्यान—

नाना-कुसुम-सौरभ्य-वाहि - गन्धवहान्विते, देव-गन्धर्व-नारीभिर्गायन्त्यादि-विभूषिते।

सिंहासन-समारूढं पुष्पकोपरि राघवं, सौमित्र-सीता-सहितं जटा-मुकुट - शोभितं।

चाप-बाण-धरं श्यामं स-सुग्रीव-विभीषणं, हत्वा रावणमायान्तं कृत-त्रैलोक्य-रक्षणं॥

पुरश्चरण में दस लाख जप करे। होमादि विधि षडक्षर मन्त्र के समान।

१३ द्वा-विंशदक्षर : तारो नमो भगवते राम-भद्राय सवदेत्, वन्दी-विमुक्त - शृङ्खले स्वाहा द्वा-विंशदक्षरः—**ॐ नमो भगवते राम-भद्राय वन्दी-विमुक्त-शृङ्खले स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। यह इन्द्र द्वारा उपासित मन्त्र है, जिसके प्रभाव से वे रावण के कारागार से मुक्त हो सके थे। *इस मन्त्र के ऋषि विभीषण, छन्द जगती, शक्ति 'स्वाहा', बीज 'ॐ' और देवता राम-भद्र है।* मन्त्र के छः पदो से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण मे एक लाख जप, होमादि पूर्ववत्। प्रतिदिन १० सहस्र जप करे, तो एक सप्ताह मे बन्धन से मुक्ति मिलती है।

१४ द्वा-त्रिंशदक्षर : १ अथ वक्ष्ये विभीषणोपासित मोक्ष - दायक, राज्य - श्रियाः प्रदातारं भक्तानामभय-प्रदं—**राम-भद्र महष्वास रघुवीर नृपोत्तम दशास्यान्तक रां रक्ष देहि दापय मे श्रियम्**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि विश्वामित्र, छन्द अनुष्टुप्, देवता राम-भद्र। मन्त्र के ४, ४, ४, ४, ८, ८ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में एक लाख जप। धनार्थी पीत-वर्ण राम का ध्यान करें।

२ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ज्ञान-प्रदं महा-मन्त्रं सनकाद्यैरुपासितं—

ॐ नमो ब्रह्म-देवाय रामायाकुण्ठ-मेधसे उत्तम-श्लोक-वर्याय न्यस्त-दण्डार्चितांघ्रये

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि शुकदेव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीराम, वीज 'रा', शक्ति 'वर्य:'। मन्त्र के चार पदों एवं पूर्ण मन्त्र से पञ्चाङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में एक लक्ष जप कर आज्य-पायस से होम। मोक्षार्थी के लिए यह श्रेष्ठ मन्त्र है।

१५ सप्त-चत्वारिंशदक्षर माला-मन्त्र : तारो नमो भगवते ङेऽन्त. स्याद् रघुनन्दन:, रक्षोघ्न-विशदायेति मधुरेति पद तत.। प्रसन्न-वदनायेति ततश्चामित-तेजसे, वलायेति च रामाय विष्णवे नम इत्यय—**ॐ नमो भगवते रघु-नन्दनाय रक्षोघ्न-विशदाय मधुर-प्रसन्न-वदनाय अमित-तेजसे बलाय रामाय विष्णवे नम**

'मेरु-तन्त्र'। यह लक्ष्मण द्वारा उपासित माला-मन्त्र है। इसके ऋषि पितामह, छन्द अनुष्टुप्, देवता राज्याभिषिक्त राम, वीज 'ॐ' और शक्ति 'नम.' है। मन्त्र के ७, ६, ७, १०, ६, ११ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान दशाक्षर-मन्त्र-वत्। पुरश्चरण में एक लाख जप कर विल्व-पत्रों और त्रिमधु-युक्त तिलों या पायस या कमल-पुष्पों से दशांश होम।

१६ राम-गायत्री : दाशरथाय विद्महे तथा सीतेति वल्लभा, य धीमहीति तन्नो रा तदग्रे म. प्रचोदयात्—**दाशरथाय विद्महे सीता-वल्लभाय धीमहि तन्नो राम: प्रचोदयात्**

'मेरु-तन्त्र'। प्रतिदिन इस गायत्री मन्त्र का १० वार जप करने से जन्म से लेकर अब तक किए पाप, १०० बार जप करने से पूर्व-जन्म के पाप नष्ट होते हैं और चार लाख जप करने से मोक्ष मिलता है। आदि में 'ॐ' लगाकर जप करने से मुक्ति, 'ह्रीं' सहित जप से धन प्राप्ति, 'श्रीं' सहित जप से श्री-लाभ, 'क्लीं' सहित जप से सारे संसार का मोहन होता है।

१७ षडक्षर सीता-मन्त्र : अथात सम्प्रवक्ष्यामि सीता-मन्त्र महाद्भुतं—**श्रीसीतायै नम:** ('स्वाहा' वा)।

'मेरु तन्त्र'। ऋषि जनक, छन्द गायत्री, देवता सीता भगवती, वीज 'श्रीं', शक्ति 'नम' या 'स्वाहा', जो भी मन्त्र के अन्त में हो। 'श्रां श्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास।

पूजयेद् वैष्णवे पीठे ध्यायेद् राघव-संयुतां, स्वर्णाभामम्बुज-करां रामालोकन-तत्पराम्।

पुरश्चरण में छ लाख जप। आरोग्य के लिए घृत या धान्य से, वशीकरण के लिए ताम्बूल से, मुक्ति के लिए श्रीफल से और मुक्ति के लिए तिलों से होम।

कृष्णावतार

(१) एकाक्षर कृष्ण : १ कामाक्षर धरा-सस्थ शान्ति-विन्दु-विभूषित, त्रैलोक्य-मोहनो विष्णो. कथितस्तव भावत — क्लीं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १६४ में विस्तृत विधि दी है। 'मेरु-तन्त्र' में उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है 'काम-बीजात्मको मन्त्रो।' ऋषि का नाम 'मोहन नारद' और देवता का 'सम्मोहन कृष्ण' बताया है। ध्यान भी भिन्न दिया है, यथा—

वृन्दारक-द्रुमोपेन विलसत्-कल्प शालिन', मूले लसत्-स्थली-राजद्-रत्न-सिंहासनोपरि।
वाम-स्कन्धे पक्षि-पत्रे बन्धूक-सन्निभं, अरि-शङ्ख-सृणीन् पाशं पुष्प-वाणेक्षु कार्मुकम् ॥
पद्मं गदां च हस्ताब्जैरष्टभिर्दधत निजं, घूर्ण-नेत्र कुण्डलिनं हारिणं सु-किरीटिनम् ॥
किङ्किणी-नूपुराद्यैश्च मुद्रिका-रत्न-माल्यकं, पीताम्बरं रक्त-लेपयुक्तं वामोरुगा रमाम्।
आलिङ्गन्तं वाम-बाहु-धृत-पद्मावलिं विभुं। जगत्-सम्मोहन कृष्णं ध्याये पूर्ण-समाहित: ॥

२ ग्लौमित्येकाक्षरो मन्त्रो—ग्लौं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द जगती, देवता श्रीकृष्ण, बीज 'ग', शक्ति 'ॐ'। 'गा गी' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कदम्ब मूले क्रीडन्तं वृन्दावन-निवासिनं, पद्मोपरि स्थितं वन्दे वेणुं गायन्तमीश्वरम्।
पीताम्बर-धरं देवं वनमाला-विभूषितम्, गोपीभिर्गोप-वृन्दश्च सेवितं कृष्णमर्चये ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृत से दशांश होम।

३ बाल-गोपाल-मन्त्र : चक्री वसु-स्वर-युत सर्गकार्णो मनुर्मत —क्

'हिन्दी-तन्त्रसार,' पृष्ठ १६६।

४ बाल-गोपाल : कृमित्येकाक्षरो मन्त्र सर्व-काम-समृद्धिद —कृ

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता बाल-गोपाल। 'क्ली क्नी' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कृष्णं पद्मासन गुन्जत्-किङ्किणी-लसत्-कटिं, हस्ताभ्यां नवनीत च पायसं चापि बिभ्रतम्।
कण्ठ-देशे व्याघ्र-नखं स्वर्ण-पट्ट विराजित, मेघ-श्याम च परितो गोप गोपी-जनावृतम् ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर पायस और घृत से दशांश होम।

२ द्व्यक्षर बाल-गोपाल : कृष्णेति द्व्यक्षर —कृष्ण

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६६। 'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—'स एव कृष्ण प्रवट कृष्णो द्व्यर्णो मनुर्मतः।'

३ त्र्यक्षर बाल-गोपाल : १ काम-पूर्वस्त्र्यर्ण स (द्व्यक्षर) एव च—क्लीं कृष्ण

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६६।

२ ॐ कृष्ण इति मन्त्रोऽयं त्रि-वर्ण परिकीर्तित —ॐ कृष्ण

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि आदि पूर्व-वत्।

४ चतुरक्षर बाल-गोपाल : १ स (त्र्यक्षर) एव च चतुर्वर्ण स्यात् ङेऽन्तो—क्लीं कृष्णाय

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६६ मे उक्त मन्त्र की विधि दी है।

२ सद्य फल-प्रद मन्त्र वक्ष्येऽन्य चतुरक्षर, सम्प्रोक्तो मार-युग्मान्त सस्थ-कृष्ण-पदेन तु—क्लीं कृष्ण क्लीं 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०२

३ मारयोरस्य मामाधोरक्तश्चदपरो मनु.—क्लीं कृष्ण क्लीं 'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ २०३

४ ॐ कृष्णायेति मन्त्रोऽयं चतुर्वर्णोऽखिलेष्टद —ॐ कृष्णाय 'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि पूर्ववत्।

५ पञ्चाक्षर बाल-गोपाल : १ *वक्ष्यते पञ्च वर्ण स्यात् कृष्णाय नम इत्यादि—कृष्णाय नमः*

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १६६। 'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार इस प्रकार है—'कृष्णाय हृदयं पञ्च-वर्णः प्राग्-वज्जपादिकम्।'

२ कृष्णायेति स्मर-द्वन्द्व-मध्ये पञ्चाक्षरोऽपर'—क्लीं कृष्णाय क्लीं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १६६। 'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'काम-बीजयो मध्ये कृष्णाय पञ्चार्ण।'

६ षडक्षर बाल-गोपाल · १ गोपालायाग्नि-जायान्त षडक्षर उदाहृत —**गोपालाय स्वाहा**
'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ १९९ । 'मेरु-तन्त्र' मे—'गोपालायाग्नि-गेहिनी षडक्षरोऽय ।'

२ कृष्णाय काम-बीजाद्यो वह्नि-जायन्तोऽपर —**क्लीं कृष्णाय स्वाहा**
'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र' मे—'क्लीं कृष्णायाग्नि-गेहिनी षडक्षरो मन्त्र-राज ।'
'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' मे—'स्मर कृष्णाय ठ-द्वन्द्व षडर्णो मनुरीरित ।'

३ पञ्चाक्षर एव काम-पूर्वश्चेत् षडक्षर-मनु स्मृत —**क्लीं कृष्णाय नम**
'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १२० । 'मेरु-तन्त्र' मे— प्रत्यक्षो जायते मन्त्र क्लीं कृष्णाय नमस्त्विति ।' वही इसके भिन्न ऋषि 'काम', छन्द गायत्री, देवता कृष्ण बताये है । यह मन्त्र सम्पत्ति-प्रद है ।

७ सप्ताक्षर बाल-गोपाल १ कृष्ण-गोविन्दकौ ङेऽन्तौ सप्तार्णो मनुरीरित —**कृष्णाय गोविन्दाय**
'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र' मे—'कृष्णायेति पद वदेत्, गोविन्दायेति सप्तार्ण ।'

२ श्री-शक्ति-मार-कृष्णाय मार सप्ताक्षरो मनु —**श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय क्लीं**
'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र' मे—'श्री-माया-काम बीजत कृष्णाय काम बीज च प्राग् वत् सप्ताक्षरो मनु ।'

८ अष्टाक्षर कृष्ण १ हृषिकेश-पद ङेऽन्त नमोऽन्त काम-पूर्वक अष्टाक्षरो मनु प्रोक्त समस्त पुरुषार्थद —**क्लीं हृषिकेशाय नम**

२ लक्ष्मी-माया-काम-बीज ङेऽन्त कृष्ण-पद तत, स्वाहेति मन्त्र-राजोऽय भजता सुर-पादप —**श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा**
क्रमाक १ व २ के मन्त्रो की विधि 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १९६ मे द्रष्टव्य है ।

३ उत्तिष्ठ श्रीकृष्ण स्वाहा मनुरष्टाक्षरो मत — **उत्तिष्ठ श्रीकृष्ण स्वाहा**
'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वामदेव, छन्द पक्ति, देवता विष्णु । '१ भीषय भीषय हु, २ त्रासय त्रासय हु, ३ प्रमर्दय प्रमर्दय हु, ४ प्रध्वसय प्रध्वसय हु, ५ रक्षय रक्षय हु' से क्रमश पञ्चाङ्ग-न्यास कर मूल मन्त्र के अन्त मे 'हु' जोडकर छठा न्यास कर षडङ्ग-न्यास पूर्ण करे । ध्यान—
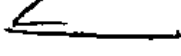
दुग्धाम्भोधौ सित-द्वीप नाना-मणिगणैर्युत, वन सचिन्तयेत् तत्र सकलर्तु-समन्वितम् ।
न्यासोक्ताभरणैं शस्तैरुपेत दीप्त-तेजस, सुर-सुर्षि-प्रमुखै सेवित चाप्सरो-गणै ।
पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर दुग्धाक्त विल्व समिधा से दशाश होम ।

४ मन्त्रस्तु—**श्री कृष्ण शरण मम**
'मेरु तन्त्र' । मन्त्र के चार पदो और सम्पूर्ण मन्त्र से पञ्चाङ्ग न्यास । शेष विधि दशाक्षर-मन्त्र-वत् ।

५ बाल-गोपाल मन्त्र कृष्ण-गोविन्दकौ ङेऽन्तौ कामाद्यावष्ट-वर्णक —**क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय**
'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ २०० ।

६ बाल० · दधि-भक्षणाय वह्नि-वल्लभान्तोऽष्ट-वर्णक —**दधि-भक्षणाय स्वाहा**
'हिन्दी तन्त्रसार,' पृ० २०० । 'मेरु-तन्त्र' मे 'दधि भक्षणाय द्वि ठान्तोऽप्यमष्ट-वर्ण प्रकीर्तित

७ बाल० सुप्रसन्नात्मने प्रोक्तो नम इत्यपरोऽष्टक — सु-प्रसन्नात्मने नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र' में—'सुप्रसन्नात्मने नमः अष्ट-वर्ण सगाख्यात. ।'

८ बाल० ऊर्ध्व-दन्त-युत शार्ङ्गी चक्री दक्षिण-कर्ण-युक्, मास-नाथाय नत्यन्तो मूल-मन्त्रोऽष्ट-वर्णक —गोकुल-नाथाय नमः 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०१

९ नवाक्षर बाल-गोपाल . १ कृष्ण-गोविन्दको ङेऽन्तौ आद्यन्ते काम-बीज नवाक्षर.—क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय क्लीं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र' में—'काम कृष्णाय सवदेत्, गोविन्दाय पुनः कामो नवार्ण परिकीर्तित ।'

२ कृष्णो गोविन्द एव च, ङेऽन्तश्च हृदयान्तिश्च मनुः प्रोक्तो नवाक्षर —कृष्णाय गोविन्दाय नम. 'मेरु-तन्त्र' ।

१० दशाक्षर कृष्ण : १ गोपी-जन-पदस्यान्ते वल्लभायेति ठ-द्वय, अय दशाक्षरो मन्त्रो दृष्टादृष्ट-फल-प्रद —गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ १७२ । 'मेरु-तन्त्र' में—'गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा मन्त्रो दशाक्षरः ।' यहाँ देवता का नाम भिन्न बताया है—'नन्द-पुत्र' । ध्यान भी भिन्न दिया है—

पूर्वं वृन्दावनं स्मरेत् पुष्प - विराजितं, तस्मिन् वने कल्पतरुं नव - पल्लव - शोभितम् ।
षड्र्मि-रहितां ध्यायेत् तस्याधस्ताद् वसुन्धरां, मणिमय-कुट्टिमं तत्र योग-पीठं विचिन्तयेत् ।
पद्ममष्ट - दलं तत्र यथोक्तं रत्न - पर्णकं, तस्य मध्ये सुखासीनं कृष्ण ध्यायेदनन्य-धीः ।
उद्यदादित्य-सङ्काश प्रसन्न-वदनं विभु, इन्द्रनील-मणि-प्रख्यं स्निग्ध-दीर्घ-शिरोरुहम् ।
मायूरेण सुपिच्छेन राजमान-शुभाङ्गकं, कुटिलालक-विभ्राजदास्य कर्ण-कृतोत्पलम् ।
गोरोचनाक्त-तिलकं पूर्ण-चन्द्र-निभं स्मरेत्, पद्म-नेत्र दीप्त-मणि मकराकृति-कुण्डलम् ।
क्षुद्र - घण्टिकया बद्ध - कटि ग्रैवेय - राजित, चक्र-शङ्ख-लसत्-पद्मामृत-कुण्डाम्बरादिभि. ।
मुखाम्बुज - समायुक्त - वंश - च्छिद्रार्पितांगुलि, तन्मृदु-ध्वनि-सन्तान-विवशी-कृत-मानसम् ।
स्व-वयस्यैश्च गायद्भिर्नृत्यद्भि· सविभाषणैः, नाना-वेष-धरैर्बालैः सस्तुवद्भि समावृतम् ।

२ दशाक्षर बाल-गोपाल : काम-बीज धरा-बीज पुन काम समुच्चरेत्, श्यामलाङ्ग-पद ङेऽन्त नमोऽन्तोऽयं दशाक्षर —क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु तन्त्र'—'काम ग्लौं काममुच्चरेत्, श्यामलाङ्गाय हृदय दशार्ण परिकीर्तित ।'

३ शिरोऽन्तो बाल-वपुषे कृष्णायान्तो मनुर्मत —बाल-वपुषे कृष्णाय नम·

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० । 'मेरु-तन्त्र'—बालान्ते वपुषे वदेत्, कृष्णाय वह्नि- जायान्तो मन्त्र प्रोक्तो दशाक्षर ।'

११ एकादशाक्षर कृष्ण : १ दशाक्षरोऽय कामादिस्तस्य मन्त्रो भवाक्ष —क्लीं गोपी - जन-वल्लभाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि कामदेव । शेष 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७२ के समान ।

२ दशाक्षरोऽयं लज्जादिस्तस्य मन्त्रो भवाक्षरः—**ह्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा ।**

'मेरु-तन्त्र' । यह मन्त्र शक्ति-सहित जप करने पर ही सिद्ध होता है ।

३ दशाक्षरोऽयं लक्ष्म्याद्यो भवेदेकादशाक्षरः—**श्रीं गोपी जन-वल्लभाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । यह सुदामा द्वारा उपासित मन्त्र दारिद्र्य दूर करनेवाला है ।

४ **बाल-गोपाल :** शिरोऽन्तो बाल-वपुषे क्लीं कृष्णाय स्मृतो बुधैः—**बाल-वपुषे क्लीं कृष्णाय स्वाहा** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २०० ।

१२ द्वादशाक्षर कृष्ण : १ श्री-शक्ति-स्मर-कृष्णाय गोविन्दाय शिरो मनुः—**श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १९७ ।

२ दशाक्षरः स एवासावाद्ये शक्ति-समन्वित, मन्त्रो विकृतिरूपर्णों आचक्राद्यन्धकारिणो—**ह्रीं श्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा** 'मेरु-तन्त्र' ।

३ तार-सम्पुटितश्चायं (दशाक्षरः) मन्त्रः स्याद् द्वादशाक्षरः—**ॐ गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा ॐ**

'मेरु-तन्त्र' । इस मन्त्र के देवता का ध्यान विशेष बताया है—

चन्द्र-कुन्द-सुगौराङ्गं रक्त-पद्म-दलेक्षणं, अरि-कम्बु-गदा-पद्म बाहु-दण्डैश्च बिभ्रतम् ।
दिव्यैश्च चन्दनालेपैः पद्म-नाम्ना विभूषितं, पीताम्बर-लसद्-गात्रं तरुणं मुनि-सेवितम् ।
विकसत्-पद्म-मध्यस्थं ध्यात्वा नन्दात्मजं प्रभुं, स्व-हृत् पद्म-गतं देवं पुराणं पुरुषं नवम् ।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दुग्ध या मधु आदि से आप्लुत हवि से क्षीर-वृक्ष की समिधा में दशांश होम ।

१३ त्रयोदशाक्षर कृष्ण : श्री-शक्ति-मार - पूर्वश्च शक्ति-श्री-मार-पूर्वकः, काम-शक्ति-रमा-पूर्वा दशार्णा मनवस्त्रय—(१) **श्रीं ह्रीं क्लीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा,** (२) **ह्रीं श्रीं क्लीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा,** (३) **क्लीं ह्रीं श्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा** 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १८२

१४ चतुर्दशाक्षर कृष्ण : १ वाग्भवं मार-बीज च माया-लक्ष्मीमनन्तकं, दशार्णो मन्त्र-राजश्च भवेत् शक्राक्षरो मनुः—**ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १९३

२ वाग्भवं भुवनेशानी श्री-बीज काम-बीजकं, दशार्णो मन्त्र-राजश्च भवेत् शक्राक्षरः परः—**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा**

१५ पञ्च-दशाक्षर कृष्ण : १ प्रणव नममा युक्त कृष्ण - गोविन्दको तथा, श्री-पूर्वौ ङेऽन्ता-वुच्चार्य हुं फट् स्वाहेति कीर्तितः—**ॐ नमः श्रीकृष्णाय गोविन्दाय हुं फट् स्वाहा**

२ 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १९९ में यही मन्त्र भिन्न रूप में दिया है—**गोविन्दाय हुं फट् स्वाहा ॐ नमः श्रीकृष्णाय**

३ **बाल-गोपाल मन्त्र :** क्लीं कृष्णाय परेति च, नन्देति बाल-वपुषे स्वाहा पञ्च-दशाक्षरः—**क्लीं कृष्णाय क्लीं नन्द-बाल-वपुषे स्वाहा** 'मेरु-तन्त्र' ।

१६ षोडशाक्षर कृष्ण : १ तारो हृद् भग - वान् ङेऽन्तो रुक्मिणी - वल्लभस्तथा, शिरोऽन्तः षोडशार्णोऽयं रुक्मिणी-वल्लभाह्वय —**ॐ नमो भगवते रुक्मिणी-वल्लभाय स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १९७ ।

२ श्रीं ह्रीं क्लीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा क्लीं ह्रीं श्रीं 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १८६

३ जात कृष्णस्तस्य मनुरो नमो ङेन्त-कृष्णक, देवकी-पुत्राय हु फट् स्वाहा षोडश-वर्णक —
ॐ नमो कृष्णाय देवकी-पुत्राय हु फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता कृष्ण। मन्त्र के छ पदो मे से प्रत्येक के आदि मे ॐ जोडकर क्रमश षडङ्ग-न्यास, यथा—ॐ नमो हृदयाय नम, ॐ कृष्णाय शिरसे स्वाहा, ॐ देवकी-पुत्राय शिखायै वषट्, ॐ हु कवचाय हु, ॐ फट् नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्। पुरश्चरण मे १६ लाख जप। ध्यानादि शेष विधि दशाक्षर मन्त्र के समान।

१७ अष्टादशाक्षर कृष्ण : १ कृष्णाय पदमाभाष्य गोविन्दाय तत पर, गोपी-जन-पदस्यान्ते वल्लभाय द्वि-ठावधि। काम-बीजादिराख्यातो मनुरष्टादशाक्षर —**क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १८४

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' मे इस मन्त्र का ध्यान 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १७० के अनुसार दिया है किन्तु सात पाठान्तर उसमे हैं, यथा—१ पुण्डरीकाक्ष गोप-बालाश्च, २ सहस्रश सहस्रक, ३ वदनाम्भोजे प्रेरिताक्षि वदनाम्भोज-प्रेषिताक्ष, ४ वसना वदना, ५ गर्वितै गर्भितै, ६ नयनोत्पलार्चित नयनोत्पलाञ्चित, ७ सघावृत वृन्दान्वित।

२ श्रीकृष्णाय वदेत् पश्चात् गोविन्दाय दशाक्षर, एवमष्टादशार्णोऽय मन्त्र प्रोक्तोऽखिलेष्टद —
श्रीकृष्णाय गोविन्दाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता कृष्ण, बीज 'क्लीं', शक्ति 'स्वाहा'। मन्त्र के ४, ४, ४, ४, २ अक्षरो से पञ्चाङ्ग-न्यास। ध्यानादि दशाक्षर मन्त्र के समान। पुरश्चरण मे पाँच लाख जप कर दशाश होम।

३ श्रीमन्मुकुन्द-चरणौ सदा शरणमित्यपि, अह प्रपद्ये मन्त्रोऽय प्रोक्तश्चाष्टादशाक्षर —**श्रीमन्मुकुन्द-चरणौ सदा शरणमह प्रपद्ये**

'मेरु तन्त्र'। ऋषि नारद छन्द गायत्री, देवता मुकुन्द। 'आचक्राय' 'इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। शेष विधि दशाक्षर-मन्त्र-वत्। पुरश्चरण मे चार लाख जप, पलाश पुष्पो या उनके चूर्ण से दशाश होम।

१८ विशत्यक्षर (रत्नाभिषेक) १ शक्ति श्री-पूर्वोऽष्टादशाक्षर —**ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा** 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १८५

२ वासुदेवाय निगडच्छेदिन् ङेन्तमुच्चरेत, वामदेवाय हु फट् च स्वाहा विशार्णको मनु —
वासुदेवाय निगडच्छेदिने वासुदेवाय हु फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, निगडच्छेद कारक कृष्ण। न्यास, ध्यानादि दशाक्षर-मन्त्र-वत्।

१९ द्वा-विंशत्यक्षर वाग्भव मार-बीज च कृष्णाय भुवनेश्वरी गोविन्दाय रमा गोपी-जन-वल्लभान्त शिर। चतुर्दश-स्वर पेतो भृगु सर्गी तदूर्ध्वत, द्वा-विंशत्यक्षरो मन्त्रो वागीशत्व-प्रदायक —
ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय श्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा सौ 'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ १८१।

२० द्वा-त्रिंशदक्षर अथात सम्प्रवक्ष्यामि द्वात्रिंशदक्षर मन्त्र, यज्जपादेव पुत्रादेरुत्पत्तिर्भवति ध्रुव—**देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत-पते ! देहि मे तनय कृष्ण ! त्वामह शरण गत**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि नारद, छन्द अनुष्टुप्, देवता सन्तान दायक कृष्ण। मन्त्र के चार पदो और सम्पूर्ण मन्त्र से पञ्चाङ्ग-न्यास। ध्यान—

शङ्ख-चक्र-धरं देवं श्याम-वर्णं चतुर्भुजं, सर्वाभरण-सन्दीप्तं पीत-वाससमच्युतम् ।
मयूर-पिच्छ-संयुक्तं विष्णु-तेजोपबृंहितं, समर्पयन्तं विप्राय नष्टानानीय बालकान् ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर, घृत से दशाश होम ।

२ क्लो क्लो नमो भगवते नन्द-पुत्राय बालक-रूपाय च बालायेति गोपी-जन-पद वदेत्, वल्लभायाग्नि-जायान्तो मन्त्रोऽय रद-वर्णकः—क्लों क्लों नमो भगवते नन्द-पुत्राय बालक-रूपाय बालाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । 'क्लां क्लीं' आदि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान-पूजादि दशाक्षर-मन्त्र-वत् ।

२१ द्वि-पञ्चाशदक्षर : वाग् लज्जा क्ली रमा ह्री ग्री ज्वी श्री जय जयेति च, कृष्ण कृष्णेति चाभाष्य निरन्तरं-पदं वदेत् । क्रीं श्रीं नित्य-प्रमुदित-रेतमे पदमुच्चरेत्, नित्य-क्रियाय कृष्णाय क्लीं गोपी-जन-वल्लभाय । स्वाहा ग्री च ह्रीं चेति द्वि-पञ्चाशल्लिपिर्मनुः— ऐंह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं ग्रीं ज्वीं श्रीं जय जय कृष्ण कृष्ण निरन्तरं क्रीं श्रीं नित्य-प्रमुदित-रेतसे नित्य-क्रियाय कृष्णाय क्लीं गोपी-जन - वल्लभाय स्वाहा ग्रीं ह्रीं

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि आनन्द-नारद, छन्द विराट्. देवता सम्मोहन हरि । मन्त्र के ८, १२, २, ८, ५, १६ अक्षरो मे षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

नाना-रत्न-गणाकीर्णे गेहे संचिन्तयेद्धरिं, नानालङ्कार-शोभाढ्यं श्रीवत्साङ्कित - वक्षसम् ।
नाना-सुगन्ध-रुचिरमङ्क-न्यस्त-कराम्बुजं, विहिताम्भोज-युग्माभ्यां विस्तृताभ्यां च कामतः ।
स्व-दक्ष-स्थितयाश्लिष्टं श्यामया सत्यभामया, चक्र-वज्राम्बवत्या च श्लिष्टं वामस्थया तथा ।
कालिन्द्या च परिश्लिष्टमग्र - देशस्थया विभुं, पद्मं गदां शङ्ख - चक्रे चतुर्भिर्दधतं करैः ।
कर - द्वय - लसद् - वंश - विभावित - मुखाम्बुजं, चतुर्दिक्षु बहिर्देवैर्मुनिभिः सेवकैर्वृतम् ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर सिताब्ज-मधु-मिश्रित पायस से दशाश होम ।

२२ श्री कृष्ण-गायत्री : दामोदराय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि श्रीकृष्ण, छन्द गायत्री, देवता श्रीकृष्ण । मन्त्र के ५, ३, ५, ३, ४, ४ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । पुरश्चरण गायत्री -मन्त्र के समान । ध्यान-पूजादि दशाक्षर-मन्त्र-वत् ।

बुद्धावतार

द्वात्रिंशदक्षर बुद्ध : अथात सम्प्रवक्ष्यामि बौद्ध-मन्त्र महा-फल-प्रद, पतितानामयं मन्त्र' सम्प्रोक्त शरण-प्रद —नमो भगवते बुद्ध, संसारार्णव-तारक ! कलि-कालादहं भीतः, शरण्यं शरणं गतः

'मेरु-तन्त्र' । प्रथम पद के चार शब्दो एव द्वितीय पद के दो चरणो से क्रमशः षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

पद्मे पद्मासनस्थं च ऊर्वोर्न्यस्त - कर-द्वय, गौरं मुण्डित-सर्वाङ्गं ध्यान-स्तिमित-लोचनम् ।
पुस्तकासक्त-हस्तैश्च नाना-शिष्यैश्च शोभितं, इन्द्रादि-लोकपालैश्च ताम्र-वर्णाम्बरावृतम् ॥

पुरश्चरण मे ३२ लाख जप कर घृतौदन मे दशाश होम और तुलसी-मिश्रित जल से तर्पण । मन से भी दूसरो को दु ख न दे । फल—वाक् आदि सिद्धियाँ प्राप्त होकर सभी वश मे होते हैं । भूत-प्रेतादि उपद्रव शान्त होते है । अभिमन्त्रित भस्म से दुःख दूर होता है ।

कल्कि अवतार

षडक्षर कल्कि : क कल्किने हृदन्तोऽय मन्त्र प्रोक्त. षडक्षर:—कं कल्किने नमः

'मेरु-तन्त्र' । मन्त्र के एक-एक अक्षर से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

ध्याये नील-हयारूढं श्वेतोष्णीष-विराजितं, महा-मुद्राढ्य-हस्तं च कौस्तुभोद्दाम-कण्ठकम् ।
मर्दयन्तं म्लेच्छ-गणं क्रोध - पूरित - लोचनं, अन्तर्हितैर्देव - मुनि - गन्धर्वैः संस्तुतं हरिम् ।

'मेरु-तन्त्र' । पुरश्चरण मे ६ लाख जप कर सिता-सहित पायस से दशांश होम और शुद्ध जल से तर्पण । फल—शत्रु-नाश, सर्वत्र विजय-प्राप्ति एवं दिन-प्रतिदिन ऐश्वर्य की वृद्धि ।

अन्य मन्त्र

हयग्रीव

१ एकाक्षर : वियद्-भृगुस्थमर्घीश-विन्दु-मद् बीजमीरितं, एकाक्षरो मनुः प्रोक्तश्चतुर्वर्ग-फल-प्रद.—ह्स्ूं

'हिन्दी-तन्त्रसार,' पृष्ठ २०६ । 'मेरु-तन्त्र' मे इस एकाक्षर मन्त्र के तीन स्वरूप ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लिए अलग-अलग बताए है. यथा—'सहावुकार-सयुक्तो विन्दुना परि-शोभितो, विप्र-सेव्यो बीज-मन्त्रो हयग्रीवस्य चादिमः । हसावौकार-संयुक्तो सविन्दू क्षत्रियस्य च, हसावेकार-सयुक्तो सविन्दू वैश्य-जन्मनः' अर्थात्—(१) ह्सुं, (२) ह्सौं, (३) ह्सें । छन्द 'अनुष्टुप्' के स्थान पर 'त्रिष्टुप्' बताया है और ध्यान निम्न प्रकार निर्दिष्ट किया है—

श्वेत-पद्म-स्थितं गौरं श्वेत-पद्मानुलेपनं, भक्त-प्रियं हयग्रीवं वन्देऽहं दानवान्तकम् ।

'शारदा-तिलक' मे इस मन्त्र का छन्द 'त्रिष्टुप्' और बीज 'हं', शक्ति 'स' बताकर ध्यान 'हिन्दी-तन्त्रसार' के समान ही दिया है. जिसमे तीन पाठान्तर हैं—(१, कराब्जे : कराग्रे, (२) जिष्णु : विष्णु, (३) विद्याग्र-विष्णु : देवारि-जिष्णु ।

२ त्र्यक्षर : विद्या-कामेन वाक्-पुटो जप्यो वाला-तार्तीय-सम्पुटो वा वश्य - कामेन काम-राज-सम्पुटो वा—(१) ऐं ह्सूं ऐं, (२) क्लीं ह्सूं क्लीं इत्यादि ।

'शारदा-तिलक' । ऋष्यादि एकाक्षर-मन्त्र के समान ।

३ अष्टाक्षर : हयः-शिर पद ङेऽन्तो हृदयान्तं समुद्धरेत्, स्व-बीजादिरयं मन्त्रश्चतुर्वर्ग-फल-प्रद—ह्सूं हय-शिरसे नमः

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ २१० । 'मेरु-तन्त्र' —स्व-बीज हय-शिरसे नमश्चाष्टाक्षरो मनु ।' ध्यान भिन्न दिया है—

हस्तैर्दधानं मालां च पुस्तकं वर-पङ्कजं, कर्पूराभं सौम्य-रूप नाना-भूषण-भूषितं ।

'शारदा-तिलक' मे इस मन्त्र का छन्द 'देव-गायत्री' और शक्ति 'सौः' बताकर शेष एकाक्षर मन्त्र के समान निर्दिष्ट किया है ।

४ दशाक्षर : १ ऐं ह्सूं हय-शिरसे नमः ऐं, २ क्लीं ह्सूं हय-शिरसे नमः क्लीं इत्यादि

'शारदा-तिलक । क्रमाङ्क ३ मे दिए उद्धार के अनुसार ।

५ द्वा-त्रिंशदक्षर : विश्वोत्तीर्ण-स्वरूपाय चिन्मयानन्द-रूपिणे तुभ्य नमो हय-ग्रीव विद्या-राजाय विष्णवे

'शारदा-तिलक' मे बताया है कि उक्त मन्त्र श्लोकात्मक है, अतः इसके आदि में 'ॐ' जोड़ लेना चाहिए क्योंकि नियम है—'श्लोकादौ तारः ।' ध्यानादि 'हिन्दी-तन्त्रसार' पृष्ठ २०८ के अनुसार है, केवल दो पाठान्तर ध्यान मे हैं—(१) भरणैः प्रदीप्तं : भरणैरुपेतं, (२) शङ्खाचित : शङ्खाङ्कित ।

६ त्रय-स्त्रिंशदक्षर : उद्-गिरत् पदमाभाष्य प्रणवोद्गीथ-शब्दितः, सर्व-वागीश्वरेत्यन्ते प्रवदेदीश्वरेत्यथ । सर्व-वेद-मयाचिन्त्य-शब्दान्ते सर्वमुच्चरेत्, बोधय-द्वितयान्तोऽयं तारादिर्मनुरीरितः—
ॐ उद्-गिरत् प्रणवोद्गीथ सर्व-वागीश्वरेश्वर सर्व-वेद-मयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय
'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २०८ ।

७ चतुस्त्रिंशदक्षर : ऋग्-यजुस्साम-रूपाय वेदाभरण-कर्मणे, प्रणवो ह्रीं नृ-वपुष महाश्व-शिरसे नमः । हंसादि सोऽहमन्तश्च—**हंसः ऋग्-यजुस्साम-रूपाय वेदाभरण-कर्मणे, ॐ ह्रीं नृ-वपुषे महाश्व-शिरसे नमः सोऽहं** 'मेरु-तन्त्र' ।

८ षट्-त्रिंशदक्षर : १ **ॐ उद्-गिरत्.. बोधय स्वाहा ॐ**, २ **ह्सूं ॐ उद्-गिरत्....बोधय स्वाहा**, ३ **ॐ ह्सूं उद्-गिरत् बोधय स्वाहा** 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृ० २१० ।

४ उद्-गिरत्-प्रणवोद्गीथ सर्व-वागीश्वरेश्वर, सर्व-वेदमयाचिन्त्य सर्व बोधय बोधय । स्व-बीज-प्रणवाभ्यां च श्लोकमेनं पुटेदथ षट्-त्रिंशदक्षरो मन्त्रः—**ह्सूं ॐ उद्-गिरत् ..बोधय ह्सूं ॐ**
'मेरु-तन्त्र' । ऋष्यादि 'हिन्दी-तन्त्रसार' पृ० २०८वत् दिया है । ध्यान भिन्न दिया है, यथा—
हयग्रीवं चतुर्बाहुं पारदाम्भोधर-द्युतिं, शङ्खारि-पाणिमश्वास्य जानु-न्यस्त-करं भजेत् ।

९ अष्टा-त्रिंशदक्षर : १ उद्-गिरत् प्रणवोद्गीथ सर्व-वागीश्वरेश्वर, सर्व-वेद-मयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय । स्वाहान्तो मनुराख्यातो बीज प्रणव-सम्पुटः—**ह्सूं ॐ उद्-गिरत्...बोधय स्वाहा ॐ ह्सूं**

२ विश्वोत्तीर्ण-स्वरूपाय चिन्मयाचिन्त्य-रूपिणे, तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय विष्णवे । स्वाहान्तो मनुराख्यातो हंसेन सम्पुटी-कृतः—**हंसः विश्वोत्तीर्ण-स्वरूपाय चिन्मयाचिन्त्य-रूपिणे, तुभ्यं नमो हय-ग्रीव, विद्या-राजाय विष्णवे, स्वाहा हंस.** 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृ० २११ ।

३ विश्वोत्तीर्ण - स्वात्म-रूप - चिन्मयानन्द - रूपिणे, तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्या-राजाय विष्णवे । स्वाहा सोऽहं च हंसादिरष्ट-त्रिंशाक्षरो मनुः—**हंसः विश्वोत्तीर्ण-स्वात्म-रूप-चिन्मयानंद-रूपिणे तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्या-राजाय विष्णवे स्वाहा सोऽहं**
'मेरु-तन्त्र' । प्रणव-युक्त मन्त्र के पदो से पञ्चाङ्ग-न्यास । पुरश्चरण मे ३६ लाख जप, शेष पूर्ववत् ।

१० चतुर्विंशाक्षरी हयग्रीव-गायत्री : ङेऽन्त वागीश्वर-पदं विद्महे पदमुच्चरेत्, हयग्रीवं च ङेऽन्त स्याद् धीमहीति ततो वदेत् । तन्नो हंस पदान्ते च प्रवदेच्च प्रचोदयात्—**वागीश्वराय विद्महे हय-ग्रीवाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्** 'शारदा-तिलक' ।

परमात्मा

१ एकादशाक्षर : अच्युतानन्त-गोविन्द-पदं ङेऽन्तं हृदन्तकं, भवाक्षरो मनुः प्रोक्तो भव-रोगैक-भेषजं—**अच्युतानन्त-गोविन्देभ्यो नमः**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि शौनक, छन्द विराट्, देवता परमात्मा । मन्त्र मे उल्लखित नामों को दो-दो बार प्रयोग कर षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

शङ्ख-चक्र-धरं देवं चतुर्बाहुं किरीटिनं, सर्वायुधैरुपेतं च गरुडोपरि-संस्थितम् ।
सनकादि-मुनीन्द्रैस्तु सर्व-देवैरुपासितं, श्री-भूमि-सहितं देवमुद्यदादित्य-सन्निभम् ।
प्रातरुद्यत्-सहस्रांशु-मण्डलोपम-कुण्डलं, सर्व-लोकस्य रक्षार्थमनन्तं नित्यमेव हि ।
अभयं वरदं देवं धारयन्तं युगान्वितं ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृत से दशांश होम । बिल्व-होम से धन, पुष्प-होम से वस्त्रादि और तिल-होम से आरोग्य-लाभ होता है ।

२ द्वि-शताक्षर—तार-मार-रमा-बीजं नत्यन्ते पुरुषोत्तम, पुनरप्रतिरूपान्ते ततो लक्ष्मी-निवास, च । सकलान्ते जगत्-पूर्वं क्षोभणेति पदं पुनः, सर्व-स्त्री-हृदयोपेत विदारण-पदं पुनः । ततः परं त्रिभुवन-मदोन्माद-करं ततः, सुरासुरान्ते मनुज-सुन्दरी-जन-शब्दतः । मनांसि तापय-द्वन्द्वं दीपय-द्वितयं पुनः, शोषय-द्वितयं भूयो मारय-द्वितय पुनः । स्तम्भय-द्वितयं पश्चान्मोहय-द्वितयं पुनः, द्रावय-द्वितय पश्चादाकर्षय-युगं ततः । समस्त-परमोपेन-सुभगेन च संयुतं, सर्व-सौभाग्य-शब्दान्ते करेति पद-संयुतं । सर्व-काम-प्रद-, पदममुकं हन-युग्मकं, चक्रेण गदया पश्चात् खड्गेन तदनन्तरं । सर्व-वाणैभिन्द-युगं पाशेनेति पदं ततः, कट्ट-द्वयान्तेऽकुशेन ताड़य-द्वितयं पुनः । कुरु-शब्द-द्वयमथो किं तिष्ठसि पदं पुनः, तावद् यावत्-पदस्यान्ते समीहितमनन्तरं । ततो मे सिद्धमाभाष्य भवत्यन्ते स-वर्म फट् । नमोऽन्तोऽयं मनुः प्रोक्तो द्वि-शताक्षर-संयुतः—ॐ क्लीं श्रीं नमः पुरुषोत्तम ! अप्रतिरूप ! लक्ष्मी-निवास ! सकल-जगत्-क्षोभणः ! सर्व-स्त्री-हृदय-विदारण ! त्रिभुवन-मदोन्माद-कर ! सुरासुर-मनुज-सुन्दरी-जन-मनांसि तापय तापय दीपय दीपय शोषय शोषय मारय मारय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय द्रावय द्रावयाकर्षयाकर्षय समस्त-परम-सुभग-सर्व-सौभाग्य-कर ! सर्व-काम-प्रद ! अमुकं हन हन चक्रेण गदया खड्गेन सर्व-वाणैः भिन्द भिन्द पाशेन कट्ट कट्ट अंकुशेन ताड़य ताड़य कुरु कुरु किं तिष्ठसि तावत् यावत् समीहित मे सिद्धं भवति हुं फट् नमः

'शारदातिलक' । ऋषि जैमिनि, छन्द अमित, देवता पुरुषोत्तम । षडङ्ग-न्यास क्रमशः छः मन्त्रों से करे—(१) ॐ पुरुषोत्तम ! त्रिभुवन-मदोन्माद-कर ! हुं फट् नमः, (२) ॐ पुरुषोत्तम जगत्-क्षोभण ! लक्ष्मी-दयित ! हुं फट् नमः, (३) ॐ मन्मथोत्तमांगजे ! काम-दायिनि ! हुं फट् नमः, (४) ॐ परम-सुभग ! सर्व-सौभाग्य-दायक ! हु फट् नमः, (५) ॐ त्रिभुवनेश्वर ! सर्व-जन-मनांसि हन हन दारय दारय मे वशमानय हुं फट् नमः, (६) ॐ सुरासुर-मनुज-सुन्दरी-हृदय-विदारण ! सर्व-प्रहरण-धर ! सर्व-कामिक ! हन हन हृदयं बन्धनानि आकर्षय आकर्षय महा-बल हुं फट् नमः ।

उल्लेखनीय है कि इस मन्त्र की उपासना में षडङ्ग-न्यास करते समय हृदय, शिर, शिखा, कवच के बाद अस्त्र का न्यास कर अन्त में नेत्र-त्रय के न्यास की विधि है । अर्थात् उक्त छठे मन्त्र का न्यास पहले होगा, बाद में पाँचवें मन्त्र का ।

मन्त्र मे 'अमुक' शब्द के स्थान पर साध्य या रोगादि का नाम जोड ले । इससे मन्त्राक्षर-संख्या में वृद्धि भी हो, तो कोई बात नहीं । ध्यान—

देवं श्रीपुरुषोत्तमं कमलया स्वाङ्कस्थया पङ्कजं, बिभ्रत्या परिबद्धमम्बुज-रुचा तस्यां निबद्धेक्षणं ।
ध्यायेच्चेतसि शङ्ख-पाश-मूशलांश्चापेषु-खड्गान् गदां, हस्तैरंकुशमुद्वहन्तमरुणं स्मेरारविन्दननम् ।

पुरश्चरण में चार लाख जप कर अर्द्ध-चन्द्राकार कुण्ड में पद्म, जाति पुष्पों और यव से क्रमशः दशांश होम करे ।

अनन्त

षडक्षर : अनन्ताय नमश्चेति षड्-वर्णोऽयमुदाहृतः—अनन्ताय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि व्यास, छन्द गायत्री, देवता अनन्त। ध्यानादि 'परमात्मा'-मन्त्र—१ के समान।

वेदव्यास

१ अष्टाक्षर : वेद-व्यासाय हृदयमष्टार्णो मनुरीरितः—व्यां वेद-व्यासाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता सत्यवती-सुत, बीज 'व्यां', शक्ति 'नमः'। 'व्यां व्यीं', आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

व्याख्या-मुद्रा-दक्ष-हस्तं वाम-जानु-तले स्थितं, योग-पट्टासनारूढं प्रफुल्ल-कुसुम-द्युतिं।
दीर्घ-कण्ठं विशालाक्षं तुन्दिलं मुनि-वन्दितं, नाना-शिष्यैः परिवृतं कृष्ण-द्वैपायनं भजे॥

पुरश्चरण में आठ सहस्र जप कर पायस से दशांश होम। पुरश्चरण के बाद प्रतिदिन तीनों समय १०८ बार जप करने से कवित्व, व्याख्यान-शक्ति और यश-लाभ।

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में ध्यान भिन्न दिया है। यथा—

मुनि-व्रातावीतं मुदित-धियमम्भोज-रुचिर-द्युतिं व्याख्या-मुद्रा-कलन-विलसद्-दक्षिण-करं।
परं जानौ कृत्वा दृढ़-कलित-कक्षैक-विवरं, समासीनं व्यासं स्मरति नितरां पुण्य चरितं॥

२ चतुर्दशाक्षर : तारं नमः समाभाष्य मन्त्रमेतत् (अष्टाक्षरः) ततो वदेत्, सोऽहं तारं पुनश्चोक्त्वा मन्त्रश्चेन्द्राक्षरो मतः—ॐ नमः व्यां वेद-व्यासाय नमः सोऽहं ॐ

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि कहोड, छन्द गायत्री, देवता अप-मृत्यु-हर चिरंजीवी व्यास, बीज 'हं', शक्ति 'सः'। 'हां ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। शेष ध्यानादि पूर्ववत्। पुरश्चरण मे ११ सहस्र जप। कुष्ठादिक महा-रोगों के नाशार्थ एक लक्ष जप करे। पुरश्चरण के बाद १०८ बार अभिमन्त्रित जल से प्रतिदिन स्नान करने और अभिमन्त्रित दुग्ध-पान करने से आरोग्य लाभ के साथ पूर्णायु प्राप्त होती है।

श्रीकर

अष्टाक्षर : उत्तिष्ठ पदमाभाष्य श्री क्रोधीश-हुताशनौ, वह्नि-जायावधिर्मन्त्रो वस्वक्षर-समन्वितः—उत्तिष्ठ श्रीकर! स्वाहा

'शारदा-तिलक'। ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता श्रीकर हरि, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा'। पञ्चाङ्ग-न्यास क्रमशः छः मन्त्रो से—(१) भीषण भीषय हुं, (२) त्रासय त्रासय हुं, (३) प्रमर्दय प्रमर्दय हुं, (४) प्रध्वंसय प्रध्वंसय हुं। (५) रक्ष रक्ष हुं। नेत्रो मे न्यास की विधि नही है। ध्यान—

रक्त-पद्मासनस्थं गरुडस्योपरि स्थितं, काञ्चनाद्रि-सम - प्रभं कमलाननं कमलेक्षणं।
चक्र-शङ्ख-गदा-सरोज-धरं मनोहर-दर्शनं, कौस्तुभाङ्कित-वक्षसं मुकुटाङ्गदादि-विभूषणं।
तार्क्ष्य-वाहनमच्युतं हृदि भावयामि जगत्-पतिम्॥

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' मे ऋषि का नाम 'नामदेव' दिया है, जो ठीक प्रतीत नही होता। उसमें ध्यान यही दिया है किन्तु दो पाठ-भेद हैं। यथा—१ कमलाननं : कमलासनं, २ वाहनमच्युतं : वाहनमादराद्।

इस मन्त्र के पुरश्चरण में आठ लाख जप कर बिल्व, अश्वत्थ, यज्ञाडुमुर, पाकड़ और वट की समिधा में पद्म-समूह, दुग्धान्न और घृत द्वारा दशांश होम (प्रत्येक द्रव्य द्वारा एक अयुत, मिश्रित सभी द्रव्यों द्वारा आठ अयुत)।

गारुड़

१ **पञ्चाक्षर :** वक्ष्येऽथ गारुडं मन्त्रं क्षिप तारोऽग्नि-गेहिनी—क्षिप ॐ स्वाहा

ऋषि अनन्त, छन्द पंक्ति, देवता गरुड़, वीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा'। ध्यान—

तप्त-स्वर्ण-निभं नाग-प्रज्ञप्ताङ्ग-विभूषणं, चंच्वग्र-प्रचलद्-भोगि-भोगं मुकुट-मंडितं।
पक्षोच्चारित-सत्साम-गानं विष-हरं भजे।

२ **सप्ताक्षर :** पक्षिराजाय स्वाहा

३ पण्णवत्यक्षर : तारो नमो भगवते महा-गरुड ङेऽन्तकं, श्रीविष्णु-वरवाहेति नाय त्रैलोक्यमेव च। पूजिताय वज्र-नख-वज्र-तुण्ड पदं वदेत्, वज्र-पक्षाय पिङ्गेति शरीराय वदेत् ततः। एह्येहि महा-गरुड दुष्ट-नागान् पदं वदेत्, छिन्धि-द्वयं दुष्ट-विषं द्विश्छिन्धि दुष्ट-राक्षसान्। द्विभिन्ध्यावेशय-युगं बद्धो हुं फट् वसु-प्रिया—ॐ नमो भगवते महा-गरुडाय श्रीविष्णु-वर-वाहनाय त्रैलोक्य-पूजिताय वज्र-नखाय वज्र-तुण्डाय वज्र-पक्षाय पिङ्ग-शरीराय, एह्येहि महा-गरुड ! दुष्ट-नागान् छिन्धि छिन्धि, दुष्ट-विषं छिन्धि छिन्धि, दुष्ट-राक्षसान् भिन्धि भिन्धि, आवेशयावेशय बद्धो हुं फट् स्वाहा

ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता गरुड, वीज हुल्, शक्ति स्वर, विनियोग मन्त्रोक्त-विष-नाशार्थं। १ गरुडात्मा, २ वैनतेय, ३ तार्क्ष्य, ४ छन्दोमय, ५ कपिलाक्ष, ६ नाग-गरलान्त-कर—इन छः नामों के चतुर्थ्यन्त रूप के आदि मे 'ॐ' और अन्त में 'नमः' लगाकर उनसे क्रमशः षडङ्ग-न्यास करे। ध्यान—

हिमाद्रि-शिखाकारं पूर्ण-चन्द्र-निभाननं, दीर्घ-बाहुं वृष-स्कन्धं नागाभरण-भूषितं।
अनन्तो वाम-कटकं यज्ञ-सूत्रं तु वासुकिः, तक्षकः कटि-सूत्रं च हारः कर्कोट उच्यते।
पद्मश्च दक्षिणे पार्श्वे महा-पद्मश्च वामतः, शङ्ख-पालः शिरोदेशे कुलिकस्तु भुजान्तरे।
आजानु काञ्चनाभासं ह्यानाभं तुहिन-प्रभं, आकण्ठाद् रक्त-वर्णं च विष्णु-ध्वज-गतं भजे॥
पुरश्चरण मे ९६ सौ का सात गुना जप कर तिलों से होम करे।

४ **गरुड़-गायत्री : सुपर्णाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात्**

ध्यान, पूजादि के बिना केवल २४ लाख जप मात्र से यह मन्त्र सिद्ध होता है। गरुड-सम्बन्धी इन चारों मन्त्रों की विधि 'मेरु-तन्त्र' मे द्रष्टव्य है।

आयुधादि-मन्त्र

१ शङ्ख नवाक्षर : १ ॐ क्लीं जल-चरायेति स्वाहान्तोऽयं नवार्णक.—ॐ क्लीं **जल-चराय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। भगवान् विष्णु के हाथ में स्थित शङ्ख का ध्यान करते हुये पूजा के अन्त मे १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे और जप के अन्त मे उसे पाञ्चजन्य के समान ध्यान करे। इस प्रकार छः मास तक करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

२ **अष्टादशाक्षर :** आद्यो जल-चरायान्ते ठ-द्वय मनुरीरितः—महा-जल-चराय हुं फट् स्वाहा **पाञ्चजन्याय नमः**

'शारदातिलक' की टीका में उक्त उद्धार के 'आद्य' और 'अन्त' शब्दों की पूर्ति क्रमशः 'महा' और 'हुं फट्' से की गई है। साथ ही 'पाञ्च-जन्याय नमः' को भी जोड़ा गया है। इस प्रकार १८ अक्षरों का मन्त्र बना।

२ **स-शर-धनुः (शार्ङ्ग) नवाक्षर :** १ शार्ङ्गाय स-शराय हुं फट् जप्यो नवायुतं—शार्ङ्गाय स-शराय हुं फट्

'मेरु-तन्त्र'। पुरश्चरण मे ६ अयुत जप कर घृताक्त तिलो से होम।

२ त्रयोदशाक्षर : शार्ङ्गाय स-शरायान्ते स्वाहान्तोऽनन्तरो मनुः—**महा-शार्ङ्गाय स-शराय हुं फट् स्वाहा**

'शारदातिलक' की टीका के अनुसार १३ अक्षरो का मन्त्र है।

३ सुदर्शन सप्ताक्षर : १ तारः सहस्रार हु फट्—**ॐ सहस्रार हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। 'शारदा-तिलक' मे—'तारो भृगुर्वियद् भूयस्तदाद्य वह्नि-दीर्घ-युक्, पावकः कवचास्त्रान्तो मनुः सप्ताक्षरः स्मृतः।' ऋषि अहिर्बुध्न्य, छन्द अनुष्टुप्, देवता चक्र-रूप हरि, बीज 'स', शक्ति हुं। षडङ्ग-न्यास क्रमशः छः मन्त्रो से करे—(१) ॐ आचक्राय स्वाहा, (२) ॐ विचक्राय स्वाहा, (३) ॐ सुचक्राय स्वाहा, (४) ॐ धी-चक्राय स्वाहा, (५) ॐ सचक्राय स्वाहा, (६) ॐ ज्वाला-चक्राय स्वाहा। ध्यान—

कल्पान्तार्क-प्रकाशं त्रिभुवनमखिल तेजसा पूरयन्तं, रक्ताक्षं पिङ्ग-केशं रिपु-कुल-भयदं भीम-दंष्ट्राट्टहासं।
चक्रं शङ्खं गदाब्जे पृथुतर-मूषलं चाप-पाशांकुशान् स्वैर्बिभ्राणं दोर्भिराद्यं मनसि मुर-रिपुं भावयेच्चक्र-संज्ञं॥

'मेरु-तन्त्र' मे षडङ्ग-न्यास के अन्तिम चार मन्त्र भिन्न रूप मे दिये है। यथा—(३) शुद्धि-चक्राय० (४) सुचक्राय०, (५) ज्वाला-चक्राय०, (६) वकुल-चक्राय०। ध्यान भी भिन्न है। यथा—

ध्यायेत् सुदर्शनं दक्षादूर्ध्व-क्रमादष्ट-भुजैरायुध-धारिणम्—
चक्रं शङ्खं गदा पद्मं मुसलं च शरासनं, पाशमंकुशमादीप्त भीम-दंष्ट्रं रवि-प्रभम्।

पुरश्चरण मे १२ लाख जप कर तिल, सरसो, पद्म, बिल्व और दुग्धोदन मे से प्रत्येक से क्रमशः २४०० होम करे। पाँचो मिश्रित द्रव्य से होम करना हो, तो १२ सहस्र आहुतियाँ दे।

२ षोडशाक्षर : तारो नमो भगवते महा-सुदर्शनं वदेत्, ङेऽन्तं हु फट—**ॐ नमो भगवते महा-सुदर्शनाय हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि पूर्व-वत्।

३ सप्त-चत्वारिंशाक्षर माला-मन्त्र : तारो नमो भगवते महा-पूर्व-पद-त्रय, ङेऽन्तं सुदर्शनं चक्र ज्वाल ङेऽन्तं ततो वदेत्। दीप्त-रूप सर्व-नाथ रक्ष-युग्म च मा महा, बलायाऽग्नि-वधू हुं फट् सप्त-वेदाक्षरो मनुः—**ॐ नमो भगवते महा-सुदर्शनाय महा-चक्राय महा-ज्वालाय दीप्त-रूपाय, सर्व-नाथ रक्ष रक्ष मां, महा-बलाय स्वाहा हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि पूर्ववत्। पुरश्चरण मे ६४ सहस्र जप।

४ एक-सप्तत्यक्षर : सुदर्शन महा-चक्र-राजान्ते स्याद् दह-द्वयं, सर्व-दुष्ट-भयं पश्चाद् कुरु-छिन्धि-द्वय पृथक्। विदारय-पद-द्वन्द्व पर-मन्त्रान् ग्रस ग्रस, भक्षय त्रासय-द्वन्द्व प्रत्येकं वर्म फट् द्वय। चक्राय नम इत्येष तृतीयो मन्त्र ईरित—**ॐ सुदर्शन! महा-चक्र-राज! दह दह, सर्व-दुष्ट-भयं कुरु कुरु, छिन्धि छिन्धि, विदारय विदारय, पर-मन्त्रान् ग्रस ग्रस, भक्षय भक्षय, भूतानि त्रासय त्रासय, हुं फट् स्वाहा सुदर्शनाय नमः**

'शारदा-तिलक'।

५ चतुस्सप्तत्यक्षर माला-मन्त्र ॐ क्लीं सुदर्शन महा चक्रराज दह-द्वय, सर्व-दुष्ट-भयं द्विद्विः कुरु च्छिन्धि च भिन्धि च। विदारय-द्वय प्रोच्य पर-मन्त्रान् ग्रस-द्वय, भक्षय-द्वितय प्रोच्य भूतानि त्रासय-द्वयं। हुं फट् स्वाहेति चक्राय नमो वेदनुगाक्षरः—**ॐ क्लीं सुदर्शन, महा-चक्रराज! दह-दह, सर्व-दुष्ट-भयं**

कुरु कुरु, छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, विदारय विदारय, पर-मन्त्रान् ग्रस ग्रस, भक्षय भक्षय, भूतानि त्रासय त्रासय, हुं फट् स्वाहा चक्राय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि पूर्ववत्। पुरश्चरण में ६४ सहस्र जप।

६ गायत्री : सुदर्शनाय विद्महे महा-ज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्

३ खड्ग : १ द्वादशाक्षर : तारो मारः खड्ग तीक्ष्ण भिन्धि भिन्धीति हुं च फट्—ॐ क्लीं खड्ग तीक्ष्ण ! भिन्धि भिन्धि हुं फट् 'मेरु-तन्त्र'।

२ विंशत्यक्षर : खड्ग-तीक्ष्ण-पदान्ते स्याच्छिन्द-युग्मं हुमादि च, चतुर्थोऽयं मनुः प्रोक्तः—ॐ महा-खड्ग तीक्ष्ण ! छिन्द छिन्द हुं फट् स्वाहा खड्गाय नमः 'शारदातिलक'।

४ गदा : १ पञ्च-विंशाक्षर : तारं कामं समुच्चरेत्, कौमोदकि महा-सर्व-बले सर्वासुरान्तिके प्रसीद हुं फट् स्वाहेति—ॐ क्लीं कौमोदकि, महा-सर्व-बले, सर्वासुरान्तिके ! प्रसीद हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। पुरश्चरण में एक लक्ष जप।

२ त्र्यस्त्रिंशाक्षर : कौमोदकि महा-बले सर्वासुरान्तकि-पदं प्रसीद-युग वर्म-फट्, स्वाहान्तोऽयं मनुः प्रोक्तः—ॐ महा-कौमोदकि ! महा-बले ! सर्वासुरान्तकि ! प्रसीद प्रसीद हुं फट् स्वाहा कौमोदक्यै नमः 'शारदातिलक'।

६ अंकुश : १ त्रयोदशाक्षर : तारं मदनमंकुश कंचु-द्वयं च वर्मास्त्रं स्वाहान्तो विश्व-वर्णकः—ॐ क्लीं अंकुश ! कंचु कंचु हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि गणपति, छन्द मति, देवता गज-विमर्दक विष्णु-रूपी अंकुश।

मन्त्र के १, १, ३, ४, २, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। १३ लाख जप।

२ ऊन-विंशाक्षर : अंकुशान्ते कट्ट-युगं षष्ठोऽयं मनुरीरितः—ॐ महांकुश ! कट्ट कट्ट हुं फट् स्वाहा अंकुशाय नमः 'शारदातिलक'।

७ मुसल : १ ऊन-विंशाक्षर : काम-संवर्तक-पदं मुसलं पोथय-द्वयं, हुं फट् स्वाहान्तको मन्त्रः—काम-संवर्तक, मुसल ! पोथय पोथय हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। एक अयुत जप कर खदिर की समिधा मे घृत से होम।

२ विंशाक्षर : सम्वर्तकान्ते मूपल ! पोथय-द्वितयं पुनः, हुं फट् द्वि-ठान्तो मन्त्रोऽयं सप्तमः परिकीर्तितः—ॐ सम्वर्तक ! महा-मूपल ! पोथय पोथय हुं फट् स्वाहा 'शारदातिलक'।

८ पाश : १ ऊन-विंशाक्षर : तारं मनोभवं पाशं वध-युगं चैवाकर्षय-द्वितयं च हुं फट् स्वाहा—ॐ क्लीं पाश ! वध वध आकर्षयाकर्षय हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वरुण, छन्द अमित समुद्र, देवता वरुण-हस्त-गत पाश। मन्त्र के १, १, ६, ७, २, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। तीन लाख जप कर कैरव पुष्पो से होम।

२ षड्विंशाक्षर : पाशं बन्ध-द्वयं पश्चादाकर्षय-पद-द्वयं, वह्निजायावधिः सद्भिरष्टमो मन्त्र ईरितः—ॐ महा-पाश ! बन्ध बन्ध आकर्षय आकर्षय हुं फट् स्वाहा पाशाय नमः 'शारदातिलक'।

९ किरीट सप्तत्यक्षर : ब्रूयात् किरीट-केयूर-हारं मकर-कुण्डलं शङ्ख-चक्र-गदाम्भोज-हस्तं पीताम्बर-धरं श्रीवत्साङ्कित-वक्षोऽन्ते स्थल-शब्दमुदीरयेत्। श्री-भूमि-सहित-स्वात्म-ज्योतिर्द्वयमुदाहृतं, पश्चाद् दीप्ति-करायेति सहस्रादित्य-तेजसे। नमोऽन्तः प्रणवाद्योऽयं किरीट-मनुरीरितः—ॐ किरीट-केयूर-हार !

मकर - कुण्डलालंकृत ! शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-हस्त ! पीताम्बर - धर ! श्रीवत्साङ्कित - वक्षःस्थल ! श्री-भूमि-सहित-स्वात्म-ज्योतिर्द्वय ! दीप्ति-कराय सहस्रादित्य तेजसे नमः 'शारदातिलक' ।

१० छत्र षडक्षर : छं छत्राय नमस्त्विति—छं क्षत्राय नमः

'मेरु-तन्त्र' । छन्द गायत्री, देवता हर । ध्यान—

स्वर्ण-दण्डं सित-प्रभं, आरक्त-कलश ध्यायेन्मस्तके स्वे च पूजयेत् ।

छः लाख जप कर घृत-पायस से दशांश होम ।

११ चामर द्वा-त्रिंशदक्षर : अथातः सम्प्रवक्ष्यामि लोक-रूप-मनु परं, चामरस्य ग्रहावेश-दुष्ट-घादिक-निवारणं—शशाङ्क-कर-सङ्काश, क्षीर-डिण्डिम-पाडुर ! प्रोत्सरयाशु दुरितं चामर ! श्री नमोऽस्तु ते

'मेरु-तन्त्र' । ३२ सहस्र जप कर गो-घृत से होम ।

१२ ध्वज द्वि-पञ्चाशदक्षर : शक्र-केतवे च महा-वीर्याय श्याम-वर्णकं, ङेऽन्तं च च्छत्र-राजाय नमो नारायण-ध्वज । गरुडासन रक्ष द्विरायुधानि रिपून् दह, द्वयं वर्मास्त्राग्नि-जाया द्वि-पञ्चाशार्णको मनुः—ॐ शक्र-केतवे महा-वीर्याय श्याम-वर्णाय च्छत्र-राजाय नमो नारायण-ध्वज ! गरुडासन ! रक्ष रक्ष आयुधानि रिपून् दह दह हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ५ सहस्र जप कर घृत से दशांश होम ।

१३ पताका पञ्चाशदक्षर : तारं रमा-त्र्यं हिरण्य-कशिपोर्युद्धे पूतने दैवतासुरे रणारपति-कालेति नेति मृत्यु-पदं वदेत्, कालहं निर्दह-द्वन्द्वं रिपून् सर्वान् पताकिके । हुं फट् स्वाहेति—ॐ श्रीं श्रीं श्रीं हिरण्य - कशिपोर्युद्धे पूतने दैवतासुरे रणारपति - कालन-मृत्यु-काल-हन्त्रि ! दह दह रिपून् सर्वान् पताकिके ! हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । पाँच अयुत जप कर त्रिमधुर से होम करे ।

१४ परशु पञ्चादशाक्षर : ॐ क्लीं रामायुधायेति श्री पं परशवे नमः, तिथ्यक्षरोऽयं परशोर्मन्त्रः संग्राम-सिद्धिदः—ॐ क्लीं रामायुधाय श्रीं पं परशवे नमः 'मेरु-तन्त्र'

१५ दण्ड-गायत्री : ब्रह्मोद्भवाय विद्महे स्वर्ण-रूपाय धीमहि तन्नो दण्डः प्रचोदयात्

'मेरु-तन्त्र' । सहस्र, अयुत से आरम्भ कर एक कोटि तक छोटे या बड़े कार्य के अनुरूप जप कर घृत-पायस से होम करे । फल---विविध प्रकार के दण्डों से मुक्ति ।

अङ्ग-देवता

१ एकोनविंशत्यक्षर धरणी : हृदय भगवत्यै स्याद् धरण्यै तदनन्तरं, धरण्यन्ते धरे-द्वन्द्वे द्वि-ठान्तोऽय ध्रुवादिक —ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणी-धरे धरे स्वाहा

'शारदा-तिलक' । 'वराह' अवतार के प्रसङ्ग में पृष्ठ ४० पर प्रकाशित ऊनविंशति 'धरा-हृदय' नामक मन्त्र जैसा ही यह मन्त्र है । ऋषि, छन्द वही हैं, देवता का नाम यहाँ 'सर्व-भूताना प्रकृतिर्वसुधा' बताया है । मन्त्र ३, ४, ३, ५, २, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

श्यामां विचित्रांशुक-रत्न-भूषणां, पद्मासनां तुङ्ग-पयोधरानताम् ।
इन्दीवरे द्वे नव-शालि-मञ्जरीं, शुकं दधानां वसुधां भजामहे ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृत-सहित पायस से दशांश होम ।

२ सीता षडक्षर : श्री सीतायै द्वि-ठान्तेन—श्रीं सीतायै स्वाहा

'शारदा-तिलक'। ऋष्यादि 'राम' अवतार के प्रसङ्ग में पृष्ठ ४८ पर प्रकाशित १७ वें मन्त्र के समान। ध्यान में एक पाठ-भेद है—स्वर्णाभामम्बुज : सुवर्णाभाम्बुज।

'नारद पुराण' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों मे दिया है—'पद्मा ङेऽन्ता ठ-द्वयान्तो षडक्षरः'। ऋषि भी भिन्न 'वाल्मीकि' बताये हैं। ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

ध्यायेत् सदा महा-देवीं सीतां त्रैलोक्य-पूजितां, तप्त-हाटक-वर्णाभां पद्म-युग्मं कर-द्वये।
सद् रत्न-भूषण-स्फूर्जद्-दिव्य-देहां शुभात्मिकां, नाना-वस्त्रां शशि-मुखीं पद्माक्षीं मुदितान्तरां।
पश्यन्तीं राघवं पुण्यं शय्यायां षड्-गुणेश्वरीम्॥

३ सप्ताक्षर लक्ष्मण : रेफ-पूर्वं समुद्धृत्य विन्दु-लक्ष्मण-संयुतं ङेऽन्तोऽयं लक्ष्मण-मनुर्नमसा च समन्वितः—लं लक्ष्मणाय नमः

'शारदा-तिलक'। ऋषि अगस्त्य, छन्द गायत्र, देवता लक्ष्मण, वीज 'लं', शक्ति 'नमः', विनियोग 'पुरुषार्थ-चतुष्टय'। 'लां लीं' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

द्वि-भुजं स्वर्ण-रुचिरं तनुं पद्म-निभेक्षणं, धनुर्वाण-करं राम-सेवा-संसक्त-मानसम्।

पुरश्चरण मे सात लाख जप करे। तदनन्तर भगवान् राम की पूजा के आदि या अन्त मे इस मन्त्र का १००८ या १०८ बार नित्य जप करे अन्यथा राम-मन्त्र की सिद्धि नही होती।

'नारद पुराण' में उक्त मन्त्र का उद्धार—'इन्दु-युक्तो शक्रः लक्ष्मणस्तु ङेऽन्तः नत्यन्तो सप्ताक्षरः।' ध्यानादि वही है।

४ सप्ताक्षर भरत : निद्रा चन्द्र-युक्ता ङेऽन्तो भरतः नमसा च समन्वित.—भं भरताय नमः

५ सप्ताक्षर शत्रुघ्न : सेन्दु वक : शत्रुघ्नोङेऽन्तः नमसा च समन्वितः—शं शत्रुघ्नाय नमः

भरत और शत्रुघ्न के मन्त्रो के ऋष्यादि लक्ष्मण-मन्त्र के ही समान हैं।

६ हनुमान (आञ्जनेय) : १ अष्टादशाक्षर : पूर्वं नमः पदं चोक्त्वा ततो भगवते पद, आञ्जनेय-पद ङेऽन्तं महा-वल-पदं तथा। वह्नि-जायान्त एव स्यान्मन्त्रो हनूमतः परः, सर्व-सिद्धि-करः प्रोक्तो मन्त्रश्चाऽष्टादशाक्षरः—नमः भगवते आंजनेयाय महा - बलाय स्वाहा

'शारदा-तिलक'। ऋषि ईश्वर, छन्द अनुष्टुप्, देवता हनूमान, वीज 'हुं', शक्ति 'स्वाहा'। षडङ्ग-न्यास छः मन्त्रो से करे—(१) नमो भगवते आजनेयाय, (२) रुद्र-मूर्तये, (३) वायु-सुताय, (४) अग्नि-गर्भाय, (५) राम-दूताय, (६) ब्रह्मास्त्र-वारणाय। ध्यान—

स्फटिकाभं स्वर्ण-कान्तिं द्वि-भुजं च कृतांजलिं,
कुण्डल-द्वय-संशोभि-मुखाम्भोजं मुहुर्मुहुः।

पुरश्चरण में अयुत जप भगवान् राम या भगवान् शिव की प्रतिमा के आगे बैठकर करे।

२ द्वादशाक्षर : हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः

ऋषि रामचन्द्र, छन्द जगती, देवता हनुमान्, वीज 'ह्सौं', शक्ति 'ह्स्फ्रें'। मन्त्रस्य छः वीजो से क्रमशः षडङ्ग न्यास—

उद्यत्-कोट्यर्क-सङ्काशं जगत् प्रक्षोभ-कारकं, श्रीरामांघ्रि-ध्यान-निष्ठं सुग्रीव-प्रमुखार्चितं।
वि-त्रासयन्तं नादेन राक्षसान् मारुतिं भजे॥

पुरश्चरण में १२ सहस्र जप कर दही-दूध-घी से मिश्रित धान की दशांश आहुति।

३ पञ्चाक्षर : ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं

ऋषि रामचन्द्र, छन्द गायत्री, देवता हनुमान्। पाँच बीजों और सम्पूर्ण मन्त्र के बाद क्रमशः निम्न छः नामों को जोड़कर षडङ्ग-न्यास करे—१ हनुमते नमः, २ राम-दूताय नमः (लक्ष्मण-प्राण-दात्रे नमः, ४ अञ्जनी-सुताय नमः, ५ सीता-शोक-विनाशाय नमः, ६ लङ्का-प्रासाद-भंजनाय नमः। ध्यानादि द्वादशाक्षर-मन्त्र के समान।

७ राधा षडक्षर : १ भूत-वर्गात् परो वर्णो द्वितीयो दीर्घ-वान् मुने! चतुर्वर्ग-तुरीयश्च दीर्घ-वांश्च फल-प्रदः। भूत-वर्गात् परो वर्णो वाणी-वान् सर्व-सिद्धिदः, सर्व-शुद्ध-प्रियान्ता च तस्या बीजादिका स्मृता—रां ओं आं यं स्वाहा

'नारद-पञ्चरात्र' (२।३।३८) में विस्तृत विधि द्रष्टव्य है।

२ ङेऽन्ता श्रीराधा वह्नि-जाया-समन्विता—श्री राधायै स्वाहा

ऋषि नारायण, छन्द गायत्री, देवता श्री राधा, बीज 'स्त्रीं', शक्ति 'ह्रीं'। ध्यान—

श्वेत-चम्पक-वर्णाभां शरदिन्दु-समाननां, कोटि-चन्द्र-प्रतीकाशां शरदम्भोज-लोचनां।
सुकुमाराङ्ग-लतिकां रास-मण्डल-मध्यगां, वराभय-करां शान्तां शश्वत्-सुस्थिर-यौवनां।
रत्न-सिंहासनासीनां गोपी-मण्डल-नायिकां, कृष्ण-प्राणाधिकां वेद-बोधितां परमेश्वरीं॥

३ सप्ताक्षर : ह्रीं श्रीराधायै स्वाहा

८ कामदेव एकाक्षर : ब्रह्मा भूम्या समासीनः शान्ति-बिन्दु-समन्वितः, बीजं मनोभुवः प्रोक्तं जगत्-त्रितय-मोहनं—क्लीं

'शारदा-तिलक'। ऋषि सम्मोहन, छन्द गायत्र, देवता मकर-ध्वज, बीज 'कं', शक्ति 'ईं'। 'कां कीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

जवारुणं रत्न-विभूषणाढ्यं मीन-ध्वजं चारु-कृताङ्गरागं।
कराम्बुजैरंकुशमिक्षु-चापं पुष्पास्त्र-पाशौ दधतं भजामि॥

'प्रपञ्चसार तन्त्र' में ध्यान भिन्न दिया है। यथा—

अरुणमरुण-वासो-माल्य-दामङ्गरागं, स्व-कर-कलित-पाशं सांकुशास्त्रेषु-चापं।
मणि-मय-मुकुटाद्यैर्दीप्तिमाकल्प-जातैररुण-नलिन-संस्थं चिन्तयेदङ्ग-योनिं॥

पुरश्चरण मे तीन लाख जप कर मधुर-त्रय से युक्त किंशुक-पुष्पों द्वारा दशांश होम।

'कृष्ण' अवतार के प्रसङ्ग मे पृष्ठ ४८ पर 'एकाक्षर कृष्ण' का यही मन्त्र प्रकाशित है। यहाँ 'सम्मोहन कृष्ण' देवता का एक अन्य ध्यान उद्धृत है—

नित्यमष्ट-भुजं ध्यायेदरुणं पुरुषोत्तमं, रमयाऽऽलिङ्गितं वामे लोक-त्रितय-मोहनं।
चक्रं खड्गं च मुशलं दक्षे बिभ्राणमंकुशं, वामे पाशं तथा शङ्ख स-शरं चापमेव च।
कौमोदकीं च बिभ्राण सर्व-भूषण-भूषितं॥

कामदेव-गायत्री—काम-देवाय-शब्दान्ते विद्महे ङेऽन्तमीरयेत्, पुष्प-बाणं धीमहि स्यात् तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्—काम-देवाय विद्महे पुष्प-बाणाय धीमहि तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्

भगवान शिव

'पञ्चायतन' मे चौथे देवता भगवान् शिव है। त्रि-देवो में इन्हें प्रमुख स्थान प्राप्त है। ब्रह्मा का कार्य सृष्टि, विष्णु का स्थिति और शिव का संहार करना है किन्तु वास्तव में ये कार्य विशेषता-सूचक है। अन्यथा सृष्टि और स्थिति के कार्यों मे भी भगवान् शिव पूर्णतः सक्षम हैं। भगवान् शिव का अनूठापन इस बात में है कि वे परम कारुणिक एवं शीघ्र प्रसन्न होनेवाले है और भक्तों की मनमानी इच्छा की पूर्ति करते हैं। इसी से वे भोलानाथ, औघड़-दानी जैसे नामों से प्रसिद्ध है।

'दक्षिणामूर्ति' के रूप में भगवान् शिव जगद्-गुरु के रूप में सनातन काल से प्रतिष्ठित है। इस रूप की विशेषता है व्याख्यान और तर्क की मुद्रायें। तान्त्रिक साधना मे उन्हें 'आदि-गुरु' के सर्वोच्च स्वरूप में नित्य स्मरण किया जाता है।

भगवान् शिव का एक प्रसिद्ध नाम 'पशु-पति' है। 'पशु' का अर्थ है समस्त सृष्टि अर्थात् ब्रह्मा से लेकर स्थावर-जङ्गम आदि सभी 'पशु' श्रेणी में हैं और उनके 'पति' अर्थात् स्वामी हैं भगवान् शिव। 'जीव' को 'पशु' कहा जाता है क्योंकि वह इन्द्रिय-भोगों मे लिप्त रहता है। सासारिक भोग और विषय तथा काम-क्रोधादि 'पाश' रूप हैं, जिनसे वह बँधा रहता है। इन पाशो से जीव का उद्धार उन्ही की कृपा से होता है।

'शिव' शब्द का अर्थ है शुभ, कल्याण, मङ्गल, श्रेयस्कर आदि। यहाँ यह विचारणीय है कि उनका मुख्य कार्य 'संहार' है। नामार्थ के साथ उनके कार्य की सङ्गति बैठाने से विदित होता है कि संहार या लय-प्रक्रिया-द्वारा ही जीव का परम कल्याण साधित हो पाता है। इनके अन्य दो प्रसिद्ध नामो--'शम्भु' और 'शङ्कर' से भी इसी तत्व की उपलब्धि होती है।

भगवान् शिव की उपासना किए विना अन्य देवता की कृपा प्राप्त नहीं होती। 'उत्पत्ति तन्त्र' में इस सम्बन्ध मे स्पष्ट कहा है कि—

शाक्तो वा वैष्णवो वाऽपि सौरो वा गाणपोऽथवा। शिवार्चन-विहीनस्य कुतः सिद्धिर्भवेत् प्रिये !

भगवान् शिव के 'पञ्च-कृत्य' अर्थात् पाँच प्रकार के कार्य विख्यात हैं--१ सृष्टि, २ स्थिति, ३ संहार, ४ तिरोधान (गोपन या लोपन), ५ अनुग्रह (प्रसाद)। वे विभिन्न कलाओ—संगीत, नृत्यादि और विद्याओं—योग, मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र, व्याकरण, व्याख्यान, भैषज्य आदि के मूल प्रवर्त्तक है। सभी जीवों के वे स्वामी हैं, इसी से पशु-पति, भूत-नाथ, भूत-पति जैसे नामों से लोक-प्रिय है। सभी देवों मे श्रेष्ठ होने क कारण उन्हे महा-देव, महेश्वर, देवाधिदेव आदि कहा जाता है।

ऋग्वेद में 'रुद्र' का उल्लेख है। शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता का 'शत-रुद्रिय' पाठ प्रसिद्ध है। अथर्व-वेद में रुद्र की महिमा वर्णित है। इस प्रकार वैदिक साहित्य मे भगवान् शिव का मूल स्वरूप 'रुद्र' के रूप में मिलता है। श्वेताश्वतर उपनिषद् मे 'रुद्र' का नामान्तर 'शिव' बताया है। शाङ्खायन, कौषीतकि, शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थो मे उनके आठ नामो का उल्लेख है—१ रुद्र, २ शर्व, ३ उग्र, ४ भीम या अशनि (ये चारो शिव के भयङ्कर रूप है), ५ भव, ६ पशु-पति, ७ महादेव, ८ ईशान (ये चारो सौम्य रूप है)।

इनके पूजन का सामान्य मन्त्र यह है कि चतुर्थ्यन्त नाम के आदि मे 'ॐ' और अन्त मे 'नमः' जोड ले। यथा—**ॐ शर्वाय नमः, ॐ भवाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ उग्राय नम., ॐ भीमाय नमः या ॐ अशनये नमः, ॐ पशु-पतये नमः, ॐ महा-देवाय नमः, ॐ ईशानाय नम.** ।

श्वेताश्वतर उपनिषद् मे भगवान् शङ्कर को पर-ब्रह्म प्रतिपादित किया है। गीता मे भी उक्ति है—'रुद्राणा शङ्करश्चास्मि।' परमेश्वर के रूप मे शङ्कर की उपासना वैदिक काल से चली आ रही है, यह निर्विवाद है। 'महाभारत' मे प्रजापति दक्ष द्वारा शङ्कर की स्तुति की गई है। शङ्कर को 'अष्ट-मूर्ति' भी कहते है क्योंकि पञ्च-महा-भूत, सूर्य, चन्द्र और पुरुष उन्ही से उद्‌भूत है।

पुराणो मे भगवान् शिव का योगिराज-रूप वर्णित है। वे कैलास पर्वत मे रहते है, व्याघ्र-चर्म (बाघम्बर) पर बैठते हैं, सदा ध्यानस्थ रहते है। सिर पर जटाजूट है, जिसमे द्वितीया का चन्द्र शोभित है और जिससे गङ्गा निकली हैं। ललाट के मध्य मे तृतीय नेत्र है, जो अन्तर्दृष्टि और ज्ञान का द्योतक है। यह नेत्र प्रलयङ्कर भी है, इसी के द्वारा उन्होने कामदेव को भस्म किया। समुद्र-मन्थन से निकले विष का पान कर उन्होने विश्व की रक्षा की थी। इसी से उनका कण्ठ नीला है और वे 'नील-कण्ठ' नाम से विख्यात है। उनके गले और भुजाओं मे सर्प लिपटे रहते है। शरीर पर भस्म और हाथ मे त्रिशूल, डमरु धारण करते है। उनकी बाईं ओर पार्वती शोभायमान हैं और सम्मुख उनका वाहन नन्दी। अपने विलक्षण गणो से वे घिरे रहते है।

भगवान् शिव का 'नटराज'-रूप का अपना महत्व है। इस रूप मे उनके 'लास्य' और 'ताण्डव' दोनो प्रकार के नृत्य प्रसिद्ध है।

भगवान् शिव का सूक्ष्म स्वरूप 'लिङ्ग' नाम से विश्व-विख्यात है। भारत की पुण्य-भूमि मे उनके द्वादश-ज्योतिर्लिङ्ग प्रतिष्ठित हैं, जिनकी असीम महिमा है—

१ **सोमनाथ**—वेरावल, सौराष्ट्र के पास। २ **मल्लिकार्जुन**—श्रीशैल, आध्र-प्रदेश के कुर्नूल जिले मे कृष्णा स्टेशन से ५० मील दूर कृष्णा नदी के दक्षिण स्थित पर्वत। ३ **महाकाल**—उज्जैन, मध्य-प्रदेश मे। ४ **परमेश्वर (ओङ्कारेश्वर)**—खण्डवा, मध्य प्रदेश से उत्तर-पश्चिम ३२ मील दूर नर्मदा नदी के द्वीप मे। ६ **भीमा-शङ्कर**—पूना, महाराष्ट्र के पास भीमा नदी के उद्‌गम-स्थल डाकिनी मे। ७ **विश्वेश्वर विश्वनाथ**—वाराणसी, उत्तर प्रदेश मे। ८ **त्र्यम्बकेश्वर**—नासिक, महाराष्ट्र मे गौतमी गोदावरी के उदगम-स्थल मे। ९ **वैद्यनाथ**—देवधर, विहार के संथाल परगने के अन्तर्गत। १० **नागेश, नागेश्वर, जागेश्वर, यागेश**—दारुका-वन, हिमालय-क्षेत्र, उत्तर प्रदेश मे। ११ **रामेश्वर**—पाम-वन द्वीप, दक्षिण-भारत के सेतु-बन्ध-स्थल मे। १२ **घृष्णेश, घुश्मेश्वर**—देवगिरि, दौलताबाद, आध्र प्रदेश से ७ मील दूर एलूरु मे।

भगवान् शिव के उग्र स्वरूप की अपनी विशेषता है। इस रूप मे वे श्मशान, रण-क्षेत्र, चौराहो—दुर्घटना-स्थलो में निवास करते हैं। मुण्ड-माला धारण करते है। भूत-प्रेतादि गणो से घिरे रहते हैं। वे स्वय 'महाकाल' अर्थात् मृत्यु तथा उसके भी काल हैं। महा-प्रलय उन्ही के द्वारा घटित होती है।

'अर्द्ध-नारीश्वर'-रूप मे भगवान् शिव 'शक्ति' से संयुक्त दृष्टिगत होते हैं, तो 'हरि-हर'-रूप मे विष्णु के साथ। इन दोनो विलक्षण स्वरूपो से उनके अनुपम माहात्म्य का परिचय मिलता है।

भगवान् शिव के मन्त्र

१ एकाक्षर प्रासाद : सान्तमौकार-संयुक्तं विन्दु-भूपित-मस्तकं, प्रासादाख्यो मनुः प्रोक्तो भजता कामदो मणिः—ह्रौं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २१८। ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता सदा-शिव। 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में उद्धार—'सान्तः सद्यान्त-संयुक्तो विन्दु-भूपित-मस्तकः। प्रासादाख्यो मनुः भजता कल्प-भूरुहः।' ध्यान में तीन पाठ-भेद है—१ जवा : जपा, २ दहनान्नागेन्द्र : दहनं नागेन्द्र, ३ कल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे : कल्पोज्ज्वलं चिन्तयेत्। 'शारदा-तिलक' में यही उद्धार है, केवल 'कल्प-भूरुह.' के स्थान पर 'सर्व-सिद्धिद' है। उसकी टीका में वीज 'ह्' और शक्ति 'औं' बताये है। ध्यान 'हिन्दी-तन्त्रसार' जैसा है, दो पाठ-भेद है—१ पञ्चभिस्त्र्यक्षं . २ पञ्चभि. त्र्यक्षं, ३ कल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे : कल्पोज्ज्वल चिन्तयेत्।

२ एकाक्षर चिन्ता-मणि : अग्निः सवर्त्तकादित्यरानिलौ षष्ठ-विन्दु-मत् चिन्ता-मणिरिति ख्यातं वीजं सर्व-समृद्धिदं—क्ष्म्रौं

'शारदा-तिलक'। यह वीज भगवान् शिव के उत्तर-वक्त्र से सम्बन्धित है। ऋषि काश्यप, छन्द अनुष्टुप्, देवता जगत्-पति अर्द्ध-नारीश्वर, वीज 'रं', शक्ति 'ऊं', विनियोग 'सर्व-समृद्धि'। टीका में देवता के अन्य नाम 'उमेश' या 'अर्द्ध-नारीश' बताये है। 'रं, क, पं, मं, र, य' इन छः व्यञ्जनों से क्रमशः षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

> नील-प्रवाल-रुचिरं विलसत्-त्रिनेत्रं, पाशारुणोत्पल-कपाल-त्रिशूल-हस्तम्।
> अर्धाम्बिकेशमनिशं प्रविभक्त-भूष, बालेन्दु-बद्ध मुकुटं प्रणमामि रूपम्॥

टीका के अनुसार उक्त मन्त्र के देवता यदि 'उमेश' मानें, तो ध्यान निम्न प्रकार करें—

> अहि-शश-धर-गङ्गाबद्ध-तुङ्गाप्त-मौलिः, त्रि-दश-गण-नतांघ्रिस्त्रीक्षणः स्त्री-विलासः।
> भुजग-परशु-शूलान् खड्ग-वह्नी कपाल, शरमपि धनुरीशो बिभ्रदव्याच्चिरं वः॥

यह ध्यान 'प्रयोग' करते समय ही करणीय है, पुरश्चरण और नित्य-जप हेतु अर्द्ध-नारीश्वर का ही ध्यान करना चाहिये। पुरश्चरण मे एक लाख जप कर, मधु-सिक्त तिल-तण्डुलो से अयुत होम करे।

३ एकाक्षर तुम्बुरु : क्षकारो माग्नि-पवन-वाम-कर्णार्घ-चन्द्र-वान्, उक्त तुम्बुरु-वीजं तु येन सिद्ध्यन्ति साधकः—क्ष्म्र्यूं

'शारदा-तिलक'। ऋष्यादि पूर्व-वत्। षडङ्ग-न्यास षड्-दीर्घ-युक्त वीज से करे। ध्यान—

> रक्ताभमिन्दु - शकलाभरणं त्रिनेत्रं, खट्वाङ्ग-पाश-सृणि-शुभ्र-कपाल-हस्तम्।
> वेदाननं चिपिट नासमनर्घ - भूषं, रक्ताङ्गराग - कुसुमांशुकमीशमीडे॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृताक्त हविष्य से दशांश होम।

४ द्व्यक्षर दक्षिणामूर्ति : अथातो दक्षिणामूर्तेर्द्व्यक्षरो मनुरुच्यते—हंसः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति, वीज 'हं', शक्ति 'स'। 'ह्सा, ह्सी' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यानादि द्वात्रिंशदक्षर-मन्त्र के समान।

५ त्र्यक्षर मृत्युञ्जय : तार स्थिरा स-कर्णेन्दुः भृगुः सर्ग-समन्वितः, त्र्यक्षरात्मा निगदितो मन्त्रो मृत्युञ्जयात्मकः—ॐ जूं सः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २२५। ऋषि कहोल, छन्द देवी गायत्री, देवता मृत्युञ्जय महादेव। 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' मे यही उद्धार है, जिसमे एक पाठान्तर है—मृत्युञ्जयात्मक. : मृत्युञ्जयाभिध.। 'शारदा-तिलक' के उद्धार मे पाठान्तर—१ समन्वित. ˙ विभूषितः, २ मन्त्रो मृत्युञ्जयात्मक . मनुर्मृत्युञ्जयादिक । टीका मे बीज 'ॐ', शक्ति 'सः' बताए हैं। पद्म-पादाचार्य के अनुसार बीज 'जूं' है।

६ त्र्यक्षर नील-कण्ठ : १ पार्श्वो वह्नि-मतारूढस्तार-वानाद्य-बीजक, धान्तो वह्नि-समारूढस्तुर्य-स्वर-समन्वितः विन्दुमाँस्तु द्वितीय स्यात् ढान्तः सर्गी तृतीयक, नील-कण्ठात्मको मन्त्रो विष-ज्वर-हर पर —प्रो न्रीं ठः

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २२६ मे मन्त्र 'प्रो नू न्री ठ' छपा है, जो अशुद्ध है। ऋषि अरुण, छन्द अनुष्टुप्, देवता नील-कण्ठ। 'मन्त्र-मञ्जूषा' मे उद्धार भिन्न है—'लोहितोऽग्न्यासन सद्यो विन्दुमान् प्रथम विदु, द्वितीय वह्नि-बीजस्थ दीर्घा शान्तीन्दु-भूषिता। तृतीय लाङ्गली सर्गी मन्त्रो बीज-त्रयान्वित।' द्वितीय बीज का रूप यहाँ 'श्री' बताया है, जो अशुद्ध है क्योंकि बीज-कोष के अनुसार 'दीर्घा' से 'न' का आशय है, अत 'न्री' ही शुद्ध है। 'मजूषा' मे ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री और विनियोग 'विष-हरणार्थे' बताए है। ध्यान मे एक पाठान्तर है—कृत-शेखर कृत-भूषण। 'शारदा-तिलक' मे भी यही उद्धार है, जिसमे तीन पाठान्तर है—(१) विदु ˙ तत, (२) बीजस्थ बीजस्था, (३) भूषिता भूषित। साथ ही उद्धार का अन्तिम चरण है—'नील-कण्ठात्मक प्रोक्तो विष-द्वय-हर पर।' यहाँ ऋषि अरुणा, छन्द त्रिष्टुप्, बीज 'प्र', शक्ति 'ठ' बताए हैं और उद्धार-गत 'विष-द्वय' का अर्थ स्पष्ट किया है—स्थावर और जङ्गम विष।

'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' मे उक्त त्र्यक्षर मन्त्र की विशेष प्रयोग-विधि बताई है। यथा—मूल-मन्त्र से तीन प्राणायाम कर ऋष्यादि—न्यास करे (१) कहोलाय ऋषये, (२) निचृद्-गायत्री-छन्दसे, (३) श्रीमृत्युञ्जयाय देवतायै, (४) ॐ बीजाय, (५) सः शक्तये, (६) जूं कीलकाय, (७) ममाभीष्ट-सिद्धये विनियोगाय। फिर 'सा, सी' इत्यादि से षडङ्ग—न्यास कर ध्यान करे—

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काश शुभ्र-पद्मासन-स्थितं, कपर्द-मौलि-विलसच्चन्द्र-खण्ड-च्युतामृतैः।
अभिषिक्त- समस्ताङ्गमर्केन्द्वनल - लोचन, दक्षिणोर्ध्व-करे मुद्रा ज्ञानाख्या तदधः करे।
अक्ष-माला च वामोर्ध्वे पाश वेदमधः करे, दधान चिन्तयेद् देवं मृत्यु-रोग-भयापहम्॥

इस प्रकार ध्यान कर 'ॐ हसकलह्री, जूं हसकहलह्री, स सकलह्री' इस प्रकार त्रिकूट-सम्पुटित मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे।

२ नील - कण्ठ-मनु वक्ष्ये समस्त-विष-नाशन—श नी ठ˙

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि अरुण, छन्द अनुष्टुप, देवता नील-कण्ठ, बीज 'श', शक्ति 'ठ.'। षडङ्ग-न्यास के छ मन्त्र—(१) हराय, (२) कपर्दिने, (३) नील-कण्ठाय, (४) काल-कूट-विष-भक्षणाय हु फट्, (५) श्री कण्ठाय (६) शित-कण्ठाय स्वाहा। ध्यान—

ध्यायेद् देवं नील-कण्ठ बालार्कायुत-वर्चस, जटा-भूत - लसच्चन्द्राकारकं फणि सत्तमैः।
धृत कल्प कराम्भोजैर्दधानं जप-मालिका, शूल कपालं खट्वाङ्गमक्ष माला च बिभ्रतम्।
प्रति-वक्त्र त्रि-नयन व्याघ्र-चर्माम्बरावृत, पद्म-मध्ये समासीनमति-सुन्दर-विग्रहम्॥

पुरश्चरण मे तीन लाख जप। घृताक्त हविष्य मे दशाश होम।

७ त्र्यक्षर चण्डेश्वर : अर्घीशो वह्नि-शिखरो लान्तस्थो दान्त ईरितः, फडन्तश्चण्ड-मन्त्रोऽयं त्रि-वर्णात्मा समीरितः—ऊर्ध्वं फट्

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २३२। ऋषि त्रित, छन्द अनुष्टुप्, देवता चण्डेश्वर। 'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' में देवता का नाम 'चण्डेश' है। शारदा-तिलक' मे ऋषि 'त्रिक', बीज 'ऊ', शक्ति 'फट्' बताये है। साथ ही एक संक्षिप्त ध्यान भी दिया है—

शूल-टङ्काक्ष-वलयं कमण्डलु-लसत्-करं, रक्ताकारं त्रिनयनं चण्डेशमथ चिन्तयेत् ॥

८ पञ्चाक्षर ईशान : हृदय व-पर साक्षि लान्तोऽनन्तान्वितो मरुत्, पञ्चाक्षरो मनुः प्रोक्तः— नमः शिवाय

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २३०। ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता ईशान। 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' मे देवता का नाम 'ईश' बताया है। ध्यान मे एक पाठान्तर—विश्व-बीज : विश्व-वन्द्य। 'शारदा-तिलक' मे बीज 'नमः', शक्ति 'उ' बताये है। ध्यान मे एक पाठान्तर—विश्व-बीज : विश्व-रूप।

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'नमः शिवायेति मन्त्रः पञ्चार्णः'। वहाँ देवता का नाम भिन्न बताया है—'सदा-शिव'। मन्त्र के एक-एक अक्षर से अर्थात् 'न हृदयाय नमः, म शिरसे स्वाहा' इत्यादि क्रम से पञ्चाङ्ग-न्यास करे, नेत्रों मे न्यास नहीं होगा। ध्यान भिन्न दिया है। यथा—

चारु-चन्द्र-कला-राजज्जटा - मुकुट-मण्डितं, पञ्च-वक्त्र-धरं शम्भुं प्रति-वक्त्रं त्रिलोचनम्।
शार्दूल - चर्म - वसनं रत्नाभरण - भूषितं, दक्षोर्ध्व - हस्ते टङ्कं च वरं च दधतं करैः।
वामोर्ध्व - हस्ते हरिणं दधानमभयं परे, सु-प्रसन्न-मुखाम्भोजं निविष्टं कुश-विष्टरे।
ब्रह्म-विष्णु-महेशाद्यैः स्तुतं कृष्णं सुरासुरैः, विश्वाद्यं विश्व-वपुषं भव-भीति-हरं भवम् ॥

पुरश्चरण मे पाँच लाख जप कर दशाश घृताक्त तिलो से होम। फिर दशाश-क्रम से मार्जन, तर्पण, ब्राह्मण-भोजनादि करे। अथवा पर्वत पर एक लाख, महा-नदी मे दो लाख, तीर्थ मे दो लाख जप कर दशाश होम दूर्वाकुर और तिलो से करे, तो साधक नीरोग होकर पूर्णायु को प्राप्त करता है।

९ षडक्षर ईशान : ताराद्योऽयं (पञ्चाक्षरः) षडक्षरः—ॐ नमः शिवाय

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २३०। ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता ईशान।

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' एकादश श्वास मे इस मन्त्र का विशेष प्रयोग दिया है। यथा—मूल-मन्त्र से तीन बार प्राणायाम कर ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता सदाशिव, विनियोग ममाभीष्ट-सिद्धये से ऋष्यादि-न्यास कर षडङ्ग - न्यास छ मन्त्रो से करे—(१) सर्वज्ञाय, (२) नित्य - तृप्तये, (३) अनादि-बोधाय, (४) स्वतन्त्राय, (५) नित्यमलुप्त-शक्तये, (६) नित्यमनन्त-शक्तये। ध्यान—

गो-क्षीर-फेन-धवलं रजताद्रि-सम-प्रभं, चारु-चन्द्र-कला-राजज्जटा-मुकुट-मण्डितम्।
पञ्च-वक्त्र-धरं शम्भुं प्रति-वक्त्रं त्रिलोचनम्, शार्दूल-चर्म-वसनं रत्नाभरण-भूषितम् ॥

इस प्रकार ध्यान कर 'हसकलह्रीं ॐ, हसकहलह्रीं नमः, सकलह्रीं शिवाय' इस प्रकार त्रिकूट-सम्पुटित मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे।

१० षडक्षर दक्षिणामूर्ति महा-देवाय हुं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वाम, छन्द विराट्, देवता वाम-नायक। मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के आदि मे काली-बीज (क्रीं) लगाकर षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

लिङ्ग-न्यस्त-महा-कालिं मदिरासक्त-मानसं, लोह-दण्डं मांस-पिण्डं पान-पात्रं त्रिशूलकम् ।
दधतं भर्जितं मत्स्यं चषकं रुधिरस्य च, स्पृशन्तमेकेन भगमपरेण कुच-द्वयम् ।।

पुरश्चरण में आठ लाख जप कर मांस से दशांश होम ।

११ सप्ताक्षर चण्डोग्र-शूलपाणि : प्रणवं च ततो मायां कूर्च-वीजं समुच्चरेत्, शिवायेति फडन्तश्च चण्डोग्रोऽयं महा-मनुः—ॐ ह्रीं हूं शिवाय फट्

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३८२ । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता चण्डोग्र-शूलपाणि ।

१२ सप्ताक्षर उमापति : लज्जयाद्यन्तयोर्युक्तः पञ्चार्णः सप्त-वर्णकः—ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता उमा-पति । ध्यान—

बन्धूक - कुसुमारक्तं चन्द्रार्ध - कृत - शेखरं, शूलं कपालमभयं वरं च दधतं करैः ।
वामोरु-संस्थितां देवीं श्लिष्यन्तं वाम-बाहुना, स्मेर-वक्त्रं त्रि - नयनं सर्वाभरण-भूषितम् ।।

पुरश्चरण में सात लाख जप कर दशांश होमादि करे ।

१३ अष्टाक्षर नील-कण्ठ : तारो हृन्नील-कण्ठाय मन्त्रश्चाष्टाक्षरः परः—ॐ नमो नील-कण्ठाय

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २३० । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता नील-कण्ठ ।

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'ॐ नमो नील-कण्ठाय मनुरष्टाक्षरः परः ।' शेष वही ।

१४ अष्टाक्षर उमा-पति : १ भुवनेशी प्रणवं नमः शिवाय भुवनेश्वरी (षडक्षरः शक्ति-रुद्धः कथितोऽष्टाक्षरोऽपरः)—ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २२३ । ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता उमा-पति । 'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में ध्यान में दो पाठान्तर (१) चारु-हासं : चारु-हारं, (२) नमामि : भजामि ।

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'लज्जयाद्यन्तयोर्युक्तः : षडर्णश्चाष्ट-वर्णः स्याद् ।' वहाँ इसके ऋष्यादि की वही विधि दी है, जो सप्ताक्षर 'उमापति' की है ।

२ तारो माया वियद् विन्दुमनुस्वार-समन्वितं—ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २२५ । ऋष्यादि पञ्चाक्षर 'ईशान' के समान । 'शारदा-तिलक' में उक्त उद्धार का दूसरा चरण दिया है—'पञ्चाक्षर-समायुक्तो वसु-वर्णो मनुर्मतः ।' यहाँ इस मन्त्र के देवता का नाम 'उमा-पति' बताया है ।

३ 'श्रीश्रीविद्यार्णव तन्त्र,' एकादश श्वास में—ॐ हौं ह्रीं नमः शिवाय

मूल-मन्त्र से तीन प्राणायाम कर ऋष्यादि-न्यास (१) वामदेव-ऋषये, (२) पंक्तिश्छन्दसे, (३) श्रीसदाशिव-देवतायै, (४) हं बीजाय, (५) औं शक्तये, (६) मम सर्वाभीष्ट-सिद्धये विनियोगाय से करे । फिर 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

सिन्दूर-पुञ्ज-शोणाङ्गं स्मेर-वक्त्रं त्रिलोचनम्, मणि-मौलि-लसच्चन्द्र-कलालंकृत-मस्तकम् ।
दक्षिणोर्ध्वं - करे टङ्कं दधानं तदधो वरं, वामोर्ध्वं - हस्ते हरिणं तदधोऽभयमादरात् ।
पीन-वृत्त - घनोत्तुङ्ग - स्तनाग्रे विनिवेश्य च, वामाङ्के सन्निविष्टायाः प्रियाया रक्त-पङ्कजे ।
दधत्यां दक्षिणे हस्ते चासीनं रक्त - पङ्कजे, नानाभरण - सन्दीप्तं नित्य-गन्ध-स्रगम्बरम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर 'ॐ ह्रीं हसकलह्रीं, ह्रीं हसकहलह्रीं, नमः सकलह्रीं शिवाय' इस प्रकार त्रिकूट-सम्पुटित मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे ।

१५ अष्टाक्षर सदाशिव : तार-माया-धरा-बीज-पूर्व पञ्चाक्षरो मनु:, अष्ट-वर्णो भवेद्—**ॐ ह्रीं ग्लौं नम: शिवाय**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता सदा-शिव। ध्यान—

ध्यायेत् सततं सिन्दूरारुणं शम्भु त्रि-लोचन, टङ्कं मृगं तया देवीं चालिङ्गन्तं वर-प्रदम्।
हस्तैश्चतुर्भिरारक्त-पद्मं च दधतीं करै:, पीन-वृत्त-घनोत्तुङ्ग - स्तनीं वामाङ्क - संस्थिताम्।
रक्त-पद्म-समासीनं रक्त-स्रग्-गन्ध-लेपनम्॥

पुरश्चरण मे आठ लाख जप। घृताक्त पायमान्न से होमादि।

१६ नवार्ण दक्षिणामूर्ति : प्रणवाद्य-रमाभ्या तु सम्पुटो नव-वर्णक, भवेत् पञ्चाक्षरो मन्त्र—**ॐ श्रीं नम: शिवाय ॐ श्रीं**

'मेरु'-तन्त्र। ऋषि शुक, छन्द विराट्, देवता दक्षिणामूर्ति रुद्र। षडङ्ग-न्यास के मन्त्र—(१) ॐ श्री आं, (२) ॐ श्री ईं, (३) ॐ श्री ऊं, (४) ॐ श्री ऐं, (५) ॐ श्री औं, (६) ॐ श्री अ। ध्यान—

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं शशि-खण्ड-विभूषितं, व्याघ्र-चर्म-धरं शान्तं जटा-मुकुट-मण्डितम्।
मुख-पङ्करुहोल्लासं सोम-सूर्याग्नि-लोचनम्, मुद्रा-परश्वध-मृगान् बिभ्राणं बाहुभिस्त्रिभि:।
अङ्गाष्टके दधानं तु राम-बीजं सुशोभनं, व्याकुर्वन्तं समस्तानि ब्रह्म-तन्त्राणि सादरम्।
धृत-पङ्कज-हस्तं च सर्व-मोह-प्रणाशनं, शुकादि-मुनि-मुख्यैस्तु पुस्तकोज्ज्वल-पाणिभि:।
पर-भूतं महा-देवं दक्षिणामूर्तिमादरात्, भावयेद् योऽपि सद्भाव सर्वज्ञश्च भवेद् ध्रुवम्।

पुरश्चरण मे पाँच लाख जप। होमादि द्वा-त्रिंशदक्षर मन्त्र के समान।

१७ दशाक्षर नील-कण्ठ : स (अष्टाक्षरो) एव वह्नि-जायान्तो दश-वर्ण: प्रकीर्तित:—**ॐ नम: नील-कण्ठाय स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि अरुण, छन्द गायत्र, देवता महान् नील-कण्ठ, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा'। ध्यान—

पूर्वाद्यैरानलैर्युक्त: पीत - श्वेतारुणासितै:, अभयं परशु चापं वासुकिं च दधद् भुजै:।
ध्येयो देवोऽस्य पार्श्वस्था गौरी चाप्यति-सुन्दरी, संहार-निर्विष-स्तम्भावेशात् कुर्यात् क्रमान्मुखै:।

पुरश्चरण मे दस लाख जप कर विधिवत् होमादि करे।

१८ दशाक्षर रुद्र : तारो नमो भगवते रुद्रायेति प्रकीर्तित—**ॐ नमो भगवते रुद्राय**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि बौद्धायन, छन्द पंक्ति, देवता रुद्र। मन्त्र के चार पदो मे से एक-एक पद से और सम्पूर्ण मन्त्र से 'पञ्चाङ्ग-न्यास' करे। ध्यानादि पञ्चाक्षर-मन्त्र के समान।

'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र', एकादश श्वास मे उक्त दशाक्षर-मन्त्र की विशेष विधि दी है। यथा—मूल-मन्त्र से तीन प्राणायाम कर ऋष्यादि-न्यास करे—(१) ब्रह्मणे-ऋषये, (२) विराट्-छन्दसे, (३) सदा-शिवाय देवतायै, (४) ममाभीष्ट-सिद्धये विनियोगाय। फिर षडङ्ग न्यास क्रमश (१) ॐ, (२) नम, (३) भगवते, (४) रुद्राय, (५) ॐ नमो भगवते रुद्राय, (६) रुद्राय से कर ध्यान करे—

आकीर्णं दिव्य-भोगैरमर दिति-सुतैरर्चितं शैल-कन्या-देहार्धं धारयन्त स्फटिक-मणि-निभ व्याघ्र-चर्मोत्तरीयम्।
द्वैपीं कृत्तिं वसानं हिम-किरण-कला-शेखरं नील कण्ठं, हृष्टं व्याप्तं कलाभिर्धृत-कपिल जटं, भावयेऽहं महेशं।

इस प्रकार ध्यान कर 'ॐ हसकलह्रीं, नमो हसकहलह्रीं, भगवते सकलह्रीं रुद्राय' इस प्रकार त्रिकूट-सम्पुटित मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे।

१९ द्वादशाक्षर मृत्युञ्जय . मृत्युञ्जय ममुच्चार्य पालय-द्वितयं वदेत्, मृत्युञ्जयं समुच्चाय पुनरेव विलोमत. । द्वादशाक्षरोऽयं मन्त्र. मृत्युजयाभिधोऽपर —**ॐ जूं सः पालय पालय स' जूं ॐ**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २२६ । ऋष्यादि त्र्यक्षर मृत्युजय के समान ।

२० द्वा-विंशदक्षर दक्षिणामूर्ति : प्रणव हृदय पश्चात् ततो भगवते पद, ङेऽन्तं च दक्षिणामूर्ति मह्यं मेधामुदीरयेत् । प्रयच्छ ठ-द्वयान्तोऽय द्वा - विंशत्यक्षरो मनु.—**ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्य मेधां प्रयच्छ स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २२७ । ऋषि चतुर्मुख, छन्द देवी गायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति । 'मन्त्र-मजूषा' मे उद्धार मे दो पाठान्तर है—(१) प्रणवं : प्रणवो, (२) ङेऽन्त च : ङे-युतं । ध्यान मे भी एक पाठान्तर है—कराब्जैः : कराग्रे. । 'शारदातिलक' मे मन्त्र-गत 'मेधा' का भी पाठान्तर बताया है—'प्रज्ञा' ।

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'तारो नमो भगवते दक्षिणामूर्तये वदेत्, मह्य मेधा प्रयच्छेति स्वाहान्तोऽथ द्वितीयकः । मेधा-स्थाने पठेत प्रज्ञा फलं नामानुसारत ।' यहाँ 'मेधा' का अर्थ बताया है 'कण्ठ की सामर्थ्य' या वाक्-शक्ति और 'प्रज्ञा' का 'स्मृति' (स्मरण-शक्ति) । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्र, देवता दक्षिणामूर्ति महादेव, वीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'मेधा', विनियोग 'पुरुषार्थ' । ध्यान—

शङ्करं तु शरच्चन्द्र - निभमम्भोज-मध्यगं, गङ्गा - धरं शरच्चन्द्र - करोल्लासित-शेखरम् ।
प्रसन्न - वदनाम्भोजं त्रि-नेत्रं सुस्मितानन्नं, दिव्याम्बर - धरं देवं गन्ध - माल्यैरलंकृतम् ।
नाना-रत्न-मयाकल्पमनुकल्प - विभूषितं, मुक्ताक्ष - मालां दक्षोर्ध्वे ज्ञान - मुद्रामधः-करे ।
वामोर्ध्वे च सुधा - कुम्भं पुस्तकं तदधः-करे, दधानं चिन्तयेद् देवं मुनि-वृन्द-निषेवितम् ।।

पुरश्चरण मे एक लाख जप । दुग्ध या घृत मे युक्त तिलो या पद्मो या पायस से दशाश होम ।

२१ चतुर्विंशत्यक्षर दक्षिणामूर्ति : तारो नमो भगवते दक्षिणामूर्तये वदेत्, मह्यं मेधा वदेत् प्रज्ञा प्रयच्छानल-वल्लभा । चतुर्विंशति-वर्णोऽयं— **ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति, वीज 'मेधा', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'मेधा-समृद्धये' । ध्यान—

व्याख्या-पीठेऽति-शुभ्रं च भस्मोद्धलित-विग्रहं, ज्ञान मुद्राक्ष-मालाढ्य वीणा-पुस्तक-धारिणम् ।

पुरश्चरण मे कृष्णाष्टमी से कृष्ण-चतुर्दशी तक २४ महस्र जप कर घृत मे दशाश होम।

२२ ऊन-त्रिंशाक्षर नील-कण्ठ : तारो नमो भगवते सर्वज्ञेति पद वदेत्, कण्ठ नि नील-कण्ठाय अमलेति पद वदेत् । ङेऽन्त द्विः क्षिप ॐ स्वाहा चोन-त्रिंशाक्षरो मनु —**ॐ नमो भगवते सर्वज्ञ-कण्ठं नि नील-कण्ठाय अमलाय क्षिप-क्षिप ॐ स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि विमल, छन्द कृति, देवता 'अमल नीलकण्ठ रुद्र,' वीज 'वीं', शक्ति 'स्वाहा' । मन्त्र के ७, ५, ६, ४, ७ अक्षरो से पञ्चाङ्ग-न्यास । ध्यानादि पूर्ववत् । पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृत मे दशाश होम ।

२३ षट्-त्रिंशदक्षर दक्षिणामूर्ति १ दक्षिणामूर्ति पूर्वं तुभ्य पदमनन्तर, वट-मूल-पदस्यान्ते पदं परनान्निवासिने । ध्यानैक-निरताङ्गाय पश्चाद् ब्रूयान्नम पद, रुद्राय शम्भवे तार-शक्ति-रुद्धोऽप्यगीश्वितः । षट्-त्रिंशदक्षरो मन्त्र सर्व काम-फल-प्रद —**ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वट-मूल-निवासिने, ध्यानैक-निरताङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे ह्रीं ॐ**

'शारदातिलक'। ऋषि शुक, छन्द अनुष्टुप्, देवता दक्षिणामूर्ति शिव, बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्रीं'। षडङ्ग-न्यास क्रमशः छः मन्त्रों से करे—(१) ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रां, (२) ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रां, (३) ह्रीं वट-मूल-निवासिने ह्रां, (४) ॐ ह्रीं ध्यानैक-निरताङ्गाय ह्रां, (५) ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रां, (६) ह्रीं शम्भवे ह्रां।

ध्यान—कैलासाद्रि-निभं शशाङ्क-शकल-स्फूर्जज्जटा-मण्डितं,
नासालोकन-तत्परं त्रि-नयनं वीरासनाध्यासितम्।
मुद्रा-टङ्क-कुरङ्ग - जानु-विलसत् - पाणिं प्रसन्नाननं,
कक्षाबद्ध-भुजङ्गमं मुनि - वृतं वन्दे महेशं परम्॥

पुरश्चरण में तीन लाख बीस हजार जप कर दुग्ध-युक्त तिलों से दशांश होम।

'श्री श्रीविद्यार्णव-तन्त्र,' एकादश श्वास में इस मन्त्र की विशेष प्रयोग-विधि दी है। यथा—मूल-मन्त्र से तीन प्राणायाम कर ऋष्यादि-न्यास (१) शुकाय ऋषये, (२) गायत्री-छन्दसे, (३) श्रीदक्षिणा-मूर्तये देवतायै, (४) ॐ बीजाय, (५) ह्रीं शक्तये, (६) ममाभीष्ट-सिद्धये विनियोगाय से कर षडङ्ग-न्यास करे—(१) ॐ ह्रीं दक्षिणमूर्तये ह्रां, (२) ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं, (३) ॐ ह्रीं वट-मूल-निवासिने ह्रूं, (४) ॐ ह्रीं ध्यानैक-निरताङ्गाय ह्रैं, (५) ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रौं, (६) ॐ ह्रीं शम्भवे ह्रः। फिर ध्यान करे—

वट-विटप-समीपे भूमि-भागे निषण्णं, सकल-मुनि-जनानां ज्ञान-दातारमादरात्।
त्रिभुवन-गुरुमीशं दक्षिणामूर्ति-रूपं, जनन - मरण - दुःखच्छेद - दक्षं नमामि॥

इस प्रकार ध्यान कर 'ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्य हसकलह्रीं, वट-मूल-निवासिने हसकहलह्रीं ध्यानैक-निरताङ्गाय सकलह्रीं, नमो रुद्राय शम्भवे ह्रीं ॐ' इस प्रकार त्रिकूट-सम्पुटित मन्त्र का यथा शक्ति जप करे।

पुरश्चरण में तीन लाख बीस हजार जप कर दुग्ध-युक्त तिलों से दशांश होम।

२ ॐकार-माया-बीजाभ्या पुटं षट्-त्रिंशदक्षर, दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वट-मूल - निवासिने। ध्यानैक-निरताङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे—ॐ ह्रीं दक्षिणा-मूर्तये, तुभ्यं वट-मूल-निवासिने, ध्यानैक-निरता-ङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे ॐ ह्रीं

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि शुक, छन्द अनुष्टुप्, देवता 'जगतामादिः दक्षिणामूर्तिः', बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्रीं', विनियोग 'पुरुषार्थ-चतुष्टय'। ध्यान—

रजताद्रि-प्रतीकाशं मुनि-देव-गणैः स्तुतं, जटा-मुकुटिनं वीरासन-नासावलोकमम्।
त्रिनेत्रं सुप्रसन्नास्यं निविष्टं शुभ-पङ्कजे, दक्षिणोर्ध्व-करे टङ्कं व्याख्या-मुद्रामधः करे।
वामोर्ध्व-हस्ते हरिणं वाम-जानुन्यध -कर।

पुरश्चरण में ८ अयुत जप कर दुग्ध-युक्त तिलों या पायस या केवल घृत से दशांश होम।

२८ अष्ट-चत्वारिंशदक्षर मृत्युञ्जय : मृत्युञ्जयः केवलः स्यात् पुटितो व्याहृति-त्रयैः—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ 'कर्मठ गुरु', पृष्ठ ६७।

२५ पञ्चाशदक्षर महा-मृत्युञ्जय : तारः खं व्यापिनी-चन्द्र-युत् तारश्चतुराननः, अर्घीश-विन्दु-संयुक्तो हसः सर्गो च भूर्भुवः। सकारो वाल-सर्गाढ्यस्त्र्यम्वकेर्वैदिको मनुः, भूर्भुवः स्वर्भुजङ्गेशस्तारी जूं सर्ग-वान् भृगुः। आकाशो मनु-विन्द्वाढ्यः प्रणवान्तो मनूत्तमः, महा-मृत्युंजयाख्योऽयं पञ्चाशद्-वर्ण-निर्मितः —**ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्वकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ**

'मन्त्र-महोदधि'। ऋषि वामदेव, कहोल और वसिष्ठ। छन्द पंक्ति, गायत्री और अनुष्टुप्। देवता सदाशिव, महा-मृत्युञ्जय और रुद्र। वीज श्रीं। शक्ति ह्रीं। विनियोग अभीष्ट-सिद्धि। षडङ्ग-न्यास छः मन्त्रों से करे—१ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्वकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल-पाणये स्वाहा, २ ॐ-६ यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृत-मूर्तये मां जीवय, ३ ॐ-६ सुगन्धि पुष्टि-वर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र-शिरसे जटिने स्वाहा, ४ ॐ-६ उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ह्रीं, ५ ॐ-६ मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्-यजुः-साम-मन्त्राय, ६ ॐ-६ मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नि-त्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरा-स्त्राय। ध्यान—

> हस्ताम्भोज-युगस्थ-कुम्भ-युगलादुद्धृत्य तोयं शिरः,
> **सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के स-कुम्भौ करौ।**
>
> **अक्ष-स्रङ्-मृग-हस्तमम्वुज-गतं मूर्द्धस्थ-चन्द्र-स्रवत्,**
> **पीयूषोन्न-तनुं भजे स-गिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्वकम्॥**

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दश-द्रव्यों से दशांश होम करे। दश-द्रव्य—१ विल्व-फल, २ तिल, ३ खीर, ४ घी, ५ दूध, ६ दही, ७ दूर्वा, ८ वट, ९ पलाश, १० खैर (अन्तिम तीन की समिधा त्रि-मधु से युक्त कर होम करे)।

'शारदा-तिलक' में 'त्र्यम्वकं यजामहे...मामृतात्'—३२ अक्षरवाले इस मन्त्र को 'त्र्यम्वक-मन्त्र' के नाम से वर्णित किया है और वताया है कि इसे प्रणव (ॐ), प्रासाद (ह्रौं), मृत्युंजय (ॐ जूं सः) और व्याहृति (भूर्भुवः स्वः) से सम्पुटित कर प्रयोग करने की साम्प्रदायिक विधि है। वहाँ 'त्र्यम्वक' मन्त्र के ऋषि वशिष्ठ, छन्द अनुष्टुप्, देवता त्र्यम्वक, वीज 'श्रीं' और शक्ति 'ह्रीं' वताये हैं। षडङ्ग-न्यास 'त्र्यम्वक' मन्त्र के ३, ४, ८, ९, ५, ३ अक्षरों से कर्तव्य है, जिनके साथ ऊपर वताया नवार्ण मन्त्र जोड़ना है, केवल दो पाठान्तर हैं—(१) चन्द्र-शिरसे जटिने : चन्द्र-शिरसे जटिले, (२) मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरास्त्राय : मां रक्ष अघोरास्त्राय। ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

> हस्ताभ्यां कलश-द्वयामृत-रसैराप्लावयन्तं शिरो,
> द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्ष-वलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
> अङ्क-न्यस्त-कर-द्वयामृत-घटं कैलाश-कान्तं शिवम्,
> स्वच्छाम्भोज-गतं नवेन्दु-मुकुटं देवं त्रि-नेत्रं भजे॥

पुरश्चरण की विधि वही है। दश द्रव्यों में 'घी' के स्थान पर 'सरसों' का उल्लेख है। 'कर्मठ गुरु', पृष्ठ ६६-६७ पर उद्धृत ध्यान में एक पाठान्तर है—नवेन्दु-मुकुटं देवं: नवेन्दु-मुकुटाभं तं।

साथ ही वहाँ वताया है कि मृत्युञ्जय मन्त्र के जप के वाद निम्न प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये—

मृत्युञ्जय ! महा-रुद्र ! त्राहि मां शरणागत, जन्म-मृत्यु-जरा रोगैः पीडित कर्म-बन्धनैः ।
तारकस्त्वद्-गत-प्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड !

२६ पञ्चाशदक्षरी मृत-सञ्जीवनी १ प्रणवं व्याहृतीस्तिस्रः प्रासाद मृत्यु-जिन्मनु, त्रियम्बक मृत्यु-जित प्रासाद व्याहृति-त्रय । प्रणवं चोच्चरेदेष मृत-सञ्जीवनी-मनु —ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रौं ॐ जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ जूं सः ह्रौं भूर्भुवः स्वरोम

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वशिष्ठ, छन्द अनुष्टुप्, देवता मृत्युञ्जय रुद्र, बीज 'ॐ,' शक्ति 'ह्रौं' । ध्यान—

ऊर्ध्वं विधोर्मण्डलस्य बद्ध-पद्मासनं विभुं, स्रवत्-पीयूष-बिन्दोश्च कलाग्रं चन्द्र-सुप्रभम् ।
भोग-मुद्रा-धरं द्वाभ्यां घटं चामृत-पूरित, सोम-सूर्याग्नि-नेत्रं च बद्ध-पिङ्ग-जटा-धरम् ।
व्याघ्र-चर्माम्बर-धरं नानाभरण - भूषितं, भस्मानुलेपन भक्त-कृपा - करमनुस्मरेत् ॥

पुरश्चरण में ४० सहस्र जप कर यथोक्त द्रव्यों से दशांश होम ।

२७ द्वि-पञ्चाशदक्षरी मृत-संजीवनी . १ तार त्रि-बीज व्याहृत्य पुटितो मृत-जीविनी— ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ

'कर्मठ-गुरु', पृष्ठ ६० ।

२ ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः 'मन्त्र-कोष' । उद्धार नहीं दिया है ।

२८ द्वि-षष्टयक्षर महा-मृत्युञ्जय : प्रणवान्ते प्रासादश्च मृति-हारकमेव च, भूरादि-व्याहृतयश्च त्र्यम्बकेति च ऋक् ततः, विपर्ययेण त्रि-बीज तद्-वच्च व्याहृति-त्रय । स्वाहान्तो मनुरेषोऽयं शुक्रेणाराधित पुरा—ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ स्वाहा

'कर्मठ गुरु,', पृष्ठ ६७ ।

अन्य मन्त्र

१ अघोरास्त्र

१ एक-पञ्चाशदक्षर : माया स्फुर—द्वय भूय प्रस्फुर-द्वितय ततः, घोर-घोर-तरेत्यन्ते तनु-रूप-पदं पुनः । चट-युग्मं तदन्ते स्यात् प्रचट-द्वितय ततः, कह-युग्म वम-द्वन्द्व ततो बन्ध-युग पुनः । घातय-द्वितय वर्मं फडन्तः समुदाहृतः, एक-पञ्चाशदर्णोऽयमघोरास्त्र-महा-मनु —ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर-घोर-तर तनु-रूप चट चट प्रचट प्रचट बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्

'शारदा-तिलक' । ऋषि अघोर, छन्द त्रिष्टुप्, देवता अघोर रुद्र । बीज मन्त्रस्य हल (व्यजन-वर्ण), शक्ति स्वर-वर्ण । पद्म-पादाचार्य के मत से बीज 'हुं', शक्ति 'ह्रीं' । मन्त्र के ५, ६, १०, १०, ८, १२ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

सजल-घन-समाभं भीम-दंष्ट्रं त्रि-नेत्रं, भुजग-धरमघोरं रक्त-वस्त्राङ्ग-रागाम् ।
परशु-डमरु-खड्गान् खेटकं बाण-चापौ, त्रिशिखि-नर-कपाले बिभ्रतं भावयामि ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृताक्त 'शुभ' तिलों से दशांश होम । 'शुभ तिलों' से आशय है कि तिलों को धोकर साफ कर ले और सुखाकर प्रयोग में लाये ।

कामना के अनुसार निम्न-प्रकार ध्यान कर मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए—

[१] शत्रु-सेना के विनाश के लिये—
सहस्राब्धि-रवं हस्तैर्धनुः पञ्च-शतैरपि, सन्धायाकृष्य च शरान् विमुञ्चन्तमनारतम् ।
धावन्तं रिपु-सेनायां वमद्-विद्युद्-घनोपमं, ज्वलत्-पिङ्गोर्ध्व-केशं च गज-चर्मावगुण्ठितम् ॥

[२] घोर अप-स्मृति के नाश के लिये और ग्रह-शान्त्यर्थ—
त्रि-पाद-हस्त-नयनं नीलाञ्जन-चयोपमं, शूलासि-सूची-हस्तं च घोर-दंष्ट्राट्ट-हासिनम् ।

[३] शत्रु के उच्चाटन के लिए, जिससे वह अन्य देश को चला जाय—
धावन्तं वैरिणं पश्चादत्युग्रं स-धनुः-शरम् ।

[४] भूत-प्रेतादि के नाश के लिये—
खड्गं खेटं तथा घण्टां वेतालं शूलमेव च, कपालं चापि बिभ्राणं पिङ्गोर्ध्व-कच-भीषणम् ।
भूत-प्रेत-विनाशाय ध्यायेद् भीमाट्ट-हासिनम् ।

[५] मृत्यु-भय को दूर करने के लिये—
सीताब्ज-शीतांशु-पुटमिन्दु-कान्तेन्दु-वर्चसं, आशाम्बरं व्याघ्र-नख - प्रमुखैर्बाल - भूषणैः ।
अलंकृताङ्गं द्वि-भुजं त्रि-वर्षार्धक-रूपिणं, क्रमाङ्गं सुमुखं सौम्यं नील-कुञ्चित-कुन्तलम् ॥

[६] श्री-लाभ के लिये—
तप्त-जाम्बू-नद-निभं शूल-खड्ग-वराभयं, रक्तारविन्द-वसतिं स्मरन्नुच्चैः श्रियं लभेत् ।

(२) 'मेरु-तन्त्र' में उक्त ५१ अक्षर का मन्त्रोद्धार भिन्न रूप में दिया है—'मायां स्फुर-द्वयं चैव प्रस्फुर-द्वितयं वदेत्, पश्चाद् तर-द्वन्द्वं तर-प्रान्तं च प्र-द्वयं । प्रचट-द्वितयं पश्चात् कह-द्वन्द्वं मह-द्वयं घातय द्विर्हुं भू-शर-वर्णकः'—ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर तर तर प्रतर प्रतर प्रद प्रद प्रचट प्रचट कह कह मह मह बन्ध बन्ध घातय घातय हुं हुं

छन्द उष्णिक्, बीज 'वं'—शेष वही । मन्त्र के ५, ६, १०, १०, ८, १२ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । पुरश्चरण की विधि वही है । ध्यान—

मेघाकारं ततो ध्यायेद् भीम-दंष्ट्र त्रि-लोचनं, भुजङ्ग-भूषणं रक्त-वसनालेप-शोभितम् ।
परशुं करवालं च वाणं त्रिशिखमेव च, दधानं दक्षिणैर्हस्तैरुर्ध्वादि-क्रमतः परैः ।
डमरुं खेटकं चापं नृ-कपालं च बिभ्रतं, काम्य-कर्मसु रक्ताभं कृष्णाभमभिचारके ।
निग्रहे ग्रह-भूतादि-मुक्तौ मुक्ता-निभं स्मरेत् ॥

२ पाशुपतास्त्र

१ षडक्षर : तारो वान्तो धरा-सस्थो वाम-नेत्रेन्दु-भूषितः, पार्श्वो नकः कर्ण-युतो वर्मास्त्रान्त षडक्षरः । मनुः पाशुपतास्त्राख्यो ग्रह-क्षुद्र-निवारणः—ॐ श्लीं पशु हुं फट्

'शारदा-तिलक' । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता पाशुपतास्त्र-रूप पशुपति । मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के आदि मे 'ॐ' और अन्त मे 'हुं फट्' जोडकर षडङ्ग-न्यास करे, यथा—'ॐ हुं फट्, ॐ श्लीं हुं फट्' इत्यादि । ध्यान—

मध्याह्नार्क - सम - प्रभं शशि - धर भीमाट्टहासोज्ज्वलं,
त्र्यक्ष पन्नग-भूषणं शिखि - शिखा - श्मश्रू - स्फुरन्मूर्धजम् ।
हस्ताब्जैस्त्रि - शिखं स-मुद्गरमसिं शक्ति दधानं विभु,
दंष्ट्रा भीम - चतुर्मुखं पशु - पतिं दिव्यास्त्र - रूपं स्मरेत् ।।

पुरश्चरण मे छ लाख जप कर गो-घृत से दशांश होम । इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को ग्रह-ग्रस्त व्यक्ति को पिलाने से वह ग्रह की बाधा से छूट जाता है ।

२ तार. श्री पशु-शब्दान्ते हुं फट् मन्त्रः षडक्षर —ॐ श्रीं पशु हुं फट्

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता पशु-पति । मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को विन्दु-युक्त कर और अन्त मे 'हुं फट्' जोडकर उनसे षडङ्ग-न्यास ।

पुरश्चरण-विधि पहले मन्त्र के समान । ध्यान—

पञ्च-वक्त्रं दश-भुजं प्रति-वक्त्रं त्रिलोचनं, अग्नि-ज्वाला-निभ-श्मश्रु-मूर्धजं भीम-दंष्ट्रकम् ।
खड्गं बाणामक्ष-सूत्रं शक्तिं परशुमेव च, दधानं दक्षिणैर्हस्तैरूर्ध्वादि - क्रमतः परैः ।
खेट-चापौ कुण्डिका च त्रिशूलं ब्रह्म-दण्डकं, नानाभरण - सन्दीप्तं बाल - चन्द्रैरलंकृतम् ।

३ अष्टाक्षर : पश्वन्ते पति-शब्द-युक्, भवेदष्टाक्षरो मन्त्र.—ॐ श्रीं पशुपतिः हुं फट्

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि आदि द्वितीय षडक्षर मन्त्र-वत् । बीज 'श्रीं', शक्ति 'हुं' । षडङ्ग-न्यास के मन्त्र—(१) ॐ ॐ, (२) ॐ प, (३) ॐ शु, (४) ॐ प, (५) ॐ ति, (६) ॐ हुं फट् । ध्यानादि द्वितीय षडक्षर-मन्त्र के समान ।

३ शरभेश्वर (पक्षिराज, शालुव)

१ एक-चत्वारिंशदक्षर : ॐ खं खां खं फडुच्चार्य द्वि शत्रून् प्रससीति च, तथा हुं फट् सर्वास्त्र-संहरणाय शरभेति च । शान्ताय पक्षि-राजाय हुं फट् स्वाहा नमो मनु —ॐ खं खां खं फट् शत्रून् प्रससि प्रससि हुं फट् सर्वास्त्र-संहारणाय शरभाय शान्ताय पक्षि-राजाय हुं फट् स्वाहा नम

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वासुदेव, छन्द जगती, देवता कालाग्नि-रुद्र शरभ, बीज खं', शक्ति 'स्वाहा' । मन्त्र के ४, ६, १०, ७, ५ ६ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । समस्त मन्त्र से दिग्-बन्धन कर ध्यान करे—

विद्युज्जिह्वं वज्र-नखं वडवाग्न्युदरं तथा, व्याधि-मृत्यु-रिपुघ्नं चण्ड-वातातिवेगिनम् ।
हृद्-भैरव-स्वरूपं च वैरि-वृन्द-निषूदनं, मृगेन्द्र-त्वक्-छरीरेऽस्य पक्षाभ्यां चञ्चुना रवं ।
अधो-वक्त्रश्चतुष्पाद ऊर्ध्व-दृष्टिश्चतुर्भुजः, कालान्त-दहन-प्रख्यो नील-जीमूत-निस्वनं ।
अरिर्यद्-दर्शनादेव विनष्ट बल-विक्रमं, सदा-क्षिप्त गृहर्क्षाय पक्ष-विक्षिप्त - भूभृते ।
अष्ट-पादाय रुद्राय नमः शरभ-मूर्तये ।।

पुरश्चरण मे एक सहस्र जप कर पायस से प्रतिदिन छ मास तक दशांश होम करे ।

२ द्वि-चत्वारिंशदक्षर : तार प्रथममुद्धृत्य खें खां खं फट् तथैव च, प्राण ग्रहासि-द्वितयं हुं फट् च तदनन्तरं । सर्वेति पदमाभाष्य शत्रु-संहारणाय च, शरभ-शालुवायेति पक्षि-राजाय तद् वदेत्,

फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं द्वि-चत्वारिंशदक्षरं—ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहासि प्राण-ग्रहासि हुं फट् सर्व-शत्रु-संहारणाय शरभ-शालुवाय पक्षि-राजाय हुं फट् स्वाहा

'शरभ-तन्त्र,' पृष्ठ १३। ऋषि कालाग्नि-रुद्र, छन्द जगती, देवता भगवान् शरभेश्वर, वीज 'खं', शक्ति 'स्वाहा,' कीलक 'फट्', विनियोग स्वेच्छा-प्रयोग-सिद्धयर्थे। षडङ्ग-न्यास '(१) ॐ खें खां अं कं...ङं आं, (२) ॐ खं फट् इं चं...ञं ईं, (३) ॐ प्राण-ग्रहासि प्राण-ग्रहासि हुं फट् उं टं...णं ऊं, (४) ॐ सर्व-शत्रु-संहारणाय एं तं ..नं ऐं, (५) ॐ शरभ-शालुवाय ओं पं...मं औं, (६) ॐ पक्षि-राजाय हुं फट् स्वाहा अं यं....हं ल क्षं अः' इन छः मन्त्रों से कर ध्यान करे—

चन्द्रार्काग्निस्त्रि-दृष्टिः कुलिश-वर-नखश्चञ्चलोऽत्युग्र-जिह्वः ।
कालो-दुर्गा च पक्षौ हृदय - जठरगो भैरवो वाडवाग्निः ।।
ऊरुस्थौ व्याधि-मृत्यू शरभ - वर - खगश्चण्ड-वातातिं - योगः ।
संहर्ता सर्व - शत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षि-राजः ।।१।।
मृगस्त्वर्ध-शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुना द्विजः, अधो-वक्त्रश्चतुष्पाद ऊर्ध्व-वक्त्रश्चतुर्भुजः ।
कालाग्नि-दहनोपेतो नील-जीमूत-सन्निभः, अरिस्तद्-दर्शनादेव विनष्ट-बल-विक्रमः ।।२।।
सटा-छटोग्र-रूपाय पक्ष-विक्षिप्त-भूभृते, अष्ट - पादाय रुद्राय नमः शरभ-मूर्तये ।।३।।

३ गायत्री : १ तारमादौ वदेद् देवि ! पक्षि-शाल्वाय वै पदं, विद्महेति पदं चोक्त्वा वज्र-तुण्डाय धीमहि। तन्नः शब्दं समुच्चार्य शरभेति ततोच्चरेत्। प्रचोदयात् पदं चोक्त्वा तारं चैव पुनर्वदेत्। एषा शालुव-गायत्री जपतां सर्व-कामदा—ॐ पक्षि-शाल्वाय विद्महे वज्र-तुण्डाय धीमहि तन्नः शरभः प्रचोदयात् ॐ

'शरभ तन्त्र', आकाश-भैरव-कल्प, पृष्ठ ६।

२ ॐ पक्षि-राजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नो शरभः प्रचोदयात्

परम पूज्य स्वामी हिमालय अरण्य से प्राप्त हस्त-लिखित पाण्डु-लिपि 'शरभ पटल' से।

४ अष्टोत्तर-शताक्षर माला-मन्त्र : तारो नमो भगवते ङेन्त शरभ शाल्व च, सर्व-भूतोच्चाट-नाय ग्रह-राक्षस चोच्चरेत्। निवारणाय ज्वालेति ङेन्तं माला-स्वरूपकं, दक्ष-निष्काशनायेति साक्षादिति पदं वदेत्। काल-रुद्र-स्वरूपाष्ट-मूर्तये च तथा वदेत्, कृशानु-रेतसे चेति महेति पदमुच्चरेत्। क्रूर-भूतोच्चाट-नायेत्यप्रति-शयनाय च, शत्रूंश्च नाशय-द्वन्द्वं वदेच्छत्रु-पशूस्ततः। गृह्ण-युग्मं खाद-युग्मं तारं हुं फट् वसु-प्रियां—ॐ नमो भगवते शरभाय शाल्वाय सर्व - भूतोच्चाटनाय ग्रह - राक्षस - निवारणाय ज्वाला-माला-स्वरूपाय दक्ष-निष्काशनाय साक्षाद् काल-रुद्र-स्वरूपाष्ट-मूर्तये कृशानु-रेतसे महा-क्रूर-भूतोच्चाटनाय अप्रति-शयनाय शत्रून् नाशय नाशय शत्रु-पशून् गृह्ण गृह्ण खाद खाद ॐ हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। प्रतिदिन १०८ वार छः मास तक जपने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। उसके बाद पात्र में पवित्र जल रखकर सात वार उसे अभिमन्त्रित करे। इसके पीने से एक सप्ताह के भीतर सब प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

४ खड्ग-रावण

१ सप्तपूर्ण्य-शताक्षर : प्रणवो हृदयं पश्चात् ङेन्तं पशुपति पुनः, तारो नमो भूत - पदं ततोऽधिपतये ध्रुवं। नमो रुद्राय युगलं खड्ग - रावण - शब्दतः, विहर - द्वितयं पश्चात् सर - नृत्य-युगं

पृथक् । श्मशान-भस्मार्चितान्ते शरीराय ततः परं, घण्टा-कपाल-मालादि-धरायेति पदं पुनः । व्याघ्र-चर्म-पदस्यान्ते परिधानाय तत्-परं, शशाङ्क-कृत-शब्दान्ते शेखराय ततः परं । कृष्ण-सर्प-पदं पश्चात् ततो यज्ञोपवीतिने, चल-युग्मं वल्गु-युगमनिवर्त्त-कपालिने । हन-युग्मं ततो भूतान् त्रासय-द्वितयं पुनः, भूयो मण्डल-मध्ये स्यात् कट-युग्मं ततः परं । रुद्रांकुशेन शमय प्रवेशय-युगं ततः, आवेशय-युगं पश्चाच्चण्डासि-पदमीरयेत् । धराधि-पति-रुद्रोऽथ ज्ञापयेत्यग्नि-सुन्दरी, खड्ग-रावण-मन्त्रोऽयं सप्तत्यूर्ध्व-शताक्षरः—ॐ नमः पशुपतये ॐ नमो भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय ॐ नमो रुद्राय खड्ग-रावण विहर विहर सर सर नृत्य नृत्य श्मशान-भस्मार्चित-शरीराय घण्टा-कपाल-मालादि-धराय व्याघ्र-चर्म-परिधानाय शशाङ्क-कृत-शेखराय कृष्ण-सर्प-यज्ञोपवीतिने चल चल वल्गु-वल्गु अनिवर्त्त-कपालिने हन हन भूतान् त्रासय त्रासय कट कट रुद्र ! अंकुशेन शमय प्रवेशय प्रवेशय आवेशय आवेशय चण्डासि धराधिपति रुद्र ! ज्ञापय स्वाहा

'शारदा-तिलक' । खड्ग-रावण का पूजा-मन्त्र है—'भूताधिपतये स्वाहा ।' बीज है 'खौं' आदि में 'औः' लगाकर पञ्च-ह्रस्व-युक्त 'ख्रं' से अर्थात् 'औः ख, औः खि' इत्यादि से ईशानादि पञ्च-मूर्तियों का न्यास क्रमशः देह [मस्तक, हृदय, गुह्य और पाद] में तथा ऊर्ध्वादि पांच मुखों में करे । 'खां, खीं' इत्यादि से अङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

घण्टा-कपाल-सृणि-मुण्ड-कृपाण-खेट-खट्वाङ्ग-शूल-डमरूनभयं दधानम् ।
रक्ताङ्गमिन्दु - शकलाभरणं त्रि - नेत्रं, पञ्चाननाब्जमरुणांशुकमीडे ।।

पुरश्चरण में दो अयुत जपकर घृताक्त पायस से दशांश होमादि करे । इस मन्त्र के प्रभाव से सभी भूत, कृत्या, ग्रह आदि के महान् भय दूर होते हैं । भूत-निग्रह के लिए यह सर्व-श्रेष्ठ मन्त्र है ।

२ चतुस्सप्तत्यूर्ध्व-शताक्षर : तारो नमो भगवते ङेऽन्तः पशुपतिर्ध्रुवः, हृद्-भूताधिपतिर्ङेऽन्त ॐ हृद् रुद्राय चोच्चरेत् । खड्ग-रावण ल ल च विहर-द्वितयं सर, सर नृत्य-द्वयं पश्चाद् व्यसनं पदमुच्चरेत् । भस्मार्चित-शरीराय ततो घण्टा-पद वदेत्, कपाल-माला-धराय व्याघ्र-चर्म-पदं ततः । परिधानायाय ङेऽन्तः शशाङ्क-कृत-शेखरः, कृष्ण-सर्प-पदं प्रोच्य वदेद् यज्ञोपवीतिने । चल-द्वयं वल द्वेधा अति-वर्ति-कपालिने, जहि द्वयं वदेद् भूतान् नाशय-द्वितयं ततः । मण्डलेति पदान्ते तु मध्ये फट्-द्वितयं ततः, रुद्रांकुशेन शमय प्रवेशय-युग वदेत् । द्विरावेणय रक्षांसि धाराधिपति संवदेत्, रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा मन्त्रोऽयं खड्ग-रावण.—ॐ नमो भगवते पशु-पतये ॐ नमो भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय खड्ग-रावण लं लं विहर विहर, सर सर, नृत्य नृत्य, व्यसनं भस्मार्चित-शरीराय घण्टा-कपाल माला-धराय व्याघ्र-चर्म-परिधानाय शशांक-कृत-शेखराय कृष्ण-सर्प-यज्ञोपवीतिने चल चल, बल बल, अति-वर्ति-कपालिने जहि जहि, भूतान् नाशय नाशय, मण्डलाय फट् फट्, रुद्रांकुशेन शमय शमय, प्रवेशय प्रवेशय, आवेणय आवेणय, रक्षांसि धराधिपति रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । पाद-टिप्पणी में उक्त 'उद्धार' के आधार पर जो मन्त्र दिया है, उसमें एक पाठान्तर है—'जहि जहि : हन हन ।' ऋषि रावण, छन्द अमित, देवता खड्ग-रावण । 'खा, खीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं चन्द्र-मौलिं त्रि-लोचनं, पञ्चाननं करैर्घण्टां कपालांकुश-मस्तकम् ।
कृपाणं खेट-खट्वाङ्गौ त्रिशूलं डमरुं करैः, दधानमभयं चापि ध्यायेत् पञ्चाननं शिवम् ।।

पुरश्चरण की विधि पूर्वोक्त मन्त्र के समान ।

५ वटुक-भैरव

१ एक-विंशत्यक्षर : उद्धरेद् वटुकं ङेऽन्तमापदुद्धारणं तथा कुरु-द्वयं पुनर्ङेऽन्तं वटुकान्तं समुद्धरेत् । एक-विंशत्यक्षरात्मा शक्ति-रुद्धो महा-मनुः—**ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं**

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २३५ । ऋषि बृहदारण्यक, छन्द गायत्री, देवता वटुक-भैरव । 'शारदा-तिलक' में भी यही उद्धार है, एक पाठान्तर है—वटुकान्तं : वटुकं तं । साथ ही अन्तिम चरण भी दिया है—'अभीष्ट-फल-संसिद्धयै कीर्तितः सुर-पादपः ।' छन्द भिन्न बताया है—अनुष्टुप् । देवता का नाम 'आपदुद्धारण भैरव' निर्दिष्ट किया है । ध्यानादि वही दिए हैं । सात्विक ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—(१) कुण्डलोद्भासि : कुन्तलोल्लासि, (२) नूपुराढ्यैः नूपुराद्यैः (३) वदनं : वसनं । ध्यान में भी तीन पाठान्तर हैं—(१) कान्ति : कान्तं, (२) पिङ्गलाक्षं : पिङ्ग-केशं, (३) शूलाभयानि : पाशाभयानि ।

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार भिन्न शब्दों में है—'मायां च वटुकं ङेऽन्तमापदोद्धारणाय च, कुरु-द्वयं च वटुकाय ह्रीं प्रकृति-वर्णकः ।' ऋष्यादि 'शारदा-तिलक' के समान, देवता का नाम 'भैरव', बीज 'ह्रीं', शक्ति 'रं', कीलक 'आ' बताए हैं । ध्यान भिन्न है, यथा—

दीप्त-मुद्रा-वराभीति-किङ्किणी-जाल-नूपुरैः, युतं रत्न-मयैः स्मेर-वदनं कुटिलालकम् ।
दक्षे शूलं च परशु दधतं बटु-रूपिणं, द्वि-भुजं संस्मरेद् देव-कार्यार्थं सात्विकं द्विजः ।
वैष्णवस्तु चतुर्बाहुं जटा-मुकुट-धारिणं, त्रिशूलं पाश-दण्डौ च दधतं च कमण्डलुम् ।।

पुरश्चरण में २१ लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त तिलों से दशांश होम ।

२ द्वा-विंशत्यक्षर : एवं प्रणव-पूर्वकमिति यथा—**ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं**

'मन्त्र-कोष' । इसका उल्लेख 'हिन्दी तन्त्रसार' में नहीं है । 'सविधि वटुक-भैरव-स्तोत्रं', पृष्ठ ६ पर उद्धार—'प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य देवी-प्रणवमुद्धरेत्, वटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च । कुरु-द्वयं ततः पश्चाद् वटुकाय पुनर्वदेत्, देवी-प्रणवमुद्धृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये ।' ऋषि बृहदारण्यक, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीमदापदुद्धारण वटुक भैरव, बीज 'वं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'ॐ' ।

३ त्रिंशदक्षर : तारो माया तदनु वटुकाय द्वय क्ष्रौं तदापच्छब्दोद्धारणाय शिरसि ज्ञेयौ कुरु द्वन्द्वमुच्चै, ह्रीं बीज यद् वटुक-पुटितं भौवनं चाग्नि-जाया—**ॐ ह्रीं वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं वटुकाय स्वाहा**

'भैरव-सर्वस्व', पृष्ठ २४ । 'काल-सङ्कर्षण तन्त्र' से उद्धृत । ऋषि कालाग्नि-रुद्र, छन्द अनुष्टुप्, देवता आपदुद्धारक देव वटुकेश्वर, बीज 'ह्रीं', शक्ति भैरवी-वल्लभ, कीलक दण्ड-पाणि, विनियोग समस्त-शत्रु-दमन, समस्तापन्निवारण, सर्वाभीष्ट-प्रदान । ध्यान—

नील-जीमूत-सङ्काशो जटिलो रक्त-लोचनः, दंष्ट्रा कराल-वदनः सर्प-यज्ञोपवीत-वान् ।
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपाल-स्रग्-विभूषितः, हस्त-न्यस्त-किरीटीको भस्म-भूषित विग्रहः ।
नाग-राज-कटि-सूत्रो बाल-मूर्ति-दिगम्बरः, मञ्जु-शिञ्जान-मञ्जीर-पाद-कम्पित-भूतल. ।
भूत-प्रेत-पिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः, योगिनी-चक्र-मध्यस्थो मातृ-मण्डल-वेष्टितः ।
अट्टहास-स्फुरद्-वक्त्रो भृकुटी-भीषणाननः, भक्त-संरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमण-तत्परः ।।

६ स्वर्णाकर्षण भैरव

१ सप्त-पञ्चाशदक्षर : **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण-भैरवाय मम दारिद्र्य-विद्वेषणाय महा-भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं**

मन्त्र-महार्णव । ऋषि ब्रह्मा, छन्द पंक्ति, देवता हरि-हर-ब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण-भैरव, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'ॐ'। ध्यान—

पीत-वर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीत - वाससं, अक्षय-स्वर्ण-माणिक्यं तडित् - पूरित-पात्रकम् ।
अभिलषितं महा-शूलं तोमरं चामर-द्वयं, सर्वाभरण - सम्पन्न मुक्ता - हारोप - शोभितम् ।
मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वर-प्रदं, सन्ततं चिन्तयेद् वश्यं सर्व - सिद्धिदम् ।
पारिजात-द्रुम-कान्तार - स्थिते मणि - मण्डपे, सिंहासन - गतं ध्यायेद् भैरवं स्वर्ण-दायकम् ।। १

गाङ्गेय - पात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः सन्दधतं त्रिनेत्रम् ।
देव्या युतं तप्त - सुवर्ण - वर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ।। २

मन्दार-द्रुम-मूल-भाजि-सु-महा-माणिक्य-सिंहासने, संविष्टोदर-भिन्न-पङ्कज-रुचा देव्या कृतालिङ्गन ।
भक्तेभ्यः कर-रत्न-पात्र-भरितं स्वर्णं ददानोऽनिशं, स्वर्णाकर्षण - भैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैक-भूः ।।३

पुरश्चरण मे एक लाख जपकर पायस (खीर) से होम ।

२ अष्टा-पञ्चाशदक्षर : प्रणवो वाग्भव काम-शक्ती दीर्घ-त्रयान्विते, सर्गी भृगुर्भया सेन्दुरापदुद्धारणाय च । अजामलान्ते बद्धाय ङेन्तो लोकेश्वरस्तथा, स्वर्णाकर्षण-भैरवान्ते दीर्घो बालः प्रभञ्जनः । मम दारिद्रय-विद्वेषणयान्ते प्रणवो रमा, ङेन्तो महा-भैरवान्ते हृदय कीर्तितो मनुः—ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः व आपदुद्धारणाय अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण-भैरवाय मम दारिद्रय-विद्वेषणाय ॐ श्रीं महा-भैरवाय नम

'मन्त्र-महोदधि' । ऋषि, छन्द वही, देवता 'स्वर्णाकर्षण भैरव'। बीज और शक्ति का उल्लेख नही है । मन्त्र के ६, ८, १२, ६, १०, १० अक्षरो मे या 'क्लां ह्रां, क्लीं ह्रीं, क्लूं ह्रूं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

पारिजात-द्रु-कान्तारे स्थिते माणिक्य-मण्डपे, सिंहासन-गतं ध्यायेद् भैरव स्वर्ण-दायिनं ।

इस ध्यान से संलग्न प्रथम मन्त्र का 'गाङ्गेय०' आदि ध्यान है, जिसमे दो पाठान्तर है—१ स्वर्णाकृतिं : स्वर्णाकृपं, २ भैरवमाश्रयामि : भैरवमाश्रयाम' ।

७ चण्ड भैरव

१ त्र्यक्षर : १ अथ वक्ष्ये चण्ड-मन्त्रमो हुं फट् त्र्यक्षरो मनु'—ॐ हुं फट्

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि त्रिक, छन्द अनुष्टुप्, देवता चण्ड, बीज 'ॐ', शक्ति 'फट्', विनियोग इष्टार्थ । षडङ्ग-न्यास (१) दीप्त फट्, (२) ज्वाला फट्, (३) ज्वाला-मालि फट्, (४) तत् फट्, (५) हन फट् (६) सर्व-ज्वालिनि फट्—मन्त्रो से कर ध्यान करे—

ध्यायेच्चण्डेश्वरं रक्तं त्रिनेत्रं रक्त-वाससं, चन्द्र-मौलिं च बिभ्राणं शूल-टङ्कं कमण्डलुम् ।
स्फटिक स्रजमाबद्ध-जटाजूट स-नागकं ।।

पूजन करने का अष्टाक्षर-मन्त्र है—'चण्डेश्वराय नमः' । पृष्ठ ६६ मे प्रकाशित 'त्र्यक्षर चण्डेश्वर' मन्त्र भी इस सन्दर्भ मे द्रष्टव्य है ।

२ गायत्री— चण्डेश्वराय विद्महे चण्ड-चण्डाय धीमहि तन्नश्चण्ड प्रचोदयात्

'मेरु तन्त्र' । पुरश्चरण मे तीन लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त तिल और तण्डुल से दशांश होम ।

८ वीरभद्र भैरव

चतुर्दशाक्षर : क्लीं प्रीं वीरभद्र जय जय नमः स्वाहा

प० पू० श्री स्वामी हिमालय अरण्य द्वारा संग्रहीत पाण्डुलिपि। ऋषि भैरव, देवता वीर-भद्र-रूपी महाकाल भैरव। छन्द, बीज, शक्ति, कीलक पक्षिराज शरभ के समान।

९ निशा-चौर

१ नवाक्षर : १ ॐ नां नीं निशा-चौराय फट्

प० पू० श्री स्वामी हिमालय अरण्य, जातापहारिणी-कल्प से। ऋषि मनु, छन्द विराट्, देवता निशा-चौर, बीज 'नां', शक्ति 'फट्', विनियोग 'प्रत्यूह-शमनार्थे'। 'नां नीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कृष्ण-वर्णं रक्त-नेत्रं निशा-चौरं भयानकं, शक्ति-हस्तं दीप्त-जङ्घं विकटाक्षं दिगम्बरं।
कराल-वदनं भीमं शुष्क-देहं कृशोदरम्, ध्यायेत् सदा-क्रोध-युक्तं घण्टा-घर्घर-वादिनम्॥

२ बलि-मन्त्र : ॐ नां नीं निशा-चौराय इमं सामिषान्न-बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय मम नैश्य-विघ्नं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।

१० भैरव-शक्ति बन्दी

एकादशाक्षर : तारो हिलि-युग्मं देवी बन्दी ङेऽन्तो नमोऽन्तकः, एकादशाक्षरो मन्त्रः—**ॐ हिलि हिलि देव्यै बन्द्यै नमः**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टुप्, देवता बन्दी देवी। मन्त्र के १, २, २, २, २, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

मेघ-श्यामां सुधा-कुम्भमभयं दधतीं स्मरेत्। रत्न-सिंहासने स्थितां यजेत् बन्धन-मुक्तये॥

पुरश्चरण मे दो लाख जप कर पायस से दशांश होम।

११ महा-भैरव क्षेत्रपाल

१ अष्टाक्षर : क्षौमिति बीजादि क्षेत्रपालायेत्युपेत नमोऽन्तः—क्षौं क्षेत्रपालाय नमः

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २३३। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता क्षेत्रपाल, बीज 'क्षौं', शक्ति 'आत्मने'। 'शारदा-तिलक' मे उद्धार—वर्णान्त्यमौ विन्दु-युक्तं क्षेत्र-पालाय हृन्मनुः, ताराद्यो वसु - वर्णोऽयं क्षेत्रपालस्य कीर्तितः।' वहाँ छन्द गायत्री और शक्ति 'लाय' बताये हैं। ध्यान भी भिन्न दिया है, यथा—

नीलाञ्जनाद्रि-निभमूर्ध्व-पिशङ्ग-केशं, वृत्तोग्र - लोचनमुपात्त - गदा-कपालम्।
आशाम्बरं भुजग-भूषणमुग्र - दंष्ट्रं, क्षेत्रेशमद्भुत - तनुं प्रणमामि देवम्॥

२ नवाक्षर : प्रणवादिर्यथा—वर्णान्त्यमौ विन्दु-युतं क्षेत्रपालाय हृन्मनुः, ताराद्यो वसु-वर्णोऽयं क्षेत्रपालस्य ईरितः—**ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः** 'हिन्दी-तन्त्रसार,' वही।

'मेरु-तन्त्र' मे उक्त दोनो मन्त्रों का उद्धार भिन्न शब्दों मे दिया है—'ङेऽन्तस्तु क्षेत्रपालः स्यात् क्षौं बीजाद्यो गजाक्षरः। स एव प्रणवाद्यस्तु दक्षे वामे नवाक्षरः।' छन्द 'गायत्र', शक्ति 'नमः' बताए हैं। शेष वही। 'क्षां, क्षीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ततः सञ्चिन्तयेद् देवमञ्जनाद्रि-सम-प्रभं, वर्तुलास्यं त्रिनयनमूर्ध्व-पिङ्ग-जटा - धरम्।
दंष्ट्रा-कराल-वदनं भीम-रूपं दिगीश्वरं, दक्षे गदां कपालं च वामे सर्प - विभूषणम्॥

३ बलि-मन्त्र : १ पूर्वमेहि-द्वय पश्चाद् विदुष स्यात् पुरु-द्वय, भजय-द्वितयं भूयो नतंय-द्वितयं पुनः। ततो विघ्न-पद-द्वन्द्वं महा-भैरव तत्-परं, क्षेत्रपाल बलिं गृह्ण-द्वयं पावक-सुन्दरी। बलि-मन्त्रोऽयमा-

यथार्थः सर्व-काम-फल-प्रद —एहि एहि विदुपि पुर पुरु, भञ्जय भञ्जय, नर्तय नर्तय, विघ्न विघ्न, महा-भैरव क्षेत्रपाल ! बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा (४४ अक्षर)

'शारदा-तिलक' । उक्त मन्त्र एक सहस्र जप से सिद्ध होता है । एक प्रहर रात्रि बीत जाने पर व्यञ्जन-सहित अन्न का पिण्ड बनाकर क्षेत्रपाल का ध्यान करे और उनके बाएँ हाथ के कपाल-पात्र में उसे अर्पित करने की भावना करे । इस बलिदान से प्रसन्न होकर क्षेत्रपाल कान्ति, मेधा, बल, आरोग्य, तेज, पुष्टि, यश और श्री, प्रदान करते हैं । 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २०५ पर दो प्रकार के बलि-मन्त्र दिए हैं, जिनमें से एक उक्त प्रकार का ही है किन्तु दो पाठान्तर हैं–(१) पुरु पुरु : सुरु सुरु : (२) नर्तय नर्तय : तर्जय तर्जय ।

२ 'मेरु-तन्त्र' । उद्धार भिन्न शब्दों में है —एह्येहीति समुच्चार्य विद्विपोऽन्त, पुर - द्वयं, भञ्जय द्विर्नर्तय द्विविघ्न विघ्न महा वदेत् । भैरव क्षेत्रपालेति बलि देव ततो वदेत्, गृह्ण - द्वय वह्नि-जाया पञ्च-त्रिंशाक्षरो मनुः—एहि एहि विद्विपोऽन्तः पुर पुर भञ्जय भञ्जय नर्तय नर्तय, विघ्न विघ्न, महा-भैरव क्षेत्र-पाल ! बलि देव ! गृह्ण गृह्ण स्वाहा

स्पष्ट है कि उद्धार में 'पञ्च-त्रिंशाक्षर' मन्त्र बताया है, किन्तु वास्तव में ४७ अक्षरों का मन्त्र बनता है, जो प्रथम बलि-मन्त्र से मिलता-जुलता है ।

३ एह्येहि तुरु-युग्म च मुरु-द्वन्द्व तथा वदेत्, भुंधि द्विर्हन विघ्न च विनाशय विनाशय, महा-बल क्षेत्रपाल बलि गृह्ण-द्वयं ततः । अग्नि-जाया वलेर्मन्त्रो भवेत् पञ्चाब्धि-वर्णक —एह्येहि तुरु तुरु मुरु मुरु भुंधि भुंधि हन हन विघ्नं विनाशय विनाशय महा-बल क्षेत्रपाल बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । यह मन्त्र 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २३५ में उद्धृत दूसरे मन्त्र से मिलता-जुलता है ।

१२ महा-शास्ता (शम्भोर्गण-विशेषः)

१ द्वात्रिंशदक्षर : शास्तार मृगयेत्युक्त्वा श्रान्तमश्वाग्निरु-युत, ढ-गणावृत्तमित्युक्त्वा पानी-यार्थं वना च दे । त्य-शास्त्रे ते ततो रैवते नमो मन्त्र ईरित.—शास्तारं मृगया श्रान्तमश्वारूढं गणावृतं, पानीयार्थं वनादेत्य शास्त्रे ते रैवते नमः

'मन्त्र-महोदधि' । ऋषि रैवत, छन्द पंक्ति, देवता सर्वाभीष्ट-दायक महा-शास्ता । मन्त्र के एक-एक चरण (८-८ अक्षरों) से एव पूरे मन्त्र से पञ्चाङ्ग-न्यास । ध्यान—

साध्यं स्व-पाशेन विबन्ध्य गाढं निपातयन्तं खलु साधकस्य ।
पादाब्जयोर्दण्ड-धरं त्रि-नेत्रं भजेत शास्तारमभीष्ट-सिद्धयै ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर तिलों से दशांश होम ।

२ गायत्री : भूताधिपाय - शब्दान्ते विद्महे - पदमीरयेत्, महा-देवाय च ततो धीमहीति पद वदेत् । तन्नः शास्ता प्रचो-वर्णा दयादिति च कीर्तयेत् । गायत्र्येषोदिता शास्तु, सर्वाभीष्ट-प्रदा नृणाम्—ॐ भूताधिपाय विद्महे महा-देवाय धीमहि तन्नः शास्ता प्रचोदयात् 'मन्त्र-महोदधि' ।

१३ मंजु-घोष

१ एकाक्षर हकारो वह्निमारूढो वाम-नेत्र-विभूषित —ह्री

२ त्र्यक्षर (१) अंकुश शक्ति - बीज च रमा-बीज तत पर, बीज-त्रयात्मको मन्त्रो वाड्यो-घान्त-नाशक —क्रो ह्री श्री

(२) शक्ति-बीज रमा-बीजं काम-बीज ततः प्रिये—ह्री श्रीं क्लीं

३ षडक्षर : मातृकादि समुद्धृत्य वह्नि-बीज समुद्धरेत्, वामाणं कूर्च-संज्ञं च ततोऽनेन समुद्धरेत्, मीनेश च ततः कुर्याद वाम-नेत्र-सयुक्तं । इयं दीपनी—अ र व च ल धीं ('मन्त्र-गोप'—वारो मन्त्र)

'भैरव-सर्वस्व,' पृष्ठ २५२ मे षडक्षर का उद्धार - 'विष्ण्वग्नि - पाशी - शशि - युक् च धीश्च, षड्-वर्णो मन्त्रो प्रदिष्टः' । ऋषि वृहदारण्यक, छन्द विराट्, देवता मञ्जु-घोष ।

४ सप्ताक्षर : रविर्विन्दु-समायुक्तो जान्तो वान्तोऽग्नि-शान्ति-युक्, क्षकार: पृथिवी चाग्निर्विन्दुः शान्तिश्च उद्धृतः । सप्त-वर्णो मनु. प्रोक्तो मन्त्रिणा कविता-वर —मं-झ-ल-रीं-क्ष-ल-रीं

१ - 'भैरव-सर्वस्व,' पृष्ठ २५५ । उद्धार को स्पष्ट करने मे 'रवि' का अर्थ मकार सदिग्ध है । 'जान्त' का अर्थ 'ज' के वाद का अक्षर 'झ' लिया है, किन्तु 'वान्त' का अर्थ वाद का अक्षर न लेकर 'व' के पूर्वाक्षर 'ल' को ग्रहण किया है, यह चिन्तनीय है । पृष्ठ २५६ पर ऋषि कण्व, छन्द विराट्, देवता वटुक बताये हैं । यहाँ देवता का नाम 'वटुक' सन्दिग्ध है क्योकि मन्त्र तो मञ्जुघोष का है । ध्यान पृष्ठ २५५ पर—

शिशु-तर-वर-कान्ति-क्लान्त-नीलाम्बुदाभं, विकच-सरसिजाभ्यां पुस्तक कर्पकं च ।
स्मित-सुविशद-वक्त्रं-पञ्च चूडं त्रिनेत्रं, कुमति - दहन - दक्षं मंजु - घोषं नमामि ।।

पुरश्चरण मे सात लाख जप कर लोण-मिश्रित सर्षप से दशांश होम करे ।

१४ कुबेर

१ अष्टाक्षर : तारो वैश्रवणायाग्नि-प्रियान्तोऽष्टाक्षरो मनुः—ॐ वैश्रवणाय स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि' । ध्यान—

धन-पूर्ण स्वर्ण-कुम्भं तथा रत्न-करण्डकं, हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्व-कर-पादं च तुन्दिलम् ।
वटाधस्ताद् रत्न-पीठोपविष्टं सुस्मिताननं, होम-काले कुबेरं तु चिन्तयेदग्नि - मध्यगम् ।।

२ षोडशाक्षर : आदौ तार-पुटा लक्ष्मीस्ततो माया-पुटा रमा, तत. काम-पुटा सैव ङेऽन्तो वित्तेश्वरो नमः । षोडशाक्षर-मन्त्रोऽय सर्व-दारिद्र्य-नाशन —ॐ श्रीं ॐ, ह्रीं श्रीं ह्रीं, क्लीं श्रीं क्लीं, वित्तेश्वराय नमः

'मन्त्र महोदधि' । ऋषि विश्रवा, छन्द वृहती, देवता शिव-मित्र धनेश्वर । मन्त्र के ३, २, २, २, , ५, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

मनुज-वाह्य-विमान-वर-स्थितं, गरुड-रत्न-निभं निधि-नायकम् ।
शिव सखं मुकुटादि - विभूषितं, वर-गदे दधतं भज तुन्दिलम् ।।

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर तिलो से दशाश होम ।

३ पञ्च-त्रिंशदक्षर : यक्षाय-पदमुच्चार्य कुबेराय-पदाच्च वै, श्रवणाय धनाणान्ते धान्याधिपतये धन । धान्य-शब्दात् समृद्धि मे देहि दापय ठ-द्वय, वाण-रामाक्षरो मन्त्र.—यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्याधिपतये धन-धान्य-समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि' । ऋषि आदि सभी विधान षोडशाक्षर मन्त्र के समान । मन्त्र के ३, ४, ५, ८, ८, ७, अक्षरो से षडङ्ग-न्यास ।

१५ कार्त्तिकेय

सप्ताक्षर : व वह्नये नमश्चेति तारादिः सप्त-वर्ण-वान्—ॐ व वह्नये नमः

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता गुह, बीज 'ॐ', शक्ति 'नम.' । प्रणव-युक्त एक एक मन्त्राक्षर मे षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

ध्येयो देवो गुहः शक्ति कुक्कुटाक्ष-वरान् दधत्, रक्तो रक्तांशुको रक्त-प्रवराकल्प-भूषितः ।

पुरश्चरण मे अयुत जप और घृत से दशांश होम । पृ० २० पर सप्ताक्षर सुब्रह्मण्य का मन्त्र द्रष्टव्य है ।

१६ 'पञ्च-वक्त्र'-मन्त्र-विधान

भस्मोद्धूलन प्रयोग

पहले 'भस्मोद्धूलन-प्रयोग' के अनुसार शरीर मे भस्म लगाना चाहिए। यथा—

विनियोग : ॐ अग्निरित्यादि- भस्माभिमन्त्रण - मन्त्राणां श्रीपिप्पलाद ऋषिः, गायत्री छन्दः, कालाग्नि-रुद्रो देवता, भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः ।

निम्न मन्त्र मे तीन वार भस्म का अभिमन्त्रण करे—ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, व्योमरिति भस्म सर्वं ँ ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि, तस्माद्व्रतमेतत् पाशुपतं पशु-पाश-विमोक्षाय ।

भस्म पर जल छिड़कने हेतु निम्न विनियोग हाथ जोड़कर पढ़े—ॐ आपो ज्योतिरित्यस्य श्री प्रजापति ऋषिः, यजु-ब्रह्माग्नि-वायु-सूर्याश्च देवता , भस्मन्यपामासेचने विनियोगः ।

फिर निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए जलाधिप विष्णु का ध्यान करते हुए भस्म पर जल छिड़के—ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम ।

तब षडक्षर-मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का जप करते हुए भस्म को जल मे सम्मर्दित कर उसे सारे शरीर में लगाए । पहले सिर मे भस्म लगाने हेतु निम्न विनियोग पढ़े—

ॐ ईशान इत्यस्य श्रीईशान ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता, शिरसि भस्मोद्धूलने विनियोगः ।

फिर निम्न मन्त्र से सिर में भस्म लगाए—ॐ ईशानः सर्व-विद्यानामीश्वरः सर्व-भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ।

मुख मे भस्म लगाने हेतु विनियोग—ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य श्रीतत्पुरुष ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रो देवता, मुखे भस्मोद्धूलने विनियोगः ।

मन्त्र से मुख मे भस्म लगाए—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ।

हृदय मे भस्म लगाने हेतु विनियोग—ॐ अघोरेभ्यो इत्यस्य श्रीअघोर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता, हृदये भस्मोद्धूलने विनियोगः ।

निम्न मन्त्र से हृदय मे भस्म लगाए—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर-घोर-तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व-शर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र-रूपेभ्यः ।

गुह्य मे भस्म लगाने का विनियोग—ॐ वामदेवाय इत्यस्य श्रीवामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, विष्णुर्देवता, गुह्ये भस्मोद्धूलने विनियोगः ।

निम्न मन्त्र से गुह्य मे भस्म लगाए—ॐ वामदेवाय नमो, ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमो, रुद्राय नमः, कालाय नमः, कल-विकरणाय नमो, बल-विकरणाय नमो, बलाय नमो, बल-प्रमथनाय नमः, सर्व-भूत-दमनाय नमो, मनोन्मनाय नमः ।

पैरो मे भस्म लगाने का विनियोग—ॐ सद्योजातमित्यस्य श्रीसद्योजात ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, पादयोः भस्मोद्धूलने विनियोगः ।

निम्न मन्त्र से पैरो मे भस्म लगाए—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि, सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नाति-भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः ।

इसके बाद प्रणव (ॐ) का जप करते हुए मस्तक से लेकर पैरों तक सभी अङ्गों में भस्म लगाए। तब मस्तक पर त्रिपुण्ड्र हेतु भस्म लेने के लिए विनियोग पढ़े—**ॐ मानस्तोक इत्यस्य श्री कुत्स ऋषिः, जगती छन्दः, एक-रुद्रो देवता, भस्मोद्धरणे विनियोगः।**

निम्न मन्त्र से त्रिपुण्ड्र हेतु भस्म ग्रहण करे—**ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि, मानो गोषु, मानोऽश्वेषु रीरिषः मानो व्वीरा न्रुद्र भामिनो व्वधीः विष्मन्तः सद्रमित्वा हवामहे।**

अब त्रिपुण्ड्र लगाने हेतु विनियोग पढ़े—**ॐ त्र्यम्बकमित्यस्य श्रीवशिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, त्र्यम्बको रुद्रो देवता—ॐ त्र्यायुषमित्यस्य श्रीनारायण ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, आशीर्देवता, भस्मना त्रिपुण्ड्र-धारणे विनियोगः।**

त्रिपुण्ड्र की तीनों रेखाओं का निम्न प्रकार ध्यान करे—

याऽस्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यश्चाकारो रजो भूर्लोकश्चात्मा क्रिया-शक्तिः ऋग्वेदः प्रथमं सवनं महादेवो देवता ॥ १ ॥ याऽस्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणाग्निरुकारं सत्वमन्तरिक्षमन्तरात्मा चेच्छा-शक्ति-र्यजुर्वेदो माध्य दिनं सवनं माहेश्वरो देवता ॥ २ ॥ याऽस्य तृतीया रेखा सा आहवनीयो मकारस्तमो द्यौः परमात्मा ज्ञान-शक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं शिवो देवता ॥ ३ ॥

तब निम्न दो ऋचाओं का पाठ करते हुए क्रमशः ललाट, दाएँ कन्धे, बांएँ कन्धे, उदर और वक्ष इन पाँच स्थानों में त्रिपुण्ड्र धारण करे—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि-वर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥
ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं, यद् देवेषु त्रायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ॥ २ ॥

पञ्च-वक्त्र-पूजा

१ पश्चिम-वक्त्र सद्योजात : नमस्कार करते हेतु विनियोग : **ॐ सद्योजातमित्यस्य श्री सद्योजात ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, श्वेत - वर्णं, हंसः वाहनं, पश्चिम-वक्त्रं, पृथिवी - तत्वं, पश्चिम-वक्त्र-नमस्कारे विनियोगः।**

निम्न मन्त्र से हाथ जोडकर प्रणाम करे—**ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि...भवोद्भवाय नमः। सद्योजाताय श्वेत-वर्णाय हंस-वाहनाय पश्चिम-वक्त्राय पृथिवी-तत्वाय सृष्टि-रूपात्मने ब्रह्मणे नमः ह्रां।**

धनुर्बाण-मुद्रा दिखाकर पूजन हेतु पूर्ववत् विनियोग पढ़े—**ॐ सद्योजात...पश्चिम-वक्त्र-पूजने विनियोगः।**

निम्न मन्त्र से गन्ध, मनःशिला चन्दन, श्वेताक्षत, श्वेत पुष्प, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, पायस-नैवेद्यादि से पूजन करे—**ॐ सद्योजातं....नमः। सद्योजाताय . पश्चिम-वक्त्राय नमः।**

फिर अष्ट-कला-पूजन करे—**१ ॐ ऋद्धयै नमः, २ सिद्धयै, ३ धृत्यै, ४ लक्ष्म्यै, ५ मेधायै, ६ कान्त्यै, ७ स्वधायै, ८ प्रभायै।**

अब ध्यान करे। यथा—

ॐ प्रालेयामर-विन्दु-कुन्द-धवलं गो-क्षीर-फेन-प्रभं, भस्माभ्यक्तमनङ्ग-देह - दमन-ज्वालावली-लोचनम्।
ब्रह्मेन्द्रादि-मरुद-गणैः स्तुति-परैरभ्यर्चितं योगिभिः, वन्देऽहं सकलं कलङ्क-रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥
शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिव-पदं, शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम्॥

धनुर्बाण-मुद्रा : वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रे नियोजयेत्, अनामिका कनिष्ठा च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत् । दर्शयेद् दक्षिण-स्कन्धे धनुर्मुद्रेयमोरिता । दक्ष-मुष्टिस्तर्जन्या दीर्घया बाण-मुद्रिका ।

फल-श्रुति : श्वेताक्षतैः श्वेत-पुष्पैः पूजयेद् हंस-वाहनं, सिद्ध्यन्ति सर्व-कार्याणि पूजनेन न संशयः।

२ उत्तर-वक्त्र वामदेव : नमस्कार हेतु विनियोग : ॐ वामदेवाय इत्यस्य श्रीवामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, विष्णुर्देवता, कृष्ण-वर्णं, गरुड़ - वाहनं, उत्तर वक्त्रं, आपस्तत्वं, उत्तर - वक्त्र - नमस्कारे विनियोगः ।

प्रणाम-मन्त्र—ॐ वामदेवाय . . . मनोन्मनाय नमः । वामदेवाय कृष्ण-वर्णाय गरुड़-वाहनायोत्तर-वक्त्रायापस्तत्वायामृत-रूपात्मने विष्णवे नमः ह्रीं ।

पञ्च-मुद्रा दिखाकर पूजन हेतु विनियोग—ॐ वामदेवाय . . . . उत्तर-वक्त्र-पूजने विनियोगः ।

हरिचन्दन, तुलसी, शतपत्र, पुष्प, पञ्च - सौगन्धिक धूप, घृत-पक्व गोधूमान्न-नैवेद्यादि से पूजन—ॐ वामदेवाय . . . . नमः । वामदेवाय . . . .उत्तर-वक्त्राय नमः ।

त्रयोदश-कला-पूजन—१ ॐ रजसे नमः, २ रक्षायै, ३ रत्यै, ४ पाल्यायै, ५ कामायै, ६ संजीवन्यै, ७ प्रियायै, ८ बुद्धयै, ९ क्रियायै, १० धात्र्यै, ११ भ्रामर्यै, १२ मोहिन्यै, १३ ज्वरायै । ध्यान—

ॐ गौरं कुंकुम-पिङ्गलं सु-तिलकं व्यापाण्डु-गण्ड-स्थलं, भ्रू-निक्षेप-कटाक्ष-वीक्षण-लसत्संसक्त-कर्णोत्पलम् ।
स्निग्धं बिम्ब-कला-धरं प्रहसितं नीलालकालंकृतं, वन्दे पूर्ण-शशाङ्क-मण्डल-निभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ।।
वाम-देवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्र-गण-सेवितं, अजन्मामुमा-कान्तं वन्देऽहं ह्युत्तर-मुखम् ।।

पञ्च-मुद्रा : करौ तौ संहतौ कृत्वा सम्मुखावुन्नतांगुलौ, तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कुर्यादेषाब्ज-मुद्रिका । सुगन्ध-पञ्चकं : कंकोल-कर्पूर-जातीफल-लवङ्गकैः, सुगन्ध-पञ्चकं प्रोक्त ।

फल-श्रुति : तुलसी-शतपत्रैश्च पूजयेद् गरुडासनं, सर्व-दोष-विनाशेन प्राप्नोति श्रिय-सम्पदाम् ।

३ दक्षिण-वक्त्र अघोर : नमस्कार हेतु विनियोग : ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य श्रीअघोर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता, नील वर्णं, कूर्म वाहनं, दक्षिण वक्त्रं, तेजस्तत्वं, दक्षिण - वक्त्र - नमस्कारे विनियोगः ।

प्रणाम-मन्त्र—ॐ अघोरेभ्यो . . . . रुद्र-रूपेभ्यः । अघोराय नील-वर्णाय कूर्म - वाहनाय दक्षिण-वक्त्राय तेजस्तत्वाय विश्व-रूपात्मने कालाग्नि-रुद्राय नमः हूं ।

ज्ञान-मुद्रा दिखाकर पूजन-हेतु विनियोग—ॐ अघोरेभ्यो ''' दक्षिण-वक्त्र-पूजने विनियोग ।

कृष्णागरु, चन्दन, नीलोत्पल, करवीर पुष्प, सिताग़रु धूप, माषान्न-नैवेद्यादि से पूजन—ॐ अघोरेभ्यो . . . . रुद्र-रूपेभ्यः । अघोराय . . . . दक्षिण-वक्त्राय नमः ।

अष्ट-कला-पूजन—१ ॐ तमसे नमः, २ मोहायै, ३ क्षयायै, ४ निद्रायै, ५ व्याधये, ६ मृत्यवे, ७ क्षुधायै, ८ तृषायै ।

ॐ कालाभ्र-भ्रमराञ्जनाचल-निभं व्यावृत्त-पिङ्गेक्षणं, खण्डेन्दु-द्वय-मिश्रितां सुदशना-प्रोद्भिन्न-दंष्ट्रांकुरम् ।
सर्प-प्रोत-कपाल-शक्ति-सकलं व्याकीर्णं सच्छेखरं, वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिल-भ्रूभङ्ग-रौद्रं मुखम् ।।
नीलाभ्र-वर्णमोकारमघोरं घोर-दंष्ट्रकं, दंष्ट्रा-करालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिण-मुखम् ।।

ज्ञान-मुद्रा · तर्जन्यंगुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत् । ज्ञान-मुद्रा भवेदेषा ।

फल-श्रुति : नीलोत्पलैः करवीरैः पूजयेत् कूर्म-संस्थितं, सर्व-बाधा-विनाशाय ज्ञान-मोक्ष-प्रसाधकं ।

४ पूर्व-वक्त्र तत्पुरुप : नमस्कार हेतु विनियोग : ॐ तत्पुरुपाय इत्यस्य श्रीतत्पुरुप ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रो देवता, पीत वर्ण, अश्व वाहनं, पूर्व-वक्त्रं, वायु तत्वं, पूर्व-वक्त्र-नमस्कारे विनियोगः।

प्रणाम मन्त्र—ॐ तत्पुरुपाय ' प्रचोदयात्। तत्पुरुपाय पीत-वर्णायाश्व-वाहनाय पूर्व-वक्त्राय वायु-तत्वाय चैतन्यात्मने आदित्याय नमः ह्रैं।

कवच-मुद्रा दिखाकर पूजन हेतु विनियोग—ॐ तत्पुरुपाय'' प्रचोदयात्। तत्पुरुपाय'' पूर्व वक्त्र-पूजने विनियोगः।

हरिताल, चन्दन, दूर्वांकुर, अर्क-पुष्पान्यतर पुष्प, कृष्णागरु धूप, मोदक नैवेद्यादि से पूजन—ॐ तत्पुरुपाय ' प्रचोदयात्। तत्पुरुपाय ' पूर्व-वक्त्राय नमः।

चतुष्कला-पूजन—१ ॐ निवृत्यै नमः, २ प्रतिष्ठायै, ३ विद्यायै, ४ शान्त्यै।

संवर्ताग्नि-तडित्-प्रतप्त-कनक-प्रस्पर्द्धि-तेजोऽरुणं, गम्भीर-स्मृति-निःसृतोग्र - दशन-प्रोद्भासिताम्रधरम्।
बालेन्दु-द्युति-लोल-पिङ्गल - जटा-भार-प्रबद्धोरगं, वन्दे सिद्ध - सुरासुरेन्द्र - नमितं पूर्वं मुखं शूलिनः।
बालार्क-वर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्-प्रभं, दिव्यं पिङ्ग-जटाधारं वन्देऽहं पूर्व-दिङ-मुखम्॥

कवच-मुद्रा : कर-द्वन्द्वांगुलयो वर्मणि स्युः।

फल-श्रुति : पूर्वाकुरैरर्क-पुष्पै पूजयेदश्व-वाहन आयुष्य तत्र विशिष्ट-फल-दायकम्।

५ ऊर्ध्व-वक्त्र ईशान : नमस्कार हेतु विनियोग : ॐ ईशान इत्यस्य श्रीईशान ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता, गो-क्षीर-वर्ण, वृषभ वाहनं, ऊर्ध्व वक्त्रं, आकाश तत्वं, ऊर्ध्व-वक्त्र-नमस्कारे विनियोगः।

प्रणाम मन्त्र—ॐ ईशानः ' सदाशिवोम्। ईशानाय गो-क्षीर - वर्णाय वृषभ - वाहनायोर्ध्व-वक्त्रायाकाश-तत्वाव्यक्ताय सर्व-व्यापकात्मने नमः ह्रौं।

महा-मुद्रा दिखाकर पूजन हेतु विनियोग—ॐ ईशान '''ऊर्ध्व-वक्त्र-पूजने विनियोगः।

भस्म, विल्व-पत्र, कनक पुष्प, ऋतु-भवान्य पुष्प, हरिचन्दन, धूप, शर्करा-दध्योदन-नैवेद्यादि से पूजन—ॐ ईशानः सदाशिवोम्। ईशानाय '''ऊर्ध्व-वक्त्राय नमः।

पञ्च-कला-पूजन—१ ॐ शशिन्यै नमः, २ अङ्गदायै, ३ इष्टायै, ४ मरीच्यै, ५ वालिन्यै।

ॐ व्यक्ताव्यक्त-गुणोत्तरं सु-वदनं षट्-त्रिंश-तत्वाधिकं, तस्मादुत्तर-तत्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
वन्दे तामस-वर्जितेन मनसा सूक्ष्माति - सूक्ष्मं परं, शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं ख-व्यापि तेजोमयम्।
ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेज-पुञ्ज परायणं, अमृत-स्रावि चिद्-रूपं वन्देऽहं पञ्चमं मुखम्॥

महा-मुद्रा : उत्तानो तादृशावेव व्यापकाञ्जलिकं करौ, तादृशौ संयुतावेव करौ व्यापकांजलिम्।

फल-श्रुति—सौम्य-मोक्ष-प्रदातारं पूजयेद् वृष-वाहनम्।

इस प्रकार 'पञ्च-वक्त्र'-पूजा कर भगवान् शिव के वाम भाग मे निम्न मन्त्रों से पूजा करे—१ उमायै नम, २ शङ्कर-प्रियायै, ३ पार्वत्यै, ४ गौर्यै, ५ काल्यै, ६ कालिन्द्यै, ७ कोटर्यै, ८ विश्व-धारिण्यै, ९ ह्रां, १० ह्रीं, ११ गङ्गा-देव्यै, १२ गण-पतये, १३ कार्तिकेयाय, १४ पुष्प-दन्ताय, १५ कपर्दिने, १६ भैरवाय, १७ शूल-पाणये, १८ ईश्वराय, १९ दण्ड-पाणये, २० नन्दिन्यै, २१ महा-कालाय।

प्रत्येक मन्त्र के आदि मे 'ॐ' और अन्त मे 'नम' जोडकर पूजा करे। इसी प्रकार सम्मुख भाग मे एकादश रुद्रो का पूजन करे—

१ ॐ अघोराय नम, २ पशुपतये, ३ शर्वाय, ४ विरूपाक्षाय, ५ विश्व-रूपिणे, ६ त्र्यम्बकाय, ७ कपर्दिने, ८ भैरवाय, ९ शूल-पाणये, १० ईशानाय, ११ महेश्वराय।

अन्त मे यथा-शक्ति इष्ट-मन्त्र का जप कर रुद्राभिषेक, सहस्रनामादि उपासना करे।

अंग-देवता

१७ गौरी

१ एकादशाक्षर : ॐ ह्रीं श्रीं सौं ग्लौं गं गौरी गीं स्वाहा

'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी द्वारा संगृहीत 'क्रमदीक्षा-पूर्वक-पूर्णाभिषेक', पृष्ठ २४। ऋषि आदि एक-षष्ट्यक्षर-मन्त्र के समान। 'ह्रां, ह्रीं' आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

गौराङ्गीं धृत - पङ्कजां त्रि - नयनां श्वेताम्बरां सिंहगां,
चन्द्रोद्भासित-शेखरां स्मित-मुखीं सौम्यां वहन्तीं गदाम्।
विष्ण्विन्द्राम्बुज-योनि-शम्भु - त्रिदशैः सम्पूजितांघ्रि-द्वयां,
गौरीं मानस - पङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे॥

२ अष्ट-चत्वारिंशाक्षर : नभो हंसानन-युतमंकारस्थं शशाङ्क-युक्, तोयं वाय्वग्नि-कर्णेन्दु-युत राज-मुखीति च। राजाधिमुखि वश्यान्ते मुखि माया-रमात्म-भूः, देवि-देवि महा-देवि देवाधिदेवि सर्वं च। जनस्य च मुखं पश्चान्मम वशं कुरु-द्वयं, वह्नि-प्रियान्तो मन्त्रोऽष्ट-चत्वारिंशल्लिपिर्मतः—**ह्लं व्लूं राज-मुखि राजाधि-मुखि वश्य-मुखि ह्रीं श्रीं क्लीं देवि-देवि महा-देवि देवाधि-देवि सर्व-जनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि'। ऋषि आदि एक-षष्ट्यक्षर-मन्त्र के समान। मन्त्र के ११, ७, ४, ४, ५, १७ अक्षरों के आदि में 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि जोड़कर षडङ्ग-न्यास।

३ एक-षष्ट्यक्षर : माया नमोऽन्ते ब्रह्म-श्री-राजिते राज-पूजिते, जयेति विजये गौरि-गान्धारीति वदेत् पदं। त्रिभु-तोय मेष-वशङ्करि सर्व-स-सद्य-लः, क-वशङ्करि सर्व-स्त्री-पुरुषान्ते वशङ्करि, सु-द्वयं दु-द्वयं घे-युग् वा-युग्मं हर-वल्लभा। स्वाहान्त एक-षष्ट्यर्णो मन्त्र-राजः समीरितः—**ह्रीं नमः ब्रह्म-श्री-राजिते राज-पूजिते जय-विजये गौरि गान्धारि त्रिभुवन-वशङ्करि सर्व-लोक-वशङ्करि सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सुसु दुदु घेघे वावा ह्रीं स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि'। ऋषि अज, छन्द निचृद्, देवता त्रैलोक्य-मोहिनी गौरी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा'। मन्त्र के १४, १०, ८, ८, १०, ११ अक्षरों के आदि में क्रमशः 'ह्रां, ह्रीं' आदि को जोड़कर षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में १० हजार जप, घृताक्त खीर से एक हजार होम। ध्यान—

गीर्वाण-सङ्घार्चित-पाद-पङ्कजारुण-प्रभा - बाल - शशाङ्क-शेखरा।
रक्ताम्बरालेपन-पुष्प-युङ् मुदे सृणिं स-पाशं दधती शिवाऽस्तु नः॥

१८ गङ्गा

१ पञ्चाक्षर : १ प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य गङ्गायै तदनन्तरं, पुनर्मायां समुद्धृत्य मन्त्रमेतदुदीरयेत्—**ॐ गङ्गायै ह्रीं**

(२) माया - बीजं समुद्धृत्य गङ्गायै तदनन्तर, पुनर्माया समुद्धृत्य मन्त्रमेतदुदीरयेत्—**ह्रीं गङ्गायै ह्रीं**

२ सप्ताक्षर : माया-बीजं समुद्धृत्य पुनः प्रणवमुद्धरेत्, ततो गङ्गा-पदं देवि! चतुर्थ्यन्तं कुरु प्रिये! पूर्व-बीज-द्वयं प्रोक्त्वा मन्त्रमेतं जपं कुरु—**ह्रीं ॐ गङ्गायै ह्रीं ॐ**

३ नवाक्षर : प्रणवं पूर्वमुच्चार्य माया-वीजं समुद्धरेत्, गङ्गायै परमेशानि ! ततः परमुदीरयेत् । पुनर्वीज-द्वयं प्रोक्त्वा वह्नि-जाया समुद्धरेत्—ॐ ह्रीं गङ्गायै ॐ ह्रीं स्वाहा

'पुरश्चरण-रसोल्लास' में उक्त चारों मन्त्र दिए हैं । ऋष्यादि का उल्लेख नहीं है । केवल ध्यान दिया है—

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशां शुक्लाम्बर-विभूषितां, शुभ्र-मुक्ता-मयीं मालां हृदयोपरि-संस्थिताम् ।
श्वेत-पद्म-समासीनां श्वेताभरण - भूषितां, सदा षोडश-वर्षीयां ब्रह्मादि-परि - सेविताम् ।।

वही यह निर्दिष्ट किया है कि कलियुग मे केवल ध्यान कर मन्त्र का जप करना ही प्रशस्त है । इस प्रकार करनेवालों को शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

४ पञ्चदशाक्षर : तारो हिलि-मिलि-द्वन्द्वं गङ्गे देवि नमो मनुः तिथि-वर्णः—ॐ हिलि मिलि हिलि मिलि गङ्गे देवि ! नमः

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि आदि सप्त-विंशाक्षर मन्त्र के समान । मन्त्र के ३, २, २, २, ४, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । 'मन्त्र-महोदधि' की टीका में 'हिलि-मिलि-द्वन्द्वं' का उद्धार भिन्न प्रकार से किया है—'हिलि हिलि, मिलि मिलि ।'

५ अष्टादशाक्षर : तारो लज्जा रमा हार्दं ततो भगवती-पदं, सम्बुद्धो गङ्ग-दयिते नमो वर्म तथास्त्रकं । अष्टादशार्णो मन्त्रोऽयं—ॐ ह्रीं श्रीं नमः भगवति गङ्ग-दयिते ! नमः हुं फट्

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि आदि सप्त-विंशाक्षर मन्त्र के समान । मन्त्र के ३, २, ४, ५, २, २ से षडङ्ग-न्यास । 'मन्त्र-महोदधि' में उद्धार भिन्न शब्दों मे है—'तारो माया रमा हार्दं ततो भगवतीति च, गं स्मृत्यन्ति स-दृग्-वायुस्ते नमो वर्म फट् मनुः ।'

६ विंशदक्षर : (१) तारो नमः शिवायै च नारायण्यै पदं वदेत्, दशहरायै गङ्गायै स्वाहान्तो विंशदर्णकः—ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि व्यास, छन्द कृति, देवता गङ्गा । मन्त्र के ३, ३, ४, ५, ३, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

चतुर्भुजां त्रि - नेत्रां च सर्वाभरण-भूषितां, रत्न-कुम्भ-सिताम्भोज -वराभय-लसन्-कराम् ।
चामरैर्वीज्य-मानां च श्वेतच्छत्रोप-शोभिताम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृताक्त तिलो से दशांश होम ।

'मन्त्र-महोदधि' मे उक्त-मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—'प्रणवो हृदयं ङेऽन्ते शिवा-नारायणी-पदे, तद्-वद् दशहरा गङ्गे वह्नि-जाया नखाक्षरः ।' शेष समान हैं, केवल ध्यान भिन्न है । यथा—

उत्फुल्लामल-पुण्डरीक-रुचिरा कृष्णेश-विन्ध्यात्मिका, कुम्भेष्टाभय-तोयजानि दधती श्वेताम्बरालंकृता ।
हृष्टास्या शशि-शेखराखिल-नदी-शोणादिभिः सेविता, ध्येया पाप-विनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः ।।

(२) इयं (सप्त-विंशाक्षरी) आदिम-सप्तार्ण-हीना स्याच्च नखाक्षरी—ऐं लिहि लिहि, हिलि हिलि गङ्गे ! मां पावय पावय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि आदि सप्त-विंशाक्षर मन्त्र के समान । मन्त्र के ५, ४, ३, ३, ३, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । 'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार उक्त मन्त्र के 'लिहि लिहि, हिलि हिलि' के स्थान पर 'हिलि हिलि, मिलि मिलि' होना चाहिए ।

७ सप्त-विंशाक्षर : तारो नमो भगवति वाग्भवं च लिहि-द्वयं, हिलि-द्वयं च गंगे मां पावय-द्वितयं वदेत् । स्वाहान्तः सप्त-विंशार्णो मनुः पाप-प्रणाशनः—ॐ नमो भगवति ऐं लिहि लिहि, हिलि हिलि गङ्गे ! मां पावय पावय स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि ईश्वर, छन्द अमित, देवता गङ्गा । मन्त्र के ३, ४, ५, ७, ६, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

रक्ताम्बरां रक्त-वर्णां मूल-कुम्भ-वराभयान्, करैः सन्दधतीं स्मेरां कच्छपस्थां सुरादिभिः ।
सदैव सर्व-पापस्य नाशाय सु-निषेविताम् ।।

पुरश्चरण मे २७ लाख जप कर पद्मो से दशांश होम ।

'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे है—'तारो नमो भगवति वाक् स-दृग्-गगनं हिलि, क्रिया तन्द्री पिनाकीश विष ला' सूक्ष्म-संयुताः । गंगे मा पावय-द्वन्द्वमन्ते हुतवहाङ्गना, गिरि-नेत्राक्षरी विद्या स्मृता पातक-सङ्घ-हृत् ।' इस उद्धार के अनुसार उक्त मन्त्र के 'लिहि लिहि, हिलि हिलि' के स्थान पर 'हिलि हिलि, मिलि मिलि' हो जाता है । षडङ्ग-न्यास मन्त्र के ३, ४, ६, ३, ६, २ अक्षरों से बताया है, जो ठीक नही प्रतीत होता ।

१९ मणि-कर्णिका

१ चतुर्दशाक्षर : (१) तारो वाग् ह्री रमा कामस्तारो म मणि-कर्णिके, नमोऽन्तश्शक्र-वर्णोऽयं मनुः परम-दुर्लभः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मं मणि-कर्णिके नमः

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि व्यास, छन्द अति-शक्वरी, देवता मणि-कर्णिका । मन्त्र के १, २, २, २, ५, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

बीज-पूरं दक्ष-हस्ते वामे चेन्दीवर-स्रजं, बद्धाञ्जलि. श्वेत-वस्त्रा त्र्यक्षा चन्द्र-निभानना ।
पश्चिमाभिमुखी स्मेरा पद्मस्था पद्म-मालिका, नानाभरण-भूषाढ्या ध्येया श्रीमणि-कर्णिका ।।

पुरश्चरण मे तीन लाख जप कर मधुर-त्रय-युक्त कमलो से दशांश होम ।

(२) प्रणवो विन्दु-युङ्-मोऽन्ते मण्यन्ते कर्णिके प्रण, वात्मिके हृदयं मनु-वर्णोऽयं पूर्व-वत्—ॐ म मणि-कर्णिके प्रणवात्मिके नम

'मन्त्र-महोदधि' । ऋषि आदि पञ्चदशाक्षर मन्त्र के समान ।

२ पञ्च-दशाक्षर : वाङ्-माया-कमला-काम-वेदाद्यो विषमिन्दु-युक्, मणि - कर्णि भगी ब्रह्मा हृदय ध्रुव-सम्पुटः । मन्त्रः पञ्च-दशार्णो—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मं मणि-कर्णिके नमः ॐ

'मन्त्र-महोदधि' । ऋषि आदि चतुर्दशाक्षर मन्त्र के समान । मन्त्र के १, २, २, २, ५, ३ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

फुल्लेन्दीवर-निर्मितां कर-तले मालामसव्ये करे, वीजापूर-फलं सिताम्बुज-मयीं मालां दधाना हृदि ।
श्वेत-क्षौम-युता शरद्-विधु-निभा त्र्यक्षा निबद्धाञ्जलिर्ध्यातव्या मणिकर्णिका रवि-समा तोयेश-काष्ठा-मुखी।।

२० नर्मदा

विंशत्यक्षर : ऐं श्री मेकल-कन्यायै नर्मदायै पदादिक, सोमोद्भवायै देवापगायै हृदय-पूर्वकं—ऐं श्रीं मेकल-कन्यायै सोमोद्भवायै देवापगायै नमः

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि भृगु, छन्द अमित, देवता नर्मदा । ङेऽन्त तीन पदो एव आदि और अन्त के दो पदो तथा पूर्ण मन्त्र से क्रमशः षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

कनकाभां कच्छपस्थां त्रि-नेत्रां बहु-भूषणां । पद्माभयः सुधा-कुम्भः वराद्यान् बिभ्रतीं करैः ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दशांश होम ।

२१ शीतला

१ नवाक्षर : अथ वक्ष्ये महेशस्य वस्त्र-प्रक्षालिका तु या, शीतलेति च विख्याता तस्या मन्त्रं सुसिद्धिदं । तारो माया रमा शीतलायै हृच्च नवाक्षरः—ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि उपमन्यु, छन्द बृहती, देवता शीतला । 'ह्रां श्रां, ह्रीं श्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

ध्यायेच्च शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बरां, मार्जनी-शूर्प-हस्तां च रक्त-पुष्प-हिमार्चिताम् ।
तैलादि-मल-संयुक्त-वस्त्र-पोटलि-शीर्षिकां ॥

पुरश्चरण में अयुत जप कर पायस से दशांश होम । तदनन्तर नाभि-मात्र जल मे एक सहस्र जप कर यदि मार्जन करे, तो स्फोटों को तुरन्त शान्ति होती है । इस मन्त्र की साधना करनेवाले के वंश मे शीतला का प्रकोप नही होता ।

'मन्त्र-महोदधि' में उद्धार—'ध्रुवः शिवा रमा शीतलायै हार्दं नवाक्षरः ।' ऋष्यादि सब वही हैं, केवल ध्यान भिन्न है; यथा—

दिग्-वास-सम्मार्जनिका च शूर्प-कर-द्वये सन्दधतीं घनाभाम् ।
श्रीशीतलां सर्व-रुजार्ति-नष्टीं रक्ताङ्गराग - स्रजमर्चयामि ॥

२ एकादशाक्षर (शीतला-पति का मन्त्र) : तारः प्रासाद-बीजं यं वं व्योम-व्यापिने द्विठः—**ॐ ह्रौं यं वं व्योम-व्यापिने स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । न्यास, ध्यान, जपादि 'प्रासाद' मन्त्र के समान । पुरश्चरण में अर्ध-लक्ष जप कर आज्य (घृत) से दशांश होम । सिद्ध मन्त्र से दश वार अभिमन्त्रित औषधि निर्वीर्य होने पर भी फल-प्रदा होती है । ग्यारह वार अभिमन्त्रित औषधि रोगी को शीघ्र नीरोग करती है । प्रतिदिन वारह वार अभि-मन्त्रित जल को पिये, तो वृद्धावस्था से बचकर सौ वर्ष तक युवा के समान जीवन मिलता है । तीन वर्ष तक इस प्रकार जल पीने से कुष्ठादि महा-रोग नष्ट हो जाते हैं ।

२२ वन्दी देवी

एकादशाक्षर : तारो हिलि-युग वन्दी-देवी ङेऽन्ता नमोऽन्तकः, एकादशाक्षरो मन्त्रो—**ॐ हिलि हिलि वन्दी-देव्यै नमः**

'मन्त्र-महोदधि' । पृष्ठ ८२ पर यही मन्त्र भिन्न रूप में 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार प्रकाशित है । ऋष्यादि वही है । ध्यान भिन्न है, यथा—

स-तोय-पायोद -समान-कान्तिमम्भोज-पीयूष-करीर-हस्ताम् ।
सुराङ्गना-सेवित-पाद-पद्मां भजामि वन्दीं भव-बन्ध-मुक्तये ॥

२३ गिरि-पुत्री स्वयम्वरा

पञ्चाशदक्षर : तारो माया योगिनी-द्वितयं योगेश्वरि - द्वयं, योग - निद्रायं करि स्यात् सकल-स्थावरेति च । जङ्गमस्य मुखं प्रोच्य हृदयं मम सपठेत्, वशमाकर्षयाकर्षय पवनो वह्नि-सुन्दरी—**ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगेश्वरि योग-भयङ्करि सकल-स्थावर-जङ्गमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्ष-याकर्षय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि'। ऋषि पितामह, छन्द अति-जगती, देवता गिरि-पुत्री स्वयवरा। षडङ्ग-न्यास के मन्त्र (१) जगत्-त्रय, (२) त्रैलोक्य, (३) उरग, (४) सर्व-राज, (५) सर्व-स्त्री-पुरुष, (६) सर्व। इनमे से प्रत्येक के आदि मे 'ॐ ह्रीं' और अन्त मे 'वश्य-मोहिन्यै' जोड ले। ध्यान—

शम्भु-जगन्मोहन-रूप-पूर्णं विलोक्य लज्जाकुलिता स्मिताढ्याम्।
मधूक-मालां स्व सखी - कराभ्या सबिभ्रतीमद्रि - सुता भजेयम्॥

पुरश्चरण मे चार लाख जप कर पायसान्न से दशाश होम।

२३ रुद्रात्मक हनुमान्

१ दशाक्षर : स्व-बीज पूर्वमुच्चार्य पवन च ततो वदेत्, नन्दन च ततो देय ङेऽवसानेऽनल-प्रिया। दशार्णोऽय मनु प्रोक्तो नराणा सुर-पादप —ह पवन-नन्दनाय स्वाहा

'मन्त्र-महार्णव'। ऋष्यादि नही। 'ह्रा, ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ध्यायेद् रणे हनुमन्तं कपि - कोटि - समन्वितं, धावन्तं रावण जेतु दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम्।
लक्ष्मण च महा - वीरं पतितं रण - भूतले, गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरु- पर्वतम्।
हाहाकारैं स - दर्पैश्च कम्पयन्तं जगत-त्रय, ब्रह्माण्ड स समावाप्य कृत्वा भीम कलेवरम्॥

प्रतिदिन छ सहस्र जप कर सातवें दिन अहर्निश जप करे, तो रात्रि के चौथे पहर मे दर्शन लाभ। भयभीत न हो, तो अभीष्ट वर की प्राप्ति।

२ द्वादशाक्षर : (१) ह हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट

'मन्त्र महार्णव' मे गारुड तन्त्र से उद्धृत। इस मन्त्र मे ऋष्यादि नही हैं। केवल ध्यान कर मन्त्र का एक लाख जप करने मे सिद्धि मिलती है। यह मन्त्र विष्णु द्वारा अर्जुन को दिया गया था।

ध्यान—महा-शैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति, तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट ! घोर-रावं समुच्चरन्।
लाक्षा-रसारुणं गात्रं कालान्तक-यमोपमं, ज्वलदग्नि - लसन्नेत्रं सूर्य-कोटि-सम-प्रभम्।
अङ्गदाद्यैर्महा - वीरैर्वेष्टितं रुद्र-रूपिणम॥

(२) पृष्ठ ६३ पर द्रष्टव्य। 'मन्त्र-महार्णव' मे दिये इसी मन्त्र के पञ्च-कूट इस प्रकार हैं—ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्सैं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं' किन्तु पूजा-पद्धति के भीतर षडङ्ग-पूजा मे 'ह्सैं' और 'ह्सौ' के स्थान पर 'ह्सौं' मिलता है। षडङ्ग-न्यास मे वहाँ मन्त्रस्थ छ बीजो के आदि मे 'ॐ' जोडकर न्यास करने का निर्देश है।

'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार दिया है—'इन्द्र-स्वरेन्दु-सयुक्तो वराहो हसफाग्नयः, झिण्टीश-विन्दु-सयुक्त द्वितीय बीजमीरित। गदी पान्ताग्नि-रुद्रेन्दु-सयुत स्यात तृतीयक, हसरा-मनु-चन्द्राढ्याश्चतुर्थं हसखा फरा। शिवेन्द्राढ्या पञ्चम स्याद्धसौमन-विन्दुगो-पर, ङे युतो हनूमान हार्द मन्त्रोऽय द्वादशाक्षर.।' इस उद्धार के अनुसार पञ्च-कूट—'ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं'। ध्यान भिन्न रूप मे दिया है—

बालार्कायुत-तेजसं त्रिभुवन-प्रक्षोभकं सुन्दरं
सुग्रीवादि-समस्त वानर-गणैः ससेव्य-पादाम्बुजम्।
नादेनैव समस्त-राक्षस-गणान सन्त्रासयन्तं प्रभुं,
श्रीमद्-राम-पदाम्बुज-स्मृति रतं ध्यायामि वातात्मजम्॥

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—ह्रौं बीज सम्यगुच्चार्य पूर्वोक्त कूट-पञ्चक, हनुमते नमो मन्त्र।' वहाँ ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

बालार्काभ त्रिभुवन-क्षोभकं सर्व-राक्षसान्, नादेनैव त्रासयन्त सुग्रीवादिक-सेवितम्।
सुन्दरं राम चरण- ध्यानं ध्यायेत् समीरजम्।

३ अष्टादशाक्षर : पृष्ठ ६३ पर द्रष्टव्य। 'मन्त्र-महोदधि' में उद्धार—'हृदयं भगवान् ङेऽन्तं आञ्जनेय-महाबलौ, तद्-वद् वह्नि-प्रियान्तोऽयं मनुरष्टादशाक्षरः।' वहाँ बीज 'हुं' बताया है। ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

दहन-तप्त-सुवर्ण-सम-प्रभं भय-हरं हृदये निहिताञ्जलिम्।
श्रवण-कुण्डल-शोभि-मुखाम्बुजं नमत वानर-राजमिहाद्भुतम्॥

'मेरु-तन्त्र' मे बीज 'हुं' ही बताया है और ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

तप्त-काञ्चन-सङ्काशं हृदये विहिताञ्जलिं, किरीटिनं कुण्डलिनं ध्यायेद् वानर-नायकम्॥

४ माला-मन्त्र : वज्र-काय वज्र-तुण्ड वदेत् कपिल-पिङ्गल, ऊर्ध्व-केश महा-वीर सु-रक्त-मुख कीर्तयेत्। तडिज्जिह्व महा-रौद्र दंष्ट्रोत्कट कह-द्वयं, करालिने महा-दृढ-प्रहारिन्निति कीर्तयेत्। लंकेश्वर-वधायान्ते महा-सेतु-पदं ततः, बन्धान्ते च महा-शैल-प्रवाह-गगने-चर। एह्येहि भगवन् प्रोच्य महा-बल-पराक्रम, भैरवाज्ञापय प्रोच्य एह्येहि-पदं वदेत्। महा-रौद्र-पदं प्रोच्य दीर्घ-पुच्छेन वेष्टय, वैरिणं भञ्जय-द्वन्द्वं हु फट् त्राय ध्रुवादिक.। बाण-नेत्रेन्दु-वर्णोऽय माला-मन्त्रोऽखिलेष्टदः—ॐ वज्र-काय, वज्र-तुण्ड, कपिल-पिङ्गल, ऊर्ध्व-केश, महा-वीर, सु-रक्त-मुख, तडिज्जिह्व, महा रौद्र, दंष्ट्रोत्कट ! कह-कह, करालिने महा-दृढ़-प्रहारिन् ! लङ्केश्वर-वधाय महा-सेतु-बन्ध-महा-शैल-प्रवाह-गगने-चर ! एह्येहि भगवन्, महा-बल - पराक्रम, भैरवाज्ञापय एह्येहि महा-रौद्र ! दीर्घ-पुच्छेन वेष्टय। वैरिणं भञ्जय भञ्जय हुं फट् (१२५ अक्षर)

२५ कामदेव और रति

१ अष्टाक्षर काम : काम-देवाय कामादि हृदन्तोऽष्टाक्षरो मनुः कामस्य—क्लीं काम-देवाय नमः

२ पञ्चाक्षर रति : माया रत्यै पञ्चार्णस्तु रतेर्मनु —ह्रीं रत्यै नमः

३ काम-गायत्री : काम-देवाय-वर्णान्ते विद्महे पदमुच्चरेत्, पुष्प-बाणाय च पदं धीमहीति ततो वदेत्। तन्नोऽनङ्ग प्रचो-वर्णाद् दयादिति मनोभुवः, गायत्र्येषा बुधैरुक्ता जप्ता जन-विमोहिनी—ॐ काम-देवाय विद्महे पुष्प-बाणाय धीमहि, तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्

२६ त्रिशूल

१ सप्ताक्षर : ध्रुव वदेत् त्रिशूलाय नमश्चेति मन्त्रः सप्ताक्षरो मतः— ॐ त्रिशूलाय नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि वामदेव, छन्द उष्णिक्, देवता पिनाक-धृक्। भगवान् शिव के हाथ मे पकड़े हुए त्रिशूल का ध्यान कर तीन लाख जप कर बिल्व-पत्र से दशांश होम करने से मन्त्र-सिद्धि।

२७ शिव गायत्री

१ शिव : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महा-देवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

२ दक्षिणामूर्ति : ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि, तन्नो धीशः प्रचोदयात्
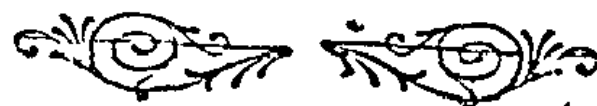
भगवती शक्ति

'पञ्चायतन' के पञ्च-देवो मे 'शक्ति' का अपना विशिष्ट स्थान है। इस सन्दर्भ मे 'शक्ति' से आशय मुख्यतः दुर्गा से लिया जाता है। ये दुर्गति और दुर्भाग्य से रक्षा कर भक्तो के सभी अभीष्टो की पूर्ति करनेवाली देवी हैं। महा-भारत मे इनकी स्तुति 'महिष-मर्दिनी' और 'कुमारी देवी' के रूप मे की गई है। साथ ही इन्हे 'उमा' भी कहा है। 'हरि-वंश' और 'मार्कण्डेय पुराण' मे 'देवी-माहात्म्य' के अन्तर्गत इन्ही की लीलाओ का वर्णन है। आठ, दस, बारह, अठारह भुजाओवाले इनके विभिन्न स्वरूप हैं। इन भुजाओ मे विविध अस्त्र-शस्त्र ये धारण करती हैं। इनका वाहन सिंह है। तमोगुण के प्रतीक महिषासुर का वध करने से ये 'महिष-मर्दिनी' नाम से प्रसिद्ध हैं। 'देवी-भागवत' मे इन्ही का उल्लेख 'हेमवती' नाम से किया गया है—'उमाभिधाना पुरतो देवी हेमवतीशिवाम्।'

केनोपनिषद् मे 'बहु-शोभमाना उमा हेमवती' की महिमा वर्णित है। वहाँ उनका साक्षात्कार 'ब्रह्म-विद्या' महा-शक्ति के रूप मे होता है, जिनके द्वारा देवताओ को ब्रह्म-तत्व का बोध होता है। दस उपनिषदो मे दश महा-विद्याओ का ब्रह्म-रूप मे वर्णन है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—चारो वेदो मे 'शक्ति' की स्तुति किसी-न-किसी रूप मे पाई जाती है। इस प्रकार 'शक्ति' की आराधना भारतीय धर्म की पुरातन परम्परा है। मातृ-रूप मे 'शक्ति' की उपासना अपना विशेष स्थान रखती है।

'शक्ति' से रहित शिव शव के समान हैं। शिव या ब्रह्म की क्षमता ही 'शक्ति' है। वही सृष्टि, स्थिति, संहार की करनेवाली है। अव्यक्त, निष्क्रिय, निराकार ब्रह्म को व्यक्त, सक्रिय और साकार करने-वाली 'शक्ति' ही है।

जितने भी उपास्य देव हैं, उन सबकी अपनी-अपनी शक्तियाँ है। ब्रह्मा की शक्ति सरस्वती, विष्णु की लक्ष्मी और शिव की पार्वती प्रसिद्ध हैं। इन शक्तियो के भिन्न-भिन्न असंख्य रूप हैं किन्तु मूलतः 'शक्ति' एक ही है। देवी-माहात्म्य के अन्तर्गत बडे उत्तम ढंग से यह स्पष्ट किया गया है कि मूल 'शक्ति' चण्डिका मे सभी शक्ति-रूपो का लय हो जाता है और एकमात्र भगवती चण्डी ही रह जाती है। (शक्ति के सम्बन्ध मे विशेष ज्ञान हेतु 'शक्ति-तत्व' द्रष्टव्य है।)

तन्त्रशास्त्र मे दुर्गा, चण्डिका और दश महा-विद्या आदि विविध 'शक्ति'-स्वरूपो का विस्तार से वर्णन मिलता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'पञ्चायतन' के अन्तर्गत भगवती दुर्गा के ही मन्त्र और उनकी उपासना को स्थान दिया गया है, शक्ति के अन्य स्वरूपो की उपासना का अधिकार क्रमशः उच्चतर साधको को इष्ट और गुरु-कृपा से प्राप्त होता है। यहाँ 'पञ्चायतन-खण्ड' के अन्तर्गत पहले 'दुर्गा' के ही मन्त्र दिए जा रहे है। 'दश महा-विद्याओ' एव अन्य शक्ति-स्वरूपो के मन्त्र उनके बाद प्रकाशित किए गये हैं। इन 'दश महा-विद्याओ' का विशिष्ट स्थान है, जिनमे से किन्ही एक का मन्त्र ग्रहण करने पर ही साधक वास्तविक 'शाक्त' उपासक बनता है और क्रमश साधना कर 'कौल' पद को प्राप्त कर पाता है।

भगवती शक्ति के मन्त्र

[१] दुर्गा

१ दुर्गा : अष्टाक्षर—मायाद्रिः कर्ण-विन्द्वाढ्यो भूयोऽसौ सर्ग-वान् भवेत्, पञ्चान्तकः प्रतिष्ठा-वान् मारुतो भौतिकासनः । तारादि-हृदयान्तोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः—ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ११६ । ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता दुर्गा । 'श्री दुर्गा कल्पतरु', पृष्ठ २७-२९ और ३१ ।

'शारदा-तिलक' और 'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' मे 'अद्रिः' के स्थान पर 'अत्रिः' है किन्तु अर्थ दकार ही है । वहाँ इस मन्त्र का बीज 'दुं' शक्ति 'ह्रीं' और विनियोग 'दुरितापन्निवारणार्थे' बताया है । षडङ्ग-न्यास के मन्त्र 'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रां, ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रीं' इत्यादि निर्दिष्ट किए है । ध्यान में दो पाठान्तर है—(१) मरकत - प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः : मरकत - प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः, (२) काञ्ची - क्वणन् : काञ्ची-रणन् ।

'मन्त्र-महार्णव' में 'देवी-रहस्य' के आधार पर उक्त मन्त्र के ऋषि महेश्वर और कीलक 'ॐ' बताए है । शेष 'शारदातिलक' वत् । वहाँ षडङ्ग-न्यास 'ॐ ह्रां, ॐ ह्रीं' इत्यादि से करने का निर्देश दिया है । ध्यान भिन्न दिया है । यथा—

दूर्वा-निभां त्रि-नियनां विलसत् किरीटां शङ्खाब्ज-खड्ग-शर-खेटक - शूल-चापान् ।

सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां, दुर्गां नवार - कुल-पीठ - गतां भजेऽहम् ॥

'शाक्त-प्रमोद' मे उद्धार यही है किन्तु 'मायाद्रि' के स्थान पर 'मायादिः' छपा है, जो अशुद्ध है । इसी प्रकार 'विन्द्वाढ्यो' के स्थान पर 'विद्धाढ्यो' और 'पञ्चान्तकः' के स्थान पर 'चान्तकश्च' अशुद्ध शब्द छपे हैं । ध्यान पद्धति मे 'हिन्दी-तन्त्रसार' जैसा ही दिया है, जिसमें पहला पाठान्तर 'शारदा-तिलक' के समान है । दूसरा पाठान्तर है—वो : नो । मन्त्रोद्धार के पूर्व भिन्न ध्यान दिया है । यथा—

सिंह-स्कन्ध-समारूढां नानालङ्कार-भूषितां, चतुर्भुजां महा - देवीं नाग-यज्ञोपवीतिनीम् ।

शङ्ख-शार्ङ-समायुक्त-वाम-पाणि-द्वयान्वितां, चक्रं च पञ्च-बाणांश्च धारयन्तीं च दक्षिणे ।

रक्त-वस्त्र-परीधानां बालार्क - सदृशी-तनुं, नारदाद्यैर्मुनि-गणैः सेवितां भव-मोहिनीम् ।

त्रि-वली - वलयोपेत-नाभि -नाल-सुवेशिनीं, रत्न - द्वीपे महा - द्वीपे सिंहासन- समन्विते ।

प्रफुल्ल-कमलारूढां ध्यायेत् तां भव-गेहिनीम् ॥

उक्त ध्यान में दूसरी पंक्ति 'शङ्ख...दक्षिणे' 'शाक्त-प्रमोद' में नही छपी है, 'हिन्दी तन्त्रसार' में छपी है । वहीं से यहाँ पूर्ति की गई है ।

'प्रपञ्चसार तन्त्र' में उद्धार भिन्न शब्दो में दिया है 'तारो मायामरेशोऽद्रि-पीठो विन्दु-समन्वितः । स एव च विसर्गान्तो गायै नत्यन्तिको मनुः ।' ऋष्यादि वही है । ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

शङ्खारि-चाप-शर-भिन्न-करां त्रिनेत्रां, तिग्मेतरांशु-कलया विलसत्-किरीटाम् ।

सिंह-स्थितां सकल - सिद्ध-नुतां च दुर्गां, दूर्वा-निभां दुरित- वर्ग-हरां नमामि ॥

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'ॐ ह्रीं दुमुक्त्वा दुर्गायै हृदयान्तोऽष्ट-वर्णकः ।' ध्यान—

सिंहासीनां मरकत-द्युतिं चन्द्रार्ध-शेखरां, शङ्ख-चक्र-धनुर्बाणान् दधतीं त्रीक्षणां भजे ॥

२ महिष-मर्दिनी : १ अष्टाक्षर—भान्तं वियत् स-नयनं श्वेतो मर्दिनि ठ-द्वयः, अष्टाक्षरी समाख्याता विद्या महिष-मर्दिनी—महिष-मर्दिनि स्वाहा

२ नवाक्षर—(१) प्रणवाद्यां जपेद् विद्यां—ह्रीं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(२) मायाद्यां वा जपेत् सुधीः—ह्रीं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(३) वधू-बीजादिकं वापि—स्त्रीं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(४) कवचाद्यां जपेत् तथा—हुं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(५) सर्व-कालेषु सर्वत्र कामाद्यां वा जपेत् सुधीः—क्लीं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(६) वाग्भवाद्यां जपेत् तु देवी वाक्य-विशुद्धये एते नवाक्षराः—ऐं महिष-मर्दिनि स्वाहा

३ दशाक्षर (१) विना बीजैर्महा-विद्या निर्वीर्या परि-कीर्तित, पुटिता बीज-युग्मेन मुखे युग्मं च देशिकैः । दशाक्षरा-समा नास्ति विद्या त्रि-भुवनेश्वरी—ॐ महिष-मर्दिनि स्वाहा ह्रीं

(२) प्रणवं च तथा माया भवेद् विद्या पुनर्दश—ॐ ह्रीं महिष-मर्दिनि स्वाहा

(३) कामं प्रणवमित्युक्तं भवेद् विद्या पुनर्दश—क्लीं ॐ महिष-मर्दिनि स्वाहा

'हिन्दी-तन्त्रसार' पृष्ठ ११८ में बाद के दोनों दशाक्षर मन्त्र नहीं दिए हैं। उनके स्थान पर निम्न दूसरा मन्त्र है—'क्लीं महिष-मर्दिनि स्वाहा ॐ।' ऋष्यादि दुर्गा अष्टाक्षर-मन्त्र के समान बताए हैं। 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ ३२।

'शारदातिलक' और 'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' में अष्टाक्षर-मन्त्र का उद्धार ऊपर जैसा ही है, केवल दो पाठान्तर हैं—(१) द्वयः : द्वयम्, (२) अष्टाक्षरी समाख्याता : अष्टाक्षरीयमाख्याता। वहाँ टीका में इस मन्त्र का एक अन्य उद्धार 'नारायणीय' के अनुसार दिया है—'विषं हि मज्जा कालोऽग्निरत्रिरिकयो नि ठ-द्वयम्।' ऋषि शाकवत्स या मार्कण्डेय, छन्द प्रकृति, बीज 'म', शक्ति 'स्वाहा' बताए हैं। ध्यान में एक पाठान्तर है—शङ्ख-चक्र : चक्र-शङ्ख। षडङ्ग-न्यास के मन्त्रों में 'हूं' के स्थान पर 'हुं' का निर्देश मिलता है।

'मन्त्र-महार्णव' में 'शारदातिलक' के आधार पर अष्टाक्षर मन्त्र दिया है। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता महिषमर्दिनी। वहीं 'विश्वसार' तन्त्र का भी उद्धार उद्धृत है, जो ऊपर दिए नवाक्षर के उद्धार जैसा ही लगभग है, यथा—*प्रणवाद्यां जपेद् विद्यां, मायाद्यां वा जपेत् सुधीः, वधू-बीजादिकं वापि* कवचाद्या जपेत् तथा। सर्व ''सुधीः, वाग्भवाद्या ''वाक्य-विशुद्धये। इति नवाक्षरो मन्त्रः। विना बीजैर्महा-विद्या'''मुखे युग्मक-देशके। दशाक्षरी ''प्रणवमित्युक्ता भवेद्...दश।

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'महिष-मर्दिनीत्युक्त्वा स्वाहान्तोऽष्टाक्षरो मनुः'। ऋषि मार्कण्डेय, छन्द गायत्री, देवता 'सुरासुर-नुता देवी महिष-मर्दिनी'। ध्यान—

गारुडोपल-दीप्तिं च मणि-मौलिक-कुण्डलां, तिष्ठन्तीं माहिषे शीर्षे नौमि माल-विलोचनाम्।
चक्रं शङ्खं कृपाणं च बाणं शूलं च तर्जनीं, कार्मुकं खेटकं हस्तैर्बिभ्रतीं शशि-शेखराम्।
जटा-मुकुट-शोभाढ्यां सर्वाभरण-भूषितां, पीताम्बर-धरां देवीं पीनोन्नत-कुच-द्वयाम्॥

३ जय-दुर्गा : १ दशाक्षर—तारो दुर्गे-युगं रेफमन्त्यो ढान्तं स-लोचनं, द्वि-ठान्ता जय-दुर्गेयं विद्या वेद्या दशाक्षरी—ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२१ । ऋष्यादि दुर्गा-अष्टाक्षर - मन्त्र के समान । 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ ३२ ।

'शारदा-तिलक' के उद्धार में एक पाठान्तर है—'रेफमन्त्यो : रक्तमन्त्यं', किन्तु 'रक्त' का अर्थ 'रेफ' ही होता है । वहाँ इस मन्त्र के ऋषि मार्कण्डेय, छन्द वृहती, वीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा' वताए हैं । 'मन्त्र-मंजूषा' के उद्धार में 'विद्या वेद्या' के स्थान पर है 'सिद्धिदा हि' । ध्यान में एक पाठान्तर है—शङ्खं चक्रं : चक्रं शङ्खं ।

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'तारो दुर्गे-द्वयं प्रोच्य रक्षिणीत्यग्नि-गेहिनी, दशाक्षरो मनुः प्रोक्तो भजतामिष्ट-सिद्धिदः ।' ऋषि नारद, छन्द विराट्, देवता जय-दुर्गा । ध्यान—

मेघ-श्यामां ग्लौ-किरीटां त्रि-नेत्रां सिंह-वाहिनीं, चक्रं दरं खड्ग-शूलौ बाहुभिर्बिभ्रतीं भजे ।

२ द्वादशाक्षर : यदा घोर-स्थले पतेत्, ऋणं वा जायते, तारान्नम उक्त्वा च पूर्व-वत् । द्वादशार्णो भवेन्मन्त्रः संग्राम-विजय-प्रदः—**ॐ नमः दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र' । ऋष्यादि और ध्यान-पूजादि वही ।

४ शूलिनी : १ पञ्च-दशाक्षर—ज्वल-ज्वल पदस्यान्ते शूलिनीति पदं ततः, दुष्ट-ग्रह-हुमस्त्रान्ते वह्नि-जायावधिर्मनुः—**ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्ट-ग्रह हुं फट् स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२२ । ऋषि दीर्घ-तपस्, छन्द ककुप्, देवता शूलिनी । 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ ३३ ।

'शारदा-तिलक' के उद्धार में दो पाठान्तर है—(१) ततः : वदेत्, (२) ग्रह : ग्रहं । इससे मन्त्र में 'दुष्ट-ग्रह' के स्थान पर 'दुष्ट ग्रहं' का निर्देश ज्ञात होता है, जो अधिक उपयुक्त है । वहाँ इस मन्त्र के ऋषि 'दीर्घ-तमाः' वीज 'हुं', शक्ति 'स्वाहा' और विनियोग 'ग्रह-क्षुद्रा-नाशार्थं' वताए है । ध्यान में दो पाठान्तर हैं—(१) कृपाणं त्वरि : कृपाणमरि, (२) रसिना : रभितः ।

'प्रपञ्चसार तन्त्र' में उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है—'छान्तं मरुत्तरिय-वर्ण-युतं स-वाद्यं, संवीप्स्य शूलिनि-पदं च स-दुष्ट-शब्दम् । पञ्चान्तकं स-दहनं परिभाष्य हान्तं, हूं फट् द्वि-ठान्तमिति शूलिनि-मन्त्रमेव ।' ऋषि 'दीर्घ-तपाः', शेष वही । ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

बिभ्राणा शूल - बाणास्यरि- स-दर - गदा - चाप-पाशान् कराब्जैः,
मेघ-श्यामा किरीटोल्लसित - शशि - कला भीषणा भूषणाढ्या ।
सिंह - स्कन्धाधिरूढ़ा चतसृभिरसि - खेटान्विताभिः परीता,
कन्याभिर्भिन्न - दैत्या भवतु भय - विध्वंसिनी शूलिनी वः ॥

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'ज्वल-द्वयं शूलिनीति वदेद् दुष्ट-ग्रहे ततः, हुं फट् स्वाहेति मन्त्रोऽयं तिथि-वर्णः प्रकीर्तितः ।' इस उद्धार के अनुसार मूल-मन्त्र का एक महत्वपूर्ण पाठान्तर ज्ञात होता है—'दुष्ट-ग्रह : दुष्ट-ग्रहे ।' ऋषि दीर्घ-तमा, छन्द ककुब्, देवता शूलिनी महा-दुर्गा । ध्यान—

गदां दरमरिं खड्ग-बाणाञ्छूलं च खेटकं, करालिकां पाश - धनुर्दिग्भिर्हस्तैश्च बिभ्रतीम् ।
मेघाभामिन्दु-मुकुटां सिंहारूढां चतसृभिः, कन्यकाभिः परिवृतां त्र्यक्षां भूषण - भूषिताम् ॥

'मन्त्र-महार्णव' में 'शारदातिलक' के आधार पर मन्त्र देने का उल्लेख है किन्तु मन्त्र के 'दुष्ट-ग्रहं' के स्थान पर 'दुष्ट-ग्रहान्' दिया गया है । ऋषि दीर्घतम, छन्द ककुप् और देवता 'शूलनी दुर्गा' वताए हैं । ध्यान में दो पाठान्तर हैं—हस्त-पद्मैः : पद्म-हस्तैः, कृपाणं त्वगि : कृपाणमरि । ध्यान मे दो अशुद्धियाँ स्पष्ट हैं—'मत्खेटकं' और 'भ्रनिभट' ।

२ अष्ट-दशाक्षर : ज्वल-ज्वल-पदान्ते शूलिनि-द्वितयं दुष्ट-ग्रह हुमस्त्रान्ते वह्नि-जाया—ज्वल-ज्वल शूलिनि शूलिनि दुष्ट-ग्रह हुं फट् स्वाहा

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा'। ऋषि दीर्घतमाः, छन्द ककुप्, देवता शूलिनि। पञ्चाङ्ग-न्यास के मन्त्र—(१) दुर्गे,(२) वरदे, (३) विन्ध्य-वासिनि, (४) असुर - मर्दिनि युद्ध-प्रिये त्रासय त्रासय, (५) देवि सिद्धि-पूजिते नन्दिनि रक्ष महा-योगेश्वरि। इन मन्त्रों के आदि में 'शूलिनि' और अन्त में 'हुं फट्' जोड़ ले। नेत्रों में न्यास-विधि नहीं है। ध्यान पञ्च-दशाक्षर मन्त्र के समान। पुरश्चरण में १८ लाख जपकर १८ सहस्र होम मधुराक्त तिलों से करे, तो सर्वाभीष्ट-सिद्धि।

५ वन-दुर्गा : सप्त-त्रिंशदक्षर : उत्तिष्ठ-पदमाभाष्य पुरुषि स्यात् पदं ततः, पितामहः स-नेत्रेन्दुः स्वपिषि स्याद् भयं च मे। समुपस्थितमुच्चार्य यदि शक्यमनन्तरं, अशक्य वा पुनस्तन्मे वदेद् भगवति ततः। शमयाऽग्नि-वधूः सप्त-त्रिंशद्-वर्णात्मको मनुः—उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा

'शारदा-तिलक'। 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ ३४। ऋषि आरण्यक, छन्द अनुष्टुप्, देवता सर्व-दुर्गति-मोचनी वनदुर्गा, बीज 'दुं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'सर्व-दुर्गति-मोचनार्थे'। मन्त्र के ६, ४, ८, ८, ६, ५ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में चार लाख जप कर पायस, शालि, घृत और तिल से होम।

'मन्त्र-रत्न-मंजूषा' में उद्धार—'उत्तिष्ठ-पद पश्चात् पुरुषि किं ततः स्वपिषि भयं मे समुपस्थित-मुच्चार्य यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय ठ-द्वयं निगदितो मन्त्रः सप्त-त्रिंशदक्षरः।'

'प्रपञ्चसार तन्त्र' में उद्धार भिन्न दिया है—'उत्तिष्ठ-पदं प्रथम पुरुषि ततः किं-पदं स्वपिषि-युत, भयमपि मेऽन्ते समुपस्थितमित्युच्चार्य यदि-पदं प्रवदेत्। शक्यमशक्य वोक्त्वा तन्मे भगवति निगद्य शमय-पदं। प्रोक्त्वा ठ-द्वितय-युतं सप्त-त्रिंशाक्षरो मनुः प्रोक्तः।'

ऋष्यादि 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु' के समान हैं किन्तु ध्यान भिन्न दिया है। यथा—

हेम - प्रख्यामिन्दु - खण्डात्त-मौलिं, शङ्खारीष्टाभीति - हस्तां त्रि-नेत्राम्।
हेमाब्जस्थां पीत - वस्त्रां प्रसन्नां, देवीं दुर्गां दिव्य-रूपां नमामि ॥ १ ॥
अरि-शङ्ख - कृपाण - खेट-बाणान्, स-धनुः - शूलक - तर्जनीर्दधाना।
भवतां महिषोत्तमाङ्ग - संस्था, नव - दूर्वा - सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥ २ ॥
चक्र-दर - खड्ग - खेटक - शर - कार्मुक - शूल - संज्ञक - कपालैः,
ऋष्टि - मुसल-कुन्त - नन्दक - वलय - गदा - भिन्दिपाल - शक्त्याख्यैः।
उद्यद् - विकृति - भुजाढ्या माहिषके सजल - जलद - सङ्काशा,
सिंहस्था याऽग्नि - निभा पायस्था याय मरकत - श्यामा ॥ ३ ॥
व्याघ्र - त्वक् - परिधाना सर्वाभरणान्विता त्रि - नेत्रा च,
अहि - कलित - नील - कुन्तल - विलसत् - किरीट - शशि-शकला।
सर्प - मय - वलय - नूपुर - काञ्ची - केयूर - हार - सम्भिन्ना,
सुर - दिति जाभय - भयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोग - विधौ ॥ ४ ॥

पहला ध्यान साधना करते समय, दूसरा ध्यान रक्षा हेतु, तीसरा ध्यान संघर्ष, मारण आदि में और चौथा ध्यान प्रयोग-विधि में प्रशस्त है।

६ जगद्धात्री दुर्गा : १ एकाक्षर—थान्त-वीजं समुद्धृत्य वाम-कर्ण-विभूषितं, इन्दु-विन्दु-समायुक्तं वीजं परम-दुर्लभं—**दुं**

२ त्र्यक्षर—(१) लज्जाद्यां वा जपेद् विद्यां फडन्तां सुधीः—**ह्रीं दुं फट्**

(२) लक्ष्म्याद्यां वा जपेद् वन्द्या चतुर्वर्ग-फलाप्तये—**श्रीं दुं फट्**

(३) वाग्भवाद्यां जपेद् विद्यां—**ऐं दुं फट्**

(४) प्रणवाद्यां जपेत् पुनः—**ॐ दुं फट्**

(५) काम-वीजादिकां वापि फडन्तां जपेत् सुधीः—**क्लीं दुं फट्**

३ चतुरक्षर (१) विविधा सा महा-विद्या तच्छृणुष्व गणेश्वरि, कूर्चाद्यां वा जपेद् विद्यां तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—**हूं दुं स्वाहा**

(२) वधू-वीज-युतां वापि स्वाहान्तां जपेत् पुनः—**स्त्री दुं स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', तृतीय परिच्छेद। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता जगद्धात्री दुर्गा देवी। 'दां, दीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान अष्टाक्षर-दुर्गा (पृष्ठ ६३ 'सिंह-स्कन्ध०' इत्यादि) के समान, जिसमें तीन पाठान्तर हैं—१ स्कन्ध-समारूढां : स्कन्धाधिरूढां तु, २ भव-गेहिनी : भव-सुन्दरी, ३ सु-वेशिनीं : मृणालिनी।

७ अश्वारूढा : १ दशाक्षर : अथातः प्रवक्ष्यामि ह्यश्वारूढा महा-मनुं, तारमुक्त्वा तथा चैहि परमेश्वर्यग्नि-गेहिनीम्—**ॐ एहि परमेश्वरि स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट्, देवता अश्वारूढा। मन्त्र के तीन पदों के आदि में 'ॐ' लगाकर दो बार प्रयोग करने से षडङ्ग-न्यास होता है। ध्यान—

अश्वारूढां चन्द्र-मालां त्र्यक्षां पाशेन साध्यकं, वध्वानयन्तीं वामेन दक्षे कनक-वेत्रिकाम्।

पुरश्चरण में अयुत जप कर घृत से दशांश होम।

२ एकादशाक्षर : तारादिरथ मायादिरयमेकादशार्णकः—**ॐ ह्रीं एहि परमेश्वरि स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि आदि वही। 'ह्रां, ह्रीं' आदि से षडङ्ग-न्यास।

३ त्रयोदशाक्षर : पाशांकुश-युता शक्तिर्झिण्टीशो गगनं स-दृक्, परमेश्वरि-शब्दान्ते द्वि-ठान्तः प्रणवादिकः—**ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा**

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा'। 'शारदा-तिलक' मे मन्त्रोद्धार मे 'युता' के स्थान पर 'पुटा' है और अन्तिम चरण भी दिया है—'अश्वारूढा-मनुः प्रोक्तस्त्रयो-दशभिरक्षरैः।' ऋष्यादि का उल्लेख नही है, 'मेरु-तन्त्रोक्त' दशाक्षर-मन्त्र के ऋष्यादि मान्य हो सकते हैं। मन्त्र के २, १, १, २, ५, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रक्तामश्वाधिरूढां शशि-धर-शकलाबद्ध-मौलिं त्रि-नेत्राम्।
पाशेनाबध्य साध्यां स्मर-शर-विवशां दक्षिणेनानयन्तीम्।
हस्तेनान्येन वेत्रं वर-कनक-मयं धारयन्तीं मनोज्ञाम्,
देवीं ध्यायेदजस्रं कुच-भर-नमितां दिव्य-हाराभिरामाम्॥

पुरश्चरण में पांच लाख जप, घृत से दशांश होम।

'प्रपञ्च-सार तन्त्र' में उद्धार—'योनिर्वियत् स-नेत्रं परमे-वर्णास्तथाऽस्थिगं मेदः, रक्तस्थ-दृग-द्वि-ठान्तस्ताराद्योऽयं मनुर्दशार्ण-युतः।' मन्त्र वही है।' ध्यान भिन्न दिया है—

अश्वारूढा कराग्रे नव-कनक-मयीं वेत्र - यष्टिं दधाना,
दक्षेऽन्येनानयन्ती स्फुरित-तनु-लता पाश-बद्धां स्व-साध्याम्।
देवी नित्यं प्रसन्ना नव-शश-धर-बिम्बा त्रि-नेत्राभिरामा,
दद्यादाद्याऽनवद्यां प्रवर-फल-सुख-प्राप्ति-हृद्यां श्रियं वः ।।

पुरश्चरण में अयुत जप और घृत से एक सहस्र होम ।

४ चतुर्दशाक्षर : ॐ ॐ ह्रीं क्रों पूर्वकोऽयं प्रोक्तो विश्व - मितार्णकः—ॐ ॐ ह्रीं क्रों ॐ एहि परमेश्वरि स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि आदि वही। मन्त्र के २, १, १, ३, ५, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में पाँच लाख जप।

५ एक-विंशाक्षर : ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्येहि सवदेत्, परमे-पदमुच्चार्येश्वरि स्वाहान्तको मनुः। तारादिरेक-विंशार्णोऽश्वारूढा - वत् पर मतम्—ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि एहि परमेश्वरि स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ध्यान—

वृषारूढां भाल-चन्द्रां त्रिनेत्रां शशि-सन्निभां। दधतीं शूल-डमरु महाहि-वलया भजे ।।

पुरश्चरण में २१ लाख जपकर घृताक्त बिल्व-पत्रों से दशांश होम।

८ कात्यायनी (१) अष्टाक्षर : ह्रीं श्रीं कात्यायन्यै स्वाहा

(२) दशाक्षर : ऐं ह्रीं श्रीं चौं चण्डिकायै नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', तृतीय परिच्छेद। दोनों मन्त्रों के ऋषि कपिल, छन्द गायत्री, देवता कात्यायनी चण्डिका देवी। मूल बीज से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

सव्य-पाद- सरोजेनालंकृतोरु - मृगाधिपां, वाम-पादाग्र-दलित - महिषासुर-निर्भराम् ।
सु-प्रसन्नां सु-वदनां चारु-नेत्र-त्रयान्वितां, हार-नूपुर - केयूर - जटा-मुकुट मण्डिताम् ।
विचित्र-पट्ट-वसनामर्द्ध - चन्द्र-विभूषितां, खड्ग-खेटक-वज्राणि त्रिशूलं विशिखं तथा ।
धारयन्तीं धनुः पाशं शङ्खं घण्टां सरोरुहं, बाहुभिर्ललितैर्देवीं कोटि-चन्द्र-सम-प्रभाम् ।
समावृतां दिविषदैर्देवैराकाश - संस्थितैः, स्तूयमानां मोदमानैर्लोक-पालादिभिः सदा ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर दस सहस्र घृत से होम।

'कात्यायनी' के विषय में 'श्रीदुर्गा - कल्पतरु', पृष्ठ १६, ३७-३८ और 'साधना-रहस्य', पृष्ठ १०२, १०३, १०८ द्रष्टव्य हैं।

पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर घृत से दशांश होम ।

१० ज्वाला-मुखी (ज्वाला-मालिनी) : १ सप्ताक्षर : रुद्राङ्गनाऽग्नि-जायाभ्यां रुद्ध्वा ज्वाला-मुखीत्यपि—**ह्रीं ज्वालामुखि स्वाहा** 'हिन्दी प्राण-तोषिणी तन्त्र', भाग २, पृष्ठ ६८

२ चतुर्विंशत्यक्षर : नमो भगवतीत्युक्त्वा ज्वाला-मालिन्यतः पर, गृध्र-गण-परवृते द्वि-ठस्तारा-दिरीरितः—**ॐ नमो भगवति ज्वाला-मालिनि गृध्र-गण-परिवृते हुं स्वाहा फट्**

'हिन्दी प्राण-तोषिणी तन्त्र', भाग २, पृष्ठ ६८। 'मन्त्र-कोष' मे यही मन्त्र है किन्तु 'हुं स्वाहा फट्' के स्थान पर 'हु फट् स्वाहा' दिया है। 'हिन्दी तन्त्रसार' के तृतीय परिच्छेद मे 'मन्त्रकोष' मे उद्धृत मन्त्र के ३, ४, ५, ८, २, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास की विधि दी है और यह लिखा है कि बिना भोजन किए प्रतिदिन नियमित रूप से २३ दिनो तक ८ हजार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होकर सर्वत्र विजय प्रदान करता है और शत्रुओ का नाश होता है।

३ अष्ट-चत्वारिंशदक्षर : तारो नमो भगवति ज्वाला - मालिनि तत्-परं,।देव्यन्ते सर्व-भूतान्ते संहारान्ते तु कारिके। जात-वेदसि-वर्णान्ते ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति च, ज्वल-द्वय प्रज्वलान्ते कवचं पावक-द्वयं, वर्मास्त्रान्तोदिता ज्वाला-मालिन्यष्ट-युगाक्षरा—**ॐ नमो भगवति ज्वाला-मालिनि देवि सर्व-भूत-संहार-कारिके जात-वेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्** *'मन्त्र-महोदधि'* ।

४ एकाशीत्यक्षर : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेश्वरि, ज्वाला-मुखि, जृम्भिणि, स्तम्भिनि, मोहिनि, वशीकरिणि, पर-धन-मोहिनि, सर्वारिष्ट-निवारिणि, शत्रु-गण-संहारिणि, सु-बुद्धि-दायिनि ! ॐ आं क्रों ह्रीं त्राहि त्राहि, क्षोभय क्षोभय अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६६०, प्राकृत ग्रन्थ से। वहाँ लिखा है कि यह १८३ अक्षरो का मन्त्र है, किन्तु वास्तव मे केवल ८१ अक्षरो का ही है। इस मन्त्र की विधि यह है कि दीपावली के रात्रि से नित्य ११००० जप २१ दिन तक करे। चमेली का पुष्प अर्पित करे और बरफी, हिंगुल आदि का नैवेद्य दे, तो अभीष्ट-सिद्धि होती है।

[२] चण्डी (चण्डिका, चामुण्डा)

१ नवार्ण : अथ नवाक्षरं मन्त्र वक्ष्ये चण्डी-प्रवृत्तये। वाङ्-माया मदनो दीर्घा लक्ष्मीस्तन्द्री श्रुतीन्दु-युक्, डायै सद्‌ग्-जल कूर्म-द्वय झिण्टीश-सयुतं—**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**

'मन्त्र-महोदधि'। ऋषि ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर, छन्द गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप्, देवता महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती, शक्ति नन्दा-शाकम्भरी-भीमा, बीज रक्तदन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी, तत्व अग्नि-वायु-सूर्य, फल वेद-त्रय का सार, विनियोग 'सर्वाभीष्ट-सिद्धि'। 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ २८-३० एवं पृष्ठ ५२-६१। 'विशुद्ध चण्डी', पृष्ठ ४३-४४। 'नवरात्र-कल्पतरु', पृष्ठ ६५-७२।

'मन्त्र-महार्णव' मे उद्धार—'ऐं बीजमादौन्दु-समीन-दीप्ति, ह्रीं सूर्य-तेजो - द्युतिमद्वितीय। क्लीं मूर्ति-वैश्वानर-तुल्य-रूप, तृतीयमानन्त्य-सुखाय चिन्त्य। विशुद्ध-जाम्बू-नद-कान्ति तुर्यम्। 'मु' पञ्चम रक्त-तरं प्रकल्प्य। 'डा'-षष्ठमुग्रार्ति-हरं सुनील, 'यै' सप्तमं कृष्ण-तर रिपु। 'विघ्न 'पाण्डुरं चाष्टममादि-सिद्धि, 'च्चे' धूम्र-वर्ण नवम विशालम्। एतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रदद्यु, सकलार्थ-सिद्धिम्।' उद्धार मे प्रणव का उल्लेख नही है, किन्तु स्पष्ट मन्त्र को ॐ-सहित दिया गया है, जिससे यह नवाक्षर न होकर दशाक्षर हो जाता है। शक्ति मे 'नंदा' के स्थान पर 'नन्दजा' और बीज के बाद 'ह्रीं' कीलक का उल्लेख है। फल का उल्लेख नहीं है। विनियोग 'कार्य-निर्देशे' दिया है।

प्रकटित-दंष्टोग्र-वदने घोरानन-नयने ज्वलज्ज्वाला-सहस्र-परिवृते महाट्टहास-धवली-कृत-दिगन्तरे सर्व-युग-परिपूर्ण कपाल-हस्ते गजाजिनोत्तरीय - भूत-वेताल-परिवृते अकम्पित-धराधरे मधु-कैटभ-महिषासुर-धूम्र-लोचन-चण्ड-मुण्ड-रक्तबीज-शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-निकृन्ते काल-रात्रि महा-माये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयि याम्ये नैर्ऋति वारुणि वायवि कौबेरि ऐशानि ब्रह्म-विष्णु-शिव-स्थिते त्रिभुवन-धराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्र-विष-महा-विषोरग-फणा-मणि-मुकुट-रत्न-महा-ज्वालामल -.मणि-महाहि-हार-बाहु - कहोत्तमाङ्ग-नव-रत्न-निधि-कोटि-तत्व-बाहु-जिह्वा-वाणी-शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धात्मिके क्षिति-साहस - मध्य-स्थिते महोज्ज्वल-महा-विषोप-गन्धर्व-विद्याधराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकारा हस्ते ॐ आं ह्रीं क्रीं अनग्ने नग्ने पाते प्रवेशय प्रवेशय, ॐ द्रां द्रीं शोषय शोषय, द्रां द्रीं मोहय मोहय, ॐ क्लां क्लीं दीपय दीपय, ॐ ब्लूं ब्लूं सन्तापय सन्तापय, ॐ सौं सौं उन्मादय उन्मादय, ॐ म्लें म्लें मोहय मोहय, ॐ खां खां शोधय शोधय, ॐ द्यां द्यां उन्मादय उन्मादय, ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय आवेशय, ॐ स्त्रीं स्त्रीं उच्छादय उच्छादय, ॐ स्त्रीं स्त्री आकर्षय आकर्षय, ॐ हुं हुं आस्फोटय आस्फोटय, ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय त्रोटय, ॐ छ्रां छ्रां छेदय छेदय, ॐ क्रूं क्रूं उच्चाटय उच्चाटय, ॐ हूं हूं हन हन, ॐ ह्लां ह्लां मारय मारय, ॐ घ्नीं घ्नीं घर्षय घर्षय, ॐ स्त्रीं स्त्रीं विध्वंसय विध्वंसय, ॐ प्लूं प्लूं प्लावय प्लावय, ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय भ्रामय, ॐ त्रां त्रां दर्शय दर्शय, ॐ दां दां दिशां बन्धय बन्धय, ॐ दीं दीं वर्तितामेकाग्र-चित्ताविशि कुरु तेऽङ्गये, ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः, ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः, ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकल-मनोरथं देहि, सर्वोप-द्रवं निवारय निवारय अमुकं वशं कुरु कुरु, भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मपिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्व-श्वापद-तस्करादिकं नाशय नाशय, मारय मारय, भञ्जय भञ्जय, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ।

'मन्त्र-महार्णव' में 'अथर्वणागम-संहिता' से । ऋषि मार्कण्डेय, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्री चण्डिका, बीज ॐ ह्लः, शक्ति ॐ सौं, कीलक ॐ, विनियोग 'श्री चण्डिका-प्रसाद - सिद्ध्यर्थं सकल - जन-वश्यार्थं' । षडङ्ग-न्यास 'ॐ ह्लां फां, ॐ ह्लीं फीं' इत्यादि से । ध्यान—

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थ-शुभदां गौरीं घन-श्यामलामाविर्भावित - भूषणाममदाय-आर्द्रक - रक्षैः शुभैः ।
ध्रौंध्रौंक्लीं-वर-मन्त्र-राज-सहितामानन्द-पूर्णात्मिकां, ध्रौंसले भ्रमराम्बिकां शिव-युतां चिन्मात्र-मूर्तिं भजे ।।

पुरश्चरण में प्रतिदिन १२१ बार जप ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६१-६२ । वहाँ मन्त्र में 'ह्लां ह्लां' के स्थान पर 'ह्लां ह्लां', 'घ्नीं घ्नीं' के स्थान पर 'घ्रीं घ्रीं' और 'भ्रामय' के स्थान पर 'भ्रामय' छपा है, जो अशुद्ध है ।

[२] शक्ति

अष्टाक्षर : आं श्री ह्री क्ली क्ली च ह्री च श्रीममष्टाक्षरो मनुः—आं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्रं 'मेरु-मन्त्र' । ऋषि अज, छन्द गायत्री, देवता शक्ति, विनियोग 'स्त्री-वश्याकर्षणादौ' । 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

आनन्द-रूपिणीं देवीं पाशांकुश-धनु-शरान् । बिभ्रतीं दोर्भिररुण-कुचाढ्यां हृदि भावयेत् ।।

पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर घृताक्त तिलों से दशांश होम ।

[४] रुद्र-चण्डी

नवाक्षर : प्रणवो वाग्भवो माया ततः सद्यः सनातनी, स्थिरा माया ततः कामो लज्जा-युग्मं ततः परम् । एष नवाक्षरो मन्त्रः सर्वाशा-परिपूरकः—ॐ ऐं ह्रीं ॐ श्रीं ह्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं

'श्रीरुद्र-चण्डी' मे त्रैलोक्य-विजय-कवच अन्तर्गत । ऋषि श्री रुद्र, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीरुद्र-चण्डी, बीज 'ह्रीं', विनियोग चतुर्वर्ग-साधन । 'ह्रां ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

ॐ रक्त-वर्णां महा-देवीं लसच्चन्द्र-विभूषितां, पट्ट-वस्त्र-परीधानां स्वर्णालङ्कार-भूषिताम् ।
वराभय-करां देवीं मुण्ड-माला-विभूषितां, कोटि-चन्द्र-समासीनां वदनैः शोभितां पराम् ।
कराल-वदनां देवीं किञ्चिज्जिह्वां च लोलितां, स्वर्ण-वर्ण-महादेव-हृदयोपरि-संस्थिताम् ।
अक्ष-माला-धरां देवीं जप-कर्म-समाहितां, वाञ्छितार्थ-प्रदायिनीं रुद्र-चण्डीमहं भजे ।।

[५] महा-माया वैष्णवी

१ षडक्षर : (१) ॐ नमोऽन्ते च वैष्णव्यै मन्त्रः प्रोक्तः षडक्षरः—ॐ नमः वैष्णव्यै

'मेरु-तन्त्र' । ऋष्यादि सभी विधान अष्टाक्षर-१ मन्त्र के समान ।

(२) ॐ वैष्णव्यै नमः 'कालिका पुराण', अध्याय ५२

२ अष्टाक्षर : (१) अकचटतपयशैर्वैष्णव्या मन्त्र ईरितः अष्टाक्षरः—अं कं चं टं तं पं यं शं

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि नारद, छन्द अनुष्टुप्, देवता महा-माया वैष्णवी । प्रणव-सहित मन्त्र के तीन-तीन अक्षरों से क्रमशः षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

शोण-पद्म-प्रतीकाशां मुक्त-मूर्द्धज-लम्बिनीं, लसत्-काञ्चन-सम्भूत-कुण्डलोज्ज्वल-शालिनीम् ।
स्वर्ण-रत्न-समुन्नद्ध-किरीट - सूत्र-धारिणीं, कृष्ण - शुक्लारुणैर्नेत्रैस्त्रिभिश्चापि विभूषिताम् ।
बन्धूक-दन्त-रसना - शिरीष-सम-नासिकां, कम्बु-ग्रीवां विशालाक्षीं सूर्य-कोटि-सम-प्रभाम् ।
चतुर्भुजां विवसनां पीनोन्नत-पयोधरां, दक्षिणाभ्यां कराभ्यां तु खड्गं च जप-मालिकाम् ।
बिभ्रतीं वाम-हस्ताभ्यां त्वभयं च वरं तथा, अनल्प-नाग-नासोरुं गुप्त-गुल्फां सुपल्लिकाम् ।
गात्रेण रत्न-स्तम्भं च सम्यगालम्ब्य संस्थितां, किमिच्छसीति वचनं व्याहरन्तीं मुहुर्मुहुः ।
पञ्चाननं पुरः संस्थं निरीक्षन्तीं स्व-वाहनं, ईदृशीं चण्डिकां ध्यात्वा नमः फडिति मस्तके ।
स्व-बीजे सुमनो दद्यात् साऽहमेव विचिन्तयेत्, पञ्चाननं मण्डलस्थं मध्ये सर्वं प्रपूजयेत् ।।

'चण्डिका गायत्री' (पृ० १०७, क्रमाङ्क ४) मन्त्र से आवाहन कर पञ्चोपचारों से पूजन करे । पुरश्चरण में दो लाख जप कर घृत से दशांश होम आदि करे ।

'कालिका पुराण', अध्याय ५२ में उद्धार—'हान्तान्त-पूर्वो (ष) रान्तश्च (य) नान्तो (प) णान्तस्तथैव (त) च, कैकादशाष्टादि षष्ठः (ट, च) खान्तो (क) विष्णु-पुरस्सर' (अ) । एभिरष्टाक्षरैर्मन्त्रं शोण-पत्र-सम-प्रभं, ॐकारं पूर्वतः कृत्वा जप्यं सर्वैस्तु साधकैः ।' इस उद्धार की विशेषता यह है कि इसमें उक्त मन्त्र के अक्षरों को विपरीत क्रम से उद्घाटित किया गया है। एक पाठान्तर भी है—रान्त : मान्त, किन्तु दोनो से ही 'य' का आशय है ।

दूसरी विशेषता यह है कि अष्टाक्षर मन्त्र के पूर्व 'ॐ' लगाने का निर्देश है । इस प्रकार यह नवार्ण मन्त्र बन जाता है—ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं । एक मत से अन्त में भी 'ॐ' लगाना चाहिये । वैसा करने से दशाक्षर-मन्त्र बन जायगा—ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ॐ ।

ऋष्यादि में देवता 'शम्भु' बताया है, जो भ्रामक है। वहाँ इस मन्त्र का बीज ॐ, शक्ति 'यं' और विनियोग 'सर्वार्थ-साधने' निर्दिष्ट किया है।

परम पूज्य श्री स्वामी हिमालय अरण्य के अनुसार उक्त मन्त्र का षडङ्ग-न्यास 'ॐ आं, ॐ ईं, ॐ ऊं, ॐ ऐं, ॐ औं, ॐ अः' से कर मन्त्राक्षरों से अष्टाङ्ग-न्यास करे—ॐ अं नमः नेत्रयोः। ॐ कं नमः पृष्ठे। ॐ चं नमः उदरे। ॐ टं नमः बाहु-युगले। ॐ तं नमः हस्त-द्वये। ॐ पं नमः पादयोः। ॐ यं नमः जंघा-युगले। ॐ षं नमः जान्वोः।

'कालिका पुराण', अध्याय ५६ में इस मन्त्र के वर्णों के अधिष्ठातृ देवताओं को स्पष्ट किया है। यथा—१ अं : वासुदेव (विष्णु), २ कं : ब्रह्मा, ३ चं : चन्द्र-शेखर (शिव), ४ टं : गणेश, ५ तं : सूर्य, ६ पं : महा-माया (दुर्गा), ७ यं : महा-लक्ष्मी, ८ षं : सरस्वती। वहीं कवच-स्तोत्र भी दिया है, जिसके विनियोग मे देवता का नाम 'कात्यायनी' बताया है, जो सार्थक है।

'कालिका पुराण', अध्याय ५३ में ध्यान पूर्वोक्त समान ही है किन्तु निम्न पन्द्रह पाठान्तर हैं—१ लसत्-काञ्चन-सम्भूत : चलत् - काञ्चनमारुह्य, २ स्वर्ण''''धारिणी : सुवर्ण - रत्न - सम्पन्न-किरीट-द्वय-धारिणी, ३ कृष्ण-शुक्ला : शुक्ल-कृष्णा, ४ भिश्चापि : भिश्चारु, ५ 'विभूषिताम्' के बाद निम्न पंक्तियां और हैं—

सन्ध्या-चन्द्र-सम-प्रख्य-कपोलां लोल-लोचनां, विपक्व-दाडिमी-बीज-दन्ता सुभ्रू-योगोज्ज्वलाम्।

६ रसना : वसनां, ७ शिरीष-सम : शिरीष-प्रभ, ८ दक्षिणाभ्यां'''मालिकां : दक्षिणोर्ध्वेन निस्त्रिंशात्-परेण सिद्ध-सूनकम्, ९ हस्ताभ्यां ''तथा : हस्ताभ्यामभीति वरन्दायिनी (इसके बाद एक और पंक्ति है—निम्न-नाभि-क्रमायाता क्षीण - मध्यां मनोहरां), १० अनल्प-नाग - नासोरुं : आनमन्नाग-पाशोरुं, ११ सुपल्लिकां : सुपार्ष्णिकां (इसके बाद एक और पंक्ति है—बद्ध-पर्यङ्क-सङ्कल्पा निव्रीरासन-राजिता), १२ रत्न-स्तम्भ च ' दल-संस्तम्भ, १३ स्व-वाहनं : स्-वाहना। इसके बाद निम्न पंक्तिया और हैं—

मुक्तावली-स्वर्ण-रत्न-हार - कङ्कणादिभिः, सर्वैरलङ्कार-गणैरुज्ज्वला सस्मिताननाम्।
सूर्य-कोटि-प्रतीकाशां सर्व-लक्षण-संयुता, नव-यौवन-सम्पन्ना तथा सर्वाङ्ग-सुन्दरीम्।
१४ ईदृश-चण्डिका : ईदृशीमम्बिका, १५ स्व-बीजे सुमनोः स्वकीये प्रथमं।
(२) ॐ नमोऽन्ते च वैष्णव्यै मन्त्रः प्रोक्तः षडक्षरः—ॐ नमः महा-मायायै
'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि सभी विधान अष्टाक्षर मन्त्र के समान।

[६] महा-सिंह

१ द्वादशाक्षर : ह्रौं ह्रौं सिंहाय महा-बलाय ह्रौं ह्रौं 'श्री दुर्गा-कल्पतरु', पृष्ठ ४०

२ सप्त-दशाक्षर : (१) ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय सिंहाय हुं फट् नमः " "

(२) तारमुक्त्वा वज्र-नख-दंष्ट्राय च महा ततः, सिंहाय हुं फट् हृच्चेति मन्त्रः सप्त-दशाक्षर—ॐ वज्र-नख-दंष्ट्राय महा-सिंहाय हुं फट् नमः 'मेरु-तन्त्र'

(३) ॐ ह्रौं वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय फट् म० महा०, पृ० ८६, ८८

३ एकोन-विंशत्यक्षर : (१) प्रणवानन्तरं वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय च, महा-सिंहाय वर्मास्त्र नतिः सिंह-मनुर्मतः—ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नमः

'शारदा-तिलक'। 'प्रपञ्चसार तन्त्र' मे यही मन्त्र 'महा-सिंह-मन्त्र' के नाम से उल्लिखित है।

उद्धार भिन्न शब्दों में है—'तारान्ते वज्रमाभाष्य नख-दंष्ट्रायुधाय च, महा - सिंहाय चेत्युक्त्वा वर्मास्त्र-नतयः क्रमात् ।'

(२) ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहासनाय नमः — मं० महा, पृ० २२३

४ एक-विंशत्यक्षर : ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहासनाय हुं फट् नमः

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ १३६ । 'शाक्त-प्रमोद' मे यही मन्त्र है, किन्तु आदि मे 'ॐ' का उल्लेख नही है और 'हुं' के स्थान पर 'हूं' छपा है, जो अशुद्ध है ।

५ द्वा-विंशत्यक्षर : ॐ सौः वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नम स्वाहा

'साधना-रहस्य', पृष्ठ १०४-१०५ । ऋषि भगवान् त्रैलोक्य-मोहन महा-विष्णु, छन्द गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-नाना-छन्द । देवता श्रीमहा-पशुपति । बीज सौः । शक्ति स्वाहा । कीलक हुं फट् । उल्लेखनीय है कि 'साधना-रहस्य' के पृष्ठ १०४ के विनियोग मे 'हुं फट्' के बाद 'कीलक' शब्द मुद्रित नही है, जिसे वहाँ जोड लेना चाहिए । षडङ्ग- न्यास, ध्यानादि पूरी विधि वही द्रष्टव्य है ।

६ षड्-विंशदक्षर : क्ष हृं हं वज्र-देहेति क्षिं चोक्त्वाय कुरु-द्वय, गर्ज-द्वय तथा हुं हुं छां च पश्चाननाय च । नम षड्-विंशदर्णोऽयं—क्षं हृं हं वज्र-देह क्षिं कुरु कुरु, गर्ज गर्ज, हुं हुं छां पश्चाननाय नम

'मेरु-तन्त्र' । भगवती त्वरिता के पीठ-पूजन मे ।

उल्लेखनीय है कि कही भी उक्त मन्त्रो के ऋष्यादि का उल्लेख नही है । केवल 'साधना-रहस्य' मे 'महासिंह'-मन्त्र का पूरा विधान (विनियोग, ऋष्यादि, षडङ्ग-न्यास, ध्यानादि सहित) दिया गया है, जो परम पूज्य श्री स्वामी हिमालय अरण्य की कृपा से प्राप्त हुआ है । 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु' मे उल्लिखित दो मन्त्रो के साथ ध्यान और स्तुति उपलब्ध है ।

[७] गायत्री

१ दुर्गा : १ महा-देव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात् — 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१

२ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि, तन्नश्चण्डी प्र० — 'म०महा', पृष्ठ २०६

३ ॐ महा-देव्यै च (?) विद्महे दुर्गायै च (?) धीमहि, तन्नो देवि (?) प्र० — „ „ ३६

४ ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्या-कुमार्यै धीमहि, तन्नो दुर्गा प्र० — „ „ ३६

५ ॐ महा-देव्यै विद्महे दुर्गा-देव्यै धीमहि, तन्नो देवी प्र० — म० महो०, ६५६

२ जयदुर्गा : १ नारायण्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि, तन्नो गौरी प्र० — 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१

२ ॐ नारायण्यै च (?) विद्महे दुर्गायै च (?) धीमहि, तन्नो गौरी० — 'म०-महा', पृष्ठ ३६

३ ॐ नारायण्यै विद्महे दुर्गा-देव्यै धीमहि, तन्नो गौरी० — 'म० महो', पृष्ठ ६५६

३ महिष मर्दिनी : १ महिष मर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि, तन्नो घोरे प्र० — हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१

२ ॐ महिष-मर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि, तन्नो देवी प्र० — 'म० महा', पृष्ठ ३६

३ ॐ महिष-मर्दिन्यै विद्महे दुर्गा-देव्यै धीमहि, तन्नो घोरे० — 'म० महो', पृष्ठ ६५६

४ चण्डिका महा-मायायै विद्महे चण्डिकायै धीमहि, तन्नो देवी प्र० — 'मेरु-तन्त्र'

५ चामुण्डा ॐ घोर-रावायै विद्महे मुण्ड-मालिन्यै धीमहि, तन्नो चामुण्डा० — 'श्रीदुर्गा-कल्पतरु', पृ० ६१

६ शक्ति १ ॐ सर्व-सम्मोहिन्यै विद्महे विश्व-जनन्यै धीमहि, तन्नः शक्ति प्र० — 'म० महा', ३६

२ ॐ सम्मोहिन्यै विद्महे विश्व-जन्यै (? जनन्यै) धीमहि, तन्न. शक्ति प्र० — 'म० महा०', ६५६

७ रुद्र-चण्डी : ॐ रुद्र चण्डिकायै विद्महे पूर्ण फल-प्रदायिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् — श्रीरुद्र-चण्डी

दश महा-विद्यायें

'शक्ति' के दश विशिष्ट स्वरूप 'महा-विद्या' नाम से विख्यात हैं। इन महा-विद्याओं का यह विशेष महत्व है कि जब तक इनमें से किसी एक महा-विद्या के मन्त्र की दीक्षा नहीं मिलती, तब तक कोई भी वास्तविक अर्थों में 'शाक्त' नहीं माना जाता। ये महा-विद्यायें हैं—

काली तारा महा-विद्या षोडशी भुवनेश्वरी। भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥
बगला सिद्ध-विद्या च मातंगी कमलात्मिका। एता दश महा-विद्याः सर्व-तन्त्रेषु गोपिताः ॥

एक मान्यता यह भी है कि काली, तारा, षोडशी और भुवनेश्वरी ये चार 'महा-विद्यायें' हैं। भैरवी, छिन्न-मस्ता और धूमावती—ये तीन 'विद्यायें' हैं तथा बगला, मातङ्गी और कमला—ये तीन सिद्ध-विद्यायें हैं। इसके अतिरिक्त इन सबको दो कुलों में वर्णित करने की भी परम्परा है—(१) 'काली-कुल' में काली, तारा, भुवनेश्वरी और छिन्न-मस्ता, (२) 'श्री-कुल' मे षोडशी, भैरवी, बगला, कमला, धूमावती और मातङ्गी हैं। शाक्त साधक सामान्यतः उक्त दो कुलों में से किसी एक 'कुल' के अनुसार ही साधना-पथ में अग्रसर होते हैं।

उक्त दश महाविद्याओं के दांई ओर उनके शिव का पूजन करना आवश्यक है। अतः उनके नामादि यहाँ उल्लेखनीय हैं। यथा—

१ भगवती काली : महा-काल, २ भगवती तारा : अक्षोभ्य, ३ भगवती षोडशी : कामेश्वर (पञ्च-वक्त्र) या ललितेश्वर ४ भगवती भुवनेश्वरी : त्र्यम्बक या महा-देव, ५ भगवती भैरवी : दक्षिणा-मूर्ति या वटुकभैरव, ६ भगवती छिन्नमस्ता : कवन्ध या क्रोधभैरव, ७ भगवती धूमावती : विधवा-रूपिणी हैं, ८ भगवती बगला : एक-वक्त्र महा-रुद्र या मृत्युञ्जय, ९ भगवती मतङ्गी : मातङ्ग या सदा-शिव और १० भगवती कमला : सदा-शिव (विष्णु-रूप) या नारायण।

उक्त शिव-नाम 'तोडल तन्त्र' में दिये हैं। 'शक्ति-सङ्गम तन्त्र' मे कुछ नामान्तर हैं, जिन्हे अन्य नाम के रूप में ऊपर लिखा गया है। वहीं भगवती धूमावती के भी शिव का नाम 'काल-भैरव' बताया है।

महा-विद्याओं के विभिन्न शिव-स्वरूपों के मन्त्र और ध्यान सुलभ नहीं हैं। जो उपलब्ध हैं, वे यथा-स्थान प्रकाशित हैं। जिनके मन्त्र प्राप्य नहीं है, उनकी पूजा में प्रणव-सहित चतुर्थ्यन्त नाम के अन्त में 'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः' आदि जोड़कर पूजन, तर्पणादि करना चाहिये। उदाहरण के लिये भगवती दुर्गा के शिव नारद हैं, तो उनका पूजन-मन्त्र निम्न प्रकार होगा—

ॐ नारद-शिवाय नमः पूजयामि नमः; तर्पयामि नमः

'दश महा-विद्याओं' से ही भगवान् विष्णु के दस अवतार उद्भूत हुये हैं। यथा—

१ भगवती काली : श्रीकृष्ण, २ भगवती तारा : श्रीमत्स्य (नील),
३ भगवती षोडशी : श्रीपरशुराम, ४ भगवती भुवनेश्वरी : श्रीवामन,
५ भगवती भैरवी : श्रीबलराम, ६ भगवती छिन्नमस्ता : श्री नृसिंह,
७ भगवती धूमावती : श्री वराह, ८ भगवती बगला : श्रीकूर्म (कच्छप),
९ भगवती मातङ्गी : श्रीराम, १० भगवती कमला : श्रीबुद्ध

'कल्कि' अवतार भगवती दुर्गा का माना गया है।

भगवती काली

दश महा-विद्याओं में से सबसे पहला नाम भगवती काली का है, जिससे वे 'आद्या' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इनके विषय में विस्तृत विवरण 'श्रीकाली - कल्पतरु', 'श्रीकाली-स्वरूप-तत्व', 'श्रीश्यामा-सपर्या-वासना', 'श्रीकाली नित्यार्चन', 'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', 'काली-तन्त्र,' 'श्रीकाली-स्तव-मञ्जरी' आदि में उपलब्ध है।

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६६ में 'महाकाल-संहिता' के आधार पर भगवती काली के नौ स्वरूपों का उल्लेख है—१ दक्षिणा काली, २ भद्र-काली, ३ श्मशान-काली, ४ काल-काली, ५ गुह्य-काली, ६ काम-कला काली, ७ धन-काली, ८ सिद्धि-काली और ९ चण्ड-काली। वहीं पृष्ठ ६३ में आठ ही स्वरूपों का उल्लेख है—१ संहार-काली, २ दक्षिणा काली, ३ भद्र-काली, ४ गुह्य-काली, ५ महा-काली, ६ वीर-काली, ७ उग्र-काली, ८ चण्ड-काली। इनके अतिरिक्त अन्य स्वरूपों का भी विवरण विभिन्न तन्त्रों से वहाँ दिया गया है, तथापि इन सब स्वरूपों के मन्त्रों का विवरण उपलब्ध नहीं है और जिन स्वरूपों के मन्त्रादि प्राप्त भी हैं, वे किसी एक पुस्तक मे संग्रहीत नहीं हैं। इस कमी को दूर करने का प्रयत्न यहाँ किया गया है।

भगवती काली के मन्त्र

काली : १ श्यामा (दक्षिण कालिका)

१ एकाक्षर : वर्गाद्यं वह्नि-संयुक्तं रति-विन्दु-विभूषितं, एकाक्षरो महा-मन्त्रः सर्व-काम-फल-प्रदः—क्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२६। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र के समान। षडङ्ग-न्यास 'ॐ क्रां, ॐ क्रीं' इत्यादि से। ध्यान भी भिन्न है। यथा—

शवारूढां महा-भीमां घोर-दंष्ट्रां वर-प्रदाम्। इत्यादि। पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

'श्री विद्यार्णव तन्त्र' में उक्त उद्धार ही दिया है। एक पाठान्तर है—विभूषितं : समन्वितं। ('श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ९४)

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ९१ में मन्त्रोद्धार—'ब्रह्म-रेफौ वाम-नेत्रं चन्द्रारूढं मनुर्मतः, एकाक्षरो महा-काल्याः सर्व-सिद्धि-प्रदायक.।' पृष्ठ ९३ पर इस मन्त्र का छन्द 'विराट्' और देवता का नाम 'दक्षिणा कालिका' बताया है।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० में यही मन्त्र प्रणव-युक्त छपा है, जिससे यह दो अक्षरों का बन गया है, जो अशुद्ध है। यथा—ॐ क्रीं

'काली-तन्त्र' में उद्धार—कामाक्षरं वह्नि-संस्थमिन्दिरा नाद-विन्दुभिः, मन्त्र-राजमिदं ख्यातं दुर्लभं पाप-चेतसां।

'कङ्काल-मालिनी तन्त्र'—'क्रोधीशं क्षतजारूढं धूम्र-भैरव्यलक्षितं, नाद-विन्दु-समायुक्तं मन्त्रं स्वर्गेऽपि दुर्लभम्।' (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ७५)

'गुप्त-साधन-तन्त्र'—'स्वरान्तं वह्नि-संयुक्तं वाम-नेत्र-भूषितं, विन्दु-नाद-कला-युक्तं त्रैलोक्य-मोहनम्।' (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ७७)

'निरुत्तर तन्त्र'—ब्रह्मासन-युत देवि! नाद-विन्दु-समन्वितं, वाम-नेत्रार्ण-संयुक्तं चित्-स्वरूपं परापरं। एकाक्षरी सिद्ध-विद्या मन्त्र-राज्ञी कुलेश्वरी।' (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ७६)

'गुह्य-काली तन्त्र'—'चक्री त्रिमूर्ति-संयुक्तस्तथा वैश्वानरासनः, अर्द्ध-चन्द्रेण देवेशि! विन्दुनोपरि भूषितः। एकाक्षरी महा-विद्या सर्व-तन्त्रेषु दुर्लभा।'

ऋषि भैरव, छन्द गायत्री, देवता दक्षिण कालिका, वीज 'कं', शक्ति 'ई', कीलक 'र', विनियोग 'कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थं'। 'क्रां, क्रीं' इत्यादि से न्यास। ध्यान—

'वामोर्ध्वे छिन्न-मुण्डं वरमपि तदधो दक्षिणोर्ध्वे च तीक्ष्णं' इत्यादि।

पुरश्चरण मे तीन लाख जप। ('श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६४)

'महा-निर्वाण तन्त्र'—प्राणेशस्तैजसारूढो भेरुण्डा व्योम-विन्दु-वान्' (श्रीका० कल्प०, पृष्ठ ८२)

२ द्व्यक्षर : (१) कालीति द्व्यक्षरी—क्रीं क्रीं

(२) काली-पुटित कूर्चकम्—क्रीं हूं

'गुह्य-काली तन्त्र'। ऋषि भैरव, छन्द गायत्री, वीज 'क्रीं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'हूं'। (श्री-काली-कल्पतरु, पृष्ठ ६४)

३ त्र्यक्षर : (१) त्रि-मूला तु विशेषेण सर्व-शास्त्र-प्रवोधिनी—क्रीं क्रीं क्रीं

'हि० तं०', पृष्ठ ३२६। ऋष्यादि सभी विधि एकाक्षर मन्त्र के समान।

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६४ में उक्त उद्धार का पाठान्तर है—'त्रि-गुणस्तु (एकाक्षरः) विशेषेण सर्व-शास्त्र प्रवोधकः।' पृष्ठ ८२ मे इसकी पुष्टि इस वचन द्वारा की है—'आद्य-त्रयाणां (क्रीं ह्रीं क्लीं) वीजानां प्रत्येकं त्रयमेव वा, प्रजपेत् साधकाधीशः सर्व-कामार्थ-सिद्धये।'

(२) काली-वीज-द्वयं देवि! दीर्घं हूंकारमेव च, त्र्यक्षरी सा महा-विद्या चामुण्डा कालिका स्मृता—क्रीं क्रीं हूं

'हि० तं०', पृष्ठ ३२७। देवता 'चामुण्डा कालिका'।

(३) प्राणेशस्तैजसारूढो भेरुण्डा-व्योम-विन्दु-मान्, वीजमेतद् समुद्धृत्य द्वितीयमुद्धरेत् प्रिये! सन्ध्या रक्त-समारूढा वाम-नेत्रेन्दु-संयुता, तृतीयं शृणु कल्याणि! दीप-संस्थः प्रजा-पतिः, गोविन्द-विन्दु-संयुक्तः साधकानां सुखावहः—ह्रीं श्रीं क्रीं

'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २०। 'श्री काली कल्पतरु', पृष्ठ ८२ पर यही उद्धार दिया है किन्तु वहाँ 'दीप' का अर्थ 'ल' किया है, जिससे मन्त्र मे 'क्रीं' के स्थान पर 'क्लीं' होकर मन्त्रभिन्न प्रकार का बन जाता है। यथा—ह्रीं श्रीं क्लीं

(४) मूल-बीज तत. कूर्चं लज्जा बीज ततः परं, महा-विद्या महा-कालेन भापिता—क्रीं हूं ह्रीं
'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८ । ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता कालिका, शक्ति 'ह्रीं' ।
ध्यान—चतुर्भुजा कृष्ण-वर्णा मुण्ड-माला-विभूषिता । इत्यादि
पुरश्चरण मे तीन लाख जप । घृत से दशांश होम ।
'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार—'काली कूर्चं तथा लज्जा त्रि-वर्णो मनुरीरित ।' वहाँ ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत् बताए है, केवल छन्द भिन्न है—'विराट्' ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० मे यही मन्त्र 'ॐ' जोडकर चार अक्षरो का बना दिया गया है, जो अशुद्ध है ।

(५) निज-बीज समुद्धृत्य तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—क्रीं स्वाहा
'हि० त०', पृष्ठ ३३० । ऋष्यादि सभी २२ अक्षर मन्त्र-वत् ।
(६) वाग्भव-बीजमुच्चार्य काम-राजं ततः पर, माया-बीजं ततो भद्रे ! त्र्यक्षर मन्त्रमीरितं—ऐं क्लीं ह्रीं

(७) काम-राज ततो कूर्चं माया-बीजमत परं, अपरं त्र्यक्षर प्रोक्तं पूर्वोक्तं फलद प्रिये—क्लीं हूं ह्रीं

(८) हालाहल समुच्चार्य माया-द्वयमत. पर, एतत् तु त्र्यक्षर देवि ! सर्व-काम-फल-प्रद—ॐ ह्रीं ह्रीं

क्रमाक ६, ७, ८ के उद्धार 'कङ्काल-मालिनी तन्त्र' मे हैं (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ७५) ।
(९) कूर्च सम्पुटिता काली—हूं क्रीं हूं
(१०) माया-पुटिता-कालिका—ह्रीं क्रीं ह्रीं
(११) कूर्च-सम्पुटिता माया—हूं ह्रीं हूं
(१२) माया पुटित-कूर्चकम्—ह्रीं हूं ह्रीं
(१३) माया अग्नि-वल्लभा—ह्रीं स्वाहा
(१४) कूर्चं तथा वैश्वानर-प्रिया—हूं स्वाहा
'गुह्यकाली तन्त्र' । उक्त छ (९-१४) मन्त्रो के ऋष्यादि द्वयक्षर मन्त्र के समान है (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ६४) ।
(१५) आद्य-त्रयाणा बीजाना प्रत्येक त्रयमेव वा—ह्रीं ह्रीं ह्रीं
(१६) क्लीं क्लीं क्लीं

'माहा-निर्वाण तन्त्र' । उक्त १५ वें उद्धार के अनुसार तीन मन्त्र बनते हैं, जिनमे से एक क्रमाङ्क १ पर आ चुका है । शेष दो (१५-१६) यहा उद्धृत हैं । देखें 'श्रीकाली-कल्पतरु,' पृष्ठ ८२ ।

८३ पञ्चाक्षर (१) प्रजा-पति समुद्धृत्य वह्न्यारूढ ततः प्रिये ! चतुर्थ-स्वर-सयुक्त नाद-बिन्दु-विभूषित । बीज-त्रयं क्रमेणैव तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८ । ऋष्यादि त्र्यक्षर (३) वत् । पुरश्चरण मे पाँच लाख जप, घृत से दशांश होम ।

(२) निज कूर्चं तथा लज्जा तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ ३३०। ऋषि पञ्च-वक्त्र। शेष विधि २२ अक्षर मन्त्र के समान। पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

(३) हुं फडन्तश्च (त्र्यक्षर-३) पञ्चार्णः—क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६२। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्, केवल छन्द भिन्न है—'विराट्'।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० में यही मन्त्र प्रणव-सहित छापकर छः अक्षरों का बना दिया गया है, जो अशुद्ध है।

५ षडक्षर : (१) प्रणवं पूर्वमुदधृत्य हृल्लेखा-वीजमुद्धरेत्, रति-वीजं समुद्धृत्य प-पञ्चमं भगान्वितं। ठ-द्वयेन समायुक्ता विद्या-राज्ञी प्रकीर्तिता, रति-वीजं निज-वीजं व्याख्यातत्वात्—ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२७। ऋषि भैरव, छन्द विराट्, देवता सिद्ध-काली ब्रह्म-रूपा भुवनेश्वरी, वीज 'क्री', शक्ति 'ह्री'। षडङ्ग-न्यास २२ अक्षर मन्त्र-वत्। ध्यान—

खड्गोद्भिन्नेन्दु-खण्ड-स्रवदमृत-रसाप्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा। इत्यादि

पुरश्चरण में २१ सहस्र जप, शिरीष पुष्पों से दशांश होम।

'काली-तन्त्र' में मूल उद्धार ही दिया है, केवल दो पाठान्तर है—१ प्रकीर्तिता : मयोदिता, २ रति''''व्याख्यातत्वात् : अनया सदृशी विद्या कालिकायास्तु दुर्लभा। ध्यान में भी दो पाठ-भेद हैं—१ खण्ड : विम्व, २ गलदसृजमथो : गलदमृतमथो।

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ८५ में 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार उक्त मूल उद्धार ही दिया है।

(२) वीज-त्रयं समुद्धृत्य अस्त्र-मन्त्रं समुद्धरेत्, वह्नि-जायावधि प्रोक्ता त्रैलोक्य-मोहिनी—क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८। ऋष्यादि त्र्यक्षर (३) वत्। पुरश्चरण में छः लाख जप, घृत से दशांश होम।

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ८५ में उद्धार—'निज-वीज-त्रयं फट् वह्नि-वल्लभा।'

(३) वीजं दीर्घ-युतश्चक्री पिनाकी नेत्र-संयुतः, क्रोधीशो भगवान् स्वाहा षडर्णो मन्त्र ईरितः—क्रीं कालिके स्वाहा

मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ८१। ऋष्यादि २२ अक्षर-मन्त्र-वत्, केवल छन्द भिन्न है—'विराट्'।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० में यही मन्त्र प्रणव-सहित छापा है, जिससे वह सप्ताक्षर हो गया है, जो अशुद्ध है।

६ सप्ताक्षर : (१) स्वाहान्तः (पञ्चाक्षर-३) सप्त-वर्णकः—क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६२। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्, केवल छन्द भिन्न है—'विराट्'।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० में यही मन्त्र 'ॐ' जोडकर आठ अक्षरों का बना दिया गया है, जो अशुद्ध है।

(२) वीजमाद्य-त्रयं हित्वा सप्तार्णोऽपि दशाक्षरी—परमेश्वरि स्वाहा

'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २१। ध्यान दशाक्षर-४ वत्।

७ अष्टाक्षर : (१) निज-वीज-द्वयं कूर्च-युग्मं लज्जा-युगं ततः, स्वाहान्ता कथिता काली सर्व-सम्पत्-करी मता—क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० । ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत् । पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशांश होम ।

(२) निज-वीजं ततः कूर्चं ततो मायां समुद्धरेत्, पुनस्तानि समुद्धृत्य स्वाहान्ता मोक्ष-दायिनी—क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८ । ऋष्यादि त्र्यक्षर (३) वत् । पुरश्चरण में आठ लाख जप, घृत से दशांश होम । पृष्ठ ३३० पर यही मन्त्र पुनः दिया है और ऋष्यादि विधि २२ अक्षर मन्त्र-वत् बताई है ।

(३) क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८ । ऋष्यादि सभी अष्टाक्षर—२ वत् ।

(४) अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रमष्टाक्षरं पर—दक्षिणे कालिके स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋष्यादि न्यास २२ अक्षर मन्त्र-वत् । ध्यान—

शव-रूप-शिव-स्थितां, महा-काल-रतासक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम् ।

(५) काम-वाग्भव-ताराद्या सप्तार्णाऽष्टाक्षरी—१ क्लीं परमेश्वरि स्वाहा, २ ऐं परमेश्वरि स्वाहा, ३ ॐ परमेश्वरि स्वाहा 'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २१ । ध्यान दशाक्षर-४ वत् ।

(६) मूल-वीजं ततो माया लज्जा-वीजं ततः परं, महा-विद्या महा-काल्या महा-कालेन भाषिता । वर्गाद्यं वह्नि-संयुक्तं रति-विन्दु-समन्वित, एतत् त्रयं क्रमेणैव तदन्ते वह्नि-वल्लभा—क्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६५—'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार 'विश्वसार तन्त्र' मे ।

(७) निज-वीज-त्रयं कूर्च-वीज लज्जा पुनस्तान्येव वह्नि-वल्लभा—क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६५, 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार । यहाँ 'उद्धार' के 'तानि' से 'ह्रीं' को दुवारा लेने का अर्थ लिया गया है, जो ठीक नही प्रतीत होता । वास्तव में 'तानि' से पूर्वोक्त ५ वीजो से आशय है, जिसे स्वीकार करने से द्वादशाक्षर मन्त्र प्रकट होता है (देखें पृष्ठ ११४, क्रमाङ्क १२)

८ नवाक्षर : (१) निज-वीज - त्रयं कूर्च - युग्म लज्जा - युग ततः, स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व-सम्पत्-करी मता—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

(२) मूल-वीजं समुद्धृत्य सम्बुद्धन्त्य पद-द्वयं, स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व-शत्रु-क्षयङ्करी—क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० । ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत् । पुरश्चरण मे एक लाख जप, घृत से दशांश होम ।

९ दशाक्षर : (१) मूल-वीजं ततो माया लज्जा-वीज ततः परं, दक्षिणे कालिके चेति अस्त्रान्ता समुदीरिता—क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० मे उक्त मन्त्र के माया-वीज के स्थान मे कूर्च-वीज 'हूं' दिया है । ऋष्यादि त्र्यक्षर (३) मन्त्र के समान ।

(२) कवचं मूल-विद्याद्यं तदन्ते भुवनेश्वरी, दक्षिणे कालिके चेति अस्त्रान्ता समुदीरिता—क्रीं हुं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० पर उक्त मन्त्र के 'हुं' के स्थान पर 'हूं' छपा है, जो अशुद्ध है क्योंकि उद्धार में 'कवच' के अनुसार 'हुं' ही होना चाहिए। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता दक्षिण-कालिका। शेष २२ अक्षर मन्त्र-वत्। पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशाश होम।

(३) क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३०। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्। पुरश्चरण मे एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

(४) वीज-त्रयान्ते (त्र्यक्षर-४) *परमेश्वरि-सम्बोधनं पदं, वह्नि-कान्तावधि प्रोक्तो दशार्णोऽय* मनुः शिवे—**ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि स्वाहा**

'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २१। ध्यान—

मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनां रक्ताम्बरं विभ्रतीं,
पाणिभ्यामभयं वरं च विलसद् रक्तारविन्द-स्थिताम्।
नृत्यन्तं पुरतो निपीय मधुरं माध्वीक-मद्यं महा—
कालं वीक्ष्य विकासितानन-वरामाद्यां भजे कालिकाम्॥

१० एकादशाक्षर : (१) वाग्भवं हृदयं पश्चाद् वह्न्यारूढं प्रजा-पतिं, चतुर्थ-स्वर-संयुक्तं विन्दु-नाद-विभूषितं। द्वि-गुणं च ततः कृत्वा ङेऽन्तरं कालिका-पदं, स्वाहान्ता कथिता विद्या प्रिये! एकादशाक्षरी—**ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२८। ऋष्यादि त्र्यक्षर (४) मन्त्र-वत्। पुरश्चरण मे दो लाख जप, घृत से दशाश होम।

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ८५ में '*श्री विद्यार्णव तन्त्र*' के अनुसार उद्धार—'*वाग्भवः नमः मूल-वीजं पुनस्तदेव कालिकायै वह्नि-वल्लभा।*'

(२) तदन्ते (नवाक्षरान्ते) वह्नि-सुन्दरी—**क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२९। ऋष्यादि दशाक्षर (२) मन्त्र-वत्। उसी मन्त्र के ९ अक्षरों मे 'स्वाहा' जोड़कर यह मन्त्र बना है।

(३) हृदयं वाग्भवं देवि! निज-वीज-युगं ततः, कालिकायै-पदं चोक्त्वा तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—**नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा**

'हि० तं०', पृष्ठ ३३०। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्। पुरश्चरण मे एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

११ द्वादशाक्षर : वीज-त्रयं कूर्चं माया तानि पुनः क्रमात्, स्वाहान्ता कथिता विद्या चतुर्वर्ग-फल-प्रदा—**क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा** 'मन्त्र-कोष'। हिन्दी तन्त्रसार में नही है।

१२ चतुर्दशाक्षर : (१) मूल-द्वयं कूर्च-युग्मं तथा लज्जा-द्वयं ततः, पुनस्तान्येव वीजानि तदन्ते वह्नि-सुन्दरी—**क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३०। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्। पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

(२) काली कूर्चं च हृल्लेखा दक्षिणे कालिके पठेत्, पुनर्वीज-त्रयं वह्नि-वधूर्मन्वक्षरो मनुः—**क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६० । ऋष्यादि २२ अक्षर-मन्त्र-वत् ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४७६ में यही मन्त्र दिया है किन्तु 'हूं' के स्थान पर 'हु' छपे हैं, जो अशुद्ध हैं ।

'मेरु-तन्त्र' में यही मन्त्र दिया है किन्तु 'हूं' के स्थान पर 'हुं' है ।

१३ पञ्च-दशाक्षर : (१) नमः पाशांकुशो द्वेधा फट् स्वाहा चैव कालिके ! दीर्घं तनुच्छदं काली-मनुः पञ्च-दशाक्षर.—नमः नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालिके हूं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० । ऋष्यादि चतुर्दशाक्षर-मन्त्र-वत् ।

(२) नमः पाशांकुशे द्वेधा फट् स्वाहा कालि कालिके, दीर्घं-त्तनुछदः काली-मनुः पञ्च-दशाक्षरः—नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं

'काली-तन्त्र' । ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र के समान ।

(३) मन्त्र-राजे क्री (द्वाविंशत्यक्षरे) पुन. प्रोक्तं बीज-सप्तकमुत्सृजेत्, तिथि-वर्णो महा-मन्त्र उपास्तिः पूर्व-वन्मतः—हूं हूं क्रीं क्रीं क्री ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६१ । ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत् ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८० मे यही मन्त्र १५ अक्षर का लिखकर भी ॐ जोडकर १६ अक्षर का कर दिया गया है । 'दक्षिणे' के स्थान पर 'दक्षिण' छापा है और बीजो का क्रम भी बदल दिया है । यथा—ॐ क्री क्री क्री हूं हूं ह्री ह्री दक्षिण-कालिके स्वाहा

१४ षोडशाक्षर : (१) ब्रह्म-त्रय समुद्धृत्य रति-वह्नि-विभूषितं, नाद-विन्दु-समाक्रान्तं लज्जा-कूर्च-द्वयं पुनः । पुनः क्रमेण चोद्धृत्य वह्नि-जायावधिर्मनुः, षोडशोयं समाख्याता सर्व-सम्पत्-प्रदायिनी—क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३० । ऋष्यादि चतुर्दशाक्षर-मन्त्र-वत्

(२) क्री क्रीं क्री हुं समुच्चार्य हुं-लज्जा-द्वयमुच्चरेत्, दक्षिणे कालिके स्वाहा नृप-वर्णः प्रकीर्तितः—क्री क्रीं क्रीं हुं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋष्यादि पूर्व-वत् ।

(३) दशार्णामन्त्रण-पदात् कालिके पदमुच्चरेत्, पुनराद्य-त्रय बीजं वह्नि-जाया ततो वदेत् । षोडशोय समाख्याता सर्व-तन्त्रेषु गोपिता—ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा

'हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २१ । ध्यान दशाक्षर-४ वत् ।

१५ सप्त-दशाक्षर : वध्वाद्या प्रणवाद्या चेदेषा सप्तदशी द्विधा—१ स्त्रीं ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा, २ ॐ ह्रीं ··स्वाहा

'हिन्दी-महानिर्वाण तन्त्र', पृष्ठ २१ । ध्यान दशाक्षर—४ मन्त्र-वत् ।

१६ विंशत्यक्षर : (१) स्वाहा-प्रणव-रहित (त्रयोविंशत्यक्षर) श्चेद् विंशत्यक्षरः—ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्री हूं हूं ह्रीं ह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२७ । ऋष्यादि २४ अक्षर मन्त्र-वत् ।

'श्रीकाली-कल्पतरु' पृष्ठ ६४ मे उद्धार—विंशत्यर्णा महा-विद्या स्वाहा प्रणव-वर्जिता ।'

में ८ पाठान्तर हैं। यथा—१ भयानकां : विराजिता, २ रात्रां : रूपा ३ दक्षिण-व्यापि-मुक्ता : दक्षिणा व्याली-युक्ता, ४ महा-कालेन च समं : महाकाल-समायुक्ता, ५ विपरीत : शर्वोपरि, ६ रतातुरा : रतान्विता, ७ स्मेरानन : स्मेरारुण, ८ सर्व-काम-समृद्धिदां : श्मशानालय-वासिनी। बीच की एक और पंक्ति–'वालार्क ...त्रितयान्विता' भी यहाँ नही दी है।

पुरश्चरण मे एक लाख जप, घृत से दशाश होम।

१९. त्रयो-विंशत्यक्षर : (१) अयं (एक-विंशत्यक्षर) स्वाहान्तश्चेत् त्रयो-विंशत्यक्षर —ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२७। ऋष्यादि २२ अक्षर (१) मन्त्र-वत्।

'श्री काली-कल्पतरु', पृष्ठ ६४ मे उद्धार—'स्वाहान्तश्च त्रयो-विंशाक्षरोऽय मनु-राजकः।'

(२) ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृ० ४७२। वहाँ '२२ अक्षर का दक्षिण काली मन्त्र' इसे लिखा है, जब कि है यह २३ अक्षर का। प्रमाण 'मन्त्र-महोदधि' का दिया है किन्तु वहाँ २२ अक्षर के आदि मे 'ॐ' नही है। साथ ही वहाँ 'हूँ हूँ' भी नही है, 'हूं हू' है। ऋष्यादि न्यास मे वीज 'क्रीं', शक्ति 'हूँ' और विनियोग 'ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे' दिया है, जो स्पष्ट ही भिन्न है।

२ भद्र-काली

१ अष्टाक्षर : निज-बीज महेशानि ! सम्बोधन-पदं ततः, पुनश्च कालिका-वीज ततो वह्नि-वधू न्यसेत्—क्रीं भद्र-कालि ! क्रीं स्वाहा 'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल

२ दशाक्षर : प्रणव शाकिनी-बीज वधू कवचमेव च, योगिनीमकुश पाश फेत्कारी स्मर-मायिक। नवाक्षरो महा-मन्त्रो भद्र-काल्याः प्रकीर्त्यते—ॐ फ्रें स्त्रीं हुं छ्रीं क्रो आं ह्स्ख्फ्रें क्लीं ह्रीं

'कामकला-काली-खण्ड, महाकाल-संहिता'। उद्धार मे मन्त्र को नवाक्षर बनाया है किन्तु हैं दस अक्षर। ध्यान—

सिंहोपरि समासीनां मसी-पुञ्ज-सम-प्रभां, भ्रुकुट्यराल-वदनां त्रीक्षणा घोर-दर्शनाम्।
शार्दूल-त्वक्-परीधाना विष्वग्-विस्तारिताननां, अत्यन्त-शुष्क-सर्वाङ्गीं ललज्जिह्वा-करालिनीम्।
त्रेता-गर्त - स्थिता-श्वभ्र-समान - नयनां शिवां, नर-मुण्डावली-हारां नादापूरित-पुष्कराम्।
ज्वलद्धुतवहाकार-विस्रस्त - कच- सञ्चयां, नरास्थि-कृत - सर्वाङ्ग - भूषणां जगदम्बिकाम्।
कोटि-कोटि-महा-घोर-योगिनी-गण-मध्यगां, कालीं दश-भुजां सृक्क-गलद्-रुधिर-चर्चिताम्।
खड्गं त्रिशूलं विशिखं शक्तिं दक्षिणतः स्मरेत्, फलकं डमरुं चापं कपालं वामतोऽपि च।
व्यादाय वदनं घोरं दंष्ट्राभिः पूरितान्तरं, लेलिहान - चलद् - विद्युत् - समान-रसनं महत्।
दानवासुर-दैत्यानां कोटिमर्वुदमेव च, धारयित्वा च धृत्वा च सार्द्धं कट - कटा - रवैः।
प्रक्षिप्य तत्र वाहुभ्यां चर्वयन्तीं हसन्मुखीं, गिलन्तीं पूरयन्तीं च पाताल-तुलितोदराम्॥

३ चतुर्दशाक्षर : प्रासाद-बीजमुद्धृत्य कालीति पदमुद्धरेत्, महा-कालि-पद चोक्त्वा किलि-युग्ममतः परं। अस्त्रमग्नि-जायान्तोऽय भद्र-काली-महा-मनु—ह्रौं कालि महा-कालि किलि किलि फट् स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ ३६२। 'फेत्कारिणी तन्त्र' मे भी उद्धार यही दिया है, जिसमे दो पाठान्तर हैं—१ किलि-युग्म : कालि—युग्म, २ अस्त्रमग्नि-जायान्तो : पर्ठाग्न दरत्भान्तो। प्रथम पाठान्तर

से मन्त्र का स्वरूप बदल जाता है अर्थात्—ह्रीं कालि महा-कालि कालि कालि फट् स्वाहा। ध्यान में एक पाठान्तर है—पाश-युग्मं : पाशमुग्र (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ८०)।

'मन्त्र-महार्णव' में यही मन्त्र भिन्न रूप में दिया है—ॐ ह्रीं कालि महा-कालि किलि-किले फट् स्वाहा। ध्यान 'फेत्कारिणी तन्त्र' के समान है। एक अन्य ध्यान भी 'फेत्कारिणी तन्त्र' में दिया है—

टङ्कं कापालं डमरुं त्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्र-कलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशी सित-धूम-नेत्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्र-काली॥

४ विंशाक्षर : काम-बीजादिकं बीजं सर्वं पूर्वापरे यजेत्, भद्र-काली तथा ङेऽन्तां बीज-मध्ये नियोजयेत्। स्वाहान्ता कथिता विद्या विंश-वर्णात्मिका परा—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्र-काल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

उक्त मन्त्रों की पूजा दक्षिणा काली के समान ही बताई है (श्रीकाली-कल्पतरु' पृष्ठ ६६)।

३ गुह्य-काली

१ नवाक्षर—(१) काम-बीजं समुद्धृत्य सम्बुद्धयन्त-पर-द्वयं, पुनः कामं तदन्ते च दद्याद् वह्नेश्च सुन्दरी—क्रीं गुह्ये कालिके क्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु,' पृष्ठ ६६ मे 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' से उद्धृत।

(२) निज-बीजं महेशानि ? सम्बोधन-पदं ततः पुनश्च कालिका बीजं ततो वह्नि-वधूं न्यसेत्—क्रीं गुह्य कालिके क्रीं स्वाहा

२ दशाक्षर—दक्षिणे पदमाभाष्य भवेद् विद्या दशाक्षरी—क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा

३ चतुर्दशाक्षर—(१) काम-बीज-द्वय (षोडशाक्षर-गतं) हित्वा भवेद् विद्या चतुर्दशी—क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये-कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा 'श्रीकाली-कल्प०', पृष्ठ ६६

(२) सप्त-बीजं पुरा प्रोक्त गुह्यान्ते कालिका पुनः, स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व-तन्त्रेषु गोपिता—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके स्वाहा

४ पञ्च-दशाक्षर : (१) दक्षिणे पदमाभाष्य (चतुर्दशाक्षरे) भवेत् पञ्च-दशाक्षरी—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

(२) काम-बीजं परित्यज्य अथवा षोडशाक्षरीं—हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

५ षोडशाक्षर : काम-बीजं ततः कूर्चं तदन्ते भुवनेश्वरी, गुह्ये च कालिके चेति तथा बीज-द्वयं भवेत्। स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व-तन्त्रेषु गोपिता।

अस्यार्थः—आदौ निज-बीजं ततः कूर्चं मायां सम्बोधन-पद-द्वयं, ततो निज-बीज-द्वय कूर्च-द्वयं माया-द्वयं वह्नि-वल्लभा—क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु' मे पृष्ठ ६६ पर यही मन्त्र 'श्री विद्यार्णव तन्त्र' में 'विश्वसार तन्त्र' से उद्धृत बताया है।

६ सप्त-दशाक्षर : अपानङ्ग शाकिनी च क्रोधमंकुशमेव च, गुह्य-शब्दादपि वदेत् कालि-शब्दं वरानने। काली च योगिनी-बीजं फेत्कारी चण्डमेव च, योगिनी कामिनी-बीजं स्वाहाऽन्ते विनिवेशयेत्। सु-दुर्लभो मन्त्र-राजो ज्ञेयः सप्तदशाक्षरः—ह्रीं क्रीं फ्रें हूं क्रों गुह्य-कालि क्रीं छ्रीं ह्स्ख्फ्रें फ्रों छ्रीं क्रीं स्वाहा

'महा-काल-संहिता, कामकला-काली-खण्ड'। ध्यान—

(२) मूल-वीज-द्वयं ब्रूयात् ततः कूर्च-द्वयं वदेत्, लज्जा-युग्मं समुद्धृत्य सम्बुद्धयन्तं पद-द्वयं। पूर्व-वत् पद् तथा वीजान्यन्ते च वह्नि-सुन्दरी—**क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३३३ में यही मन्त्र क्रमांक १६ पर अशुद्ध छपा है। वहाँ 'हूं हूं' के बाद 'ह्रीं ह्रीं' नहीं छपे है। ऋष्यादि द्व्यक्षर (३) मन्त्र के समान।

१७ एक-विंशत्यक्षर : माया-द्वयं कूर्च-युग्ममस्त्रान्तं मादन - त्रयं, माया-विन्द्वीश्वर-युतं दक्षिणे कालिके पदं। संहार-क्रम-योगेन वीज-सप्तकमुद्धरेत्, एक-विंशाक्षरो ज्ञेयस्ताराद्यः कालिका-मनुः—**ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२६। ऋष्यादि सभी २२ अक्षर मन्त्र-वत्।

'मन्त्र-महोदधि' में उद्धार—'माया-युगं कूर्च-युग्मं कर-शान्ति-विधु-त्रयं, दक्षिणे कालिके पूर्व-वीजानि स्युर्विलोमतः। एक-विंशति-वर्णात्मा ताराद्यः पूर्व-वद् यजिः।'

'हिन्दी-मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४७८ में 'मन्त्र-महोदधि' का प्रमाण दिया है किन्तु 'दक्षिणे कालिके' के स्थान पर 'दक्षिण-कालिके' छपा है, जो अशुद्ध है।

'काली-तन्त्र' में मूल उद्धार ही दिया है, जिसमें दो पाठ-भेद हैं—१ मस्त्रान्तं : मैन्द्रान्तं, २ एक-विंशाक्षरो ज्ञेयः : एक-विंशत्यक्षराढ्यः।

'सिद्धेश्वरी तन्त्र' में 'काली-तन्त्र' के समान ही मन्त्रोद्धार है, केवल एक पाठान्तर है—'ज्ञेयस्ताराद्यः : मन्त्रस्ताराद्यः।'

'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'ॐ ह्रीं ह्रीं हुं हुं-युग त्रिः क्रीं दक्षिणे कालिके वदेत्, त्रिः क्रीं हुं हुं च।' इस उद्धार के अनुसार उक्त मन्त्र के कूर्च-वीज (हूं) के स्थान पर कवच-वीज (हुं) होना चाहिये। यहाँ पुरश्चरण में दशांश हवन घृत से ही बताया है।

१८ द्वा-विंशत्यक्षर : (१) काम-त्रयं वह्नि-संस्थं रति-विन्दु-समन्वितं, कूर्च-युग्मं तथा लज्जा-युग्मं च तदनन्तरं। दक्षिणे कालिके चेति पूर्व-वीजानि चोच्चरेत्, अन्ते वह्नि-वधूं दद्यात् विद्या-राज्ञी प्रकीर्तिता—**क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

'हि० त०', पृष्ठ ३११। ऋषि भैरव, छन्द उष्णिक्, देवता दक्षिण-कालिका, वीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक 'क्रीं', विनियोग पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थे। ॐ ह्रां, ॐ ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कराल-वदनां घोरां मुक्त-केशीं चतुर्भुजां इत्यादि।

पुरश्चरण में दो लाख जप। पूर्णानन्द के अनुसार एक ही लाख जप पर्याप्त है। घृत में दशांश होम।

'मन्त्र-महोदधि' में उद्धार—'क्रोधीश-त्रितयं वह्नि - वामाक्षि-विधुभिर्युतं, वराह-द्वितयंव ाम-कर्ण-चन्द्र-समन्वित। माया-युग्मं दक्षिणे च दीर्घा सृष्टि स-दृक्-क्रिया, चक्री झिण्टीशमारूढः प्रागुक्तं वीज-सप्तकं। मन्त्रो वह्नि-प्रियान्तोऽयं द्वा-विंशत्यक्षरो मतः।' वहाँ देवता का नाम मात्र 'काली' बताया है। षडङ्ग-न्यास 'ॐ क्रां, ॐ क्रीं' इत्यादि से करने का निर्देश है। ध्यान भी भिन्न दिया है—

सद्यश्छिन्न-शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीं, घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलिम्। सृक्वसृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्या शवालंकृतिं, श्यामाङ्गीं कृत-मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकां॥

पुरश्चरण में एक लाख जप, करवीर (कनेर) पुष्पों से दशांश होम।

'काली-तन्त्र' में मूल मन्त्रोद्धार ही दिया है, जिसमें तोन पाठान्तर हैं। यथा—१ समन्वितं : विभूषितं, २ लज्जा-युग्मं च : लज्जा-युगलं, ३ चोच्चरेत् : चोद्धरेत्। ऋष्यादि वही हैं, केवल विनियोग भिन्न है—'कवित्वार्थे'। षडङ्ग-न्यास 'ॐ क्रां, ॐ क्रीं' इत्यादि से। ध्यान 'हिन्दी-तन्त्रसार' पृष्ठ ३१५ के समान है, केवल अन्तिम पंक्ति के पूर्व निम्न पंक्ति यहाँ अधिक है—

योगिनी-चक्र-सहितां कालिकां भावयेत् सदा।

एक पाठान्तर भी है—सर्व-काम-समृद्धिदां : सर्व-कामार्थ-सिद्धये।

'श्री विद्यार्णव तन्त्र' में उद्धृत 'वीर - तन्त्र' का उद्धार—'कामाक्षरं वह्नि - संस्थं वाम-नेत्र-विभूषितं, विन्दु-नाद - समायुक्तं वीजमेतत् त्रयं लिखेत्। कूर्च-युग्मं ततो देवि ! लज्जा-युग्ममनन्तरं, दक्षिणे कालिके चेति सम्बोधन - पदान्वितं, सप्त-वीजं पुनः प्रोच्य स्वाहान्तं मनुमुद्धरेत्—'श्री काली-कल्पतरु', पृष्ठ ८१।

'निरुत्तर तन्त्र'—त्रिगुणा (एकाक्षरी) च कूर्च-युग्मं लज्जा-युग्मं ततः पर, दक्षिणे कालिके चेति सप्त वीजानि योजयेत्। अन्ते-वह्नि वधू दद्याद विद्या-राज्ञी प्रकीर्तिता।

फेत्कारिणी-तन्त्र में उद्धार—वर्गाद्य वह्नि-पंस्थं रति-विन्दु-समन्वितं, त्रिगुणं च ततः कूर्च-युग्मं लज्जा-युगं ततः। दक्षिणे कालिके चेति पूर्व-वच्च ततः पुनः, ठ-द्वयेन समायुक्तं मनुमेनं विदुर्बुधाः। द्वा-विंशत्यक्षरो मन्त्र सर्व-सिद्धि-प्रदो नृणाम्। (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ८१)

(२) ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'हि० तं०', पृ० ३२७। ऋष्यादि २२ अक्षर (१) मन्त्र-वत्।

(३) कूर्च-द्वयं त्रयं काल्या माया-युग्मं तु दक्षिणे, कालिके पूर्व-वीजानि स्वाहा मन्त्रो वशी-कृतो—
हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृ० ८१। ऋष्यादि २२ अक्षर मन्त्र-वत्। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृ० ४८० में यही मन्त्र ॐ जोड़कर और 'दक्षिणे' के स्थान पर 'दक्षिण' छापा है, जो अशुद्ध है।

(४) काली-वीज-त्रयं प्रोक्त्वा लज्जा-वीज-द्वयं ततः, हुंकारौ द्वौ ततः पश्चाद् दक्षिणे कालिके ततः। काली-वीज-त्रयं तस्माल्लज्जा-वीज-द्वयं पठेत्, द्वौ च स्वाहान्त-हूंकारौ काली-मन्त्र उदाहृतः—
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा

'शाक्त-प्रमोद'। ऋष्यादि 'हिन्दी तन्त्रसार' वत्, केवल वीज भिन्न है—'क्रीं'। षडङ्ग-न्यास 'क्रां, क्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

शवारूढां महा-भीमां घोर-दंष्ट्रां हसन्मुखीं, चतुर्भुजां खड्ग-मुण्ड-वराभय-करां शिवाम्।
मुण्ड-माला-धरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बरां, एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय-वासिनीम्॥

(५) क्रीं क्रीं क्रीं हुं द्विरुच्चार्य लज्जा-वीज-द्वय तथा, दक्षिणे कालिके पश्चात् पुनर्वीजानि वदेत्। क्रमेणैवाग्नि-गृहिणी मन्त्रो द्वा-विंशदर्णकः—**क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टुप्, देवता कालिका देवी, वीज ह्रीं, शक्ति हुं। 'क्रां क्रीं' इत्यादि से षडङ्ग न्यास। ध्यान 'हिन्दी - तन्त्रसार', पृष्ठ ४१५ वत् किन्तु उसकी ३-४ पंक्तियों (सद्यश्छिन्न ''पाणिकां) के स्थान पर निम्न पंक्ति है—'खड्गाभय-वरान् छिन्नं मुण्ड च दधती करैः।' फिर अगली पंक्ति है 'महा-मेघ-प्रभां' आदि, जिसमें 'दिगम्बरी' के स्थान मे 'दिगम्बराम्' है। आगे की पंक्तियों

में ८ पाठान्तर हैं। यथा—१ भयानकां : विराजितां, २ रावां : रूपां ३ दक्षिण-व्यापि-मुक्ता : दक्षिणां व्याली-युक्ता, ४ महा-कालेन च समं : महाकाल-समायुक्तां, ५ विपरीत : शर्वोपरि, ६ रतातुरां : रतान्वितां, ७ स्मेराननं : स्मेरारुण, ८ सर्व-काम-समृद्धिदां : श्मशानालय-वासिनी। बीच की एक और पंक्ति—'बालार्क ···त्रितयान्वितां' भी यहाँ नहीं दी है।

पुरश्चरण में एक लाख जप, घृत से दशांश होम।

१९ त्रयो-विंशत्यक्षर : (१) अयं (एक-विंशत्यक्षर) स्वाहान्तश्चेत् त्रयो-विंशत्यक्षरः—ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२७। ऋष्यादि २२ अक्षर (१) मन्त्र-वत्।

'श्री काली-कल्पतरु', पृष्ठ ६४ में उद्धार—'स्वाहान्तश्च त्रयो-विंशाक्षरोऽयं मनु-राजकः।'

(२) ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृ० ४७२। वहाँ '२२ अक्षर का दक्षिण काली मन्त्र' इसे लिखा है, जब कि है यह २३ अक्षर का। प्रमाण 'मन्त्र-महोदधि' का दिया है किन्तु वहाँ २२ अक्षर के आदि में 'ॐ' नहीं है। साथ ही वहाँ 'ह्रूं ह्रूं' भी नहीं है, 'हूं हूं' है। ऋष्यादि न्यास मे बीज 'क्रीं', शक्ति 'ह्रूं' और विनियोग 'ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे' दिया है, जो स्पष्ट ही भिन्न हैं।

२ भद्र-काली

१ अष्टाक्षर : निज-बीजं महेशानि! सम्बोधन-पदं ततः, पुनश्च कालिका-बीजं ततो वह्नि-वधू न्यसेत्—**क्रीं भद्र-कालि! क्रीं स्वाहा** 'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल

२ दशाक्षर : प्रणवं शाकिनी-बीजं वधूं कवचमेव च, योगिनीमंकुशं पाशं फेत्कारी स्मर-मायिकं। नवाक्षरो महा-मन्त्रो भद्र-काल्याः प्रकीर्त्यते—ॐ फ्रें स्त्रीं हुं छ्रीं क्रों आं ह्स्ख्फ्रें क्लीं ह्रीं

'कामकला-काली-खण्ड, महाकाल-संहिता'। उद्धार में मन्त्र को नवाक्षर बनाया है किन्तु हैं दस अक्षर। ध्यान—

> सिंहोपरि समासीनां मसी-पुञ्ज-सम-प्रभां, भ्रुकुटचराल-वदनां त्रीक्षणां घोर-दर्शनाम्।
> शार्दूल-त्वक्-परीधानां विष्वग्-विस्तारिताननां, अत्यन्त-शुष्क-सर्वाङ्गीं ललज्जिह्वा-करालिनीम्।
> प्रेता-गर्त - स्थिता-श्यप्र-समान - नयनां शिवां, नर-मुण्डावली-हारां नादापूरित-पुष्कराम्।
> ज्वलद्धुतवहाकार-विलस्त - कच- सञ्चयां, नरास्थि-कृत - सर्वाङ्ग - भूषणां जगदम्बिकाम्।
> कोटि-कोटि-महा-घोर-योगिनी-गण-मध्यगां, कालीं दश-भुजां सृक्क-गलद्-रुधिर-चर्चिताम्।
> खड्गं त्रिशूलं विशिखं शक्तिं दक्षिणतः स्मरेत्, फलकं डमरुं चापं कपालं वामतोऽपि च।
> व्यादाय वदनं घोरं दंष्ट्राभिः पूरितान्तरं, लेलिहान - चलद् - विद्युत् - समान-रसनं महत्।
> दानवासुर-दैत्यानां कोटिमर्बुदमेव च, धारयित्वा च धृत्वा च सार्द्धं कट - कटा - रवैः।
> प्रक्षिप्य तत्र बाहुभ्यां चर्वयन्तीं हसन्मुखीं, गिलन्तीं पूरयन्तीं च पाताल-तुलितोदराम्॥

३ चतुर्दशाक्षर : प्रासाद-बीजमुद्धृत्य कालीति पदमुद्धरेत्, महा-कालि-पदं चोक्त्वा किलि-युग्ममतः परं। अस्त्रमग्नि-जायान्तोऽयं भद्र-काली-महा-मनुः—**ह्रौं कालि महा-कालि किलि किलि फट् स्वाहा**

'हिन्दी तन्त्रसार,' पृष्ठ ३६२। 'फेत्कारिणी तन्त्र' में भी उद्धार यही दिया है, जिसमें दो पाठान्तर हैं—१ किलि-युग्म : कालि-युग्म, २ अस्त्रमग्नि-जायान्तो : पङ्क्ति-दरदभान्तो। प्रथम पाठान्तर

से मन्त्र का स्वरूप बदल जाता है अर्थात्—ह्रौं कालि महा-कालि कालि कालि फट् स्वाहा। ध्यान में एक पाठान्तर है—पाश-युग्म : पाशमुग्र (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ८०)।

'मन्त्र-महार्णव' मे यही मन्त्र भिन्न रूप मे दिया है—ॐ ह्रौं कालि महा-कालि किलि-किले फट् स्वाहा। ध्यान 'फेत्कारिणी तन्त्र' के समान है। एक अन्य ध्यान भी 'फेत्कारिणी तन्त्र' मे दिया है—

टङ्कं कापालं डमरुं त्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्र-कलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशी सित-धूम-नेत्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्र-काली॥

८ विंशाक्षर : काम-बीजादिक बीजं सर्वं पूर्वापरे यजेत्, भद्र-काली तथा ङेऽन्तां बीज-मध्ये नियोजयेत्। स्वाहान्ता कथिता विद्या विंश-वर्णात्मिका परा—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्र-काल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

उक्त मन्त्रो की पूजा दक्षिणा काली के समान ही बताई है (श्रीकाली-कल्पतरु' पृष्ठ ६६)।

३ गुह्य-काली

१ नवाक्षर—(१)काम-बीजं समुद्धृत्य सम्बुद्धयन्त-पर-द्वयं, पुनः कामं तदन्ते च दद्याद् वह्नेश्च सुन्दरी—क्रीं गुह्ये कालिके क्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु,' पृष्ठ ६६ में 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' से उद्धृत।

(२) निज-बीजं महेशानि ? सम्बोधन-पदं ततः पुनश्च कालिका बीज ततो वह्नि-वधू न्यसेत्—क्रीं गुह्य कालिके क्री स्वाहा

२ दशाक्षर—दक्षिणे पदमाभाष्य भवेद् विद्या दशाक्षरी—क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा

३ चतुर्दशाक्षर—(१) काम-बीज-द्वय (षोडशाक्षर-गतं) हित्वा भवेद् विद्या चतुर्दशी—क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये-कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा 'श्रीकाली-कल्प०', पृष्ठ ६६

(२) सप्त-बीज पुरा प्रोक्त गुह्यान्ते कालिका पुनः, स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व - तन्त्रेषु गोपिता—क्रीं क्री क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्री गुह्ये कालिके स्वाहा

४ पञ्च-दशाक्षर : (१) दक्षिणे पदमाभाष्य (चतुर्दशाक्षरे) भवेत् पञ्च-दशाक्षरी—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा

(२) काम-बीज परित्यज्य अथवा षोडशाक्षरी—हूंह्रीं गुह्ये कालिके क्रींक्रीं हूंहूंह्रींह्रीं स्वाहा

५ षोडशाक्षर : काम-बीजं ततः कूर्चं तदन्ते भुवनेश्वरी, गुह्ये च कालिके चेति तथा बीज-द्वयं भवेत्। स्वाहान्ता कथिता विद्या सर्व-तन्त्रेषु गोपिता।

अस्यार्थः—आदौ निज-बीजं ततः कूर्चं माया सम्बोधन-पद-द्वयं, ततो निज-बीज-द्वय कूर्च-द्वयं माया-द्वय वह्नि-वल्लभा—क्रीं हूं ह्री गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु' मे पृष्ठ ६६ पर यही मन्त्र 'श्री विद्यार्णव तन्त्र' में 'विश्वसार तन्त्र' से उद्धृत बताया है।

६ सप्त-दशाक्षर : अपानङ्ग शाकिनी च क्रोधमङ्कुशमेव च, गुह्य-शब्दादपि वदेत् कालि-शब्दं वरानने। काली च योगिनी-बीज फेत्कारो चण्डमेव च, योगिनी कामिनी-बीजं स्वाहाऽन्ते विनिवेशयेत्। सु-दुर्लभो मन्त्र-राजो ज्ञेयः सप्तदशाक्षरः—ह्रौं क्रीं फ्रें हूं क्रों गुह्य-कालि क्रीं छ्रीं ह्स्ख्फ्रें फ्रों छ्रीं क्रीं स्वाहा

'महा-काल-संहिता, कामकला-काली-खण्ड'। ध्यान—

आपाद - पद्मादारभ्याकण्ठं पाटल-सन्निभा, मुखे दूर्वा - दल-श्यामा जटा - भार-विराजिता ।
शवोपरि-समासीना किञ्चिद् विस्तारितानना, दशभिर्वदनैर्युक्ता त्रि-त्रि - चक्षुर्विराजितैः ।
मुण्ड - कुण्डल - संवीता सर्वेषु वदनेष्वपि, नरास्थि-विहिताकल्पा कल्प - कल्प-क्षयङ्करा ।
सर्वत्र-लम्बित-जटा सर्वत्रापदि तारिणी, किञ्चिच्छुष्क -गलोद्देशा किञ्चिदाकुञ्चितानना ।
पिचिण्डिला निम्न-नाभिर्नाति-पीन-पयोधरा, स्थूलोरु - जङ्घा विकटा सर्वाभरण - भूषिता ।
अ-दीर्घ-षोडशापीन - दोर्मण्डल - विराजिता, नीलाम्बर-परीधाना नील - स्रग्-गन्ध-लेपना ।
शिवा-पोतं च खट्वाङ्गं गदामंकुशमेव च, घण्टां नृ - मुण्डं वामेन दधती खर्परामये ।
खड्गं त्रिशूलं चक्रं च नाग-पाश ततः परं, जप-मालां च डमरुं कत्रिकां वरमेव च ।
धारयन्ती दक्षिणेनोपविष्टा कुणपोपरि, योग-पट्ट - समुन्नद्ध-जानु - मध्य-कराम्बुजा ।
समस्त-विग्रह-व्यापि-मुण्ड-माला-विराजिता, सर्व-काम-प्रदा देवी सर्व-सिद्धि - विधायिनी ।।

७ एक-विंशाक्षर : इन्द्रादि-रुद्र वर्गाद्यं रति-विन्दु-समन्वितं, त्रि-गुणं च ततः कृत्वा ईशानं च समुद्धरेत् । षष्ठ-स्वर-समायुक्तं विन्दु-नाद-कलान्वितं, द्वि-गुणं च ततः कृत्वा ईश-द्वयं समुद्धरेत् । वामाक्षि-वह्नि-संयुक्तं नाद-विन्दु-कलान्वितं, तद् गुह्ये कालिके प्रोक्त्वा चाथवा दक्षिणे वदेत् । सप्त-वीज ततः पूर्व-क्रमेण योजयेत्, तत. वह्निजायावधिः प्रोक्ता विद्या त्रैलोक्य-मोहिनी—क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

८ द्वा-विंशाक्षर . क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

हिन्दी-तन्त्रसार, पृष्ठ ३३१ में छठे मन्त्र को छोड़कर शेष सातों मन्त्र देकर विधि दक्षिणा कालिका-वत् बताई है । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'काम-वीज' का प्रसिद्ध अर्थ 'क्लीं' है । तदनुसार 'तन्त्रसार'-कार द्वारा यही अर्थ लिया गया है, किन्तु 'कोष' के अनुसार 'काम-वीज' 'क्रीं' को भी कहते हैं । अतः 'मन्त्र-कोष' ने यही अर्थ भगवती काली के मन्त्रों के सन्दर्भ में लिया है, जो अधिक समीचीन है ।

३ महा-काली

१ एकाक्षर : अथातः सम्प्रवक्ष्यामि महाकाली-मनुं, यस्य विज्ञान-मात्रेण सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् । एकाक्षरो-समा नास्ति विद्या त्रिभुवने प्रिये, महाकाली गुह्य-विद्या कलि-काले च सिद्धिदा । क्रोधीशं क्षत-जारूढ धूम्र-भैरव्यलक्षितं, नाद-विन्दु-समायुक्तं मन्त्रं स्वर्गेऽपि दुर्लभम्—क्रीं

२ त्र्यक्षर : (१) वाग्भव वीजमुच्चार्य काम-राजं तत. पदं, माया-वीज ततो भद्रे ! त्र्यक्षरं मन्त्रमीरितं—ऐं क्रीं ह्रीं

(२) काम-राजं ततो कूर्चं माया - वीजमतः परं, अपरं त्र्यक्षरं प्रोक्तं पूर्वोक्तं फलदं प्रिये—क्रीं हूं ह्रीं

(३) हालाहलं समुच्चार्य माया - द्वयमतः परं, सतत् तु त्र्यक्षरं देवि ! सर्व-काम-फल-प्रदम्—ॐ ह्रीं ह्रीं

'कङ्काल-मालिनी तन्त्र, पृष्ठ १८ । ऋषि भैरव, छन्द उष्णिक्, देवता महा-काली, विनियोग पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थे । 'क्रां क्रीं' से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

हिमालय-गिरेर्मध्ये नगरे भैरवस्य च, दिव्य-स्थाने महा-पीठे मणि-मण्डप-राजिते ।
नारदाद्यैर्मुनि-श्रेष्ठैः संसेवित-पदाम्बुजां, नीलेन्दीवर- वर्णिनी युग्मापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ।

सुप्त-श्रीहरि-पीठ-राजित-वतो भीमां त्रिनेत्रां शिवां, मुद्रा-खड्ग-करां वराभय-युतां चित्राम्बरोद्दीपिनीम् ।
वन्दे चञ्चल-चन्द्रकान्त-मणिनिर्मलां दधानां पराम् ।

३ त्रयोदशाक्षर : क्रं क्रं क्रो क्रों पशून् गृहाण हुं फट् स्वाहा 'मन्त्र-कोष'

४ चतुर्दशाक्षर : (१) क्षं क्षं क्रमतः क्रं च पशु गृहाण चोच्चरेत्, हु फट् स्वाहा शक्र-वर्णः सिद्ध-मन्त्र उदाहृतः—ॐ क्षं क्षं क्रं क्रं पशु गृहाण हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि नही हैं और न न्यास आवश्यक हैं। काले जल से भरे काले घट में कालिका का आवाहन कर ब्राह्मी आदि और दूतियो आदि से युक्त उनका पूजन कर ध्यान करे—

पञ्च-वक्त्रां महा-रौद्रीं प्रति-वक्त्रं त्रिलोचनां, शक्ति-शूल-धनुर्वाण-खेट-खड्ग-वराभयान् ।
वाम-दक्ष-भुजैर्देवीं बिभ्राणां भोगि-भूषणाम् ।

पुरश्चरण मे १४ लाख जप कुलाचार से और पिचुमन्द समिधा मे घृताक्त होम ।

(२) प्रलयाऽग्नि-रुधिर-गतावूर्ध्व - केश्या समन्वितौ, नाद-विन्दु - समायुक्तावेव क्रोध-द्वय पुनः । पशु गृहाण पदतो वर्मास्त्रानल-वल्लभा, चतुर्दशाक्षरी प्रोक्ता महा-काली ध्रुवादिका—क्रं क्रं हूं हूं पशु गृहाण हुं फट् स्वाहा

फेत्कारिणी तन्त्र, द्वादश पटल । विधि मेरु-तन्त्रोक्त मन्त्र के अनुसार । ध्यान भी वही है, जिसमे तीन पाठान्तर हैं तथा आगे के चार चरण और दिए हैं, यथा—(१) प्रति-वक्त्रं : प्रति-वक्त्र, (२) खेट-खड्ग-वराभयान् : खड्ग-खेट-वराभया, (३) वाम-दक्ष . दक्षादक्ष ।

अर्द्ध-चन्द्रां जटा-युक्तां जिह्वा-ललन-भीषणां, निर्मांस-मेदुरामस्थि-पञ्जरां मुण्ड-मालिनीम् ।
मत्त-व्यालोपवीताङ्गीं भूत-वेताल - वेष्टितां, मेदो-वसावलिप्ताङ्गीं महा-प्रेताधिरूढाम् ॥

होम मे पिचुमर्द, विभीतक और चित्र-काष्ठ की समिधा बतलाई है ।

५ श्मशान-काली

१ सप्ताक्षर : क्लीं कालिकायै नमः 'हिन्दी-तन्त्रसार', ऋष्यादि एकादशाक्षर-मन्त्र-वत् ।

२ दशाक्षर : निज बीज महेशानि ! सम्बोधन-पद ततः, पुनश्च कालिका-बीज ततो वह्नि-वधू न्यसेत्—क्रीं श्मशान-कालिके क्रीं स्वाहा तोडल तन्त्र, तृतीय पटल ।

३ एकादशाक्षर : (१) वाणी रमा लज्जा काम कालिके पुनश्चतुर्वीजानि—ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं कालिके ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६५ । ऋषि भृगु, छन्द त्रिवृत्, देवता श्मशान-कालिका, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'श्रीं', विनियोग 'चतुर्वर्ग-सिद्धि' । शेष दक्षिण कालिका के समान । ध्यान—

अञ्जनाद्रि-प्रभां देवीं श्मशानालय-वासिनीं, रक्त-नेत्रां मुक्त-केशीं शुष्क-मांसाति-भीषणाम् ।
पिङ्गाक्षीं वाम-हस्तेन मद्य-पूर्णं स-मासकं, सद्य-कृन्तं शिरो दक्ष - हस्तेन दधतीं शिवाम् ।
स्मित-वक्त्रां सदा-वाम-मांस-चर्वण-तत्परां, नानालङ्कार-भूषाढ्यां नग्नां मत्तां सदा-शिवैः ।

(२) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ४८०; 'हिन्दी-तन्त्रसार' पृष्ठ ४०० । 'म० महा०' के ध्यान मे ८

पाठान्तर हैं—(१) प्रभां : निभां, (२) भीषणा : भैरवां, (३) पूर्ण स-मासकं : पूर्णां स-मासका, (४) सद्य-कृन्तं : मद्य कृत्त, (५) भूषाढ्या : भूषाङ्गी, (६) शिवैः : शवैः।

'हिन्दी तन्त्रसार' में यही पाठान्तर कुछ भिन्न है, यथा—३ रा पाठान्तर नहीं है, (४) सद्यः कृत्त, (६) सवै.। पुरश्चरण मे ११ लाख जप।

४ चतुर्दशाक्षर : (१) ॐ हू ह्री क्लीं श्मशान-कालिके ॐ हू ह्री क्ली
(२) ॐ हू ह्री क्ली श्मशान-कालिके क्ली ह्रीं हू ॐ

पूज्य श्री स्वामी हिमालय अरण्य। 'फेत्कारिणी तन्त्र', दशम पटल के अनुसार ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टप्, देवता श्मशान-कालिका, बीज 'क्रो', शक्ति 'हू' और विनियोग 'सकल-सिद्ध्यर्थे'।

(३) निज-बीज-त्रयं भद्रे ! श्मशान-कालिके ततः पुनर्बीज-त्रय भद्रे ! वह्नि-कान्ता समुच्चरेत्। चतुर्दशाक्षरी विद्या त्रिषु लोकेषु पूजिता—क्रीं क्री क्रीं श्मशान-कालिके क्रीं क्रीं क्री स्वाहा

तोडल तन्त्र, तृतीय पटल।

५ एक-विंशत्यक्षर : क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशान-काल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा
'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ १२

६ काम-कला काली

१ षोडशाक्षर : ह्री शाकिन्यकुश-सुधा-योगिनी-प्रमदा-क्रुधः, भूत-डाकिनी - कल्पान्त-फेत्कारी नरसिंहका। प्रेतास्त्र-शिरसः प्रोक्ता कपिलोपास्या षोडशी—ह्रीं फ्रें क्रो वं छ्रीं स्त्रीं हूं स्फ्रों ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें क्ष्रौं स्हौं फट् स्वाहा

ऋषि सनक, छन्द प्रतिष्ठा, देवता कामकला-काली, शक्ति 'ह्री', कीलक 'ग्लू'।

२ सप्तदशाक्षर : तार-मैध-त्रपा-लक्ष्मी-काली-काम-रुप. क्रमात्, योगिनी प्रमदा चैव शाकिनी-मंकुशं तथा। प्रसाद-क्षेत्रपालौ च पाश-भूतौ समुद्धरेत्, ननोऽग्नि-स्त्री सप्त-दशो मरीचि-समुपासिता—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रो ह्रौं क्षौं आं स्फ्रो स्वाहा

'महाकाल-संहिता, कामकला-खण्ड'। ऋषि कर्दम, छन्द बृहती, देवता कामकला-काली, शक्ति ह्री, कीलक ह्र्।

३ अष्टादशाक्षर : आद्य-वर्गाद्य-वर्णोऽक्ष्णा वामेन परि-शीलितः, मूर्द्धनि मूर्ध्रा य-तृतीय-युगयः परिकीर्तित। विन्दु-वामाक्षि-सम्पृक्तो वह्नि-सर्वाद्य-मस्तकः, वाम-श्रुत्यर्घ-चन्द्रेण तृतीयं स-परो भवेत्। दक्ष-स्कन्धोऽर्द्ध-दन्ताभ्या चोग्रोरो विन्दु-मस्तकः, ओष्ठ-वर्ग-द्वितीयो ह पूर्वाधारोष्ठ-विन्दु-युक्। षडक्षराणि सम्बोध्य यथा-नाम-स्थिति-क्रमान्, प्रतिलोमेन चोद्धृत्य तानि बीजानि पञ्च वै। भू-बीजाद्यमारभ्य मार-बीजान्तमेव हि, वैश्वानर-वधू-युक्तो मन्त्रो ह्यष्टादशाक्षरः—क्लीं क्रीं हूं क्रो स्फ्रो कामकला-कालि स्फ्रो क्रो हूं क्रीं क्लीं स्वाहा

'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ६६। ऋषि महाकाल, छन्द बृहती, देवता काम-कला काली, बीज 'क्ली', शक्ति 'हू', विनियोग सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं। षडङ्ग-न्यास 'क्ला, क्ली' इत्यादि। 'महाकाल-संहिता' (कामकला-खण्ड) मे यह 'त्रैलोक्याकर्षण' नामक मन्त्र कामकला-काली का मुख्य मन्त्र निर्दिष्ट किया गया है।

७ सिद्धि-काली

त्रयो-विंशाक्षर : प्रणवाद्या (द्वा-विंशत्यक्षरी) महा-विद्या देवता सिद्धि-कालिका—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल । ध्यान—

हंसः परब्रह्म-रूप. साकारः हंस-रूपकः, तारश्चक्रुर्वरारोहे ! निगमागम - पक्षवान् ।
शिव-शक्ति-पद-द्वन्द्वं विन्दु-त्रय-विलोचनं, एव हंसो मणि-द्वीपे तस्य क्रोड़े परः शिवः ।
वाम-भागे सिद्धि-काली सदानन्द-स्वरूपिणी, तस्याः प्रसादमासाद्य सर्व-कर्ता महेश्वरः ।।

८ कङ्काली काली

१ द्वादशाक्षर . ॐ काली कङ्काली किलकिले स्वाहा
२ त्रयोदशाक्षर ॐ ह्रीं काली कङ्काली किल किल स्वाहा
पुरश्चरण में १० सहस्र जप कर, दशांश होम करे।
३ चतुर्दशाक्षर (१) ॐ काली महा-काली केलि-कलाभ्यां स्वाहा
(२) ॐ ह्रीं काली कङ्काली किल-किल फट् स्वाहा 'देवी रहस्य'
४ पञ्च-दशाक्षर : (१) क्लीं कालि कालि महा-कालि कोले किन्या स्वाहा
(२) ॐ कां काली महा-काली केलि-कलाभ्यां स्वाहा 'क्रियोड्डीश'

पुरश्चरण मे दिवा-रात्र मे दस सहस्र जप कर, सन्ध्याकाल मे दशांश होम करे।

त्रयोदशाक्षर और पंचदशाक्षर (१)—ये दोनो मन्त्र 'उड्डामरेश्वर तन्त्र' मे दिए हैं (श्रीकाली-कल्पतरु, पृष्ठ ८१)

९ कामाख्या काली

१ त्र्यक्षर जृम्भणान्त त्यक्त-पाश यात्रा-वारण-रोहकं, वाम कर्ण-युत देवि ! नाद-विन्दु-युत पुनः। एतत् तु त्रिगुणीकृत्य कल्प-वृक्ष-मनु जपेत्—त्रीं त्रीं त्रीं

'कामाख्या-तन्त्र', प्रथम पटल । ऋषि अक्षोभ्य, छन्द अनुष्टुप्, देवता कामाख्या, विनियोग सर्वार्थ-सिद्धयर्थं । 'त्रां त्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

रक्त-वस्त्रां वरोद्युक्तां सिन्दूर-तिलकान्वितां, निष्कलङ्कां सुधा-धाम-वदन-कमलोज्ज्वलाम् ।
स्वर्णादि-मणि-माणिक्य-भूषणैर्भूषितां परां, नाना-रत्नादि-निर्माण - सिंहासनोपरि-स्थिताम् ।।
हास्य-वक्त्रां पद्मराग-मणि - कान्तिमनुत्तमां, पीनोत्तुङ्ग-कुचां कृष्णां श्रुति-मूल-गतेक्षणाम् ।
कटाक्षैश्च महा-सम्पद्-दायिनीं हर-मोहिनीं, सर्वाङ्ग-सुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परि-वेष्टिताम् ।।
डाकिनी-योगिनी विद्याधरीभिः परि-शोभितां, कामिनीभिर्युतां नाना-गन्धाद्यैः परि-गन्धिताम्।
ताम्बूलादि-कराभिश्च नायिकाभिर्विराजिता, समस्त-सिद्ध-वर्गाणां प्रणतां च प्रतीक्षणाम् ।।

पुरश्चरण मे एक लक्ष जप, घृत-शर्करा, मधु-पायस द्वारा दश सहस्र होम, चन्दन-मिश्रित जल द्वारा सहस्र बार तर्पण, उत्कृष्ट गन्ध-द्रव्यादि-द्वारा शत बार अभिषेक और दश श्रेष्ठ ब्राह्मण साधकों को भोजन।

(२) द्व-विंशत्यक्षर : निज-वीज-त्रयं देवि ! क्रोध-द्वयमतः परं, वधू-वीज-द्वयं चैव कामाख्ये च पुनर्वदेत्। प्रसीदेति पद चैव पूर्व-वीजानि कल्पयेत्, ठ-द्वयान्ते मनुः प्रोक्तः सर्व-तन्त्रेषु दुर्लभः—त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा

अति-सुललित - वेशां हास्य-वक्त्रां, जित-जलद - सुकान्ति पट्ट-वस्त्रां प्रकाशाम् ।
अभय-वर-कराढ्यां रत्न-भूषाभि-भव्यां, सुर-तरु-तल-पीठे रत्न - सिंहासनस्थाम् ।
हरि-हर-विधि-वन्द्यां शुद्ध-बुद्धि-स्वरूपा, मदन-शर-संयुक्तां कामिनीं काम-दात्रीम् ।
निखिल-जन-विलासां काम-रूपां भवानीं, कलि-कलुष-निहन्त्रीं योनि-रूपां स्मरामि ॥

'कामाख्या तन्त्र', चतुर्थ पटल । ऋष्यादि समस्त विधान त्र्यक्षर मन्त्र के समान । ध्यान—

त्रिनेत्रां सम्मोह-करीं पुष्प-चापेषु विभ्रतीं, भग-लिङ्ग-समाख्यानां किन्नरीभ्योऽपि नृत्यताम् ।
वाणी-लक्ष्मी-सुधा-वाक्य-प्रति-वाक्य-महोत्सुकां, अशेष-गुण-सम्पन्नां करुणा - सागरां शिवाम् ॥

१० रक्षा-काली (निशा-काली)

त्र्यक्षर : क्रीं ह्रीं ह्रीं

चतुरक्षर : ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं

द्वा-विंशत्यक्षर : त्री त्रीं त्रीं हूं हूं

पूज्य श्री स्वामी हिमालय अरण्य । सायंकाल मृण्मयी मूर्ति वनाकर रात्रि भर पूजन कर सूर्योदय के पूर्व विसर्जन । वर्ष में एक वार सभी ग्रामो, जनपदों आदि मे कर्तव्य । विशेष स्थानों मे वृहद् रूप से पूजन एव बलिदान । तत्काल सिद्धि-प्रद । इसके समान रक्षा-विधान का अन्य उत्सव नही है ।

उक्त दोनों मन्त्रों के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता श्री निशा-काली, वीज ह्रीं, शक्ति ह्री, कीलक ॐ, विनियोग राष्ट्र-रक्षार्थे (ग्राम या जनपद-रक्षार्थे) । 'ह्रां, ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास । तत्व-न्यास—ॐ आत्म-तत्वाय स्वाहा पादादि-नाभि-पर्यन्तं, ॐ ह्री विद्या-तत्वाय स्वाहा नाभ्यादि-हृदय-पर्यन्त, ॐ ह्सौः शिव-तत्वाय स्वाहा हृदयादि-मस्तक-पर्यन्तं । चतुरक्षर मन्त्र का ध्यान—

ॐ शवोपरि-समासीनां मुण्ड - माला - विभूषिता, ध्यायेदष्ट-भुजैर्युक्तां कर-पद्मे विराजिताम् ।
शक्ति-शूल - धनुर्बाण - खड्ग - खेट - वराभया, पञ्च-वक्त्रा महा-रौद्रीं प्रति-वक्त्रं त्रि-लोचनम् ।
प्रलयानल - धूम्राभां कृष्ण-वर्ण - विधायिनीं, जटा-जूट-समायुक्त - केश - जाल - विराजिताम् ।
कृष्ण-वस्त्र -धरां कट्यां नाग - पाशेन वेष्टितां, हास्य-युक्तां निशा-कालीं सदाघूर्णित-लोचनाम् ॥

पूजन की विधि दक्षिणा काली के समान । त्र्यक्षर मन्त्र का ध्यान—

चतुर्भुजां कृष्ण वर्णां मुण्ड-माला-विभूषितां, खड्गं च दक्षिणे पाणी विभ्रतीन्दीवर-द्वयम् ।
कर्त्री च खर्परं चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतीं, द्यां लिहन्तीं जटामेकां विभ्रतीं शिरसा द्वयम् ।
मुण्ड-माला - धरां शीर्षे ग्रीवायामथ चापरां, वक्षाग्रे नाग-हारं च बिभ्रतीं रक्त-लोचनाम् ।
कृष्ण-वस्त्र-धरां कट्यां व्याघ्राजिन-समन्वितां, वाम-पादं शव-हृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम् ।
विलम्प्य सिंह-पृष्ठे तु लेलिहानासवं स्वयं, साट्टाहासां महा-घोर-राव-युक्तां सु-भीषणाम् ॥

चतुर्भुजा मूर्ति अधिक प्रचलित है । अशक्त लोग द्वि-भुजा मूर्ति भी वनाते है । 'रक्षा-काली' नाम प्रसिद्ध है ।

९ दीप्ता, ऊन-विंशाक्षरी : प्रणवं कालिका-वीजं कौतिनी-वीजमेव च, कूर्च-वीजं समुद्धृत्य दीप्तायै तदनन्तरं। सर्व-मन्त्र-फल प्रोच्य दायै-शब्दं समुच्चरेत्, हूं फट् स्वाहान्तको मन्त्रस्तून-विंशाक्षरः परः—ॐ क्रीं ह्रीं हूं दीप्तायै सर्व-मन्त्र-फलदायै हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १५, षोडश पटल—पृष्ठ १२९।

१० नीला, एक-विंशाक्षरी : कूर्च-युग्मं महा-देवि ! काली-वीज-द्वयं तथा, माया-द्वयं समुद्धृत्य हसवलमरी-स्वरूपकं। अथ नील-पताके च हूं फडन्ता महेश्वरि—हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हसवलमरीं नील-पताके हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १६, षोडश पटल—पृष्ठ १३१।

११ घना, चतुर्दशाक्षरी : प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य कालिका-द्व्यक्षर तथा, घनालये घनाघने ह्रीं हूं फट् मनुर्मत.—ॐ क्रीं ॐ घनालये घनाघने ह्रीं हूं फट्

वही, परिचय—पृष्ठ १६, सप्तदश पटल—पृष्ठ १३५

१२ वलाका, ऊन-त्रिंशाक्षरी : प्रणव कालिका-वीज कूर्च-माये समुद्धरेत्, वलाका कालि-शब्दान्ते अत्यद्भुत-पराक्रमे। अभीष्ट-सिद्धि मे देहि हूं फट् स्वाहा मनुर्मतः—ॐ क्रीं हूं ह्रीं वलाका-कालि अत्यद्भुत-पराक्रमे अभीष्ट-सिद्धि मे देहि हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १७, सप्तदश पटल—पृष्ठ १३६।

१३ मात्रा, चतुरुत्तर-शताक्षरी : (१) प्रणव कालिका-वीजं माया-कूर्च च मातृका, स-बिन्दु-मातृका-वर्णं चतुर्वीजानि वै पुनः। पुनश्च मातृका-वर्णं चतुर्वीजं पुनश्चरेत्, एव क्षान्ता महेशानि ! महा-मात्रा प्रकीर्तिता—ॐ क्रीं ह्रीं हूं अं आं हूं लं क्षं ॐ क्रीं ह्रीं हूं अं आं हूं लं क्षं ॐ क्रीं ह्रीं हूं

(२) विंशाक्षरी : चतुर्वीज महा-मात्रे सिद्धि मे देहि सत्वरं, हूं फट् स्वाहेति देवेशि ! मात्रा-मन्त्र परो मत.—ॐ क्रीं ह्रीं हूं महा-मात्रे सिद्धि मे देहि सत्वरं हूं फट् स्वाहा

(३) षोडशाक्षरी : प्रणव कालिका-वीज कूर्च-माये तत शिवे, मध्ये नित्या-नाम दद्यात् सम्बुद्धयन्त च केवलं। पुनर्वीजानि हूं फट् स्वाहान्ता.—ॐ क्रीं हूं ह्रीं शिवे मात्रे ॐ क्रीं हूं ह्रीं हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १७, सप्तदश पटल—पृष्ठ १३७-३८।

१४ मुद्रा, ऊन-त्रिंशाक्षरी : प्रणव कालिका-वीज माया कूर्च क्रमेण च, प्रीं फें वीज-युग प्रोच्य मुद्राम्बा-पदमुद्धरेत्। मुद्रा-सिद्धि मे देहि भो जगन्मुद्रा-स्वरूपिणी, हूं फट् स्वाहा-समायुक्ता वीति-वर्णो मनु शुभ—ॐ क्रीं ह्रीं हूं प्रीं फें मुद्राम्बे मुद्रा सिद्धि मे देहि भो जगन्मुद्रा-स्वरूपिणि हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १८, सप्तदश पटल—पृष्ठ १३९।

१५ मिता, सप्त-विंशाक्षरी : प्रणव पूर्वमुद्धृत्य कालिका-वीजमुद्धरेत्, कूर्च-वीज तथा माया वाग्भव वीजमुद्धरेत्। मिते-पद समुच्चार्य तथा परिमिते-पद, पराक्रमाय च पदं पुनर्वीजानि चोद्धरेत्। सोहं हूं फट् तत स्वाहा सप्त-विंशति-वर्णवान्—ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं मिते परिमिते पराक्रमाय ॐ क्रीं हूं ह्रीं ऐं सोहं हूं फट् स्वाहा

वही, परिचय—पृष्ठ १८, अष्टादश पटल—पृष्ठ १४१।

अन्य मन्त्र

१ काली-पञ्च-बाण

सप्त-विंशति-अक्षर : काम-त्रय वह्नि-संस्थ रति-विन्दु-समन्वितं, कूर्च-द्वयं तथा लज्जा-युगल तदनन्तरं। दक्षिणे कालिके चेति मध्ये बाणानि योजयेत्—**क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

'रुद्रयामल तन्त्र' ('श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ८२)।

२ काल-रात्रि

त्रयस्त्रिंशदुत्तर-शतक्षर : तार-वाक्-छक्ति-कन्दर्प-रमा. कान्हेश्वरीति च, सर्व-जन-मनो-वर्णा हरि-सर्व-मुखा ततः। स्तम्भन्यन्ते सर्व-राज-वश-कारि-पद तत, सर्व-दुष्ट-निर्दलनि सर्व-स्त्री-पुरुषार्णकाः। कर्षिणीति ततो वन्दी-श्रृङ्खलांस्त्रोटय-द्वय, सर्व-शत्रून् भञ्जय द्विर्द्वेष्टॄन् निर्दलय-द्वय। सर्व स्तम्भय-युग्म स्यान्मोहनास्त्रेण तत्-पदं, द्वेषिण: पदमुच्चार्य तत उच्चाटय-द्वयं। सर्व कुरु-द्वन्द्व स्वाहा देहि-युगं पुनः, सर्वं च काल-रात्रीति कामिनीति गणेश्वरी नमोऽन्तेयं महा-विद्या गुण-राम-धराक्षरा—**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि, सर्व-जन-मनोहरि, सर्व-मुख-स्तम्भनि, सर्व-राज-वशंकरि, सर्व-दुष्ट-निर्दलनि, सर्व-स्त्री-पुरुषा कर्षिणि! बन्दी-श्रृङ्खलांस्त्रोटय त्रोटय, सर्व-शत्रून् भञ्जय भञ्ज, द्वेष्टॄन् निर्दलय निर्दलय, सर्वं स्तम्भय-स्तम्भय, मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय उच्चाटय, सर्व कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्व काल-रात्रि! कामिनि! गणेश्वरि! नमः**

मन्त्र-महोदधि, पृष्ठ ५४६। ऋषि दक्ष, छन्द अति जगती, देवता काल-रात्रि, बीज 'क्री' शक्ति, 'ह्रीं', विनियोग *'अभीष्ट-सिद्धयर्थे' अंगुष्ठादि पाँच अंगुलियों पर क्रमश 'ॐ, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं' से* कर-न्यास कर मन्त्र के २४, २५, २१, १८, २६, १९ अक्षरों से क्रमश. षडङ्ग न्यास करे। ध्यान—

> उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति विगलित-कबरीं कृष्ण-वस्त्रावृताङ्गीम्,
> दण्डं लिङ्गं कराब्जैर्वदमथ भुवनं दधाना त्रि-नेत्राम्।
> नाना - कल्पौघ - भासां स्मित - मुख - कमला सेवितां,
> देव-सङ्घैर्मर्यां राज्ञीं मनोभूशरविकल-तनूमाश्रये-काल-रात्रिम ॥

पुरश्चरण मे दस सहस्र कर तिल या कमल-पुष्पों से दशांश होम।

३ काली के शिव महा-काल

१ षोडशाक्षर : कूर्च-युग्म महा - काल प्रसीदेति पद - द्वय, लज्जा - युग्म वह्नि - जाया-संयुक्त षोडशार्णकः—**हूं हूं महा-काल! प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा**

शक्ति-सङ्गम तन्त्र, सुन्दरी-खण्ड, पृष्ठ १०५। 'श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ७२। ऋषि कालिका, छन्द विराट्, देवता महा-काल, बीज हूँ, शक्ति ह्रीं, कीलक स्वाहा, विनियोग सर्वाभीष्ट-सिद्धि। 'ह्रां, ह्रीं' आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

> कोटि-कालानलाभासं चतुर्भुजं त्रिलोचनं, श्मशानाष्टक - मध्यस्थं - मुण्डाष्टक-विभूषितम्।
> पञ्च-प्रेत-स्थित देवं त्रिशूल डमरुं तथा, खड्गं च खर्परं चैव वाम - दक्षिण - योगत।
> बिभ्रतं सुन्दरं देहं श्मशान-भस्म-भूषितं, नाना-शव क्रीडकानं कालिकां हृदय - स्थितम्।

लालयन्तं रतासक्तं घोर-चुम्बन - तत्पर, गृध्र - गोमायु - संयुक्तं फेरवी - गण - संयुतम् ।
जटा-पटल-शोभाढ्यं सर्व-शून्यालय-स्थितं, सर्व-शून्यं मुण्ड - भूषं प्रसन्न - वदनं शिवम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप । स्वयम्भू-तत्व या कारण से युक्त कर वीर-पुष्पों द्वारा दशांश होम।

'श्रीकाली-नित्यार्चन', पृष्ठ ७४ में यही मन्त्र और ध्यान है । ध्यान में तीन पाठान्तर हैं— (१) चतुर्भुजं : चतुर्बाहुं, (२) भूषितं : शोभितं, (३) शून्यालय : शून्यालये ।

२ एक-विंशाक्षर : ॐ ह्रीं क्लीं हूं महा-कालाय ह्रौं महा-देवाय क्रीं कालिकायै ह्रीं ।

३ एकोन-त्रिंशदक्षर : (१) कवच क्ष्रौं समुद्धृत्य यांरांलांवां च क्रों ततः, महाकाल-भैरवेति सर्व-विघ्नान्नाशयेति च । नाशयेति पुनः प्रोच्य मायां लक्ष्मीं समुद्धरेत् । फट् स्वाहा समायुक्तो मन्त्रः सर्वार्थ-साधकः—हूं क्ष्रौं यांरांलांवां क्रों महा-काल-भैरव ! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा

महा-कालं यजेद् देव्या दक्षिणे धूम्र-वर्णकं, बिभ्रतं दण्ड-खट्वाङ्गौ दंष्ट्रा-भीम-मुखं शिवम् ।
व्याघ्र-चर्मावृत-कटिं तुन्दिलं रक्त-वाससं, त्रिनेत्रमूर्ध्व - केशं च मुण्ड-माला-विभूषितम् ।
जटा-भार-लसच्चन्द्र-खण्डमुग्रं ज्वलन्निभम् ।।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३२३-२४ ('श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ३४-६०) ।

'निरुत्तर तन्त्र' में ध्यान ('श्रीकाली-कल्पतरु', पृष्ठ ७६)—

धूम्र-वर्णं महा-कालं जटा-तारान्वितं प्रिये, त्रि-नेत्रं शव-रूपं च शक्ति-युक्तं निरामयम् ।
दिगम्बरं घोर-रूपं नीलाञ्जन - सम-प्रभं, निर्गुणं च गुणाधारं काली-स्थानं पुनः पुनः ।।

४ त्रिंशदक्षर : ॐ हूं स्फ्रों यां रां लां वां क्रों महा-काल-भैरव सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा 'दुर्गा-पूजा-श्यामा-पूजा-पद्धति', पृष्ठ ८७ ।

४ काली-गायत्री

१ कालिका गायत्री : ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान-वासिन्यै धीमहि तन्नो प्रचोदयात्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६५९ । 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७० में यही मन्त्र 'ॐ'-रहित दिया है ।

२ काली गायत्री : (१) ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान-वासिन्यै धीमहि, तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ३७ । मन्त्र (ॐ छोड़कर) के ४, ३, ६, ३, ४ और ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास करे । प्रत्येक न्यास-मन्त्र के आदि में 'ॐ' लगा ले ।

(२) ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान-वासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्

'श्रीकाली-नित्यार्चन', पृष्ठ २३ ।
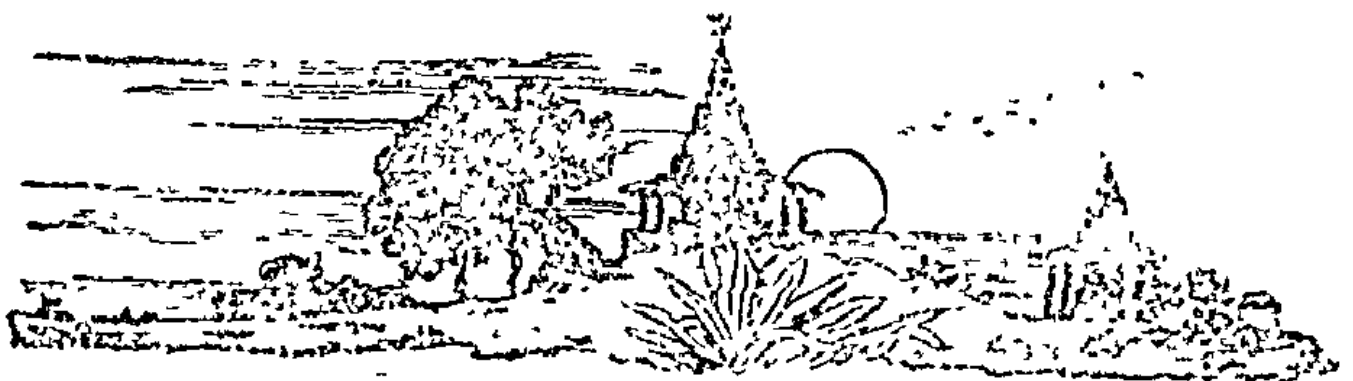
भगवती तारा

दश महा-विद्याओ मे दूसरा नाम भगवती तारा का है, जिससे वे 'द्वितीया' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इनके विषय मे 'श्रीतारा-स्वरूप-तत्व', 'श्रीतारा-नित्यार्चन', 'श्रीतारा-स्तव मञ्जरी' आदि पुस्तको से बहुत कुछ जाना जा सकता है।

भगवती तारा की उपासना के सम्बन्ध मे वशिष्ठ मुनि की कथा प्रसिद्ध है कि उन्होने भगवान् बुद्ध के द्वारा चीन मे श्रीतारा-साधना सीखी और सिद्धि प्राप्त की। वैद्यनाथ धाम (विहार) की पूर्व-दिशा मे स्थित 'तारा-पीठ' मे वशिष्ठ द्वारा प्रतिष्ठित श्रीतारा-मूर्ति और उनके द्वारा स्थापित पञ्च-मुण्डासन आज भी विद्यमान हैं। वही प्रख्यात महा-पुरुष वामा खेपा को मा तारा के दर्शन मिले थे और उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी।

भगवती तारा के सम्बन्ध मे एक तन्त्रोक्ति निम्न प्रकार है—

तारा चोग्रा महोग्रा च वज्रा नीला सरस्वती, कामेश्वरी भद्रकाली इत्यष्टौ तारिणी स्मृता।

इस उक्ति के अनुसार आठ स्वरूप श्री तारा के ज्ञात होते हैं—१ तारा, २ उग्र-तारा, ३ महोग्र-तारा, ४ वज्र तारा, ५ नील-तारा, ६ सरस्वती, ७ कामेश्वरी, ८ भद्रकाली। किन्तु इन सबके मन्त्र, ध्यानादि का स्पष्ट विवरण कही उपलब्ध नही है।

'तारा तन्त्र' मे लिखा है—'एकैव सा महा-देवी नाम-मात्रं त्रिधा भवेत्। कुल्लुका नाम देवी सा महा-नील-सरस्वती। प्रणव व्यतिरेकेण तृतीयैक-जटा भवेत्।' इस प्रकार प्राय तीन ही स्वरूपो का विवरण मिलता है—१ उग्रतारा, २ नील-सरस्वती, ३ एक-जटा। उक्त संक्षिप्त विवरण के अनुसार भगवती तारा के विविध मन्त्रा को यहाँ सग्रहीत करने का प्रयत्न किया गया है।

भगवती तारा
के
मन्त्र

१ उग्र-तारा (तारिणी, तारा)

१ एकाक्षर : चन्द्र-बीज समुच्चार्यं आद्य वह्नि समागत, वाम-नेत्रेन्दु-सयुक्त मन्त्र-राजमिम प्रिये! एकाक्षरी महा-विद्या त्रिषु लोकेषु पूजिता—स्त्रीं

'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल।

२ त्र्यक्षर मन्त्र-मात्रे स्वय प्रोक्तस्तथा दीर्घेण वर्मणा, पुटित च वधू-बीज अक्षरोऽसौ गुणाक्षर. —हूं स्त्रीं हूं 'मन्त्र-कोष'।

३ चतुरक्षर : लज्जा-युग्म वधू-बीज ततो दीर्घ-तनुच्छद, सारस्वत परो मन्त्र सम्प्रोक्तश्चतुरक्षर —ह्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं 'मन्त्र-कोष'

४ पञ्चाक्षर : (१) आप्यायनी सरात्रीशा वियदग्नीन्दु-शान्ति-युक् हृरि पावक-गोविन्द-चन्द्र-मोभिरलकृत। पमर्यीश-शशाङ्काढ्यमस्त्र पञ्चाक्षरो मनु —ॐ ह्रीं त्रीं हूं फट्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १००, १११। ऋषि अक्षोभ्य, छन्द बृहती, देवता तारा, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक 'त्रीं', विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धयर्थे'। 'ॐ ह्रां, ॐ ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

विश्व-व्यापक-वारि-मध्य-विलसच्छ्वेताम्बु-जन्म-स्थिताम्,
कर्त्री-खड्ग-कपाल-नील-नलिनैं राजत् - करां नीलभाम् ।
काञ्ची - कुण्डल - हार - कङ्कण- लसत् - केयूर-मञ्जीर-
तामाप्तैर्नाग - वरैर्विभूपित - तनूमारक्त - नेत्र - त्रयाम् ॥
पिङ्गोग्रैक-जटां लसत् - सु - रसनां दंष्ट्रा करालाननाम्,
चर्म-द्वैपि - वरं कटौ विदधतीं श्वेतास्थि - पट्टालिकाम् ।
अक्षोभ्येण विराजमान-शिरसं स्मेराननाम्भोरुहां ताराम्,
शाव - हृदासनां दृढ - कुचामम्बां त्रिलोक्याः स्मरेत् ॥

पुरश्चरण में चार लाख जप । दुग्ध, घृत-मिश्रित रक्त-कमलों से दशांश होम ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५२५ मे यही मन्त्र दिया है किन्तु 'कीलक' का उल्लेख नही है। ध्यान में एक पाठान्तर है—चर्म-द्वैपि : हस्तैश्चापि ।

'नील-तन्त्र' सप्तदश पटल मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है। यथा—माया-वीजं समुद्धृत्य तकारं वह्नि-संयुतं, माया-विन्द्वीश्वर-युत द्वितीयं वीजमुद्धरेत् । कूर्च-वीज तृतीयं च फट्-कार तदनन्तरं, सम्पूर्ण-सिद्ध-मन्त्रस्तु रश्मि-पञ्चक-सयुतः । अनुत्तरं समुद्धृत्य मायोत्तरं ततः परं, प-पञ्चम-समायुक्तं, पञ्च-रश्मिः प्रकीर्तितः ।

'श्री तारा-नित्यार्चन' के 'विपय-प्रवेश' के अन्तर्गत उक्त मन्त्र के सम्वन्ध में 'मत्स्य-सूक्त' का उद्धार दिया है, यथा—माया-वीजं समुद्धृत्य त-वर्ग-प्रथमं तथा, रति-विन्दु-वह्नि-युतं द्वितीय वीजमुत्तमं । कूर्च-वीजं तृतीय तु फट्-कारस्तदनन्तरं । सम्पूर्ण-सिद्ध-मन्त्रस्तु रश्मि पञ्चक-संयुत. ।

'तारार्णव' का भी उद्धार दिया है—तारं लज्जां त्र कामेशी हूं फडित्युग्र-तारिका ।

वही पृष्ठ २६ पर दिये गये मूल-मन्त्र के अनुसार उक्त मन्त्र के ऋपि अक्षोभ्य, छन्द वृहती, वीज 'हूं', शक्ति 'फट्', कीलक 'स्त्री' और विनियोग 'धर्मार्थ-काम-मोक्षादि-चतुर्वर्ग-सिद्धये' वताये हैं। ध्यान पृष्ठ ४५ पर निम्न प्रकार दिया है—

प्रत्यालीढ-पदार्पितांघ्रि-शव-हृत् घोराट्टहासां पराम्,
खड्गेन्दीवर-कर्तृ-खर्पर-भुजां हूंकार-वीजोद्भवाम् ।
खर्वां नील-विशाल-पिङ्गल-जटा-जूटैक-नागैर्युताम्,
जाड्यं न्यस्य कपालके त्रि-जगतां हन्त्युग्र-तारा स्वयम् ॥

उल्लेखनीय है कि 'श्रीतारा-नित्यार्चन' मे 'स्त्री' को 'कीलक' मानने से स्पष्ट है कि भगवती तारा का मन्त्र उक्त उद्धार के अनुसार न लेकर उसमे 'तारा-रहस्य' द्वारा उद्धृत मन्त्र (२) ग्रहण किया गया है।

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'ॐ माया श्री हु फडिति पञ्च-वर्णो मनुर्मतः।' ऋष्यादि 'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार, केवल शक्ति भिन्न वताई है—'हु'। ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

महा - प्रलय - पानीये लसच्छ्वेताम्बुज-स्थितां, कर्त्री खड्गं नील - पद्म कपालं दधतीं करैः ।
सर्प-काञ्चीं सर्प-करां सर्प - कङ्कण - कुण्डलां, सर्प - केयूर - मञ्जीरां नीलाभां रक्त-लोचनाम् ।
पिङ्गोग्रैक-जटां व्यक्षां व्याघ्र-त्वक्-परिधायिनीं, दंष्ट्रा कराल-वदनां ललज्जिह्वां स्मिताननाम् ।
नरास्थि-पट्टं वघ्नन्तीं मालेऽक्षोभ्य-मुनीश्वरां, स्थापयन्तीं च तदधो ध्यायेच्छव - हृदासनाम् ॥

ऊपर 'श्रीतारा-नित्यार्चन' से उद्धृत 'तारार्णव' के उद्धार को 'तारा-भक्ति-सुधार्णव', प्रथम तरङ्ग मे 'तत्त्व-बोध' का बताया है। वही 'तारार्णव' का उद्धार भी दिया है, जो यह है—अनुत्तरमुद्धृत्य मायोत्तरमत. पर, प-पञ्चम-समायुक्तं पञ्च-रश्मिः प्रकीर्तित. । जीवनी मध्यगा पश्चादेकाक्षी तदनन्तरं, उग्र दर्पं ततः पश्चान्मन्त्रो देवि ! प्रकाशित ।

वही (ता० भ० सु० मे) 'तन्त्र-चूडामणि' का उद्धार दिया है—अस्त्रान्तेय महा-विद्या जय-पुङ्गव-धारिणी, वेदादि-मुख-युक्ता चेत् तारा त्रि-भव-तारिणी ।

(२) लज्जा-बीजं वधू-बीज कूर्च-बीजमतः पर, अस्त्रान्त-मनुना ख्यातं पञ्च-रश्मि-स्वरूपकम्—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्

'तारा-रहस्य' पृष्ठ ३६ । ऋष्यादि पूर्व-वत् । यहाँ उद्धार मे चार बीजो का ही उल्लेख है किन्तु 'पञ्च-रश्मि' से आदि के 'ॐ' का सङ्केत मिलता है। इस सम्बन्ध मे 'तारा तन्त्र' का उद्धार द्रष्टव्य है—प्रणव पूर्वमुद्धृत्य हृल्लेखा कुल-कामिनी, कूर्चमस्त्र मन्त्र-राजो देव-द्रुम इवापरः ।

'राष्ट्र-गुरु' स्वामी जी द्वारा 'श्रीतारा महा-विद्या' शीर्षक लेख मे बताया है कि 'किसी-किसी के मत से 'स्त्री' बीज के स्थान पर 'त्री' बीज माना जाता है, परन्तु यह विद्या वशिष्ठ मुनि से शप्त होने के कारण शीघ्र-फलदा नही है। किन्तु 'तारा-भक्ति-सुधार्णव' मे कहा है—कृष्ण-अवतार होने पर यह विद्या शाप से मुक्त हो जायगी ।' देखें 'लेख-सग्रह', पृष्ठ १७। वही पृष्ठ १९ पर इस मन्त्र के ऋष्यादि पूर्व-वत् ही दिए हैं, केवल बीज 'हूं', शक्ति 'फट्', कीलक 'शेष वर्ण' और विनियोग 'चतुर्विध-पुरुषार्थ-प्राप्ति' तथा मतान्तर से बीज, शक्ति पूर्ववत् और कीलक 'स्त्री' बताये हैं। ध्यान यह दिया है—

प्रत्यालीढ-पदां घोरां मुण्ड - माला - विभूषितां, खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्र - चर्मावृतां कटौ ।
नव - यौवन - सम्पन्नां पञ्च - मुद्रा - विभूषिता, चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महा - भीमां वर-प्रदाम् ।
खड्ग-कर्त्री-धरा सव्ये वामे मुण्डोत्पलान्वितां, पिङ्गोग्रैक - जटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्य - भूषिताम् ।
बालार्क - मण्डलाकार - लोचन-त्रय-भूषिता, प्रज्वलत्-पितृ-भू-मध्य-गतां घोर-दंष्ट्रा करालिनीम् ।
सावेश - स्मेर - वदनामस्थ्यलङ्कार - भूषितां, विश्व-व्यापक-तोयान्ते श्वेत-पद्मोपरि-स्थिताम् ।।

'लेख-सग्रह', पृष्ठ २० के अनुसार पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृताप्लुत नील-कमलो या विल्व-पत्रो से दशाश होम कर कालागुर-युक्त सुगन्धित जल से तर्पण और अभिषेक दशाश-क्रम से करना चाहिए। अन्त मे दशाश-ब्राह्मण-भोजन । 'कलौ चतुर्गुणा' के नियमानुसार चार पुरश्चरण करे ।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', प्रथम तरङ्ग मे 'मत्स्य-सूक्त' का उद्धार—लज्जा-बीज वधू-बीज कूर्च-बीजं तथा हि फट्, एवं पञ्चाक्षरी विद्या पञ्च-भूत-प्रकाशिनी । (इस उद्धार मे प्रणव की व्यञ्जना 'पञ्चा-क्षरी'-पद से होती है)। अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे यही उद्धार 'एक-वीरा कल्प' का बताया है, जिसमे पाठान्तर है—एव विद्या : पञ्चाक्षरी महा-विद्या ।

वही 'तारार्णव' का वह कथन उद्धृत है, जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि वशिष्ठ मुनि के शाप के प्रभाव को दूर करने के लिए 'त्री' बीज के आदि मे सकार जोडकर 'स्त्री' बीज का जप करना उचित है। यथा—वशिष्ठाराधिता चोग्रा न च शीघ्र फला यतः, अतस्तेनापि मुनिना शापो दत्तः सु-दारुण , ततः प्रभृति विद्येयं फल-दात्री न कस्यचित् । शक्ति-बीज त्रपान्तस्य-बीजोपरि नियोजित, ततः प्रभृति विद्येयं वधूरिव यशस्विनी ।

शाप-मुक्ति के सम्बन्ध में वही यह भी उक्ति दी है—जाते कृष्णावतारे तु पुनः शापात् प्रमुच्यते। इस प्रकार कलियुग मे 'त्री' और 'स्त्री' दोनों ही प्रशस्त हैं।

'मन्त्र-कोष' में इसी पञ्चाक्षर-मन्त्र के दो उद्धार भिन्न शब्दों मे दिये हैं—

१ ऊष्म-वर्ण-गतो जीवो निगम - स्वर - संयुतः, नाद-विन्दु - समाक्रान्तस्तत्व-रश्मि-समन्वितः। कपिलो वाम-कर्णस्थो नादाढ्यो विन्दु-शेखरः, पार्श्वान्त्यं च तथाक्रान्तं शरार्णं परि-कीर्तितं।

२ लज्जा-वीजं वधू-वीज कूर्च-वीजं तथा हि फट्, एवं पञ्चाक्षरी विद्या पञ्च-भूत-प्रकाशिनी।

'नील-तन्त्र' में इसी मन्त्र को भगवती उग्रतारा का मन्त्र निर्दिष्ट किया है। यथा—शिवं वह्नि-समारूढं वाम-नेत्रेन्दु-संयुतं, आद्य-वीज (स्त्री) द्वितीयं च अस्त्र-मन्त्रं समुच्चरेत्। प्रणवाद्या यदा विद्या सोग्रतारा प्रकीर्तिता।

'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल मे भी यही वचन मिलता है, केवल 'शिवं वह्नि' के स्थान पर उसमे 'शिरं विन्दु' है।

(३) वह्नि-वामाक्षि-विन्द्वाढ्या कामिका भुवनेश्वरी, भुवनेशी वर्म-रुद्धा फडन्ता प्रणवादिका। सप्ताक्षरी महा-विद्या विरिञ्चि-समुपासिता—ॐ त्रीं ह्रीं हुं फट्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १४०। ऋषि वशिष्ठज शक्ति, छन्द गायत्री, देवता तारका, वीज 'ह्रीं', शक्ति 'हुं', कीलक 'स्त्री', विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धि'। षडङ्ग-न्यास पञ्चाक्षर (१) के समान। ध्यान—

श्वेताम्बरां शारद - चन्द्र - कान्तिं सद् - भूषणां चन्द्र - कलावतंसाम्।
कर्त्री - कपालान्वित - पाणि - पद्मां तारां त्रि - नेत्रां प्रभजेऽखिलर्द्ध्यै॥

पुरश्चरण पूर्व-वत्। 'हिन्दी-मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५३६ में उक्त मन्त्र के ऋषि 'वशिष्ठ' बताए हैं, जो अशुद्ध है। ध्यान मे भी 'पाणि' के स्थान मे 'पाद' छपा है, जो सार्थक नही है।

(४) रेफ-शान्तीन्दु-युङ् णान्तो वर्मास्त्रं काम-वाग्भवं, नारायणोपासितेय पञ्चार्णा सर्व-सिद्धिदा—त्रीं हुं फट् क्लीं ऐं

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १३९। ऋष्यादि और ध्यान पञ्चाक्षर (३) के समान।

'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार—'त्री हुं फट् क्ली वाग्भवं च पञ्चार्णा सर्व-सिद्धिदा।'

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग में—'तृतीय-कवचास्त्राणि रतीशो वाग्भवान्तिमः, एषा नारायणोपास्य-विद्या सर्व-समृद्धिदा।' वही बताया है कि इस मन्त्र और 'तारा-भक्ति-सुधार्णव' मे कथित अन्य सभी मन्त्रो के (जिनके ऋष्यादि उल्लिखित नही हैं) ऋषि 'शवित्र', छन्द 'गायत्री' और देवता 'परा तारा' हैं। ध्यान भी इन मन्त्रो का निम्न प्रकार निर्दिष्ट किया है—

कर्पूरेन्दु-निभां सितां वर-युगां रत्नोल्लसद्-भूषणाम्,
चन्द्रार्धाङ्कित-भालकां त्रि-नयनां हारावली-भूषिताम्।
बिभ्राणां नृ-कपाल-कर्तृक-लते संशोभि-वक्त्राम्बुजाम्,
चेटीभिः परिवारितां भगवतीं तारां परामाश्रये॥

वही यह भी बताया है कि वश्य-कर्म मे भगवती तारा को 'रक्त-वर्णा', स्तम्भन-कर्म मे 'स्वर्ण-वर्णा', उच्चाटन मे 'धूम्र-वर्णा' और मारण मे 'कृष्ण-वर्णा' ध्यान करना चाहिए।

(५) श्री-वीजाद्या (पञ्चाक्षर-१) यदा देवी, तदा सा सर्वतोमुखी—श्रीं ह्लीं त्रीं हूं फट्

(६) एपैव (पञ्चाक्षर-१) हि महा-विद्या मायाद्या सकलेष्टदा—ह्रीं ह्लीं त्रीं हूं फट्

(७) वाग्भवाद्या यदा विद्या (पञ्चाक्षर-१) वागीशत्व-प्रदायिनी—ऐं ह्लीं त्रीं हूं फट्

'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल के अनुसार क्रमाक ५, ६, ७ के तीनो मन्त्र सम्प्रदाय-क्रम से प्राप्त होते हैं। मूल 'मन्त्र-कोष' मे उक्त सभी मन्त्रो में 'त्री' के स्थान पर 'स्त्री' का प्रयोग है।

(८) ऊष्म-वर्ण-गतोऽजीवो निगम-स्वर-संयुतः, नाद-विन्दु-समाक्रान्तस्तत्व-रश्मि - समन्वितः। कपिलो वाम-कर्णस्थो नादाढ्यो विन्दु-शेखरः, पार्श्वान्ते च तथा क्रान्त शरान्तं परि-कीर्तितम्—ह्रीं स्त्रीं हूं फट् फट्

'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल मे 'तारा' का उक्त मन्त्र उद्धृत कर इसी मन्त्र मे उलट-फेर कर सात मन्त्र उग्रा, महोग्रा आदि के निर्दिष्ट किए हैं, जो आगे 'अन्य मन्त्र' के अन्तर्गत प्रकाशित हैं।

(९) प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य तारे तु तदनन्तरं, ततः स्वाहेति मन्त्रोऽयं पञ्चाक्षर उदाहृतः—ॐ तारे स्वाहा

वही। इस मन्त्र का ध्यान निम्न प्रकार वताया है—

श्याम-वर्णां त्रि-नयनां द्वि-भुजां वर-पङ्कजे, दधानां बहु-वर्णाभिर्बहु-रूपाभिरावृताम्।

शक्तिभिः स्मेर-वदनां स्मेर-मौक्तिक-भूषणां, रत्न-पादुकयोर्न्यस्त-पादाम्बुज-युगां स्मरेत्॥

पुरश्चरण में एक लाख जप यथा-विधि करे।

(१०) त्री हुं माया हुं फडिति मनुः पञ्चाक्षरो मतः, मया पञ्च-मुखैर्जप्तो दक्ष-मार्गेण भोः सुराः—त्रीं हुं ह्रीं हुं फट्

'मेरु-तन्त्र'। जालन्धर-वध हेतु शिव द्वारा उपासिता, रामचन्द्र को उपदिष्ट। सुरा के स्थान में पञ्चामृत, मास के स्थान में सूरण, मत्स्य के स्थान में खण्डकाद्य, पञ्चम मे धर्म-पत्नी।

५ षडक्षर : (१) वाग्-वीजं प्रथमं प्रोच्य ओङ्कारं तु तत. पठेत्, लज्जा-वीजं ततः तारा-वीज हूं फट् ततः पठेत्—ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूं फट्

'शाक्त-प्रमोद', पृष्ठ १२०। ऋषि वशिष्ठ, छन्द अनुष्टुप्, देवता तारा। 'ह्रा, ह्री' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान 'सपर्या-सरणि' मे वही दिया है, जो पञ्चाक्षर (१) मन्त्र मे है। उसमे तीन पाठान्तर हैं—(१) जन्म-स्थिता : जन्मास्थिता, (२) करा नीलभा : करामिन्दुभा, (३) सु-रसना : स्व-रसना। प्रारम्भ मे अन्य ध्यान दिया है, यथा—

प्रत्यालीढ-पदार्पितांघ्रि-शव-हृद्-घोराट्ट-हासा परा,
खड्गेन्दीवर - कर्त्रि-खर्पर-भुजा हुङ्कार-वीजोद्भवा।
खर्वा नील-विशाल - पिङ्गल-जटा - जूटैक-नागैर्युता,
जाड्यं न्यस्य कपाल-कर्तृ जगतां हन्त्युग्र-तारा स्वयम्॥

(२) ॐ ह्री हु्ं ह्री हुं फडिति—ॐ ह्रीं हूं ह्रीं हुं फट्

'मेरु-तन्त्र'। शिवोपासिता। वहीं इस मन्त्र के ऋषि शिव वताए हैं।

(३) वाग्भवं कुला-देवी च तारकं वाग्भव तथा, हृल्लेखा चास्त्र-मन्त्रान्ते वह्निजायावधिर्मनुः—ऐं ह्रीं ॐ फट् स्वाहा 'मन्त्र-कोष'

६ सप्ताक्षर : (१) ॐ त्री ह्री ह्रू समुच्चार्य ह्री हुं फट् सप्त-वर्णकः, ब्रह्मणोपासितां तारा बल्यादिभिरुपासिता—**ॐ त्रीं ह्रीं ह्रू ह्रीं हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता तारा। ध्यान—

श्वेताम्बरां चन्द्र-कान्ति-चन्द्रार्ध-कृत-शेखरां, कर्तरीं च कपालं च कराभ्यां दधती भजे।

नानालङ्कार-शोभाढ्यां त्रीक्षणां पद्म-संस्थिताम् ॥

न्यासादि समस्त विधि 'मेरु-तन्त्रोक्त पञ्चाक्षर-मन्त्र' के समान।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वीं तरङ्ग में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दो मे मिलता है—'तृतीयं भुवनेशानी वर्म शक्ती तनुनक, अस्त्रान्ता प्रणवाद्येयं विद्या धातृ-प्रपूजिता'। इस उद्धार से स्पष्ट है कि 'मेरु-तन्त्र' के मन्त्र मे 'ह्रू' के स्थान पर 'हुं' होना चाहिए। यथा—**ॐ त्रीं ह्रीं हुं ह्रीं हुं फट्**

(२) प्रणव कवच मायां क्ली प्राक्-कूटं च पञ्चमं, हु फडन्तः—**ॐ हुं ह्रीं क्लीं ह्सौं हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। ब्रह्मोपासिता, हिरण्यकशिपु को वर देते समय।

(३) ब्रह्मोपासित-सप्तार्ण (२)-मध्ये कूटं तु पञ्चमं, त्यक्त्वा तत्र सौश्चोक्त्वा विद्या रामेण सेविता—**ॐ हुं ह्रीं क्लीं सौः हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। बलराम, लक्ष्मी आदि गोपियो और रामचन्द्र द्वारा उपासिता। वहीं इस मन्त्र के ऋषि विष्णु बताए हैं। 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १३६ में उद्धार—तार-वर्म-शिवा-कामो मनु-सर्ग-युतो भृगुः, वर्मास्त्रमेषा सप्तार्णा सिद्धिदा विष्णु-सेविता।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग में—'प्रणवो वर्म हृल्लेखा-स्मरो तार्तीय-वर्मणी, अस्त्रमेपा समादिष्टा द्वितीया विष्णु-पूजिता' अर्थात् विष्णु-पूजिता यह दूसरा मन्त्र है। पहला मन्त्र द्वादशाक्षर (३) है। वही निर्दिष्ट है कि—'एतासु पूर्व-युक्तासु तार्तीय त्र्यंपुर यदि, तदा चतुर्मुखोपास्या भवेयुस्ताः सु-शोभनाः।' अर्थात् उक्त मन्त्रो के 'सौः' बीज के स्थान पर 'ह्सौः' करने से ये ब्रह्मोपासित मन्त्र बन जाते हैं। इस वचन से ऊपर लिखे मेरु-तन्त्रोक्त मन्त्र (२) को व आगे दिये द्वादशाक्षर (१) को पुष्टि होती है।

(४) तार-शक्तिर्वधू-बीजान्यन्ते दीर्घ-तनुच्छद, अस्त्रमग्नि-वधूरन्ते मनुः सप्ताक्षरो भवेत्—**ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा** 'मन्त्र-कोष'

(५) लिखेत् ख कूर्च-संयुक्तं रौद्र त्रैगुण्यमेव च, विधि-विष्णु-महेशाना स्व-शक्त्या क्रम-योगतः—**खं हूं ह्रीं ॐ ऐं श्रीं ह्रीं** 'मन्त्र-कोष' एव अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे।

७ अष्टाक्षर : (१) शिव-बीजं महेशानि ! शक्ति-बीज ततः परं, बिन्दु-सर्ग-समायुक्तं वेदाद्य तदध क्रमात्। माया स्त्री वर्म-बीजान्ते हस-बीजमुदाहृतं—**हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं हंसः**

(२) पञ्चाक्षरी च या विद्या हसाद्यन्ता महोदया, केवल त्वत्-प्रयत्नेन तव स्नेहात् प्रकीर्तिता—**हंसः ह्रीं स्त्रीं हूं फट् हंस.** 'मन्त्र-कोष' एव अप्रकाशित 'तन्त्र-दायिनी' मे 'स्वच्छन्द-संग्रह' से।

(३) वाग्भव कुल-देवी च तारक-वाग्भव तथा, हृल्लेखा चास्त्र-मन्त्रान्ते वह्नि-जायावधिः मनुः—**ऐं स्त्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा** 'तन्त्र-दायिनी' मे 'मातृकार्णव से।

८ नवाक्षर : वर्गाद्य वह्नि-संयुक्तं वामाक्षि - परिभूषितं, नाद - बिन्दु - समायुक्तं वसु-सिद्धि-प्रदायकं। पुनश्चतुर्मुखं देवि ! लकारेण विभूषितं, स्वरेणैव चतुर्थेन चन्द्र-खण्डेन च प्रिये, लाञ्छितं वै महा-बीज चतुर्वर्ग-फल-प्रद। ततः कृष्ण-पद चोक्त्वा ततो देवि - पदं स्मृतं, ह्रींकार च ततो दद्याद् प-

पूर्वमुद्धरेत् ततः। ईकारेण च रेफेण मकारेण विभूपितं, ततो वाग्भवमुच्चार्य मन्त्रमेन समुद्धरेत्—फ्रीं क्लीं कृष्ण-देवि ह्रीं क्रीं ऐं

'मन्त्र-कोष'। 'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग मे उक्त उद्धार 'तारिणी-कल्प' के अन्तर्गत 'तारिणी-तन्त्र' से उद्धृत है, किन्तु उसमे 'लकारेण' के स्थान पर 'तकारेण' है, जिससे मन्त्र के द्वितीय वीज 'क्ली' के स्थान पर 'क्तीं' प्राप्त होता है, जो ठीक नही प्रतीत होता। 'ख-पूर्वं' के स्थान पर 'व'-पूर्वं है, जिससे मन्त्र के अष्टम वीज 'क्री' के स्थान पर 'स्त्री' की प्राप्ति होती है, जो अशुद्ध है। अतः ऊपर सशोधित मन्त्र ही दिया गया है। भगवती तारिणी का यह नवार्ण मन्त्र जाड्य-नाशक, चतुर्वर्ग-फल-दायक, मन्त्र-सिद्धि-प्रद और अष्ट-सिद्धि-दायक है।

'तारिणी-तन्त्र' के अनुसार वही उक्त मन्त्र के ऋषि शक्ति, छन्द बृहती, देवता तारिणी, वीज 'ह्रीं', शक्ति 'ऐं' वताए हैं। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कृष्णा लम्बोदरीं भीमां नाग-कुण्डल-शोभितां, रक्त-मुखीं ललज्जिह्वा रक्ताम्बर-धरां कटौ।
पीनोन्नत - स्तनीमुग्रा महा - नागेन वेष्टिता, शवस्योपरि देवेशि! तस्योपरि कपालके।
नासाग्र-ध्यान-निरता महा-घोरा वर-प्रदा, चतुर्भुजा दीर्घ-केशीं दक्षिणस्योर्ध्व - बाहुना।
विभ्रतीं नलिनीमेका वामोर्द्धे पान - पात्रकं, वराभय - धरा देवीमधस्ताद् दक्ष - वामयो.।
पिबन्तीं रौधिरीं धारा पान-पात्रे सदाशिवे, सर्व-सिद्धि-प्रदां देवीं नित्यां गिरि-निवासिनीम्।
लोचन-त्रय-सयुक्ता नाग-यज्ञोपवीतिनीं, दीर्घ-नासा दीर्घ-जङ्घा दीर्घाङ्गीं दीर्घ-जिह्विकाम्।
चन्द्र-सूर्याग्नि - भेदेन त्रिलोचन - समन्विता, शत्रु-नाश-करीं देवीं महा - भीमा वर-प्रदाम्।
व्याघ्र-चर्म-शिरो-बद्धा जगत्-त्रय-विभाविता, साधकाना सुख कर्त्री सर्व-लोक-भयङ्करीम्।
एवम्भूता महा-देवीं तारिणीं प्रणमाम्यहम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप का निर्देश है।

'हिन्दी तन्त्रसार' मे उद्धृत 'तारिणी कल्प' मे यही नवाक्षर मन्त्र दिया है किन्तु यहाँ इसके ऋषि 'शङ्कर' वताए हैं। साथ ही मन्त्र के १, १, ४, १, १, १ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास से करने का निर्देश किया है। ध्यान वही है, केवल अन्तिम पक्तियो मे आए 'विभाविता' के स्थान पर 'विभाविनी' पाठान्तर है।

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५५६ मे 'कृष्णा देवी (तारणी) महा-कल्प' शीर्षक के अन्तर्गत उक्त नवाक्षर मन्त्र दिया है, किन्तु मन्त्र-गत 'कृष्ण'-पद के स्थान पर वहाँ 'कृष्णा' दिया है। ऋषि 'शक्ति' बताये हैं और षडङ्ग-न्यास मात्र 'ह्रीं'-वीज द्वारा करने का निर्देश है। ध्यान मे निम्न नौ पाठान्तर है—(१) स्तनीमुग्रा · स्तन-युगा (२) देवेशि · देवेशीं, (३) दक्षिणस्योर्ध्व दक्षिणेनोर्ध्व (४) मधस्ताद्: मध्यस्था, (५) पान-पात्रे पान पात्र, (६) दीर्घ-नासा दीर्घ-जघा दीर्घास्या दीर्घ-जघा तु, (७) त्रिलोचन-समन्विता लोचन-त्रय-सयुता, (८) विभाविता . विभाविनी, (९) तारिणी तारणी।

९ दशाक्षर (१) प्रणव पूर्वमुद्धृत्य तारे तु तारे तथा, तत्तारे स्वाहेति मन्त्रोऽय दशाक्षरः उदाहृत.—ॐ तारे तारे तत् तारे स्वाहा 'मन्त्र-कोष'

(२) प्रणव पूर्वमुद्धृत्य तारे तत्-तारे च तथा, तुरे स्वाहेति मन्त्रोऽय दशाक्षर इतीरित.—ॐ तारे तत्तारे तुरे स्वाहा

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग में 'गन्धर्व तन्त्र' से उद्‌धृत। ध्यान—

श्याम-वर्णां द्वि-नयनां द्वि-भुजां वर-पङ्कजे, दधानां बहु-वर्णाभिर्बहु-रूपाभिरावृताम्।
शक्तिभिः स्मेर-वदनां स्फुरन्मौक्तिक-भूषणां, रत्न-पादुकयोर्न्यस्त-पादाम्बुजां स्मरेत्॥

पुरश्चरण में दस लाख जप कर घृताक्त रक्त-पुष्पों से दशांश होम। इस मन्त्र से सभी मनोरथों की पूर्ति होती है।

(३) प्रणवं पूर्वमुद्‌धृत्य तारे तुतारे तुरे च, ततः स्वाहेति मन्त्रोऽयं मया प्रोक्तो दशाक्षरः—**ॐ तारे तुतारे तुरे स्वाहा** वही, 'ब्रह्म-संहिता' से। यह भय-नाशक मन्त्र है।

१० द्वादशाक्षर : (१) वाचं लज्जां रमां कामं हसौंहुं चोग्रमुच्चरेत्, तारे हुं फडिति प्रोक्तो मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः—**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः हुं उग्रतारे हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। ब्रह्मोपासिता, तारकासुर को वर देते समय। 'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार—पञ्चमे वीजे सकारो हादिरान्तिमः।

(२) उपासिता ब्रह्मणा या (द्वादशाक्षर—१) तस्याः कूटे तु पञ्चमे, सौरुक्त्वा साधिता विद्या द्वादशार्णाति-बुद्धिदा—**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे हुं फट्**

'मेरु-तन्त्र'। हरि द्वारा उपासिता, वौद्ध-मार्ग के प्रचार हेतु। वही मन्त्र के ऋषि विष्णु कहे हैं।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १३८ में उद्धार—वाक्-शक्तिः कमला कामो हंसोऽनुग्रह-सर्गवान्, वर्मोग्र-तारे वर्मास्त्रं विष्णवर्चा द्वादशाक्षरो'।

(३) तृतीयं भुवनेशानी कमला-मीन-केतनः, भृगुर्मनु-युतः सर्गी शिवः कर्णेन्दु-संयुतः उग्र-तारे पुनर्वर्मफडन्ता विष्णु-पूजिता—**त्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे हुं फट्**

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग। इस उद्धार से स्पष्ट है कि यह मेरु-तन्त्रोक्त मन्त्र (२) का ही पाठान्तर है। केवल प्रथम वीज 'ऐं' के स्थान पर 'त्रीं' है, शेष समान हैं।

११ चतुर्दशाक्षर : प्रणवं पूर्वमुद्‌धृत्य उग्र-तारे ततः परं, मां तारय तारय स्वाहा—**ॐ उग्र-तारे मां तारय तारय स्वाहा**

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग में, 'ब्रह्म-संहिता' से उद्‌धृत। इस मन्त्र का १० बार जप करने से दंष्ट्रा-वान् हिंसक जीवों का भय-निवारण होता है।

१२ षोडशाक्षर : तारं माया वधूः कूर्चं काली काम-कला ततः, उग्र-तारे भगं कामः परा लक्ष्मीः शिवांकुशो। सा महा-षोडशी प्रोक्ता तारा-देव्या मयाऽधुना—**ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं ईं उग्र-तारे एं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रौं क्रों** वही, 'भैरव-तन्त्र' से उद्‌धृत।

१३ सप्त-दशाक्षर : प्रणवं पूर्वमुद्‌धृत्य पद्मे-युगं तथैव च, महा-पद्मे पदं ब्रूयात् पद्मावति-पदं ततः। माये स्वाहेति मन्त्रोऽयं प्रोक्तः सप्त-दशाक्षरः—**ॐ पद्मे पद्मे महा-पद्मे पद्मावति माये स्वाहा**

'मन्त्र-कोष'। 'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग मे उक्त उद्धार 'मत्स्य-सूक्त' का बताया है। केवल एक पाठान्तर है—पूर्वमुद्‌धृत्य : पूर्वमुच्चार्य। 'तन्त्र-दीपिनी' मे भी यही उद्धार है, उसमे एक पाठान्तर है—युग : युग्मं।

यह मन्त्र अर्ध-रात्रि में चतुष्पथ पर जप करने से शीघ्र कवित्व-शक्ति-दायक है।

१४ पञ्च-विंशाक्षर : प्रणवं भुवनेश्वरी ह्रां कूर्च-वीजं नमस्तारायै च समुच्चरेत्, सकल-दुस्तरं तारय तारयेति पुनः तार-युग्मं वह्नि-जाया मन्त्रोऽयं सुर-पादपः—ॐ ह्रीं ह्रां हूं नमस्तारायै सकल-दुस्तरं तारय तारय ॐ ॐ स्वाहा

'मन्त्र-कोष'। 'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल में इसी मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है—'प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य ह्ल्लेखा-वीजमुद्धरेत्, गगनं शेष-संयुक्तं विन्दु-नाद-विभूषितं। कूर्च-वीजं च हृदयं तारायै च समुद्धरेत्, सकल-दुस्तरं चैव तारय तारय पुनः। तार-युग्मं वह्नि-जाया मन्त्रोऽयं सुर-पादपः।' वहीं इसके पुरश्चरण में चार लाख जप निर्दिष्ट है।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वीं तरङ्ग में 'नील-तन्त्र' जैसा ही उद्धार है, केवल एक पाठान्तर है—'दुस्तरं चैव तारय'''पुनः : दुस्तरांस्तारय तारय तथा पुनः।' इस पाठान्तर के अनुसार मूल-मन्त्र में 'सकल-दुस्तरं' के स्थान पर 'सकल-दुस्तरान्' का निर्देश होता है, जो अधिक शुद्ध है। वहीं वताया है कि इस मन्त्र से साधक को गद्य-पद्य-मयी वाणी और अष्ट-सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

१५ द्वा-त्रिंशदक्षर : (१) त्री ह्री ह्रां हुं नमस्तारायै महा-पदमुच्चरेत् तारायै सकलेत्युक्त्वा दुस्तरात् तारय-द्वयं। वह्नि-जाया द्वा-त्रिंशदर्णो मनुर्मतः—श्रीं ह्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महा-तारायै सकल-दुस्तरात् तारय तारय तर तर स्वाहा 'मेरु-तन्त्र'।

(२) माया सानन्त-संयुक्ता वर्म हृन्डे-युता पुन', तारा-महा-पदाद्या सा भृगु-व्रह्मानलान्तिमः। दुस्तरांस्तारय-द्वन्द्वं तर-युग्मं च ठ-द्वयं, द्वा-त्रिंशदर्णा ताराद्या पूजास्याः पूर्ववन्मता—ॐ श्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महा-तारायै सकल-दुस्तरांस्तारय तारय तर तर स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १४५।

२ नील-सरस्वती

१ त्र्यक्षर : (१) तारास्त्र - रहिता (पञ्चाक्षर उग्रतारा-२) त्र्यर्णा महा - नील - सरस्वती—ह्रीं त्रीं हूं

'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' में उद्धार—ॐ फड्भ्या रहिता नील-सरस्वती सैव (पंचाक्षर-१)।

(२) त्र्यक्षरस्य विशेषोऽयं (चतुरक्षर-२) फटो यत्र न तत्र वैं—ह्रीं स्त्रीं हूं

'मन्त्र-कोष'। 'तारा-तन्त्र' मे इसी मन्त्र का उद्धार—पूर्वोक्त-मन्त्र-राजस्य (पञ्चाक्षर-२) मध्य-वीज-त्रयं प्रिये, कुल्लुका नाम देवी सा महा-नील-सरस्वती।

'श्रीतारा-नित्यार्चन' के 'विषय-प्रवेश' मे 'तारार्णव' का उद्धार—'अस्त्र-हीनमिदं (पञ्चाक्षर-२) नील-सरस्वत्या विनिर्दिशेत्।' वहीं पृष्ठ २१ पर विस्तृत ध्यान दिया है, जिसकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत हैं—

> लम्वोदरीं महा-देवीं व्याघ्र-चर्म-नितम्बिनीं, पीनोन्नत-पयोभारां रक्त-वर्तुल-लोचनाम्।
> श्वेतास्थि-पट्टिका-युक्तां कपाल-पञ्च-शोभितां, ललाटे रक्त-नागेन कृत-कर्णावतंसिनीम्।
> चतुर्भुजां रक्त-मांस-मुण्ड - मण्डित-मण्डिनीं, जटा-जूटाक्ष-सूत्रेण शोभितां तीक्ष्ण-धारया।
> खड्गेन दक्षिणस्योर्ध्वे शोभिनीं भीम-नादिनीं, तदधस्ताद् वीज-वृन्त-कर्तृ कालंकृतां पराम्।
> वामोर्ध्वे रक्त-नालेपद्-विकाशित-मनोहरं, दधतीं नील-पद्मं च तदधस्तात् कपालकम्॥

'तारा-भक्ति-सुधार्णव' मे 'तत्त्व-वोध' का उद्धार दिया है, जो 'तारार्णव' जैसा ही है।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में त्र्यक्षरा नील-सरस्वती का ध्यान—

नील-वर्णां त्रि-नयनां शवासन-समायुतां, विभ्रतीं विविधां भूषां मौलावक्षोभ्य-भूषिताम् ।

२ चतुरक्षर : लज्जा-वीजं वधू-वीजं ततो दीर्घ-तनुच्छदं, सारस्वतः परो मन्त्रः सम्प्रोक्तश्चतुरक्षरः—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वीं तरङ्ग । उद्धार से तीन ही वीज ज्ञात होते हैं, किन्तु 'चतुरक्षर'-पद से आदि के प्रणव की व्यञ्जना होती है, जिसकी पुष्टि सप्ताक्षर-मन्त्र के उद्धार से हो जाती है ।

३ पञ्चाक्षर : तदन्ते (चतुरक्षरान्ते) यदि फट्-कारो मनुः पञ्चाक्षरो भवेत्—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्
'वहीं' ।

४ सप्ताक्षर : तार-शक्ति-वधू-वीजान्यन्ते दीर्घ-तनुच्छदं, अस्त्रमग्नि-वधूरन्ते मनुः सप्ताक्षरो भवेत्—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा
वही ।

५ अष्टाक्षर : (१) मन्त्र-शास्त्रेषु सम्प्रोक्तस्तथा दीर्घेण वर्मणा, पुटितं च वधू-वीजमपरोऽसौ सप्ताक्षरः—ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा
'वहीं' ।

(२) वाग्भवं कुल-देवीं च तारकं वाग्भवं तथा, हृल्लेखा चास्त्र-मन्त्रान्ते वह्नि-जायावधिर्मनुः—ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा

'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल । मन्त्र के पाँच वीजों में से एक-एक वीज से पञ्चाङ्ग-न्यास कर शेष भाग अर्थात् 'फट् स्वाहा' से छठा न्यास करे । इस प्रकार षडङ्ग-न्यास कर पूर्वोक्त विधि से ध्यानादि पूजन करे ।

६ चतुर्दशाक्षर : तारः श्री-शक्ति-तार्तीये हूं फट् नील-सरस्वती, ङेऽन्ता वह्नि-वधू मन्त्रः प्रोक्तो मनु-लिपिः परः—ॐ श्रीं ह्रीं ह्सौः हूं फट् नील-सरस्वत्यै स्वाहा

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता नील-सरस्वती । मन्त्र के २, १, १, २, ६, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

खड्गं त्रिशूलं कर-पल्लवैः स्वैर्घण्टा-धृतं छिन्न-शिरो दधाना ।
पशुं पदाधः परि-मर्दयन्ती तनोतु भव्यानि सरस्वती नः ॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १४३ में उद्धार—'रमां माया ह्सौ व्यापिन्या रूढौ सर्ग-संयुतौ, वर्मास्त्रं नील भृगु-रस्वत्यै ठ-द्वयमीरितम् । प्रणवाद्यो मनुः सर्व-सिद्धिदो मनु-वर्णकः ।' इस उद्धार के अनुसार उक्त मन्त्र के 'हूं' के स्थान पर 'हुं' होना चाहिए । यहाँ ध्यान भिन्न दिया है—

घण्टा-शिरः-शूलमसिं कराग्रैः संविभ्रतीं चन्द्र-कलावतंसाम् ।
प्रमथ्नतीं पाद-तले पशुं तां भजे मुदा नील-सरस्वतीशाम् ।।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५३८ में 'मन्त्र-महोदधि' के समान ही मन्त्र दिया है किन्तु उसे 'पञ्च-दशाक्षर' बताया है, जो ठीक नहीं है । मन्त्र चतुर्दशाक्षर है । ध्यान में वहाँ एक पाठान्तर है—सरस्वतीशां : सरस्वती तां ।

७ (१) द्वा-त्रिंशदक्षर : वाक् शक्तिः कमला कामो भृगुरो-विन्दु-मण्डितः, पञ्च-वाणः परा-वाचौ कुटिलान्तेन्द्र-संयुक्तः । वाम-कर्णो लवाधारस्ततः स्त्रीमात्मको मनुः, नील-तारे-पदात् पश्चात् सरस्वति-पदं वदेत् । अग्नी रेफ-युतौ दीर्घ-वाम-नेत्रेन्दु-भूषितौ, काम-वीजं वली षष्ठ-स्वर-कुण्डल-मण्डितौ । चन्द्रः

सर्गी ततः पञ्च-बाणाद्यं बीज-पञ्चकं, सौः परा वह्नि-जाया स्यान्मन्त्रो द्वा-त्रिंशदक्षरः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नील-तारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सौः ह्रीं स्वाहा

वहीं। ऋष्यादि पूर्व-वत्। ध्यान—

नौकारूढां त्रिनेत्रामहि - लसित-तनु-सच्चिदानन्द - रूपाम्,
हस्तैः स्वीयैः कपालं त्रिशिख-क्रकचके कर्तृकां सन्दधाना।
अट्टाट्टहास्य-युक्तामनवरत - लसन्मुण्ड - मालाभिरम्याम्,
चीरोदञ्चित्-कठोर-स्थल-ललित-लसत्-किङ्किणीं भासमानाम्॥

पुरश्चरण में चार लाख जप कर मधुर-त्रय से युक्त किंशुक-पुष्पों से दशांश होम। विस्तृत पूजा-विधि, आवरण-पूजादि के विवरण के अन्त में निम्न चार ध्यान इस निर्देश के साथ और दिए हैं कि कार्य-विशेष के अनुसार ध्यान चुन लेना चाहिए—

१—चतुर्वक्त्रमष्ट-भुजां मुक्ताभरण - भूषितां, श्वेताम्बरामक्ष - मुद्रां शक्ति पाशं कमण्डलुम्।
पंकजं पुष्प-मालां च वराभीती भुजेषु च, शब्दाम्भोनिधि-मध्यस्थां हंस-याने विचिन्तयेत्॥
२—रक्ताम्बरां हेम-रत्न-नानालङ्कार-भूषितां, रत्न-दीपे महा-नीलां परिवारैः समावृताम्।
रत्न-सिंहासनारूढां वराभीत्यक्ष-मालिकां, दधतीं रत्न-चषकं स्थिति-रूपे विचिन्तयेत्।
३—रक्ताम्भो-निधि-मध्ये तु नौकारूढां विचिन्तयेत्, नव-वक्त्रां भाल-नेत्रां कृष्णाम्बर-भयानकां।
वराभये च दधतीं परशुं दर्विकां तथा, संहारास्त्रं वाम-हस्ते दक्षे पाशुपतं तथा।
त्रि-शीर्षं वाम-हस्तेन त्रिशूलं खड्ग-कर्तृके, पद्मं पाशं हलं शक्ति त्रिमूर्ति डिण्डिमं तथा।
खट्वाङ्गं मुशलं दोर्भिः शत्रु-भक्षण-मानसां, भक्तानां वर-दात्रीं च रक्षयन्तीं च साधकम्॥

(२) वाङ्-माया श्रीर्मनो-जन्मा हंसोऽनुग्रह-बिन्दु-युक्, स्त्री-बीजं नील-तारे स्यात् सम्बुद्धयन्ता सरस्वती। अत्री स-रेफौ क्रमतः शेष-वामाक्षि-संयुतौ, सानुस्वारो काम-बीजं फान्तो मांसाधि-बिन्दुगः। सर्गी भृगुर्वाग् हृल्लेखा कामोऽस्य सौ-द्वयं, सगान्तं भुवनेशानी स्वाहा द्वा-त्रिंशदक्षरी—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नील-तारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौ : ह्रीं स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १४५। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता नील-सरस्वती। मन्त्र के ५, ५, ८, ५, ५, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

शवासनां सर्प - विभूषणाढ्यां कर्त्रीं कपालं चषकं त्रिशूलं।
करैर्दधानां नर-मुण्ड-मालां त्र्यक्षां भजे नील-सरस्वतीं ताम्॥

पुरश्चरण में चार लाख जप, मधु-युक्त पलाश-पुष्पों से दशांश होम।

८ चतुस्त्रिंशदक्षर : वाङ्-माया-कमला-बीजमीशो भृगु-निषेवितः, चतुर्दशेन्दु-संयुक्तः परा भृगु-महेश्वरी। चतुर्दश-विसर्गाढ्यो वद-द्वन्द्वं च वाक्-पदं, वादिनीति पदं पश्चात् त्रीकार-त्रितयात् ततः। नील-सरस्वति-पदं त्रिधावृत्तिश्च वाङ्-मनोः। कह-शब्द-द्वयं पश्चात् कलरी वह्नि-वल्लभा, चतुस्त्रिंशद्-वर्ण-युक्तो नील-सारस्वतो मनुः—ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं ह्रीं स्हौः वद वद वाग्वादिनि त्रीं त्रीं त्रीं नील-सरस्वति ऐं ऐं ऐं कह कह कलरीं स्वाहा

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वीं तरङ्ग में 'सिद्ध सारस्वत' से उद्धृत। ऋषि गङ्गा-प्रवाह-मत्स्य-रूपी जनार्दन, छन्द अतिशय-वाक्-कविता, देवता सर्व-वागैश्वर्य-मयी समस्ताभीष्ट-दायिनी नील-सरस्वती, बीज 'ह्रीं', कीलक 'हूं', शक्ति 'ह्सौः'। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

नीलांशुकां मणि-मयीं च करेषु वीणां, मुद्रां च पात्रमथ पूर्ण-सुधां दधानाम् ।

उद्यच्चतुर्मुख-वहत्-कविता-प्रवाहां, नीलां भजामि हृदयेन सरस्वतीं ताम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर श्वेत उत्पलों से दशांश होम ।

३ एकजटा

१ त्र्यक्षर : मायया प्रणवेनाऽथ रहिता (पञ्चाक्षर-३) सैव सा (एकजटा) पुनः—**त्रीं हुं फट्**
'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वीं तरङ्ग ।

२ चतुरक्षर : (१) प्रणव-व्यतिरेकेण (पञ्चाक्षर-१) तृतीयैकजटा भवेत्—**ह्रीं स्त्रीं हूं फट्**
'तारा तन्त्र'। 'मन्त्र-कोष' में उद्धार—लज्जा-वीजं कूर्च-वीजं तथा हि फट् ।

'तारा-रहस्य' में उद्धार—लज्जा-वीजं वधूवीजं कूर्च-वीजमतः परं, अस्त्रान्त-मनुना ख्यातं पञ्च-रश्मि-स्वरूपकम् । इति एकजटा-विद्या सर्व-शास्त्रेषु गोपिता ।

(२) श्री वीजाद्या यदा विद्या तदा श्रीः सर्वतोमुखी—**श्रीं स्त्रीं हूं फट्**

(३) वाग्भवाद्या यदा विद्या वागीशत्व-प्रदायिनी—**ऐं स्त्रीं हूं फट्**

'तारा-रहस्य', प्रथम पटल के उक्त उद्धार-वचन के अनुसार क्रमांक २, ३ के दो अन्य मन्त्र प्राप्य हैं ।

(४) आदि-वीजेन (ॐ कारेण) वियुक्ता (रहिता) (पञ्चाक्षर-३) एकजटा प्रोदिता—**ह्रीं त्रीं हूं फट्**

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५२४ । 'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल में इस मन्त्र का विस्तृत उद्धार दिया है—प्रथमं स-परं दत्वा चतुर्थ-स्वर-भूपितं, रेफारूढं स्फुरद्-दीप्तमिन्दु-विन्दु-विभूपितं । त्रकारं च ततो दत्वा चतुर्थ-स्वर-भूपितं, दीर्घोकार-समायुक्तं हकारं योजयेत् ततः । फट्-कारं च ततो दद्यात् पूर्ण-सिद्धिमनुत्तमाम्, वितारैक-जटा चैपा महा-मुक्ति-करी सदा ।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', प्रथम तरङ्ग में भी उक्त उद्धार दिया है, जिसमें पांच पाठान्तर हैं—(१) प्रथमं स-परं : स-परं प्रथमं, (२) विभूपितं : समन्वितं, (३) दत्वा : दद्यात्, (४) चतुर्थ-स्वर-भूपितं : चतुर्थेनैव भूपितं, (५) पूर्ण-सिद्धिमनुत्तमां : सम्पूर्णः सिद्ध-मन्त्रकः । अन्तिम चरण (वितारैकजटा'''सदा) ता० भ० सु० में नहीं दिया है ।

'श्रीतारा-नित्यार्चन' के 'विपय-प्रवेश' के अन्तर्गत 'तारार्णव' का उद्धार—'माया त्री हूमप्यस्त्रान्तमित्येक-जटामर्चयेत् ।' वहीं, पृष्ठ २० पर ध्यान दिया है—

प्रत्यालीढ-पदां घोरां मुण्ड-माला-विभूपितां, खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्र-चर्मावृतां कटौ ।

नव-यौवन-सम्पन्नां पञ्च-मुद्रा - विभूपितां, चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महा-भीमां वर-प्रदाम् ।

खड्ग-कर्तृ - समायुक्तां सव्येतर - भुज-द्वयां, कपालोत्पल-संयुक्तां सव्य-पाणि-युगान्विताम् ।

पिङ्गोग्रैक - जटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्य-भूपितां, बालार्क-मण्डलाकारां लोचन-त्रय-भूपिताम् ।

ज्वलच्चिता-मध्य-गतां घोर-दंष्ट्रां करालिनीं, सुवेश - स्मेर-वरदां स्त्र्यलङ्कार-विभूपिताम् ।

चन्द्र-सूर्याग्नि-नयनां मद्य-पान- प्रमत्तिकां, विश्व-व्यापक-तोयान्तः-श्वेत-पद्मोपरि-स्थिताम् ।।

'तारार्णव' के उद्धार-जैसा ही मन्त्रोद्धार 'ता० भ० सु०' मे 'तत्व-बोध' का दिया है, जिसमे दो पाठान्तर हैं—(१) ह्रूमध्य : ह्रूमथा, (२) जटामर्चयेत् जटयाऽर्चयेत् ।

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग मे उक्त मन्त्र का सङ्केत भिन्न शब्दो मे मिलता है—'तृतीय-रहिता विद्या (पञ्चाक्षर-३) पूर्वोक्तैक-जटा मता ।'

३ पञ्चाक्षर : हरिरग्नि त्रिमूर्तीन्दु-युग् वर्म-पुटिताद्रिजा, अस्त्रान्ता पञ्च-वर्णोऽयं प्रोक्तमेक-जटा—त्रीं हुं ह्रीं हुं फट्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १३६ । ऋषि वशिष्ठ-पुत्र शक्ति, छन्द गायत्री, देवता एकजटा तारा ।

४ षडक्षर : तारो माया वर्म माया वर्मास्त्र च रसाक्षरी—ॐ ह्रीं हु ह्रीं फट्

वही । ऋष्यादि पूर्ववत् ।

५ द्वा विंशाक्षर : तारो परा नमो वान्त भगवत्येक-जटे मम वज्र-पुष्प द्वि-ठान्तो मनुरुच्यते—ॐ ह्रीं नमः भगवत्येकजटे मम वज्र पुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा

'तारा-भक्ति-सुधार्णव', ११ वी तरङ्ग । ऋषि पतञ्जलि, छन्द गायत्री, बीज 'ह्रीं' देवता एक-जटा । 'ह्रा, ह्रौ' से षडङ्ग-न्यास । ध्यान-पूजादि पूर्व-वत् ।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १४२ मे उद्धार—'माया हृद् भगवत्येकजटे मम जल स्थिरा, वह्निचा सन-गता पुष्प प्रतीच्छानल-वल्लभा । द्वा-विंशत्यक्षरो मन्त्रस्तारादिः सर्व-सिद्धिद ।' इस उद्धार के अनुसार वही पृष्ठ १४३ पर जो स्पष्ट मन्त्र दिया है, वह अशुद्ध है क्योंकि उसमे 'मम' शब्द नही है और 'भगवत्येकजटे' के स्थान पर 'भगवत्येकटे' छपा है । साथ ही 'विश्व व्यापक-वार-मध्य०' आदि ध्यान भी दिया है, जो पृष्ठ १३० पर प्रकाशित है । उसमे एक पाठान्तर है—चर्म-द्वैपि : चर्म-द्वीपि ।

हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५३७ मे इस मन्त्र के विनियोग व ऋष्यादि-न्यास मे बीज का उल्लेख नही है ।

विशेष · भगवती उग्रतारा के पचाक्षर १ व २, सप्ताक्षर—२ व ३, द्वादशाक्षर—१ व २ और भगवती एकजटा के पचाक्षर व षडक्षर—ये आठ मन्त्र शीघ्र सिद्धि-प्रदा 'अष्ट-विद्या' नाम से वर्जित हैं और इन सभी मन्त्रो के ऋष्यादि और ध्यान समान हैं, जो पृष्ठ १३२ पर पचाक्षर (३) मन्त्र के प्रसङ्ग मे निर्दिष्ट हैं ।

अन्य-मन्त्र

१ तारा-मन्त्राष्टक

१ पञ्चाक्षर 'तारा' ऊष्म-वर्ण-गतो (देखें पृष्ठ १३२, 'मन्त्र-कोष'-गत उद्धार—१)—ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्

२ चतुरक्षर 'उग्रा' : मध्यादि (तारा-मन्त्र ८) माया-कवचं द्वितीय मन्त्रमुत्तमम्—स्त्रीं ह्रीं हूं फट्

३ चतुरक्षर 'महोग्रा' : विपरीत (तारा-मन्त्र ८) त्रिधा ज्ञेय—हू स्त्रीं ह्रीं फट्

४ चतुरक्षर 'वज्रा' : कूर्चाद्य (तारा-मन्त्र ८) च तुरीयकम्—हू ह्रीं स्त्रीं फट्

५ चतुरक्षर 'नीला' : मायादि कवचान्त च पञ्चम परि-कीर्तितम्—ह्रीं स्त्रीं फट् हू

६ चतुरक्षर 'सरस्वती' माया मध्य-गत षष्ठम्—स्त्रीं ह्रीं हू फट् हू

७ चतुरक्षर 'कामेश्वरी' : द्वितीयान्तं च सप्तमं—ह्रौं हूं स्त्रीं फट्

८ चतुरक्षर 'भद्र-काली' : अष्टमं कूर्च-मध्यं स्यादेवं भेदाष्टकं भवेत्—स्त्रीं हूं ह्रीं फट्

'नील-तन्त्र', सप्तदश पटल। आठों मन्त्रों के ऋषि अष्टक, छन्द अनुष्टुप्, देवता शम्भु-पत्नी तारा या उग्रा, महोग्रा आदि, विनियोग 'चतुर्वर्ग-सिद्धि'। पुरश्चरण में (काल-लक्ष) छः लाख जप।

'तारा-भक्ति सुधार्णव', एकादश तरङ्ग में ये 'मन्त्राष्टक' 'माया-तन्त्र' से उद्धृत हैं। वहाँ ७ वें मन्त्र के उद्धार में 'द्वितीयान्तं के स्थान पर 'द्वितीयान्त्यं' और ८ वें में 'कूर्च-मध्यं' के स्थान पर 'कवच-मध्यं' है।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपनी' में भी मन्त्राष्टक के यही उद्धार दिये हैं। केवल आठवें मन्त्र के उद्धार में 'कूर्च' के स्थान पर 'कवच' है, जिससे मन्त्र का स्वरूप बदल जाता है, यथा—स्त्रीं हुं ह्रीं फट्

२ तारा-मन्त्र-पञ्चक

१ षडक्षर : वेदाद्यं चैव लज्जां च वधू-कूर्चं नमोऽन्वितं, तारा षडक्षरी विद्या सर्व-तन्त्रेषु गोपिता—ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं नमः

२ पञ्चाक्षर 'बीज-तारा' : कूर्चं मायां वधूं चैव पुनः कूर्चं च फट्-युतं, एषा विद्या महा-विद्या बीज-तारा प्रकीर्तिता—हूं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्

३ पञ्चाक्षर : कामं लज्जां च स्त्री-बीजं कूर्च-बीजं तथा हि फट्, एषा हि परमा विद्या सर्व-काम-प्रदायिका—क्लीं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्

४ षडक्षर : प्रणवं चैव लज्जां च कूर्च-युग्मं नमोऽन्वितं, एषा षडक्षरी विद्या सर्व-तन्त्रेषु गोपिता—ॐ ह्रीं हूं हूं नमः

५ अष्टाक्षर 'ब्रह्म-विद्या' : वाग्भवं प्रथमं देवि ! बालायाश्च तृतीयकं, वेदाद्यं वाग्भवं देवि ! कामं च स्वाहया युतं। एषा त्वष्टाक्षरी विद्या ब्रह्म-विद्या प्रकीर्तिता—ऐं सौः ॐ ऐं क्लीं स्वाहा क्लीं

पाँचों मन्त्र 'तारा-भक्ति-सुधार्णव', एकादश तरङ्ग में 'भैरव तन्त्र' के अनुसार आयु-श्री-कान्ति-कविता-विद्या-सौभाग्य-दायक और अन्त में जीवन्मुक्ति-प्रद बताये हैं।

३ हंसः-तारा मन्त्र

अष्टाक्षर : (१) शिव-बीजं महेशानि ! शक्ति-बीजं ततः परं, बिन्दु-सर्ग-समायुक्तं वेदाद्यं तदधः पठेत्। माया-स्त्री-वर्म-बीजान्तं हंस-बीजमुदाहृतं। एषा त्वष्टाक्षरी विद्या कथिता भुवि दुर्लभा—ह्रौं सौं ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं हंसः

वही, 'स्वच्छन्द-संग्रह' के अनुसार आज्ञा-सिद्धि-कारक, त्रैलोक्य-वशंकर यह मन्त्र है। ज्ञानार्थी ज्ञान, धनार्थी धन, मोक्षार्थी मोक्ष पाता है।

(२) वाग्भवं कुल-देवी च तारकं वाग्भवं तथा, हृल्लेखा चास्त्र-मन्त्रान्ते वह्नि-जायावधिर्मनुः। अष्टाक्षरः परः प्रोक्तो वेद-मातुरनुत्तमः—ऐं स्त्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा

वही, 'मातृका'वि' से। मन्त्र के पाँच बीजों से पंचाङ्ग-न्यास कर शेष अक्षरों से अस्त्र-न्यास करे।

४ तारा के शिव—अक्षोभ्य

१ अष्टाक्षर : ॐ स्त्रीं आं अक्षोभ्य स्वाहा

'श्रीतारा-नित्यार्चन', पृष्ठ ४६ । ऋषि ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर, छन्द विराट्, देवता अक्षोभ्य भैरव, बीज 'स्त्रीं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ॐ', विनियोग 'चतुर्वर्ग-सिद्धयर्थे' । ध्यान—

सहस्रादित्य-सङ्काशं नाग-रूप-धरं शुभं, विद्युत्-कोटि-समं वक्त्रं वह्निभं रक्त-लोचनम् ।
सार्द्ध-त्रिवलयोपेतं जटा-कोटिर-संस्थितं, महा-लावण्य - संयुक्तं सुरासुर - नमस्कृतम् ।।

'तोडल तन्त्र', प्रथम पटल में ध्यान—

समुद्र-मध्ये देवि ! काल-कूटं समुत्थितं सर्वे देवाः स-दाराश्च महा-क्षोभमवाप्नुयुः ।
क्षोभादि-रहितं यस्मात् पीतं हालाहलं विषं, अतएव महेशानि ! अक्षोभ्यः परिकीर्तितः ।

२ द्वादशाक्षर : अक्षोभ्य वज्र-पुष्पं च प्रतीच्छानल-वल्लभा—अक्षोभ्य वज्र-पुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' में पूजन-मन्त्र ।

५ तारा-गायत्री

१ उग्रतारा : (१) तारायै विद्महे प्रोक्त्वा महोग्रायै च धीमहि, तन्नो देवीति शब्दान्ते धियो यो नः प्रचोदयात्—तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी धियो यो नः प्रचोदयात्

'नील तन्त्र', द्वितीय पटल ।

(२) ॐ तारायै विद्महे इति महोग्रायै ततो वदेत्, धीमहीति ततः पश्चात् ततो देवि प्रचोदयात्—ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि देवि प्रचोदयात् 'तोडल तन्त्र', तृतीय पटल ।

(३) ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् 'श्रीतारा-नित्यार्चन', पृष्ठ ६ ।

२ एक-जटा : ॐ भगवत्येक-जटे विद्महे घोर-दंष्ट्रे धीमहि तन्नस्तारे प्रचोदयात्

'श्रीतारा-नित्यार्चन', पृष्ठ ११ ।

३ नील-सरस्वती : ॐ नील-सरस्वत्यै धीमहि शारदायै विद्महे तन्नः शिवे प्रचोदयात्

'श्रीतारा-नित्यार्चन', पृष्ठ ११ ।

भगवती षोडशी

'दश महा-विद्याओं' में तीसरी महा-विद्या भगवती षोडशी हैं, अतः इन्हें 'तृतीया' भी कहते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वास्तव में आदि-शक्ति एक ही हैं, उन्हीं का आदि रूप 'काली' है और उसी रूप का विकसित स्वरूप 'षोडशी' है, इसी से 'षोडशी' को 'रक्त-काली' नाम से भी स्मरण किया जाता है। भगवती तारा का रूप 'काली' और 'षोडशी' के मध्य का विकसित स्वरूप है। प्रधानता दो ही रूपों की मानी जाती है और तदनुसार 'काली-कुल' एवं 'श्री-कुल' इन दो विभागों में दशों महा-विद्यायें परिगणित होती हैं। इन दोनों कुलों का परिचय 'क्रम-दीक्षा-पूर्वक पूर्णाभिषेक' नामक पुस्तिका से ज्ञातव्य है। अस्तु।

भगवती षोडशी के मुख्यतः तीन रूप है—(१) श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी या श्री बाला त्रिपुरा, (२) श्री ललिता त्रिपुर-सुन्दरी या श्री श्रीविद्या, (३) श्री षोडशी या महा-त्रिपुर-सुन्दरी।

'श्री बाला' का मुख्य मन्त्र तीन अक्षरों का है और उनका पूजा-यन्त्र 'नव-योन्यात्मक' है। अतः उन्हें 'त्रिपुरा' या 'त्र्यक्षरी' नामों से भी अभिहित करते हैं।

'श्री ललिता' या 'श्री श्रीविद्या' का मुख्य मन्त्र पन्द्रह अक्षरों का होने से उनका नामान्तर 'पञ्च-दशी' भी है। इनका पूजा-यन्त्र 'श्री-चक्र' या 'श्री-यन्त्र' नाम से प्रसिद्ध है।

'श्री षोडशी' या 'महा-त्रिपुरसुन्दरी' का मुख्य मन्त्र सोलह अक्षरों का है, उसी के अनुरूप उनका नाम है। पूजा-यन्त्र 'श्रीललिता'-जैसा ही है।

'श्री ललिता' एवं 'श्री षोडशी' के मन्त्रों में तीन 'कूटों' का समावेश है, जो क्रमशः 'वाक्-कूट', 'काम-कूट' और 'शक्ति-कूट' नामों से प्रसिद्ध हैं। इन कूटों की विस्तृत व्याख्या गुप्तावतार बाबा श्री ने 'मुमुक्षु-मार्ग' में की है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि पञ्चदशी के कूट-त्रय 'क', 'ह' या 'स' से प्रारम्भ होते हैं। अतः विभिन्न मन्त्र 'कादि', 'हादि' और 'सादि'-विद्या नाम से जाने जाते हैं।

भगवती षोडशी से सम्बन्धित पूजा-यन्त्र 'श्री-यन्त्र' या 'श्री-चक्र' की विशेष ख्याति है। इस तरह का जटिल पूजा-यन्त्र अन्य किसी देवता का नही है। वह पिण्ड और ब्रह्माण्ड के समस्त रहस्यों का बोधक है। इसी से उसे 'यन्त्र-राज' या 'चक्र-राज' भी कहते हैं।

उक्त विषयों के सम्बन्ध में 'मुमुक्षु-मार्ग', 'मन्त्रसिद्धि का उपाय', 'शाक्तधर्म - विशेषाङ्क', 'श्रीबाला-नित्यार्चन', 'श्रीबाला-स्तव-मञ्जरी' 'श्री 'श्रीविद्या-नित्यार्चन', 'श्री श्रीविद्या-स्तव-मञ्जरी', 'सविधि श्रीललिता-सहस्रनाम व्याख्या', 'श्री-कल्पद्रुम', 'सार्थ सौन्दर्य-लहरी', 'श्री-चक्र-रहस्य' आदि जैसी पुस्तकों से विस्तृत विवरण जाना जा सकता है।

भगवती षोडशी की उपासना को जगद्गुरु श्री आदि शङ्कराचार्य जी ने मान्यता दी और उनके द्वारा स्थापित चारों पीठों में आज भी 'श्री श्री-यन्त्र' की प्रतिष्ठा है और उन्हीं का विधिवत् पूजन-अर्चन वहाँ सनातन रूप से होता आ रहा है।

भगवती पञ्चदशी और षोडशी की उपासना का अधिकार उन्हीं को प्राप्त होता है, जो विधिवत् भगवती बाला की उपासना कर क्रमशः शाक्त-दीक्षा, शांक्ताभिषेक और पूर्णाभिषेक - संस्कार से संस्कृत होते हैं। अतः यहाँ उक्त तीनों रूपों के मन्त्रों को क्रमपूर्वक संगृहीत किया गया है।

'श्री श्रीविद्या' की उपासना का घनिष्ठ सम्बन्ध 'आम्नायों' से है। अतः 'आम्नाय' के सम्बन्ध में जानना आवश्यक है। इसके लिए 'साधना और आम्नाय' नामक पुस्तक द्रष्टव्य है।

भगवती श्री षोडशी के मन्त्र

१ श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी (श्रीबाला, श्रीत्रिपुरा, श्रीबाला त्रिपुरा)

१ त्र्यक्षरी बाला त्रिपुरा : (१) अधरो विन्दुमानन्त्यं ब्रह्मेन्द्रस्थः शशि-युतः, द्वितीयं भृगु-सर्गाढ्यो मनुस्तार्तो समीरितः। एषा बालेति विख्याता त्रैलोक्य-वश-कारिणी। अस्यार्थः—वाग्भव-वीजं स-विसर्गं-चतुर्दश-स्वर-युक्तं—ऐं क्लीं सौः

'मन्त्र-कोष'। वहीं एक और मन्त्रोद्धार है—सूर्य-स्वरं समुच्चार्य विन्दु-नाद-कलान्वित, स्वरान्त-पृथिवी-संस्थं तूर्य-स्वर-समन्वितं। विन्दु-नाद-कलाक्रान्तं सर्गवान् भृगुरव्ययः (अव्ययो विन्दुः), शक्र-स्वर-समायुक्ता विद्येयं त्र्यक्षरी मता। इयमभिशप्ता शापोद्धारमाह मुण्ड-माला-तन्त्रे—केवलं शिव-रूपेण शक्ति-रूपेण केवलं, माया - प्रतिष्ठिता विद्या तारा - चन्द्र - स्वरूपिणी। हकार - सकारौ वाग्भवे काम - वीजे च तृतीय-वीजे तु हकारः।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' में भी 'सूर्य-स्वरं०' इत्यादि मन्त्रोद्धार ही दिया है।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २१७—दामोदरश्चन्द्र-युतः आद्यं वाग्-वीजमीरितं, विधिर्वासव-शान्तीन्दु-युक्तं काम - भिदं परं। सङ्कर्षण विसर्गाढ्यो भृगुस्तार्तीयमीरित, त्रि-बीजी गदिता बाला जगत्-त्रितय-मोहिनी।

'वही', पृष्ठ २३६ मे भिन्न शब्दो मे मन्त्रोद्धार है—माया कामोऽम्बरारूढं तार्तीयं त्र्यक्षरो मनुः।

'त्रिपुरा-सार-समुच्चय', पृष्ठ ११ मे—कान्तादि-भूत-पदगं क-गतार्द्ध-चन्द्र, दन्तान्त-पूर्व-जलधि-स्थित-वर्ण-युक्त। एतज्जपन् नर-वरो भुवि वाग्भवाख्य, वाचा सुधा-रस-मुचा लभते स सिद्धि। कान्तान्तं कुल-पूर्व-पञ्चम-युतं नेत्रान्त-दण्डान्वित, कामाख्यं गदित जपन् मनुरयं साक्षाज्जगत्-क्षोभ-कृत्। दन्तान्तेन युतं स-दन्ति-सकलं सम्मोहनाख्यं कुलं, सिद्धत्यस्य गुणाष्टकं खचरता-सिद्धिश्च नित्यं जपात्।

'विश्वसार-तन्त्र' मे उद्धार—वाग्भवं प्रथम प्रोक्तं द्वितीयं काम-राजकं, तृतीय शक्ति-वीजं स्यात् मन्त्रोद्धारः प्रकीर्तितः।

'मेरु-तन्त्र' में—स-विन्दवो द्वादशैव स्वरः प्रथम - वीजकं, द्वितीयं काम-वीजं स्यात् तृतीयं सौरिति स्मृतं।

'महाकाल-संहिता', काम-कला-काली-खण्ड में—'आदौ वाग्भवमुद्धृत्य काम-वीजं तत परं, सकारोऽधो-दन्त-युतो महा-सेन-विराजितः। त्र्यक्षरः परमो मन्त्रो विद्यैश्वर्य - प्रदायकः।' वहाँ ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

> समुद्यद्-रवि-बिम्बाभामरुण-क्षौम - धारिणीं, फुल्ल-राजीव-वदनां पीनोत्तुङ्ग-पयोधराम्।
> रत्न-केयूर-ताटङ्क-मुक्ता-हार-विराजितां, त्रि-नेत्रां बाल-शीतांशु-खण्ड-शोभि-ललाटिकाम्।
> पद्मोपरि समासीनां बालां देवीं चतुर्भुजां, विद्यामभीतिं वामेन दक्षे जप - वटीं वराम्।
> धारयन्तीं जगद्धात्रीं सर्वदैव हसन्मुखीं, सञ्चिन्त्य न्यसनं कुर्यादप्रमत्तेन चेतसा॥

'मन्त्र-महोदधि', के अनुसार ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता त्रिपुरा बाला, वीज 'ऐं', शक्ति 'सौः', कीलक 'क्लीं', विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धि'। 'सौः क्लां ऐं, सौः क्लीं ऐं, सौः क्लूं ऐं, सौ क्लैं ऐं, सौः क्लौं ऐं, सौः क्लः ऐं' से क्रमशः षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

> रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसां समुद्यदादित्य - निभां त्रिनेत्राम्।
> विद्याक्ष-मालाभय-दान-हस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम्॥

पुरश्चरण में तीन लाख जप और मधु-युक्त किंशुक (टेसू) या कनेर के फूलों से दशांश होम।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' के अनुसार षडङ्ग-न्यास, क्रमशः 'ऐं, क्लीं, सौः, ऐं, क्लीं, सौः' इन छः बीजों से करना चाहिए।

'विश्वसार तन्त्र' के अनुसार छन्द 'गायत्री' है और ध्यान निम्न प्रकार है—

मुक्ता-शेखर - कुण्डलाङ्गद-मणि-ग्रैवेयक-हारोर्मिकां,
विद्योतिर्वलयादि-कङ्कण-वटी - सूत्रां स्फुरन्नूपुराम्।
माणिक्योदर-बन्ध-कञ्चुक-धरामिन्दोः कलां बिभ्रतीं,
पाशं सांकुश-पुस्तकाक्ष-वलया दक्षोद्‌र्ध्व-बाह्वादितः।
पूर्णेन्दु - प्रतिम - प्रसन्न - वदनां नेत्र - त्रयोद्‌भासितां,
इन्दु-क्षीर - वलक्ष - गात्र-विलसन्माल्यानुलेपाम्बराम्।
मूलाधार-समुद्‌गता-भगवतीं हृत्-पङ्कजे चिन्तयेत्॥

'वही'। पुरश्चरण में तीन लाख जप और क्षीराज्य-खण्ड-युक्त करवीर (कनेर) पुष्पों से दशांश होम का निर्देश है।

'मेरु-तन्त्र' में ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

अभयं पुस्तकं मालां वरं च दधतीं करैः। अरुणामरुणाब्जस्थां रक्त-वस्त्रां द्विजेशकाम्॥

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६१६ में षडङ्ग-न्यास क्रमशः 'आं सौः क्लीं ऐं, ईं सौः क्लीं ऐं, ऊं सौः क्लीं ऐं, ऐं सौः क्लीं ऐं, औं सौः क्लीं ऐं, अं सौः क्लीं ऐं' से करने का निर्देश किया है। वहीं कामना के अनुसार भिन्न-भिन्न ध्यान भी बताए हैं। यथा—१ लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए, २ ज्ञान-प्राप्ति के लिये, ३ रोग-शान्ति के लिए और ४ वशीकरण हेतु—

१. मातुलिङ्ग-पयोजन्म-हस्तां कनक-सन्निभां, पद्मासन-गतां बालां लक्ष्मी-प्राप्तौ विचिन्तये।
२. वर-पीयूष-कलश-पुस्तकामीति-धारिणीं, सुधां स्रवन्तीं ज्ञानाप्तौ ब्रह्म-रन्ध्रे विचिन्तये।
३. शुक्लाम्बरां शशाङ्काभां रोग-नाशे स्मरे शिवां, अकारादि-क्षकारान्त-वर्णावयव-रूपिणीम्।
४. सृणि-पाश- धरां देवीं रत्नालङ्कार - भूषितां, प्रसन्नामरुणां ध्याये वशीकरण - सिद्धये।

वही, उक्त त्र्यक्षरी विद्या के प्रत्येक बीज के जप और ध्यान की भी विधि बताई है। ध्यान कर प्रत्येक बीज का तीन लाख जप कर प्रथम बीज के जप के बाद मधु-युक्त पलाश-पुष्पों से और द्वितीय व तृतीय बीज-जप के बाद चन्दन-लिप्त मालती-पुष्पों से दशांश होम करना चाहिए। प्रथम व तृतीय बीज के जप के समय श्वेत वस्त्र व श्वेत ही अनुलेप, आभूषणादि और द्वितीय बीज में रक्त-वस्त्र व रक्त - चन्दनादि साधक को धारण किये रहना चाहिये। ध्यान निम्न प्रकार करे—

ऐं : विद्याक्ष-माला-सुकपाल-मुद्रा-राजत्-करां कुन्द - समान - कान्तिम्।
मुक्ता-फलालंकृति-शोभिताङ्गीं, बालां स्मरेद् वाङ्मय-सिद्धि-हेतोः॥

क्लीं : भजेत्-कल्प-वृक्षाध उद्‌दीप्त-रत्नासने सन्निषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम्।
करैर्बीज-पूरं कपालेषु-चापं, स-पाशांकुशां रक्त - वर्णां दधानाम्॥

सौः : व्याख्यान-मुद्रामृत - कुम्भ - विद्यामक्ष - स्रजं सन्दधतीं कराग्रैः।
चिद्-रूपिणीं शारद-चन्द्र-कान्ति, बालां स्मरेन्मौक्तिक-भूषिताङ्गीम्॥

(२) वागन्त्य-कामान् प्रजपेद्वरीणां क्षोभ-हेतवे—ऐं सौः क्लीं
(३) काम-वागन्त्य-बीजानि त्रैलोक्यस्य वशीकृतौ—क्लीं ऐं सौः
(४) कामान्त्य-वाणी-बीजानि मुक्तये नियतो जपेत्—क्लीं सौः ऐं

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव,' पृष्ठ ६२४ पर क्रमाङ्क २, ३, ४ के मन्त्र कामना-भेद के अनुसार जपने के लिए निर्दिष्ट किए गये हैं।

(५) माया-कामोऽम्बरारूढं तार्तीयं त्र्यक्षरो मनुः—ह्रीं क्लीं ह्सौः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २३६। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द गायत्री, देवता त्रिपुरा बाला, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्सौः', कीलक 'क्लीं'। ध्यान—

पाशांकुशौ पुस्तकमक्ष - सूत्रं, करैर्दधाना सकलाऽमरार्च्या।
रक्ता त्रि-नेत्रा शशि-शेखरेयं, ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुराऽत्र बाला॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर कनेर पुष्पों से दशांश होम।

उक्त त्र्यक्षर मन्त्र के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि इस मन्त्र द्वारा 'त्रिशक्ति - लक्ष्मी-रूपा बाला त्रिपुरा' की भी उपासना होती है। उस रूप का ध्यान निम्न प्रकार निर्दिष्ट है—

स्मेराननां चतुर्हस्तां पुस्तकाक्ष-वराभयां, त्रि-शक्ति-रूपिणीं बालां शरच्चन्द्र-सम-प्रभाम्।
रक्ताम्बरां चन्द्र-मौलीं ध्यायेल्लक्ष्मी-स्वरूपिणीम्॥

यहाँ उल्लेखनीय है कि देवता का नाम 'बाला त्रिपुर - सुन्दरी' होने पर ध्यान निम्न प्रकार करना चाहिये—

अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा, विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था, निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला॥

भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी के 'पञ्च-प्रेतासना'-रूप का ध्यान निम्न प्रकार है—

बालां बाल-दिवाकर-द्युति-निभां पद्मासने संस्थिताम्,
पञ्च-प्रेत-मयाम्बुजासन-गतां वाग्वादिनी-रूपिणीम्।
चन्द्रार्कानल - भूषित - त्रिनयनां चन्द्रावतंसां प्रभाम्,
विद्याक्षाभय-बिभ्रतीं वर-करां वन्दे परामम्बिकाम्॥

२ पञ्चाक्षरी : (१) वाग्भवं क्लेदिनी-बीजमीकारान्तं ततः परं, शक्तिमौकार-संयुक्तं विसर्गं तदधः क्रमात्। नाद-विन्दु-शिखाक्रान्तं बीजं परम - दुर्लभं, एतद्-बीज-त्रयं देवि! सौः क्लीं च तदनन्तरं। इयं पञ्चाक्षरी विद्या कथिता भुवि दुर्लभा—ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं

(२) बाला - बीज-त्रयं देवि! हंसाद्यं वा जपेत् प्रिये—हंसः ऐं क्लीं सौः

(३) हंसान्तं वा महा-भागे! सुप्तादि-दोष-शान्तये—ऐं क्लीं सौः हंसः

'मन्त्र-कोष'। 'श्री-क्रम' में भी तीनों पञ्चाक्षरी-मन्त्रों का यही उद्धार दिया है, जिसमें तीन पाठान्तर हैं—(१) परं : पठेत्, (२) प्रिये : सुधी, (३) शान्तये : शुद्धये।

३ षडक्षरी : (१) अनुलोम - प्रतिलोमाभ्यां बाला - मन्त्रः षडक्षरः—ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ८

'मन्त्र - महोदधि', पृष्ठ २३६। 'मेरु-तन्त्र' में—'वाक्-काम-सौस्त्रि-बीजानि, सौः क्लीं ऐं च पुनः पठेत्। षडर्णोऽयं मनुः प्रोक्तः।' वहाँ इस मन्त्र के ऋषि दक्षिणा-मूर्ति, छन्द गायत्री और देवता का नाम 'त्रिपुरा-बालिका' बताया है तथा ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

पाशांकुशौ पुस्तकाक्ष-सूत्रे च दधती करैः। रक्ता त्र्यक्षा चन्द्र-भाला ध्येया सुरार्चिता ॥

(२) ह्रीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्रीं 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६२५।

४ नवाक्षरी : बाला श्री-काम-हृल्लेखा - सम्पुटोऽयं नवाक्षरः—श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं क्लीं श्रीं

वही। 'मेरु-तन्त्र' में—'श्री क्ली ह्री ऐं काम सौश्च ह्री क्ली श्री च नवाक्षरः।' ध्यानादि षडक्षरी - वत्।

५ दशाक्षरी : बालान्ते बाला त्रिपुरे स्वाहान्तो दश-वर्ण-वान्—ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे स्वाहा

वही। 'मेरु-तन्त्र' मे—वाक्-कामौ सौस्समुच्चरेत्, बाला त्रिपुरे स्वाहेति दशार्णः।

६ चतुर्दशाक्षरी : (१) वाक्-कामो व्योम - भृग्विन्दु-युङ्-मनुर्दीर्घ-भूधरः, पिनाकी त्रिपुरे सिद्धि देहि हृन्मनु-वर्ण-वान्—ऐं क्लीं ह्सौः बाला त्रिपुरे सिद्धि देहि नमः वही।

(२) ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धि देहि नमः 'हिन्दी-मं० महा०', वही।

(३) क्लीं ह्री ऐं च समुच्चरेत्, ततश्च बाले त्रिपुरे सिद्धि देहि नमस्त्विति। चतुर्दशाक्षरो मन्त्रो मुन्याद्य च षडर्ण-वत्—क्लीं ह्रीं ऐं बाले त्रिपुरे सिद्धि देहि नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि, ध्यानादि मेरु-तन्त्रोक्त षडक्षरी-वत्।

७ षोडशाक्षरी : माया लक्ष्मीर्मनो-जन्मा त्रिपुरान्ते तु भारती, कवित्वं देहि ठ-द्वन्द्वं षोडशार्णो मनुः स्मृतः—ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरा-भारती कवित्वं देहि स्वाहा

वही। 'हिन्दी म० महा०', पृष्ठ ६२५ मे उक्त मन्त्र में 'त्रिपुरे भारति' है, जिसकी पुष्टि 'मेरु-तन्त्र' के उद्धार से होती है। यथा—ह्री श्री क्लीमुक्त्वा त्रिपुरेति च भारति कवित्वं देहि स्वाहा।

८ सप्त-दशाक्षरी : (१) कमला पार्वती कामस्त्रिपुरान्ते च मालिनि, मह्यं सुखं ततो देहि स्वाहा सप्त-दशाक्षरः—श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरा-मालिनि मह्यं सुखं देहि स्वाहा

(२) भृगु-ब्रह्म-क्रिया-वह्नि-युक्ता शान्ति स-रात्रिपा, दहनान्त्य-महा-काल - भुजङ्गः पुरुषोत्तमः। मन्वर्घीशेन्दु-संयुक्ता द्वितीयं बीजमीरितं, वाग्-बीजं त्रिपुरे सर्व-वाञ्छितं देहि हृत् ततः। वह्नि-प्रिया सप्त-दश-वर्णोऽयं कीर्तितो मनुः—स्क्लीं क्ष्म्रीं ऐं त्रिपुरे सर्व-वांछितं देहि नमः स्वाहा

वही। 'हि० म० महा०' में द्वितीय मन्त्र के प्रथम दो बीज भिन्न दिये हैं—'स्क्लीं क्ष्म्यौं।'

९ अष्टादशाक्षरी : (१)हृल्लेखा-त्रितयं प्रौढा त्रिपुरेऽनन्तारोग्यमैश्वर्यं देहि प्रिया वह्नेर्मनुरष्टादशाक्षरः—ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रौढा-त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं देहि स्वाहा

वही। 'हि० म० महा०' में 'प्रौढ-त्रिपुरे' है और 'देहि' के पूर्व 'च' है। 'च' तो अशुद्ध है किन्तु प्रथम पाठान्तर की पुष्टि 'मेरु-तन्त्र' के उद्धार से होती है, यथा—ह्री ह्री ह्री प्रौढ-त्रिपुरे ह्यारोग्यमैश्वर्यं देहि स्वाहान्तोऽष्टादशार्णोऽयं न्यासाद्य स्यात् षडर्ण-वत्।

(२)माया-रमा-मन्मथान्ते त्रिपुरा-मदने पद, सर्व-शुभ साधयाग्नेः प्रियान्तोऽष्टादशाक्षरः—ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरा-मदने सर्व-शुभं साधय स्वाहा

वही। 'हि० म० महा०' मे 'त्रिपुर-मदने' छपा है और 'सर्व' के स्थान पर 'सर्व' दिया है।

१० विंशत्यक्षरी : हृल्लेखा कमलाऽनङ्गो बालान्ते त्रिपुरे पद, मदापत्तो ततो विद्या कुरु हृद् वह्नि-वल्लभा। मन्त्रो विंशति-वर्णोऽयं—ह्रीं श्रीं क्लीं बाला-त्रिपुरे मदापत्तो विद्यां कुरु नमः स्वाहा

वही। 'मेरु-तन्त्र' मे—'ह्री श्री क्ली वाल-त्रिपुरे मदायत्ता वदेत् तत , विद्या कुरु नमः स्वाहा विंशत्यर्णश्च पूर्व-वत् ।' इसके अनुसार उक्त मन्त्र मे एक पाठान्तर है—वाला-त्रिपुरे : वाल-त्रिपुरे ।

(२) माया पद्मा मनोभवः परापरेऽन्ते-त्रिपुरे सर्वमोप्सितमुच्यता, साधयानल - कान्ताऽयमन्यो विंशति-वर्णकः—**ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा**

वही। 'मेरु-तन्त्र' मे—'माया श्री क्ली परात्परे, त्रिपुरे सर्वमित्युक्त्वा ईप्सितं साधयेति च । स्वाहा विंशति-वर्णोऽयं मुन्याद्यं तु षडर्ण-वत् ।' इसके अनुसार एक पाठान्तर है—परापरे : परात्परे ।

११ अष्टा-विंशत्यक्षरी : काम-द्वन्द्व रमा-युग्मं माया-युक् त्रिपुरा - पद, ललितेऽन्ते मदोप्सितामित्यन्ते योषित पद । देहि वाछितमित्युक्त्वा कुरु ज्वलन-कामिनी, अष्टा-विंशति - वर्णोऽय मनुरिष्ट-त्रिया-प्रद —**क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्री त्रिपुरा ललिते मदोप्सिता योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा**

वही। 'मेरु-तन्त्र' मे—'क्ली क्ली श्री च ह्री-द्वय, त्रिपुरे ललिते प्रोच्य मदीप्सिता च योषित। देहि वाछितमित्युक्त्वा कुरु ज्वलन-कामिनी, अष्टा-विंशति-वर्णोऽय श्री-दः सर्वं तु पूर्ववत् ।' इस उद्धार के अनुसार एक पाठान्तर है—त्रिपुरा : त्रिपुरे ।

१२ पञ्च-त्रिंशदक्षरी : काम-पद्माद्रि-पुत्रीणा प्रत्येक त्रितय वदेत् । त्रिपुरान्ते सुन्दरीति सर्वं जगदिन-द्वयं । वश कुरु-द्वय मह्य बल देह्यनलाङ्गना, सर्वाभीष्ट-प्रदो मन्त्र उक्तो बाण-गुणाक्षर —**क्लीं क्ली क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर-सुन्दरि सर्व - जगन्मम वश कुरु कुरु मह्य बलं देहि स्वाहा**

वही। 'हि० म० महा०' में 'जगन्मम वश' के स्थान पर 'जगत् मम वश' है, जो अशुद्ध है।

क्रमाङ्क ३, ४, ५, ६, ७, ८-१ व २, ९-१ व २, १०-१ व २, ११ और १२—ये तेरह मन्त्र हैं। त्र्यक्षरी के ५वें मन्त्र को लेकर कुल १४ मन्त्र होते हैं। इन सबके ऋष्यादि और ध्यान 'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार वही हैं, जो त्र्यक्षरी- (५) मन्त्र के सन्दर्भ में पृष्ठ १४७ पर दिये हैं।

२ श्रीललिता त्रिपुर-सुन्दरी (श्रीललिता, श्री श्रीविद्या, श्रीराज-राजेश्वरी)

नवार्ण मेरु : भूमिश्चन्द्र शिवो माया शक्तिस्कृष्णाध्व - मादनौ, अर्द्ध-चन्द्रश्च बिन्दुश्च नवार्णो मेरुरुच्यते । महा-त्रिपुर-सुन्दर्या मन्त्रात्मक-समुद्भवा —**ल स ह ई ए र क**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६२। श्रीविद्या के सभी मन्त्र इसी मेरु-मन्त्र से उत्पन्न हुए हैं।

कामेशी बीज : सकला भुवनेशानी कामेशी बीजमुद्धृत, अनेन सकला विद्या कथयामि वरानने —**कलह्रीं**

वही, पृष्ठ २६३। इस कामेश्वरी बीज द्वारा कामराज आदि कूटो का उद्धार होता है।

'श्री विद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास मे उक्त उद्धार मे दो पाठ भेद हैं—(१) मुद्धृत : मुत्तमं, (२) सकला विद्या : सकला विद्या । वहाँ मन्त्र भी पाद-टिप्पणी मे भिन्न दिया है—सकलह्री।

पञ्चाक्षर वाग्भव कूट : शक्त्यन्ते तूर्य-वर्णोऽय कला-मध्ये सुलोचने । वाग्भव पञ्च-वर्णाढ्य —**कएईलह्रीं**

'श्री विद्यार्णव तन्त्र', पञ्चम श्वास मे 'वाग्भव कूट' का ध्यान 'मूलाधार चक्र' मे करने का निर्देश किया है। इस कूट के ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता वागधीश्वरी, बीज 'क', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'एईल' और विनियोग 'वाक्-सिद्ध्यर्थे' बताए हैं। 'ब्रह्म-वाग्-रूपिण्यै, विष्णु-वाग् - रूपिण्यै, रुद्र-वाग्-रूपिण्यै, पर - वाग् - रूपिण्यै, शिव - वाग्-रूपिण्यै, अखिल - वाग् - रूपिण्यै' से षडङ्ग - न्यास कर ध्यान करे। यथा—

शुक्लां स्वच्छ-विलेप - माल्य-वसनां शीतांशु-खण्डोज्ज्वलाम्,
व्याख्यामक्ष-गुणं सुधाढ्य-कलश विद्या च हस्ताम्बुजे ।
विभ्राणा कमलासनां कुच-नता वाग् - देवतां सस्मिताम्,
वन्दे वाग्-विभव-प्रदा त्रि-नयनां सौभाग्य-सम्पत्-करीम् ॥

षडक्षर कामराज-कूट : काम-राजमथोच्यते, मादन शिव-चन्द्राद्य शिवान्त मीन-लोचने ! काम-राजमिद प्रोक्त षड्-वर्ण सर्व-मोहन—हसकहलह्रीं वही । 'कामराज कूट' का ध्यान हृदय (अनाहत चक्र) मे करे । इस कूट के ऋषि सम्मोहन, छन्द गायत्री, देवता कामेशी, बीज 'ह', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'सकहल' और विनियोग 'वशीकरण-सिद्धये' बताये गए हैं । 'द्रां सक्षोभण-वाणाय, द्रीं द्रावण-वाणाय, क्लीं आकर्पण-वाणाय, ब्लूं वशीकार-वाणाय, सः उन्मादन-वाणाय, द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्व-वाणेभ्य ' से षडङ्ग न्यास कर ध्यान करे । यथा—

बालार्क-कोटि-रुचिरां स्फटिकाक्ष-मालां, कोदण्डमिक्षु - जनितं स्मर - पञ्च-बाणान् ।
विद्यां च हस्त - कमलैर्दधतीं त्रिनेत्रां, ध्यायेत् समस्त - जननीं नव - चन्द्र-चूडाम् ॥

चतुरक्षर शक्ति-कूट : शक्ति-बीज वरारोहे ! चन्द्राद्य सर्व-मोहन—सकलह्रीं वही । 'शक्ति-कूट' का ध्यान 'आज्ञा-चक्र' मे करे । इस कूट के ऋषि शिव, छन्द पंक्ति, देवता आदि-शक्ति, बीज 'स', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'कल' और विनियोग 'चतुर्वर्गाप्तये' बताये हैं । 'सर्वज्ञता-शक्त्यै, नित्य-तृप्तता-शक्त्यै, अनादि-बोधिन्यै, स्वतन्त्रता-शक्त्यै, नित्यमलुप्तता-शक्त्यै, अनन्तता - शक्त्यै' से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे । यथा—

कदम्ब-वन-मध्यगां कनक-मण्डपान्त -स्थितां, षडम्बु-रुह-वासिनीममर-सिद्ध-सौदामिनीम् ।
विजृम्भित-जपा-रुचि विमल-चन्द्र-चूडामणि, त्रियम्बक-कुटुम्बिनीं त्रिपुर - सुन्दरीमाश्रये ॥

१ पञ्चदशी त्रिकूटा कादि कामराज-विद्या शक्तिरेकारः तूर्यं ईकार तेन ककार-एकार-ईकार-लकार-महामाया इति वाग्भव कूट । शिवो हकारस्तेन हकार-सकार-ककार-हकार-लकार-महामाया इति कामराज-कूट । चन्द्र. सकारस्तेन सकार-ककार-लकार-महामाया इति शक्ति-कूट । इति कामराज-विद्या कूट-त्रयेण—**कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं**

'श्री श्रीविद्या-नित्यार्चन' के अनुसार यही मुख्य मन्त्र है । उसके पृष्ठ १५ के अनुसार इस मन्त्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी, बीज 'ऐं कएईलह्रीं', शक्ति 'सौः सकलह्रीं', कीलक 'क्लीं हसकहलह्रीं' हैं । षडङ्ग-न्यास क्रमश ऐं क-५, क्लीं ह-६, सौः स-४, ऐं क-५, क्लीं ह-६, सौः स-४' इन छ मन्त्रों से कर ध्यान करे । यथा—

चतुर्भुजे चन्द्र-कलावतंसे कुचोन्नते कुंकुम - राग - शोणे ।
पुण्ड्रेक्षु - पाशांकुश-पुष्प बाण-हस्ते नमस्ते जगदेक-मातः ॥

ध्यान अनेक प्रकार के और भी हैं, जो 'श्री श्रीविद्या-नित्यार्चन' के पृष्ठ ७१-७२ पर द्रष्टव्य हैं ।

'श्री विद्यार्णव तन्त्र', पञ्चम श्वास के अनुसार देवता का नाम है 'पर - ब्रह्म-स्वरूपिणी श्री-मन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी' । बीज वाग्भव कूट, शक्ति तार्तीय, कीलक कामराज कूट और विनियोग 'पुरुषार्थ-चतुष्टये' । कूट-त्रय की दो बार आवृत्ति कर षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे । यथा—

अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं धृत-पाशांकुश-पुष्प-बाण-चापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

२ पञ्चदशी त्रिकूटा हादि अगस्त्योपासिता लोपामुद्रा : कामराजाख्य - विद्यायाः शक्ति तूर्यं च सुन्दरि ! हित्वा मुखे शिवेन्द्वाढ्या लोपामुद्रा प्रकाशिता । अस्यार्थः—कामराजाख्य-विद्याया वाग्भवे एकारमीकारं च त्यक्त्वा हकारं सकारं च दद्यात् । अन्यत् समानं, इयमगस्त्योपासिता—हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २६२ । 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास में भी यही उद्धार है ।

३ पञ्चदशी त्रिकूटा सादि नन्दि-पूजिता : कामराजाख्य-विद्याया वाग्भवे मादनं त्यज, चन्द्रं तत्रैव संयोज्य काम-राजे ततः परं । हित्वा चन्द्रं मुखे कुर्यात् विद्येयं नन्दि-पूजिता । अस्यार्थः—कामराज-विद्यायाः वाग्भवे कामं त्यक्त्वा चन्द्रं दद्यात्, काम-राजे पुनः शिवान्ते चन्द्र त्यक्त्वा चन्द्राद्यं कुर्यात् । अन्यत् समानं—सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं

वहीं, पृष्ठ २६४ । 'श्री विद्यार्णव तन्त्र' मे यही उद्धार है ।

४ पञ्चदशी त्रिकूटा कादि इन्द्रोपासिता : काम-राजाख्य विद्याया हित्वा भूमि तृतीयके, शक्ति-बीजे स्थिता देवि ! चन्द्राधः कुरु तत्र च । तेन शक्ति - कूट चन्द्रेन्द्र-काम-महा-मायात्मकं विद्येयमिन्द्रोपासिता—कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सलकह्रीं

वही । 'श्री विद्यार्णव' तन्त्र मे यही उद्धार है । 'मन्त्र - महोदधि', पृष्ठ ३८१ मे इस मन्त्र का तृतीय कूट अशुद्ध छपा है ।

५ पञ्चदशी त्रिकूटा कादि उन्मनी काम-राजस्य विद्याया वाग्भवं तु विलिख्य च, शिव-काम-हरेन्द्रांश्च भुवनेशीमतः परं । वाग्भव-कूटं तु उन्मनी सकलेष्टदा—कएईलह्रीं हकहलह्रीं हसकलह्रीं

'श्रीविद्या० तन्त्र', सप्तम श्वास ।

६ पञ्चदशी त्रिकूटा कादि वरुणोपासिता : काम-राजस्य विद्याया वाग्भवं तु विलिख्य च, उन्मन्याः काम-राजं तु चन्द्र-हंसौ तु मादनं । भूमिश्च भुवनेशानी वरुणेन समर्चिता—कएईलह्रीं हकहलह्रीं सहकलह्रीं 'वही' ।

७ पञ्चदशी त्रिकूटा कादि धर्मराजोपासिता : शक्तिर्मादनयोर्मध्ये इन्द्र भुवनेश्वरी, शिवयोर्मादन, माया तार्तीय वरुणस्य च । धर्मराजोपासितेय भोग-मोक्ष-फल-प्रदा—कएकलह्रीं हकहलह्रीं सहकलह्रीं 'वही' ।

८ षोडशाक्षरी त्रिकूटा कादि ईशानोपासिता : मादन च शिवेन्द्री च भुवनेशीमतः परं, शिव-मादन-भूमिश्च शिवेन्द्रेन्द्रानलास्तथा । माया च काम-राजस्य शक्ति-कूटं समुद्धरेत्, ईशानोपासिता विद्या ह्यणिमाद्यष्ट-सिद्धिदा—कहलह्रीं हकलहललरह्रीं सकलह्रीं 'वही' ।

९ सप्त-दशाक्षरी त्रिकूटा कादि अगस्त्य-पूजिता द्वितीया लोपामुद्रा—काम-राजाख्य-विद्यायास्तार्तीयं सुर-सुन्दरि, सहाद्यं शक्ति-बीजं स्याद् विद्यागस्त्य-प्रपूजिता । अस्यार्थः—काम - राजाख्य - विद्याया यदेव वाग्भव-कूटं काम-राजं चापि तदेव, शक्ति-बीजं सहाद्यमिति विशेषः—कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सहसकलह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६४ । 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में दो पाठान्तर हैं—(१) सुर-सुन्दरि : शृणु पार्वति, (२) सहाद्यं शक्ति-बीजं : शक्ति-बीज सहाद्यं ।

१० सप्त-दशाक्षरी त्रिकूटा कादि सूर्य-पूजिता : लोपामुद्राख्य - विद्याया द्वितीयाया महेश्वरि, कामराजे भृगु हित्वा तार्तीये शक्रगः शिवः। अस्यार्थः—द्वितीय-लोपामुद्रायाः काम-राज-कूटे सकारं त्यजेत्, तृतीय-कूटेऽन्त्य-सकारोपरि ककारं दद्यात्—**कएईलह्रीं हकहलह्रीं सहकसकलह्रीं**

वही। द्वितीय कूट वहाँ 'सहकलह्री' छपा है, जिसकी पुष्टि 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' से होती है। उसमें उद्धार-वचन के 'हित्वा' और 'तार्तीय' के बीच में इतना और है—'मुखे कुर्यात् तमेव हि। शिवं बिना चतुर्थं तु'। उद्धार का अन्तिम चरण भी उसमें दिया है—'एषा विद्या वरारोहे त्रिपुरा सूर्य-पूजिता।' इस प्रकार उक्त मन्त्र का पाठान्तर है—**कएईलह्रीं सहकलह्रीं सहकसकलह्रीं**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६१ में भी यही सप्तदशाक्षरी विद्या दी है।

११ सप्त-दशाक्षरी त्रिकूटा कादि वह्न्युपासिता : चन्द्रो मादनयोर्मध्ये इन्द्रश्च भुवनेश्वरी, शिव-चन्द्रेन्द्र-मदना भूमिश्च भुवनेश्वरी। चन्द्र-मादन-शक्राश्च वह्नीन्द्रौ भुवनेश्वरी, वह्निनोपासिता विद्या भोग-मोक्ष-फल-प्रदा—**कसकलह्रीं हसलकलह्रीं सकलरलह्रीं** 'श्रीविद्या० तन्त्र', सप्तम श्वास।

१२ सप्त-दशाक्षरी त्रिकूटा हादि नागराजोपासिता : लोपा-वाग्भवमुच्चार्य तस्या वै काम-राजकं, सकला वह्नि-भूमिश्च भुवनेशी समुद्धरेत्! नागराजोपासितेयं धर्म-कामार्थ-मोक्षदा—**हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलरलह्रीं** 'वही'।

१३ अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा कादि मनु-पूजिता : काम - राजाख्य - विद्याया वाग्भवेन वरानने, विद्योद्धारं प्रवक्ष्यामि शक्ति-मादन-मध्यग। शिव कुर्यात् वाग्भवे तु शिवाद्यं काम - राजकं, चन्द्राद्यं तु तृतीयं स्याद् विद्येयं मनु-पूजिता। अस्यार्थः—कामस्ततः शिवस्तदनन्तरमेकारस्तत ईकारादि-त्रयं—**कहएईलह्रीं हकएईलह्रीं सकएईलह्रीं**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६३। 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में यही उद्धार है।

१४ अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा कादि दुर्वासा-पूजिता : काम-राजाख्य-विद्यास्त्रि-कूटेषु वरानने, या स्थिता भुवनेशानी द्वि-विधा सा महेश्वरि! बिन्दु-हीना नाद-हीना दुर्वासा-पूजिता भवेत्। *त्रि-कूटस्थां तु* भुवनेश्वरीं द्विधा विभज्य नाद-बिन्दु-हीनां कृत्वा उच्चरेत्—**कएईलह्री हसकहलह्री सकलह्री**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६४ मे 'ह्री' के स्थान पर 'हृरी' छपा है, जो अशुद्ध है। 'मन्त्र महोदधि', पृष्ठ ३६१ में यही मन्त्र दिया है किन्तु 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार उद्धार - वचन में 'द्विविधा सा' के स्थान पर 'द्विधा कुरु' है। तदनुसार मन्त्र के 'ह्री' के स्थान पर 'ह्री ह्री' होना चाहिये और इस प्रकार अठारह अक्षर का शुद्ध मन्त्र प्रस्तुत होता है—**कएईलह्रीह्री हसकहलह्रीह्री सकलह्रीह्री**

१५ अष्टादशाक्षरी त्रिकूटा कादि बुधोपासिता : मादनं शक्ति-तुर्यौ च वह्नीन्द्रौ भुवनेश्वरी, शिव-मादन-सूर्येन्द्र-वह्न्यो भुवनेश्वरी। चन्द्र-सूर्यौ कलौ वह्निर्भुवनेशी समुद्धरेत्, बुधोपासिता-विद्येयं भोग-मोक्ष-फल-प्रदा—**कएईरलह्रीं हकहलरह्रीं सहकलरह्रीं** 'श्री विद्या० तन्त्र', वही।

१६ एकोन-विंशदक्षरी त्रिकूटा कादि वायूपासिता : मादनं शक्ति-वह्नी च भूमिर्वह्निः सुरेश्वरी, शिव-मादन-भूमिश्च रहला भुवनेश्वरी। चन्द्रानलौ मादनेन्द्र-वह्निश्च भुवनेश्वरी, वायूपासिता-विद्येयं चतुर्वर्ग-फल-प्रदा—**कएरलरह्रीं हकलरहलह्रीं सरकलरह्रीं** 'वही'।

१७ द्वा-विंशत्यक्षरी त्रिकूटा सादि चन्द्र-पूजिता : सहाद्यं वाग्भवं देवि! चन्द्राद्यं शिव-मध्यगं, मादनं काम-राजं तु शक्ति-कूटं सहाननं। अस्यार्थः—सकार-हकारादि-कामराज-विद्या वाग्भव - कूटमस्या

वाग्भवं, सकारस्ततो हकारस्ततः कामस्ततः शिवस्तत एकारस्तत ईकारस्ततो महा-माया इति काम-राज कूटं। अस्य वाग्भव-कूटमेव शक्ति-कूटं—सहकएईलह्रीं सहकहएईलह्रीं सहकएईलह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६३। वहाँ द्वितीय कूट में 'ए' नहीं छपा है। 'मन्त्र - महोदधि', पृष्ठ २६१ में इस मन्त्र का प्रथम कूट अशुद्ध छपा है। 'ए' के बाद 'ल' न होना चाहिये। 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में उद्धार का द्वितीय चरण भिन्न है—'मादनं काम-बीजं तु शक्ति - बीजं हसाननं, चन्द्राराधित-विद्येयं भोग-मोक्ष-फल-प्रदा।' इसके अनुसार तृतीय कूट का रूप बदल जाता है। यथा—'हसकएईलह्रीं'।

१८ द्वा-त्रिंशत्यक्षरी त्रिकूटा हादि कुबेर-पूजिता : हसाननं वाग्भवं तु शिवाद्य सह - मध्यगं, मादनं काम-राजे तु तार्तीयं शृणु पार्वति ! हसाद्यं शक्ति-बीजं तु कुबेरेण प्रपूजिता अस्यार्थः—कामराजाख्य-विद्याया वाग्भवं हसाद्य चेत् तदास्या वाग्भवं, शिव - चन्द्रौ तथा कामस्ततः शिवस्तत एकारस्तत इकारस्ततो लकारस्ततो महा-माया इति काम-राज-कूटं—हसकएईलह्रीं हसकहएईलह्रीं हसकएईलह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६४। वहाँ द्वितीय कूट में चतुर्थाक्षर 'ह' नहीं छपा है, और तृतीय कूट में चतुराक्षर 'ह' छपा है, जो अशुद्ध है। 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में तीन पाठान्तर हैं—हसाननं : हसाद्य, (२) तु : विद्धि, (३) काम-राजे : काम-बीजे।

१९ त्रिंशदक्षरी त्रिकूटा कादि नारायणोपासिता : काम-राजाख्य-विद्याया अनुलोम - विलोमतः, नारायणोपासितेय षट्-कूटा भुवि दुर्लभा—कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सकलह्रीं हसकहलह्रीं कएईलह्रीं 'श्रीविद्या० तन्त्र', सप्तम श्वास।

३ श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी (श्रीषोडशी, श्रीपरा षोडशी, श्रीमहा-षोडशी)

महा-षोडशी : आद्य-बीज-द्वयं भद्रे ! विपरीत-क्रमेण हि, विलिख्य परमेशानि ! ततोऽन्यानि समुद्धरेत्। अन्तर्मुखी वरारोहे ! कुमारी त्रिपुरेश्वरी, एभिस्तु पञ्च-सद्यातैर्बीजैः सम्पुटितां यजेत्। षट्-कूटा परमेशानि ! विद्येयं षोडशाक्षरी, त्रिकूटा सकला भद्रे ! षोडशार्णा भवन्ति हि। वैष्णव्येकोन-विंशार्णा, शैवी सप्त-दशाक्षरी।

अस्यार्थः—आद्य-बीज-द्वयं माया-रमात्मकं तस्य विपरीत - क्रमः। आदौ रमा पश्चान्माया, अन्तर्मध्ये स्थितं काम-बीजं मुखे आदौ यस्याः कुमार्याः। एभिस्तु पञ्च-सद्यातैर्बीजैः षट्-कूटा सप्त-कूटां नव-कूटा वा सम्पुटितां सम्पुट-वत् कृता तेन अनुलोम-विलोमतः पुटितामित्यर्थः।

अस्यापकर्षं लिख्यते। रुद्र-यामले—श्री-माया-मादनो वाणी परा तारं शिव-प्रिया, हरि-प्रिया त्रि-कूटा सा परा वाणी मनोभवः। माया लक्ष्मीर्महा-विद्या श्री-बीज-षोडशी परा—

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६५-२७७ में विस्तार से 'महा - षोडशी' के मन्त्रों का विवेचन उक्त उद्धार-वचन के अनुसार दिया है।

गुप्तावतार बाबा श्री द्वारा 'श्रीकल्पद्रुम' के पृष्ठ ३२ पर निर्णयात्मक रूप से 'श्रीषोडशी' के मन्त्र का उद्धार दिया गया है। यथा—

तारं मायां च कमलामादौ बीज-त्रयं पठेत्, ब्रह्म-झिण्टीश - गोविन्द-धरा - मायेति चादिमम्।
आकाश-भृगु-चक्रचक्र-मांस-माया-द्वितीयकं, हंस - धातृ - क्षमा - माया तृतीयं बीजमीरितम्।
वाक्-काम-शक्ति-संज्ञं तु क्रमाद् बीज-त्रयं भवेत्, इयं षडर्णा *श्री-माया-काम-वाक्शक्ति-सम्पुटा*।

अनेक-पुण्य-सम्प्राप्या श्रीविद्या पोडशाक्षरी, मुनिः स्याद् दक्षिणामूर्तिः पंक्तिश्छन्दः समीरितम् ।
देवता जगतामादिः श्रीमहा-त्रिपुरसुन्दरी, बीजमैं भृगुरौ शक्तिः काम-बीजं तु कीलकम् ।।

१ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं

ऋषि 'दक्षिणामूर्ति', छन्द 'पंक्ति', देवता 'श्रीमहा-त्रिपुर - सुन्दरी', बीज 'ऐं', शक्ति 'सौः', कीलक 'क्लीं', विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धयर्थे चतुर्वर्गाप्तये च' ।

षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ श्रीह्रींक्लींऐंसौः, २ ॐह्रींश्री, ३ कएईलह्रीं, ४ हसकहलह्रीं, ५ सकलह्रीं, ६ सौऐंक्लींह्रींश्री' से कर ध्यान करे—

बालार्कायुत-तेजसं त्रि-नयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम्,
नानालंकृति - राजमान - वपुषं बालोडुराट् - शेखराम् ।
हस्तैरिक्षु-धनुः सृणिं सु-मशरं पाशं मुदा बिभ्रतीम्,
श्री-चक्र-स्थित-सुन्दरीं त्रि-जगतामाधार-भूतां स्मरेत् ।।

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर त्रिमधु-युक्त करवीर पुष्पो से दशांश होम ।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३१४ मे भी यही उद्धार है। तदनुसार ही 'हिन्दी मन्त्र महार्णव', देवी-खण्ड, पृष्ठ ६०० मे उपर्युक्त मन्त्र ही उल्लिखित है ।

२ कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सलकह्रीं श्रीं वही ।

३ श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं वही ।

४ आदौ लज्जा समुच्चार्य कएईल ततः परं, पुनश्च लज्जामुच्चार्य हसकहल तु तत्-परम् । ततो लज्जां पुनः प्रोच्य लज्जान्तं सकलं ततः, षोडशाक्षर-मन्त्रोऽयं षोडश्याः समुदाहृतः—**ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं**

'शाक्त-प्रमोद', पृष्ठ १५४ । ऋषि आनन्दभैरव, छन्द देवी गायत्री, देवता महा-त्रिपुरसुन्दरी, बीज 'ऐं', शक्ति 'सौः', कीलक 'क्लीं', विनियोग 'धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे' । षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ऐं, २ क्लीं, ३ सौः, ४ ऐं, ५ क्लीं, ६ सौः' इन छः बीजो से कर ध्यान करे—

बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रिलोचनां, पाशांकुश-शरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ।

५ कामो माया रमा बाला त्रिकूटा स्त्री भगांकुशौ, काली काम-कला कूर्चः सर्वादौ प्रणवः प्रिये ! श्रीमहा-षोडशीयं च या ख्याता भुवन-त्रये, ज्ञानेन मृत्युहा विद्या सर्वाम्नायैर्नमस्कृता—**ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं क्लीं हूं**

'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास । 'सिद्ध-यामल' से उद्धृत । यही मन्त्र 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६३ में दिया है किन्तु वहाँ मन्त्र के अन्तिम अक्षर 'हूं' के पूर्व 'क्लीं' के स्थान पर 'ईं' दिया है, जो अधिक शुद्ध प्रतीत होता है, क्योंकि उद्धार के अनुसार 'काम-कला'-बीज होना चाहिये । 'मन्त्र-महोदधि' मे तीसरा कूट 'सहलह्रीं' छपा है जो अशुद्ध है। देखें 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७१ ।

६ लोपामुद्रा-वाग्भवे तु पृथ्व्यन्ते शिव-योजनात्, सकारं कामराजादौ लोपा तु षोडशाक्षरी—**हसकलहह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं** वही, 'रुद्रयामल' से उद्धृत । देखें 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७१ ।

७ हसकलह्रीं सहसकहलह्रीं सकलह्रीं वही, 'रुद्रयामल' से ।

८ विद्या-राशी-वाग्भवे तु कान्तेऽनन्त-नियोजनात्, षोडशार्णा महा-विद्या-चिद्-ब्रह्मैक्य शुभा—**हसकआलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** वही ।

९ बीजावली षोडशी · श्री-माया-बाला-श्री-माया-काम-वाग्-माया-श्री-परा - काम-वाग्-माया-श्री—श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७० ।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे 'रुद्र-यामल' का उद्धार इसी मन्त्र का इस प्रकार मिलता है—श्री-बीज-माये सलिख्य तथैव च कुमारिका, श्रीबीज-माये काम च वाङ् - माया कमला तथा । परा कामं च वाग्बीज माया श्री-बीजमेव च, बीजावली-षोडशीय सर्व-तन्त्रेषु गोपिता ।

वही 'ब्रह्म-यामल' से उद्धृत उद्धार इसी मन्त्र का भिन्न शब्दो मे है । यथा—आदौ लक्ष्मी परा चैव कुमारिका, श्री-बीज च परा-बीज काम वाग्भवमेव च । परा श्री-बालिका चैव लिखेद् व्युत्क्रम-योगतः, अन्ते दद्यात् परा श्रीश्च सम्पूर्णा कथिता त्वयि ।

१० पारिभाषिकी षोडशी : चन्द्रान्त वरुणान्त च शक्रादि-सहितं पृथक्, वामाक्षि-विन्दु-नादाढ्य विमातृक-कलात्मक । विद्यादौ यो जपेद् देवि ! साक्षात् जाग्रत - स्वरूपिणी, त्रिकूटा सकला भेदा पञ्च-कूटा भवन्ति हि । वैष्णवी वसु-कूटा स्यात् षट्-कूटा शाङ्करी भवेत् ।

अस्यार्थः—चन्द्रान्त हकार , वरुणान्त शकारः, शक्रादि रेफ , वामाक्षि ईकार , विद्यादौ पूर्व-विद्यादौ ।

वेदादि-मण्डिता देवि ! शिव-शक्ति-मयी सदा, तदा भेदास्तु सकला षट्-कूटा परमेश्वरि ! वैष्णवी नव-कूटा स्यात् सप्त-कूटा च शाङ्करी ।

अस्यार्थः—पूर्वोक्त-बीज-द्वय-वती वेदादिः प्रणवः प्रणव-मण्डिता आदौ भूपिता । 'ह्री श्री' इति कूट-द्वय - पूर्विका. सकलास्त्रिकूटा. पञ्च-कूटा भवन्ति । 'ह्री श्री '-पूर्विका षट्-कूटा वैष्णवी अष्ट-कूटा भवन्ति । एवं 'ॐ ह्री श्री' कूट-त्रय-पूर्विका सर्वास्त्रिकूटा षट् - कूटा भवन्ति । 'ॐ ह्री श्री'—पूर्वा चतुष्टय-कूटा सप्त-कूटा भवन्ति । 'ॐ ह्री श्री'-पूर्वा षट्-कूटा वैष्णवी नव-कूटा भवन्ति । 'ह्रीं श्रीं'—पूर्विका चतुष्कूटा षट्-कूटा भवन्ति । एव सर्वा विद्या· परिभाषिकी षोडश्यो भवन्ति ।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २६४ । 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६१ । उक्त उद्धार के अनुसार भगवती ललिता के प्रकरण मे उल्लिखित १ कामराज-विद्या, २ अगस्त्य-पूजिता लोपामुद्रा, ३ मनु, ४ चन्द्र, ५ कुबेर-पूजिता, ६ द्वितीय लोपामुद्रा, ७ नन्दि, ८ इन्द्र, ९ सूर्य, १० शङ्कर, ११ विष्णु और १२ दुर्वासा-पूजिता—इन बारह विद्याओ के प्रारम्भ मे 'ह्री श्री' या 'ॐ ह्री श्री' लगाने से पारिभाषिकी षोडशी-मन्त्र बनते हैं ।

११ भुवन - सुन्दरी महा-षोडशी · परा-श्री-काम-वाग्भव-शक्ति-बीजान्ते प्रणवो, माया-श्री-त्रिकूटाः विलोमेन चाद्य-पञ्च-बीजाः—ह्रींश्रींक्लींऐंसौः ॐह्रींश्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐंक्लींश्रींह्रीं

'कुब्जिका तन्त्र' से 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६२ मे उद्धृत । इस मन्त्र के आदि मे 'श्रीं' लगाने से 'कमल-सुन्दरी', 'क्ली' लगाने से 'काम-सुन्दरी', 'ऐं' लगाने से 'वाक्-सुन्दरी', 'सौः' लगाने से 'शक्ति-सुन्दरी', 'ॐ' लगाने से 'तार-सुन्दरी' नामक महा षोडशी-मन्त्र प्रस्तुत होते हैं ।

१२ गुह्य षोडशी दो माया-बीजो के मध्य मे श्री-बीज , फिर परा बीज, काम-बीज एव बाला का प्रथम बीज—इन बीजो मे से माया एव श्री-बीजो के आदि मे प्रणव लगाना चाहिये । फिर लोपा-

मुद्रा त्रिकूटा और अन्त में प्रथम पञ्च-बीज—ॐ ह्लीं ॐ श्रीं ह्लीं सौः क्लीं ऐं हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६२। यही मन्त्र 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७० में गलत छपा है।

१३ गुप्त षोडशी : श्रींह्रीं ऐंक्लींसौः श्रींह्लींक्लीं ऐंसौःक्लीं ऐंश्रींह्रीं ह्रींश्रीं

'ब्रह्म-यामल' से उद्धृत। देखें 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७०।

१४ सप्त-दशाक्षरी षोडशी : (१) कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

(२) हसकलहह्रीं हसकहलह्रीं सकलहह्रीं

(३) हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं हंसः — 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७१।

१५ अष्टादशाक्षरी षोडशी : (१) ऐंहसकलह्रीं क्लींहसकहलह्रीं सौःसकलह्रीं

(२) ऐंकएईलह्रीं ह्लींहसकहलह्रीं श्रींसकलह्रीं

(३) ऐंकएईलह्रीं क्लींहसकहलह्रीं सौःसकलह्रीं — वही।

१६ परमा षोडशी विद्या : ॐ ऐंक्लींसौः कएलहह्रीं सौःक्लींऐंसौः ऐंक्लींसौः हसकलह्रीं सौःक्लींऐं, औः ऐंक्लींसौः सकलहलह्रीं ह्सौः क्लीं ऐं औं — 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७२

श्रीषोडशी की नित्यायें

१ कामेश्वरी : (१) त्रिपुरेशी समुच्चार्य तारान्ते हृत्-पदं ततः, कामेश्वरि पदं चोक्त्वा त्विच्छा-काम-फल-प्रदे। सर्व-सत्व-वशं प्रोक्त्वा करि सर्व-जगत्-पदं, क्षोभान्ते तु करे हूं हूं वाणांश्च त्रिपुरेश्वरीम्। विपरीतां समालिख्य विद्या षट्-त्रिंशदक्षरा—ऐंक्लींसौः ॐ नमः कामेश्वरीच्छा - काम - फल-प्रदे ! सर्व-सत्व-वशङ्करि ! सर्व-जगत्-क्षोभ-करे ! हूं हूं द्रांद्रींक्लींब्लूंसः सौःक्लींऐं

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास। ऋष्यादि कामेश्वरी के समान।

(२) वाला तारा नमः कामेश्वरि दृग्-दीर्घ-जादिमः, काम-फल-प्रदे सर्व-सत्व-वान्ते तु शङ्करि। सर्वान्ते तु जगद्-वर्णात् क्षोभणान्ते करोति च, वर्म-त्रयं पञ्च-वाणाः प्रतिलोमा कुमारिका। कामेश्वरी-मनुः प्रोक्ता षट्-चत्वारिंशदर्ण-वान्—ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि ! इच्छा-काम-फल-प्रदे ! सर्व-सत्व-वशङ्करि ! सर्व-जगत्-क्षोभण-करि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५४। वहाँ उद्धार के अनुसार मन्त्र मे ४६ अक्षर होने चाहिए, किन्तु स्पष्ट मन्त्र में ४४ ही अक्षर हैं क्योंकि 'काम-फल-प्रदे' के स्थान पर 'काम-प्रदे' छपा है, जो अशुद्ध है।

(३) श्रं ऐं क्लीं सौं आं ईं ऊं यां रां लां वां सां कामेश्वरीच्छा-काम-फल-प्रदे सर्व-सत्व-वशङ्करि जगद्-विक्षोभ-करे हुं हुं हुं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्सौः क्लीं ऐं कामेश्वरी - नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय'। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव,' पृष्ठ २८६।

२ भग-मालिनी : (१) वाग्भव भग-शब्दान्ते भुगे वाग्भवमेव च, भगिन्यन्ते वाग्भवं च भगोदरि च वाग्भवं। भग-क्लिन्ने वाग्भवं च वाग्भवादी भगावहे, भग-गुह्ये वाग्भवं च भग-योनि च वाग्भव। भग-न्मन्ते पातनीति वाग्भवं भग-सर्व च, वदि वाग्भवमालिख्य ततो भग-वशङ्करि। वाग्भवं भग-रूपे तद्-भग-नित्ये च वाग्भवं, भग-क्लिन्ने वाग्भवं च भगस्वान्ते समालिखेत्। रूपे सर्व-भगानीति मे ह्यानय च वाग्भवं, भग-क्लिन्न-द्रवे चान्ते भगं कोदय चालिखेत्। भग द्रावय चालिख्य भगामोघे भगेति च, विच्चे भगं क्षोभयेति उर्व-सत्वान् भगेश्वरि। वाग्भवं च भग ब्ल च वाग्भवं भगजं लिखेत्, वाग्भवं च भगन्न च वाग्भवं भगमें

लिखेत् । वाग्भवं च भगब्लू च वाग्भवं भगमो लिखेत्, भग-क्लिन्ने च सर्वाणि भगान्यथ च मे लिखेत् । वाग्भवं च भगब्लूं च वाग्भवं भगहे लिखेत्, वाग्भवं च भगब्लू च वाग्भवं भगहे लिखेत् । भग-क्लिन्ने च सर्वाणि भगान्यथ च मे लिखेत् । वशमानय चालिख्य भग-पञ्चम-मन्मथं । भगान्तरे भगान्तेऽथ हरब्लेमात्मकमालिखेत्, भगान्ते प्रथमं कामं ततो वै भग-मालिनी । ङेन्तामुच्चार्य विधेयं 'त्रैलोक्य-वश-कारिणी, चतुरधिक-विंशत्या द्वि-शतेन च मण्डिता—'ऐं भग-भुगे ऐं भगिनि ऐं भगोदरि ऐं भग-क्लिन्ने ऐं भगावहे ऐं भग-गुह्ये ऐं भग-योनि ऐं भग-निपातनि ऐं भग-सर्व-वदि ऐं भग-वशङ्करि ऐं भग-रूपे ऐं भग-नित्ये ऐं भग-क्लिन्ने ऐं भग-स्वरूपे सर्व-भगानि मे ह्यानय ऐं भग-क्लिन्न-द्रवे भगं क्लेदय भगं द्रावय भगामोघे भग-विच्चे भगं क्षोभय सर्व-सत्वान् भगेश्वरि ऐं भगब्लूं ऐं भगजं ऐं भगब्लूं ऐं भगमे ऐं भगब्लू ऐं भगमो भग-क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे ऐं भगब्लूं ऐं भगहे ऐं भगब्लूं ऐं भगहे भग-क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय भग ऐं भगब्लूं ऐं भगहे ऐं भगब्लूं ऐं भगहे ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स. भगहरब्लें भग-मालिन्यै

(२) वाग्-बीज भग-कर्णाढ्या निद्रा गे-भगिनीति च, भगोदरीति वर्णान्ते भग-माले भगावहे । भग-गुह्ये भगान्ते स्याद् योने भग-निपातिनि, सर्वान्ते भग-शब्दान्ते वशङ्करि भगेति च । रूपे नित्यपद क्लिन्ने भगस्याग्निः स-दीपकः, पे-सर्व-भ स्मृतिर्दीर्घा नि मे ह्यानय वाग्नयः । दे रेते-सु स-झिण्टीशः पावकस्ते भगार्णकाः, क्लिन्ने क्लिन्न-द्रवे क्लेदय द्रावय च केशवः । मोघे भगान्ते विच्चे च क्षुभ क्षोभय सर्व-च सत्वान् भगेश्वरि प्रान्ते वाग् ब्लू ज ब्लू च में पुनः, ब्लू मो ब्लू हें पुनर्ब्लूं हे क्लिन्ने सर्वाणि भाक्षरम् । गानि मे वशमानान्ते मारुतः स्त्री हरेति च, ब्लें मायामत्रि-भू-वर्णा प्रोदिता भग-मालिनी—ऐं भग-भुगे भगिनि भगोदरि भग-माले भगावहे भग-गुह्ये भग-योने भग-निपातिनि सर्व-भग-वशङ्करि भग-रूपे नित्य-क्लिन्ने भग-स्वरूपे सर्व-भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भग-क्लिन्ने क्लिन्न-द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग-विच्चे क्षुभ क्षोभय सर्व-सत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मो ब्लूं हे ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५५ । वहाँ स्पष्ट मन्त्र मे 'भग-योने' के स्थान पर 'भग-योनि' छपा है, जो अशुद्ध है ।

(३) आ ऐं भग-भुगे भगिनि भगोदरि भग-माले भगावहे भग-गुह्ये भग-योने भग-निवासिनि सर्व-भग-वशङ्करि भग-रूपे नित्य-क्लिन्ने भग-स्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सु-रेते भग-क्लिन्ने क्लिन्न-द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भग-विच्चे क्षुभ क्षोभय सर्व-सत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मो ब्लूं हे ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हरब्लें ह्रीं भग-मालिनी-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि 'सुभगोदय' । देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६ ।

३ नित्य-क्लिन्ना : भुवनेशी समुच्चार्य नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे, वह्नि-जाया च विधेय रुद्र-वर्णा महोत्कटा—ह्रीं नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्वाहा

वही । मन्त्र के १, २, २, २, २, २ अक्षरो से अङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

रक्ता रक्ताङ्ग-वसना चन्द्र-चूडां त्रिलोचनां, स्विद्यत्-वक्त्रा महा-घूर्ण-लोचना रत्न-भूषिताम् ।
पाशांकुशौ कपालं च महा-भीति-हरं तथा, दधतीं संस्मरेन्नित्यां पद्मासन - विराजिताम् ॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५६ मे मन्त्र यही ११ अक्षर का है किन्तु उद्धार भिन्न शब्दो मे है—
नित्य-क्लिन्ने मद-द्रान्ते पद्म-नाभ-युत जल मायाद्याग्नि-प्रियान्तेऽय नित्य-क्लिन्ना शिवाक्षरः ।

(३) हंसस्तु दाह-वह्नि-स्वैर्युक्तः प्रथममुच्यते, कामेश्वर्यास्तृतीयादि-वर्णानामष्टकं भवेत्। हृदम्बु मरुता युक्तं हंसश्च मरुता युतः, एकादशाक्षरी नित्य-क्लिन्ना नित्या समीरिता—ह्रीं नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्वाहा

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय-पटल। तदनुसार 'सुभगोदय' में पूजा - मन्त्र निर्दिष्ट है। यथा, देखें 'नित्या षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८८—

ईं ह्रीं नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्वाहा नित्य-क्लिन्ना नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

४ भेरुण्डा : (१) शेराकारं समुच्चार्यांकुशाभ्यां तं च वेष्टयेत, अन्त्य-हीनं च-वर्गं तु चतुर्धा रेफ-मण्डितं। अनुग्रहेन्दु-बिन्द्वाढ्यं तार-स्वाहोदर-स्थितः, मनुर्दशार्णो देवेशि! महा-विष-हरो भवेत्—ॐ क्रों भेः क्रों च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा

वहीं। ऋषि महा-विष्णु, छन्द गायत्र, देवता परा-शक्ति, बीज 'भेः', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'क्रों'। षड्-दीर्घ बीज से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

चन्द्र-कोटि - प्रतीकाशां स्रवन्तीममृत-द्रवैः, नील-कण्ठां त्रिनेत्रां च नानाभरण - भूषिताम्।
इन्द्रनील-स्फुरत् - कान्ति-शिखि-वाहन-शोभितां, पाशांकुशौ कपालं च छुरिकां वरदाभये।
बिभ्रतीं हेम-सम्बद्ध-गारुडाङ्गद-भूषिताम्॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ, ३५६ में १० अक्षर का यही मन्त्र दिया है, केवल 'भेः' के स्थान में 'भ्रो' है। यथा—वान्तो रेफासनस्तार-संयुतोंकुश-सम्पुटः, चवर्ग-त्रर्णाश्चत्वारो वह्नि-मन् बिन्दु-संयुताः। वह्नि-प्रियान्तस्ताराद्यो भेरुण्डा दशाक्षरः।

(२) भूः स्वेन युक्ता प्रथमं प्राणो दाहेन तद्-युतं, रसो दाहेन तद्-युक्तं प्राणो दाह-वन-स्व-युक्। कं च दाहेन तद्-युक्तं प्रभा दाहेन तद्-युता, ज्या च दाहेन तद्-युक्ता नित्य-क्लिन्नान्तता द्वयं। एषा नवाक्षरी नित्या भेरुण्डा सर्व-सिद्धिदा—ओं क्रों भ्रों क्रों ज्रों छ्रों ज्रों स्वाहा

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय पटल। तदनुसार 'सुभगोदय' में पूजा-मन्त्र। देखें 'नित्या-षोडशकार्णव', पृष्ठ २८९—

ईं ओं क्रों भ्रों क्रों च्रों क्रों छ्रों ज्रों झ्रों स्वाहा भेरुण्डा-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

५ वह्नि-वासिनी : (१) परां विलिख्य वह्न्यन्ते वासिन्यै नम इत्यपि, अष्टार्णोऽयं महेशानि! पुरुषार्थ-प्रदो मनुः—ह्रीं वह्नि-वासिन्यै नमः

वहीं। ऋषि वशिष्ठ, छन्द गायत्री, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'नमः', कीलक 'वह्नि-वासिन्यै'। मन्त्र के तीन पदों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ध्याये वह्नि-वासिनीं सुवर्णाभां नानालङ्कारां, पाशांकुशौ स्वस्तिकं च शक्तिं च वरदाभये।
दधतीं रत्न-मुकुटां त्रैलोक्य-तिमिरापहाम्॥

(२) मायान्ते वह्नि - वासिन्यै प्रणवाद्यो नमोऽन्तिकः, मन्त्रोऽयं वह्नि - वासिन्या नव - वर्णः समीरितः—ॐ ह्रीं वह्नि-वासिन्यै नमः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५७।

(३) भेरुण्डाद्यमिहाद्यं स्यान्नित्य-क्लिन्नाद्यनन्तरं, ततोऽम्बु-शून्यं हंसाग्नि-युक्तमम्बु मरुद्-युतं। हृदग्निना युतं शून्यं व्याप्तेन शुचिना च युक्, शून्यं नमः शक्ति-युतं नवार्णयमुदीरिता। नित्या सर्वार्थदा वह्नि-वासिनी विश्व-घस्मरा—ओं ह्रीं वह्नि -वासिन्यै नमः

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय पटल। तदनुसार 'सुभगोदय' में पूजा-मन्त्र। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६—

उं ओं ह्रीं वह्नि-वासिन्यै नमो वह्नि-वासिनी-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

६ महा-वज्रेश्वरी : (१)नित्य-क्लिन्नां समालिख्य मुखे तारं समालिखेत्, हृल्लेखान्ते क्रोमात्म चन्द्र-बीजं विसर्गवत्। चतुर्दशाक्षरी विद्या—ॐ ह्रीं क्रों सः नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्वाहा

वहीं। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्र, देवता परमेश्वरी, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ह्रीं'। मन्त्र के ४, २, २, २, २, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

जपा-कुसुम-सङ्काशां रक्तांशुक-विराजितां, माणिक्य-भूषणां नित्यां नाना-भूषा-विभूषिताम्।
पाशांकुशौ कपालस्थ-सुधा-पान-विघूर्णितां, अभयं दधतीं मुद्रां ध्याये महा-वज्रेश्वरीम्॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५७ मे मन्त्र यही १४ अक्षर का है, किन्तु उसमे 'क्रों' के स्थान पर 'फ्रें' है और नित्या का नाम 'महा-विद्येश्वरी' लिखा है। उद्धार भिन्न शब्दो मे है—तारो माया शिखी वह्नि-पद्म-नाभेन्दु-संयुतः, स-विसर्गो भृगुर्नित्य - क्लिन्ने, पश्चान्मद - द्रवे। स्वाहान्तो मनु - वर्णोऽयं महा-विद्येश्वरी-मनुः।

(२) द्वितीयं वह्नि-वासिन्या नित्य-क्लिन्ना चतुर्थकं, पञ्चमं भग-मालाद्य भेरुण्डाया द्वितीयकं। नित्य-क्लिन्ना-द्वितीयं च तृतीय षष्ठ-सप्तमौ, अष्टमं नवमं पश्चादेतदाद्यमितीरित। महा - वज्रेश्वरी नित्या द्वादशार्णा समीरिता—ह्रीं नित्य-क्लिन्ने ऐं क्रों मद-द्रवे ह्रीं

'तन्त्रराज तन्त्र', वहीं। 'सुभगोदय' मे पूजा-मन्त्र भिन्न है। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६—

ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्वाहा महा-विद्येश्वरी - नित्या-श्रीपादुका पूजयामि

७ शिव-दूती : भुवनेशी समुच्चार्य शिव-दूत्यै नमो लिखेत्, सप्तार्णा शिव-दूतीयं त्रैलोक्य-स्वामिनी प्रिये—ह्रीं शिव-दूत्यै नमः

वही। ऋषि रुद्र, छन्द गायत्री, देवता शिवा, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'नमः', कीलक 'शिव-दूत्यै'। मन्त्र के तीन पदों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

दूर्वा-निभां त्रिनेत्रां च महा - सिंह-समासनां, शङ्खारि-बाण-चापांश्च सृणि-पाशौ वराभये॥
दधतीं चिन्तये नित्यां शिवा-दूतीं भगवतीम्॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५७ में उद्धार—शिवदूती-चतुर्थ्यन्ता मायाद्या हृदयान्तिका, शिव-दूती-मनुः प्रोक्तः सप्त-वर्णोऽखिलेष्टदः।

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय पटल मे उक्त सप्ताक्षर मन्त्र का उद्धार—वज्रेश्वर्यन्त्यमाद्यं स्याद् वियदग्नि-युतं ततः, अम्बु स्यान्मरुता युक्तं गोत्रा क्षमा-सयुता ततः। रयो व्याप्तेन शुचिना युत स्यात् तदनन्तरं, अन्त्यार्णो वह्नि-वासिन्या दूती नित्या समीरिता। सप्ताक्षरी समस्तापत् - तारिणी विश्व-रञ्जिनी।

तदनुसार 'सुभगोदय' मे पूजन-मन्त्र। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६—

ऋ ॐ ह्रीं शिव-दूत्यै नमः शिवदूती-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

८ त्वरिता : तारं परान्ते कवच खेचच्छेक्षः समालिखेत्, स्त्री हूमात्मकमुच्चार्य क्षे परामस्त्रकं लिखेत्। त्वरिता रवि-वर्णेयं भोग-मोक्ष-फल-प्रदा—ॐ ह्रीं हुं खेचच्छेक्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट्

वहीं। ऋषि ईश, छन्द विराट्, देवता त्वरिता, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्त्रीं', कीलक 'हुं'। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ चछे, २ छेक्षः, ३ क्षः स्त्रीं, ४ स्त्रीं हूं, ५ हूं क्षे, ६ क्षे फट्' से। ध्यान—

श्यामाङ्गीं रक्तसत् पाणि-चरणाम्बुज-शोभितां, वृषलाहि-सुमञ्जीरां फटारत्न-विभूषिताम्।
स्वर्णांशुका स्वर्ण-भूषां वैश्याहि - द्वन्द्व - मेखलां, तनु-मध्यां पीन-वृत्त-कुच - युग्मां वराभये।
दधतीं शिखि-पिच्छानां वलयाङ्गद - शोभितां, गुञ्जारणां नृपाहीन्द्र-केयूरां रक्त-भूषणाम्।
द्विज-नाग - स्फुरत्-कर्ण-भूषां मत्तारुणेक्षणां, नील-कुञ्चित-धम्मिल्ल-वन-पुष्प-कलापिनीम्।
कैरातीं शिखि-पत्राढ्य-निकेतन-विराजितां, स्फुरत्-सिंहासन-प्रौढ़ां स्मरेद् भय-विनाशिनीम्॥

'मन्त्र-कोष' में सङ्कलित उद्धार—'तारो माया-वर्म-बीजं अद्रिरीश - स्वरान्वितः, कूर्मस्तदन्यो भग-वान् क्ष-स्त्री दीर्घ-तनुच्छदं, सम्वर्तो भग-वान् माया फडन्तो द्वादशाक्षरः।' इस उद्धार के अनुसार मन्त्र का नवां अक्षर 'हुं' न होकर 'हूं' है।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ११० में इसी उद्धार के आधार पर मन्त्र का स्वरूप कुछ भिन्न दिया है। यथा—ॐ ह्रीं हुं खे छे क्ष स्त्रीं हूं क्षएह्रीं फट्।

वहाँ इस मन्त्र के ऋषि अर्जुन बताए हैं। ध्यान भी भिन्न है—

श्यामां बर्हि-कलाप-शेखर-युतामाबद्ध-पर्णांशुकां,
गुञ्जा-हार-लसत्-पयोधर-नतामष्टाहिपान् बिभ्रतीम्।
ताटङ्काङ्गद-मेखला-गुण-रणन्मञ्जीरतां प्रापितान्,
कैरातीं वरदाभयोद्यत्-करां देवीं त्रि - नेत्रां भजे॥

'हिन्दी तन्त्रसार' में इस मन्त्र की विस्तृत पूजा-विधि दी है।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५७ में इसी १२ अक्षर के मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में है—तारः परा वर्म खेचछेक्षः स्त्री वाम-कर्ण-युक्, गगनं शशि-संयुक्तं मेरुर्भग-युतोऽद्रिजा। फडन्तो द्वादशार्णोऽयं त्वरितायां मनुर्मतः।

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय पटल में उक्त १२ अक्षर के मन्त्र का उद्धार—आद्यं तु वह्नि - वासिन्या दूत्यादिस्तदनन्तरं, हसो धरा स्व-संयुक्तः तेजश्चर-समन्वितं। वायुः प्रभा चर-युता ग्रासः शक्ति-समन्वितः, हृदा रयेण दाहेन वह्निः स्यादष्टमे प्रिये! हसः क्ष्मा स्व-युतो ग्रासश्चर-युक्तो द्वितीयक, द्युतिर्नाद-युता नित्या त्वरिता द्वादशाक्षरी।

तदनुसार 'सुभगोदय' मे पूजन-मन्त्र। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६—

ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट् त्वरिता-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

९. कुल-सुन्दरी : बालाख्या त्रिपुरेशानी पूर्व-सिंहासने स्थिता—ऐं क्लीं सौः
वही। ऋष्यादि श्रीबाला त्र्यक्षरी के समान।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५८ में इसी त्र्यक्षर मन्त्र का उद्धार दिया है—दामोदरो बिन्दु-युतः क्लौ शान्तोन्दु-संयुतौ, भृगुर्मनु-विसर्गाढ्यस्त्र्यक्षरा कुल-सुन्दरी।

'तन्त्रराज तन्त्र', तृतीय पटल में उक्त त्र्यक्षर मन्त्र का उद्धार—'शुचिः स्वेन युतस्त्वाद्यो रसा वह्नि-समन्वितः, प्राणो द्वितीयः स्व-युतो वन हृच्छक्तिभिः परः। इतीरिता त्र्यक्षरी स्यान्नित्याऽसौ कुल-सुन्दरी'।

तदनुसार सुभगोदय मे पूजन-मन्त्र। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६—लूं ऐंक्लींसौः कुल-सुन्दरी-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

१० नित्या (१) त्रिपुरेशी समुच्चार्य नित्याख्या भैरवी तथा, हुकार-त्रितय वाणा विद्येयं वा नवाक्षरी—ऐं क्लीं सौः हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौं (हु हुं हुं द्रांद्रीक्लींब्लूंस.)

वही। ऋष्यादि श्रीवाला के समान। उद्धार से प्रतीत होता है कि यहाँ दो मन्त्र निर्दिष्ट हैं। पहला मन्त्र कोष्टक के बाहर है, दूसरा भीतर किन्तु भीतरवाला मन्त्र नौ अक्षर का होना चाहिये, जब कि यहाँ आठ ही अक्षर है। आदि मे 'लूं' के जोडने से नवाक्षर मन्त्र प्राप्त होता है, जैसा कि 'सुभगोदय' मे दिये मन्त्र से स्पष्ट है, जो क्रमाक ३ पर द्रष्टव्य है।

(२) भैरवी वालया युक्ता प्राक् पश्चाच्च क्रमोत्क्रमात् तदन्ते पञ्च - वाणा. स्युर्नित्या-मन्त्र-क्षरेरिता—ऐं क्लीं सौः ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः सौं क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५८।

(३) लूं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः नित्या-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय'। देखें 'नित्या षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६।

११ नील-पताका—(१) तार हृत्-पदमाभाष्य कामेश्वरि-पदं ततः, कामाकुशे पदं चोक्त्वा ततः काम-पताकिके। भगवत्यथ नीलान्ते पताके च भगान्विते, वति हृन्मन्त्रमालिख्य ततोऽस्त्विति च मे लिखेत्। परमान्ते तथा गुह्ये ह्रीकार-त्रितय लिखेत्, मदने मदनान्ते च देहे त्रैलोक्यमालिखेत्। आवेशय तथा लेख्यं नवचान्त्याग्नि-वल्लभा, षट्चर्णा परमेशानि ! देवी नील-पताकिनी—ॐ हृत्-कामेश्वरि कामांकुशे काम-पताकिके भगवति नील-पताके भगवति ! नमोऽस्तु मे परम-गुह्ये ! ह्रीं ह्रीं ह्रीं मदने मदन-देहे ! त्रैलोक्यमावेशय हुं फट् स्वाहा

वही। ध्यान—

रक्तां रक्तांशुक-प्रौढां नाना - रत्न-विभूषितां, इन्द्रनील-स्फुरन्नील-पताकां कमले स्थिताम्।
काम - ग्रैवेय - सलग्न - सृणी च वरदाभये, दधतीं परमेशानीं त्रैलोक्याकर्षण - क्षमाम्॥

(२) तारो माया फान्त-रेफौ झिण्टीश-शशि - सयुतौ, हसोऽग्न्यर्घीश - विन्द्वाढ्यो हृल्लेखाकुश-नित्य-म। दद्रवे वर्म सृण्यन्ता प्रोक्ता नील-पताकिनी, चतुर्दशाक्षरा सर्व - त्रैलोक्याकर्षण-क्षमा—ॐ ह्रीं फ्रें स्रं ह्रीं क्रों नित्य-मदद्रवे हु क्रों

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५६।

(३) ऐं ह्रीं फ्रें लूं घ्रूं क्लीं आ ह्रीं क्रों नित्य-मद-द्रवे हु फ्रें ह्रीं नील-पताका-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय'। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६

१२ विजया : (१) शिव-चन्द्र-सपान्ताग्नि-रुद्र-स्वर-विभूषित, विन्दु-नाद-कलाक्रान्तं विजयायै नमो लिखेत्—हसव्रफें विजयायै नमः

'वही'। ऋषि शिव, छन्द गायत्र, देवता विजया, बीज 'हसव्रफें', शक्ति 'विजयायै', कीलक 'नमः'। षड्-दीर्घ से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

एक-वक्त्रां दश - भुजां सर्प - यज्ञोपवीतिनीं, दंष्ट्रा-कराल-वदनां नर - माला-विभूषिताम्।
अस्थि-चर्मावशेषां ता वह्नि-कूट-सम-प्रभा, व्याघ्राम्बरां महा-प्रौढ - शवासन-विराजिताम्।

रणे स्मरण-मात्रेण भक्तेभ्यो विजय - प्रदां, शूलं शरं च टङ्कारि-सृणि - घण्टासि-द्वयम् ।
पाशमग्निमभीतिं च दधानां विजयां स्मरेत् ॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५८ में इसी सात अक्षर के मन्त्र का उद्धार—वराह - हंस - चण्डीश-जनार्दन-कृशानवः, पद्म-नाभेन्दु - संयुक्ता विजयायै नमोऽन्तिमः । विजयाया मनुः प्रोक्तः सप्त-वर्णोऽखिलार्थदः ।

उल्लेखनीय है कि यहाँ 'हसखफ्रें' को भिन्न प्रकार से लिखा है । यथा—'ह्स्ख्फ्रें' । यही शुद्ध रूप है क्योंकि इस एकाक्षर बीज को लेकर मन्त्र के शेष छः वर्णों से यह 'सप्ताक्षर' मन्त्र बनता है ।

(२) ऐं ह्स्ख्फ्रें विजया-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय' । देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६ ।

१३ सर्व-मङ्गला : (१) जीवं वारुण-ताराढ्यं सर्वान्ते मङ्गला-पदं, ङेऽन्तं हृदयमाख्यातं नवार्णा सर्व-मङ्गला—स्वौं सर्व-मङ्गलायै नमः

वही । मन्त्र के तीन पदों से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

शुभ्र-पद्मासने रम्यां चन्द्र - कुन्द-समद्युतिं, सु-प्रसन्नां शशि-मुखीं नाना - रत्न-विभूषिताम् ।
अनन्त - मुक्ताभरणां स्रवन्तीममृत-द्रवं, वरदाभय - शोभाढ्यां स्मरेत् सौभाग्य - वर्द्धिनीम् ।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३५८ में इसी नौ अक्षर के मन्त्र का उद्धार—ताराढ्यो भृगु-षड्गीशो ङेऽन्ता स्यात् सर्व-मङ्गला, नमोऽन्तो मनुराख्यातो नवार्णः सर्व-मङ्गलः ।

(२) ओं स्वौं सर्व-मङ्गला-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय' । देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २८६ ।

१४ ज्वाला-मालिनी : (१)ॐकार-बीजमुच्चार्य नमो भगवतीति च, ज्वाला-मालिनि-देव्यन्ते सर्व-भूतान्त संलिखेत् । हार-कारि च के जात-वेदसीति ज्वलन्ति च, ज्वल-युग्मं प्रज्वलेति द्वमात्मकं द्विधा । वह्नि द्विधा च कवचमस्त्रं चापि समालिखेत्, चत्वारिंशद्-वर्ण-रूपा वस्वर्णा च क्रमाद् वदेत्—ॐ नमो भगवति ज्वाला-मालिनि देवि सर्व-भूत-संहार-कारिके जात-वेदसि ! ज्वलन्ति ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल हूं हूं ररहुं फट्

वही । बीज 'रं', शक्ति 'फट्', कीलक 'हुं' । षडङ्ग-न्यास क्रमशः मन्त्र के १२, १२, ५, ७, ८, ४ अक्षरों से करे । ध्यान—

उद्यद्-विद्युल्लता-कान्ति - स्वर्णाभरण-भूषितां, महा-सिंहासन-प्रौढां ज्वाला - माला करालिनीम् ।
अरि - शङ्खौ खड्ग - खेटे त्रिशूलं डमरुं तथा, पान - पात्रं च वरदं दधतीं संस्मरेद् यजेत् ॥

(२) तारो नमो भगवति ज्वाला-मालिनि तत्परं, देव्यन्ते सर्व-भूतान्ते संहारान्ते तु कारिके । जात-वेदसि-वर्णान्ते ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति च, ज्वल-द्वयं प्रज्वलान्ते कवचं पावक-द्वयं । वर्मास्त्रान्तोदिता ज्वाला-मालिन्यष्ट-युगाक्षरा—ॐ नमो भगवति ज्वाला-मालिनि देवि सर्व-भूत-संहार-कारिके जात-वेदसि ! ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल-ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६० ।

(३) ओं ॐ नमो भगवति ज्वाला-मालिनि देवि सर्व-भूत-संहार-कारिके जात-वेदसि ज्वलन्ति ! ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् ज्वाला - मालिनी - नित्या - श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय'। देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २६०।

१५ विचित्रा : (१) चक्रानुग्रह-विन्बिन्दु-भपित मनुमालिखेत—चक्रौं

वही। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता विचित्रा, बीज 'क', कीलक 'च', शक्ति 'ॐ'। षड्-दीर्घ-स्वर-युक्त बीज से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

शुभाङ्गी ज्ञानदा नित्यं विचित्र-वसना सदा, विचित्र-तिलका नित्यं विचित्र-कुसुमोज्ज्वला।
वरदाभय-शोभाढ्या नाना-रत्न-धरा क्वचित्।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६० में यही मन्त्र एकाक्षर-रूप में दिया है—'च्क्रौं'। उद्धार भिन्न शब्दों में है—कूर्मः क्रोधीश-मन् बिन्दु-संयुतो ह्येक-वर्णकः, विचित्राया मनुश्चैता नित्याः पञ्च-दशोदिताः।

(२) अं च् क्रौं चित्रा-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि 'सुभगोदय'। देखें नित्या-षो०, २६०।

१६ महा-त्रिपुरसुन्दरी : (१) मूल-मन्त्र से सोलहवीं नित्या का पूजन श्री-यन्त्र के मध्य-बिन्दु में करने का निर्देश है। देखें 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६१।

(२) अः मूलं महा-त्रिपुर-सुन्दरी-नित्या-श्रीपादुकां पूजयामि

'सुभगोदय', देखें 'नित्या-षोडशिकार्णव', पृष्ठ २६०

पञ्च-पञ्चिकाओं के मन्त्र

१ पञ्च-लक्ष्मी

१ श्रीविद्या-लक्ष्मी : षोडशार्णा महा-विद्या समुच्चार्य विधान-वित्, महालक्ष्मीश्वरी-वृन्द-मण्डितासन-संस्थिता। सर्व-सौभाग्य-जननी पादुकां पूजयामि च—श्रींह्रींक्लींऐंसौः ॐ ह्रींश्रीं क-५ ह-६ स-४ सौः ऐंक्लींह्रींश्रीं महालक्ष्मीश्वरी - वृन्द-मण्डितासन - संस्थिता-सर्व-सौभाग्य-जननी-श्रीपादुकां पूजयामि

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास।

'मन्त्र-महोदधि' में केवल 'श्रीविद्या' का नामोल्लेख है। और यह निर्देश है कि मध्य में उनकी पूजा 'मूलं श्रीविद्या - श्रीपादुकां पूजयामि' मन्त्र से कर शेष चारों मन्त्रों से श्रीविद्या को चारों दिशाओं में उन-उन मन्त्रों की अधिष्ठात्री देवता का पूजन करे।

२ लक्ष्मी : वरुणान्त वह्नि - संस्थ दीर्घ - नेत्र - विभूषित, बिन्दु - नाद - समायुक्त लक्ष्मी-मन्त्र उदाहृतः—श्रीं

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', सप्तम श्वास। ऋषि भृगु, छन्द निचृत्, देवता श्री, बीज 'शं', शक्ति 'ईं', कीलक 'र'। 'शां, शीं' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ध्यायेत् ततः श्रियं रम्यां सर्व-देव-नमस्कृतां, तप्त-कार्तस्वराभासां दिव्य-रत्न-विभूषिताम्।
आसिच्य - मानाममृतैर्मुक्ता - रत्न - द्रवैरपि, शुभ्राभ्रानेभ - युग्मेन मुहुर्मुहुरपि प्रिये।
रत्नौघ-बद्ध-मुकुटां शुद्ध-क्षौमाङ्ग-रागिणीं, पद्माक्षीं पद्म-नाभेन हृदि चिन्त्यां स्मरेद् बुधः।
एवं ध्यात्वा जपेद् देवीं पद्म-युग्म-धरां सदा, वरदाभय- शोभाढ्यां चतुर्बाहुं सुलोचनाम्॥

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६४ में उद्धार—'वर्वेशो वह्निमारूढो वाम-नेत्रेन्दु-संयुतः, लक्ष्मी-मन्त्रोऽयमेकार्णस्तेन लक्ष्मीं प्रपूजयेत्।' वहाँ ऋष्यादि का उल्लेख नहीं है, केवल यह निर्देश है कि श्रीविद्या के पूर्व-भाग में 'लक्ष्मी' की पूजा करे। पूजन-मन्त्र— श्रीं लक्ष्मी-श्रीपादुकां पूजयामि।

३ महा-लक्ष्मी : प्रणवं पूर्वमुच्चार्य हरीमातमामक्षरं, श्री-पुटं चाथ कमले कमलालये प्रसीद च। लाये-मध्य-गतां भूमिं रुद्र-स्थाने तु योजयेत्, प्रसीद पूर्व-बीजानि सम्पुटत्वेन योजयेत्। महालक्ष्मी हृदन्तोऽणुरष्टा-विंशति-वर्ण-वान्—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि दक्ष प्रजापति, छन्द गायत्री, देवता लक्ष्मी, बीज 'श्री', शक्ति 'ह्री', कीलक 'ॐ'। ध्यान—

रत्नोद्यद्-वसु-पात्रं च पद्म-युग्मं च हेमजं, अग्र-रत्नावलीं राजदादर्शं दधतीं पराम्।
चतुर्भुजां स्फुरद् रत्न-नूपुरां मुकुटोज्ज्वलां, ग्रैवेयाङ्गद-हाराढ्य-कङ्कणां रत्न-कुण्डलाम्।
पद्मासन-समासीनां दूतीभिर्मण्डितां सदा, शुक्लाङ्ग-राग-रसनां महा-दिव्याङ्गनाननताम्॥

'मन्त्र-महो०', वही—'तार पद्मा शक्ति पद्मा कमले कमलालये, प्रसीद-युगल लक्ष्मीर्माया पद्मा ध्रुवो महा। लक्ष्म्यै नमोऽन्तो मन्त्रोऽयमष्टा-विंशति-वर्ण-वान्।' वहाँ ऋष्यादि का उल्लेख नही है, केवल यह निर्देश है कि 'श्रीविद्या' के दक्षिण-भाग मे 'महा-लक्ष्मी' का पूजन करे पूजन-मन्त्र—मूलं महा-लक्ष्मी-श्रीपादुकां पूजयामि।

४ त्रिशक्ति-लक्ष्मी : श्री-बीज च परा-बीजं काम-बीजं समालिखेत्, इयं त्रिशक्तिर्देवेशि! त्रिषु लोकेष दुर्लभा—श्रीं ह्रीं क्लीं

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही! ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता त्रिशक्ति, मन्त्राक्षरो की द्विरावृत्ति से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

नव-हेम - स्फुरद्-भूमौ रत्न-कुट्टिम - मण्डपे, महा-कल्प-वनान्तःस्थे रत्न - सिंहासने वरे।
कमलासन-शोभाढ्यां रत्न-मञ्जीर-मण्डितां, स्फुरद्-रत्न-लसन्मौलिं रत्न-कुण्डल-मण्डिताम्।
अनर्घ्य-रत्न - घटित-नाना - मण्डन-भूषितां, दधतीं पद्म - युगलं पाशांकुश - धनुः-शरान्।
षड्-भुजामिन्दु - वदनां दूतीभिः परिवारितां, चारु-चामर-हस्ताभी रत्नादर्श-सुपाणिभिः।
ताम्बूल-स्वर्ण-पात्रीभिर्भूषा-पेटी-सुपाणिभिः, ध्यायेत् सर्व-समृद्धिदां तप्त-कार्तस्वराभासाम्॥

'मन्त्र-महो०', वही—'लक्ष्मीर्माया मनो-जन्मा त्रिशक्तिर्मनुरीरित'।' वहाँ ऋष्यादि का उल्लेख नही है। केवल यह निर्देश है कि श्रीविद्या के पश्चिम-भाग मे 'त्रिशक्ति' का पूजन करे। पूजन-मन्त्र—श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

५ सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी : चन्द्रेश-मादन-क्षमेश-वह्नि-दीर्घाक्षि-मण्डितं, विश्वक्रूरेश्वरी-युक्तं विधेयं वैष्णवी प्रिये! श्री-बीज-सम्पुटं कुर्यात् सर्व-साम्राज्य-दायिनी—श्रीं सहकलह्रीं श्रीं

'श्रीविद्या०-तन्त्र', वही। ऋषि हरि, छन्द गायत्री, देवता महा-साम्राज्य-दायिनी मोहनी लक्ष्मी, बीज सहकलह्रीं, शक्ति 'श्री'। 'श्रा, श्री' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

अतसी-पुष्प - सङ्काशां रत्न-भूषण-भूषिता, शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-शार्ङ्ग - बाण-धरां करैः।
षड्भिः कराभ्यां देवेशि! वरदाभय-शोभितां, एवमष्ट-भुजां ध्यायेत् महा-साम्राज्य-दायिनीम्।

'मन्त्र-महो०', वही—'भृग्वाकाश-कला मायारूढा पद्मालय-पुटाः, त्रि-वर्णा सर्व-साम्राज्या।' इस उद्धार के अनुसार मन्त्र तीन अक्षरो का है, अतः कूट को इस रूप मे लिखा है—'स्हक्ल्ह्रीं', वहाँ ऋष्यादि का उल्लेख नही है। केवल यह निर्देश है कि श्रीविद्या के उत्तर-भाग मे 'सर्व-साम्राज्या' का पूजन करे। पूजन-मन्त्र—श्रीं स्हक्ल्ह्रीं श्रीं सर्व-साम्राज्या-श्रीपादुकां पूजयामि।

२ पञ्च-कोश-विद्या

१ श्रीविद्या कोशेश्वरी : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं महा-कोशेश्वरी-वृन्द-मण्डितासन-संस्थिता, सर्व-सौभाग्य-जननी-पादुकां पूजयामि च—ऐं ह्रीं श्रीं 'मूल' महा-कोशेश्वरी-वृन्द-मण्डितासन-संस्थिता - सर्व-सौभाग्य-जननी-श्रीपादुकां पूजयामि

'मन्त्र-महोदधि' के अनुसार मध्य मे श्रीविद्या का पूजन करे।

२ परंज्योति-कोशेश्वरी : प्रणवं पूर्वमुच्चार्य परा हंसः पदं लिखेत्, ततः सोऽहं शिरो देवि ! वसु-वर्णयमीरिता—ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्र, देवता परंज्योतिर्मयी, बीज ॐ, शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ह्रीं हंसः सोहं'। षडङ्ग न्यास क्रमश १ स्वाहा, २ सोहं, ३ हंसः, ४ ह्रीं, ५ ॐ, ६ समग्र मन्त्र से। ध्यान—

यस्मादतिशय क्वापि तेजसां नैव विद्यते, परं पदेव तत्-प्रोक्तं परं ज्योतिश्च देवता।

'मन्त्र-महो०', पृष्ठ ३६५—'तारो माया ततो हंस. सोऽहं वह्नि-प्रियाऽन्वितः।' वहाँ ऋष्यादि का उल्लेख नहीं है। केवल यह निर्देश है कि श्रीविद्या के पूर्व-भाग मे 'परं-ज्योति' का पूजन करे। पूजन-मन्त्र—ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा परं-ज्योति श्रीपादुकां पूजयामि।

३ पर-निष्कल-देवता (शाम्भवी) कोशेश्वरी : अनुग्रहादिर्देवेशि ! विन्दु-नाद-कलात्मका', पर-निष्कल-देवीयं-ब्रह्म-स्वरूपिणी—ॐ पर-निष्कल-शाम्भवी

'श्रीविद्या० तन्त्र', वहीं। मन्त्र को स्पष्ट नहीं किया है। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्र, देवता ब्रह्म, बीज 'श्रं', शक्ति 'ऊं', कीलक 'मं'। स्वर-द्वन्द्व के मध्य मे 'ऋ ॠ, ऌ ॡ' का क्षेपण व त्याग करते हुए षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

शुक्लाम्बर-परीधाना शुक्ल-माल्यानुलेपना, ज्ञान-मुद्राङ्किता योगि-पति-वृन्देन सेविता।।

'मन्त्र-महो०', वही—तारः परो निष्कलश्च शाम्भवी—'ॐ पर-निष्कल-शाम्भवी।' ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के दक्षिण-भाग मे पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—ॐ पर-निष्कल-शाम्भवी-श्रीपादुकां पूजयामि।

४ अजपा-कोशेश्वरी : हंसः पदः परेशानि ! प्रत्यहं जपते नरः, उच्छ्वास-निःश्वास-तया तदा बन्ध-क्षयो भवेत्—हंसः

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि अव्यक्त-हंस, छन्द गायत्र, देवता परम-हंस, बीज 'हं', शक्ति 'सः', कीलक 'सोहं', विनियोग 'मोक्षार्थे'। षडङ्ग-न्यास क्रमश '१ सूर्याय स्वाहा, २ सोमाय स्वाहा, ३ निरञ्जनाय स्वाहा, ४ निराभासाय स्वाहा, ५ अनन्त-तनु-सूक्ष्माय स्वाहा ६ अव्यक्त-नयन-प्रबोधात्मने स्वाहा' से। ध्यान—

अस्य हंसस्य देवेशि ! निगमागम - पक्षको, अग्नीषोमद्वयो वापि पक्षौ तार' शिरो भवेत्।
विन्दु-त्रयं शिखा नेत्रे मुखे नाद प्रतिष्ठित, शिव-शक्ति-पद-द्वन्द्वं कालाग्नि-पार्श्व-युग्मकम्।
अयं परम-हंसस्तु सर्व - व्यापी प्रकाश-वान्, सूर्य - कोटि-प्रतीकाशः स्व-प्रकाशेन भासते।।

'मन्त्र-महो०', वही—'नभः स-विन्दु-सर्गाढ्यो भृगुर्द्वपर्णोऽजपा।' ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के पश्चिम-भाग मे पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—हंसः अजपा-श्रीपादुकां पूजयामि।

५ मातृका-कोशेश्वरी : अकारादि-क्षकारान्ता वर्णा प्रोक्ता तु मातृका—अंआं हंलंक्षं

'मन्त्र-महो०', वहीं। ऋष्यादि-न्यास का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के उत्तर-भाग में पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—अं आं ''' हं लं क्षं मातृका-श्रीपादुकां पूजयामि।

'श्रीविद्या० - तन्त्र' मे 'मातृका - कोशेश्वरी' का विवरण नही दिया है, लिखा है—'प्रागेव-प्रपञ्चिता।'

३ पञ्च-कल्पलता विद्या

१ श्रीविद्या कल्पलतेश्वरी : ऐं ह्रीं श्रीं मूलं महा-कल्पलतेश्वरी-वृन्द-मण्डितासन- संस्थिता-सर्व-सौभाग्य-जननी-श्रीविद्या-कल्पलता-श्रीपादुकां पूजयामि

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। उद्धार नहीं दिया है, न ऋष्यादि का उल्लेख है।

२ पारिजातेश्वरी : (१) सम्पत्-प्रदाया भैरव्या वाग्भवं वीजमालिखेत्, तारेण परया देवि! सम्पुटीकृत्य मन्त्र-वित्। सरस्वत्यै हृदन्तोऽयं रुद्राणों मनुरीरितः—ॐ ह्रीं ह्स्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द गायत्र, देवता पारिजातेश्वरी वाणी, बीज 'ह्स्रैं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'ॐ'। 'ह्स्रां, ह्स्रीं' आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

हंसारूढां लसन्मुक्ता-धवलां शुभ्र-वाससं, शुचि-स्मितां चन्द्र-मौलिं वज्र-मुक्ता-विभूषणाम्।

विद्यां वीणां सुधा-कुम्भमक्ष-मालां च बिभ्रतीं॥

(२) आकाश-हंस-क्रोधीश-पिनाकीश-हर-धरा, सेन्दवस्तार - मायाभ्यां सम्पुटाश्च सरस्वती। ङेऽन्तो मन्त्रोऽयं प्रोक्तः एकादशाक्षरः—ॐ ह्रीं हंसकलहहूं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः

'मन्त्र-महो०', वही। ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के दक्षिण भाग मे पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—ॐ ह्रीं हसकलहहूं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः पारिजातेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि।

३ पञ्च-वाणेश्वरी : त्रिपुरेशी-मन्त्र-मध्ये वाणाः प्रोक्ता महेश्वरि, तैरेव पञ्चभिर्वार्णैविद्या पञ्चाक्षरी भवेत्—द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि मदन, छन्द गायत्र, बीजादि कामेश्वरी-वत्, देवता पञ्च-वाणेश्वरी। पाँचो बाणों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

उद्यद्-दिवाकराभासां नानालङ्कार-भूषितां बन्धूक-कुसुमाकार-रक्त-वस्त्राङ्गरागिणीम्।
इक्षु-कोदण्ड-पुष्पेषु-विराजित-भुज-द्वयाम्॥

'मन्त्र-महो०', वही—'द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं भृगुः सर्गी सोदिता पञ्च-वर्णका, वाणेशीमुत्तरे पुनः।' ऋष्यादि का उल्लेख नही। श्रीविद्या के उत्तर-भाग मे पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पञ्च-वाणेशी-श्रीपादुकां पूजयामि

४ पञ्च-कामेश्वरी : पूर्वोक्त-पञ्च-कामैस्तु पञ्च-कामेश्वरी भवेत्—ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि सम्मोहन, छन्द गायत्र, देवता कामदा पञ्च-कामेश्वरी। ध्यान—

रक्तां रक्त-दुकूलाङ्ग-लेपनां रक्त-भूषणां, पाशांकुशौ धनुर्बाणान् पुस्तकं चाक्ष-मालिकाम्।
वराभीती च दधतीं त्रैलोक्य-वश-कारिणीम्॥

५ कुमारी : वाग्भवं त्रिपुरेशान्या हित्वा तत्र क्षिपेत् सुधीः, काम-शक्ति-द्वयान्तस्तु विद्येयं त्र्यक्षरी भवेत्—क्लीं ऐं सौः

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋष्यादि त्रिपुरेशी-वत। ध्यान—

उद्यत्-सूर्य-सहस्राभां माणिक्य-वर-भूषणां, स्फुरद्-रत्न-दुकूलाढ्यां नानालङ्कार-भूषिताम्।
इक्षु-कोदण्ड-बाणांश्च पुस्तकं चाक्ष-मालिकां, दधतीं चिन्तयेन्नित्यं सर्व-राज-वशङ्करीम्॥

'मन्त्र-महो०', पृष्ठ ३६६ के अनुसार 'पञ्च-ललना' के अन्तर्गत विद्यायें हैं—(१) श्रीविद्या, (२) त्वरिता, (३) पारिजातेश्वरी, (४) त्रिपुटा, (५) पञ्च-बाणेशी। इनमें से श्रीविद्या, पारिजातेश्वरी पञ्च-बाणेशी का विवरण ऊपर द्रष्टव्य है। शेष दो का विवरण—

त्वरिता : प्रणवो भुवनेशी हुं खेचछेक्ष' पदं पुन', स्त्री हुं मेरु, स-क्षिण्टोशो मायास्त्रं द्वादशाक्षरः—ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्ष. स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट्

ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के पूर्व-भाग में पूजन का निर्देश।पूजन-मन्त्र—मूलं त्वरिता-श्रीपादुकां पूजयामि

त्रिपुटा : रमा माया मनो-भूमिस्त्रि-वर्णा त्रिपुटोदिता—श्रीं ह्रीं क्लीं

ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के पश्चिम-भाग में पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—मूलं त्रिपुटा-श्रीपादुकां पूजयामि

४ पञ्च-काम-दुघा (कामधेनु)

१ श्रीविद्या काम-दुघा : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं महा-काम-दुघेश्वरी-वृन्द-मण्डितासन-संस्थिता-सर्व-सौभाग्य-जननी-श्रीविद्या-कामदुघा-श्रीपादुकां पूजयामि

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋष्यादि का उल्लेख नहीं।

२ अमृत-पीठेश्वरी : (१) ह्रीं हंसः सञ्जीवनि जू जीव प्राण-ग्रन्थिस्थ कुरु-कुरु सः स्वाहा

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋष्यादि प्राग्वोक्तानि।

(२) वाक्-कामौ भृगुरी-सर्ग-युक्तो मन्त्रस्त्रि-वर्णकः—ऐं क्लीं सौः

'मन्त्र-महो०', पृष्ठ ३६७। ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के पूर्व - भाग में पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—ऐं क्लीं सौः अमृत-पीठेशी-श्रीपादुका पूजयामि

३ अमृतेश्वरी : (१) ऐं ब्लू ॐ जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृत - वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋष्यादि प्राग्-वत्। ध्यान—

अमृतामृत-रश्म्योघ-सन्तर्पित-चराचर, नवानि भव-शान्त्यै त्वां भावयाम्यमृतेश्वरीम्॥

(२) सकारोऽनुग्रही सर्गो कामो वागग्र-पूर्विका, त्रि-वर्ण-मनुना पश्चात् पूजयेदमृतेश्वरी—सौः क्लीं हूँ

'मन्त्र-महो०', वही। ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के पश्चिम भाग में पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—सौः क्लीं हूँ अमृतेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि।

४ अन्नपूर्णा : शिवाग्नि-वाम-नयन-बिन्दु-नाद-कलात्मक, श्री-काम-युगल प्रोक्त्वा हृदन्ते भगवत्यपि। माहेश्वरि चतुर्वर्णमन्नपूर्णे तथा लिखेत्, चतुर्वर्णं वह्नि-जाया ताराद्यो मनुरीरितः। द्वि-दशार्ण महेशानि—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही। ऋषि ब्रह्मा, छन्द उष्णिक्, देवता अन्नपूर्णेश्वरी देवी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्रीं', कीलक 'क्लीं'। 'ह्रां ह्रीं' आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

उद्यत्-सूर्य-समाभासां विचित्र-वसनोज्ज्वलां, चन्द्र-चूडामन्न-दान-निरतां रत्न-भूषिताम्।
सुवर्ण-कलशाकार - स्तन-भार - नतां परां, रुद्र-ताण्डव सानन्दां द्वि-भुजां परमेश्वरीम्।
वरदाभय शोभाढ्यामन्न दान-रतां सदा॥

'मन्त्र-महो०', वही—'वेदादिर्गिरिजा पद्मा मन्मथो हृदय भग, वति माहेश्वरि प्रान्तेऽन्नपूर्णे दहनाङ्गना।' ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के उत्तर भाग में पूजन का निर्देश। पूजन मन्त्र—**मूल अन्नपूर्णा-श्रीपादुकां पूजयामि**

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में पाँचवीं काम-दुघा 'सुधासु' विद्या का विवरण नहीं दिया है। 'मन्त्र-महोदधि' में इनका नाम 'सुधाश्री' दिया है, और वह तीसरे स्थान पर है। यथा—

५ सुधाश्री. नमो भृग्वग्नयो वाम - नेनाढ्यश्चन्द्र - भूषिता, सार्णाद्या भुवनेशो श्री कलाद्या भुवनेश्वरी। सुधा-श्री-मन्त्र उदितो वेदार्णः—**ह्स्लीं स्हौं श्रीं क्लीं**

ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। श्रीविद्या के दक्षिण भाग में पूजन का निर्देश। पूजन-मन्त्र—**मूल सुधाश्री-श्रीपादुकां पूजयामि**

३ मातङ्गी रत्नेश्वरी : वाग्भवं काम-राजं च सर्ग-वान् भृगुरुत्तमे, अनुग्रहेण संयुक्तः पुनराद्यं परां लिखेत् । श्रीबीजं तारकं चैव नमो भग-वतीति च, मातङ्गीश्वरि सर्वान्ते मनोहरि जनादिकं । सर्व-राज-वशं चान्ते करि सर्व-मुखात्मकं, रञ्जिनीति ततः सर्व-स्त्री-शब्दं च ततो वदेत् । पुरुपान्ते वशं चोक्त्वा कर्यन्ते सर्व-दुष्टतः, मृगान्ते वशमालिख्य सर्व-लोक-पदं लिखेत् । शैलजे वशमालिख्य करि शब्द ततो वदेत्, परां श्रियं काम-बीजं वाग्भवं च समालिखेत् । सप्ततिश्च त्रयो वर्णा मातङ्गी-विग्रहाः प्रिये—ऐंक्लींसौः ऐंह्रींश्रीं ॐ नमो भगवति मातङ्गीश्वरि सर्व-जन-मनो-हारि सर्व-राज-वशङ्करि सर्व-मुख-रञ्जिनि सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सर्व-दुष्ट-मृग-वशङ्करि सर्व-लोक-वशङ्करि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही । ऋषि भगवान् मतङ्ग, छन्द गायत्री, देवता नाद-मूर्ति मातङ्गी परमेश्वरी, बीज 'क्लीं', शक्ति 'ऐं', कीलक 'सौः' । षडङ्ग-न्यास 'ऐं, क्लीं, सौः' की द्विरावृत्ति से । ध्यान—

अम्भोजार्पित-दक्षांघ्रि-श्रीमां ध्यायेन्मतङ्गिनीं, क्वणद्-वीणा-लसन्नाद-श्लाघान्दोलित-कुण्डलाम् ।
दन्त-पंक्ति-प्रभा-रम्यां शिवां सर्वाङ्ग - सुन्दरीं, कदम्ब पुष्प-दामाढ्यां वीणा-वादन-तत्पराम् ।
श्यामाङ्गीं शङ्ख-वलयां ध्यायेत् सर्वार्थ-सिद्धये ।।

'मन्त्र-महो०', वही—'वाक्-कामः सौः पुनर्वाणी माया लक्ष्मीर्ध्रुवो नमः, भगवान्ते ति मातङ्गीश्वरि सर्व-जनार्णकाः । मनोहरि-पदं प्रोच्य राज-वशं-करि, सर्वान्ते मुख-रञ्जयन्ते मेषो नेत्र-समन्वितः । सर्व-स्त्री-पुरुषान्ते तु वशंकरि पदं वदेत्, सर्व-दुष्ट-मृग-प्रान्ते वशं-करि पुनः पदं । सर्व-लोक-वश पश्चात् करि माया रमाङ्गज', वाक् त्रि-सप्तति-वर्णोऽयं मातङ्ग्या उदितो मनुः ।' स्पष्ट मन्त्र अशुद्ध छपा है । ऋष्यादि का उल्लेख नहीं । श्रीविद्या के दक्षिण-भाग में पूजन का निर्देश । पूजन - मन्त्र—मूलं मातङ्गी-श्रीपादुकां पूजयामि ।

४ भुवनेश्वरी रत्नेश्वरी : गगनं वह्निना वाम-नेत्रेन्दुभ्यां समन्वितं, भुवनेशी-मनुः प्रोक्तः—ह्रीं

'मन्त्र-महो०', वही । श्रीविद्या के पश्चिम भाग में पूजा करने का निर्देश है । पूजन-मन्त्र—ह्रीं भुवनेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि ।

'श्रीविद्या० तन्त्र' में उद्धार नहीं दिया है । केवल 'भुवनेश्वरी' का नामोल्लेख है ।

५ वाराही रत्नेश्वरी : (१) वाग्भवं बीजमुच्चार्य गलानुग्रह-बिन्दुभिः, नादेन भूषितं बीजं पार्थिवं चोच्चरेत् ततः । पुनराद्यं नमोऽन्ते च भगवति समालिखेत्, वार्तालि-युग्मं वाराहि पुनरेतद् द्वयं लिखेत् । वाराह-मुखि च द्वन्द्वं सन्धि-हीनं ततः परं, अन्धे चान्धिनि सप्तार्णं हृदन्तेन भवेत् प्रिये ! रुन्धे रुन्धिन्यतो हृच्च जम्भे जम्भिनि हृत् ततः, मोहे मोहिनि हृच्चापि स्तम्भे स्तम्भिनि हृत् ततः । एतदुक्त्वा महेशानि ! सर्व - दुष्ट - प्रदुष्ट च, सानामन्तं च सर्वेषां सर्व-वागिनि वित्त च, चक्षुर्मुख-गति प्रोक्त्वा जिह्वा-स्तम्भं कुरु-द्वयं, शीघ्रं वश्य कुरु-द्वन्द्वं पार्थिवं पुनः । ठकारस्य चतुष्कान्ते कवचास्त्राग्नि-वल्लभा, चतुर्दशोत्तर-शत मन्त्र-वर्णा भवन्ति हि—ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि, वाराहि वाराहि, वाराह-मुखि वाराह-मुखि, अन्धे अन्धिनि नमः, रुन्धे रुन्धिनि नमः, जम्भे जम्भिनि नमः, मोहे मोहिनि नमः, स्तम्भे स्तम्भिनि नमः, सर्व-दुष्ट-प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व-वाक्-वित्त-चक्षुर्मुख-गति-जिह्वा-स्तम्भं कुरु कुरु, शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु, ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा

'श्रीविद्या० तन्त्र', वही, ऋष्यादि नहीं बताए हैं । ध्यान—

प्रलयारुण-सङ्काश-पद्मान्तर्गत - वासिनीं, इन्द्रनील - महा-तेजः-प्रकाशां विश्व - मातरम् ।
कदम्ब-मुण्ड-मालाढ्य-नव-रत्न-विभूषितां, अनर्घ्य-रत्न - घटित - मुकुट-श्री-विराजिताम् ।

कौशेयार्धोरुकां चारु - प्रवाल - मणि - भूषणां, हलेव मुसलेनापि वरदेनाभयेन च।
विराजित-चतुर्बाहुं कपिलाक्षीं सुमध्यमां, नितम्बिनीमुत्पलाभां कठोर घन - सत्कुचाम्।
कोलाननां ध्यायामि वाराहीं कल्याण-दायिनीम् ।।

(२) वाग्-बीज-पुटिता भूमिर्नमोऽन्ते भगवत्यथ, वार्तालि वारा गगनं स-दृग् वाराहि बा-पदं। राहमुखि ततो बीज-त्रयं पूर्वोदितं वदेत्, अन्धेऽन्धिनि हृदयं रुन्धे रुन्धिनि हृत् तथा। जम्भे जम्भिनि हृत् पश्चान्मोहे मोहिनि हृत् पुनः, स्तम्भे स्तम्भिनि हार्दान्ते पुनर्बीज-त्रयं वदेत्। सर्व-दुष्ट-प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व-वाक्-पदं, चित्त-चक्षुर्मुख-गति-जिह्वा-स्तम्भ कुरु-द्वयं। शीघ्रं वश्यं कुरु-द्वन्द्वं त्रि-बीजी ठ-चतुष्टयं, सर्गाद्यं वर्म फट् स्वाहा वेद- रुद्राक्षरो मनु —ॐ ऐं ग्लौं ऐं **नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वाराह-मुखि ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्व-दुष्ट-प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व-वाक्-चित्त-चक्षुर्मुख-गति-जिह्वा-स्तम्भं कुरु-कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३०२ मे स्पष्ट मन्त्र मे 'सर्वेषां' के बाद 'सर्व'-शब्द छपने से रह गया है। ऋषि शिव, छन्द अति-जगती, देवता वार्तालि। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ वार्तालि, २ वाराहि, ३ वाराह-मुखि, ४ अन्धे अन्धिनि, ५ रुन्धे रुन्धिनि, ६ जम्भे जम्भिनि' से। ध्यान—

रक्ताम्भोरुह कर्णिकोपरि - गते शावासने संस्थितां,
मुण्ड-स्रक्-परि-राजमान-हृदयां नीलाश्म-सद्-रोचिषम्।
हस्ताब्जैर्मुसलं हलाभय - वरान् सम्बिभ्रतीं सत्-कुचाम्,
वार्तालीमरुणाम्बरां त्रिनयनां वन्दे वराहाननाम् ।।

उक्त मन्त्र 'महोदधि' के पृष्ठ५६८ पर शुद्ध रूप मे छपा है किन्तु वहाँ 'वश्यं' के स्थान पर 'वशं' है, जो मन्त्रोद्धार के अनुसार ठीक नहीं है। पृष्ठ ३७० पर भी यही मन्त्र तीसरी वार छपा है किन्तु वहाँ 'वाराह-मुखि' के स्थान पर 'वराह-मुखि', 'वश्य' के स्थान पर 'वशं' और चार के स्थान पर तीन ही 'ठः' छपे हैं।

विशेष : पञ्च-पञ्चिकाओ का पूजन करते समय मूल-मन्त्र के बाद देवी का नाम और अन्त मे 'श्रीपादुकां पूजयामि नम' जोड ले। यथा लक्ष्मी का पूजन-मन्त्र—**श्रीं लक्ष्मी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।**

षड-दर्शन के पूजन-मन्त्र

१ ब्राह्म-दर्शन-ब्रह्म-गायत्री (पूर्वायतन-विद्या) : प्रणवाद्या व्याहृतयः सप्त स्युस्तत्-पदादिका, चतुर्विंशत्यक्षरात्मा गायत्री शिरसा सह—ॐ भूर्भुवः स्वर्महर्जनः तपः सत्यं तत् सवितुर्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्, परो रजसे सावदोम्

२ वैष्णव दर्शन (दक्षिणायतन-विद्या) : ॐ नमो नारायणाय

ऋषि साध्य-नारायण, छन्द गायत्री, देवता श्रीमहा-विष्णु, बीज 'ॐ', शक्ति 'नमः', कीलक 'नारायणाय', विनियोग 'श्रीविद्याङ्गत्वेन जपे'। षडङ्ग-न्यास क्रमश '(१) ॐ क्रुद्धोल्काय नमः, (२) महोल्काय, (३) वीरोल्काय, (४) द्युल्काय, (५) चण्डोल्काय, (६) सहस्रोल्काय' से। ध्यान—

उद्यत्-कोटि - दिवाकराभमनिशं शङ्ख गदा पङ्कजम्,
चक्रं बिभ्रतमिन्दिरा-वसुमती - संशोभि - पार्श्व-द्वयम्।
कोटीराङ्गद-हार-कुण्डल-धरं पीताम्बरं कौस्तुभोद्दीप्तम्,
विश्व-धरं स्व-वक्षसि लसच्छ्री - वत्स - चिह्नं भजे॥

३ सौर दर्शन (पश्चिमायतन विद्या) : ॐ घृणि सूर्य आदित्योम्

ऋषि देवभाग, छन्द गायत्री, देवता श्री आदित्य, बीज 'ॐ', शक्ति 'आदित्य', कीलक 'घृणि', विनियोग 'श्रीविद्याङ्गत्वेन जपे'। षडङ्ग-न्यास क्रमश (१) ॐ सत्य-तेजो ज्वालामालिने हु फट् स्वाहा, (२) ब्रह्म-तेजो, (३) विष्णु-तेजो, (४) रुद्र-तेजो, (५) अग्नि-तेजो, (६) सर्व-तेजो' से। ध्यान—

रक्ताब्ज-युग्माभय-दान-हस्तं, केयूर-हाराङ्गद-कुण्डलाढ्यम्।
माणिक्य-मौलिं दिन-नाथमीडे बन्धूक-कान्तिं विलसत् त्रिनेत्रम्॥

४ बौद्ध दर्शन (उत्तरायतन-विद्या) : ॐ ह्रीं तारय तारय स्वाहा

ऋषि बुद्ध, छन्द त्रिष्टुप्, देवता बुद्ध, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ह्रीं', विनियोग 'श्रीविद्याङ्गत्वेन जपे'। षडङ्ग-न्यास क्रमश: मन्त्र के १, १, ३, ३, २ अक्षरों एवं सम्पूर्ण मन्त्र से। ध्यान—

पुरा पुराणानसुरान् विजेतुं सम्भावयन् चीवरचिह्न-वेषम्।
चकार यः शास्त्रममोघ-कल्पं तं मूल-भूतं प्रणमामि बुद्धम्॥

५ शैव दर्शन (ऊर्ध्वायतन-विद्या) : ॐ नमः शिवाय

ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता परम शिव, बीज 'ॐ', शक्ति 'नमः', कीलक 'शिवाय', विनियोग 'श्रीविद्याङ्गत्वेन जपे'। षडङ्ग-न्यास क्रमश '(१) सर्वज्ञाय, (२) नित्य - तृप्ताय, (३) अनादि-बोधाय, (४) स्वतन्त्राय, (५) नित्यमलुप्त-शक्तये, (६) निरवनन्त-शक्तये' से। ध्यान—

नमोऽस्तु स्थाणु-भूताय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने, चतुर्मूर्ति-वपुष्काय भासिताङ्गाय शम्भवे।

६ शाक्त दर्शन (सर्वोर्ध्वा विद्या) : मूल श्रीविद्या (भुवनेश्वरी वा)

पञ्च-समया विद्याओं के मन्त्र

ऊर्ध्वाम्नाय मन्त्र-भेदों के अन्तर्गत पञ्च समया-विद्याएँ हैं—१ श्रीविद्या, २ श्रीबगला, ३ श्री-कालरात्रि, ४ जयदुर्गा, ५ छिन्नमस्ता। इनमें से श्रीविद्या का वर्णन हो चुका है। शेष चार का विवरण 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार निम्न प्रकार है—

(२) श्रीबगला : ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा

ऋषि नारद, छन्द जगती, देवता श्रीबगलामुखी, बीज 'ह्लीं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'कीलय', विनियोग 'श्रीविद्याङ्गत्वेन जपे'। षडङ्ग-न्यास क्रमशः मन्त्र के २, ५, ५, ६, ५, १० अक्षरों से। ध्यान—

मध्ये सुधाब्धि - मणि-मण्डप - रत्न-वेद्यां, सिंहासनोपरि - गतां परि-पीत-वर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य - विभूषिताङ्गीं, देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम्॥

(३) श्रीकालरात्रि : ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालेश्वरि, सर्व-जन-मनोहारि, सर्व-मुख-स्तम्भिनि, सर्व-राज-वशङ्करि, सर्व-दुष्ट-निर्दलिनि, सर्व-स्त्री पुरुषाकर्षणि ! बन्दि-शृङ्खलास्त्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रून्जम्भय जम्भय द्वेषं निर्दलय निर्दलय सर्वं स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय सर्व-वश्यं कुरु-कुरु सर्व-काल-रात्रि-कामिनि ! गणेश्वरि ! हुं फट् स्वाहा

ऋषि भैरव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीकाल-रात्रि, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'हुं', विनियोग वही। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

आरक्त-भानु-सदृशीं यौवनोन्मत्त-विग्रहां, चतुर्भुजां त्रिनयनां भीषणां चन्द्र-शेखराम्।
प्रेतासन - समासीनां भजतां सर्व-कामदां, दक्षिणे चाभयं पाशं वामे भुवनमेव च।
रक्त-दण्ड-धरां काल-रात्रिं विचिन्तयेत्॥

(४) श्रीजय-दुर्गा : ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा

ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता श्री जयदुर्गा, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'रक्षिणि', विनियोग वही। मन्त्र के १, २, २, ३, २, अक्षरों और सम्पूर्ण मन्त्र से क्रमशः षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कालाभाभां कटाक्षैररि - कुल-भयदां मौलि-बद्धेन्दु - खण्डाम्,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंह - स्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीम्।
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश-परिवृतां सेवितां सिद्धि-कामैः॥

(५) श्रीछिन्नमस्ता : श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्र-वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा

ऋषि भैरव, छन्द सम्राट्, देवता श्रीवज्र - वैरोचनीया, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'फट्', विनियोग वही। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '(१) ॐ आखड्गाय स्वाहा, (२) ॐ ईं सुखड्गाय०, (३) ॐ ऊं श्री विराजाय०, (४) ॐ ऐं पाशाय०, (५) ॐ औं अंकुशाय०, (६) ॐ अः असुरान्तकाय स्वाहा' से। ध्यान—

स्व-नाभौ नीरजं ध्यायेच्छुद्धं विकसितं सितं, तत्-पद्म-कोश-मध्ये तु मण्डलं चण्ड-रोचिषः।
जपा-कुसुम - सङ्काशं नव-बन्धूक - सन्निभं, रज -सत्व-तमो - रेखा-योनि-मण्डल-मण्डितम्।
मध्ये तु तां महा-देवीं सूर्य-कोटि - सम-प्रभां, छिन्नामस्तां करे वामे धारयन्तीं स्व-मस्तकम्।
प्रसारित-मुखा भीमा लेलिहानोग्र-जिह्विकां, पिबन्तीं रौधिरीं धारां निज-कण्ठ-समुद्भवाम्।
विकीर्ण-केश-पाशां च नाना-पुष्प-समन्वितां, दक्षिणे च करे कर्त्री-मुण्डमाला-विभूषिताम्।
दिगम्बरां महा-घोरां प्रत्यालीढ-पद-स्थितां, अस्थि - माला-धरां नाग - यज्ञोपवीतिनीम्।
रति-कामोपविष्टां च केचिद् ध्यायन्ति मन्त्रिणः, सदा षोडश-वर्षीयां पीनोन्नत-पयोधराम्।
विपरीत-रतासक्तौ ध्यायेद् रति-मनोभवौ, योनि-मुद्रा-समारूढां विचित्रासन-संस्थिताम्।
वर्णिनी-डाकिनी-युक्तां वाम-दक्षिण-योगतः॥

अन्य मन्त्र

१ नवाक्षरी रत्नेश्वरी विद्या : गसौ च पमनाः पश्चादिन्द्रस्थाः क्रमशः शिवे, वाम-कर्ण-विशोभाढ्य विन्दु-भूषण-मस्तकाः। रमा-माया-सम्पुटेन रत्नेशीयं नवाक्षरी—श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं प्लूं म्लूं न्लूं ह्रींश्रीं

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', श्वास ११ में आरार्तिक-प्रसङ्ग में। ऋषि प्रद्योतन, छन्द त्रिष्टुप्, देवता रत्नेश्वरी, वीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्रीं', कीलक 'ग्लूं', विनियोग 'स्व-प्रकाशे'। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

रत्नेश्वरीं रत्न-विभूषिताङ्गीं, माणिक्य-मौलिं तरुणार्क-कान्तिम्।
करैर्वहन्तीं नव - रत्न - दीपान्, प्रकाशमानां मनसा स्मरामि॥

२ चक्रेश्वरी-गायत्री : 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', अष्टम श्वास में सभी आवरण-देवताओं के गायत्री-मन्त्र द्रष्टव्य हैं। चक्रेश्वरियों के चतुर्थ्यन्त नाम के आगे 'विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्' जोड़ने से उनके गायत्री मन्त्र प्रस्तुत हो जाते हैं। यथा—

(१) त्रिपुरा-देव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्। (२) त्रिपुरेश्वर्यै०। (३) त्रिपुर-सुन्दर्यै०। (४) त्रिपुरा-श्रियै०। (५) त्रिपुर-मालिन्यै०। (६) त्रिपुर-वासिन्यै०। (७) त्रिपुरा-सिद्धायै०। (८) त्रिपुराम्बायै०। (९) महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै०

३ त्रिपुरसुन्दरी-गायत्री : वाग्भवं त्रिपुरा-देव्यै विद्महे तदनन्तरं, काम-वीज समुच्चार्य कामेश्वर्यै च धीमहि। तन्नः क्लिन्ने पदं चोक्त्वा वदेत् पश्चात् प्रचोदयात्—ऐं त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०५-६ ('ज्ञानार्णव' के अनुसार)। उक्त मन्त्र में २५ अक्षर हैं।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' पृष्ठ ३७ मे यही गायत्री - मन्त्र षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) का बताया है, किन्तु उसमे आदि में 'ॐ' ओर 'तन्नः' के पूर्व 'सौः' भी जुड़ा है अर्थात् कुल २७ अक्षर हैं। तदनुसार ही वहाँ मन्त्र के ७, ३, ५, ३, ५, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास करने का निर्देश किया गया है। 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६५९ में एवं 'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ ७० में इसी त्रिपुरा गायत्री' के मन्त्र के आदि में 'ॐ' न होने से यही मन्त्र २६ अक्षरों का ही है।

'क्रम-दीक्षा-पूर्वक पूर्णाभिषेक' पृष्ठ ३६ में षोडशी-गायत्री : ऐं त्रिपुरायै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नो क्लिन्ने प्रचोदयात्

वहाँ प्रातः, मध्याह्न, सायं के ध्यान भी दिये हैं।

४ प्रासाद-परा-परा-प्रासाद मन्त्र : अनन्त - चन्द्र-भुवनो विन्दु-युगान्वितः, श्रीप्रासाद-परा-मन्त्रो भुक्ति-मुक्ति-फल-प्रदः।

परा-प्रासाद-मन्त्रस्तु सादिरुक्तः कुलेश्वरी, प्रकाशानन्द-रूपत्वात् प्रत्यक्ष-फलदो यतः—(१) ह्सौं स्हौं (२) ह्सौः स्हौः

वही। ऋषि पर-शम्भु, छन्द गायत्री, देवता अर्ध-नारीश्वर, वीज 'ह्सां स्हीं'। 'ह्सां ह्सीं, स्हां स्हीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

अमृतार्णव-मध्यस्थ-स्वर्ण - द्वीपे मनोरमे, कल्पवृक्ष-वनान्तःस्थे नव-माणिक्य-मण्डपे।
नव-रत्न-मये श्रीमत्-सिंहासन-गताम्बुजे, त्रिकोणान्तः समासीनं चन्द्र-सूर्यायुत-प्रभम्।
अर्धाम्बिका-समायुक्तं प्रविभक्त-विभूषणं, कोटि-कन्दर्प-लावण्यं सदा षोडश-वार्षिकम्।

मन्द-स्मित-मुखाम्बोजं त्रिनेत्रं चन्द्र-शेखरं, दिव्याम्बर-स्रगालेपं दिव्याभरण-भूषितम् ।
पान-पात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः, विद्या-संसिद्धि विभ्राणं सदानन्द-मुखेक्षणम् ।
महा-षोढोदिताशेष - देवता - गण-सेवितं, एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्ध-नारीश्वरं शिवम् ।
पुं-रूपं वा स्मरेद् देवि ! स्त्री-रूपं वा विचिन्तयेत्, अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्द-लक्षणम् ॥

'क्रम-दीक्षापूर्वक पूर्णाभिषेक', पृष्ठ ३६ में 'परा-प्रासाद' का मन्त्र दिया है । वहाँ छन्द अव्यक्ता गायत्री, देवता मन्त्रेश्वरी परा, शक्ति 'ह्सौं स्हौ', कीलक 'ह्सूं स्हूं' बताए हैं । शेष समान है ।

५ बीजावली-षोडशी : (१) श्री-बीज-माये संलिख्य तथैव च कुमारिकां, श्री-बीज-माये कामं च वाङ्-माया कमला तथा । परा कामं च वाग्बीजं माया श्री-बीजमेव च, बीजावली-षोडशीयं सर्व-तन्त्रेषु गोपिता—**श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं**

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में 'रुद्रयामल' से उद्धृत । 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७० पर जो स्पष्ट मन्त्र दिया है, उसमें 'ऐं ह्रीं' के बाद 'श्रीं' छूट गया है ।

(२) आदौ लक्ष्मीं परां चैव तथा चैव कुमारिकां, श्री-बीजं च परा-बीजं कामं वाग्भवमेव च । परा श्रीबालिकां चैव लिखेद् व्युत्क्रम-योगतः, अन्ते दद्यात् परा श्रीश्च सम्पूर्णा कथिता त्वयि—**श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं**

वहीं, 'ब्रह्म-यामल' से उद्धृत । अन्य मन्त्र 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २७०-७१ में द्रष्टव्य हैं ।

६ गोपाल-सुन्दरी : माया-रमा-चित्त-जन्मा कृष्णायेति पदं ततः, आद्यं वाक्-कूटमुच्चार्य गोविन्दाय पदं वदेत् । द्वितीयं तु ततः कूटं गोपी-जन-पदं ततः, वल्लभाय-पदान्तं तु तृतीयं कूटमुच्चरेत् । स्वाहान्ता वह्नि-युग्मार्णा स्मृता गोपाल-सुन्दरी—**ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय क-५ गोविन्दाय ह-६ गोपी-जन-वल्लभाय स-४ स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३९४ । वहाँ मन्त्र २३ अक्षरों का बताया है किन्तु स्पष्ट मन्त्र में २० ही अक्षर दिए हैं क्योंकि तीन कूटों को निर्दिष्ट स्थानों में नहीं जोड़ा है । इस प्रकार मन्त्र अशुद्ध हो गया है । शुद्ध मन्त्र को गुप्तावतार बाबाश्री ने अपनी कृति 'श्रीकल्पद्रुम' के पृष्ठ ९३ पर प्रकाशित किया है । 'मन्त्र-महोदधि' में उक्त मन्त्र के ऋषि विधानानन्द भैरव, छन्द देवी गायत्री, देवता गोपाल-सुन्दरी, बीज 'क्लीं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'ममाभीष्ट-सिद्धये' बताये हैं । षडङ्ग-न्यास वहाँ स्पष्ट मन्त्र के ३, ३, ४, ४, ४, २ अक्षरों से क्रमशः करने का निर्देश किया है, जो ठीक नहीं है । 'श्रीकल्पद्रुम' में षडङ्ग-न्यास ऊपर दिए शुद्ध मन्त्र के ३, ३, ४, ८, २, ३ (त्रिकूट—क-५ ह-६ स-४) अक्षरों से करने की विधि दी है, जो सही है । ध्यान—क्षीराम्भोधिस्थ-कल्पद्रुम-वन- विलसद्-रत्न-युङ् - मण्डपान्तः,

प्रोद्यच्छ्री-पीठ-संस्थं कर-धृत-जल - जारीक्षु - चापांकुशेषुम् ।
पाशं वीणां सु-वेणुं दधतमवनिमाशोभितं रक्त - कान्तिम्,
ध्यायेद् गोपालमीशं विधि-मुख-विबुधैरीड्यमानं समन्तात् ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर पायस से दशांश होम ।

७ कामेश्वर : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कामेश्वराय नमः

'क्रम-दीक्षापूर्वक पूर्णाभिषेक', पृष्ठ २७ । ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता श्रीकामेश्वर, बीज 'श्री', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'क्लीं' । 'ह्रां ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

चन्द्र-कोटि-समानाभं चन्द्र-मौलिं त्रिलोचनं । त्रिशूलासि-वराभीति-करं कामेश्वरं भजे ॥

भगवती भुवनेश्वरी

'दश महा-विद्याओं' में चौथी महा-विद्या भगवती भुवनेश्वरी हैं। इनके सम्बन्ध में विस्तृत विवरण 'श्रीभुवनेश्वरी-रहस्य', 'श्रीभुवनेश्वरी नित्यार्चन', 'श्रीभुवनेश्वरी-स्तव-मञ्जरी' और 'हिन्दी-तन्त्रसार' में उपलब्ध है। 'शाक्त-धर्म-विशेषाङ्क', पृष्ठ १२७-१३५ में भी इनके मन्त्र, यन्त्र, आवरण-पूजनादि को स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया गया है।

भगवती भुवनेश्वरी के मन्त्र

१ एकाक्षर : नकुलीशोऽग्निमारूढो वाम-नेत्रार्द्ध-चन्द्र-वान्—ह्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ८५ में तीसरे परिच्छेद में 'विविध मन्त्र-संग्रह' का प्रारम्भ ही भगवती श्री भुवनेश्वरी के इसी मन्त्र से हुआ है। वहाँ इसके ऋषि शक्ति, छन्द गायत्री, देवता भुवनेश्वरी, बीज 'हं', शक्ति 'ईं', कीलक 'रं' और विनियोग 'चतुर्वर्ग-सिद्धयर्थे' बताये हैं। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

उद्यदिन-द्युतिमिन्दु-किरीटां, तुङ्ग-कुचां नयन-त्रय-युक्ताम्।
स्मेर-मुखीं वरदांकुश-पाशाऽभीति-करां प्रभजेद् भुवनेशीम्॥

ध्यान में प्रायः 'उद्यद्-दिन' छपा मिलता है, जो अशुद्ध है। 'उद्यद्+इन'='उद्यदिन' ही शुद्ध है। 'इन'-शब्द का अर्थ है सूर्य।

पुरश्चरण में ३२ लाख जप कर दशांश (तीन लाख, बीस हजार) होम त्रि-मधु मिलाकर अष्ट-द्रव्यों से करे। त्रि-मधु=घृत, मधु, शर्करा। अष्ट-द्रव्य=१ अश्वत्थ, २ यज्ञोडुम्बर, ३ पाकड़, ४ वट, ५ तिल, ६ श्वेत सरसों, ७ पायस, ८ घृत।

'मन्त्र-रत्न-मञ्जूषा' में उद्धार भिन्न शब्दों में है—'कुलीशो वह्निमारूढो वाम-नेत्रार्घ-चन्द्र-वान्।' 'मन्त्र-महोदधि' मे उद्धार—'गगनं वह्निना वाम-नेत्रेन्दुभ्यां समन्वितं भुवनेशी-मनुः प्रोक्तः।' 'शारदातिलक' में 'हिन्दी-तन्त्रसार' वाला मन्त्रोद्धार ही है परन्तु वहाँ ऋषि का नाम 'शक्ति' बताया है। शेष सब समान है—'शाक्त-प्रमोद' में भी यही मन्त्रोद्धार एक पाठान्तर-सहित है—चन्द्रवान् : चन्द्र-वत्।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपनी' में 'दक्षिणामूर्ति-संहिता' से उद्धृत वचन में उक्त एकाक्षर मन्त्र की महिमा इस प्रकार स्पष्ट की है।—

व्योम-बीजे महेशानि ! कैलाशादि-प्रतिष्ठितं, वह्नि-बीजात् सुवर्णादि निष्पन्नं बहुधा प्रिये !
तेनायं वर्तते लोको भूमि-मण्डल-संस्थितः, तुर्य-स्वरेण पाताले शेष-रूपेण धार्यते।
महा-भू-मण्डलं तस्मात् पातालस्यापि नायिका, अतएव महेशानि ! भुवनाधीश्वरी प्रिये !

'भुवनेश्वरी-रहस्य', प्रथम पटल में इसी एकाक्षर मन्त्र को मुख्य माना है और कहा है कि हृदय को लेखा की तरह चैतन्य होने से इसे 'हृल्लेखा'-बीज कहते हैं। मन्त्रोद्धार है—'हकारो वह्नि-संयुक्तो वाम-नेत्रेन्दु संयुतः, ततोऽभिधां नमः प्रान्ते प्रोक्तोऽयमेक-वर्णिका।' इसके अनुसार उक्त एकाक्षर मन्त्र में 'भुवनेश्वर्यै नमः' जोड़ लेना चाहिये अर्थात् पूरा एकाक्षरी मन्त्र है—ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।

वहाँ यह भी बताया है कि इस मन्त्र को प्रथमा तिथि-युक्त रविवार के दिन पूर्वाभिमुख होकर जपने से चारों पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं।

२ द्व्यक्षर : लक्ष्मी माया महा-देवि ! ततो नाम वदेत् ततः, नतिरियं महेशानि ! द्व्यक्षरी परि-कीर्तिता—**श्रीं ह्रीं भवनेश्वर्यै नमः**

'भुवनेश्वरी-रहस्य', तृतीय पटल । इस मन्त्र को भद्रा-तिथि से युक्त सोमवार को आग्नेय दिशा को मुख कर जप करने से सभी कामनायें पूर्ण होती हैं ।

३ त्र्यक्षर : (१) वाग्भवं शम्भु-वनिता रमा-वीज-त्रयात्मक—**ऐं ह्रीं श्रीं**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १०१ ('शारदा-तिलक' के अनुसार) । ऋष्यादि एकाक्षर-वत् । षडङ्ग 'ऐं ह्रां, ऐं ह्रीं' इत्यादि से । ध्यान—

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्—
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यां मणि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-सव्य-चरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ।।

'शारदा-तिलक' में ध्यान मे एक पाठान्तर है—मणि-पूर्ण-रत्न-चषक : मणि-रत्न-पूर्ण-चषक ।

पुरश्चरण मे १२ लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त पायस द्वारा दशांश होम ।

(२) वाग्-वीज-पुटिता माया विज्ञेय त्र्यक्षरी मता—**ऐं ह्रीं ऐं** ।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १०२ । ऋष्यादि पूर्ववत् । षडङ्ग-न्यास 'ऐं ह्रां ऐं, ऐं ह्रीं ऐं' इत्यादि से । ध्यान— **श्यामाङ्गीं शशि-शेखरां निज-करैर्दानं च रक्तोत्पलम्,**
रत्नाढ्यं चषकं परं भय-हरं सम्बिभ्रतीं शाश्वतीम् ।
मुक्ता-हार-लसत्-पयोधर-नतां नेत्र-त्रयोल्लासिनीम्,
वन्देऽहं सुर-पूजितां हर-वधूं रक्तारविन्द-स्थिताम् ।।

पुरश्चरण मे १० लाख या २४ लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त पलाश पुष्पो से दशांश होम ।

यह मन्त्र भी 'शारदा-तिलक' के अनुसार है ।

(३) अनन्तो विन्दु-संयुक्तो माया-ब्रह्माग्नि-तारवान्, पाशादिस्त्र्यक्षरो मन्त्रः सर्व-काम-फल-प्रदः—**आं ह्रीं क्रों**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १०३ । 'शारदा-तिलक', नवम पटल मे एक पाठान्तर है—काम : वश्य । ऋष्यादि पूर्ववत् । षडङ्ग-न्यास मात्र 'ह्रीं' बीज से । ध्यान—

वरांकुशौ पाशमभीति-मुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थाम् ।
बालार्क-कोटि-प्रतिमां त्रिनेत्रां भजेऽहमाद्यां भुवनेश्वरीं ताम् ।।

'शारदातिलक', वहीं ध्यान मे एक पाठान्तर है—मुद्रां : विद्यां । पुरश्चरण मे १० लाख जप कर त्रि-मधु युक्त अश्वत्थ, यज्ञोडुम्बर या पाकड़ वृक्ष की समिधा मे दशांश (१० हजार) होम । होम करते समय समिधा मे तिल, दुग्ध भी मिला ले ।

'महाकाल-संहिता', कामकला-काली-खण्ड मे उक्त त्र्यक्षर मन्त्र का उद्धार—'पाश-लज्जांकुशैरेव मन्त्रस्त्र्यक्षर एव च, महिमा वर्णितुं देवि ! न शक्यैस्त्रिदशैरपि ।' वहाँ ध्यान निम्न प्रकार दिया है—

भुवनेशीमहं ध्याये सिन्दूरारुण-विग्रहां, त्रिलोचनां स्मेर-मुखीं चन्द्रार्द्धांकृत-शेखराम् ।
पीन-वक्षोरुह-द्वन्द्वां सर्वाभरण शोभितां, माणिक्य-रत्न-कुम्भस्थ-सव्य-पादां कर-द्वये ।
बिभ्रतीं रत्न-चषकं रक्तोत्पलमथापि च ।

(४) तार रमा कामराजो ङेऽन्त नाम समुद्धरेत्, प्रान्ते नतिः समाख्याता त्र्यक्षरीय महेश्वरि—
ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः

'भुवनेश्वरी-रहस्य', तृतीय पटल। इस मन्त्र को मङ्गलवार को दक्षिणाभिमुख होकर जप करने से सभी कामनायें पूर्ण होती हैं।

४ चतुरक्षर : प्रणव च तथा माया कमला मन्मथस्तथा, अन्ते विश्वं नाम मध्ये विदध्याच्च सुरेश्वरि—**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः**

वही। चतुर्थी तिथि-युक्त बुधवार को नैऋत्य दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करने से सर्व-सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

५ पञ्चाक्षर : तार लक्ष्मी वासनार्णं कामो मायाभिधा तथा, ङेन्ता नतिरियं प्रोक्ता देवि! पञ्चाक्षरी मया—**ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः**

वही। पञ्चमी तिथि-युक्त गुरुवार को पश्चिमाभिमुख होकर इस मन्त्र का जप करने से अभीष्ट फल मिलता है।

६ षडक्षर : तार लक्ष्मीः परा कामो वाग्भवं शक्तिरेव च, अभिधा नति. संयुक्ता प्रोक्ता षष्ठाक्षरी परा—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नमः**

वही। षष्ठी तिथि-युक्त शुक्रवार को वायव्य दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होती है।

७ सप्ताक्षर : प्रणव कमला माया कामो वाग्भव एव च, शक्तिर्मायाऽभिधा प्रान्ते नति. सप्ताक्षरा मता—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः**

वही। सप्तमी तिथि-युक्त शनिवार को उत्तराभिमुख होकर इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होती है।

८ अष्टाक्षर : (१) पाश-श्री-शक्ति-कन्दर्प-काम-शक्तीन्दिराकुशाः—**आं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं क्रों**

'शारदातिलक', वही। ऋषि अज, छन्द गायत्री, देवता शक्ति। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

आनन्द-रूपिणीं देवीं पाशांकुश-धनुः-शरान्, बिभ्रतीं दोर्भिररुणां कुचार्त्तां हृदि भावयेत्।

(२) कामिनि रञ्जिनि स्वाहान्तोऽष्टाक्षर.—**कामिनि रञ्जिनि स्वाहा**

वही। ऋषि सम्मोहन, छन्द निवृत्, देवता सम्मोहिनी। मन्त्र के तीन पदों की द्विरावृत्ति द्वारा षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्यामाङ्गीं वल्लकीं दोर्भ्यां वादयन्तीं सुभूषणां, चन्द्रावतंसां विविध-गानैर्मोहयन्तीं जगत्।

(३) तार लक्ष्मी· परा कामो वाग्भव शक्तिरेव च, कामो मायाऽभिधा प्रान्ते नतिरष्टाक्षरी मता—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः**

'भुवनेश्वरी-रहस्य', तृतीय पटल। अष्टमी तिथि-युक्त रविवार को ईशान दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होती है।

९ नवाक्षर : तार लक्ष्मीः परा कामो वाक् कामो शक्तिरेव च, वाक्-छक्तिरभिधा विश्व सम्प्रोक्तेयं नवाक्षरी—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः भुवनेश्वर्यै नम**

वहीं। नवमी तिथि-युक्त सोमवार को पूर्वाभिमुख होकर इस मन्त्र का जप करने से परम सिद्धि मिलती है।

१० दशाक्षर : (१) प्रणवं सकला लक्ष्मीः कामो वाक्छक्ति-कालिके, कूर्चं माया-द्वयं नाम-विश्वं प्रोक्ता दशाक्षरी—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

वहीं। दशमी तिथि-युक्त मङ्गलवार को आग्नेय दिशा की ओर मुख कर इस मन्त्र का जप करने से ब्रह्म-शक्ति का साक्षात्कार होता है।

(२) रमार्णं समस्ताक्षरं काम-राजं, तथा पञ्च-वर्णाङ्कितं नाम देव्याः। ततो ठ-द्वयं देवि ! मन्त्रावसाने स्मृतो भेद-मन्त्रो मयाद्यो दशार्णः—श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै स्वाहा वहीं, द्वितीय पटल।

११ एकादशाक्षर : तारं माया रमा कामो वाक् शक्ति-काम-वाग्भवाः, शक्तिर्मा सकला नाम-विश्वमेकादशाक्षरी—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

वही। एकादशी तिथि-युक्त बुधवार को दक्षिणाभिमुख होकर इस मन्त्र का जप करे।

१२ द्वादशाक्षर : (१) तार-द्वयं परा-युग्मं लक्ष्मी-युगलमेव च, कामं वाग्भवो शक्तिश्च सर्व-युगलमेव च। नाम ङेऽन्तं विश्वमन्ते प्रोक्तेयं द्वादशाक्षरी—ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्री क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः भुवनेश्वर्यै नमः

वहीं। द्वादशी तिथि-युक्त गुरुवार को नैऋत्य दिशा की ओर मुख कर इस मन्त्र का जप करे।

(२) तारं माया वाग्भवं काम-राजं, शक्तिर्मध्ये नाम-पञ्चाक्षरीयं। अन्ते दद्यान्नीरमेष स्मृतस्ते, मन्त्रोद्धारो देवि ! भेदो द्वितीयः—ॐ ह्रीं ऐं क्लीं सौः भुवनेश्वरि स्वाहा वहीं, द्वितीय पटल।

१३ त्रयोदशाक्षर : (१) प्रणवं शिव-वह्नी च द्वितीय-स्वर-संयुते, विन्दु-युक्ते कालिका च माया मा वाक् शरत् तथा। कामो रमा परा वाणी शक्तिः कामोऽभिधा ततः, ङेऽन्ता विश्वं समाख्याता कामो त्रयोदशाक्षरी—ॐ ह्रां क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः

वही। त्रयोदशी तिथि-युक्त शुक्रवार को पश्चिमाभिमुख होकर जप करे।

(२) त्र्यक्षं वाग्भवं रमा मदनार्णं, शक्ति-शून्य शरदूर्ध्व-मातृका। नाम ठ-द्वयमथो महेश्वरि, भेद एष गदितस्तृतीयकः—ॐ ऐं श्रीं क्ली सौः ह्सौः भुवनेश्वरि स्वाहा वहीं, द्वितीय पटल।

(३) त्र्यम्बक माया वाग्भव शक्तिर्मन्मथ लक्ष्मीर्नाम च मध्ये, ठ-द्वयमन्ते पार्वति ! भेदः षष्ठो गोप्यो निगदित एषः—ॐ ह्रीं ऐं सौः क्लीं श्रीं भुवनेश्वरि स्वाहा वही, द्वितीय पटल।

१४ चतुर्दशाक्षर : (१) तार-द्वयं काम-युग्म शक्ति-द्वन्द्वं रमा-युग्मं, वाग्-युगं शक्ति-युग्मं च माया-युग्मं तथैव च। नाम ङेऽन्तं च विश्व च प्रोक्ता चतुर्दशाक्षरी—ॐ ॐ क्लीं क्लीं सौः सौः श्रीं श्री ऐं ऐं सौः सौः ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

वही। चतुर्दशी तिथि-युक्त शनिवार को उत्तराभिमुख होकर जप करे।

(२) तारक-शक्तिर्मन्मथ-लक्ष्मीर्वाग्भव-माया-विगलित-कूर्चम्, नाम च मध्ये ठ-द्वयमन्ते भेदो प्रोक्तः सप्तम एष —ॐ सौः क्लीं श्रीं ऐं ह्रीं हूं भवनेश्वरि स्वाहा वही, द्वितीय पटल।

(३) तारं सारं कमला सकला च कूर्चं शून्यं शरदाख्यमीश्वरि ! तीर नीरमवसानके मनोर्भेद एषः निगदितः दशमस्ते—ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं हूं ह्रीं भुवनेश्वरि हूं स्वाहा

१५ पञ्च-दशाक्षर : (१) तार रमा प्रणवो लक्ष्मीर्माया वाक् कला तथा, वाणी-कामो शक्ति-कामो शक्तिः काली-युगं परा। नाम ङेऽन्तं नमो देवि ! प्रोक्ता पञ्च-दशाक्षरी—ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्लीं सौः क्रीं क्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

वही। अमावास्या और पूर्णिमा-युक्त रविवार को ईशान दिशा की ओर मुख कर जप करे।

(२) तत्व-विद्या—दण्डिकेश्वर-शरत्-परास्ततो देवि! नाम भुवनेश्वरी कृशा, तत्व-रूपिणि पराक्षरं शिवे! तत्व-मूलकमनु-स्थित-संख्य.—ह्रौं सौः, ह्रीं भुवनेश्वरि ह्रीं तत्व-रूपिणि ह्रीं

वही, चतुर्थ पटल। ऋष्यादि षोडशाक्षर (३) के समान।

(३) त्र्यक्ष वाग्भव शरत् कमलार्णं काम नाम भुवनेश्वरि त्समेत्, तार कूर्च हर नीरकमन्ते भेद एष गदितस्तु द्वादशः—ॐ ऐं सौः श्रीं क्लीं भुवनेश्वरि ॐ हूं फट् स्वाहा वही, द्वितीय पटल।

१६ षोडशाक्षर : (१) ह्रीं गौरि! रुद्र-दयिते योगेश्वरि! स-वर्म फट्, द्वि-ठान्तः षोडशार्णोऽयं मन्त्रः सद्भिरुदीरितः—**ह्रीं गौरि! रुद्र-दयिते! योगेश्वरि! हूं फट् स्वाहा**

'शारदातिलक'। ऋषि अज, छन्द अनुष्टुप्, देवता गौरी चण्ड कात्यायनी। 'ह्रां ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास।

ध्यान : हेमाभां बिभ्रतीं दोर्भिर्दर्पणाञ्जन-साधने, पाशांकुशौ सर्व-भूषां तां गौरीं सर्वदा भजे।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृत से दशांश होम।

(२) प्रणव, सकला लक्ष्मी मारो वाग्भव शक्तिके, प्रासाद प्रणवश्चैव प्रासाद-शक्ति-वाग्भवाः। कामो मा सकला तार माया नाम नतिस्तथा, महादेवि! गुह्य-तरा प्रोक्तेयं षोडशाक्षरी—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ह्सौः ॐ ह्सौः सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

'भुवनेश्वरी-रहस्य', तृतीय पटल। इस मन्त्र का जप प्रतिदिन करना चाहिये।

(३) तत्व-विद्या : चन्द्र-शक्तिः परा-बीजं तथैव तत्व-रूपिणि, माया-बीज समुद्धृत्य सकलागम-निश्चिता। ततश्च साधको दद्यात् तथैव भुवनेश्वरि, माया-बीज समुद्धृत्य तत्व-विद्येयमाहृता—ॐ ऐं सौः ह्रीं तत्व-रूपिणि! ह्रीं भुवनेश्वरि ह्रीं

वही, चतुर्थ पटल। ऋषि भैरव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीतत्व-रूपिणी भुवनेश्वरी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक 'ह्रः', विनियोग 'वीर-साधने'। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' से। ध्यान—

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि-विलोचनां तां, सत्-पुस्तकां जाप्य-वटीं दधानाम्।
सिंहासनां मध्यम-पत्र-संस्थां, श्रीतत्व-विद्यां परमां भजामि॥

पुरश्चरण में १६ लाख जप कर दशांश होम।

१७ सप्तदशाक्षर : तारं लक्ष्मीर्मन्मथः शक्ति-बीज, माया-बीज नाम-मध्ये शिवायाः, तार कूर्चं निष्ठकार वन च, भेदः प्रोक्तः पञ्चमो विश्व-मात—ॐ श्रीं क्लीं सौः ह्रीं भुवनेश्वरि ॐ हूं ठः ठः ठः स्वाहा

वही, द्वितीय पटल।

१८ एकोनविंशाक्षर : (१) तत्. प्रणव-वाग्भवौ शरदनङ्ग माया-रमा, वियद्यत-मता शरत् तट-युगं च मध्येऽभिधा। पुनः प्रणव-वाग्भवं हर-वने तव प्रीतये, त्रयोदश-तमो मया निगदितस्तु भेदोत्तम—ॐ ऐं सौः क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रीं सौः हूं हूं भुवनेश्वरि ॐ ऐं स्वाहा 'भुवनेश्वरी-रहस्य', द्वितीय पटल।

(२) त्र्यक्ष माया मार लक्ष्मी-तट च, काली-युग्म वाग्भव शक्ति नाम। काली कूर्च फट् हर देवतायाः, मन्त्र. प्रोक्तो देवि! चैकादशोऽयम्—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हू क्रीं क्रीं ऐं सौ भुवनेश्वरि क्रीं हूं फट् स्वाहा वही।

(३) शक्ती माया मन्मथ कूर्च काली माया लक्ष्मीर्वाग्भव शक्ति-नामा। नामार्णं वै कूर्च फट् नीरमन्ते, भेदः प्रोक्तो नवमो गोपनीय—ॐ ह्रींक्लींहूं क्रींह्रींश्रीं ऐंसौं च नौं भुवनेश्वरि हूं फट् स्वाहा वही।

१९ विंशाक्षर :ताराणं सकला रमार्ण-मदनौ शक्तिस्तथा वाग्भवं, तार-द्वन्द्वमथो रमार्ण-द्वितयं मध्येऽभिधां विन्यसेत् । अन्ते वाग्भव-मन्मथौ शरदथो नीरं च भेदः स्मृतो, मन्त्राणां भुवनेश्वरी-प्रिय-तरो दुर्गे ! चतुर्थो मया—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं ॐ ॐ श्रीं श्रीं भुवनेश्वरि ऐं क्लीं सौः स्वाहा

वही, द्वितीय पटल ।

२० एक-विंशाक्षर : तारं शरन्मदन-वाग्भव-काम-राजं, शक्तिर्वधूस्तट-रमा सकला च काली । मध्येऽभिधां प्रणव-कूर्च-हरं तथाऽथ, भेदश्चतुर्दश-तमो गदितो भवान्याः—ॐ सौः क्लीं ऐं क्लीं सौः स्त्रीं हूं श्रीं ह्रीं क्रीं भुवनेश्वरि ॐ हूं फट् स्वाहा वही ।

२१ द्वा-विंशाक्षर : त्रासोल्लसन्-मदन-वाग्भव - शक्ति-माया, काली-त्रयं तट-युगं स्वभिधां च मध्ये । काली ठकार-त्रितयं तुरगं वन च, भेदोऽष्टमो निगदितस्तव प्रीति-वृद्ध्यै—ॐ क्लीं ऐं सौः ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं भुवनेश्वरि क्रीं ठः ठः ठः फट् स्वाहा वही, द्वितीय पटल ।

अन्य मन्त्र

१ भुवनेश्वरी-गायत्री : (१)माया-बीजं समुच्चार्य भुवनेश्वर्यै च विद्महे, आद्यायै पदमुच्चार्य धीमहि तदनन्तरं । तन्नो देवी-पदं प्रोच्यं ततो देयं प्रचोदयात्—ह्रीं भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०६ ।

(२) ॐ नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

'हिन्दी-मन्त्र महा०', पृ. ३८ । मन्त्र के ५, ३, ५, ३, ४, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास । 'भुवने० रहस्य' में—

(३) मूल गायत्री : ऐं हृल्लेखायै विद्महे ह्रीं भुवनायै धीमहि श्रीं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।
प्रातः गायत्री : ऐं हृल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
मध्याह्न गायत्री : ह्रीं हृल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
सायं गायत्री : श्रीं हृल्लेखायै विद्महे भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्
अर्ध-रात्रि गायत्री : ऐं हृल्लेखायै विद्महे ह्रीं भुवनायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्

२ भुवनेश्वरी-मातृका : भुवनेशी-बीज-पूर्वां मातृकां न्यसेद्—'ह्रीं अं नमः, ह्रीं आं नमः' इत्यादि

'श्रीविद्यार्णव तन्त्र', षष्ठ श्वास । ऋषि शक्ति, छन्द गायत्र, देवता मातृका भुवनेशी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'नमः', कीलक 'मूल प्रकृति' । षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से । ध्यान—

उद्यत्-कोटि-दिवाकर-प्रतिभटा तुङ्गोरु - पीन - स्तनी, मूर्धार्धेन्दु-किरीट-हार-रशना-मञ्जीर-संशोभिता ।
बिभ्राणा कर-पङ्कजैर्जप-वटीं पाशांकुशौ पुस्तकम्, द्विरयाद् वो जगदीश्वरी त्रि-नयना पद्मे निषण्णा सुखम् ॥

३ दशाक्षर ईश्वर : तारं भूति रमा लक्ष्मीरीश्वरो याग्मरी ततः, मन्त्रोऽयमीश्वरस्योक्तः साधकेष्ट-फल-प्रद —ॐ ह्रं ह्रीं श्रीं सौं हसखरयूं

'भुवनेश्वरी-रहस्य', एकादश पटल। ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप्, देवता ईश्वर, बीज ॐ, शक्ति 'श्रीं', कीलक 'ह्रीं', विनियोग 'धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे' । षडङ्ग-न्यास 'ॐ ह्रां श्रां, ॐ ह्रीं श्रीं' इत्यादि से।

ध्यान—शुद्ध-स्फटिक - सङ्काशं त्रिनेत्रमीश्वरं प्रभुं, सिंह-चर्म-परीधानं गज - चर्मोत्तरीयकम् ।
सुधाढ्य-कलशं शूलं वरं चाभयमेव च, धारयन्तं कराम्भोजैः शशाङ्क-कृत-शेखरम् ।
पद्मासनं स्मित-मुखं वामाङ्कं संभृतं परम्, भुवनेश्याः महादेव्याः हृत्-पद्मे भावयाम्यहम् ॥
'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ [illegible]

भगवती भैरवी

'दश महा-विद्याओं' के अन्तर्गत पाँचवें स्थान पर 'श्री भैरवी' का स्थान है। अतः इन्हे 'पञ्चमी' भी कहते हैं। 'पञ्चमी' शब्द स्त्री-वाचक भी है। अतः स्त्री-साधिकाओं को सामान्यतः 'भैरवी' नाम से सम्बोधित किया जाता है। भगवती भैरवी के मुख्य मन्त्र में तीन कूट अक्षर होने से इनका नाम 'त्रिपुर-भैरवी' भी है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'श्री भैरवी' को 'विद्या-त्रयी' में प्रथम स्थान प्राप्त है। 'हिन्दू-धर्म-कोश', पृष्ठ ४८३ मे डा० राजबली पाण्डेय ने इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार दिया है—

'देवी के रौद्र रूप को भैरवी (भयानक) कहते हैं। यह भैरव (शिव) के रौद्र-रूप को स्त्री-शक्ति है। शाक्त-मतावलम्बी लोग भैरवी की गणना दस महा-विद्याओं मे करते हैं।'

'शाक्त-धर्म विशेषाङ्क', पृष्ठ १४५ में 'श्री भैरवी तन्त्रम्' के अन्तर्गत इनके प्रमुख मन्त्र के विनियोग, ऋष्यादि-षडङ्गादि आठ न्यासों, ध्यान, पूजा-यन्त्र, आवरण-पूजन और पुरश्चरण के सम्बन्ध में तुलनात्मक विवेचन द्रष्टव्य है। 'हिन्दी तन्त्रसार' के पृष्ठ २४६ से २६१ के अन्तर्गत इनके १३ स्वरूपों का विवरण उपलब्ध है।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' मे बताया है कि भगवती भैरवी त्रिविधा हैं—(१) बाला, (२) भैरवी, (३) सुन्दरी। इनके तीन स्वरूपों में से बाला और सुन्दरी भगवती षोडशी के अन्तर्गत वर्णित हैं। यहाँ भैरवी-रूप के ही मन्त्र संगृहीत हैं।

भगवती भैरवी के मन्त्र

१ त्र्यक्षरी त्रिपुर-भैरवी : (१) वियद्-भृगु-हुताशस्थो भौतिको विन्दु-शेखरः, वियत्-तदादि-केन्द्राग्नि-स्थितं वामाक्षि - विन्दु-मत्। आकाश-भृगु-वह्निस्थो मनुः सर्गेन्दु-खण्ड-वान्, पञ्च-कूटात्मिका विद्या वेद्या त्रिपुर - भैरवी। वाग्भव प्रथमं बीजं काम-बीजं द्वितीयकं, तृतीयं काम - राजाख्यं त्रिभिर्बीजै-रितीरिता।

अस्यार्थः—शिव-चन्द्र-वह्नि-वाग्भवं, शिव-चन्द्र-काम-पृथिवी-वह्नि-चतुर्थ-स्वर-विन्दु-मत्, शिव-चन्द्र-रेफ-युक्त-चतुर्दश-स्वर-विन्दु-विसर्गाः एतत् सर्वं परस्पर - संयुक्तं उच्चारणार्थं एतादृशी रीतिः—ह्सैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः

'शारदा-तिलक', पटल १२। 'श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में उक्त उद्धार ही उद्धृत है, किन्तु वहाँ 'काम-राजाख्यं' के स्थान पर 'शक्ति-बीजाख्यं' है। 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २४० में इसी उद्धार का उल्लेख कर पूरी विधि दी है किन्तु वहाँ प्रथम बीज 'ह्स्रौं' बताया है, जो अशुद्ध है। अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में भी 'कामराजाख्यं' के स्थान पर भिन्न पाठ है—'शक्ति-कूटाख्य'।

उक्त मन्त्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द पंक्ति, देवता त्रिपुर-भैरवी, बीज 'ऐं', शक्ति 'सौः' (तार्तीय), कीलक 'क्लीं' बताए है। अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे ऋष्यादि-न्यास क्रमशः शिर, मुख, गुह्य, पाद और सर्वाङ्ग में करने का निर्देश किया है। षडङ्ग-न्यास 'ह्स्रां, ह्स्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

उद्यद्-भानु-सहस्र-कान्तिमरुण-क्षौमां शिरो-मालिनीम्,
रक्तालिप्त - पयोधरां जप - वटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद् - वक्त्रारविन्द-श्रियम्,
देवीं बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटां वन्दे स-मन्द-स्मिताम्॥

'हिन्दी तन्त्रसार' में उद्धृत ध्यान में एक पाठान्तर है—शिरो - मालिनी : शिरो-मालिकां। 'शारदातिलक' के अनुसार पुरश्चरण में १२ लाख जप कर ब्रह्म - वृक्ष - जात पुष्पों या त्रिमधु-युक्त करवीर पुष्पों से दशांश (१२ हजार) होम करे। 'हिन्दी तन्त्रसार' में पलाश पुष्पों से होम करने का निर्देश है।

'पुरश्चर्यार्णव' पृष्ठ ८०१ में उद्धृत ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—(१) मालिनीं : मालिकां, (२) वरं : वराम्, (३) स-मन्द-स्मितां: ऽरविन्द-स्थितां। वहाँ तीसरी पंक्ति में 'वक्कारविन्द' छपा है, जो अशुद्ध है। 'पुरश्चर्यार्णव' पृष्ठ ८०१ में 'तत्व-लक्ष' का अर्थ 'लक्ष-त्रय' बताया है। तदनुसार पुरश्चरण में तीन ही लाख जप कर्तव्य है।

२ सम्पत्-प्रदा भैरवी : शिव-चन्द्रौ वह्नि-संस्थौ वाग्भवं तदनन्तरं, काम-बीजं तथा देवि! शिव-चन्द्रान्वितं ततः। पृथ्वी-बीजं तु वह्न्याढ्यं तार्तीयं शृणु वल्लभे! शक्ति-बीजे महेशानि! शिव-वह्नी नियोजयेत्। कुमार्याः परमेशानि! हित्वा सर्गं तु वैन्दवं, त्रिपुरा-भैरवी देवी महा-सम्पत्-प्रदा प्रिये!

अस्यार्थः—त्रिपुरा-भैरवी विसर्ग-रहिता चेत् सम्पत्-प्रदा भवति—ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २४६-४७। अप्रकाशित 'तन्त्र - दीपिनी' के अनुसार उक्त उद्धार 'ज्ञानार्णव तन्त्र' में दिया है। ऋष्यादि वही। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के तीनों बीजों की द्विरावृत्ति से। ध्यान में छः पाठान्तर हैं—(१) विचित्र : चित्रित, (२) स्रवद् : गलद्, (३) घट : घन, (४) वर-दान-प्रदां : वर-दान-रतां।

३ कौलेश-भैरवी : सम्पत्-प्रदा-भैरवी-वत् विद्धि कौलेश-भैरवीं, हसाद्या सैव देवेशि! त्रिपु बीजेषु पार्वति! इयं तु सहराद्या स्यात् ध्यान-पूजादिकं तथा।

अस्यार्थः—त्रि-कूटे सकारादिश्चेत् तदा कौलेश-भैरवीं—स्हैं स्ह्क्लीं स्हौं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २४८। ऋष्यादि समस्त 'सम्पत्-प्रदा भैरवी' के समान।

४ सकल-सिद्धिदा भैरवी : एतस्या एव विद्याया आद्यन्ते रेफ-वर्जिते, तदेयं परमेशानि! नाम्ना सकल-सिद्धिदा।

अस्यार्थः—कौलेश-भैरवी आद्यन्ते रेफ-वर्जिता चेत् तदा सकल-सिद्धिदा भवेत्—स्हैं स्ह्क्लीं स्हौं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २४८ में मन्त्र अशुद्ध छपा है। ऋष्यादि समस्त 'सम्पत्-प्रदा भैरवी' के समान।

५ भय-विध्वंसिनी भैरवी : सम्पत्-प्रदा भैरवी आद्यन्त-रेफ-वर्जिता चेत् भय-विध्वंसिनी भैरवी, भवति दक्षिणामूर्तौ तथा दर्शनात्—ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौं 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २४८।

६ चैतन्य-भैरवी : वाग्भवं बीजमुच्चार्य जीव-प्राण-समन्वितं, सकला भुवनेशानो द्वितीयं बीज-मुद्धृतं। जीवं प्राणं वह्नि-संस्थं शक्र-स्वर-समन्वितं, विसर्गाढ्यं महेशानि! विद्या त्रैलोक्य-मातृका।

अस्यार्थः—चन्द्र-शिव-दश-स्वर-युक्तं विन्दु-नादाढ्यं, चन्द्र-काम-पृथिवी-महामाया चन्द्र-शेखर वह्नि-बीजं चतुर्दश-स्वर-युक्तं विसर्गाढ्यं च—स्हैं स्क्लह्रीं स्हौः

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ २४८-२५०। इनकी पूजा-पद्धति वहीं द्रष्टव्य है।

'मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है—'सहावैकार-संयुक्तो प्रथमं बीज-मीरितं, सकला ह्री समायुक्ता द्वितीयं बीजमुच्यते, सहरा औ-समायुक्ता विसर्गान्तास्तृतीयकं।' ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—(१) मुकुटाग्र : मुकुटोर्ध्वं, (२) रक्ताम्बरान्वितां : रक्ताम्बराञ्चितां, (३) हस्ते : हस्त।

७ षट्-कूटा भैरवी : डाकिनी-राकिनी-बीजे लाकिनी-काकिनी-युगं, साकिनी-हाकिनी-राकिनी-बीजे क्रमादाहृत्य सुन्दरि ! आद्यमेकार-संयुक्तमन्यदीकार-मण्डितं, शक्र-स्वरान्वितं देवि ! तार्तीयं बीज-मालिखेत् । बिन्दु-नाद-कलाक्रान्तं द्वितीयं शैल-सम्भवं, तृतीय-बीजं सविसर्गमित्यपि ।

तन्त्रान्तरे—डरोक्षा मादनं बीजं शिवमत्र विधा लिखेत्, अर्कोण माया-शक्राभ्यां क्रमात् तं मण्डितं कुरु । विन्दु-नादान्वितं चाद्यं स्वरमन्त्य-विसर्ग-वत्—ड्ल्क्सहैं ड्ल्क्सह्रीं ड्ल्क्सह्रौं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृ० २५१-५२ । इस मन्त्र में १ डाकिनी, २ राकिनी, ३ लाकिनी, ४ काकिनी, ५ साकिनी, ६ हाकिनी के क्रमशः 'ड, र, ल, क, स, ह' इन छ. बीजों का समावेश होने से इसे 'षट्-कूटा' कहते हैं । पूजा-विधि वही द्रष्टव्य है ।

८ नित्या-भैरवी : एतस्या एव विद्यायाः षड्-वर्णान् क्रमशः स्थितान्, विपरीतान् वद प्रौढे विद्येयं भोग-मोक्षदा—ह्स्क्ल्डैं ह्स्क्ल्डीं ह्स्क्ल्डौं 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५२ ।

९ रुद्र-भैरवी : शिव-चन्द्रौ मादनान्तं पान्तं वह्नि-समन्वितं, शक्ति-भिन्नं बिन्दु-नाद-कलाढ्यं वाग्भवं प्रिये ! सम्पत्-प्रदाया भैरव्याः काम-बीजं तदेव हि, सदा-शिवस्य बीजं तु महा-सिंहासनस्य च । एषा विद्या महेशानि ! वर्णितुं नैव शक्यते ।

अस्यार्थः—शिव-चन्द्र चन्द्र-कान्त पान्त वह्नि-संयुक्तमेकादश - स्वर - विशिष्टं बिन्दु-नाद-कला-क्रान्तं वाग्भवं बीज । शिव-चन्द्र-काम-पृथिवी-वह्नि-चतुर्थ-स्वर-विशिष्ट नाद-बिन्दु-कलान्वितं काम-बीजं । प्रेत-बीजं शक्ति-कूटं तृतीयं—ह्स्क्फ्रें ह्स्क्ल्रीं ह्सौः 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५२ ।

१० भुवनेश्वरी भैरवी : (१) हंसाद्यं वाग्भवं चाद्यं हसकान्ते सुरेश्वरी, भू-बीज भुवनेशानी द्वितीयं बीजमुद्धृत । शिव-चन्द्रौ महेशानि ! भुवनेशी च भैरवी ।

अस्यार्थः—शिव-चन्द्रौ वाग्भवमिति प्रथमं बीजं, शिव-चन्द्र ककार-पृथिवी महामाया इति द्वितीयं बीजं, शिव-चन्द्र इति चतुर्दश-स्वर-सविसर्गस्तृतीयं बीजं—ह्सैं ह्स्क्ल्ह्रीं ह्सौः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५५ । 'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—'हसावैकार-संयुक्तो प्रथमं बीजमीरितं, हसकला ह्रीं-समेता द्वितीयं बीजमुच्यते । हसावौकार-संयुक्तो विसर्गान्त तृतीयकं ।' वहाँ देवता का नाम 'भुवनेश्वर-भैरवी' बताया है । ध्यान में छः पाठान्तर हैं—(१) जवा : जपा, (२) कुसुमोपमा : कुसुम-प्रभा, (३) रेखा : रेखा, (४) वाससो : वाससं, (५) सुभगा : शुभगा, (६) धारयन्ती : दधाना च ।

११ कमलेश्वरी भैरवी : हस-स्थाने सहेरयुक्त्वा सर्वं मन्त्रादि पूर्ववत्—स्हैं स्हक्ल्ह्रीं स्हौः

'मेरु-तन्त्र' । यही मन्त्र 'हिन्दी तन्त्रसार' पृष्ठ २५५ में भुवनेश्वरी-भैरवी के उद्धार मन्त्र के अतिरिक्त मन्त्र-रूप में उल्लिखित है क्योंकि इस मन्त्र का उद्धार उसी मन्त्र से सम्बन्धित है; उसी के 'ह्स्' वर्णों को उलट कर 'स्ह्' करने से यह मन्त्र प्राप्त होता है । 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार इस मन्त्र की उपासना दक्षिणाचार से करनी चाहिए ।

१२ अष्टाक्षरी त्रिपुर-भैरवी : ईशानोऽकार-संयुक्तः पश्चात् सैमिति योजयेत्, हसकरीमिति ततो ह्सैं पश्चात् समुच्चरेत् । अष्टाक्षरस्तु मन्त्रोऽयं भैरव्या समुदाहृतः, जपतो धारणाद् वापि सर्व-सम्पत्-प्रदायकः—हसैं हसकरीं ह्सैं

'शाक्त-प्रमोद' । 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६७३ में भी यही मन्त्र दिया है । ऋष्यादि में शक्ति 'ह्रीं' बताया है, शेष प्रथम उद्धार-मन्त्र-वत् । षडङ्ग-न्यास 'हसरां, हसरीं' इत्यादि से । ध्यान वही है, जिसमें तीन पाठान्तर हैं—(१) मालिनीं : मालिका, (२) जप-वटीं : १ जप-पटी, २ जप-वरीं या परा, (३) म-मन्द-

स्मितां : सु-मन्द-स्मितां। पुरश्चरण में पाँच या दस लाख जप कर बहेड़े के फूलों के साथ बहेड़ों से दशांश होम का निर्देश है।

१३ नवाक्षरी नव-कूटा बाला भैरवी : (१) बाला-वीज-त्रयं देवि ! कूट-त्रयं नवाक्षरी, वियत्-कूट-त्रयं देवि ! भैरव्या नव-कूटकं—**ऐं क्लीं सौः ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौं ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५६।

(२) शिवः शक्तिश्च वाग्वीजं नाद-विन्दु-कलान्वितं, वाग्भवं कथितं देवि ! कामराजं शृणु प्रिये ! शिव-शक्ति-मदनेन्द्र-वह्नि-माया-समन्वितं, नाद-विन्दु-कलातीतं कूटं परम-दुर्लभं। शिवश्चन्द्रश्च सत्यान्तः सर्ग-विन्दु-कलान्वितः, एषा नवाक्षरी विद्या सर्व-दोष-विवर्जिता।

अस्यार्थः—शिव-चन्द्र-वाग्भवं प्रथमं, शिव-चन्द्र-काम-भूत-वह्नि-सूर्य-स्वर - विन्दु-युक्तं द्वितीयं, शिव-चन्द्र-चतुर्दश-स्वर-विन्दु-सर्ग-युक्तं तृतीयं। अपरा चन्द्रादिः। भैरवीयमुदिताऽकुल-पूर्वा देशिको यदि भवेत् कुल-पूर्वः। सैव शीघ्र-फलदा भू-विद्येत्युच्यते पशु-जनेष्वति-गोप्या। शिवाष्टमं केवलमादि-वीजं भगस्य पूर्वाष्टम-वीजमन्यत्। परं शिवोऽन्तं कथिता त्रि-वर्णा सङ्केत-विद्या गुरु-वक्त्र-गम्या—**ऐं क्लीं सौः ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः स्हैं स्ह्क्लीं स्हौः**

(३) शक्तिः शिवो वह्नि-वीजं द्वादश-स्वर-विन्दुकं, शक्तिर्महेशः कामश्च इन्द्रो वह्नीन्दु-मायया। शक्तिः शिवश्च वह्निश्च मनु-स्वर-विसर्गकः। नाद-विन्दु-कला - युक्तं वीजमेतत् प्रकीर्तितम्—**ऐं क्लीं सौः स्ह्रैं स्ह्क्ल्ह्रीं स्ह्रौः**

एतासां दीपनी विद्या श्री-क्रमे—वद-युग्मं महेशानि ! वाग्वादिनि ततः परं, एषा त्वष्टाक्षरी विद्या वाग्भवाद्ये नियोजयेत्। क्लिन्ने क्लेदिनि देवेशि ! महा-मोक्षं ततः कुरु, काम-वीजं समुच्चार्य प्रणवं तदनन्तरं। मोक्षं कुरु पश्चाच्छक्ति-कूटं तथोच्चरेत्। जपेदादौ जपेत् पश्चात् सप्त-वारमनुक्रमात्—**ऐं वद वद वाग्वादिनि क्लिन्ने क्लेदिनि महा-मोक्षं कुरु क्लीं ॐ महा-मोक्षं कुरु सौः**

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में (२), (३) मन्त्रोद्धार क्रमशः 'श्री-क्रम' एवं 'त्रिपुरा-सार' से उद्धृत हुए हैं।

१४ एकादशाक्षरी कामेश्वरी-भैरवी : कामेश्वरी च रुद्रार्णा पूर्व-सिंहासने स्थिता, एतस्या एव विद्याया वीज-द्वयमुदाहृतं। तदन्ते परमेशानि ! नित्य-क्लिन्ने मदद्रवे। एतस्या एव तार्तीयं रुद्रार्णा परमेश्वरि—**स्हैं स्क्ल्ह्रीं नित्य-क्लिन्ने मद-द्रवे स्ह्रौः**

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५०। पूजन-विधि 'चैतन्य-भैरवी' के समान।

१५ षोडशाक्षरी अन्नपूर्णा भैरवी : वीज-हीनेयमेव (१८-२) स्यात् षोडशार्णा तथा परा—**नमः भगवति माहेश्वरि अन्न-पूर्णे स्वाहा**

'मेरु-तन्त्र'। आगे दिए मन्त्र-क्रमाङ्क १८-(२) के आदि के चार वीजों को हटाने से यह मन्त्र प्राप्त होता है।

१६ सप्त-दशाक्षरी अन्नपूर्णा भैरवी : मायाद्या चाथ ताराद्या मता सप्त-दशाक्षरा—

(१) **ह्रीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा**

(२) **ॐ नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा** वहीं।

प्रथम मन्त्र का उद्धार मूल 'मन्त्र-कोश' में इस प्रकार है—'माया हृद् भगवत्यन्तं माहेश्वरि-पदं ततः, अन्नपूर्णे ठ-युगलं मनुः सप्त-दशाक्षरः।' द्वितीय मन्त्र के सम्बन्ध में वहीं निर्देश है—'इयमेव प्रणवाद्या।' इन दो मन्त्रों के अतिरिक्त वहाँ अन्य सप्त-दशाक्षर मन्त्रों का भी निर्देश है। यथा—

(३) श्री-बीजाद्या : श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
(४) (वाग्-बीजाद्या) : ऐं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
(५) कामाद्या : क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
'हिन्दी तन्त्रसार' मे उक्त चारों मन्त्र विधान-सहित दिए हैं।

१७ अष्टादशाक्षरी अन्नपूर्णा भैरवी : माया-तारिका चान्या गदिताष्टादशाक्षरा—(१) ह्रीं ॐ नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा वही।

'मेरु-तन्त्र'। मूल 'मन्त्र-कोष' मे सप्त-दशाक्षर-१ के उद्धार के तारतम्य में ही तीन अष्टादशाक्षर मन्त्रों का निर्देश है। यथा—

(२) तार-मायाद्या : ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
(३) माया-श्री-युग्माद्या : ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
(४) श्री-माया-युग्माद्या : श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा
'हिन्दी तन्त्रसार' मे इन मन्त्रों का विवरण भी द्रष्टव्य है।

१८ ऊन-विंशाक्षरी अन्नपूर्णा भैरवी—काम-बीजं विना देवि ! त्रि-बीज-पूर्विका यदा, ऊन-विंशाक्षरी देवि ! धन-धान्य-समृद्धिदा—ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्न-पूर्णे स्वाहा

१९ विंशदक्षरी अन्न-पूर्णा भैरवी : तारं तु भुवनेशानी श्री बीजं काम-बीजकं हृदन्ते भगवत्यन्ते माहेश्वरि-पदं ततः। अन्न-पूर्णे ठ-युगल विद्येयं विंशदक्षरी—(१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्न-पूर्णे स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २५७ मे क्रमांक १७, १८ के दोनो मन्त्रों के ऋषि ब्रह्मा, छन्द पंक्ति, देवता अन्नपूर्णेश्वरी भैरवी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्रीं', कीलक 'क्लीं' बताए हैं। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से। ध्यान और पूजा-विधि वहीं द्रष्टव्य है।

(२) ॐ श्री ह्री नमश्चोक्त्वा भगवति-पद वदेत्, माहेश्वरि चान्नपूर्णे स्वाहा विंशति-वर्णकः—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्न-पूर्णे स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द त्रिष्टुप्, देवता अन्नपूर्णा, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्रीं', कीलक 'क्लीं'। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से। ध्यान—

तप्त-काञ्चन-सङ्काशां बालेन्दु-कृत-शेखरां, नव - रत्न - प्रभा - दीप्त - मुकुटां कुंकुमारुणाम्।
चित्र-वस्त्र - परीधानां मीनाक्षीं कमल - स्तनीं, नृत्यन्तीमीशमनिशं दृष्ट्वानन्द - मयीं पराम्।
सानन्द-मुख-लोलाक्षीं मेखलाढ्य-नितम्बिनीं, अन्न दान-रत' नित्यां भूमि-श्रीभ्यां नमस्कृताम्।
दुग्धान्न - भरितं पात्रं स - रत्नं वाम - हस्तके, दक्षिणे तु करे देव्या दर्वीं ध्यायेत् सुवर्णजाम्॥

वहीं इनके शिव का नृत्य-परायण ध्यान भी बताया है। यथा—

गोक्षीर-धाम - धवल पञ्च-वक्त्रं त्रिलोचनं, प्रसन्न-वदनं शान्तं नीलकण्ठ - विराजितम्।
कपर्दिनं स्फुरत्-सर्प - भूषणं मल्ल - सन्निभं, नृत्यन्तमीश्वर देवं त्रिकोणाग्रे सुरेश्वरम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृत-पायस से दशांश होम।

२० अष्टात्रिंशत्यक्षरी श्मशान-भैरवी : श्मशान - भैरवी - मन्त्रेण यावत् क्रूर-कर्मणि प्रयोगः कर्तव्यः—श्मशान-भैरवि नर - रुधिरास्थि-वसा-भक्षिणि सिद्धि मे देहि मम मनोरथान् पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा।

अन्य मन्त्र

१ भैरवी गायत्री : ॐ त्रिपुरायै विद्महे महा-भैरव्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

'मन्त्र-महोदधि', २१ वीं तरङ्ग। 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१ में उक्त गायत्री मन्त्र में महा-भैरव्यै' के स्थान पर केवल 'भैरव्यै' है। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ३८ में 'हिन्दी-तन्त्रसार' के समान मन्त्र है किन्तु वहाँ 'विद्महे' और 'धीमहि' के पूर्व 'च' जुड़ा हुआ है, जो अशुद्ध है। वहाँ मन्त्र के ५, ३, ३, ३, ४, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास करने का भी निर्देश है।

२ त्रिपुर-भैरव : माया लक्ष्मीस्तथा हंसः प्रासाद-बीजमेव च, वह्नि-जायान्तको मन्त्रो भवति त्रैपुर-भैरवः—ह्रीं श्रीं हंसः ह्सौं स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृ० ८०४। ऋष्यादि नहीं। षडङ्ग-न्यास मूल-मन्त्र से। ध्यान—

एक-वक्त्रं त्रि-नयनं चतुर्बाहु-समन्वितं, दक्षिणे चांकुशं खड्गं वामे खेटक-पाशकौ।
धारयन्तं रक्त - वर्णं वृषासन - गतं, ऊर्ध्व-केशं हार-हारं कपाल-मालयाऽन्वितम्।
एवं विधं महा-देवि! ध्यायेत् त्रिपुर-भैरवम्॥

भगवती छिन्नमस्ता

दश महा-विद्याओ के अन्तर्गत छठे स्थान पर भगवती छिन्न-मस्ता की स्थिति है। अत इन्हे 'षष्ठी' भी कहते हैं। इनका 'प्रचण्ड-चण्डिका' नाम भी प्रसिद्ध है। इसी नाम से इनके मन्त्र एवं पूजा-विधान 'तन्त्रसार' ग्रन्थ मे सङ्कलित हुए हैं। 'विद्या-त्रयी' मे इन्हे दूसरा स्थान प्राप्त है।

'शाक्त-धर्म विशेषाङ्क', पृष्ठ १३६ मे 'छिन्नमस्ता-तन्त्र' के अन्तर्गत इनके मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, ध्यान, पूजा-यन्त्र, आवरण-पूजन, पुरश्चरण आदि का विवरण द्रष्टव्य है। 'श्रीछिन्नमस्ता-नित्यार्चन' मे पूरी पूजा-पद्धति एव आवश्यक स्तोत्र संगृहीत हैं।

कलियुग मे भगवती छिन्नमस्ता की उपासना से शीघ्र ही अभीष्ट फल मिलता है। इनके मन्त्र की साधना से शास्त्रो का ज्ञान होता है, सभी पाप विनष्ट हो जाते हैं और समस्त प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

भगवती छिन्नमस्ता के मन्त्र

१ एकाक्षर : वियच्छोत्र-युत विन्दु-नाद-युक्तं तत. प्रिये, एकाक्षरी महा-विद्या त्रैलोक्य-वश-कारिणी—हूं

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ ३०७।

२ द्व्यक्षर : (१) द्वि-ठान्तैषा महा-विद्या त्रैलोक्य-मोह-कारिणी—हू स्वाहा — वही।

(२) ताराद्यन्ता भवत्येषा चतुर्वर्ग-फल-प्रदा—ॐ हूं ॐ — 'मन्त्र-कोष'

३ चतुरक्षर : ताराद्या च भवत्येषा (द्व्यक्षर–१) चतुर्वर्ग-फल-प्रदा—ॐ हूं स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८१८।

४ पञ्चाक्षर : ताराद्यन्ता भवत्येषा (द्व्यक्षर–१) चतुर्वर्ग फल-प्रदा—ॐ हू स्वाहा ॐ

'हिन्दी-तन्त्रसार', वही।

५ षडक्षर : (१) हृल्लेखा मादनं लक्ष्मीर्वाग्भव कूर्चमेव च, अस्यान्ता छिन्नमस्ता महा-विद्या प्रकाशिता—ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हू फट् — वही, पृष्ठ ३०४।

(२) हृल्लेखा मादनं कूर्चं वाग्भवं कूर्चमेव च, अस्यान्ता छिन्नमस्ता महा-विद्या प्रकाशिता—ह्रीं क्लीं हूं ऐं हूं फट्

(३) हृल्लेखा वाग्भवं कूर्चं वाग्भवं कूर्चमेव च, अस्यान्ता छिन्नमस्ताया महा-विद्या प्रकीर्तिता—ह्रीं ऐं हूं ऐं हू फट्

पुरश्चर्यार्णव, पृष्ठ ८१७। इन तीनो षडक्षर मन्त्रो का विशेष ध्यान—'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३०५ मे दिया है। उसमे दो पाठान्तर हैं—(१) जवा · जपा, (२) सदा तथा।

६ त्रयोदशाक्षर : वज्र-वैरोचनीये च कूर्च-युग्म स-फट् ठठ', ताराद्यैषा महा-विद्या सर्व-तेजोऽप-हारिणी—ॐवज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३०७ ।

७ चतुर्दशाक्षर . (१) भुवनेशी त्रि-तत्व च वाग्बीज प्रणवस्ततः, वज्र-वैरोचनीये च फट् स्वाहा च तथापि वा—ह्रीं हूं ऐं ॐ वज्र वैरोचनीये फट् स्वाहा वही, पृष्ठ ३०९

(२) हृल्लेखा-कूर्च-वाग्बीज वज्र-वैरोचनीये, हूं अस्त्र स्वाहा ,महा-विद्या चतुर्दशी परा—ह्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं फट् स्वाहा वही ।

८ पञ्च-दशाक्षर श्री ह्री ह्रूं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्री च ह्रूं प्रिया, दहनस्य तिथिर्वर्णो लक्ष्मी-बीजादिको धने—श्रीं ह्रीं ह्रूं ऐं वज्र-वैरोचनीये ह्री ह्रूं स्वाहा

'मेरु तन्त्र' । वहाँ बताया है कि आदि मे 'श्री' होने से यह धन-प्रद है । इसी मन्त्र के आदि मे 'ह्री' रखे तो यह वश्य-कर, 'ह्रूं' को आदि मे रखे, तो पाप-नाशक और 'ऐं' को आदि मे रखे, तो मोक्ष प्रद होता है । इस प्रकार इस मन्त्र के चार स्वरूप है ।

९ षोडशाक्षर : (१) लक्ष्मी कामं लज्जा ततो माया मात्रा-द्वादशिकामथ, वज्र-वैरोचनीये द्वे माये फट् स्वाहया युत—श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्र-वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा

वही, पृष्ठ २९४

(२) कामाद्या—क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं वज्र-वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा वही ।
(३) वाग्भवाद्या वा—ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं वज्र वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा वही ।
(४) मायाद्या वा जपेत् सुधी —ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा वही ।
(५) मुनि-मते तु मन्त्रान्तर—श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्र वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा

वही पृष्ठ ३०७ ।

(६) क्ली ह्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा वही ।
(७) हूं श्री ह्रीं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा वही ।
(८) ऐं ह्रीं हूं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा वही ।

१० सप्त-दशाक्षर : (१) पूर्वोक्ता षोडशी श्री-बीजादिका, ह्री बीजादिका, हूं बीजादिका, ऐं बीजादिका यदि भवति, तदा तु सप्त-दशाक्षरी । लक्ष्मी-बीजादिका सैव सर्वैश्वर्य-प्रदायिनी, लज्जाद्या स्वर्ग-भू-भोग-योषिदाकर्षणी परा । कूर्चाद्या सर्व-जन्तूना महा-पातक-नाशिनी, वाग्भवाद्या यदा देवी वागी-शत्व-प्रदायिनी—

'श्री, ह्री, हूं, ऐं' को क्रमश जोडने से सभी षोडशाक्षर मन्त्र सप्त-दशाक्षर हो जाते हैं । वही, पृष्ठ ३०८ ।

(२) प्रणवाद्यापि । ताराद्या षोडशी चान्या भवेत् सप्त-दशाक्षरी—

'ॐ' को आदि मे जोडने से सभी षोडशाक्षर-मन्त्र सप्त-दशाक्षर हो जाते हैं । वही ।

(३) प्रणवश्च रमा लज्जा-बीज-द्वन्द्व च वाग्भव, वज्र-वैरोचनीये ह्री ह्री फट् स्वाहा घनाक्षरः —ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्री ह्री फट् स्वाहा

'मेरु तन्त्र' । ध्यानादि क्रमाक १४ के मन्त्र के समान, केवल ऋषि मात्र 'भैरव' बताए हैं । पुरश्चरण मे चार लाख जप कर पलाश-पुष्पो से दशांश होम ।

११ अष्टादशाक्षर : (१) कमला भुवनेशानी कूर्च-बीजं सरस्वती. वज्र-वैरोचनीये च पूर्व-बीजानि चोच्चरेत् । फट् स्वाहा च महा-विद्या वसु-चन्द्राक्षरी परा—श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये श्रीं ह्रीं हूं ऐं फट् स्वाहा
वही ।

(२) भुवनेशी काम-बीजं कूर्च-बीजं च वाग्भवं, भुवनेशी कूर्च-बीजं वाग्भवं तदनन्तरं । वज्र-वैरोचनीये च हुं फट् स्वाहा ततः परं—ह्रीं क्लीं हूं ऐं ह्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये हुं फट् स्वाहा
वही, पृष्ठ ३०४ ।

१२ ऊन-विंशाक्षर : (१) इयं प्रणवाद्योन-विंशाक्षरी महा-विद्या-स्वरूपिणी—ॐ श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये श्रीं ह्रीं हूं ऐं फट् स्वाहा
वही ।

(२) एवमष्टादशाक्षरी श्री-बीज-पुटिता, हूं-बीज-पुटिता, ह्रीं-बीज-पुटिता, ऐं-बीज-पुटिता यदि भवति चतुर्धा ऊन-विंशत्यक्षरी—'श्रीं, हूं, ह्रीं, ऐं' को क्रमशः अष्टादशाक्षर मन्त्र में जोड़ने से चार प्रकार के १६ अक्षर के मन्त्र बनते हैं । -
वहीं ।

१३ विंशत्यक्षर : लक्ष्म्यादि-पुटिता पूर्वा रन्ध्र-चन्द्राक्षरी परा, चतुर्धा च महा-विद्या चतुर्वर्ग-फल-प्रदा—१६ अक्षरों के चार मन्त्रों के आदि में 'श्री' के जोड़ने से चार प्रकार के २० अक्षरोंवाले मन्त्र बनते हैं ।

१४ एक-विंशत्यक्षर : प्रणवाद्या इयमपि चतुर्धा भोग-मोक्ष-करी सदा—'ॐ' को आदि में जोड़ने से २० अक्षरों वाले चारों मन्त्र २१ अक्षर के हो जाते हैं ।
वही ।

इन सभी मन्त्रों के ऋषि क्रोध-भैरव, छन्द सम्राट्, देवता छिन्नमस्ता, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'धर्म-काम-मोक्षार्थे' है । षडङ्ग - न्यास क्रमशः '(१) आं खड्गाय, (२) ईं सु-खड्गाय, (३) ऊं वज्राय, (४) ऐं पाशाय, (५) औं अंकुशाय, (६) अः भास-रक्षकाय हूं हूं' से करे । इन सब मन्त्रों के आदि में 'ॐ' और अन्त में 'स्वाहा' जोड़ ले । 'मेरु-तन्त्र' । 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८१५ में संक्षिप्त ध्यान दिया है । यथा—

भास्वन्मण्डल - मध्यस्थां विपरीत-रत-स्थितो, रति-कामौ समारूढां विकीर्ण-सकलालकाम् ।
वामे करे निज-शिरश्छिन्नं सन्दधतीं पुनः, गलान्निर्गतमस्रं च पिबन्तीं तन्मुखेन च ।
डाकिनी-वर्णिनीभ्यां च सखीभ्यां परिवारिताम् ।।

'मेरु-तन्त्र' के अनुसार इसमें चार पाठान्तर हैं—(१) रत-स्थितो : रते स्थितां, (२) कामौ : काम, (३) मस्रं : स्रवत्, (४) वारितां : धारितां ।

विस्तृत ध्यान 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ २८६-८८ में दिया है । उसमें तेइस पाठान्तर हैं—(१) जवा : जपा, (२) मण्डितं : सन्निभं, (३) मध्ये तु तां : मध्ये तस्या, (४) नेलिहानाय : लेलिहानांम, (५) रौधिरी धारां : रक्त-धारां च, (६) विनिर्गतां : समुद्भवां, (७) पाशां च : पाशां तां, (८) दिगम्बरीं : दिगम्बरां, (९) पदे : पद, (१०) 'नाग-यज्ञोपवीतिनीं' के बाद 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८१६ में 'रति-कामोप-विष्टो'''०' पंक्ति नहीं है, (११) 'विपरीत-रतासक्तो ''०' पंक्ति के स्थान पर निम्न पंक्तियाँ हैं—

नागाङ्गदां नाग-काञ्चीं नाग-नूपुर-संयुतां, नाग-कुण्डल-संयुक्तामष्ट-नाग-समन्वितताम् ।
विपरीत-रतासक्त-रति-कामोपरि-स्थिताम् ।

(१२) 'वाम-दक्षिण-योगत:' के बाद अतिरिक्त पंक्ति है—'दक्षिणे वर्णिनीं ध्यायेद् वाम-पार्श्वे तु डाकिनीम्', (१३) लोहितां सौम्यां : लोहित-श्यामां, (१४) 'प्रकुर्वती' के बाद अतिरिक्त पंक्ति है—'अस्थि-माला-धरां देवीं नाग-यज्ञोपवीतिनी', (१५) 'नाग-यज्ञो०' से लेकर 'माला-विभूषितां' तक की तीन पंक्तियाँ नहीं हैं, (१६) वाम-पार्श्वस्थां : वाम-पार्श्वे तु, (१७) कल्प-सूर्यानलोपमां : १ कल्पान्त-ज्वलनोपमां, २ कल्पान्त-ज्वलदोपमां, (१८) विद्युज्जटां त्रिनयनां : विद्युच्छटाभ-नयना, (१६) पीनोन्नत : पीनोत्तुङ्ग, (२०) दिगम्बरी : दिगम्बरां, (२१) 'दिगम्बरी' के बाद अतिरिक्त पंक्ति है—'लम्बोदरी काल-रात्रीं नाग-यज्ञोपवीतिनीं' (२२) तां ध्यायेद् : तु ध्यायेद्, (२३) 'विचक्षण:' के बाद अतिरिक्त पंक्ति है—'दुर्निरीक्षां चेतसाऽपि सर्व-काम-फल-प्रदाम्' ।

अन्य मन्त्र

१ छिन्नमस्ता-गायत्री : वैरोचन्यै विद्महे च छिन्नमस्तायै च धीमहि तन्नो देवी-पदं चोक्त्वा योजनीयं प्रचोदयात्—ॐ वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०६ ।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६५६ में एक पाठान्तर है—वैरोचन्यै : वैरोचिन्यै ।

'हिन्दी मंत्र-महार्णव', पृष्ठ ३८ पर उक्त गायत्री मंत्र के 'विद्महे' के पूर्व 'च' छपा है, जो अशुद्ध है। वहाँ मंत्र के ५, ३, ५, ३, ४, ४ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास करने की विधि भी दी है।

२ क्रोध-भैरव : बीज हालाहलं गृह्य क्रोध-बीजमत: परं, भयङ्करार्णमाभाष्यासिताङ्गं क्षतज-त्विषम् । प्रलयाग्नि-महा-ज्वालामाभाष्य मनुमुद्धरेत्—

उक्त मन्त्रोद्धार के अनुसार वहाँ मन्त्र स्पष्ट नहीं किया गया है किन्तु उसी स्थल पर मन्त्र द्वारा षडङ्ग-न्यास की जो विधि दी है, उससे प्रतीत होता है कि यह उद्धार अधूरा है। 'साधना-रहस्य,' पृष्ठ १०३ पर 'क्रोध-भैरव' के छ. मन्त्र उद्धृत हैं। वहीं उनका भिन्न प्रकार का ध्यानादि भी द्रष्टव्य है।

साट्ट-हासं महा-रौद्रं भिन्नाञ्जन-चयोपमं, प्रत्यालीढं चतुर्बाहुं दक्षिणे चक्र-धारिणम् ।
तर्जनीं वाम-हस्तेन तीक्ष्ण-दंष्ट्रा-करालिनं, कपाल-रत्न-मुकुटं त्रैलोक्यस्य विनायकम् ।
आदित्य-कोटि-सङ्काशमष्ट-नाग-विभूषितं, अपराजित-पदाक्रान्त-मुद्रावान् बल-विष्टिभि: ।।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२१ । वहीं एक पाठान्तर दिया है—चक्र-धारिणं : वज्र-धारिणं ।

भगवती धूमावती

दश महा-विद्याओं के अन्तर्गत सातवीं महा-विद्या होने से भगवती महा-विद्या का सांकेतिक नाम 'सप्तमी' है। इन्हें 'ज्येष्ठा' देवी भी कहते हैं।

'शाक्त धर्म-विशेषाङ्क', पृष्ठ १५५-६२ में इनके मन्त्रोद्धार, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, षडङ्ग-न्यास, ध्यान, पूजा-यन्त्र, आवरण-पूजन, पुरश्चरणादि का तुलनात्मक परिचय दिया गया है। 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३८८ में इनके प्रमुख अष्टाक्षर मन्त्र की साधना-विधि द्रष्टव्य है।

उल्लेखनीय है कि 'विद्या-त्रयी' में इनका स्थान तीसरा है।

भगवती धूमावती के मन्त्र

१ सप्ताक्षर : आदौ धूं-बीजमुच्चार्य पश्चाद् धूमावती तथा। स्वाहेति मन्त्र-रूपं तु सप्त-वर्ण-मनुः स्मृतः—धूं धूमावती स्वाहा

'महा-विद्या-चतुष्टय'। ऋषि नारसिंह, छन्द पंक्ति, देवता ज्येष्ठा (धूमावती), बीज 'धूं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'शत्रु-निग्रहे'। षडङ्ग-न्यास 'धां, धीं' इत्यादि से। ध्यान—

ध्यायेत् कालाभ्र - भीतां विकलित - वदनां काक-नासां विकर्णाम्।
सम्मार्जन्युल्क - शूर्पैर्युत - मुसल - करां वक्र - दन्तां विपास्याम्॥
ज्येष्ठां निर्वाण - वेषां भ्रकुटित - नयनां मुक्त - केशीमुदाराम्।
शुष्कोत्तुङ्गाति - तिर्यक्-स्तन-भर - युगलां निष्कृपां शत्रु-हन्त्रीम्॥

पुरश्चरण में सात सहस्र जप। दशांश की आवश्यकता नहीं।

२ अष्टाक्षर : दान्तावर्घीश-विन्द्वन्तो ततो धूमावती द्वि-ठः, धूमावती-मनुः प्रोक्तो वैरि-निग्रह-कारकः—धूं धूं धूमावती स्वाहा

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ ३८८। अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में 'फेत्कारिणी तन्त्र' से उद्धृत उक्त उद्धार में एक पाठान्तर है—ततो : बीजं। ऋषि पिप्पलाद, छन्द निवृत्, देवता धूमावती। 'धां, धीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में एक लाख जप। 'तन्त्र-दीपिनी' के अनुसार ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—(१) रूष्टा, : दुष्टा, (२) विमुक्त - कुन्तला : विवर्ण - कुण्डला, (३) धृत हस्ता : धूत-हस्ता। किन्तु 'तन्त्र-संग्रह' द्वितीय भाग में प्रकाशित 'फेत्कारिणी तन्त्र' के अनुसार ध्यान में ९ पाठान्तर हैं—(१) रूष्टा : कृष्णा, (२) मलिनाम्बरा : नलिनाम्बरा, (३) विवर्ण-कुण्डला : १ विमुक्त-कुन्तला, २ विद्योत-कुन्तला, (४) सूर्प : सूर्य, (५) धृत : १ धूत, २ पूत, (६) घोरा तु भृश · घोराति-भृश, (८) कुटिला · जटिला, (८) भयदा : भीषणा, (९) प्रिया : १ प्रदा, २ आस्पदा।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १९६ में इसी मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में है—'सारवत-त्रितय साधि तमाद्यो चन्द्र-शेखरो, वैकुण्ठोऽनन्त-संयुक्तो जलं नेत्र-युतो हरिः। अष्टार्णो वह्नि-जायान्तो मन्त्र शत्रु-विनाशनः।' इसके अनुसार स्पष्ट मन्त्र में 'धूमावति' होना चाहिए। वहाँ देवता का नाम 'ज्येष्ठा' बताया है। षडङ्ग-न्यास मात्र 'धूं धूं' से करने का निर्देश है, जो मूल वचन के अनुरूप नहीं है। मूल वचन है—'आद्य-बीज-द्वयान्तस्थै षड्-वर्णैरङ्गमीरित।' ध्यान भिन्न छिपा है, यथा—

अत्युच्चा मलिनाम्बराऽखिल - जनोद्वेगावहा दुर्मना,
रूक्षाक्षि - त्रितया विशाल - दशना सूर्योदरी चञ्चला।
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुल - तनुः कृष्णाति - रूक्ष-प्रभा,
ध्येया मुक्त-कचा सदा प्रिय-कलिर्धूमावती मन्त्रिणा ॥

वहाँ जप का दशांश होम तिलों द्वारा करने का निर्देश है।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ७२१ में उक्त मन्त्र का वीज 'धूं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'धूमावती' और विनियोग 'ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे' या 'शत्रु-हनने' बताया है। वहाँ षडङ्ग-न्यास क्रमशः १ ॐधू-धूं, २ ॐ धूं, ३ ॐ मां, ४ ॐ वं, ५ ॐ ती, ६ ॐस्वाहा' से करने का निर्देश है। उक्त ध्यान के साथ ही वहाँ 'हिन्दी तन्त्रसारोक्त' ध्यान भी उद्धृत है, जिसमें छः पाठान्तर हैं—(१) रुष्टा : दुष्टा, (२) विवर्ण-कुण्डला : विमुक्त-कुन्तला, (३) सूर्प : शूर्प (४) रुक्षाक्षी : रक्ताक्षी, (५) धूत हस्ता : धृत-हस्ता, (६) कलह-प्रिया : कलहास्पदा ।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर तिल-मिश्रित घृत से दशांश होम करने का वहाँ निर्देश है।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२१ मे उक्त अष्टाक्षर मन्त्र का उद्धार 'महाथर्वण-संहिता' के आधार पर यह दिया है—'दान्तो स-वाम-कर्णेन्दु धूमावत्यग्नि-गेहिनी, अष्टाक्षरी महा-विद्या भजतां सर्व-सिद्धिदा।' वहाँ भी 'हिन्दी तन्त्रसार' का ही ध्यान है, जिसमें निम्न छः पाठान्तर और है—(१) रुष्टा : कृष्णा, (२) रूक्षा : दीर्घा, (३) वरान्विता : त्वरान्विता, (४) प्रवृद्ध-घोणा : प्रवृद्ध-रोमा, (५) कुटिला : जटिला, (६) भयदा : सदा, (७) कलह-प्रिया : कलह-तत्परा।

'मेरु-तन्त्र' के अनुसार उक्त मन्त्र मे 'धूमावती' के स्थान पर 'धूमावति' होना चाहिए। वहाँ देवता का नाम 'ज्येष्ठा' बताया है। ध्यान 'हिन्दी-तन्त्रसार' के समान है, किन्तु विशेष पाठान्तर है। यथा—

विवर्णां चञ्चलां दीर्घां च मलिनाम्बरां, विमुक्त-कुन्तलां दीर्घां विधवां विरल-द्विजाम्।
काक-ध्वज-रथारूढां विलम्बित-पयोधरां, शूर्प-हस्तां तु रूक्षाक्षीं धूत-हस्तां त्वरान्विताम्।
प्रवृद्ध-रोम्णीं तु भृशं जटिलां कुटिलेक्षणां, क्षुत्-पिपासार्दितां नित्यं सदा कलह-तत्पराम्।

विशेषता यह है कि सभी विशेषण द्वितीया विभक्ति में हैं, प्रथमा में नहीं और कुछ विशेषण भिन्न भी हैं। पुरश्चरण में वहाँ लवण-युक्त राजिका से दशांश होम करने का निर्देश है।

'शाक्त-प्रमोद' मे उद्धार है—'दान्तो सार्घीश विन्द्वन्त-वीजे धूमावती द्वि-ठः।' तदनुसार वहाँ स्पष्ट मंत्र है—'धूं धूं धूमावती ठः ठः।' वहाँ षडङ्ग-न्यास 'ॐ धां, ॐ धीं' इत्यादि से करने का निर्देश है। ध्यान 'हिन्दी तन्त्रसार' के ही समान है।

३ दशाक्षर—ॐ धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा

'महा-विद्या-चतुष्टयं'। ऋषि स्कन्द, छन्द पंक्ति, देवता श्री धूमिनी, वीज 'धूं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'ॐ', विनियोग 'शत्रु-क्षयार्थे'। 'धां, धीं' आदि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्यामाङ्गीं रक्त-नयनां श्याम-वस्त्रोत्तरीयकां। वाम-हस्ते शोधनं च दक्ष-हस्ते च शूर्पकम् ॥
धृत्वा विकीर्ण-केशांश्च धूलि-धूसर-विग्रहां। लम्बोष्ठीं शुभ्र दशनां लम्ब-मान-पयोधराम् ॥
संलग्न-भ्रू-युग-युतां कटु-दंष्ट्रोष्ठ-वल्लभां। कुसरस्तु कुलुत्थोत्थं भग्न-भाण्ड-तले-स्थितम् ॥
तिल-पिष्ट-समायुक्तं मुहुर्मुहुश्च भक्षितं। महिषी-शृङ्ग-ताटङ्की लम्ब-कर्णाति-भीषणाम् ॥

पुरश्चरण मे १ लाख जप। दशांश हवन राई और नमक से।

४ चतुर्दशाक्षर : धूं-बीज-त्रितय प्रोच्य धुर-युग्म समुच्चरेत्, धूमावती-पद प्रोच्य क्रो स्वाहा फट् समन्विता—**धूं धूं धुर धुर धूमावती क्रो फट् स्वाहा**

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२२। ऋषि क्षपणक, छन्द गायत्री, देवता धूमावती, बीज 'धूं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'समुच्चाटे'। षडङ्ग-न्यास 'धा, धी' इत्यादि से। ध्यान—

काकाल्हाऽति - कृष्णाभा भिन्न - दन्ता विरागिणी,
मुक्त - केशो सु - धूम्राक्षी क्षुत् - तृषार्ता रयातुरा।
चञ्चला घाति - कामार्ता विलब्दा पुष्टा पिशङ्गिका,
मलिना श्रमणी रक्ता व्यक्त - गन्धा विरोधिनी।
धूत-शूर्पाग्र - हस्ता च ध्येया धूमावती परा॥

५ पञ्च-दशाक्षर . (१) प्रणव धूम्र-बीजं च धूमावति पद वदेत्, देवदत्तो धावतीति स्वाहान्तो मनुराह्वयम्—**ॐ धू धूमावति देवदत्त धावति स्वाहा**

वही। ऋष्यादि एव ध्यान चतुर्दशाक्षर-मन्त्र के समान। इस मंत्र मे 'देवदत्त'-शब्द परिवर्तनीय है। पुरश्चरण अष्टाक्षर-मन्त्र-वत्।

(२) धू-बीज-त्रितयं प्रोच्य धुर युग्म समुच्चरेत्। धूमावति-पदं प्रोच्य क्रो स्वाहा फट्-समन्वित—**धू धूं धू धुर धुर धूमावति क्रो फट् स्वाहा**

उक्त दोनो मन्त्र 'शक्ति-सङ्गम तन्त्र', सुन्दरी-खण्ड, पृष्ठ १६० मे हैं। इनके भी ऋषि आदि वही बताए हैं। ध्यान मे छ: पाठान्तर हैं—(१) रयातुरा : भयातुरा, (२) पिशङ्गिका : लसाङ्गिका, (३) श्रमणी-नीरक्ता : श्रम-नीरक्ता, (४) गन्धा : गर्भा, (५) धूत : धृत, (६) शूर्पाग्र : सर्पाग्र।

पुरश्चरण मे १ लाख जप। दशांश का उल्लेख नही है।

अन्य मन्त्र

१ गायत्री : (१) धूमिति बीजमुच्चार्य धूमावतीति विद्महे, विवर्णा देवी पदतो धीमहि पदमुद्धरेत्। धूमा-देव्यास्तु गायत्री तन्नो घोरे प्रचोदयात्—**धू धूमावति विद्महे विवर्णा देवी धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्** 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०६।

(२) **ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात्**

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६८। वहाँ 'विद्महे' और 'धीमहि' के पूर्व 'च' छपे हैं, जो ठीक नही है। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के ५, ३, ४, ३, ४, ४ अक्षरो से।

२ अघोर-रुद्र : 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२४ के अनुसार भगवती धूमावती के शिव। इनके मन्त्र का उद्धार व ध्यान प्रस्तुत 'मन्त्र-कोष', पृष्ठ ७५ पर 'एक-पञ्चाशदक्षर' मन्त्र वत दिया है (पृष्ठ ७५ के स्पष्ट मन्त्र मे 'प्रचट' के बाद 'कह कह वम वम' छपने से रह गये हैं, कृपया यह त्रुटि दूर कर लें)। यहाँ दिये मन्त्रोद्धार के साथ एक पाठान्तर भी दिया है—वम-द्वन्द्व (१) वह-युग्म, (२) वह द्वन्द्व। ध्यान मे भी एक पाठान्तर है—त्रिशिखि : त्रिशिख।

भगवती वगला

दश महा-विद्याओं के अन्तर्गत आठवें स्थान पर भगवती वगलामुखी का उल्लेख होता है। अतः इन्हें 'अष्टमी' नाम से भी सम्बोधित करते हैं। 'सिद्ध-विद्या-त्रयी' में इन्हें पहला स्थान प्राप्त है। 'ब्रह्मास्त्र-विद्या', 'पीताम्बरा', 'पीता', 'वगला' आदि नामों से ये प्रख्यात हैं।

'शाक्त-धर्म-विशेषाङ्क' में 'श्री वगलामुखी तन्त्रम्' के अन्तर्गत इनके मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, ध्यान, पूजा-यन्त्र, आवरण-पूजन, पुरश्चरण आदि का विवेचन द्रष्टव्य है। 'श्री वगला कल्पतरु', 'श्रीवगला-नित्यार्चन', 'वैदिक श्री वगला-पूजा-पद्धति', 'सांख्यायन तन्त्र' जैसी पुस्तकों से इनके सम्बन्ध में प्रायः सभी आवश्यक बातें जानी जा सकती है।

जीवन की कठिन-से-कठिन समस्याओं का निराकरण भगवती वगला के मन्त्र की विधिवत् साधना से हो जाता है। वारम्वार अनुभव-सिद्ध होने से इनकी उपासना बड़ी लोक-प्रिय है।

भगवती वगला के मन्त्र

१ एकाक्षर : सोऽन्तरान्त-समायुक्तं चतुर्थ-स्वर-संयुतं, रेफाक्रान्तं विन्दु-युक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरो मनुः—ह्लीं

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ १२। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता श्रीवगलामुखी, बीज 'लं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'ईं'। षडङ्ग-न्यास 'ह्लां, ह्लीं' इत्यादि से। ध्यान—

वादी मूकति, रङ्कति क्षिति - पतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शाम्यति, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति, सर्व-विच्च जड़ति त्वद्-यन्त्रणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये ! वगलामुखि ! प्रतिदिनं कल्याणि ! तुभ्यं नमः ॥

पुरश्चरण में तत्व-लक्ष जप कर, गुडोदक से दशांश तर्पण कर, हयारि-कुसुमों से दशांश होम करे।

'श्रीवगलामुखी-रहस्यं', पृष्ठ ४७ में उद्धार में एक पाठान्तर है—सोऽन्तरान्त : सान्तं रान्त। वहाँ शक्ति 'हूं' बताई है। ध्यान मे एक पाठान्तर है—शान्तति : शाम्यति।

२ त्र्यक्षर : तारेण सम्पुटं कृत्वा स्थिर-मायां जपेत् सुधीः, सर्व-शास्त्रेषु पाण्डित्यं जायतेऽचिरात् प्रिये—ॐ ह्लीं ॐ

'श्रीवगलामुखी-रहस्यं', पृष्ठ ६०।

३ चतुरक्षर : वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाश-बीजं ततः परं, स्तब्ध-मायां समुच्चार्य अंकुश-बीजमेव च। तुर्याक्षरी च वगला सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमा—ॐ आं ह्लीं क्रों

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ७२। बीज 'ह्लीं', शक्ति 'आं', कीलक 'क्रों', शेष वही। षडङ्ग-न्यास 'ॐ ह्लां, ॐ ह्लीं' इत्यादि से। ध्यान—

कुटिलालक-संयुक्तां मदाघूर्णित - लोचनां, मदिरामोद-वदनां प्रवाल - सदृशाधराम्।
सुवर्ण-कलश-प्रख्य -कठिन-स्तन-मण्डलां, आवर्त्त-विलसन्नाभि सूक्ष्म-मध्यम-संयुताम्।
रम्भोरु-पाद-पद्मां तां पीत-वस्त्र-समावृताम् ॥

वहीं दो उल्लेखनीय पाठान्तर हैं—(१) कलश : शैल, (२) प्रद्य : सुप्रद्य।

पुरश्चरण में चार लाख जप कर, मधूक-पुष्प-मिश्रित जल से दशांश तर्पण कर घृत-शर्करा-युक्त-पायस से दशांश होम।

'वगलामुखी-रहस्यं', पृष्ठ५६ में उक्त मन्त्रोद्धार में चार पाठान्तर है-(१) बीजं ततः : बीजमतः, (२) स्तब्ध-माया : स्थिर-मायां, (३) तुर्याक्षरी : चतुरक्षरी, (४) मोत्तमा : मोत्तमः। ऋष्यादि अन्य विवरण नहीं दिया है।

३ पञ्चाक्षर : प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिर-मायां वधू ततः, हुं फट् संयोजयेत् पश्चात् पञ्चार्ण-वगला-मनुः—ॐ ह्लीं स्त्रीं हुं फट्

'वगलामुखी-रहस्यं' पृष्ठ ६० मे केवल मन्त्रोद्धार है, पृष्ठ १६४ के अनुसार ऋषि अक्षोभ्य, छन्द वृहती, देवता श्रीवगलामुखी चिन्मयी देवी, बीज 'हूं', शक्ति 'फट्', कीलक 'ह्लीं स्त्रीं।'

षडङ्ग-न्यास 'ह्लां, ह्लीं' आदि से। ध्यान—

प्रत्यालीढ-परां घोरां मुण्ड-माला-विभूषितां, खर्वां लम्बोदरीं भीमां पीताम्बर-परिच्छदाम्।
नव-यौवन-सम्पन्नां पञ्च - मुद्रा-विभूषितां, चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महा-भीमां वर-प्रदाम्।
खड्ग-कर्त्री-समायुक्तां सव्येतर - भुज-द्वयां, कपालोत्पल-संयुक्तां सव्य-पाणि-युगान्विताम्।
पिङ्गोग्रैक-सुखासीनां मौलावक्षोभ्य-भूषितां, प्रज्वलत्-पितृ-भू-मध्य-गतां दंष्ट्रा-करालिनीम्।
तां खेचरां स्मेर-वदनां भस्मालङ्कार-भूषितां, विश्व-व्यापक-तोयान्ते पीत-पद्मोपरि-स्थिताम्॥

५ अष्टाक्षर : (१) वेदादि विलिखेद् पूर्वं पाश - बीजमनन्तर, स्तब्ध - मायां समुच्चार्य अंकुशं बीजमेव च। 'हुं फट् स्वाहा'—समायुक्तं मन्त्रमष्टाक्षरं तथा—ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ८५। बीज 'ॐ', कीलक 'क्रों', शेष एकाक्षर-मन्त्र-वत्। षडङ्ग-न्यास चतुरक्षर-मन्त्र-वत्। ध्यान—

युवतीं च मदोन्मत्तां पीताम्बर-धरां शिवां, पीत-भूषण-भूषाङ्गीं सम-पीन-पयोधराम्।
मदिरामोद-वदनां प्रवाल-सदृशाधरां, पान-पात्रं च शुद्धिं च बिभ्रतीं वगलां स्मरेत्॥

वहीं चार उल्लेखनीय पाठान्तर हैं—(१) युवती : यौवना, (२) मदोन्मत्ता, : मदोद्रिक्तां (३) पान-पात्रं च शुद्धिं च : वैरि-जिह्वां पान-पात्रं (४) स्तब्ध : स्तम्भ। 'श्रीवगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४४ में 'वदना' के स्थान मे 'वना' छपा है, जो अशुद्ध है।

(२) वेदादिशक्ति-मादौ च पाश-बीजमनन्तर, स्तब्ध-मायां समुच्चार्य अंकुश बीजमेव च। वगला च समायुक्तो मन्त्रस्याष्टाक्षरो मतः—ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रों वगला

'श्रीवगलामुखी-रहस्य', पृष्ठ ५६। देखें 'श्रीवगला कल्पतरु', पृष्ठ ५१।

६ नवाक्षर : ॐ कारैक-ठ-रहितो (एकदशाक्षरः) वा नवाक्षर —ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि ठः

७ एकादशाक्षर : प्रणवं स्थिर-मायां च काम-शक्ति-युतां क्रमात्, वगलामुखि संयुज्य ठ-द्वयेन युतां स्मरेत्—ॐ ह्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि ठः ठः

'श्रीवगलामुखी रहस्यं' में उक्त दोनों (६ व ७) उद्धार हैं। वहाँ न स्पष्ट मन्त्र दिये हैं, और न ऋष्यादि-विवरण। 'ठ-द्वयं' का अर्थ 'स्वाहा' लें, तो द्वितीय मन्त्र का एक अन्य स्वरूप प्रस्तुत होता है।

८ चतुस्त्रिंशदक्षर—वह्नि-द्वि-नेत्र माया-युक् वगला-मुखि सर्व-दुष्टानां वाचमित्युक्त्वा मुखं स्तम्भय कीर्तयेत्। जिह्वां कीलय बुद्धिं च विनाशय पदं वदेत्, पुनर्बीजं ततस्तारं वह्नि-जायावधिर्भवेत्।

तारादिका चतुस्त्रिंशदक्षरी बगला-मुखी—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', तृतीय परिच्छेद । मूल 'मन्त्र-कोष' मे उद्धार के 'माया'-बीज का अर्थ 'ह्लीं' लेकर स्पष्ट मन्त्र मे 'ह्लीं' नही दिया है। ऋषि नारद, छन्द त्रिष्टुप्, देवता बगलामुखी, बीज 'ह्लीं', शक्ति स्वाहा । षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, ५, ५, ७, ५, १० अक्षरो से। ध्यान—

गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्ण-कान्ति-सम-प्रभां, चतुर्भुजां त्रि-नयनां कमलासन-संस्थिताम् ।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकं, पीताम्बर-धरां देवीं दृढ-पीन-पयोधराम् ।।
हेम-कुण्डल-भूषां च पीत-चन्द्रार्द्ध-शेखरां, पीत-भूषण-भूषां च रत्न-सिंहासने स्थिताम् ।।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२६ मे उक्त ३४ अक्षरवाले मन्त्र का उद्धार ऊपर जैसा ही दिया है, केवल पहली पंक्ति इस प्रकार है—'वह्नि-हीनेन्द्र-युग्-माया बगलामुखि सर्व-युक्' और यही शुद्ध पाठ प्रतीत होता है क्योकि मूल मन्त्र-कोष की उक्त पंक्ति मे १६ अक्षरो के स्थान पर १४ ही अक्षर हैं, जो ठीक नही है और अर्थ भी स्पष्ट मन्त्र के अनुरूप नही निकलता । अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे 'वह्नि-हीनेन्द्र-युग्' के स्थान पर 'वह्नि-व्योम-युतं' है । पुरश्चर्यार्णव मे चार पाठान्तर भी हैं—(१) पुनर्बीजं : पूर्व - बीजं, (२) तारादिका : ताराधिका, (३) दक्षरी : दक्षरा, (४) बगला : बगला । 'पुरश्चर्यार्णव' मे ऋषि नारायण, छन्द पंक्ति, देवता बगलामुखी, बीज 'ह्लीं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'सर्व-शत्रु-मुख-स्तम्भे' बताए हैं । साथ ही पाद-टिप्पणी मे मतान्तर से नारद को ऋषि बताया है । वहाँ ध्यान वही दो दिए है, जो ३६ अक्षरोवाले मन्त्र के सन्दर्भ मे प्रकाशित हैं, जिनमे तीन पाठान्तर हैं—(१) पीताम्बरा ....विभूषिताङ्गी : पीताम्बरा कनक-भूषण-माल्य-शोभा, (२) स्मरामि : भजामि (३) गदाभि : पदाभि ।

पुरश्चरण मे अयुत (दस सहस्र) जप करने का निर्देश है ।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे 'ह्लीं' के स्थान पर 'ह्रीं' है और बीज भी 'ह्रीं' ही बताया गया है । ध्यान मे दो पाठान्तर इस प्रकार हैं—(१) वेदी : वेद्या, (२) नमामि : भजामि ।

९ षट्-त्रिंशदक्षर : (१) प्रणव स्थिर-माया च ततश्च बगला-मुखि, तदन्ते सर्व-दुष्टाना ततो वाच मुख तत' । स्तम्भयेति ततो जिह्वा कीलयेति पद-द्वयं, बुद्धिं नाशय पश्चात् तु स्थिर - माया ततो लिखेत । लिखेच्च पुनरोङ्कार स्वाहेति पदमन्ततः । स्थिर-माया ह्लीं । तया च मन्त्र'—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा

वही । ऋषि, छन्दादि चतुस्त्रिंशदक्षरी मन्त्र के समान । ध्यान दो दिए हैं—

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेदी-सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं, देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।। १
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम् ।
गदाभि-घातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि ।। २

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त प्रियगु पुष्प या किसी अन्य पीले पुष्प से दशांश होम ।

'शाक्त-प्रमोद' मे ऊपर जैसा ही मन्त्रोद्धार दिया है किन्तु वहाँ प्रथम चरण मे 'माया' के बाद 'च' नही है, जिससे छन्द-भङ्ग हो गया है। पाठान्तर भी दो हैं—(१) मुखं ततः : मुखं पद, (२) ततो लिखेत् ।

समालिखेत्। वहाँ अन्तिम चरण है—'षट्-त्रिंशदक्षरी विद्या सर्व-सम्पत्ति-करी मता।' ऋष्यादि वही। ध्यान भी वही दोनों, दो पाठान्तर हैं—(१) वेदी : वेद्यां, (२) स्मरामि : नमामि।

(२) प्रणवो गगनं पृथ्वी शान्ति-बिन्दु-युतं वग, लाम् साक्षी गदी सर्व-दुष्टानां वा हलीन्दु-युक्। मुख पदं स्तम्भयान्ते जिह्वा कीलय-वर्णकाः, बुद्धिं विनाशयान्ते तु बीज तारोऽग्नि-सुन्दरी—ॐ ह्लीं बगला-मुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २८८। छन्द बृहती, शेष वही, विनियोग 'शत्रूणां स्तम्भनार्थे' या 'ममा-भीष्ट-सिद्धये'। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ७४ में विनियोग 'ममाभीष्ट-सिद्धये' है, शेष 'मन्त्र-महोदधि' वत्। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, ५, ५, ६, ५, १० अक्षरों से। ध्यान—

सौवर्णासन-संस्थितां त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्ग-रुचिं शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्-युताम्।
हस्तैर्मुद्गर-पाश-वज्र-रसनाः संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रि-जगतां सस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर चम्पा के फूलों से दस सहस्र होम।

'सांख्यायन तन्त्र' पृष्ठ १७ में उद्धार भिन्न है—'तारं च बगला-बीजं बगला-पदमुच्चरेत्, मुखीति पदमुच्चार्य सर्व-शब्दं ततोच्चरेत्। दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुख पद वदेत्, स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा जिह्वां कीलय उच्चरेत्। बुद्धि-शब्दं ततोच्चार्य विनाशयेति पद वदेत्, स्थिर-माया ततोच्चार्य प्रणवं च ततोच्चरेत्। वह्नि-जाया समुच्चार्य एव मन्त्र समुद्धरेत्, षट्-त्रिंशदक्षर मन्त्र मन्त्र-राजमिद भुवि।' वहाँ बीज 'ल', शक्ति 'ह', कीलक 'ई' बताए हैं, शेष 'मन्त्र-महोदधि' के समान। षडङ्ग-न्यास में हृदय को छोड़कर शेष अङ्गों के मन्त्रों के आदि में 'ॐ ह्लीं' जोड़ने की विधि दी है। ध्यान भी भिन्न दिया है—

चतुर्भुजां त्रि-नयनां कमलासन-संस्थिता, त्रिशूलं पान-पात्रं च गदा जिह्वां च बिभ्रतीम्।
बिम्बोष्ठीं कम्बु-कण्ठीं च सम-पीन-पयोधरा, पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्र-देवताम्॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर कारण-मिश्रित जल से तर्पण कर बिल्व-कुसुमों से दशांश होम।

(३) तारं माया समुच्चार्य वदेच्च बगलामुखि, तदग्रे सर्व-दुष्टानां ततो वाचं मुखं पद, जिह्वां कीलयेति ततः परं, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा षट्-त्रिंश-वर्णक.—ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२५। उद्धार में वहाँ 'ह्लीं' के स्थान पर 'ह्रीं' छपा है, जो अशुद्ध है। ऋषि नारायण, छन्द त्रिष्टुप्, देवता बगलामुखी, बीज 'ह्लीं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'पुरुषार्थ-चतुष्टये'। मन्त्र के २, ५, ५, ६, ५, १० अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान चतुस्त्रिंशदक्षर-मन्त्र के समान, जिसमें चार पाठान्तर हैं—(१) स्वर्ण-कान्ति-सम-प्रभा : तप्त-काञ्चन-सन्निभा, (२) मुद्गरा : मुद्गर, (३) देवी दृढ : सान्द्र-वृत्त, (४) रत्न-सिंहासने : स्वर्ण-सिंहासन।

पुरश्चरण में दस सहस्र जप कर पीत-द्रव्यों से दशांश होम। अथवा एक लाख जप कर प्रियंगु, पायस व पीत-पुष्पों से दशांश होम।

'मेरु-तन्त्र' के अनुसार उक्त मन्त्रोद्धार में एक पाठान्तर है—षट्-त्रिंश : वेदाग्नि।

१० त्रि-चत्वारिंशदक्षर बगला-हृदयास्त्र। प्रथमं बगला-बीजं वाराहं तदनन्तरं, ततश्च शक्ति-वाराहं बगला-बीजमुद्धरेत्। बगलामुखि-पद चोक्त्वा वाचं मुखं पद वदेत्, ग्रस-द्वयं च उच्चार्य ग्राहि-युग्मं

ततः परं। भक्ष-युग्मं ततोच्चार्य शोणितं पिव-युग्मकं वगलामुखि उच्चार्य वगला-वीजमुच्चरेत्। शक्ति-वाराहमुच्चार्य वर्मास्त्रं च समुद्धरेत्, त्रि-चत्वारिंशद्-वर्ण-युक्तं वगलायाः सु-पावनं—ह्लीं हूं ग्लौं वगलामुखि वाचं मुखं पदं ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं पिब पिब वगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं फट्

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ६४। यही मन्त्र 'श्रीवगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४६ में ४५ अक्षरों का दिया गया है क्योंकि वहाँ 'ततश्च शक्ति-वाराहं' के स्थान पर 'मम शत्रूंस्ततः' पाठ स्वीकार किया गया है और 'वाचं मुखं' के वाद 'पद' शब्द को छोड दिया है किन्तु उद्धार के अनुसार यह मन्त्र ४३ अक्षरों का ही है, जो उद्धार के प्रस्तुत रूप से सहज हो सिद्ध हो जाता है। ऋष्यादि शेप विवरण 'श्रीवगला कल्पतरु', में वहीं द्रष्टव्य है।

११ पञ्च-पञ्चाशदक्षर-रण-स्तम्भन-वाणास्त्र : तारं च विलिखेत् पूर्वं स्तब्ध-मायामतः परं, वाराहं शक्ति-वाराहं वगलामुखि चोच्चरेत्। ह्लां ह्लीं ह्लूं च ततोच्चार्य सर्व-दुष्टा-पदं वदेत्, नकारं दीर्घ-संयुक्तं विन्दु-नाद-विभूपितं। ह्लैं ह्लौं ह्लश्च ततश्चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत्। स्तम्भय-द्वितयं प्रोक्त्वा ह्लः ह्लौं ह्लैं च ततो वदेत्, जिह्वां कीलय उच्चार्य ह्लूं ह्लीं ह्लां च ततः परं। बुद्धिं विनाशयोच्चार्य शक्ति-वाराह-मुच्चरेत्, वाराहं वगला-वीजं तार-वर्मास्त्र-संयुतं, रण-स्तम्भन-वाणं च दुर्लभं भुवि पुनक ! पञ्चाशदुत्तर पञ्च-वीज-वद्धं सु-पावनं—ॐ ह्लीं हूं ग्लौं वगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्व-दुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूं ह्लीं हुं फट्

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४१। 'श्रीवगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४८ में श्रीवगला के प्रथमास्त्र (वडवामुखी) रूप में यह मन्त्र ऋष्यादि-विवरण-सहित प्रकाशित है।

१२ अष्ट-पञ्चाशदक्षर उल्कामुख्यास्त्र : तारं च स्तब्ध-मायां च शक्ति-वाराहमेव च, वगलामुखि पदं चोक्त्वा वीज-त्रय तु सर्व च। दुष्टाना पदमुच्चार्य पूर्व-वीज-त्रयं वदेत्, वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्व-वीज-त्रयं वदेत्। स्तम्भय-द्वितयं चोक्त्वा वीज-त्रयं ततो वदेत्, जिह्वा कीलय उच्चार्य पुनर्वीज-त्रयं वदेत्। बुद्धि विनाशयोच्चार्य पूर्व-वीज-त्रयं वदेत्, प्रणवं वह्नि-जाया च उल्का-मुख्या अयं मनुः, पञ्चाशदूर्ध्वं चैवाष्ट-वीज-वद्धं सु-पावनं—ॐ ह्लीं ग्लौं वगलामुखि ॐ ह्लीं ग्लौं सर्व-दुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वा कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४२। उद्धार के अनुसार ५७ अक्षर ही निकलते हैं। टीकाकार अन्तिम प्रणव के पूर्व वगला-वीज जोड़कर इसे ५८ अक्षरों का निर्दिष्ट करते हैं। तदनुसार ही ऋष्यादि-विवरण के साथ यह मन्त्र 'श्रीवगला - कल्पतरु', पृष्ठ ४६ में द्वितीयास्त्र (उल्कामुखी) के रूप में प्रकाशित है।

१३ एकोन-षष्टयक्षर उपसंहार-विद्या : उच्चरेच्छक्ति-वाराहं हुङ्कारं तदनन्तरं, वाग्-वीजं च ततोच्चार्य भुवनेशीं तत परं। महा-माया ततोच्चार्य श्री-वीजं तदनन्तरं, कालि-शब्द-द्वयं चोक्त्वा महा-कालि-पदं वदेत्। एहि-शब्द-द्वयं चोक्त्वा काल-रात्रि-पदं वदेत्, आवेशय-द्वयमुक्त्वा महा-मोहे तु द्वयम्। स्फुर-द्वयं समुच्चार्य प्रस्फुर-द्वितयं लिखेत्, स्तम्भनास्त्र-पदं चोक्त्वा शमनि-पदमुच्चरेत्। हुं फट् स्वाहा-समायुक्तं मन्त्रमेवं समुद्धरेत्, पञ्चाशदूर्ध्वं मन्त्रस्तु वर्ण-त्रय-विभूपितं—ग्लौं हूं ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं कालि कालि महा-कालि एहि एहि काल-रात्रि आवेशय आवेशय महा-मोहे महा-मोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भनास्त्र-शमनि हुं फट् स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ १०४। यही मन्त्र ५८ अक्षरों के रूप में 'श्रीवगला-कल्पतरु', पृष्ठ ५० में 'अन्य मन्त्रों' के अन्तर्गत प्रकाशित है। वहाँ 'ह्लीं ह्लीं श्रीं' के स्थान पर दो ही वीज हैं—'क्रीं श्रीं'।

१३ षष्ट्यक्षर जात-वेद-मुख्यस्त्र : तारं च स्तब्ध-माया च प्रासादं च ततः परं, पुनर्लिख्य स्तब्ध-मायां प्रणवं च ततः परं, वगलामुखि-पदं चोक्त्वा सर्व-दुष्ट-पदं वदेत्। नकारं दीर्घ-संयुक्तं विन्दुना भूषितं तथा, वीज-पञ्चकमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत्। स्तम्भय-द्वयमुच्चार्य पञ्च-वीजानि चोच्चरेत्, जिह्वा कीलय चोच्चार्य पञ्च-वीजानि चोच्चरेत्। बुद्धि नाशय-युगं पञ्च-वीजानि चोच्चरेत्, वह्नि-जाया-समायुक्तं षष्टि-वर्णात्मकं मनुं—ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वगलामुखि सर्व-दुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुख स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वा कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४७। 'वाचं मुखं' के वाद यदि 'पद' को जोड़ लें, तो यह मन्त्र ६२ अक्षरों का वन जाता है। 'नाशय' के स्थान मे पाठान्तर 'विनाशय' भी मिलता है। यदि उसे स्वीकार किया जाय, तो यही मन्त्र ६४ अक्षरों का हो जाता है। 'श्रीवगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४६ में उक्त मन्त्र ६१ अक्षरों का दिया है। वहाँ 'वाच मुख' के साथ 'पद' तो है किन्तु अन्त मे पाँच वीजों के स्थान पर चार ही वीज है, जो मन्त्रोद्धार की दृष्टि से अशुद्ध है।

१५ अशीत्यक्षर हृदय : पाश-वीजं ततोच्चार्य स्तब्ध-माया ततोच्चरेत्, अंकुश-वीजमुच्चार्य भू-वाराहं तथोच्चरेत्। वाराहं वाग्भवं चैव काम-राज ततः परं, श्री-वीजं भुवनेशी च वगलामुखि-पदं वदेत्। आवेशय-द्वयं चोक्त्वा पाश-वीजमतोच्चरेत्, स्तब्ध-माया ततोच्चार्यमंकुशं वीजमुच्चरेत्। ब्रह्मास्त्र-रूपिणि चोक्त्वा एहि-युग्मं ततोच्चरेत् पाश-वीजमतोच्चार्य स्तब्ध-मायां, समुच्चरेत्। अंकुशं वीजमुच्चार्य मम-शब्दं ततोच्चरेत्, हृदये तु समुच्चार्य आवाहय-युगं वदेत्। सान्निध्यं कुरु-युग्मं च पुनर्वीज-त्रयं वदेत्, ममैव हृदये उक्त्वा चिरं तिष्ठ-द्वयं वदेत्। पुनर्वीज-त्रयं चोक्त्वा हुं फट् स्वाहा-समन्वितः, अशीति-वर्ण-संयुक्तो वगला-हृदयं मनुः—आं ह्लीं क्रों ग्लौं हूं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं वगलामुखि आवेशय आवेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्र-रूपिणि एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ८२। 'श्रीवगला कल्पतरु', पृष्ठ ४४ मे यह मन्त्र स-विधि प्रकाशित है। एक मत से इस मन्त्र के आदि मे 'ॐ' जोड़कर 'ममैव' के स्थान मे 'मम' ग्रहण करते हैं किन्तु उद्धार से यह सम्मत नहीं है।

१६ शताक्षर : स्तब्ध-मायां च वाग्-वीजं माया मन्मथमेव च, श्रीवीज शक्ति-वाराह ह्लींकारं वगला-मुखि। स्फुर-द्वयं तथा चोक्त्वा सर्व-शब्दं ततोच्चरेत्, दुष्टाना पदमुच्चार्य वाच मुखं पद वदेत्। स्तम्भय-द्वयमुच्चार्य प्रस्फुर-द्वयमुच्चरेत्, विकटाङ्गि-पदं चोक्त्वा घोर-रूपि-पद वदेत्। जिह्वा कीलय उच्चार्य महा-शब्द ततोच्चरेत्, पश्चाद् भ्रम-करि चैव बुद्धि नाशय उच्चरेत्। विराण्मयि-पदं चोक्त्वा सर्व-प्रज्ञा-मयीति च, प्रज्ञा नाशय उच्चार्य उन्मादं कुरु-युग्मक। मनोपहारिणि चोक्त्वा स्तम्भ-माया समुच्चरेत्, शक्ति-वाराह-वीज च लक्ष्मी-वीजं ततः परं। काम-राजं च हृल्लेखा वाग्भव तदनन्तर, स्तब्ध-माया ततोच्चार्य वह्नि-जाया-समन्वितं। शताक्षरी-महा-मन्त्रं वगला-नाम पावन—ह्लीं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ग्लौं ह्लीं वगलामुखि स्फुर स्फुर, सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, प्रस्फुर प्रस्फुर, विकटाङ्गि घोर-रूपि जिह्वां कीलय महा-भ्रम-करि बुद्धि नाशय, विराण्मयि सर्व-प्रज्ञा-मयि प्रज्ञां नाशय, उन्मादं कुरु कुरु, मनो-पहारिणि ह्लीं ग्लौं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ह्लीं स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४८। 'श्रीबगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४५। इस मन्त्र में दो पाठान्तर मिलते हैं—(१) विराणमयि : विरामय, (२) उन्मादं : उन्मादी। 'ह्लींकारं बगलामुखि' के स्थान पर 'बगला-मुखि उच्चरेत्' पाठ भी है किन्तु उसे स्वीकार करने से एक अक्षर कम होता है, अतः ग्राह्य नहीं है।

१७ षडुत्तर-शताक्षर बृहद्भानु-मुख्यस्त्र : तारं ह्लां ह्लीं चोच्चार्य ह्लूं ह्लैं ह्लौं चैव ततः परं, ह्लःमस्तथाप्युच्चरेत् पुन ! ह्लांह्लीं ह्लूं च ततः परं। ह्लैं ह्लौं ह्लःस्ततस्तारं बगलामुखि-पदं वदेत्, आद्य-बीजं मनोः संख्या उद्धरेत् पुनरादरात्। सर्व-शब्दं ततोच्चार्य दुष्टाना पदमुच्चरेत्, वाचं मुखं पदं प्रोक्त्वा स्तम्भय-द्वयमुच्चरेत्। आद्य-बीजं पुनश्चोक्त्वा उद्धरेत् पुनराद्य-वत्, जिह्वां कीलय उच्चार्य पूर्व-वत् बीजमुद्धरेत्। बुद्धिं नाशयोच्चार्य पूर्व-बीजानि चोच्चरेत्, स्तव्य-मायां तारकं च वह्नि-जायान्तकं सुत ! बृहद्भानु-मुखी-मन्त्रं षडुत्तर-शतार्णवे—ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखि १४ सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय १४ जिह्वां कीलय १४ बुद्धिं नाशय १४ ॐ स्वाहा

'सांख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४८। 'ह्लां, ह्लीं' के स्थान पर 'ह्लां, ह्लीं' का भी पाठ मिलता है। इस मन्त्र मे 'नाशय' के स्थान पर 'विनाशय' ग्रहण करें, तो १०७ अक्षरो का मन्त्र बनता है। यही मन्त्र 'श्रीबगला कल्पतरु', पृष्ठ ५० मे विधि-सहित प्रकाशित है। वहाँ '१६० अक्षर' के स्थान पर '१०६ अक्षर' होना चाहिए।

१८ विंशोत्तर-शताक्षर ज्वालामुख्यस्त्र : तार च स्तव्य-माया च वह्नि-बीजं च पञ्चकं, प्रस्फुर-द्वितयं चैव तद्-बीजं च त्रयोदश। ज्वाला-मुखि-पदं चोक्त्वा वदेद् बीज त्रयोदश, सर्व-शब्द ततोच्चार्य दुष्टाना पदमुच्चरेत्। बीजं त्रयोदश चोक्त्वा वाच मुखं पदं वदेत्, स्तम्भय-द्वितयं चोक्त्वा पुनर्बीजं त्रयोदश। जिह्वां कीलय-युग्मं च पुनर्बीज त्रयोदश, बुद्धिं नाशय-युग्मं च पुनर्बीजं त्रयोदश। वह्नि-जाया-समायुक्तं ज्वाला-मुख्यास्त्वय मनु', शतोत्तरं भवेद् विंशद्-बीज-वद्धो मनुस्त्वय—ॐ ह्लीं रां रीं रूं रें रौं प्रस्फुर प्रस्फुर ज्वाला-मुखि १३ सर्व-दुष्टानां १३ वाचं मुखंपदं स्तम्भय स्तम्भय १३ जिह्वां कीलय कीलय १३ बुद्धिं नाशय नाशय १३ स्वाहा

'साख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ४५। उद्धार के अनुसार स्पष्ट मन्त्र ११७ अक्षरो का ही होता है किन्तु उद्धार के अन्त मे इसे १२० का बताया है। इस सम्बन्ध मे आचार्यों का मत है कि 'ज्वाला-मुखि' के स्थान मे 'बगलामुखि' और 'नाशय नाशय' के स्थान पर 'विनाशय विनाशय' होना चाहिए। 'श्रीबगला कल्पतरु', पृष्ठ ५० मे तदनुसार ही १२० अक्षरो का मन्त्र विधि-सहित पृष्ठ ५० पर उद्धृत है।

अन्य मन्त्र

१ बगलामुखी गायत्री : (१) स्थिर-माया समुच्चार्य बगला-पदतो मुखी, विद्महे दुष्ट-पदतः स्तम्भनी-पदमच्चरेत्। धीमहीति पदस्यान्ते तन्नो देवी प्रचोदयात्—ह्लीं बगलामुखी विद्महे दुष्ट-स्तम्भनी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०६

(२) ब्रह्मास्त्राय-पदं चोक्त्वा विद्महेति पद तथा, स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा बाणाय तदनन्तर। धीमहीति पद चोक्त्वा तन्नो-शब्दं ततो वदेत, बगला-पदमुच्चार्य उद्धरेच्च प्रचोदयात्—ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-बाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्

'साख्यायन तन्त्र', पृष्ठ ३२। उद्धार मे आदि के दो बीजो का उल्लेख नहीं है किन्तु आचार्यों के मतानुसार इनका सयोजन आवश्यक है। तदनुसार 'श्रीबगला-कल्पतरु' पृष्ठ ४६ मे विधि-सहित यही गायत्री-मन्त्र प्रकाशित है।

(३) ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनं तन्न बगला प्रचोदयात्

'बगलामुखी रहस्यं', पृष्ठ ५४ के अनुसार 'श्रीबगला-कल्पतरु', पृष्ठ ४२ मे।

(४) 'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स-४ ह ६ क-५ परा-षोडशी हस सोह ह्लीं ह्लीं

वही, ऊर्ध्वाम्नाय मे श्रीबगला-गायत्री का रूप उक्त प्रकार निर्दिष्ट है।

(५) ॐ बगलामुख्यै विद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ३८ मे 'विद्महे' व 'धीमहि' के पूर्व 'च' भी है, जो अशुद्ध है। उक्त मन्त्र के ६, ३, ३, ३, ४, ४ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास की विधि है।

२ द्वात्रिंशदक्षर तार्क्ष्य • ॐकार-बीजमुच्चार्य तार्क्ष्य बीज तत पर ॐ नमो पदमुच्चार्य ततो भगवते पद। तार्क्ष्य-बीज पक्षि-राजायोक्त्वा तार्क्ष्य तत पर सर्व शब्द तथोच्चार्य अभिचार पद वदेत। ध्वसकाय-पद क्षीमो हु फट् स्वाहा समन्वित, तार्क्ष्यस्य माला-मन्त्रश्च द्वात्रिंशद् वर्ण-सयुत ॐ क्षीं ॐ नमो भगवते क्षीं पक्षि-राजाय क्षीं सर्व-अभिचार-ध्वसकाय क्षीं ॐ हु फट् स्वाहा

'साख्यायन तन्त्र', पृष्ठ १०८। यही मन्त्र 'श्रीबगला कल्पतरु', पृष्ठ५० मे २८ अक्षरो के मन्त्र-रूप मे प्रकाशित है।

३ मृत्युञ्जय : 'पुरश्चर्यार्णव' के अनुसार श्रीबगला के शिव 'मृत्युञ्जय' हैं। इनके मन्त्र का विवरण भगवान शिव के प्रकरण मे पृष्ठ ६७ म द्रष्टव्य है।
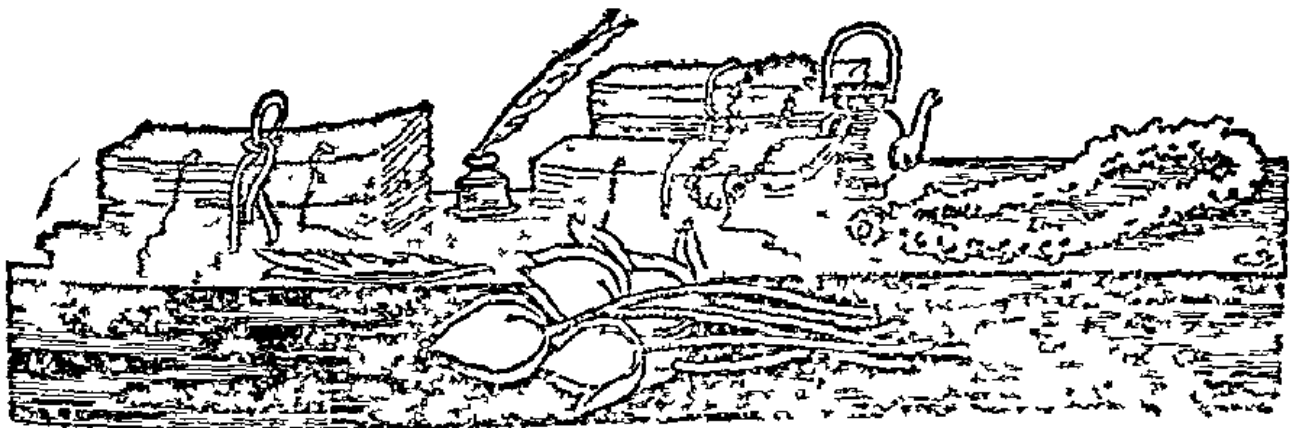
भगवती मातंगी

दश महा-विद्याओं के अन्तर्गत नवें स्थान पर भगवती मातङ्गी हैं, अतः उन्हें 'नवमी' कहते हैं। 'सिद्ध-विद्या-त्रयी' में ये दूसरी हैं। इनके नामान्तर हैं—(१) सुमुखी, (२) लघु-श्यामा या श्यामला, (३) उच्छिष्ट-चाण्डालिनी, (४) उच्छिष्ट-मातङ्गी, (५) राज-मातङ्गी, (६) कर्ण-मातङ्गी, (७) चण्ड-मातङ्गी, (८) वश्य-मातङ्गी, (९) मातङ्गेश्वरी, (१०) ज्येष्ठा मातङ्गी, (११) सारिकाम्बा आदि।

'शाक्त-धर्म विशेषाङ्क', पृष्ठ १७० में 'श्रीमातङ्गी-तन्त्रम्' में प्रमुख चार मन्त्रों के उद्धार, विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, ध्यान, यन्त्र, आवरण-पूजादि का विवेचन प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त श्रीपीताम्बरा-पीठ द्वारा प्रकाशित 'महा-विद्या-चतुष्टयं' में संस्कृत में विशेष साहित्य भगवती मातङ्गी-विषयक द्रष्टव्य है।

भगवती मातंगी के मन्त्र

१ अष्टाक्षर मातङ्गी : कामिनी रञ्जिनी स्वाहाऽष्टाक्षरोऽयमुदीरितः—कामिनी रञ्जिनी स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव' वही, पृष्ठ ८२८। ऋषि सम्मोहन, छन्द निवृत्, देवता सर्व-सम्मोहिनी। मन्त्रों के तीन पदों की द्विरावृत्ति द्वारा षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्यामाङ्गीं वल्लकीं दोर्भ्यां वादयन्तीं सु-भूषणां, चन्द्रावतंसां विविधैर्गायनैर्मोहतीं जगत्।

पुरश्चरण मे दो अयुत जप, त्रि-मधु-युक्त मधूक पुष्पो से दशांश होम।

२ दशाक्षर मातङ्गी : प्रणवं च ततो माया काम-बीजं च कूर्चकं, मातङ्गी ङे-युता चास्त्र वह्नि-जायावधिर्मनुः—ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८२७। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द विराट्, देवता मातङ्गी। 'ॐ ह्रां, ॐ ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। 'मन्त्र-महार्णव' पृष्ठ ७८० मे इस मन्त्र का बीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक क्लीं और विनियोग 'सर्वेष्ट-सिद्धये' बताया है। ध्यान—

श्यामाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनां सद्-रत्न-सिंहासने,
संस्थां रत्न-विचित्र-भूषण-युतां संक्षीण-मध्य-स्थलाम्।
आपीन-स्तन-मण्डलां स्मित-मुखीं ध्यायेद् दधन्तीं क्रमाद्,
वेदैर्बाहुभिरंकुशासि-लतिके पाशं तथा खेटकं॥

'मन्त्र-महार्णव' मे ध्यान निम्न प्रकार है—

श्यामाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीम्,
पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्त-द्विषाम्।
रत्नालङ्करण-प्रभोज्ज्वल-तनुं भास्वत्-किरीटां शुभाम्,
मातङ्गीं मनसा स्मरामि स-दयां सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदाम्॥

वहाँ 'स-दयां' के स्थान पर 'स-दया' छपा है, जो अशुद्ध है।

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३८४ मे उक्त मन्त्र ऊपर जैसा ही दिया है, केवल ध्यान 'शाक्त-प्रमोद'-वत् निम्न प्रकार दिया है। अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' के अनुसार इसमें एक पाठान्तर है—सिंहासन : सिंहासने—

श्यामाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनां रत्न-सिंहासन-स्थिताम् ।
ध्यायेऽहं वेदैर्बाहु-दण्डैरसि - खेटक - पाशांकुश - धराम् ॥

पुरश्चरण मे छ. सहस्र जप, ब्रह्म-वृक्ष की समिधा मे शर्करा-मधु-युक्त घृत से दशांश होम ।

३ पञ्च-दशाक्षर चण्ड-मातङ्गी . माया नमो हिलिन्द्वन्द्व चण्ड-मातङ्गिनीति च, स्वाहेति तिथि-वर्णः—**ह्रीं नमः हिलि हिलि चण्ड-मातङ्गिनी स्वाहा**

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३२ । ऋष्यादि राज-मातङ्गिनी (क्रमाङ्क १५) के समान ।

४ एकोन विंशाक्षर उच्छिष्ट-मातङ्गी : (१) नमः उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गीति-पद वदेत्, सर्व-वशङ्करि स्वाहा मन्त्रोऽयं मोहयेज्जगत्—**नमः उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि सर्व-वशङ्करि स्वाहा**

'पुर०', पृष्ठ ८२८ । ऋषि नारद-तुम्बुर, छन्द सगायत्र निवृत्, देवता मातङ्गी । मन्त्र के २, ३, ३, ३, ६, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

कृष्णाम्बरां यावकार्द्र-चरणामुन्नत-स्तनीं, मुक्ता-प्रवाल-मालाढ्या शङ्ख-कुण्डल-धारिणीम् ।

पुरश्चरण मे दो अयुत जप, त्रि-मधु-युक्त मधूक-पुष्पो से दशांश होम ।

(२) उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि-पदमीरयेत्, तत. सर्व - वशङ्करि हृदन्ते वह्नि - वल्लभा—**उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि सर्व-वशङ्करि नम स्वाहा**

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ ३८६ । अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' मे भी यही उद्धार है ।

५ विंशाक्षर लघु-श्यामा : वाग्-बीज हृदय कर्ण एक-नेत्र स-नेत्रक', वृषो मुकुन्दमारूढो कूर्मो दीर्घेन्दु-सयुतः । नन्दो दीर्घो लि-मातङ्गि सर्वान्ते स्याद् वशङ्करि, वैश्वानर-प्रियान्तोऽय मन्त्रो विंशति-वर्णवान्—**ऐं नम उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि सर्व-वशङ्करि स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २४० । ऋषि मदन, छन्द निचृद्-गायत्री, देवता लघु-श्यामा, बीज 'ऐं', शक्ति 'स्वाहा', विनियोग 'अखिलाभीष्ट-सिद्धये' । मन्त्र के ३, ३, ३, ३, ६, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

माणिक्याभरणान्वितां स्मित-मुखीं नीलोत्पलाभाम्बराम्,
रम्यालक्तक - लिप्त - पाद - कमलां नेत्र-त्रयोल्लासिनीम् ।
वीणा - वादन - तत्परां सुर - नता कीरच्छद - श्यामला,
मातङ्गीं शशि - शेखरामनु-भजेत् ताम्बूल - पूर्णाननाम् ॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप, मधूक पुष्प या फल से दस सहस्र होम ।

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ७७३ मे उक्त ध्यान मे एक पाठान्तर है—नीलोत्पलाभाम्बरा नीलोत्पलाभा वरा ।

'महा-विद्या-चतुष्टय', पृष्ठ १२५ मे उक्त मन्त्र प्रथम 'अङ्ग-मन्त्र' के रूप मे प्रकाशित । वहाँ उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—'आदौ वाग्भवमुच्चार्य नम पदमथो चरेत्, उच्छिष्टेति पद पश्चात् चाण्डालीति पदं ततः । वदेन्मातङ्गि-शब्दान्ते सर्वेति पदमीश्वरि, वशङ्करि - पद पश्चाद् वह्नि - जाया समुच्चरेत् ।'

वहाँ स्पष्ट मन्त्र मे 'सर्व-जन' छपा है, जो अशुद्ध है । उद्धार के अनुसार मात्र 'सर्व' होना चाहिये । ध्यान भिन्न दिया है । यथा—

वीणा-वाद्य-विनोद-गीत-निरतां नीलांशुकोल्लासिनीम्,
बिम्बोष्ठीं नव-यावकार्द्र-चरणामास्तीर्ण-केशोज्ज्वलाम् ।
हृद्याङ्गीं सित-शङ्ख-कुण्डल-धरां माणिक्य-भूषोज्ज्वलाम्,
मातंगीं प्रणतोऽस्मि सु-स्मित-मुखीं देवीं शुक-श्यामलाम् ॥

एक ध्यान वहीं और दिया है । यथा—

स्मरेत् प्रथम-पुष्पिणीं रुधिर-बिन्दु-नीलाम्बराम्,
गृहीत मधु-पात्रकां मद-विघूर्ण-नेत्राञ्चलाम् ।
कर-स्फुरित-वल्लकीं विमल-शोभिताटङ्किनीम्,
घन-स्तन-भरालसां गलित-चूलिकां श्यामलाम् ॥

६६ द्वा-त्रिंशाक्षर सुमुखी मातङ्गी : दद्यादुच्छिष्ट-शब्दं तु तथा चाण्डालिनीति च, सुमुखीति ततो देवी कीर्तयेत् तदनन्तर । महा-पिशाचिनी तस्मान्माया-बीजमनन्तरं, बिन्दु-नाद-समायुक्तं ठकार - त्रितयं ततः । स-विसर्गं महा-देवि ! सर्व-सिद्धि-प्रदायकं, इयं विद्या महा - विद्या सर्व-पाप - प्रणाशिनी—**उच्छिष्ट-चाण्डालिनी सुमुखी देवी महा-पिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः**

'पुर०', पृष्ठ ८३१ । ऋषि अज, छन्द गायत्र, देवता सुमुखी । 'ह्रां, ह्रीं' से षडङ्ग - न्यास ।

ध्यान— **शवोपरि-समासीनां रक्ताम्बर-परिच्छदां, रक्तालङ्कार-संयुक्तां गुञ्जा-हार-विभूषिताम् ।
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत-पयोधरां, कपाल-कर्त्रिका-हस्तां पर-ज्योतिः-स्वरूपिणीम् ॥**

पुरश्चरण में उच्छिष्ट-मुख (जूठे रहकर) से आठ सहस्र जप ।

मूल 'मन्त्र-कोष' में भी उक्त मन्त्रोद्धार है, जिसमें चार पाठान्तर हैं—(१) दद्यादुच्छिष्ट : उक्त्वा उच्छिष्ट, (२) तस्मान्माया : पश्चाल्लज्जा, (३) बीजमनन्तरं : बीजं ततः परं, (४) बिन्दु-नाद : नाद-बिन्दु । तदनुसार 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ३८६ में मन्त्र प्रकाशित है ।

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में मूल 'मन्त्र-कोष' जैसा ही उद्धार है । वहाँ 'समायुक्त' के स्थान पर 'समाक्रान्त' है और 'इति' के स्थान पर 'तु' का प्रयोग किया गया है ।

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६३ में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में है—'कर्णो द्युतिः स-नयना श्वेतेशः स्याज्जरासन', लक्ष्मीर्दीर्घेन्दु सयुक्ता नन्दी दीर्घः स-दृक्-क्रिया । मेषः स-माधवः कर्णो भृगुस्तन्द्री च सेन्द्रिका, खि-देवि म-वियद्-दीर्घ पिशाचिनि हिमाद्रिजा । नन्दज-त्रितयं सर्गि द्वा-त्रिंशत्यक्षरो मनुः ।' इस उद्धार के अनुसार मन्त्र-गत नाम सम्बोधन में है, अतः मन्त्र का रूप यह स्पष्ट होता है—**उच्छिष्ट-चाण्डालिनि सुमुखि देवि महा-पिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः ।'**

दोनों मन्त्रों का अन्तर ध्यान देने योग्य है । 'मन्त्र - महोदधि' में ऋषि भैरव बताए हैं और षडङ्ग-न्यास मन्त्र के ७, ३, २, ६, १, ३ अक्षरों से करने का निर्देश किया है । ध्यान भी भिन्न है—

**गुञ्जा-निर्मित हार-भूषित-कुचां सद्-यौवनोल्लासिनीम्,
हस्ताभ्यां नृ-कपाल-खड्ग-लतिके रम्ये मुदा बिभ्रतीम् ।
रक्तालंकृति-वस्त्र - लेपन - लसद्-देह -प्रभां ध्यायताम्,
नृणां श्रीसुमुखीं शवासन - गतां स्युः सर्वदा सम्पदः ॥**

पुरश्चरण में एक लाख जप कर किंशुक पुष्पों या समिधा से दशांश होम ।

'मन्त्र-महार्णव' में 'फेत्कारिणी-तन्त्र' का सन्दर्भ देकर 'शवोपरि-समासीना०' ध्यान उद्धृत किया गया है, जिसमें 'पर-ज्योति' के स्थान पर 'पर-ज्योतिः' है ।

७ एकोन - त्रिंशाक्षर ज्येष्ठ - मातङ्गी : वाग्भव माया काम: सौ वाग्भव ज्येष्ठ - मातङ्गि, नमामि उच्छिष्ट - चाण्डालिनि त्रैलोक्य-वशङ्करि स्वाहा—ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ-मातङ्गि नमामि उच्छिष्ट-चाण्डालिनि त्रैलोक्य-वशङ्करि स्वाहा

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ ३८६।

८ त्रिंशाक्षर ज्येष्ठ-मातङ्गी : अत्रादौ यदि हूं-बीज दीयते, तदा मन्त्रान्तर—हूं ऐं ह्रीं क्लीं सौ ऐं ज्येष्ठ-मातङ्गि नमामि उच्छिष्ट-चाण्डालिनि त्रैलोक्य-वशङ्करि स्वाहा वही।

९ एक-त्रिंशाक्षर ज्येष्ठ-मातङ्गी : वाग्भव माया काम: सौ ऐं ज्येष्ठ - मातङ्गि नमामि उच्छिष्ट-चाण्डालिनि त्रैलोक्य-वशङ्करि स्वाहा—ऐं ह्रीं क्लीं सौ ऐं ज्येष्ठ-मातङ्गि नमामि उच्छिष्ट-चाण्डालिनि त्रैलोक्य-वशङ्करि स्वाहा

अप्रकाशित 'तन्त्र-दीपिनी' में 'मन्त्र-देव-प्रकाशिका' से उद्धृत। वहाँ बताया है कि इस मन्त्र को भोजन करने के बाद, आचमन किए बिना, जूठे मुह से ही जपना चाहिए। पहले मूल-मन्त्र से बलि देकर ध्यान करे, तब जप करे। इस मन्त्र के सम्बन्ध मे किसी सङ्कल्प, विनियोग, न्यासादि की आवश्यकता नही है। ध्यान क्रमाङ्क ६ के द्वा-त्रिंशाक्षर मन्त्र के समान—'शवोपरि समासीना०' आदि। उसमे एक पाठान्तर है—पर-ज्योति : पर ज्योतिः। 'सिद्ध-विद्या' होने से पुरश्चरण आवश्यक नही है। जप-सख्या जहाँ निर्दिष्ट नही होती, वहाँ अष्टोत्तर-सहस्र जप करने का नियम है।

१० द्वा-त्रिंशाक्षर मातङ्गेश्वरी : तारो माया च वाग् लक्ष्मी हृन्निद्रा-स्मृति-लान्तिमा, सन्नेत्रो हरिरुच्छिष्ट-चाण्डा नेत्र-युता क्रिया। श्रीमातङ्गेश्वरि-पद सर्व शूली न-लान्त श, करि वह्नि-प्रिया मन्त्र. द्वा त्रिंशद्-वर्ण-वानय—ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमः भगवति उच्छिष्ट-चाण्डालि श्रीमातङ्गेश्वरि सर्व-जन वशङ्करि स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २०२। वहाँ हिन्दी-टीका मे मन्त्र ३० अक्षर का बताया है, जो ठीक नही है। ऋषि मतङ्ग, छन्द अनुष्टुप्, देवता मातङ्गी। मन्त्र के ४, ६, ६, ६, ८, २ अक्षरो से षडङ्ग न्यास। ध्यान—

घन-श्यामलाङ्गीं स्थिता रत्न-पीठे, शुकस्योदित श्रृण्वतीं रक्त-वस्त्राम्।
सुरा-पान-मत्ता सरोज-स्थिता श्रीं, भजे वल्लकीं वादयन्तीं मतङ्गीम्॥

पुरश्चरण मे दस सहस्र जप, मधु युक्त मधूक-पुष्पो से दशाश होम।

११ चतुस्त्रिंशाक्षर सारिकाम्बा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति सारिके, सकल-कला कोविदे! मम देवि बोधय बोधय स्वाहा

'महा-विद्या चतुष्टय', पृष्ठ १०४। ऋषि शौनक, छन्द अति-जगती, देवता सारिकाम्बा, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'श्रीं'। ध्यान—

श्यामा कराम्भोरुह-केलि-लग्ना, सोमायतस्था श्रुति-पाठ-दक्षाम्।
विद्याति हृद्यां विशदामुपासे, सारीं चतुर्वर्ग - फल - स्वरूपाम्॥

पञ्चोपचार-पूजा कर अष्टोत्तर-शत जप कर समर्पित करे।

१२ एक-चत्वारिंशाक्षर हसन्ती श्यामलाम्बा : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हसन्ती हसतालापे मातङ्गि परिचारिके मम विघ्नापदां नाश कुरु कुरु ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा

'महा-विद्या-चतुष्टयं', पृष्ठ १३७। ऋषि मतङ्ग, छन्द अनुष्टुप्, देवता हगन्तो श्यामताम्बा, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'श्रीं'। ध्यान—

अंगुल्यान्तावलम्बामरण-मणि-निभां कंचुकीं धारयन्ती,
कादम्बर्या कपालं नयन-त्रय-युता कन्दला मन्द-हासा।
मेघ-श्यामा मृगाङ्की लसित-कबरिका पाणि-पद्मात्त-वेत्रा,
मातङ्गी सा हसन्ती मम भवतु सदा मन्त्र-विघ्नोप-शान्त्यै॥

१३ त्रि-चत्वारिंशाक्षर कर्ण-मातङ्गी : वाग्भवं हृदयं चाथ श्रीमातङ्गि-पदं वदेत्, अमोघे सत्य-वादिनि मम कर्णे पदं ततः। अवतर-पदं द्वेधा सत्यं कथय युग्मकं, एह्येहि श्री च मातंग्यै नमस्त्र्यधर्णको मनुः—ऐं नमः श्रीमातङ्गि अमोघे सत्य-वादिनि मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३२। वाग्भव बीज (ऐं) से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण मे एक लाख जप कर पायस से दशांश होम।

१४ सप्त-चत्वारिंशाक्षर वश्य - मातङ्गी : ॐ राज - मुखि राजाधि-मुखि वश्य - मुखीति च, मायां श्री क्लीं देव-देवि महा-देवि ततो वदेत्। देवाधि - देवि सर्वेति जनस्य मुखमुच्चरेत्, मम वशं कुरु-द्वन्द्वं स्वाहान्तोऽङ्ग-कृतार्णकः—ॐ राज-मुखि राजाधि-मुखि वश्य-मुखि ह्रीं श्रीं क्लीं देव-देवि महा-देवि देवाधि-देवि सर्व-जनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा

वही, पृष्ठ ८३१। ऋष्यादि विवरण राज-मातङ्गी (क्रमाङ्क १५) के समान।

१५ चतुष्पञ्चाशदक्षर राज-मातङ्गी : ॐ ह्रीं नमश्च ब्रह्मश्री-राजिते राज-पूजिते, जये च विजये गौर्यपे गान्धारि-पद वदेत्। त्रिभुवन-वशङ्करि सर्व-स्त्री-पुरुषेति च, वशङ्करि सु-सु दु-दु घे-घे वा-वाऽग्नि-गेहिनी—ह्रीं नमः ब्रह्म-श्री-राजिते राज-पूजिते जये विजये गौर्यपे गान्धारि त्रिभुवन-वशङ्करि सर्व - स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सु-सु दु-दु घे-घे वा-वा स्वाहा

'पुर०', पृष्ठ ८२८। ऋषि अज, छन्द निवृद् - गायत्र, देवता राज-मातङ्गी। 'ह्रीं, ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

अमृतोदधि-मध्यस्थे रत्न-द्वीपे मनोहरे, स्वर्ण-प्राकार-संवीते मणि - रत्न - विनिर्मिते।
कदम्ब-विल्वक-द्वारे कल्प-वृक्षोपशोभिते, वेदि-मध्ये सुखास्तीर्णे रत्न-सिंहासने शुभे॥
अष्ट-पत्रं महा-पद्मं केशराढ्यं सकर्णिकं, तन्मध्ये तु त्रिकोणं स्यादष्ट - पत्रं ततो बहिः।
पुनः षोडश-पत्रं स्यात् तद्-बाह्ये स्याच्चतुर्दलं, वेदास्रं सच्चतुर्द्वारं मण्डलं प्रोक्तमुत्तमम्॥
तस्य मध्ये सुखासीनां श्याम-वर्णां शुचि-स्मितां, कदम्ब- मालाभरणां पूजितां च सुरासुरैः।
प्रलम्बालक- संयुक्तां चन्द्र-रेखावतंसिकां, ललाटे तिलकोपेतामीषत् प्रहसिताननाम्॥
किञ्चित् स्वेदाम्बु-मधुर-ललाट-फलकोज्ज्वलां, वली-तरङ्ग-मध्याभां रोम-राजी-विराजितां।
सर्वाभरण-संयुक्तां मुक्ता-हार-विभूषितां, नाना-मणि - गणोद्बद्ध - कटि - सूत्रैरलंकृताम्॥
वलयै रत्न-खचितैः केयूरैर्मणि-भूषितैः, भूषितां द्वि - भुजां बालां मदाघूर्णित - लोचनाम्।
आपीन-मण्डलाभोग - समुन्नत - पयोधरां, प्रलम्ब - वर्णाभरणां कर्णोत्तंस - विराजिताम्॥
तमाल-नीलां तरुणीं मधु-मत्तां मतङ्गिनीं, चतु:षष्टि-कला-रूपां पार्श्वस्थ-शुक-सारिकाम्।
कोटि-बालार्क-सङ्काशां जपा-कुसुम-सन्निभां, एवं वा पीत-वर्णां वा ध्यायेन्मातङ्गिनीं पराम्॥

पुरश्चरण मे अयुत जप, मधुर-त्रय-युक्त बन्धूक- पुष्पो से दशांश होम

१६ त्रयस्सप्तत्यक्षर मातंगेश्वरी रत्नाम्बा : वाग्भवं कामराज चसर्गवान् भृगुरुत्तमे, अनुग्रहेण संयुक्तः पुनराद्यः परां लिखेत् । श्री-बीजं तारकं चैव नमो भगवतीति च, मातङ्गेश्वरि सर्वान्ते मनोहरि जनादिकम् । सर्व-राज-वशं चान्ते करि सर्व-मुखान्तकम्, रंजनीति ततस्सर्व-स्त्री-शब्दं च ततो वदेत् । पुर-पान्ते वशं चोक्त्वा कर्यन्ते सर्व-दुष्टतः, मृगान्ते वशमालिख्य सर्व-लोक-पदं लिखेत् । वशमालिख्य शैलजे करि-शब्दे ततो वदेत्, परां श्रियं काम-बीजं वाग्भवं च समालिखेत् । सप्ततिश्च त्रयो वर्णा मातङ्गी-विग्रहा प्रिये—**ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्व-जन-मनोहरि सर्व-राज-वशङ्करि सर्व-मुख-रंजनि सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सर्व-दुष्ट-मृग-वशङ्करि सर्व-लोक-वशंकरि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं**

'महा-विद्या-चतुष्टय', पृष्ठ १६२ । ऋषि मातङ्ग, छन्द गायत्री, देवता श्रीमातङ्गेश्वरी रत्नाम्बा, बीज 'क्लीं', शक्ति 'ऐं', कीलक 'सौः' । षडङ्ग-न्यास 'ऐं, क्लीं, सौः, ऐं, क्लीं, सौः' से । ध्यान—

अम्भोजार्पित-दक्षांघ्रि-क्षौमां ध्यायेन्मतङ्गिनीं, लसद्-वीणा लसन्नाद-श्लाघ्यां दीक्षित-कुण्डलाम्,

दन्त-पंक्ति-प्रभां रम्यां शिवां सर्वाङ्ग-सुन्दरीम्, कदम्ब-पुष्प-वामाढ्यां वीणा - वादन-तत्पराम् ।

श्यामाङ्गीं शंख-वलयां ध्यायेत् सर्वार्थ-सिद्धये ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप, दशांश हवन मधूक पुष्पों से ।

१७ अष्ट-सप्तत्यक्षर मातङ्गीश्वरी—पूर्वं तार - त्रयं पश्चात् बाला-बीज-त्रयं शिवे, उच्चरेत् प्रणवं पश्चान्नम इत्यक्षर-द्वयम् । भगवति पदं पश्चात्तं तृतीय-समन्वितम्, श्री-मा - पदं समुच्चार्य तङ्गी-श्वरि-पदं ततः । सर्वेति पदमुद्धृत्य जनेति पदमुद्धरेत्, मनोहरि-पदं पश्चात् ततस्सर्व-पदं शिवे । मुखेत्यथ समुच्चार्य रञ्जनीति पदं ततः, काम-राजं समुद्धृत्य मायां श्रियमुच्चरेत् । सर्व-राज-पदं पश्चाद् वशङ्करि-पद ततः, सर्व-सत्व-पदं पश्चाद् वशङ्करि-पदं शिवे ! सर्वेति पदमुच्चार्य लोकेति पदमुच्चरेत्, वशङ्करि-पदं पश्चादमुकं पदमुच्चरेत् । मे इत्यथ समुच्चार्य अमृतं बिन्दु-शून्यकम् शङ्करस्याद्य-वर्णं तु बिन्दुना शून्यमुच्च-रेत् । रमान्त्यं वर्णमुच्चार्य नकारं ततः उच्चरेत्, यकारमुच्चरेत् पश्चाद् वह्नि-जाया समुच्चरेत् । शक्ति-बीजं काम-राजं वाग्भवं ततः उच्चरेत्, कमला भुवनेशानं वागीशं ततः उच्चरेत् । उक्तेयं श्यामला - विद्या भक्तानां भद्र-दायिनी—**ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः भगवति श्रीमातंगीश्वरि सर्व-जन-मनोहरि सर्व-मुख-रंजनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्व-राज-वशंकरि सर्व-सत्व-वशंकरि सर्व-लोक-वशङ्करि अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ।**

वही, पृष्ठ ६७-६८ । ऋषि महायोगी मतङ्ग भगवान्, छन्द त्रिष्टुप्, देवता सर्व-काम-प्रदायिनी श्रीमातङ्गीश्वरी देवी, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'श्रीं' । षडंग-न्यास 'ऐं, ह्रीं, श्रीं, ऐं, ह्रीं, श्रीं' से । ध्यान—

नीलोत्पल-प्रतीकाशां नील-मेघ-सम-प्रभाम्, महा-मरकत-प्रख्यां नीलाम्बर-विराजिनाम् ।

इन्द्रनील-मणि-प्रख्यां कमलायत-लोचनाम्, वीणासक्तां महा-देवीं शङ्ख-कुण्डल-धारिणीम् ।

गानासक्तां जगद्-वन्द्यां बिम्बाधर-विराजितां, सर्वालङ्कार-भूषाङ्गीं कदम्ब-वन-वासिनीम् ।

सर्व-काम-प्रदां देवीं भक्तानामभय-प्रदां, स्मितास्यां तामहं वन्दे मातङ्गीं परमेश्वरीम् ।।

प्रतिदिन १०८ बार उक्त मन्त्र जप करने से साधक सभी भोगों का सुख पाता है और अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है ।

१८ पञ्चाशीत्यक्षर राज-मातङ्गिनी : ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ नमो भगवति मातङ्गीश्वरि सर्व-जन-मनोहारि सर्व-जन-मुख-रञ्जनि क्लीं सर्व-राज-वशङ्करि सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सर्व-दुष्ट-मृग - वशङ्करि सर्व-सत्व-वशङ्करि सर्व-लोकममुकं मे वशमानय स्वाहा

'महा-विद्या-चतुष्टयं', पृष्ठ १३६ व १४६ मे यह मन्त्र दो बार छपा है। पृष्ठ १३६ मे 'ऐं' के बाद 'ह्रीं' नही छपा है और 'सर्व-सत्व' के स्थान पर 'सर्व-शत्रु' छपा है। पृष्ठ १४६ के मन्त्र मे प्रारम्भ मे 'ह्रीं' के बाद 'श्रीं' नही छपा है, 'दुष्ट' के स्थान पर 'दुष्टा' छपा है और 'स्वाहा' के बाद 'लघु-श्यामला' का मन्त्र भी दे दिया है, जिससे भ्रम होता है। मन्त्र का शुद्ध स्वरूप ऊपर प्रकाशित है, जिसमे 'मनो-हारि' के स्थान पर 'मनोहरि' अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। इस मन्त्र का उद्धार वहाँ नहीं दिया है।

ऋषि मतङ्ग, छन्द अमित, देवता मातङ्गीश्वरी, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'श्रीं', विनियोग 'चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्धये।'। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २४, २८, १८, १३, २ अक्षरो से।

पृष्ठ १३६ के मन्त्र मे 'मनो-हारि' के स्थान पर 'मनो-हारिणि' छपा है। यदि उसे स्वीकार करें तो यही मन्त्र ८६ अक्षरो का हो जाता है। ध्यान—

मातङ्गीं भूपिताङ्गीं विविध-मणि-धरामिन्दु-सूर्याक्षि-युग्माम्,
स्विद्यद्-वक्त्रां कदम्ब-प्रसव-परिलसद्-वेणुका-माग्र-वीणाम्।
बिम्बोष्ठीं रक्त-वस्त्रां मृग-मद-तिलकामिन्दु - रेखावतंसाम्,
कर्णोद्यच्छङ्ख-पत्रां कठिन-कुच-भराक्रान्त - मध्यां नमामि॥

पृष्ठ १४५-४६ के अनुसार उक्त ध्यान मे दो पाठान्तर हैं—(१) विविध' 'सूर्याक्षि : मधु-मद-मुदिता घूर्णमानाक्षि, (२) भराक्रान्त : भराकान्त।

१९ अष्टाशीत्यक्षर राज-मातंगिनी : वाङ्-माया-कमलास्तारं नमोऽस्तु भगवत्यथ, श्रीमातङ्गी-श्वरि वदेत् सर्व-जन-मनोहरि। सर्वादि-सुख-राज्यन्ते सर्वादि-मुख-रजिनि, सर्व-राज-वश पश्चात् करि सर्व-पद वदेत्। स्त्री-पुरुष-वश ब्रह्मा नेत्रमग्न्यासन पुनः, सर्व-दुष्ट-मृग-वशङ्करि सर्व-भृगुस्तवत्, शङ्करि स्यात् सर्व-लोकममुकं शिव-युग्-रविः। वशमानय जायाग्नेरष्टाशीत्यक्षरो मनुः—ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति! श्रीमातंगीश्वरि! सर्व-जन-मनोहरि, सर्व-सुख-राजि! सर्व-मुख-रंजिनि! सर्व - राज-वशङ्करि! सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि! सर्व-दुष्ट-मृग-वशङ्करि! सर्व-सत्व-वशङ्करि! अमुकं सर्व-लोकं मे वशमानय स्वाहा

'शारदातिलक', द्वादश पटल। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द गायत्री, देवता राज-मातङ्गिनी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'स्वाहा'। मन्त्र के २४, १३, १८, १८, १३, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

ध्यायेयं रत्न-पीठे शुक-कल-पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीम्,
न्यस्तैकांघ्रि-सरोजे शशि-शकल-धरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कल्हाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूलिकां रक्त-वस्त्राम्,
मातंगीं शङ्ख-पात्रां मधु-मद-विवशां चित्रकोद्भासि-मालाम्॥

पुरश्चरण मे दस सहस्र जप, निमधुर-युक्त मधूक-पुष्पो से दशांश होम।

२० एकोत्तर-शताक्षर राज-मातङ्गी : ऐंह्रींश्रीं ऐंक्लींसौः ॐ नमो भगवति, राज - मातङ्गी-श्वरि, सर्व-जन-मनोहारिणि, सर्व-मुख-रञ्जनि, क्लीं ह्रीं श्रीं सर्व-राज-वशङ्करि, सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि, सर्व-दुष्ट-मृग-वशङ्करि सर्व-सत्व-वशङ्करि, सर्व-लोक-वशङ्करि! सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लींऐं श्रींह्रींऐं

वही, पृष्ठ १३९। उद्धार नहीं दिया है और न ही ऋष्यादि। क्रमाङ्क १९ के अनुसार ध्यान, जिसमें तीन पाठान्तर है—

(१) शङ्ख-पात्रां : भूषिताङ्गी, (२) विनम्रां : मुदिता, (३) माला : भाला।

अन्य मन्त्र

१ मातङ्गी-गायत्री : (१) ॐ शुक-प्रियायै विद्महे श्रीकामेश्वर्यै धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात्

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०६।

(२) वाणी-शुक-प्रिया ङेऽन्ता विद्महे मीन-केतनः, कामेश्वरी धीमहीति तन्नः श्यामा प्रचोदयात्—ऐं शुक-प्रियायै विद्महे क्लीं कामेश्वरीं धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २५२। 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ७८४ के अनुसार एक पाठ-भेद है—कामेश्वरी : कामेश्वरि।

२ श्री शुक-मन्त्र : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृत-कलश-हस्ताय महा-शुकाय त्रिभुवनालङ्काराय राज-मद-मर्दनाय शीघ्रं राजानं वशमानय स्वाहा

'महा-विद्या-चतुष्टयं', पृष्ठ १३८। ऋषि शुक, छन्द पंक्ति, देवता श्रीशुक, बीज 'ऐं', शक्ति 'ह्रीं' कीलक 'श्री'। बीज-त्रय की द्विरावृत्ति से षडङ्ग न्यास। ध्यान—

निगम-सहकार-मूले निर्मिताल - वाल - तार - वलयान्ते।
प्रति-फलितागम-शाखा-फल-रसिक शुकोऽस्तु मम तुष्ट्यै॥

३ श्री वीणा-मन्त्र : ॐ नमो भगवति वीणायै मम सङ्गीत-विद्यां प्रयच्छ स्वाहा

वही, पृष्ठ १४१। ऋषि मतङ्ग, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्री वीणा, बीजादि श्रीशुक-मन्त्र के समान। ध्यान—

काम-गान-गुण-नाम-कल्पना कल्प-शिष्य-सरसी परस्परम्।
वेणुकी स्तन-तटे विहारिणीं वल्लकीं मनसि भावयाम्यहम्॥

४ श्रीवेणु-मन्त्र : ऐं ह्रीं श्री ॐ नमो भगवते वेणवे मम सङ्गीत-विद्यां प्रयच्छ स्वाहा

वही, पृष्ठ १४२। ऋष्यादि श्रीवीणा-मन्त्र-वत्, केवल देवता के स्थान पर श्रीवेणु। ध्यान—

वक्त्र-सौरभ-वशी-कृत-रन्ध्री सह-वाग् - मदन-शीलन-युक्तः।
गान-दोहन-कला-फल-नादो मानदो भवतु मे मणि-वेणुः॥

५ बलि-मन्त्र : श्रीमा-पदं समुच्चार्य तङ्गीति पदमुच्चरेत्, ईश्वरीति पद पश्चादिम पदमथोद्धरेत्। बलि पदमथोद्धृत्य गृह्ण गृह्ण पदं ततः, हु फट् पद समुच्चार्य वह्नि-जायामथोच्चरेत्। क्षेत्रेऽस्य समुच्चार्य इमं पदमथोच्चरेत्, बलिं पदं समुच्चार्य गृह्णेति पदमुच्चरेत्। पुनस्तदेव ह्युच्चार्य हुङ्कार तत उच्चरेत्, फडिति समुच्चार्य प्रिया वह्नेरथोच्चरेत्—श्रीमातङ्गीश्वरि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा क्षेत्रे इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा

वही, पृष्ठ १४४।
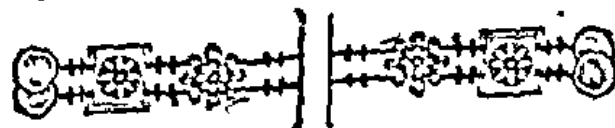
भगवती कमला

दश महा-विद्याओं के अन्तर्गत अन्तिम दसवीं महा-विद्या 'कमला' हैं। 'सिद्धि-विद्या-त्रयी' में भी इन्हें अन्तिम स्थान प्राप्त है। किन्तु अन्तिम होने पर भी सर्वाधिक लोक-प्रियता इन्हें ही प्राप्त है। 'लक्ष्मी' नाम से ये ही विशेषतया विख्यात हैं। 'हिन्दू-धर्म-कोष' पृष्ठ १५४ में 'कमला'-शब्द के अन्तर्गत केवल निम्न विवरण प्राप्त होता है—

'दस महा-विद्याओं में से एक। दक्षिण और वाम दोनों मार्गवाले इनकी उपासना करते हैं। कमला इनमें से एक है। उसके अधिष्ठाता का नाम सदाशिव विष्णु है।'

इसके विपरीत पृष्ठ ५६५ पर 'लक्ष्मी'-शब्द का परिचय विशेष प्रकार का है—

'ऋग्वेद के पुरुष-सूक्त में इनका वर्णन पाया जाता है। 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च''''इषाण।' (हे परमेश्वर, अनन्त शोभा-स्वरूप 'श्री' और अनन्त शुभ लक्षणों से युक्त 'लक्ष्मी' दोनों आपकी पत्नी हैं)। आगम-संहिताओं के रहस्य का विश्लेषण करने से प्रकट होता है कि विष्णु और उनकी शक्ति लक्ष्मी एक ही परमात्मा है, जो अभिन्न है। केवल सृष्टि के समय वे भिन्न दृष्टिगोचर होते हैं।'

भगवती कमला के सम्बन्ध में प्रामाणिक एवं विस्तृत ज्ञान के लिए 'श्रीकमला-कल्पतरु', 'श्री कमला-नित्यार्चन', 'हिन्दी तन्त्रसार' और 'शाक्त-धर्म-विशेषाङ्क' के अन्तर्गत 'श्रीकमला-तन्त्र' द्रष्टव्य हैं।

भगवती कमला के मन्त्र

१ एकाक्षर श्री (लक्ष्मी) : वान्तं वह्नि-समारूढं वाम-नेत्रेन्दु-संयुतं, बीजमेतत् श्रियाः प्रोक्तं सर्व-काम-फल-प्रदं—श्रीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृ० १४४। ऋषि भृगु, छन्द निवृद्-गायत्री, देवता 'श्री'। 'श्रां, श्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम - गिरि - प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः,
हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्ज-युतमभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-ललितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर घृत-मधु-शर्करा-युक्त पद्मों (कमल-पुष्पों) या तिलों या बिल्व-फलों या पद्म-तिल-बिल्व-फल तीनों से १२ सहस्र होम।

'मन्त्र-महोदधि', पृ० ३६३ में उद्धार 'लक्ष्मी-पञ्चक' के अन्तर्गत दिया है—बकेशो वह्निमा-रूढो वाम-नेत्रेन्दु-संयुतः, लक्ष्मी-मन्त्रोऽयमेकार्णस्तेन लक्ष्मीं प्रपूजयेत्।' ऋष्यादि विवरण नहीं दिया है।

'शारदा-तिलक', अष्टम पटल में प्रथमोक्त उद्धार का दूसरा चरण भिन्न शब्दों में है—'बीज-मेतच्छ्रियः प्रोक्तः चिन्ता-मणिरिवापरः।' वहाँ छन्द 'निवृत्' बताया है। ध्यान में दो पाठान्तर हैं—(१) युतमभयं : युगमभयं, (२) ललितां : लसितां।

'पुरश्चर्यार्णव' में 'शारदा०'-वत् उद्धार है, जिसमें दो पाठान्तर हैं—(१) प्रोक्तः : प्रोक्तं, (२) वापरः : वापरं। वहाँ देवता का नाम 'श्री' बताया है।

२ द्व्यक्षर साम्राज्य-लक्ष्मी : सकारं च हकारं च कलरा वर्ण-पञ्चकं, ईकार-स्वर-संयुक्तं प्रथमं कूटमुच्यते । हं बीजं द्वितीयं स्यात् प्रोक्तोऽयं द्व्यक्षरो मनुः—स्हक्लीं हं

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८४० । ऋषि हरि, छन्द गायत्री, देवता साम्राज्यदा मोहिनी लक्ष्मी, बीज 'स्हक्ली', शक्ति 'श्री' । षड्-दीर्घ बीज से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

अतसी-पुष्प-सङ्काशां रत्न-भूषण-भूषितां, शङ्ख - चक्र - गदा - पद्म - शार्ङ्ग-बाण- धरां करैः ।
षड्भिः कराभ्यां देवेशीं वरदाभय-शोभितां, एवमष्ट-भुजां लक्ष्मीं नौमि साम्राज्य-दायिनीम् ॥

पुरश्चरण में तीन लाख जप कर पद्मों से दशांश होम ।

३ त्र्यक्षर श्री : मन्दाक्षमिन्दिरा-रुद्धं त्र्यक्षरोऽय महा-मनुः—श्रीं क्लीं श्रीं

'पुर०', पृष्ठ ८३६ । ऋष्यादि एकाक्षर-मन्त्र-वत् ।

४ त्र्यक्षर साम्राज्य-लक्ष्मी : आदौ श्री-बीजमुच्चार्य सहकलहरास्ततः, ईकारान्ता बिन्दु-युता द्वितीयं कूटमुच्यते । पुनश्च श्री समुच्चार्य मन्त्रस्त्र्यक्षर ईरितः—श्रीं स्हक्ल्हीं श्रीं

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि हरि, छन्द गायत्री, देवता सर्व-साम्राज्य - दायिनी मोहिनी लक्ष्मी, बीज 'स्हक्ल्ही', शक्ति 'श्री', । छः दीर्घ स्वरों (आं, ईं, ऊं, ऐं, औं, अः) से षडङ्ग-न्यास करे । ध्यान—

अतसी-पुष्प-सङ्काशां रत्न-भूषण-भूषितां, शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-शार्ङ्ग-बाण-धरां करैः ।
षड्भिः कराभ्यां देवेशीं वरदाभय-शोभिताम् ॥

पुरश्चरण में तीन लाख जप कर पद्मों से दशांश होम ।

५ चतुरक्षर श्री : (१) वाग्भवं वनिता विष्णोर्माया मकर-केतनं, चतुर्बीजात्मको मन्त्रश्चतुर्वर्ग-फल-प्रदः—ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४४ । ऋष्यादि एकाक्षर-मन्त्र-वत् । ध्यान—

माणिक्य-प्रतिम-प्रभां हिम-निभैस्तुङ्गैश्चतुर्भिर्गजैः,
हस्त-ग्राहित-रत्न-कुम्भ-सलिलैरासिच्यमानां मुदा ।
हस्ताब्जैर्वर-दानमम्बुज - युगाभीतिर्दधानां हरेः,
कान्तां कांक्षित-पारिजात-लतिकां वन्दे सरोजासनाम् ॥

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर १२ सहस्र विकसित रक्त-कमल-पुष्पों से होम ।

'शारदातिलक', अष्टम पटल में ध्यान मे चार पाठान्तर हैं—(१) हस्त : हस्ता, (२) रासि-च्य : रासिच्य, (३) मुदा : सदा, (४) भीति : भीती । 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३३ के अनुसार तीन पाठा-न्तर और हैं—(१) रासिच्य : रापिच्य, (२) मम्बुज-युगाभीति : मब्ज-युगलाभीती, (३) सरोजासनां : सरोजानना ।

(२) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वेद-वर्णो मन्त्रश्चास्या (महा-लक्ष्म्या) उदाहृतः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि भृगु, छन्द निवृत्पूर्वमनुष्टुप्, देवता 'कमला' । षडङ्ग-न्यास एकाक्षर-मन्त्र-वत् । ध्यान—

आसिच्य-माना रत्नाभा पद्मस्था पद्म-लोचना, पद्म-द्वयं च हस्तेषु बिभ्रती नृप-सेविता ।

६ पञ्चाक्षर श्री : हृदन्तः (त्र्यक्षरः) पञ्च-वर्ण —श्रीं क्लीं श्रीं नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३६ । ऋष्यादि एकाक्षर-मन्त्र-वत् ।

७ सप्ताक्षर रमा : नमः हृदयं ब्रह्म-तनये मन्त्रोऽयं परिकीर्तितः—नमः ब्रह्म-तनये

'मेरु-तन्त्र'। मन्त्र के दो पदों की तीन बार आवृत्ति कर षडङ्ग-न्यास। ऋषि और ध्यानादि एकाक्षर-मन्त्र के समान।

८ नवाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी : श्रुतिश्चटी च दोग्ध्री च शोषिणी शिरया सह, दोला तदनु मालूरः सामरश्च निरत्ययः। शेषे दण्डः परिज्ञेय इयमुक्ता नवाक्षरी—ॐ ह्रीं हूं हां ग्रें क्षों क्रों नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ७५८। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता सिद्धि-लक्ष्मी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक 'क्रों', 'विनियोग पुरुषार्थ-चतुष्टये'। षड्-दीर्घ बीज से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्वेतां श्वेत-शवारूढां नृ-मुण्ड कृत-कुण्डलां, पञ्च वक्त्रां महा-रौद्रीं प्रति-वक्त्रं त्रि-लोचनाम्।
व्याघ्र-चर्मावृत-कटीं शुष्कावयव - भूषितां, आबद्ध - योग - पट्टां च नरास्थि कृत-भूषणाम्।
हस्तैः षोडशभिर्दीप्तां विलस्त - घन-कुन्तलां, खड्गं बाणं तथा शूलं चक्रं शक्तिं गदामपि।
जप-मालां कर्तृकां च बिभ्रतीं दक्षिणैर्भुजैः, फलकं कार्मुकं नाग - पाशं परशुमेव च।
डमरुं फेरु - पोतं च नर - मुण्ड - कपालकं, उद्वहन्तीं करैर्वामैर्दीर्घ - सर्वाङ्ग - भूषणाम्॥

पुरश्चरणादि-सम्बन्ध मे देखें 'षोडशाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी'—क्रमांक १६, पृष्ठ २१४।

९ दशाक्षर श्री : (१) दीर्घा यादि विसर्गान्तो ब्रह्मा भानुर्वसुन्धरा, वान्ते सिन्यै प्रिया वह्नेर्मनुः प्रोक्तो दशाक्षरः—नमः कमल-वासिन्यै

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४६। ऋषि दक्ष, छन्द विराट्, देवता 'श्री'। पञ्चाङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ॐ देव्यै नमः, २ ॐ पद्मिन्यै नमः, ३ ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः, ४ ॐ वरदायै नमः, ५ ॐ कमल-रूपायै नमः' से। कर-न्यास मे 'करतल-पृष्ठ' मे और अङ्ग-न्यास मे 'नेत्र-त्रय' मे न्यास नही होगा। ध्यान—

आसीना सरसीरुहे स्मित - मुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती,
दानं पद्म - युगाभये च वपुषा सौदामिनी - सन्निभा।
मुक्ता - हार - विराजमान - पृथुलोत्तुङ्ग - स्तनोद्भासिनी,
पायाद् वः कमला कटाक्ष-विभवैरानन्दयन्ती हरिम्॥

पुरश्चरण मे दस लाख जप कर, घृत-मधु-शर्करा-युक्त पद्मो से दशांश होम।

'शारदा-तिलक' मे देवता का नाम 'श्री.' है। ध्यान मे दो पाठान्तर हैं—(१) सरसी : सरसि, (२) हार : दाम। 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३४ मे पञ्चाङ्ग-न्यास का ५ वाँ मन्त्र है—'ॐ कमल-रूपिण्यै'। ध्यान मे वहाँ दो पाठान्तर और है—(१) युगाभये : युगाभय, (२) सन्निभा : वल्लभा।

(२) ॐ क्लीं ध्रौं श्रीं लक्ष्मी-देव्यै नमः — 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ २८

१० एकादशाक्षर सिद्ध-लक्ष्मी : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८२७ मे 'ब्रह्म-पुराण' से उद्धृत। ऋषि हिरण्यगर्भ, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती, बीज 'श्रीं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'क्लीं', विनियोग 'सर्व-क्लेश-पीडा-परिहारार्थं सर्व-दुःख-दारिद्र्य-नाशनार्थं सर्व-कार्य-सिद्ध्यर्थं च'। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, १, १, १, ४, २ अक्षरों से (प्रत्येक के पूर्व 'ॐ' जोड़ लें)। ध्यान—

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्-भुजां च चतुर्मुखीं, त्रि-नेत्रां खड्ग-शूलाब्ज-पद्म-चक्र-गदा-धराम्।
पीताम्बर-धरां देवीं नानालङ्कार-भूषितां, तेजः-पुञ्ज-धरीं श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर दशांश होमादि।

११ एकादशाक्षर लक्ष्मी : यों नों मों नम ऐं चोक्त्वा श्रियै श्रीं नम इत्यपि एकादशार्णो मन्त्रः—
यों नों मों नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि जमदग्नि, छन्द त्रिष्टुप्, देवता रमा। षडङ्ग-न्यास '१ यों नों मों नमः ऐं नमः, २ यों नों मों नमः ऐं स्वाहा, ३ यों नों मों नमः ऐं वषट्, ४ यों नों मों नमः ऐं हुं, ५ श्रियै नमः, ६ श्रीं नमः' से। ध्यान मेरु-तन्त्रोक्त सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र के समान। सात रात्रियों तक लगातार नित्य बारह सहस्र जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। तदनन्तर पूर्वोक्त द्रव्यों से दशांश होम।

१२ द्वादशाक्षर महा-लक्ष्मी : वाग्भवं शम्भु-वनिता रमा मकर-केतनः, तार्तीयं च जगत्-पार्श्वो वह्नि-बीज-समुज्ज्वलः, अर्धीशाढ्यो भृगुस्त्यै हृन्मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४८। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता महा-लक्ष्मी। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ऐं ज्ञानाय, २ ह्रीं ऐश्वर्याय, ३ श्रीं शक्तये, ४ क्लीं बलाय, ५ ह्सौः वीर्याय, ६ जगत्-प्रसूत्यै नमस्तेजसे' से। ध्यान—

बालार्क-द्युतिमिन्दु-खण्ड-विलसत् - कोटीर-हारोज्ज्वलाम्,
रत्नाकल्प - विभूषितां कुच - नतां शालेः करैर्मञ्जरीम्।
पद्मं कौस्तुभ - रत्नमप्यविरतं संबिभ्रतीं स - स्मिताम्,
फुल्लाम्भोज-विलोचन-त्रय-युतां ध्यायेत् परामम्बिकाम्॥

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर, श्रीफल या पद्मों द्वारा दशांश होम।

'शारदातिलक', अष्टम पटल में देवता का नाम 'महा-लक्ष्मीः' है। ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—
(१) पद्मं : पद्मे, (२) स-स्मितां : सु-स्मितां, (३) परामम्बिकां : परा देवतां।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३४ में ऋषि 'विधा' बताया है। ध्यान में दो पाठान्तर और हैं—(१) शालेः : शालैः, (२) पद्मं : पद्मौ।

'मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र का उद्धार—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं समुच्चार्य हसरा औ-युताः पुनः, विसर्गान्ताः पञ्चम बीजमेतदुदाहृतं। जगत्-प्रसूत्यै हृदयं द्वादशार्णो मनुः स्मृतः।' इस उद्धार के अनुसार स्पष्ट मन्त्र में 'ह्सौः' के स्थान पर 'ह्स्रौः' होना चाहिए।

१३ त्रयोदशाक्षर महा-लक्ष्मी : महा-लक्ष्म्याः समुद्दिष्टस्ताराद्यः (द्वादशाक्षरः) सर्व-सिद्धिदः—
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः

'शारदातिलक' एवं 'पुरश्चर्यार्णव' में वही। ऋष्यादि द्वादशाक्षर मन्त्र-वत्।

'मेरु-तन्त्र' में द्वादशार्ण - मन्त्र के तारतम्य में कहा है—'प्रणवादिरयं मन्त्रः त्रयोदश - वर्णकः।' उल्लेखनीय है कि इसके अनुसार यहाँ भी एक पाठान्तर है—ह्सौः : ह्स्रौः।

ध्यान भी भिन्न और विस्तृत दिया है। मुख्यांश यहाँ उद्धृत है—

बाल-भास्कर-सत्कान्ति शशि-शेखर-मण्डितां, मुक्ता-हारोज्ज्वलां रम्यां रत्नाकल्प-विभूषिताम्।
हस्ताम्भोजैश्च बिभ्राणां नूतनं शालि-मञ्जरीं, पद्म-द्वयं कौस्तुभं च स्वस्मितास्य-सरोरुहाम्।
विकचोत्पल - संशोभि - नयन - त्रय-शोभितां, क्वणन्नूपुर-सम्फुल्ल - रक्तोत्पल-पद-द्वयाम्।
सौन्दर्य-सलिलाम्भोधिं रत्न-सार-विभूषितां, विलास-लक्ष्म्या भवनं महा-लक्ष्मीं विचिन्तयेत्॥

'शाक्त-प्रमोद' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है—'तारं पूर्वं लिखित्वा परममलममलं वाग्भवं बीजमन्यल्लज्जा श्री-बीज-पूर्वं वश-करण-तमं काम-बीजं परस्तात्। ह्सौः पश्चाद् जनीयं प्रसु-

७ सप्ताक्षर रमा : नमः हृदयं ब्रह्म-तनये मन्त्रोऽयं परिकीर्तितः—नमः ब्रह्म-तनये

'मेरु-तन्त्र'। मन्त्र के दो पदों की तीन वार आवृत्ति कर षडङ्ग-न्यास। ऋषि और ध्यानादि एकाक्षर-मन्त्र के समान।

८ नवाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी : श्रुतिश्चटी च दोग्ध्री च शोषिणी शिरया सह, दोला तदनु मालूरः सामरश्च निरत्ययः। शेषे दण्डः परिज्ञेय इयमुक्ता नवाक्षरी—ॐ ह्रीं हूं हां ग्रें क्षों क्रों नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ७५८। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता सिद्धि-लक्ष्मी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'हूं', कीलक 'क्रों', 'विनियोग पुरुषार्थ-चतुष्टये'। षड्-दीर्घ बीज से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

श्वेतां श्वेत-शवारूढां नृ-मुण्ड कृत-कुण्डलां, पञ्च वक्त्रां महा-रौद्रीं प्रति-वक्त्रं त्रि-लोचनाम्।
व्याघ्र-चर्मावृत-कटीं शुष्कावयव-भूषितां, आबद्ध-योग-पट्टां च नरास्थि-कृत-भूषणाम्।
हस्तैः षोडशभिर्दीप्तां विन्नस्त-घन-कुन्तलां, खड्गं बाणं तथा शूलं चक्रं शक्तिं गदामपि।
जप-मालां कर्तृकां च बिभ्रतीं दक्षिणैर्भुजैः, फलकं कार्मुकं नाग-पाशं परशुमेव च।
डमरुं फेरु-पोतं च नर-मुण्ड-कपालकं, उद्वहन्तीं करैर्वामैर्दीर्घ-सर्वाङ्ग-भूषणाम्॥

पुरश्चरणादि-सम्बन्ध मे देखें 'षोडशाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी'—क्रमाक १६, पृष्ठ २१४।

९ दशाक्षर श्री : (१) दीर्घा यादि विसर्गान्तो ब्रह्मा भानुर्वसुन्धरा, वान्ते सिन्यै प्रिया वह्नेर्मनुः प्रोक्तो दशाक्षरः—नमः कमल-वासिन्यै

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४६। ऋषि दक्ष, छन्द विराट्, देवता 'श्री'। पञ्चाङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ॐ देव्यै नमः, २ ॐ पद्मिन्यै नमः, ३ ॐ विष्णु-पत्न्यै नमः, ४ ॐ वरदायै नमः, ५ ॐ कमल-रूपायै नमः' से। कर-न्यास मे 'करतल-पृष्ठ' मे और अङ्ग-न्यास मे 'नेत्र-त्रय' मे न्यास नही होगा। ध्यान—

आसीना सरसीरुहे स्मित-मुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती,
दानं पद्म-युगाभये च वपुषा सौदामिनी-सन्निभा।
मुक्ता-हार-विराजमान-पृथुलोत्तुङ्ग-स्तनोद्भासिनी,
पायाद् वः कमला कटाक्ष-विभवैरानन्दयन्ती हरिम्॥

पुरश्चरण मे दस लाख जप कर, घृत-मधु-शर्करा-युक्त पद्मो से दशांश होम।

'शारदा-तिलक' मे देवता का नाम 'श्री' है। ध्यान मे दो पाठान्तर हैं—(१) सरसी : सरसि, (२) हार : दाम। 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३४ मे पञ्चाङ्ग-न्यास का ५ वां मन्त्र है—'ॐ कमल-रूपिण्यै'। ध्यान मे वहां दो पाठान्तर और है—(१) युगाभये : युगाभय, (२) सन्निभा : वल्लभा।

(२) ॐ क्लीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी-देव्यै नमः — 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ २८

१० एकादशाक्षर सिद्ध-लक्ष्मी : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८२७ में 'ब्रह्म-पुराण' से उद्धृत। ऋषि हिरण्यगर्भ, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती, बीज 'श्रीं', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'क्लीं', विनियोग 'सर्व-क्लेश-पीडा-परिहारार्थं सर्व-दुःख-दारिद्रय-नाशनार्थं सर्व-कार्य-सिद्ध्यर्थं च'। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, १, १, १, ४, २ अक्षरो से (प्रत्येक के पूर्व 'ॐ' जोड लें)। ध्यान—

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्-भुजां च चतुर्मुखीं, त्रि-नेत्रां खड्ग-शूलाभ्यां पद्म-चक्र-गदा-धराम्।
पीताम्बर-धरां देवीं नानालङ्कार-भूषितां, तेजः-पुञ्ज-धरीं श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर दशांश होमादि।

११ एकादशाक्षर लक्ष्मी : यौं नौं मौं नमः ऐं चोक्त्वा श्रियै श्रीं नम इत्यपि एकादशार्णो मन्त्र — यौं नौं मौं नमः ऐं श्रियै श्रीं नमः।

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि जमदग्नि, छन्द त्रिष्टुप्, देवता रमा। षडङ्ग-न्यास '१ यौं नौं मौं नमः ऐं नमः, २ यौं नौं मौं नमः ऐं स्वाहा, ३ यौं नौं मौं नमः ऐं वषट्, ४ यौं नौं मौं नमः ऐं हुं, ५ श्रियै नमः, ६ श्रीं नमः' से। ध्यान मेरु-तन्त्रोक्त सप्त-विंशाक्षर-मन्त्र के समान। सात रात्रियों तक लगातार नित्य बारह सहस्र जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। तदनन्तर पूर्वोक्त द्रव्यों से दशांश होम।

१२ द्वादशाक्षर महा-लक्ष्मी : वाग्भवं शम्भु-वनिता रमा मन्मथ-केतनः, तार्तीय च जगत्-पार्श्वो वह्नि-बीज समुज्ज्वलः, अर्धीशाढ्यो भृगुस्त्यं हृन्मन्त्रोऽयं द्वादशाक्षरः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्-प्रसूत्यै नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १४८। ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता महा-लक्ष्मी। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ऐं ज्ञानाय, २ ह्रीं ऐश्वर्याय, ३ श्रीं शक्त्यै, ४ क्लीं बलाय, ५ ह्सौः वीर्याय, ६ जगत्-प्रसूत्यै नमः स्तेजसे' से। ध्यान—

युतमय जगत्-पूर्विकायाः प्रसूत्या । ङेऽन्तं रूपं नमोऽन्तं निखिल-मनु-विदुर्मन्त्रमुक्तं रमायाः ।' यहाँ इस मन्त्र के ऋषि भृगु, छन्द निवृत्, देवता 'श्रीः', वीज 'श्री', विनियोग 'सर्वाभीष्ट-सिद्धये' बताए हैं।

१४ चतुर्दशाक्षर लक्ष्मी-हृदय : ॐ शुद्ध-वाससे चोक्त्वा नमो महा-श्रिये च हृत्, चतुर्दशाक्षरो मन्त्रो लक्ष्मी-हृदय-नामकः—ॐ शुद्ध-वाससे नमो महा-श्रिये नमः

पुरश्चरण में तीन लाख जप कर पद्मों से दशांश होम।

१५ चतुर्दशाक्षर पद्म-प्रभा लक्ष्मी : पद्म-प्रभे पद्म-सुन्दरि पद्मेश्यग्नि - गेहिनि, चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः—पद्म-प्रभे पद्म-सुन्दरि पद्मेशि स्वाहा

वही। ऋषि, ध्यानादि एकाक्षर-मन्त्र के समान। मन्त्र के चार पदों एवं सम्पूर्ण मन्त्र द्वारा पञ्चाङ्ग-न्यास।

१६ षोडशाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी : चटी दोग्धी शिरो-सिद्धि-भूर्मद्धि प्रोथ एव च, फली पुनः शिरो रेतः प्रातरान्वे ततः परं—ह्रीं हूं फ्रें छ्रीं ह्सौः ह्रीं क्रीं फ्रें स्त्रीं श्रीं ह्रों जूं क्लौं श्रीं स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ७५८। ऋष्यादि 'नवाक्षर सिद्धि-लक्ष्मी' (क्रमाङ्क ८, पृष्ठ २१२) के समान।

ध्यान—
खट्वाङ्गांकुश-पाश - शूल-वर-कृद्भीत्राण-पात्रं शिरः,
कुम्भासि-ज्वलितोद्भटैर्भुज-वरैरामास-मानां शिवाम्।
रुद्र-स्कन्ध-गतां शरच्छशि - निभां पञ्चाननां सुन्दरीम्,
पञ्च-द्व्यक्ष-विराजितां भगवतीं श्रीसिद्धि- लक्ष्मीं भजे॥

पुरश्चरण महाकाल-संहितोक्त गुह्या-पुरश्चरण के समान।

१७ सप्त-दशाक्षर ज्येष्ठा-लक्ष्मी : (१) वाग्-वीजं भुवनेशानी श्रीरनन्तो द्य-लक्ष्मि च, स्वयम्भुवे शम्भु-जाया ज्येष्ठायै हृदयान्तिकः। मनुः सप्त-दशार्णोऽय—ऐं ह्रीं श्रीं आद्य-लक्ष्मि स्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २६९। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अष्टि, देवता ज्येष्ठा लक्ष्मी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'श्रीं', विनियोग 'अभीष्ट-सिद्धये'। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के ३, ४, ४, १, ३, २ अक्षरों से। ध्यान—

उद्यद्-भास्कर-सन्निभा स्मित - मुखी रक्ताम्बरालेपना,
सत्-कुम्भं धन - भाजनं सृणिमयो पाशं करैर्बिभ्रती।
पद्मस्था कमलेक्षणा दृढ कुचा सौन्दर्य-वारां निधिः,
ध्यातव्या सकलाभिलाष-फलदा श्रीज्येष्ठ-लक्ष्मीरियम्॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर घृताक्त पायस से दशांश होम।

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८३१ में उक्त मन्त्र के बीज व शक्ति ठीक दिये हैं किन्तु 'मन्त्र-महोदधि' की हिन्दी टीका मे गलत हैं।

(२) ॐ ह्रीं श्रीमादि-लक्ष्मीति पदमुक्त्वा स्वयम्भुवे, ह्रीं ज्येष्ठायै नमः प्रोच्य मन्त्र. सप्त-दशाक्षरः—ॐ ह्रीं श्रीं आदि-लक्ष्मि स्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः

'मेरु-तन्त्र'। वहाँ छन्द त्रिष्टुप् है, शेष प्रथम मन्त्र-वत्। ध्यान—

पद्मासनस्थामरुणामरुणाम्बर-धारिणीं, कुकुम-क्षोद - लिप्ताङ्गीं प्रफुल्ल-कमलेक्षणाम्।
मन्द-स्मित-मुखां ज्येष्ठां सुधा - पूर्ण-घटं घटं, धन-पूर्णं सृणिं पाशं दधतीं भुज-पल्लवैः॥

१८ त्रयो-विंशाक्षर लक्ष्मी : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८२७, 'प्राकृत ग्रन्थ' के आधार पर। इस मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप करने का विधान है।

१९. चतुर्विंशाक्षर जय-लक्ष्मी : वाग्भव भुवनेशी च लक्ष्मीः काम सदा-शिवाः, जय-लक्ष्मि ततो ब्रूयाद् युद्धे मे विजयं वदेत्। देहि प्रासाद-पाशो च श्रृणि-बीजमतः पर, अस्त्र-त्रितय-सयुक्तं शिरस्तदनु-कीर्तयेत्—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं जय-लक्ष्मि युद्धे मे विजयं देहि ह्रौं आ क्रों फट् फट् फट् स्वाहा

'महा-काल-संहिता', कामकला-खण्ड। ऋष्यादि नहीं दिए हैं। ध्यान—

जय-लक्ष्मीमहं ध्याये समासीनां कमलोपरि, विद्युत्-कनक-वर्णाभां मुक्ता-दाम-विराजिताम्।
पृथुलोत्तुङ्ग - वक्षोजां लोचन - त्रितयान्वितां, चतुर्भुजां पद्म - युग वराभयमथापि च।
दधतीं कौस्तुभोद्भासि - हृदयां चिन्तये पराम्॥

२०. सप्त-विंशाक्षर महा-लक्ष्मी : शम्भु-पत्नी श्रिया रुद्धा कमो भगवती मही, ब्रह्माऽऽदित्यौ धरा दीर्घा न: क्षादिर्भग-वान् मरुत्। प्रसीद-युगल भूयः श्री-रुद्धा भुवनेश्वरी, महा-लक्ष्मि नमोऽन्तः स्यात् प्रणवादिरयं मनुः। सप्त-विंशत्यक्षराढ्यः प्रोक्तः सर्व-समृद्धिदः—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्मि नमः

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १५०। ऋष्यादि एकाक्षर-मन्त्र-वत्। 'शारदातिलक' के अनुसार इस मन्त्र का बीज 'श्रीं' और शक्ति 'ह्रीं' है। मन्त्र मे एक पाठान्तर भी बताया है—महा - लक्ष्मि . महा-लक्ष्म्यै। षडङ्ग-न्यास आगे दिये मन्त्राक्षरो के आदि व अन्त मे 'श्रीं ह्रीं श्रीं' जोड कर करे—१ कमले, २ कमलालये, ३ प्रसीद, ४ प्रसीद, ५ महालक्ष्मि, ६ नमः। ध्यान—

सिन्दूरारुण-कान्तिमब्ज - वसतिं सौन्दर्य-वारां निधिं,
कोटीराङ्गद - हार-कुण्डल-कटी - सूत्रादिभिर्भूषिताम्।
हस्ताब्जैर्वसु - पात्रमब्ज - युगलादर्शौ वहन्तीं परा-
भावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शार्ङ्गिणः॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर, घृत-मधु-शर्करा-युक्त बिल्व-फलो स दशांश होम।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३६ मे उद्धार मे दो पाठान्तर हैं—(१) ल. क्षादिः : लकारो, (२) महा-लक्ष्मि : महा-लक्ष्मी। ध्यान मे भी एक पाठान्तर है—वसतिं : वसतीं।

'भैरव-तन्त्र' मे उद्धार–'तारो रमा शक्ति लक्ष्मि कमले कमलालये, प्रसीद-द्वितयं श्री ह्रीं श्री महा-लक्ष्मि हृत् तथा।' वहाँ ऋषि दक्ष प्रजापति, छन्द गायत्री, देवता लक्ष्मी बताए हैं। पञ्चाङ्ग-न्यास मन्त्र के '१ कमले, २ कमलालये, ३ प्रसीद, ४ प्रसीद, ५ महालक्ष्मि' पदो के आदि और अन्त मे 'श्री ह्रीं श्री' जोड़कर करे। ध्यान—

सिन्दूराभां च पद्मस्थां पद्म पत्रं च दर्पणं, अर्घ-पात्रं च दधतीं सद्धार-मुकुटान्विताम्।
नाना-दासी-परिवृतां काञ्ची-कुण्डल-मण्डितां, लावण्य-भूमिका वन्दे सुन्दराङ्गद-बाहुकाम्॥

२१. अष्टा-विंशाक्षर वसुधा-लक्ष्मी : ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ

ॐ कल्पद्रुमाधो मणि - वेदिकाया समास्थिते वस्त्र-विभूषणाद्ये ।
भूमि-श्रियो वाञ्छित-वाम-दक्षे सञ्चिन्तयेद् देव-मुनीन्द्र-वन्द्ये ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप करे, घृत-युक्त पायस, बिल्व-पत्र और तिल से होम ।

२२ अष्टा-विंशाक्षर महा-लक्ष्मी : तार-पद्मा-शक्ति - पद्मा कमले कमलालये, प्रसीद-युगलं लक्ष्मीर्मा या पद्मा ध्रुवो महा । लक्ष्म्यै नमाऽन्तो मन्त्रोऽयमष्टा-विंशति-वर्ण-वान्—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ३६४ । यह मन्त्र सप्त-विंशाक्षर (क्रमाङ्क २०) मन्त्र-वत् ही है, केवल अन्तिम चरण मे एक 'ॐ' की वृद्धि हो गई है और 'लक्ष्मि' के स्थान मे 'लक्ष्म्यै' है ।

अन्य मन्त्र

१ लक्ष्मी-गायत्री : (१) महा-लक्ष्मी-पदं प्रोच्य विद्महे तदनन्तरं, महा-श्रियै-पदं चोक्त्वा धीमहीति पदं वदेत् । ततः शब्दाच्छ्री-पद च ततो दद्यात् प्रचोदयात्—महा-लक्ष्मी विद्महे महा-श्रियै धीमहि तन्नः श्री प्रचोदयात्

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ५०७ ।

(२) ॐ महा-लक्ष्मी च विद्महे विष्णु-पत्नी च धीमहि, तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्—ॐ महा-लक्ष्मी विद्महे विष्णु-पत्नी धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६५६ ।

(३) महा-लक्ष्म्यै विद्महे महा-श्रियै धीमहि तन्न: श्रीः प्रचोदयात्

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ ७१ । 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ २८ ।

(४) महा-देव्यै विद्महे विष्णु-पत्न्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ २८ । वहाँ 'विद्महे' और 'धीमहि' के पूर्व 'च' हैं, जो ठीक नही हैं । उक्त मन्त्र के ४, ३, ४, ३, ४, ४ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास की विधि है ।

(५) ॐ महादेवी विद्महे विष्णु पत्नी धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् 'वही'

२ ज्येष्ठा-लक्ष्मी-गायत्री प्रणवो रक्त-ज्येष्ठायै विद्महे पदमन्ततः, नील-ज्येष्ठा-पदं पश्चाद् यै धीमहि तत: पद । तन्नो लक्ष्मी: पद प्रोच्य चोदयादिति चोच्चरेत्—ॐ रक्त-ज्येष्ठायै विद्महे नील-ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २७१ । 'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८३२ मे 'लक्ष्मी' के स्थान पर 'लक्ष्मि' और 'मेरु-तन्त्र' मे 'लक्ष्मी ' है ।

३ नारायण : लक्ष्मी के शिव 'नारायण' के मन्त्र का विवरण विष्णु-प्रकरण मे द्रष्टव्य है ।
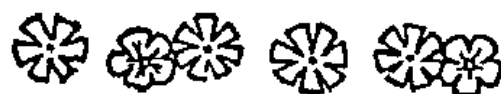
भगवती सरस्वती

दश महा-विद्याओं में भगवती तारा के प्रकरण में 'नील-सरस्वती' के प्रसङ्ग मे 'सारस्वत-कल्प' का विधान तन्त्र-ग्रन्थो में मिलता है किन्तु भगवती सरस्वती की अपनी स्वतन्त्र मान्यता रही है। 'हिन्दू-धर्म-कोष', पृष्ठ ६६२-६३ में डा० राजबली पाण्डेय ने जो विवरण दिया है, उसका ज्ञातव्य अंश यहाँ उद्धृत करने योग्य है—

'...ऋग्वेद में सरस्वती पवित्र नदी और क्रमशः नदी-देवता और वाग्-देवता के रूप में वर्णित हुई। सरस्वती मूलतः शुतुद्रि (सतलज) की एक सहायक नदी थी। जब शुतुद्रि अपना मार्ग बदल कर विपाशा (व्यास) मे मिल गई, तो सरस्वती उसके पुराने पेटे से बहती रही। वह राजस्थान के समुद्र में मिलती थी।' 'सरस्वती को आजकल घघर कहते हैं। सरस्वती और दृषद्वती के बीच का प्रदेश ब्रह्मावर्त कहलाता था।...देवी के रूप मे सरस्वती पवित्रता, शुद्धि, समृद्धि और शक्ति प्रदान करती थी। उसका सम्बन्ध अन्य देवताओं—पूषा, इन्द्र और मरुत् से बताया गया है। कई सूक्तों में सरस्वती का सम्बन्ध यज्ञीय देवता इडा और भारती से भी जोड़ा गया है। पीछे भारती सरस्वती से अभिन्न मान ली गई।

...ब्राह्मण-काल में (शतपथ ब्राह्मण, ३-६-१, ऐतरेय ब्राह्मण, ३-१) उसका वाक् (वाग्-देवता) से अभेद मान लिया गया। पर-वर्ती काल में तो वह विद्या और कला की अधिष्ठात्री देवी ही हो गई। पुराणानुसार यह ब्रह्मा की पुत्री मानी गई है। सरस्वती का ध्यान निम्नाङ्कित पद्य से प्रायः किया जाता है—

या कुन्देन्दु-तुषार - हार-धवला या शुभ्र - वस्त्रावृता,
या वीणा - वर-धारिणी भगवती या श्वेत-पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत - शङ्कर - प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा॥

सरस्वती का वाहन हंस है, जो क्षीर-नीर-विवेक का प्रतीक है। कहीं मयूर भी वाहन बताया गया है।...

भगवती सरस्वती की पूजन-विधि के सम्बन्ध मे भी वहीं लिखा है—

'...सरस्वती की चार दिन पूजा होती है, जो साधारणतः आश्विन शुक्ल सप्तमी से दशमी तक चलती है।...इन दिनों न तो अध्ययन करना चाहिए, न अध्यापन, न लेखन। माघ शुक्ल पञ्चमी (वसन्त-

पञ्चमी) को आगमोक्त विधि से महा-शक्ति सरस्वती की वार्षिक पूजा की जाती है। आश्विन शुक्ल सप्तमी को पुस्तकों मे सरस्वती की स्थापना करनी चाहिए।'''तमिलनाडु में प्रकाशित तथा हस्त-लिखित ग्रन्थ एकत्र कर विशेष प्रकार की सरस्वती-पूजा करते है। बालिकाएँ तथा विवाहित महिलाएँ सङ्गीत-सम्बन्धी पुस्तकें तथा वीणा साथ-साथ लाती हैं तथा उनकी सरस्वती के समान ही पूजा करती हैं। शिल्पी तथा दूसरे कारीगर लोग नवमी के दिन अपने-अपने औजार तथा यन्त्रो को पूजते हैं।...'

तान्त्रिक साधकों ने 'सरस्वती' के सम्बन्ध में विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार 'सरस्वती'-शब्द का अर्थ है—गति-मती। सरस=गति, सृ गतौ+असुन् औणादिक। सरस्+वती=गति-वाली, गतिशीला अर्थात् निष्क्रिय ब्रह्म की स्पन्द-शक्ति या क्रिया-शक्ति।

वाग्-देवता सरस्वती निष्क्रिय ब्रह्म का सक्रिय रूप है। इसलिये यह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि सभी को गति प्रदान करनेवाली शक्ति है। इसीलिए इसे 'ब्राह्मी', 'हरि-हर-दयिता' आदि कहते हैं।

सरस्वती का उज्ज्वल वर्ण ज्योतिर्मय ब्रह्म का द्योतक है। उनके एक हाथ मे 'पुस्तक' है, जो स्थूल रूप में ज्ञान-प्राप्ति की मुख्य साधन है और सूक्ष्म रूप में सर्व-ज्ञान-मय वेद की सूचक है। दूसरे हाथ में 'वीणा' है, जो स्थूल रूप मे जीवन-सङ्गीत की बोधक है। हमारी जितनी क्रियायें व विचार हैं, वे सर्जनात्मक नाद-रूप मे पुञ्जीभूत होकर महा विश्व-सङ्गीत के रूप मे काम करते हैं। सूक्ष्म रूप में यही इनकी 'वीणा' है।

मयूर और सिंह भी सरस्वती के वाहन माने जाते हैं, किन्तु 'राज-हंस' ही इनका प्रसिद्ध वाहन है, जो नीर-क्षीर-विवेक का द्योतक है। आध्यात्मिक दृष्टि से 'हंस' जीव का सूचक है, जो प्राण-शक्ति पर निर्भर है। उसके निःश्वास से 'ह' और प्रश्वास से 'सः' की ध्वनि निकलती रहती है। यही निःश्वास-प्रश्वास का आवागमन 'हंस' है, जिसके द्वारा चिद्-रूपिणी 'सरस्वती' क्रिया-निष्पादन करती है। यही कुण्डलिनी है।

भगवती सरस्वती के मन्त्र

१ एकाक्षर : अनन्तं विन्दुना युक्तं वाम-गण्डान्त-भूषितं, जपेद् द्वादश-लक्षं तु मुग्धोऽपि वाक्-पतिर्भवेत्—ऐं

मूल 'मन्त्र-कोष'। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५६५ मे लिखा है कि सूर्य-ग्रहण के दिन कुश की जड़ से उक्त एकाक्षर मन्त्र को जीभ पर लिखकर चाट जाय और ग्रहण के मोक्ष-पर्यन्त जप करे। फिर प्रतिदिन ११०० जप वर्ष भर करे, तो विद्या-प्राप्ति होती है।

२ द्वयक्षर : अनन्तं विन्दुना युक्तं वाम-गण्डान्त-भूषितं—(१) आं लृं, (२)ऐं लृं

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५५१। 'आ' से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रत्न-कान्ति-निभां देवीं ज्योत्स्ना-जाल-विकाशिनीं, मुक्ता-हार-युतां शुभ्रां शशि-खण्ड-विभूषिताम्।
विभ्रतीं दश - हस्तैश्च व्याख्यां वर्णस्य मालिकां, अमृतेन तथा पूर्णं घटं च दिव्य - पुस्तकम्।
दधतीं वाम - हस्तेन पीन-स्तन - भरान्वितां, मध्ये क्षीणां तथा स्वच्छां नाना-रत्न-विभूषिताम्॥

पुरश्चरण मे १२ लाख जप कर, पायस (खीर) से दशांश होम।

३ त्र्यक्षर : तोयस्थं शयनं विष्णोः स-केवल-चतुर्मुखः, विन्द्वर्घीश-युतो वह्नि - विन्दु-सद्योऽम्बु-मान् भृगुः। उक्तानि त्रीणि वीजानि सद्भिः सारस्वतार्थिनां—ऐं रुं स्वों

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२९ । ऋष्यादि दशाक्षर मन्त्र-वत् । षडङ्ग-न्यास मन्त्र-गत तीन बीजो को द्विरावृत्ति से । ध्यान—

मुक्ता-हारावदाता शिरसि शशि-कलालंकृता बाहुभि स्वै-
र्व्याख्या वर्णाद्य-माला मणि मय-कलश पुस्तक चोद्वहन्तीम् ।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह - भर-विलसन्मध्य - देशामधीशाम्,
वाचामीडे चिराय त्रिभुवन - नमितां पुण्डरीके निषण्णाम ।।

पुरश्चरण मे तीन लाख जप कर घृत-युक्त पायस (खीर) से दशाश होम ।

मूल 'मन्त्र-कोष' के उद्धार मे तीन पाठान्तर हैं—(१)केवल · केवल (२) विन्द्वधीश अर्धीशेन्दु, (३) सद्योऽम्बुमान् सत्याम्बु-वान् । 'शारदा-तिलक के अनुसार ध्यान मे दो पाठान्तर हैं—(१) वर्णाढ्य : वर्णाक्ष, (२) विलसन् : विनमन् ।

४ नवाक्षर ॐ ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १३१ ।

५ दशाक्षर : (१) वद वद वाग् - वादिनि वह्नि वल्लभेति दशाक्षर —वद वद वाग् - वादिनि स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२३ । ऋषि कण्व, छन्द विराट्, देवता वागीश्वरी । षडङ्ग-न्यास क्रमश '१ अ क ङ आ, २ इ च ञ ई, ३ उ ट ण ऊ, ४ ए त न ऐं, ५ ओ प म औं, ६ अ य ह ल क्ष अ.' से । ध्यान—

तरुण-शकलामिन्दोर्बिभ्रती शुभ्र-कान्ति , कुच-भर-नमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे ।
निज-कर-कमलोद्यल्लेखनी पुस्तक-श्री , सकल विभव सिद्ध्यै पातु वाग् - देवता न ।।

पुरश्चरण मे १० लाख जप कर दुग्ध-मिश्रित श्वेत पद्मो या त्रि मधु (घृत, मधु, शर्करा) से युक्त तिलो द्वारा दशाश होम ।

'शारदातिलक' मे उद्धार—'अदिर्वरुण सरुद्धो द-वाग् - वादिनि ह-द्वय, वागीश्वर्या दशार्णोऽय मन्त्रो-वाग्-विभव प्रद ।' वहाँ देवता का नाम 'वाक' बताया है ।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५५७ मे उक्त मन्त्र के देवता का नाम 'वाग्-वादिनी' बताया है और षडङ्ग-न्यास मात्र 'ॐ आ' से करने का निर्देश दिया है।

(२) ह्रीं ॐ ह्सौ ॐ सरस्वत्यै नम 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १३० ।

६ एकादशाक्षर · (१) तारा माया धियो विन्दु शक्तिस्तार सरस्वती, ङेऽन्ता नमोऽन्तको मन्त्र प्रोक्त एकादशाक्षर —ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नम

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२६ । ऋष्यादि न्यास दशाक्षर मन्त्र-वत् । षडङ्ग-न्यास वाग्भव बीज 'ऐं' से । ध्यान—

वाणी पूर्ण निशा-करोज्ज्वल - मुखीं कर्पूर कुन्द प्रभाम्
चन्द्रार्द्धाङ्कित मस्तका निज-करै सबिभ्रतीमादरात् ।
वीणामक्ष-गुण सुधाढ्य - कलश विद्यां च तुङ्ग स्तनीं
दिव्यैराभरणैर्विभूषित - तनु हंसाधिरूढां भजे ।।

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर श्वेत-पद्मों, नागेश्वर या चम्पक पुष्पों से १२ सहस्र होम। 'शारदा-तिलक' के उद्धार में दो पाठान्तर हैं—(१) धियो : ऽवरो, (२) नमोऽन्तको : नत्यन्तिको।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५६१ में 'ॐ ऐं' से षडङ्ग-न्यास करने का निर्देश है।

(२) वाचस्पतेऽमृते भूयः प्लुवः प्लूरिति कीर्तयेत्, वागाद्यो मुनिभिः प्रोक्तो रुद्र-संख्याक्षरो मनुः—
ऐं वाचस्पते अमृते प्लुवः प्लूः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२८। ऋष्यादि दशाक्षर-मन्त्र-वत्। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के पाँच पदों एवं पूरे मन्त्र से। ध्यान—

आसीना कमले करैर्जप - वटीं पद्म - द्वयं पुस्तकम्,
बिभ्राणा तरुणेन्दु - बद्ध - मुकुटा मुक्तेन्दु - कुन्द-प्रभा।
भालोन्मीलित-लोचना कुच - भराक्रान्ता भवद्-भूतये,
भूयाद् वागधि-देवता मुनि-गणैरासेव्य-मानाऽनिशम्॥

पुरश्चरण में ११ लाख जप कर घृत से दशांश होम।

'हिन्दी-तन्त्रसार' के ध्यान में 'मुक्तेन्दु-प्रभा' छपा है, जो अशुद्ध है। 'पुरश्चर्यार्णव' में एक पाठान्तर है—भराक्रान्ता : भर-क्लान्ता। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५६४ में मन्त्र का रूप भिन्न है—ऐं वाचस्पतेऽमृते प्लवः प्लवः। वहाँ पञ्चाङ्ग-न्यास की विधि बताई है—(१) ॐ ऐं, (२) ॐ वाचस्पते, (३) ॐ अमृते, (४) ॐ प्लव, (५) ॐ प्लव। नेत्रों में न्यास नहीं होगा। पुरश्चरण में होम पलाश के पुष्पों व घृत से बताया है।

७ एकादशाक्षर चिन्तामणि-सरस्वती : तारं माया च हसरानैकाराढ्यान् स-बिन्दुकान्, पुनर्मायां च तारं च वदेत् ङेऽन्तां सरस्वतीं। हृदयान्तो भवार्णोऽयं मन्त्रस्तु परिकीर्तितः—ॐ ह्रीं ह्सैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः

'मेरु-तन्त्र', ऋषि कण्व, छन्द त्रिष्टुप्, देवता चिन्तामणि सरस्वती, बीज ह्सैं, शक्ति ह्रीं। षडङ्ग-न्यास स्वर-सम्पुटित कादि-वर्गों से। ध्यान—

हंसारूढां मौक्तिकाभां मन्द-हास्येन्दु-शेखरां, वीणामृत-घटाक्ष-स्रग्-दीप्त-हस्तां कज-स्थिताम्।

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर घृताक्त श्वेत कमलों या चम्पक पुष्पों में १२ सहस्र होम।

८ एकादशाक्षर पारिजात-सरस्वती : (१) प्रणव-हृल्लेखा-सम्पुटित-हकार-सकारौकार-युक्त-सरस्वती ङेऽन्ता नतिः—ॐ ह्रीं ह्सौं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १३०। वहाँ 'ह्सौं' के बाद 'ह्रीं' नहीं है, जो ठीक नहीं है। ऋष्यादि व षडङ्ग - न्यास चिन्तामणि - सरस्वती-वत्, केवल देवता का नाम भिन्न है—'पारिजात सरस्वती'। ध्यान—

हंसारूढा हर-हसित-हारेन्दु - कुन्दावदाता, वाणी मन्द-स्मित - तर-मुखी मौलि-बद्धेन्दु-लेखा।
विद्या-वीणामृत-मय-घटाक्ष-स्रजा-दीप्त-हस्ता, श्वेताब्जस्था भवदभिमत-प्राप्तये भारती स्यात्॥

पुरश्चरण में १२ लाख जप कर आनन्द या नागकेशर या चम्पक पुष्पों से १२ सहस्र होम।

(२) सम्पत्-प्रदाया भैरव्या वाग्भवं बीजमालिखेत्, तारेण परया देवी सम्पुटीकृत्य मन्त्र-वित्। सरस्वत्यै हृदन्तोऽयं रुद्रार्णो मनुरीरितः—ॐ ऐं ह्लें ह्रीं सरस्वत्यै नमः ;

'हिन्दी-तन्त्रसार', पृष्ठ १३१। ऋषि दक्षिणामूर्ति, छन्द गायत्री, देवता पारिजातेश्वरी वाणी, बीज 'ह्रीं', शक्ति 'ऐं', कीलक 'ॐ'। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान पारिजात-सरस्वती-वत्, जिसमे 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७१ के अनुसार तीन पाठान्तर हैं—(१) हर-हसित : वर-हसित, (२) लेखा : रेखा, (३) श्वेताब्जस्था : शुभ्राब्जस्था।

९ द्वादशाक्षर : (१) भुवनेशी-सम्पुटोऽयं (दशाक्षरः) महा-सारस्वत-प्रदः—ह्रीं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ह्रीं मूल 'मन्त्र-कोष'।

(२) अन्तरिक्ष-सरस्वती : वाचं मायामन्तरिक्ष-सरस्वत्यग्नि - गेहिनी, द्वादशार्णो मनुः—ऐं ह्रीं अन्तरिक्ष-सरस्वति स्वाहा

'मेरु-मन्त्र'। पुरश्चरण मे १२ लाख जप। इस मन्त्र के प्रभाव से दूर की वार्ता सुन सकते हैं।

१० षोडशाक्षर : हृदयान्ते भगवति वद-शब्द-द्वयं तत', वाग्-देवि वह्नि-जायान्तं वाग्भवाद्यं समुद्धरेत्। मनुं षोडश-वर्णाढ्यं वागैश्वर्य-फल-प्रदं—ऐं नमः भगवति वद वद वाग्-देवि स्वाहा

'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १२६। ऋष्यादि दशाक्षर-मन्त्र-वत्। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के १, २, ४ ४, ३, २ अक्षरो से। ध्यान—

शुभ्रां स्वच्छ-विलेप-माल्य-वसनां शीतांशु-खण्डोज्ज्वलाम्,
व्याख्यामक्ष-गुणं सुधाढ्य-कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैः।
बिभ्राणां कमलासनां कुच-नतां वाग्-देवतां स-स्मिताम्,
वन्दे वाग्-विभव-प्रदां त्रि-नयनां सौभाग्य-सम्पत्-करीम्॥

पुरश्चरण मे ८ लाख जप कर घृत-मिश्रित तिलो से दशांश होम।

'शारदा-तिलक' के उद्धार में एक पाठान्तर है—द्वयं : युगं। वहाँ ध्यान मे तीन पाठान्तर हैं—(१) स्वच्छ : शुभ्र, (२) कुच-लता : कुच-नता, (३) स-स्मितां : सु-स्मितां।

११ द्वा-त्रिंशदक्षर महा-सरस्वती : ऐंह्रीश्रीक्लीं समुच्चार्य सौंक्लींह्रीऐं पुनर्वदेत्, ब्लूं तु स्त्रीं नील-तारे च सरस्वति-पदं ततः। द्रांह्रींक्लींब्लूंस उच्चार्य ऐंह्रींश्रींक्लीं पुनर्वदेत्, स्त्रीं सौ सौ ह्रीं वह्नि-जायान्तो मन्त्रो द्वा-त्रिंशदर्णकः—ऐंह्रींश्रींक्लींसौं क्लींह्रींऐंब्लूंस्त्रीं नील-तारे सरस्वति द्रांह्रींक्लींब्लूंस. ऐं ह्रींश्रींक्लीं सौं.सौंःह्रीं स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता महा-सरस्वती। मन्त्र के ५, ५, ८, ५,७, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

शवासनां सर्प-भूषां कर्त्रीं चापि कपालकं, चषकं च त्रिशूलं च दधतीं च चतुष्करैः।
मुण्ड-माला-धरां त्र्यक्षां भजे नील-सरस्वतीम्॥

पुरश्चरण मे ४ लाख जप कर मधुर-युक्त किंशुक पुष्पो से दशांश होम।

१२ एकोन-चत्वारिंशाक्षर : ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवति अर्हन्मुख-निवासिनि सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ५६५ मे 'प्राकृत ग्रन्थ' से उद्धृत। दीपावली की रात्रि मे स्नान कर श्वेत वस्त्र पहन उत्तराभिमुख हो चावल के ऊपर सरस्वती की श्वेत मूर्ति स्थापित कर पञ्चोपचारो से उसकी पूजा कर स्फटिक-माला से उक्त मन्त्र का १२ सहस्र जप करने से सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है।

भगवती अन्नपूर्णा

दश महा-विद्याओ मे भगवती भैरवी के प्रकरण मे 'अन्नपूर्णा भैरवी' के मन्त्रो का उल्लेख हुआ है परन्तु भगवती अन्नपूर्णा की अपनी स्वतन्त्र प्रतिष्ठा रही है। 'हिन्दू - धर्म - कोष', पृष्ठ ३७ मे लिखा है—

' शिव की एक पत्नी अथवा शक्ति, जो अपने उपासको को अन्न देकर पोषित करती है। इसका शाब्दिक अर्थ है—अन्न अथवा खाद्य - सामग्री से पूर्ण। काशी मे अन्नपूर्णा का प्रसिद्ध मन्दिर है। ऐसा विश्वास है कि अन्नपूर्णा के आवास के कारण काशी मे कोई व्यक्ति भूखा नही मरता। '

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' के मिश्र तरङ्ग के अन्तर्गत पृष्ठ ६४१–४६ मे अन्नपूर्णा के मन्त्र, कवच, स्तोत्रादि दिए है। 'मन्त्र-महोदधि' के नवम तरङ्ग, पृष्ठ २५४ मे अन्नपूर्णा के मन्त्रो का विवरण सङ्कलित है। 'हिन्दी तन्त्रसार' के पृष्ठ १०४ पर अन्नपूर्णा के मन्त्र सग्रहीत हैं। 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८८ मे इनके मन्त्रो का उल्लेख है। इन सबसे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि स्वतन्त्र रूप से भी इनकी उपासना का प्रचलन रहा है।

भगवती अन्नपूर्णा के मन्त्र

प्रस्तुत 'मन्त्र-कोष' के पृष्ठ १८४-८५ मे अन्नपूर्णा भैरवी के जो मन्त्र उद्धृत हुए है, उनके सम्बन्ध मे प्राप्त पाठान्तर देकर अन्य उपलब्ध मन्त्र यहाँ दिए जाते हैं—

१ सप्त-दशाक्षर : देखें 'मन्त्र-कोष', पृष्ठ १८४ का मन्त्र १६ (१)। 'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७५ मे 'शारदातिलक' से उद्धृत उद्धार : माया हृद् भगवत्यन्ते माहेश्वरि-पद ततः, अन्नपूर्णे ठ-युगलं मनुः सप्त-दशाक्षर ।

वहाँ ऋष्यादि सभी 'हिन्दी तन्त्रसार', पृष्ठ १०४ वत् हैं, केवल ध्यान मे एक पाठान्तर है—हृन्नी। हृत्रीं।

'मन्त्र-मुक्तावली' मे उद्धार माया हृद् भगवति-पदान्ते महेश्वरि-पद अन्नपूर्णे वह्नि-वधू, सप्त-दशाक्षरोऽन्नपूर्णा भवानी-मन्त्रः।

२ अष्टादशाक्षर : देखें 'मन्त्र - कोष', पृष्ठ १८५ का मन्त्र १७ (२)। 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २६१ मे इसका उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है : अथ (विशाक्षर) रमा-काम-बीज रहितोऽष्टादशाक्षर '। वहीं मन्त्र के २, २, ४, ४, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास करने का निर्देश किया है। शेष विधि विंशत्यक्षर-मन्त्र के समान।

'हिन्दी मन्त्र महार्णव', पृष्ठ ६४५ मे 'माहेश्वरि अन्नपूर्णे' के स्थान मे 'माहेश्वर्यन्नपूर्णे' छपा है, जो अशुद्ध है क्योकि वैसा पाठ स्वीकार करने से मन्त्र सप्त दशाक्षर हो जायगा।

३ विंशत्यक्षर : देखें, 'मन्त्र-कोष', पृष्ठ १८५ का मन्त्र १६ (१)। 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २५४ में इसका उद्धार : वेदादिर्गिरिजा पद्मा मन्मथो हृदयं भग, वति माहेश्वरि प्रान्तेऽन्नपूर्णे वह्निाङ्गना। प्रोक्ता विंशति-वर्णेयं विद्या स्याद्।

वहाँ इस मन्त्र के ऋषि 'द्रुहिण' (ब्रह्मा का नामान्तर), छन्द 'कृति' और देवता का नाम 'अन्न-पूर्णेशी' बताया है। बीज, शक्ति, कीलक का उल्लेख नहीं है। स्पष्ट मन्त्र वहाँ अशुद्ध छपा है, 'नमः' छूट गया है। ध्यान भिन्न दिया है, यथा—

तप्त - स्वर्ण - निभा शशाङ्क-मुकुटा रत्न-प्रभा-भासुरा,
नाना-वस्त्र - विराजिता त्रि-नयना भूमि-रमाभ्या युता।
दर्वी - हाटक - भाजनं च दधती रम्योच्च - पीन स्तनी,
नृत्यन्त शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयाऽन्नपूर्णेश्वरी॥

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६४२ में 'नृत्यन्त' के स्थान पर 'नित्य त छपा' है, जो अशुद्ध है।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७४ में उक्त मन्त्र 'मेरु-तन्त्र' से उद्धृत करते हुए उद्धार भिन्न शब्दों में दिया है : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः प्रोक्त्वा भगवति-पदं वदेत्, माहेश्वरि चान्नपूर्णे स्वाहा विंशति-वर्णक। किन्तु वहाँ छन्द 'अनुष्टुप्' और देवता का नाम 'अन्नपूर्णा' बताया है। ध्यान 'मन्त्र-कोष' के पृष्ठ १८५ के मन्त्र १६ (२) के समान है, जिसमें एक पाठान्तर है—कमल-स्तनी : कलश स्तनी।

४ चतुर्विंशत्यक्षर : प्रणवः कमला शक्तिर्नमो भगवतीति च, प्रसन्न-पारिजातेश्वर्यन्नपूर्णेऽन-लाङ्गना। चतुर्विंशति-वर्णात्मा मन्त्र सर्वेष्ट - साधकः—ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्न - पारिजातेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २६२। षडङ्ग - न्यास मन्त्र के ३, २, ४, ६, ४, २ अक्षरों से। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ६४६ में 'पारिजातेश्वर्यन्नपूर्णे' छपा है, जो अशुद्ध है क्योंकि उससे मन्त्र २३ ही अक्षर का रह जाता है।

५ पञ्च-विंशत्यक्षर : तार-श्री-शक्ति-हृदयं भगाम्भ कामिका स-दृक्, माहेश्वरि प्रसन्नेति वरदे-पदमुच्चरेत्। अन्नपूर्णेऽग्नि - पत्नीति पञ्च-विंशति-वर्ण वान्—ॐ श्रीं ह्रीं नमः भगवति माहेश्वरि प्रसन्न-वरदे अन्नपूर्णे स्वाहा

वही। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के ३, ६, ४, ६, ४, २ अक्षरों से।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' में 'वरदेऽन्नपूर्णे' छपा है, जो अशुद्ध है।

'मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों में मिलता है—'अथान्य सम्प्रवक्ष्यामि पञ्च-विंशति-वर्णक, तारो रमा च हृल्लेखा नमो भगवतीति च। माहेश्वरि प्रसन्नेति वरदे पदमुच्चरेत्, अन्नपूर्णेऽग्नि-जायान्तो मन्त्वर्णैरङ्ग-कल्पनं।'

६ एक-त्रिंशत्यक्षर : पूर्वोक्त (विंशत्यक्षर) - मन्त्रे मन्त्वर्णान्ममाभितमुच्चरेत्, अन्न देहि युग चापि भवेदेक-गुणार्ण-वान्—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्न देहि देहि अन्नपूर्णे स्वाहा

वह्नि-जाया चैक-त्रिंशार्णको मनुः ।' इस उद्धार के अनुसार उक्त मन्त्र में एक पाठान्तर ज्ञात होता है : ममाभिमतमन्नं : ममाभीप्सितमन्नं ।

क्रमाङ्क ४, ५, ६ मन्त्रों के ऋष्यादि एवं ध्यान 'मन्त्र-महोदधि' में कथित विंशत्यक्षर मन्त्र (क्रमाङ्क ३) के समान ही हैं ।

अष्ट-मातृकायें

आठ मातृकाओं की बड़ी महिमा है । प्रायः सभी महा-विद्याओं के आवरण-पूजन में इन्हें स्थान प्राप्त है । इसके अतिरिक्त जो भी धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, उनमें इनका पूजन आवश्यक माना गया है । ये मातृकायें भास्कर (सूर्य) के रथ पर निरन्तर विराजमान रहती हैं । 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार इनके नाम हैं—१ ब्राह्मी, २ माहेश्वरी, ३ कौमारी, ४ वैष्णवी, ५ वाराही, ६ इन्द्राणी, ७ चामुण्डा और ८ महा-लक्ष्मी ।

श्री चण्डी (दुर्गा सप्तशती) में भी इनका उल्लेख विशेष रूप से हुआ है । वहाँ 'महालक्ष्मी' का उल्लेख नहीं है और 'नारसिंही' एवं 'शिव-दूती' को लेकर नौ माताओं का वर्णन है । इसके अतिरिक्त इनकी संख्या व नामों के सम्बन्ध में भी विभिन्न मत हैं । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३७ व १४२-४३ । संक्षेप में इनका परिचय निम्न प्रकार है—

१ ब्राह्मी (ब्रह्माणी) : सृष्टि-कर्ता 'ब्रह्मा' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३६, १७३–७४ ।

२ माहेश्वरी (रौद्री) : सृष्टि-संहारक 'महेश्वर' या 'रुद्र' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३६, १७४ ।

३ कौमारी : देव-सेनापति 'कुमार' कार्तिकेय की शक्ति । देखें 'सार्थ-चण्डी', पृष्ठ १३७, १७४ ।

४ वैष्णवी : सृष्टि-पालक 'विष्णु' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३७, १६७, १७५ ।

५ वाराही : विष्णु के तृतीय अवतार 'वराह' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३८, १७५ ।

६ इन्द्राणी (ऐन्द्री, माहेन्द्री) : देव-राज 'इन्द्र' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३८, १७६ ।

७ चामुण्डा (काली, शिव-दूती, अपराजिता) : भगवती 'चण्डी' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ ६, १३८, १७६ ।

८ महालक्ष्मी : श्री दुर्गा-सप्तशती के टीकाकार ने अपनी प्रसिद्ध 'शान्तनवी' टीका में सात ही माताएँ मानी हैं । इनके सिवा अन्य तन्त्रों में भी 'महालक्ष्मी' का उल्लेख न होकर 'नारसिंही' को आठवीं मातृका माना है । देखें 'सार्थ-चण्डी', पृष्ठ १४२-४३ । 'महालक्ष्मी' का वर्णन 'सार्थ-चण्डी', पृष्ठ ६८-७४ में ।

९ नारसिंही : विष्णु के चतुर्थ अवतार 'नृसिंह' की शक्ति । देखें 'सार्थ चण्डी', पृष्ठ १३८, १७६ ।

मातृकाओं (देव-शक्तियों) के मन्त्र

१ ब्राह्मी : ब्रामित्येकाक्षरं बीजं—ब्रां

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि वाचस्पति, छन्द गायत्री, शक्ति 'वः', कीलक 'चरः', विनियोग 'भोग-मोक्ष-प्राप्त्यर्थे' । षडङ्ग-न्यास 'ब्रा, ब्री' इत्यादि से । ध्यान—

ध्याये ब्राह्मीं पद्म-संस्थां हंसारूढां चतुर्मुखां, अक्ष-माला-वराभीति-कमण्डलु-कराम्बुजाम् ।

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर पलाश-समिधा मे पलाश-पुष्पो से होम । पलाश-पुष्प-युक्त जल से दशांश तर्पण और कुशो द्वारा दशांश मार्जन ।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३० मे ब्राह्मी का उक्त मन्त्र ही दिया है, किन्तु कीलक 'वचः' बताया है। ध्यान मे भी दो पाठान्तर हैं—(१) पद्म सस्था पलाशस्था, (२) चतुर्मुखा . चतुर्भुजा ।

२ माहेश्वरी . ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यै हि संवदेत्, परमे पदमुच्चार्येश्वरि स्वाहान्तको मनु— ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यै परमेश्वरि स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । 'ॐ' के वाद 'एहि' जोडने से यह मन्त्र २१ अक्षरो का हो जाता है । ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट्, देवता माहेश्वरी । मन्त्र को तीन भागो मे बाँटकर उनके आदि मे ॐ लगाकर द्विरावृत्ति कर षडङ्ग-न्यास करे ।

वृषारूढा भाल-चन्द्रा त्रि-नेत्रां शशि-सन्निभा, दधतीं शूल-डमरु-महाहि-वलयां भजे ।

पुरश्चरण मे १६ लाख जप कर घृताक्त बिल्व-पत्रो से दशांश होम ।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३१ के उद्धार मे एक पाठान्तर है—'पदमुच्चार्येश्वर्यै' । इस पाठान्तर को स्वीकार करने से स्पष्ट मन्त्र मे 'परमेश्वरि' के स्थान पर 'परमेश्वर्यै' हो जायेगा ।

३ कौमारी : कौं कौमार्यै नम इति षडर्णो मन्त्र ईरित —कौं कौमार्यै नमः

वही । ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता कौमारिका, बीज 'कौं', शक्ति 'कौमार्यै' । मन्त्र के वर्णो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

शक्त्यक्ष स्रग्-वराभीति-करा बन्धूक-सन्निभा, मयूर ध्वजिनीं रक्त-वस्त्रामौदुम्बर स्थिताम् ।
हरित-कंचुकिका रम्यां नानालङ्कार-भूषिताम् ॥

पुरश्चरण मे छ लाख जप कर मधुर-त्रय-युक्त पञ्च खाद्यो से दशांश होम । तर्पण, मार्जन कर कुमारियो को भोजन कराये ।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३१ के ध्यान मे एक पाठान्तर है —चैव रक्तामौदुम्बर-स्थिता रक्त-वस्त्रामौदुम्बर-स्थिता । वहाँ मन्त्र-गत 'कौं' के स्थान पर 'क्रौं' है, बीज भी 'क्रौं' ही बताया है ।

४ वैष्णवी : इनके मन्त्र प्रस्तुत कोष के 'शक्ति'-प्रकरण के पृष्ठ १०५ पर 'महा-माया वैष्णवी' के अन्तर्गत द्रष्टव्य हैं । 'पुरश्चर्यार्णव', पृ०११३२ मे केवल षडक्षर(२) और अष्टाक्षर-मन्त्र के ही उद्धार दिये हैं। सन्दर्भ 'मेरु-तन्त्र' का ही है किन्तु अष्टाक्षर मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दो मे है । यथा—'अकचटत-पयशा वैष्णव्या मन्त्र ईरित ।' ध्यान केवल 'स्व-वाहन' तक दिया है, जिसमे पाँच पाठान्तर हैं—(१) दन्त-रसना दन्त-वसना, (२) शिरीष-सम · शिरीष-प्रभ, (३) विवसना · सु-वसना, (४) हस्ताभ्या स्वभय हस्ताभ्यामभय, (५) सु-पल्लिका · सु-पार्ष्णिका ।

५ वाराही । ऐं लौं ठ ठ ठमिति हु स्वाहान्तोऽष्टाक्षरो मनु —ऐं लौं ठ ठ ठ हु स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि कपिल, छन्द अनुष्टुप् देवता वार्तालिका सुरी वाराही । षडङ्ग-न्यास मन्त्र के २, १, १, १, १, २ अक्षरो से । ध्यान—

दधानामकुश पाश मुद्गर शक्तिमेव च, विद्युद्-भासा त्रिनेत्रा च नाशयन्तीं तथा रिपून् ।

पुरश्चरण मे आठ लाख जप कर बिल्व-पत्र, हयारि-पुष्प, धात्री फल, भृङ्गराज और कुशो से दशांश होम ।

६ इन्द्राणी : इं इन्द्राण्यै नम इति मन्त्रः प्रोक्तः पञ्चाक्षरः—इं इन्द्राण्यै नमः

वही। ऋषि गुरु, छन्द गायत्री, देवता इन्द्र-वल्लभा, वीज 'इं', शक्ति 'इन्द्राण्यै', कीलक 'नमः'। मन्त्राक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

वज्र-पाश-वराभीति-हस्तां श्यामाम्बरां वरां, चतुर्दन्त-गजानल्पच्छाया-संस्थां हिरण्यभाम्।

पुरश्चरण में छः लाख जप कर त्रि-मधु-युक्त मालती-पुष्पों से राज-वृक्ष की समिधा में दशांश होम।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३५ के उद्धार में एक पाठान्तर है—'इन्द्राण्यै : इन्द्राणी'। इस पाठान्तर को स्वीकार करने से स्पष्ट मन्त्र के 'इन्द्राण्यै' के स्थान पर 'इन्द्राणी' हो जाता है। तदनुसार विनियोग में शक्ति 'इन्द्राण्यै' के स्थान पर 'इन्द्राणी' है। वहाँ ध्यान में सभी विशेषण प्रथमा विभक्ति में दिये गये हैं और दो पाठान्तर हैं—(१)श्यामाम्बरां वरां : श्यामाम्बरावृता, (२) गजानल्प : गजाकल्प।

७ चामुण्डा : माया - वीजं समुच्चार्य चामुण्डा ङे-युता पुनः, नमोऽन्तो नग-वर्णोऽयं मन्त्रः सर्वार्थ-साधकः—ह्रीं चामुण्डायै नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३६। ऋषि शिव, छन्द गायत्री, देवता चामुण्डा। मन्त्र के तीन पदों की द्विरावृत्ति से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

नीलोत्पल-दल-श्याम-चतुर्बाहु-समन्विता, खट्वाङ्गं चन्द्र-हासं च विभ्रती दक्षिणे करे।
वामे चर्म च पाशं च ऊर्ध्वतो भावतः पुनः, दधती मुण्ड-मालां च व्याघ्र-चर्माम्बर-धरा।
कृशाङ्गी दीर्घ-दंष्ट्रा च अति-दीर्घाऽति-भीषणा, लोल-जिह्वा निम्न-रक्त-नयनाकार-भीषणा।
कबन्ध-वाहनासीना विस्तारि-श्रवणानना।

पुरश्चरण में सात लाख जप कर मधुर-युक्त पायस से दशांश होम।

'चामुण्डा' के अन्य मन्त्र प्रस्तुत 'कोष' के 'शक्ति'-प्रकरण के पृष्ठ १०२-३ में 'चण्डी (चण्डिका, चामुण्डा)' के अन्तर्गत द्रष्टव्य हैं।

८ महा-लक्ष्मी : माया-वीजं समुद्धृत्य स्व-वीजं च समुद्धरेत्, ततो ङेऽन्ता-महा-लक्ष्मीर्नमोऽन्तोऽष्टाक्षरो मनुः—ह्रीं श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः

वही। ऋषि शिव, छन्द गायत्री, देवता महा-लक्ष्मी। मन्त्र-वर्णों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

सुवर्ण-वर्ण-दीप्ताङ्गी त्रि-नेत्रा सिंह-वाहिनी, ईषत्-प्रहसिता देवी नीलोत्पल-दलेक्षणा।
भुज-षोडश-सम्पन्ना सर्वालङ्कार-भूषिता, खड्गं घण्टां शरं सूत्रमंकुशं शूल-पद्मकम्।
दधाना दक्षिणैर्हस्तैरनाथेभ्यो वर-प्रदा, तथा वामैर्हस्त-पद्मैः खेटकं डिण्डिमं धनुः।
कमण्डलुं नाग-पाशं कपालं पुस्तकाभयं, जाज्वल्य-माना तेजोभिरतीवाह्लाद-कारिणी॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर मधुर-युक्त पायस से दशांश होम।

'महा-लक्ष्मी' के अन्य मन्त्र प्रस्तुत 'कोष' के 'भगवती षोडशी' प्रकरण में पृष्ठ १६४ मे और 'भगवती कमला' के प्रकरण के पृष्ठ २१३—मे क्रमांक १२, १३ मे, पृष्ठ २१५ के क्रमांक २० में और पृष्ठ २१६ में क्रमांक २२ मे द्रष्टव्य हैं।

कामाख्या देवी

कामाख्या देवी की प्रसिद्धि सारे विश्व मे व्याप्त है क्योंकि ये परम सिद्ध 'कामाख्या-पीठ' की अधिष्ठात्री हैं। इस पीठ के सम्बन्ध मे 'हिन्दू धर्म-कोश', पृष्ठ १७६-७७ मे विस्तृत विवरण दिया है, जिसका सारांश निम्न प्रकार है—

'""यह भारत का प्रसिद्ध शक्ति-पीठ असम-प्रदेश मे है। कामाख्या देवी का मन्दिर पहाड़ी पर है। अनुमानतः एक मील ऊँची इस पहाड़ी को 'नील पर्वत' भी कहते हैं। इस प्रदेश का प्रचलित नाम 'कामरूप' है। तन्त्रो मे लिखा है कि करतोया नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नद तक त्रिकोणाकार काम-रूप-प्रदेश माना गया है।'''देवी का मन्दिर कूचविहार मे राजा विश्वसिंह और शिवसिंह का बनवाया हुआ है।''सन् १५६४ ई० तक प्राचीन मन्दिर का नाम 'आनन्दाख्या' था, जो वर्तमान मन्दिर से कुछ दूरी पर है।

पहाड़ी से उतरने पर गौहाटी के सामने ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य मे उमानन्द नामक छोटे चट्टानी टापू में शिव-मन्दिर है। आनन्दमूर्ति को भैरव (कामाख्या-रक्षक) कहते हैं।

कालिका-पुराण, अ० ६१ मे निम्नाङ्कित वर्णन है: जिन-जिन स्थानो पर सती के अङ्गों का पतन हुआ, वे पुण्यतम स्थल बन गए। इस कुब्जिका पीठ (कामाख्या) मे सती के योनि-मण्डल का पतन हुआ। पर्वत-रूपी शिव मे देवी के विलीन होने से पर्वत का नाम 'नील-पर्वत' हुआ।

देवी भागवत, स्कन्ध ७, अ० ३८ मे लिखा है: कामाख्या देवी के दर्शन से सर्व विघ्नो की शान्ति होती है।

कामाख्या-मन्दिर मे कोई देवी-मूर्ति नही है। योनि के आकार का शिला-खण्ड है। वह रक्त-वर्ण के वस्त्र से ढँका रहता है।'''

काली-कुल के उपासक कामाख्या देवी को भगवती काली और श्री-कुल के उपासक महा-त्रिपुर-सुन्दरी-स्वरूपा मान कर इस पीठ के प्रति अत्यधिक निष्ठा रखते हैं। यहाँ 'कामाख्या तन्त्र' के आधार पर इनके मन्त्र संग्रहीत किए गए हैं।

कामाख्या देवी के मन्त्र

१ त्र्यक्षर : जृम्भणान्तं त्यक्त-पाशं माला-वारण-रोहकं, वाम-कर्ण-युतं देवि ! नाद-विन्दु-युतं पुनः। एतत् तु त्रिगुणी-कृत्य कल्प-वृक्ष-मनु जपेत्—त्रीं त्रीं त्रीं

'कामाख्या-तन्त्र', द्वितीय पटल। तृतीय पटल के अनुसार ऋषि अक्षोभ्य, छन्द अनुष्टुप्, देवता कामाख्या, विनियोग 'सर्व-सिद्धयर्थे' या 'चतुर्वर्ग - फल - प्राप्त्यर्थे'। 'त्रा, त्री' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

रक्त-वस्त्रां वरोद्युक्तां सिन्दूर-तिलकान्वितां, निष्कलङ्कां सुधा-धाम-वदन-कमलोज्ज्वलाम्।
स्वर्णादि-मणि-माणिक्य-भूषणैर्भूषितां परां, नाना-रत्नादि-निर्माण-सिंहासनोपरि-स्थिताम्।
हास्य-वक्त्रां पद्म-राग-मणि-कान्तिमनुत्तमां, पीनोत्तुङ्ग-कुचां कृष्णां श्रुति-मूल-गतेक्षणाम्।
कटाक्षैश्च महा-सम्पद्-दायिनीं हर-मोहिनीं, सर्वाङ्ग-सुन्दरीं नित्यां विद्याभि परि-वेष्टिताम्।

डाकिनी-योगिनी-विद्याधरीभिः परि-शोभितां, कामिनीभिर्युतां नाना-गन्धाद्यैः परि-गन्धिताम्।
ताम्बूलादि-करामिश्च नायिकाभिर्विराजितां, समस्त-सिद्ध-वर्गाणां प्रणतां च प्रतीक्षणाम् ।
त्रि-नेत्रां सम्मोह-करीं पुष्प-चापेषु बिभ्रतीं, नग-लिङ्ग-समाख्यानां किन्नरीन्योऽपि नृत्यताम् ।
वाणी-लक्ष्मी-सुधा-वाक्य-प्रति-वाक्य-महोत्सुकां, अशेष-गुण-सम्पन्नां करुणा-सागरां शिवाम् ।।

पुरश्चरण में एक लाख जप कर शर्करा - मधु-घृत-युक्त पायस से दशांश होम । चन्दन-मिश्रित जल से दशांश तर्पण ।

२ द्वा-विंशाक्षर : निज-बीज-त्रयं देवि ! क्रोध - द्वयमतः परं वधू-बीज-द्वयं चैव कामाख्ये च पुनर्वदेत् । प्रसीदेति पदं चैव पूर्व-बीजानि कल्पयेत् । ठन्द्वयान्ते मनुः प्रोक्तः सर्व-तन्त्रेषु दुर्लभः—त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा

वहीं, चतुर्थ पटल । ऋष्यादि त्र्यक्षर-मन्त्र के समान । ध्यान—

अति-सुललित-वेशां हास्य - वक्त्रां त्रि-नेत्रां, जित-जलद-सुकान्ति पट्ट-वस्त्रां प्रकाशाम् ।
अभय-वर - कराढ्यां रत्न - भूषाभि - भव्यां, सुर-तरु - तल - पीठे रत्न - सिंहासनस्थाम् ।
हरि-हर-विधि - वन्द्यां शुद्ध - बुद्धि - स्वरूपां, मदन - शर - संयुक्तां कामिनीं काम-दात्रीम् ।
निखिल-जन-विलासां काम - रूपां भवानीं, कलि-कलुष-निहन्त्रीं योनि - रूपां स्मरामि ।।

पुरश्चरण में छः सहस्र जप कर पूर्वोक्त विधि से दशांश होमादि ।

प्रत्यंगिरा देवी

प्रयोग-कर्ता साधकों में 'प्रत्यङ्गिरा' देवी की बहुत मान्यता है । 'मेरु-तन्त्र' में लिखा है कि ये सार-भूता देवी भक्तों को सुख-दायिनी हैं । इनके भक्तों को भूत-प्रेताधिदेवता कभी पीड़ा नहीं पहुंचाते और इन्हें अभीष्ट सिद्धि सहज ही प्राप्त हो जाती है । इनकी उपासना से न केवल विरोधियों के उपद्रव शान्त होते हैं, अपितु शान्ति, पुष्टि और समृद्धि की भी प्राप्ति होती है ।

प्रत्यंगिरा के मन्त्र

१ सप्त-दशाक्षर : ॐ अं कं चं तथा टं तं पं यं शं ह्रां ह्रीं समुच्चरेत्, ह्रूं स उक्त्वा हुं तथाऽस्त्रं स्वाहान्तः षोडशाक्षरः—ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र' । ऋषि विधाता, छन्द उष्णिक्, षट्-देवता १ महा-वायु, २ महा-पृथ्वी, ३ महा-४ महा-समुद्र, ५ महा-पर्वत, ६ महाऽग्नि, बीज 'हूं', शक्ति 'ह्रीं' । षडङ्ग-न्यास 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से । ध्यान—

तार-रत्नार्चिराक्रान्तमम्भः प्रस्रवणैर्युतं, व्याघ्रादि-पशुभिर्व्याप्तं सानु-युक्तं गिरिं स्मरेत् ।
मत्स्य-कूर्मादि-बीजाढ्यं नव-रत्न-समर्चितं, घन-तोयं स-कल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ।
ज्वालावली-समाक्रान्तं जगत् - त्रितयमद्भुतं, पीत-वर्णं महा-वह्निं संस्मरेच्छत्रु-शान्तये ।
स्वरात् समुत्थ-रेण्वोघ-मलिनमूर्ध्व-भू-विदं, पवनं संस्मरेद् विश्व-जीवनं प्राण - रूपतः ।
नदी-पर्वत-वृक्षादि - कलिता - ग्राम-संकुला, आधार-भूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मन्त्रिणा ।
सूर्यादि-ग्रह - नक्षत्र - काल - चक्र-समन्वितं, निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रय-प्रदम् ।।

पुरश्चरण मे सोलह सहस्र जप कर षड्-द्रव्यो (१ व्रीहि, २ तण्डुल, ३ आज्य, ४ सर्षप, ५ यव, ६ तिल) से दशांश होम।

उल्लेखनीय है कि 'मेरु-तन्त्र' में यह मन्त्र १६ अक्षरो का बताया है और उद्धार मे 'तं' नही है किन्तु वही जो स्पष्ट मन्त्र दिया है, उसमें 'तं' का समावेश किया गया है, जिससे मन्त्र के १७ अक्षर हो जाते हैं। इसके सिवा वहाँ उद्धार में 'हूँस' के स्थान पर हुंस' छपा है किन्तु स्पष्ट मन्त्र मे 'हूँस.' ही दिया है।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७२ के उद्धार मे 'यं शं ह्रां' के स्थान पर मात्र दो बीज हैं—'ह्मं भों' और 'हूँस' के स्थान पर है—'हुंस'। इस प्रकार १६ अक्षर का यह मन्त्र बनता है : ॐ अं कं चं टं तं पं ह्मं भों ह्रीं हुंस हुं फट् स्वाहा। वहाँ बीज 'हुं' बताया है।

ध्यान मे वहाँ दस पाठान्तर हैं—(१) तार : नाना, (२) क्रान्तमम्भः प्रस्रवणं : क्रान्त वृक्षाम्भः स्रवणं, (३)समर्चितं : समन्वितं, (४) घन-तोयं : घनच्छाय, (५) स्वरात् : त्वरा, (६) समुत्थ-रेण्वोघ : समुत्थ-रावोघ, (७) मलिनमूर्ध्वं : मलिनं रुद्ध, (८) विदं : दिवं, (९) ग्राम : ग्रास, (१०) माश्रय-प्रदं : माश्रयः पदं।

२ चतुस्त्रिंशदक्षर : ॐ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव, तां ब्रह्मणाऽप-निर्नुद्‌म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ह्रीं

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७८ मे 'सिद्धान्त-संग्रह' से उद्धृत। ऋष्यादि सप्त-त्रिंशदक्षर-मन्त्र-वत्। ध्यान—

खड्ग-चर्म-धरां कृष्णां मुक्त-केशीं विवाससं, दंष्ट्रा-कराल-वदनां भीषाभां सर्व-भूषणाम्।
ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिव - तेजसा॥

होम घृत-युक्त राजिका से। प्रयोग-काल मे १०८ बार जप कर उतनी ही आहुति देने से पर-कृत्या का विनाश होता है।

३ सप्त-त्रिंशदक्षर : दीर्घेन्दु-युग्-मरुद् ब्रह्मा मास-लोहित-संस्थितां, यन्ति नोरय उच्चार्य क्रूरा कृत्या समुच्चरेत्। वधूमिव-पदं पश्चात् तां ब्रह्मान्ते स-दीर्घ ण', अप-निर्णुद्म इत्यन्ते प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु। तार-माया-पुटो मन्त्रः स्यात् सप्त-त्रिंशदक्षर —ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरा कृत्यां वधूमिव तां ब्रह्मणा अप-निर्णुद्मः प्रत्यक्-कर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २७८। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप्, देवता प्रत्यङ्गिरा देवी, बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्रीं', विनियोग 'पर-कृत्या-नाशे (निवारणे)' या 'अखिलाप्तये'। षडङ्ग-न्यास के छ: मन्त्र—(१) ॐ या कल्पयन्ति नोऽरयः ह्रां, (२) ॐ क्रूरा कृत्या ह्रीं, (३) ॐ वधूमिव हूं, (४) ॐ ता ब्रह्मणा ह्रैं, (५) ॐ अप-निर्णुद्मः ह्रौं, (६) ॐ प्रत्यक्-कर्तारमृच्छतु ह्रः। ध्यान—

आशाम्बरा मुक्त-कचा घनच्छविर्ध्येया स-चर्मासि-कराऽहि-भूषणा।
दंष्ट्रोग्र-वक्त्रा ग्रसिताहितान्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्कर - तेजसेरिता॥

पुरश्चरण मे दस-सहस्र जप कर अपामार्ग की समिधा मे घृत व हविष्यान्न से दशांश होम।

'मन्त्र-महोदधि' के स्पष्ट मन्त्र मे 'ता' के स्थान पर 'ह्रा' छपा है, जो अशुद्ध है। 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' पृष्ठ १८४ मे भी 'ता' के स्थान पर 'ह्रा' अशुद्ध छपा है। वहाँ मन्त्र को ३८ अक्षरो को बताया है, जब कि यह ३७ अक्षरो का है।

मेरु-तन्त्र' में उक्त मन्त्र के 'अप-निर्णुध.' के स्थान पर 'अप-निर्णुघ्न' पाठ है। षडङ्ग-न्यास में ऊपर लिखे हो छः मन्त्र-भाग है, किन्तु उनके अन्त में 'ह्लां, ह्लीं' इत्यादि न जोड़कर सर्वत्र 'ह्लीं' ही जोड़ने का निर्देश है। ध्यान भिन्न शब्दों में दिया है—

ततो ध्यायेत् सिंह-मुखीं मुक्त-केशां दिगम्बरां, असि-चर्म-करां श्यामां दंष्ट्राग्रां सर्व-भीषणाम्।
ग्रसन्तीमहितान्रुद्र-तेजसा ध्यानमीरितम् ॥

८ पञ्च-विंशत्योत्तर-शताक्षर माला-मन्त्र : ॐ ह्लीं नमः कृष्ण - वाससे स्तुते विश्व - सहस्र, हिंसिनि सहस्रावने महा-बलेऽपराजिते। प्रत्यङ्गिरे पर-सैन्य-पर-कर्म-पदं वदेत्, विध्वंसिनि पर-मन्त्रोत्सादिनीति ततो वदेत्। सर्व-भूतेति दमनि सर्व-देवान् वदेत् ततः, बन्ध-युग्म सर्व-विद्यां द्विश्छिन्धि क्षोभय-द्वयं। पर-यन्त्राणीति वदेत् स्फोटय-द्वितयं ततः, सर्व-शृङ्खलां त्रोटय त्रोटय ज्वलदुच्चरेत्। ज्वाला-जिह्वे करालेति वदने प्रत्यङ्गुच्चरेत्। गिरे ह्लीं नम इत्येष स-पाद-शत-वर्ण-वान्—**ॐ ह्लीं नमः कृष्ण-वाससे स्तुते विश्व-सहस्र-हिंसिनि सहस्रावने महा-बलेऽपराजिते प्रत्यङ्गिरे पर-सैन्य-पर-कर्म-विध्वंसिनि पर-मन्त्रोत्सादिनि सर्व-भूत-दमनि! सर्व-देवान् बन्ध बन्ध सर्व-विद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय पर-यन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्व-शृङ्खलां त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वाला-जिह्वे कराल-वदने प्रत्यङ्गिरे ह्लीं नमः**

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि ब्रह्मा, छन्द अनुष्टुप, देवता प्रत्यङ्गिरा, बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्लीं', विनियोग 'कृत्या-नाशाय'। षडङ्ग-न्यास 'ह्लां, ह्लीं' इत्यादि से। ध्यान—

सिंहारूढाति-कृष्णाङ्गी ज्वाला-वक्त्रा भयङ्करा, शूल-खड्ग-करा वस्त्रे दधती या तु तां भजे।

पुरश्चरण मे दस सहस्र जप कर तिल-राजिका से दशांश होम। प्रयोग में १०० वार जप। ग्रह-भूतादि अरिष्ट मे मन्त्र जपते हुए जल का सिञ्चन करे।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ १८७ में यह मन्त्र दिया है, जिसमें 'सर्व-भूत-दमनि' के स्थान पर 'सर्व-भूत-दमने' छपा है, जो अशुद्ध है। 'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २८२ में मन्त्रोद्धार भिन्न शब्दों में दिया है—

तारो माया नमः कृष्ण-वाससे शत-वर्णकाः, सहस्र-हिंसिनि-पदं सहस्र-वदनं पुनः। महा-बले-पदं पश्चादपराजिते, प्रत्यङ्गिरे पर-सैन्य-पर-कर्म स-दृग्-जलं। ध्वंसिनि पर-मन्त्रोत्सादिनि सर्व-पदं ततः, भूतान्ते दमनि-प्रान्ते सर्व-देवान् समुच्चरेत्। बन्ध-युग्मं सर्व-विद्याश्छिन्धि-युक् क्षोभय-द्वयं, पर-यन्त्राणि सङ्कीर्त्य स्फोटय-द्वितयं पठेत्। सर्वान्ते शृङ्खला उक्त्वा त्रोटय-द्वितयं ज्वलत्, ज्वाला-जिह्वे करालान्ते वदने प्रत्यमुच्चरेत्, गिरे माया-नमोऽन्तोऽयं शर-सूर्याक्षरो मनुः।

वहाँ ध्यान भिन्न प्रकार से दिया है। यथा—

सिंहारूढाऽति-कृष्णं त्रि-भुवन-भय-कृद्-रूपमुग्रं वहन्ती,
ज्वाला-वक्त्रा वसाना नव-वसन-युगं नील-मण्याभ-कान्तिः।
शूलं खड्गं वहन्ती निज-कर-युगले भक्त-रक्षैक-रक्षा,
सेयं प्रत्यङ्गिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मितं वोऽभिचारम् ॥

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' मे उद्धृत ध्यान में तीन पाठान्तर हैं—(१) कृष्णं : कृष्णा, (२) निर्मितं : निर्मितान्, (३) वोऽभिचारं : नोऽभिचारान्।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८७३ के मन्त्रोद्धार मे सात पाठान्तर हैं—(१) स्तुते : शते, (२) हिंसिनि : हिम् सिनि, (३) सहस्रावने : सहस्र-वदने, (४) सर्व-विद्यां : सर्व-विद्या, (५) शृङ्खलां त्रोटय : शृङ्खलां-स्त्रोटय, (६) ज्वलदुच्चरेत् : ज्वल चोच्चरेत् (७) प्रत्यङ्गुच्चरेत् : प्रत्यमुच्चरेत्। वहाँ उद्धृत ध्यान में सभी विशेषण द्वितीया विभक्ति में हैं और तीन पाठान्तर हैं—(१) शस्त्र : खड्ग, (२) खड्गं : वस्त्रे, (३) या तु तां : नूतने।

भगवती गौरी

'गौरी' के आठ नाम प्रसिद्ध हैं—१ पार्वती, २ ललिता, ३ गौरी, ४ गायत्री, ५ शाङ्करी, ६ शिवा, ७ उमा, ८ सती। इन नामो से 'गौरी-तृतीया-व्रत' मे पूजा की जाती है। यह व्रत चैत्र, भाद्र और माघ के शुक्ल-पक्ष की तृतीया को किया जाता है। 'गौरी-तपो-व्रत' का अनुष्ठान महिलायें मार्गशीर्ष की अमावास्या से प्रारम्भ करती हैं और मार्गशीर्ष पूर्णिमा को इसका उद्यापन करती हैं। यह तप १६ वर्षों तक किया जाता है। इसमे अर्द्ध-रात्रि के समय शिव-पार्वती के पूजन का विधान है। चैत्र मास की तृतीया, चतुर्थी या पञ्चमी को 'गौरी-विवाह' मनाने की प्रथा है। आश्विन से चार महीने तक 'गौरी-व्रत' किया जाता है। इस व्रत का करनेवाला दुग्ध या दुग्ध की बनी वस्तुएँ दधि, घृत आदि और गन्ने का रस ग्रहण नही करता, अपितु इन्ही वस्तुओ को किसी पात्र मे रखकर उसका दान करता है। दान के समय वह कहता है—'गौरी प्रसीदतु माम्।'

उक्त प्रकार से विस्तृत विवरण 'हिन्दू धर्मकोश' के पृष्ठ २५४-५५ मे मिलता है। उल्लेखनीय है कि केदारनाथ मन्दिर से आठ मील नीचे 'गौरी-कुण्ड' की बडी ख्याति है। गौरी-गणेश की पूजा सभी धार्मिक अनुष्ठानो मे अनिवार्य रूप से की जाती है। महादेव शिव से 'गौरी' का विशेष-सम्बन्ध है, इसी से प्रस्तुत 'कोष' के भगवान् शिव-प्रकरण मे उनके अङ्ग-मन्त्रों के अन्तर्गत पृष्ठ ८६ मे 'गौरी' के मन्त्र दिए गए हैं। यहाँ कुछ और मन्त्र प्रस्तुत हैं।

भगवती गौरी के मन्त्र

१ चतुरक्षर : माया - बीज समुद्धरेत्, ङेऽन्ता भवानीमुच्चार्य नम शेषे प्रकीर्तयेत्—ह्रीं भवान्यै नमः

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ७०८। ऋष्यादि षोडशाक्षर-मन्त्र-वत्। ध्यान—

बालार्काभा त्रि-नयनां खड्ग-खेट-वराभयान्, दोर्भिर्दधानां सिंहस्था भवानीं भावयेत् सदा।

२ षोडशाक्षर : ह्रीं गौरि रुद्र दयिते योगेश्वरि-पद वदेत्, हुं फट् स्वाहा षोडशार्णो गौरी-मन्त्र उदाहृतः—ह्रीं गौरि रुद्र-दयिते योगेश्वरि हुं फट् स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋषि अज, छन्द अनुष्टुप्, देवता गौरी। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

हेमाभां बिभ्रतीं दोर्भिर्दर्पणाञ्जन साधने, पाशाङ्कुशौ सर्व-भूषां तां गौरीं सर्वदा स्मरेत्।

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर घृत मे दशांश होम।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ७०८ के उद्धार मे एक पाठान्तर है—उदाहृत : प्रकीर्तित। ध्यान मे भी दो पाठन्तर हैं—(१) सर्व-भूषा : दिव्य-भूषा, (२) ता गौरी सर्वदा स्मरेत् : गौरी देवीमुपास्महे।

३ ऊन विंशाक्षर : क्लिन्ने-स्त्री-वशङ्करि सुभगे च पृथग् द्वय, स्त्री स्वाहेत्यून-विंशार्ण —क्लिन्ने-स्त्री-वशङ्करि सुभगे पृथक् पृथक् स्त्री स्वाहा

वहीं। ऋष्यादि और न्यासादि षोडशाक्षर - मन्त्र - वत्। मन्त्र के शत बार जप से वशीकरण होता है।

४ एक षष्ट्यक्षर महा-श्री गौरी देखें प्रस्तुत कोष, पृष्ठ ८६ मे 'गौरी' का मन्त्र—३। 'मेरु-तन्त्र' मे उद्धार भिन्न शब्दो मे दिया है—माया नमश्च ब्रह्मश्री-राजिते राज पूजिते, जये च विजयेगौरी

गान्धारी त्रि-भुवेति च । न-वशङ्करि चेत्युक्त्वा सर्व-लोक-वशङ्करि, सर्व-स्त्री-पुरुषेत्युक्त्वा सर्व-लोक-वशं करि । पदं वदेत् सुदु द्वे द्वेहीं स्वाहा भू-रसार्ण-वान्

मूल 'मन्त्र-कोष' में यही मन्त्र सङ्कलित रहा है किन्तु उसमें दो पाठान्तर हैं—(१) जय-विजये : जये विजये, (२) सुसु दुदु घेवे वावा : मृदुर्घोर-रावे । इस प्रकार वहाँ ५६ अक्षरों का मन्त्र दिया है।

यहाँ ऋषि ब्रह्मा, छन्द निवृत, देवता गौरी बताए है । ध्यान भी भिन्न दिया है—

पूर्ण-चन्द्र-लसन्मौलिं बन्धु-जीवारुणाङ्किकां, पाशांकुश-धरां त्र्यक्षां शुक-पुष्प-विराजिताम् ।
शोण-लेपां जगद्-वन्द्यां कुसुम्भारुण-वस्त्रिकाम् ।।

५ सप्त-चत्वारिंशाक्षर राजमुखी गौरी : प्रस्तुत कोष, पृष्ठ ८६, मन्त्र-२ । 'मेरु-तन्त्र' में उद्धार—ॐ राज-मुखि राजाधि-मुखि वश्य-मुखीति च, शक्ति-श्री-काम-बीजानि देवि-देवि समुच्चरेत् । महा-देवीति देवाधि-देवि सर्व-जनस्य च, मुखं मम वशं चेति कुरु-युग्माग्नि-गेहिनी ।

'मेरु-तन्त्र' के उक्त उद्धार से ४७ अक्षरों का मन्त्र प्रस्तुत होता है । वहीं लिखा है कि इसके आदि में 'ह्लें' जोड़ने से यह ४८ अक्षर का मन्त्र बन जाता है, जैसा कि इस 'कोष' के पृष्ठ ८६ पर प्रकाशित है । उसमें केवल इतना अन्तर है कि वहाँ 'ब्लूं' है, जब कि यहाँ उसके स्थान पर 'ॐ' का निर्देश है ।

भगवती अपराजिता

भगवती दुर्गा का ही नामान्तर 'अपराजिता' है । अष्ट-मातृकाओं में से चौथी वैष्णवी माता को भी 'अपराजिता' नाम से सम्बोधित किया गया है । इसके अतिरिक्त 'अपराजिता' की उपासना स्वतन्त्र रूप से भी लोक-प्रिय है । 'हिन्दू धर्म-कोश', पृष्ठ ३८ में इनके सम्बन्ध में लिखा है—

"...युद्ध में अपराजिता अर्थात् दुर्गा । आश्विन शुक्ला दशमी को इनकी पूजा का विधान है—

दशम्यां च नरैः सम्यक् पूजनीयाऽपराजिता, मोक्षार्थं विजयार्थं च पूर्वोक्त-विधिना नरैः ।
नवमी - शेष - युक्तायां दशम्यामपराजिता, ददाति विजयं देवी पूजिता जय-वर्द्धिनी ।।

अर्थात् मोक्ष अथवा विजय के लिए नवमी से युक्त दशमी के दिन अपराजिता की पूजा करनी चाहिए, जिससे जय को बढ़ानेवाली देवी विजय प्रदान करती है ।'

वहीं यह भी उल्लेख है कि 'इसी दिन श्री राम ने भी लङ्का पर आक्रमण किया था । उस दिन श्रवण नक्षत्र था, जिसमें देवी की पूजा होती है ।' इसके सिवा भाद्र शुक्ल सप्तमी को भी 'अपराजिता सप्तमी' कहते हैं ।

'चण्डी' वर्ष ४० के पौषाङ्क के पृष्ठ १२ पर 'विष्णु अपराजिता महा-विद्या माला-मन्त्र' द्रष्टव्य है ।

पताके, महा-नीले, महा-प्रिये, महाग्नेयि, महा-चण्डे, महा-रौद्रि, महा-वज्रिणि, आदित्य - रश्मि - जाह्नवि, यम-घण्टे ! किलि किलि, चिन्ता-मणि, सुरभि-सुरोत्पन्ने, सरस्वति, सर्व-काम दुघे ! मम-मनीषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि अष्टाक्षर वैष्णवी-मन्त्र (पृष्ठ १०५) के समान। पुरश्चरण मे १२, ६०० जप कर दशांश होमादि।

भगवती रेणुका

'राष्ट्र-गुरु' परम पूज्य श्री स्वामी जी के निर्देशन मे प्रकाशित 'रेणुका-तन्त्र' में उल्लिखित है कि—

'श्री छिन्नमस्ता का ही रूपान्तर भगवती रेणुका हैं। योगियों की अन्तिम भूमिका अर्थात् चरम सिद्धि कपाल-भेदन ही है। यह उसी सिद्धि की प्रतीक हैं। अतएव ये योग की अधिष्ठात्री हैं। रेणुका इन्ही की उप-विद्या हैं। इनकी उपासना का प्रचलन दक्षिण भारत मे अधिक है।'

रेणुका देवी भगवान् परशुराम की माता एव महर्षि जमदग्नि की पत्नी-रूप में प्रसिद्ध हैं। 'हिन्दू धर्म-कोष', पृष्ठ ५६१ मे 'रेणुका-तीर्थ' का वर्णन है। यथा—

'"हिमाचल प्रदेश का पर्वतीय तीर्थ। शिमला से नाहन और दहाहू जाकर गिरि-नदी को पार करके पैदल 'रेणुका-तीर्थ' जाने का मार्ग है। दहाहू से तीर्थ दो फर्लांग के लगभग है। यहाँ 'रेणुका-झील' और 'परशुराम ताल' हैं। परशुराम जी तथा उनकी माता रेणुका जी का मन्दिर है।...कार्तिक पूर्णिमा पर मेला लगता है।"रेणुका-झील के पास 'यमदग्नि-पर्वत' है।...'

वहीं यह भी बताया है कि आगरा-मथुरा (उत्तर-प्रदेश) के मध्य यमुना-तट पर स्थित 'रुन-कता' नामक स्थान 'रेणुका-क्षेत्र' माना जाता है।

तन्त्रो मे इनका उल्लेख 'रेणुका शबरी' या 'एक-वीरा' नामो से मिलता है।

रेणुका शबरी (एक-वीरा) के मन्त्र

१ पञ्चाक्षर : प्रणव कमला माया सृणिरिन्दु-युतोऽधरः, पञ्चाक्षरी महा-विद्या—ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं

'मन्त्र-महोदधि, पृष्ठ १७०। ऋषि भैरव, छन्द पंक्ति, देवता रेणुका शबरी। षडङ्ग-न्यास मन्त्र के एक-एक बीज तथा सम्पूर्ण मन्त्र से। ध्यान—

हेमाद्रि-सानावुद्याने नाना-द्रुम-मनोहरे, रत्न-मण्डप-मध्यस्थ-वेदिकायां स्थितां स्मरेत्।
गुञ्जा - फलाकल्पित - हार - रम्यां, श्रुत्योः शिखण्डं शिखिनो वहन्तीम्।
कोदण्ड - बाणौ दधतीं कराभ्यां, कटिस्थ - वल्कां शबरीं स्मरेयम्॥

पुरश्चरण मे पाँच लाख जप कर बिल्व की समिधा मे बिल्व-फलो से दशांश होम।

'रेणुका-तन्त्रम्', पृष्ठ ८ मे प्रकाशित मन्त्र मे 'क्रों' के स्थान पर 'क्रां' छपा है, जो अशुद्ध है। वहीं ध्यान मे एक पाठान्तर है—स्मरेयं : स्मरामि।

२ पञ्च-विंशत्यक्षर : वाङ्-माया लक्ष्मि-कामश्च त्रैलोक्य - मोहिनी-पद, मेऽभीष्ट-मनोरथं च शीघ्र कुरु-युग्मं वदेत्। वह्नि-जायावधिः मन्त्रो पञ्च-विंशति-वर्णकः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य-मोहिनि ! मेऽभीष्ट-मनोरथं शीघ्रं कुरु कुरु स्वाहा

'रेणुका-तन्त्रम्', पृष्ठ ६। ऋषि कौशिक, छन्द अनुष्टुप्, देवता एक-वीरा, बीज 'ईं', शक्ति 'स्वाहा', कीलक 'क्लीं'। षडङ्ग-न्यास 'ईं' बीज से। ध्यान—

मध्ये बद्ध-मयूर-पिच्छ - निवहां श्यामां प्रवालाधराम्,
गुञ्जा-हार-धरां धनुः-शर - करां नीलाम्बराडम्बराम्।
शृङ्गी - वादन - तत्परां सु - नयनां मूर्द्धालकैर्बर्बराम्,
भिल्ली-वेश-धरीं नमामि शबरीं त्वामेक-वीरां पराम्॥

पुरश्चरण में भौमाष्टमी के दिन या केवल भौम (मङ्गल) के दिन एक सहस्र आठ जप कर तिल-घृत से दशांश होमादि करे।

उल्लेखनीय है कि वहीं पृष्ठ १० पर स्पष्ट मन्त्र इस प्रकार दिया है—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं मेऽभीष्ट-मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा। यह मन्त्र केवल १७ अक्षरों का ही है, जब कि इसे मन्त्रोद्धार में २५ अक्षरों का बताया है। उद्धार के अनुसार इस मन्त्र में 'त्रैलोक्य-मोहिनि' और 'शीघ्र' ये दो पद नहीं दिए हैं। इन्हें जोड़ देने से २५ अक्षर हो जाते हैं। इसी प्रकार पृष्ठ ६ के मन्त्रोद्धार में 'लक्ष्मि-कामश्च' के स्थान में 'लक्ष्मिका मन्त्र' छपा है, जो अशुद्ध है।

वहीं पृष्ठ ७६ में रेणुका-माला-मन्त्र के सन्दर्भ में ध्यान ऊपर जैसा ही निर्दिष्ट है किन्तु उसमें तीन पाठान्तर हैं—(१) निवहां : निकरां, (२) नीलाम्बराडम्बरां : नीलाम्बराऽम्बरां (३) वेश-धरीं : वेश-धरां।

३ चत्वारिंशदक्षर : ॐ क्लीं नमो भगवति, रक्त-पञ्चमि, रेणुका-देवि! दह दह, पच पच, अखिल-जगन्मे वशं कुरु कुरु स्वाहा

वहीं, पृष्ठ २। मन्त्रोद्धार नहीं दिया है। ऋषि भार्गव, छन्द अनुष्टुप्, देवता रेणुका, बीज 'क्लां', शक्ति 'क्लीं', कीलक 'क्लूं', विनियोग 'सर्व-कार्यार्थ-सिद्धयर्थे'। 'क्लां, क्लीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

वामे शूल - कपाल - युग्ममितरे खड्गं क्वणड्डिमम्,
बिभ्रणां कर - पङ्कजैस्त्रि - नयनां नागादि-भूषोज्ज्वलाम्।
नाना-कोटि - युगान्त-सूर्य - सदृशां कल्पान्त - कोपोज्ज्वलाम्,
दक्षालंकृत वाम - मुद्रित - पदां श्रीरेणुकामाश्रये॥

पुरश्चरण में दस सहस्र जप कर अरविन्दादि पञ्च-पुष्पों से दशांश होम।

यक्ष-वर्ग की शक्तियाँ 'यक्षी' या 'यक्षिणी' कहलाती हैं। ये भगवती दुर्गा की सेविका मानी गई हैं। दश महा-विद्याओ से भी इनका सम्बन्ध है। 'आगम - रहस्य', उत्तरार्द्ध, पृष्ठ ४८ मे लिखा है कि जिस महा-विद्या की जो 'यक्षी' है, वह उसकी सेविका होती है। अतः उस महा-विद्या के उपासक को उसी 'यक्षिणी' की उपासना करनी चाहिए। अपनी महा-विद्या से सम्बन्धित यक्षिणी की उपासना न कर जो अन्य 'यक्षिणी' को उपासना करता है, उसे सिद्धि नही मिलती, अपितु 'यक्षिणो-देवी' का उसे कोप-भाजन होना पडता है। वही दश-महाविद्याओ से सम्बन्धित यक्षिणियो का नामोल्लेख भी निम्न प्रकार मिलता है—

आदौ काली च तद् यक्षी महा-'मधुमती' परा, द्वितीया 'भ्रमराम्बा' च सुन्दर्या सुर-सुन्दरी।
भैरव्या'श्चन्द्र-रेखा' च यक्षिणी परिकीर्तिता, तारायास्तारिणी यक्षी 'विकटा पद्म-नायिका'।
छिन्नाया 'लम्पटा' यक्षी बगलाया 'विडालिका', कमलायास्तु 'धनदा' भुवनेश्या शृणु प्रिये !
'त्रैलोक्य-मोहिनी' यक्षो मातंग्याः शृणु पार्वति ! 'श्रीमनो-हारिणी' प्रोक्ता धूमावत्याः शृणु प्रिये !
'भीषणी' यक्षिणी प्रोक्ता प्रोक्तेयं दश यक्षिणी। एतदज्ञानतो देवि ! न हि सिद्धयन्ति कुत्र-चित् ॥

इस प्रकार दस यक्षिणी देवियो के नाम ज्ञात होते हैं—१ काली : महा - मधुमती, २ तारा : विकटा पद्म-नायिका, ३ षोडशी : भ्रमराम्बा सुर-सुन्दरी, ४ भुवनेश्वरी : त्रैलोक्य-मोहिनी, ५ भैरवी : चन्द्र-रेखा, ६ छिन्नमस्ता : लम्पटा, ७ धूमावती : भीषणी, ८ बगला : विडालिका, ९ मातङ्गी : मनो हारिणी, १० कमला : धनदा।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ १९ मे ३६ यक्षिणी देवियो के नाम दिए हैं—१ विचित्रा, २ विभ्रमा, ३ हंसी, ४ भिक्षिणी, ५ जन-रञ्जिका, ६ विशाला, ७ मदना, ८ घण्टा, ९ काल-कर्णी, १० महाभया, ११ माहेन्द्री, १२ शङ्खिनी, १३ चान्द्री, १४ श्मशानी, १५ वट-यक्षिणी, १६ मेखला, १७ विकला, १८ लक्ष्मी, १९ मानिनी, २० शत-पत्रिका, २१ सु-लोचना, २२ सु-शोभना २३ कपालिनी, २४ विलासिनी, २५ नटी, २६ कामेश्वरी, २७ स्वर्ण-रेखा, २८ सुर-सुन्दरी, २९ मनोहरी, ३० प्रमदा, प्रमोदा, ३१ अनुरागिणी, ३२ नख-केशिका, ३३ नेमिनी (भाविनी) प्रिया, ३४ पद्मिनी, पद्मावती, ३५ स्वर्णवती, कनकावती ३६ रति-प्रिया।

यक्षिणी देवी के मन्त्र

१ विचित्रा—१ चतुर्दशाक्षर : ॐ विचित्र-रूपे ! सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा
२ सप्त दशाक्षर : ॐ विचित्रे, चित्र-रूपिणि ! सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ २१। वट-वृक्ष के नीचे १ लाख जप। मधु, घी, दूध मिश्रित बन्धूक पुष्प से त्रिकोणाकार कुण्ड मे दशांश होम।

२ विभ्रमा—त्रयोविंशत्यक्षर : ॐ ह्रीं विभ्रम-रूपे ! विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति ! स्वाहा
वही। श्मशान मे २ लाख जप। घी से दशांश होम।

३ हंसी—नवाक्षर . हंसी हंस हां नें ह्रीं स्वाहा
वही, पृष्ठ २२। नग्न हो खड़ होकर १ लाख जप। घृताक्त कमल-पत्रो से दशांश होम।

४ भिक्षिणी—१ द्वादशाक्षर : ऐं महा-नदे भीषणे हां हूं स्वाहा
२ त्रयोदशाक्षर : ॐ ऐं महा-नादे, भिक्षिणि ! हां ह्रीं स्वाहा
वही। तिराहे पर १ लाख जप। घृताक्त गुग्गुल से दशांश होम।

५ जन-रञ्जिनी—नवाक्षर : ॐ क्लें जन-रञ्जिनि ! स्वाहा

वही, पृष्ठ २३ । कदम्ब के नीचे २ लाख जप । घृताक्त या घृत, मधु, शकर-मिश्रित गुग्गुल से दशांश होम ।

६ विशाला—१ दशाक्षर : प्रणवो वाग् विशाले च माया पद्मा मनोभवः, ठ-द्वयान्तो दशार्णोऽयं विशाला-यक्षिणी-मनुः—ऐं विशाले ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १६४ । ऋष्यादि 'वट-यक्षिणी' मन्त्र के समान । पुरश्चरण में चिञ्चा-(इमली) वृक्ष के नीचे एक लाख जप कर शत-पत्र (कमल) पुष्पों से दशांश होम ।

२ ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ २३

३ त्रयोदशाक्षर : ॐ ह्रीं विशाले द्रां द्रं क्लीं एह्येहि स्वाहा 'हिन्दी मन्त्र महा',० वही ।

७ मदना—द्वा-विंशत्यक्षर : ॐ मदने मदने देवि मामालिङ्गय सङ्गं देहि देहि श्रीः स्वाहा

वही, पृष्ठ २४ । राज-द्वार में १ लाख जप । दुग्ध-युक्त मालती-पुष्पों से होम ।

८ घण्टा—द्व-विंशत्यक्षर : ॐ ऐं पुरं क्षोभय भगवति, गम्भीर-स्वरे ! क्लें स्वाहा

वही । घण्टा बजाकर २० सहस्र जप ।

९ काल-कर्णी—एकादशाक्षर : ॐ ल्वें काल-कर्णिके ! ठः ठः स्वाहा

वहीं १ लाख जप । मधु-युक्त धतूरे से पलाश की समिधा में दशांश होम ।

१० महाभया—दशाक्षर : ॐ ह्रीं महाभये ! हुं फट् स्वाहा

वही, पृष्ठ २५ । उक्त मन्त्र मे एक पाठान्तर है—फट् : क्ली । श्मशान से मानव अस्थियाँ लेकर उसकी माला बना गले, हाथ व कानो मे पहने । उसी की माला में १ लाख जप करे ।

११ माहेन्द्री—१ द्वादशाक्षर : ॐ माहेन्द्रि ! कुलु कुलु हंसः स्वाहा

२ एकोन-विंशत्यक्षर : ऐं क्लीं ऐन्द्रि, माहेन्द्रि ! कुलु कुलु चुलु चुलु हंसः स्वाहा

वहीं । इन्द्र-धनुष के उदय-काल में निर्गुण्डी-वृक्ष के नीचे १ लाख जप ।

१२ शङ्खिनी—१ अष्टादशाक्षर : ॐ शङ्ख-धारिणि, शङ्खाभरणे ! ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा

२ एकोन-विंशत्यक्षर : ॐ ह्रीं शङ्ख-धारिणि, शङ्खाभरणे ! ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं स्वाहा

वहीं, पृष्ठ २६ । सूर्योदय में शुद्ध लिपे हुए पट्ट पर मूर्ति बनाकर नित्य श्वेत पुष्पों व खीर से पूजाकर १० सहस्र जप । घृताक्त कनेर की समिधा से दशांश होम ।

१३ चान्द्री (चन्द्रिका)—१ नवाक्षर : ॐ ह्रीं चन्द्रिके ! हंसः स्वाहा

२ दशाक्षर : ॐ ह्रीं चन्द्रिके ! हंसः क्लीं स्वाहा

वही । शुक्ल-पक्ष मे प्रतिपदा से पूर्णिमा तक नित्य तब तक १० लाख जप करे, जब तक चन्द्रमा दिखाई न दे ।

१४ श्मशानी—पञ्च-दशाक्षर : ॐ हूं ह्रीं स्फूं श्मशान-वासिनि, श्मशाने ! स्वाहा

१५ वट-यक्षिणी : १ दशाक्षर : पद्मा-द्वयं यक्षिणीति सन्चन्द्रं गगन-द्वयं, वैश्वानर-प्रियान्तोऽयं दश-वर्णो मनुर्मतः—श्रीं श्रीं यक्षिणि हूं हूं हूं स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १६२। ऋषि विश्रवा, छन्द पंक्ति, देवता वट-यक्षिणी। मन्त्र के १, १, ३, ३, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

स्मरेच्चम्पक-कान्तारे रत्न-सिंहासन-स्थिताम्।
सुवर्ण-प्रभां रत्न-भूषाभिरामां, जपा-पुष्प-सच्छाय-वासो युगाढ्याम।
चतुर्दिक्षु दासी-गणैः सेवितांघ्रि, भजे सर्व सौख्य-प्रदा यक्षिणीं ताम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर जपा-पुष्पो से दशाश होम।

२ द्वा-त्रिंशदक्षर : पद्म-नाभो वियद्-वायू भिण्टीशस्थौ स-दृग् वियत्, यक्षि यक्षि महा-यक्षि वट तोय स-नासिक। क्ष-निवासिनि शीघ्र मे सर्व-सौख्य कुरु-द्वय, स्वाहा द्वा-त्रिंशदर्णोऽय मन्त्रोऽखिल-समृद्धिदः—एह्येहि यक्षि यक्षि, महा-यक्षि, वट-वृक्ष-निवासिनि! शीघ्रं मे सर्व-सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा

'वही', पृष्ठ १८७। ऋषि विश्रवा, छन्द अनुष्टुप्, देवता वट-यक्षिणी। मन्त्र के ३, ४, ४, ८, ७, ६ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

अरुण-चन्दन-वस्त्र-विभूषितां, स-जल-तोयद-तुल्य-तनू-रुचम्।
स्मर-कुरङ्ग-दृशं वट-यक्षिणीं, क्रमुक-नाग-लता-दल-युक्-कराम्॥

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' मिश्र खण्ड, पृष्ठ २८ के अनुसार ध्यान मे दो पाठान्तर हैं—रुच : रुहां, २ युक्-करा : पुष्करा।

पुरश्चरण मे दो लाख जप कर बन्धूक पुष्पो से दशाश होम।

२ त्रयो-विंशत्यक्षर : ॐ वट-वासिनि यक्ष-कुल-प्रसूते, वट-यक्षिणि! एह्येहि स्वाहा

३ पञ्च-विंशत्यक्षर : ॐ ह्रीं श्री वट-वासिनि, यक्ष कुल प्रसूते, वट-यक्षिणि! एह्येहि स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', वही। तिराहे मे वट-वृक्ष के नीचे बैठकर रात्रि मे ३ लाख जप।

१६ मेखला—१ द्वादशाक्षर : क्रोधीश-वन्हो मनिन्दु-युक्तो मदन-मेखले, हृदयाग्नि-प्रियान्तोऽय ताराद्यो द्वादशाक्षर.—ॐ क्रौं मदन-मेखले नमः स्वाहा

'वही', पृष्ठ १६३। ऋष्यादि 'वट-यक्षिणी'-मन्त्र के समान। पुरश्चरण मे महुए के वृक्ष के नीचे १४ दिनो तक प्रतिदिन दस सहस्र जप एवं महुए की समिधा मे मधु-युक्त महुए के पुष्पो से एक सहस्र आहुति।

२ ॐ ह्रूं मदन-मेखले! नम. स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ ३१। विधि वही।

१७ विकला—१ दशाक्षर : ॐ विकले! ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा

२ ॐ विकले! ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा

वही, पृष्ठ ३१। अपने घर मे तीन मास मे एक लाख जप। कनेर-पुष्पो या सुरा व अन्न से दशाश होम।

१८ लक्ष्मी—१ दशाक्षर . श्रीं ह्रीं क्लीं महा-लक्ष्म्यै नमः

वहीं, पृष्ठ ३२। वट-वृक्ष पर चढकर १० सहस्र जप।

२ षोडशाक्षर : ऐं लक्ष्मी व श्रीं कमल धारिणि! हंसः स्वाहा

वही। १ लाख जप। कनेर-पुष्पो से दशाश होम।

१९ मानिनी—चतुर्विंशत्यक्षर । ॐ ऐं मानिनि ! ह्रीं एह्येहि सुन्दरि ! हस-हसमिह सङ्गमह स्वाहा

वहीं । चौराहे पर बैठकर सवा लाख जप । घृत-मिश्रित रक्त कमलों से दशांश होम ।

२० शत-पत्रिका—द्वादशाक्षर : ॐ ह्रां शत-पत्रिके ! ह्रीं ह्रीं श्रीं स्वाहा

वही, पृष्ठ ३३ । कमल-वन मे १ लाख जप । घृत-दुग्ध से दशांश होम ।

२१ सु-लोचना—एकादशाक्षर : ॐ क्लीं सु-लोचनादि-देवि ! स्वाहा

वहीं । नदी-तट पर ३ लाख जप । घी से दशांश होम ।

२२ सु-शोभना—द्वा-विंशत्यक्षर : ॐ अशोक-पल्लवाकार-कर-तले, शोभने, देवि ! श्रीं क्षः स्वाहा

वही । लाल वस्त्र, लाल माला पहन १४ दिनों तक जप करे ।

२३ कपालिनी—एक-विंशत्यक्षर : ॐ ऐं कपालिनि ! ह्रां ह्रीं क्लां क्लीं क्लें क्लौं हससकल ह्रीं फट् स्वाहा

वही, पृष्ठ ३४ । नित्य कपाल में चावल खाए और दो लाख जप करे ।

२४ विलासिनी—अष्टा-विंशत्यक्षर : ॐ विरूपाक्ष-विलासिनि ! आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लें स्वाहा

वही । सरोवर-तट पर ५० सहस्र जप । घृत-गुग्गुल से दशांश होम ।

२५ नटी—१ सप्ताक्षर : ॐ ह्रीं नटिनि ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ३५ । ऋषि विश्वामित्र । अशोक वृक्ष के नीचे चन्दन से मण्डल बनाए, उसके मध्य में मन्त्र लिख देवी की पूजा करे । धूप देकर ध्यान करे—

ॐ त्रैलोक्य-मोहिनी गौरीं विचित्राम्बर-धारिणीं, विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकी-वेष-धारिणीम् ।

प्रतिदिन एक सहस्र जप । मासान्त के दिन देवी का पूजन ।

२ नवाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ नटि ! स्वाहा

वहीं, पृष्ठ ३६ । कुंकुम से भोज-पत्र पर मण्डल बना उसके मध्य में मन्त्र लिख पंचोपचार से पूजन करे । नित्य तीनों सन्ध्याओ में तीन सहस्र जप एक मास । पूर्णिमा के दिन घृत, दीप जलाकर विधिवत् पूजन व रात भर जप ।

३ पञ्च-दशाक्षर : ॐ ह्रीं नटि, महा-नटि, स्वरूप-वति ! स्वाहा

वही । पूर्णिमा के दिन अशोक वृक्ष के नीचे पूर्ववत् मण्डल बना पूजन । भोजन रात्रि मे ही करे । अर्द्ध-रात्रि में चन्दन की माला में जप करे ।

२६ कामेश्वरी—१ दशाक्षर : ॐ आगच्छ कामेश्वरि ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ३७ । भोज-पत्र पर गोरोचन से प्रतिमा बनाकर ध्यान करे—

कामेश्वरीं शशाङ्कास्यां खेलत्-खञ्जन-लोचनां, मदालोल-गतिं कान्तां कुसुमास्त्र-शिलीमुखाम् ।

पूजा कर घृत-दीप निवेदित करे । शय्या पर आकर अकेले एक सहस्र जप करे । मासान्त मे पुनः पूजा करे । पर-स्त्री से दूर रहे ।

२ त्रयोदशाक्षर : ॐ आगच्छागच्छ कामेश्वरि ! स्वाहा

वही । पवित्र स्थान में तीनो सन्ध्याओ मे तीन सहस्र जप एक मास तक । मासान्त मे पञ्चोपचार-पूजन, घृत-पूर्ण-दीप-दान कर मन्त्र-जप ।

२७ स्वर्ण-रेखा—त्रयोदशाक्षर : ॐ वर्कशाल्मले, सुवर्ण-रेखे ! स्वाहा

वहीं, पृष्ठ ३८ । एक-लिंग के समक्ष पूजन कर कृष्णा प्रतिपदा से नित्य प्रात ८ सहस्र जप । रात्रि मे भोजन कर अर्ध-रात्रि में जप । एक मास तक ऐसा ही करे । फिर १५ दिनो तक अर्द्ध-रात्रि मे जप ।

२८ सुर-सुन्दरी—१ एकादशाक्षर : ॐ आगच्छ सुर-सुन्दरि ! स्वाहा

वहीं । प्रात उठे, स्नानादि कर आचमनपूर्वक 'ॐ सहस्रार हु फट्' से दिग्-बन्धन कर मूल-मन्त्र से प्राणायाम करे । मन्त्र के १, ३, २, ३, २ अक्षरो एव पूरे मन्त्र से षडङ्ग न्यास । ध्यान—

पूर्ण-चन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बर-धारिणीं, पीनोन्नत-कुचा रामा सर्वज्ञामभय-प्रदाम् ।

पाद्यादि एव पंचोपचारो से पूजा तीनो सन्ध्याओ मे कर एक सहस्र जप करे । मासान्त मे उत्तम बलि और पूजन । अन्य स्त्री से दूर रहे ।

२ द्वादशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ सुर-सुन्दरि ! स्वाहा

३ त्रयोदशाक्षर : ॐ आगच्छागच्छ सुर-सुन्दरि ! स्वाहा

४ ॐ नमो आगच्छ सुर-सुन्दरि ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ४० । चौथे मन्त्र को एक-लिङ्ग के समक्ष पूजन कर जपे और वही या पवित्र गृह मे शर्करा, घृत, गुग्गुल से दशाश होम करे । तीनो सन्ध्याओ मे तीन सहस्र नित्य जप एक मास तक करे । मतान्तर से एक लाख जप और पञ्चामृत से होम की विधि है । अष्टमी के दिन कुमारी-पूजन, भूमि-शयन और नमक-खटाई से रहित भोजन एक बार ।

२९ मनोहरी—१ दशाक्षर : ॐ आगच्छ मनोहरे ! स्वाहा

२ एकादशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे ! स्वाहा

३ त्रयोदशाक्षर : ॐ ह्रीं सर्व-कामदे, मनोहरे ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ४२ । नदी के तट या सङ्गम पर जाकर स्नानादि कर चन्दन से मण्डल बना उसमे मन्त्र लिखकर ध्यान करे—

कुरङ्ग-नेत्रा शरदिन्दु - वक्त्रां बिम्बाधरा चन्दन - गन्ध-माल्याम ।
चीनांशुकां पीन-कुचा मनोज्ञा सदा काम - करा विचित्राम् ।।

पृष्ठ ४३ मे एक पाठान्तर है—चीनांशुका : चीनांशुकी । ध्यान कर पञ्चोपचारो व मद्य से पूजन कर प्रतिदिन १० सहस्र जप करे । मासान्त मे रात्रि भर जप करे । मतान्तर है कि तीन सप्ताह जप करे । एक मत है कि रत्न से षट्-कोण लिखकर श्वेत वस्त्र पहन कर श्वेत ही आसन पर बैठकर जप करे ।

३० प्रमदा, प्रमोदा—१ षडक्षर · माया वह्न्यासनः शूरो मदे पावक सुन्दरो, षडर्णो मनुराख्यातो—ह्रीं प्रमदे स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १८१ । ऋषि शक्ति, छन्द गायत्री, देवता प्रमदा । 'ह्रा, ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

केयूर-मुख्याभरणाभिरामां वराभये सन्दधतीं कराभ्याम् ।
संक्रन्दनाद्यामर-सेव्य-पादां सत्-काञ्चनाभां प्रमदा भजामि ।।

पुरश्चरण में ६ लाख जप कर घृत से दशांश होम।

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ ४४ के अनुसार ऋषि 'मनु' और शक्ति 'ह्रीं'। षडङ्ग-न्यास क्रमशः '१ ॐ ह्रां ह्रीं, २ ॐ ह्रीं प्रं, ३ ॐ ह्रूं मं, ४ ॐ ह्रों दें, ५ ॐ ह्रौं स्वां, ६ ॐ ह्रः हां' से।

२ माया-प्रमोदे ठ-द्वन्द्वं षडर्णो मनुरुत्तमः—ह्रीं प्रमोदे स्वाहा

वही। ऋष्यादि 'प्रमदा'-मन्त्र-वत्, केवल देवता का नाम भिन्न है—'प्रमोदा'।

३ अष्टाक्षर : ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा

'हिन्दी मन्त्र महार्णव', मिश्र खण्ड, पृष्ठ ४७। आधी रात्रि को उठकर नित्य एक सहस्र जप।

२१ अनुरागिणी—१ द्वादशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि ! स्वाहा

२ चतुर्दशाक्षर : ॐ ह्रीं अनुरागिणि, मैथुन-प्रिये ! स्वाहा

३ षोडशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छानुरागिणि, मैथुन-प्रिये ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ४७। कुंकुम से भोज-पत्र पर प्रतिमा बनाकर उसके उदर में अष्टदल बनाए। उसके मध्य मे मन्त्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे। ध्यान—

ॐ शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशां नाना-रत्न-विभूषितां, मञ्जीर-हार-केयूर-रत्न-कुण्डल-मण्डिताम्।

प्रतिपदा से प्रतिदिन पुष्प, धूप, दीप द्वारा पूजन कर तीन सन्ध्याओ मे एक सहस्र जप। पूर्णिमा के दिन गन्धादि से पूजन कर घृत-दीप व नैवेद्य अर्पित कर अहर्निश जप करे।

२२ नख-केशिका—त्रयोदशाक्षर : ॐ ह्रीं नख-केशिके, कनकावति ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ४८। अपामार्ग के पास रात्रि मे भोजन कर जप करे २१ दिन तक। २१ वें दिन पूजन कर जप करे अर्धरात्रि तक।

२३ नेमिनी (भामिनी)—चतुर्दशाक्षर : ॐ ह्रीं महा-यक्षिणि, भामिनि, प्रिये ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ४६। चन्द्रग्रहण हो, तो तीन दिन निराहार रहकर स्पर्श से मोक्ष तक जप करे।

२४ पद्मिनी—१ सप्ताक्षर : ॐ ह्रीं पद्मिनि ! स्वाहा

२ नवाक्षर : ॐ आगच्छ पद्मिनि ! स्वाहा

३ त्रयोदशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि, वल्लभे ! स्वाहा

वही। कुंकुम से भोज-पत्र पर प्रतिमा बनाकर उसके वक्षःस्थल मे मन्त्र लिख ध्यान करे—

पद्माङ्गनां श्वेत-वर्णां पीनोन्नत-पयोधरां, कोमलाङ्गीं स्मेर-मुखीं रक्तोत्पल-दलेक्षणाम्।

पञ्चोपचारो से पूजन कर तीनों सन्ध्याओ मे एक मास तक नित्य तीन सहस्र जप। पूर्णिमा के दिन सविधि पूजा कर घृत-दीप जलाये। सारी रात जप करे। मतान्तर से एक-लिङ्ग के समक्ष चन्दन से एक हाथ विस्तृत मण्डप बनाकर उसमें पद्मिनी की पूजा करे। गुग्गुल की धूप देकर नित्य सात सहस्र जप करे।

पद्मावती—१ सप्ताक्षर : ॐ पद्मावति ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ५०। १२ लाख जप, पाँचवें दिन दशांश होम।

२ एकादशाक्षर : नानाचरण-पद्मावति ! स्वाहा

वही। चावल, उड़द व अन्न से पूर्ण कलश के समक्ष १० लाख जप, घृत-गुग्गुल-युक्त गुलाब पुष्प से दशांश होम।

३ एक-विंशत्यक्षर : ॐ पद्मावति, पद्म-कोशे, वज्र-वज्रांकुशे ! प्रत्यक्षा भवति

वही। अर्ध-रात्रि में मिट्टी के दीपक में घी की वत्ती जलाकर यव (जौ) के ऊपर रखे। उसी के समक्ष मिट्टी की माला में १००८ जप २१ दिनों तक।

४ द्वा-त्रिंशत्यक्षर : ॐ नमो धारणीन्द्रे, पद्मावति ! आगच्छागच्छ कार्यं कुरु कुरु सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा

वही, पृष्ठ ५१। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा तक तीन दिन पूर्व या अग्नि-कोण को मुख कर नित्य एक सहस्र जप।

३५ स्वर्णावती (कनकावती) —१ द्वादशाक्षर : ह्रीं आगच्छ कनकावति ! स्वाहा

वहीं, पृष्ठ ५२। बिल्व-वृक्ष के नीचे चन्दन से मण्डल बना उसमे यक्षिणी की पूजा करे। शश के मांस को अभिमन्त्रित कर बलि दे। सात दिनों तक प्रतिदिन एक सहस्र जप।

२ त्रयोदशाक्षर : ॐ कनकावति, मैथुन-प्रिये ! स्वाहा

वही। वट-वृक्ष के नीचे सात दिनों तक मद्य-मांस की बलि देकर प्रतिदिन एक सहस्र जप।

३ ॐ कनकावति, करवीरके ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ५३। कृष्णाष्टमी से अमावास्या तक नित्य तीन सहस्र जप। नीम की समिधा में घृत से दशांश होम। होम की भस्म अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाए।

वहीं। वट-वृक्ष के नीचे पूजा कर प्राणायाम कर 'ह्रीं' से षडङ्ग-न्यास करे। ध्यान—

ॐ प्रचण्ड-वदनां गौरीं पद्म-बिम्बाधरां प्रियां, रक्ताम्बर-धरां रामां सर्व-काम-फल-प्रदाम्।

४ सप्त-दशाक्षर : ॐ ह्रीं रक्त-वर्मणि आगच्छ कनकावति ! स्वाहा

सात दिनों तक नित्य १० सहस्र जप। प्रतिदिन उच्छिष्ट रक्त से अर्घ्य दे और रात भर जप करे। मांस की बलि देकर पूजा करे।

३६ रति-प्रिया—१ अष्टाक्षर : ॐ ह्रीं रति-प्रिये ! स्वाहा

वही, पृष्ठ ५५। शङ्ख-लिप्त श्वेत वस्त्र पर गौर-वर्णा, कमल हाथ में लिये, सर्वालङ्कार-भूषिता देवी का चित्र बनाकर जाती-पुष्पों से पूजन कर एक सहस्र जप सात दिनों तक।

२ नवाक्षर : त-तुर्यं विन्दुना युक्तं लज्जा-बीजं स-विन्दुकं, लक्ष्मी-बीजं देवि ! सम्बोध्य च रति-प्रिया। स्वाहान्तो मन्त्र-राजोत्तमोत्तमः—धं ह्रीं श्रीं रति-प्रिये स्वाहा

मूल 'मन्त्र-कोष' में उद्धार भिन्न शब्दों मे है—'त-तुर्यं बिन्दु-संयुक्तं लज्जा-बीजं समुद्धरेत्, रमा-बीजं ततो देवि ! सम्बोद्धया च रति-प्रिया। वह्नि-जायावधि प्रोक्तो मन्त्र-राजोत्तमोत्तमः।'

३ दशाक्षर : (१) ॐ आगच्छ रति-करि स्वाहा

(२) त-तुर्यं विन्दु-संयुक्त लक्ष्मीः प्रणव. एव च, माया - बीज समुद्धृत्य सम्बोध्य च रति-प्रियां। वह्नि-जायामिति प्रोक्तो मन्त्र-राजोत्तमोत्तमः—धं श्रीं ॐ ह्रीं रति-प्रिये स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ १२१८। उक्त दोनों मन्त्रों के ऋषि कुबेर, छन्द पंक्ति, देवता धनदा, विनियोग 'श्रीधनदा-प्रीतये'। 'ह्रां, ह्रीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

कुंकुमोदर-गर्भाभां किञ्चिद्-यौवन-शालिनीं, मृणाल-कोमल भुजां केयूराङ्गद-भूषिताम्।

तुला-कोटि-परिभ्रान्त-पाद-पद्म-द्वयान्वितां, माणिक्य-हार-मुकुट-कुण्डलादि-विभूषिताम्।

नीलोत्पल-दृशं किञ्चिदुद्यत्-कुच-विराजितां, कराब्ज-भ्राम्यत् कमलां रक्त-वस्त्राङ्ग-रागिणीम् ।
हेम - प्राकार - मध्यस्थां रत्न-सिंहासनोपरि, ध्यायेत् कल्पतरोर्मूले देवीं तां धन - दायिकाम् ।।
पुरश्चरण में एक लाख जप कर पायस से दशांश होम ।
४ द्वादशाक्षर : ॐ ह्रीं आगच्छ रति-सुन्दरि ! स्वाहा
वहीं, पृष्ठ ५४ । श्वेत पत्र पर कमल हाथ में लिये देवी का चित्र बना सुनहले वस्त्रालकारों से सजाये । ध्यान—

ॐ सुवर्ण-वर्णां गौराङ्गीं सर्वालङ्कार-भूषितां, नूपुराङ्गद-हाराढ्यां रम्यां च पुष्करेक्षणाम् ।
गन्धाक्षत, पुष्प, ताम्बूल, जायफल, घृत-दीप द्वारा मूल-मन्त्र से पूजा कर एक मास तक जप करे । मासान्त में विधिपूर्वक पूजा करे ।

कुमारी देवी

कुमारी-पूजन का अपना विशेष महत्त्व है । प्रायः प्रति नवरात्र में और विशिष्ट अवसरों पर विविध कामनाओं से निर्दिष्ट आयु की कन्याओं में 'कुमारी देवी' की भावना कर यह अर्चन-पूजन किया जाता है । 'कुमारी देवी' के सम्बन्ध में तन्त्रों में और पुराणादि शास्त्रों में एक अलग परिच्छेद ही दृष्टिगत होता है । 'हिन्दू धर्म-कोष', पृष्ठ १६० पर इनके विषय में लिखा है—

'...शिव-पत्नी का एक नाम 'कुमारी' भी है । 'तैत्तिरीय आरण्यक' (१०. १. ७) में उन्हें 'कन्या कुमारी' कहा गया है । 'स्कन्द-पुराण' के 'कुमारी-खण्ड' में कुमारी का चरित और माहात्म्य विस्तार से वर्णित है । भारत का दक्षिणान्त अन्तरीप उन्हीं के नाम से सम्बन्धित है—'कुमारी अन्तरीप ।'...... स्मृतियों में द्वादश-वर्षीय कन्या का नाम 'कुमारी' कहा गया है ।...'नन्दा-कल्प' आदि ग्रन्थों में कुमारी-पूजन के प्रसंग में कुमारी 'अजात-पुष्पा कन्या' (जिसको रजोधर्म न होता हो) को कहा गया है । सोलह वर्ष पर्यन्त वह कुमारी रह सकती है । वय-भेद से उसके कई नाम हैं ।...'आगम-तत्त्व-विलास' की तन्त्र-सूची में 'कुमारी-तन्त्र' का छठा स्थान है । ...'

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ५८७ में 'नव-दुर्गात्मिका कन्या' का आवाहन-मन्त्र देकर नौ कुमारियों के नाम देकर उनके पूजन-मन्त्र दिए गए हैं । हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८५७-८६ में 'कुमारी मन्त्र' के अन्तर्गत रुद्रयामल, विश्वसार, कुब्जिका, यामल, योगिनी तन्त्रों के आधार पर सोलह कुमारियों के नाम और पूजा-मन्त्रों का विधान मिलता है । उससे ज्ञात होता है कि १० वर्ष से ऊपर की कन्या रजस्वला हो जाती है और वह 'महा-माया' हो जाती है । १२ वर्ष से २० वर्ष तक की कन्याएँ 'सुकुमारी' नाम से सम्बोधित होती है । कुमारी के विविध नामों में भिन्नता भी मिलती है । उदाहरण के लिए निम्न तालिका द्रष्टव्य है—

आयु-वर्ष	मन्त्र-महोदधि	मन्त्र-महार्णव	विश्वसार	कुब्जिका				यामल
१	—	सन्ध्या	कुमारी	(–)				(–)
२	कुमारी	सरस्वती	,,	(–)				सुन्दरी-मोहिनी
३	त्रि-मूर्ति	त्रिधा-मूर्ति	,,	(–)				,,
४	कल्याणी	कालिका	,,	(–)				,,
५	रोहिणी	सुभगा	,,	कुमारी				,,
६	कालिका	उमा	,,	कुमारी,	अभीष्ट-दायिनी			,,
७	चण्डिका	मिलिलनी	,,	,,	,,			,,
८	शाम्भवी	कुब्जिका	गौरी	कुमारी,	अभीष्ट-दायिनी,	कुलजा		,,
९	दुर्गा	काल-सन्दर्भा	रोहिणी,	,,	,,	,,		,,
१०	सुभद्रा	अपराजिता	कन्यका	,,	अभीष्ट-दायिनी,	कुलजा,	युवती	,,
११		रुद्राणी	महामाया	,,	,,	,,	,,	,,
१२		भैरवी	सुकुमारी	,,	,,	,,	,,	,,
१३		महा-लक्ष्मी	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१४		पीठ-नायिका	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१५		क्षेत्रज्ञा	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१६		अम्बिका	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१७-२०		सुकुमारी	,,	,,	,,	,,	,,	,,

'हिन्दी मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८६३-६४ में पूजा-पद्धति में १६ नाम दिए हैं, जिनके अनुसार चार नामान्तर मिलते हैं—१ त्रिधा-मूर्ति : त्रिमूर्ति, २ मिलिलनी : मालिनी, ३ काल-सन्दर्भा : काल-सङ्कर्षिणी, ४ अम्बिका : चर्चिका। वहीं ९ नामों का भी उल्लेख है, जिनसे 'मन्त्र-महोदधि' के नामों के प्रति भी चार नामान्तर ज्ञात होते हैं—१ कुमारी : कौमारी, २ त्रि-मूर्ति : त्रि-पुरा, ३ कालिका : कामिनी, ४ शाम्भवी : शाङ्करी। इस प्रकार 'हिन्दी मन्त्र-महार्णव' के अनुसार २५ कुमारी-नाम-मन्त्रों से पूजन का विधान है। वहाँ मुख्य देवता 'कुल-कुमारी' मानी गई है।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ १०८३ में 'यामल' के अनुसार जो १६ नाम दिए हैं, वे 'मन्त्र-महार्णव' के ही अनुरूप हैं, केवल चार नामान्तर हैं—१ मिलिलनी : मालिनी, २ काल-सन्दर्भा : काल-सङ्कर्षा, ३ पीठ-नायिका : कुल-नायिका, ४ अम्बिका : चण्डिका। वहीं पृष्ठ ११७४ में 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार जो ९ नाम दिए हैं, वे 'मन्त्र-महोदधि' के अनुरूप हैं, केवल एक नामान्तर है—सुभद्रा : शुभदा।

वहीं, पृष्ठ १०८६ में 'महा-काल संहिता' के आधार पर १८ नाम कौमारी देवी के बताए हैं—१ महा-चण्ड-योगेश्वरी, २ सिद्धि-कराली, ३ सिद्धि-विकराली, ४ महामारी, ५ वज्र-कापालिनी, ६ मुण्ड-मालिनी, ७ अट्ट-हासिनी, ८ चण्ड-कापालिनी, ९ काल-चक्रेश्वरी, १० गुह्य-काली, ११ कात्यायनी, १२ कामाख्या, १३ चामुण्डा, १४ सिद्धि-लक्ष्मी, १५ कुब्जिका, १६ मातङ्गी, १७ चण्डेश्वरी, १८ कौमारी। वहीं, पृष्ठ १०८७ में १८ भिन्न नाम दिए हैं—१ दुर्गा, २ नारायणी, ३ शिवा, ४ महा-माया, ५ योग-निद्रा, ६ कालरात्रि, ७ कपर्दिनी, ८ उग्रचण्डा, ९ भद्र-काली, १० अजिता, ११ अपराजिता, १३ महा-काली, १४ कामाख्या, १५ कुल-नायिका, १६ भैरवी, १७ भुवनेशी, १८ कौमारी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'कुमारी देवी' के नाम-मन्त्रादि के सम्बन्ध मे कितने शोध की आवश्यकता है। यहाँ उल्लिखित २५ नाम-मन्त्र और उनसे सम्बन्धित ध्यानादि को एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया है।

कुमारी देवी के मन्त्र

१ नव-दुर्गात्मिका कुमारी

आवाहन-मन्त्र : ॐ मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप-धारिणीं,
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।

'क्लां, क्लीं' इत्यादि से षडङ्ग-न्यास कर ध्यान करे—

ध्यान : शङ्ख-कुन्देन्दु-धवलां द्वि-भुजां वरदाभयां, चन्द्र-मध्य-महाम्भोज-हाव-भाव-विराजिताम्।
बाला-रूपां च त्रैलोक्य-सुन्दरीं वर-वर्णिनीं, नानालङ्कार-नम्राङ्गीं भद्र-विद्या-प्रकाशिनीम्।
चारु-हास्यां महाऽऽनन्द-हृदयां शुभदां शुभां, ध्याये द्वादश-पत्राब्जे पूर्ण-चन्द्र-निभाननाम्॥

मानस-पूजन कर नीचे दिए हुए मन्त्रो से पञ्चोपचार पूजनकर प्रत्येक कुमारी-मन्त्र द्वारा १६ वार पूजन-पूर्वक नमस्कार करे—

१ कुमारी (२ वर्ष) : ॐ ह्रीं कुमार्यै नमः
ॐ जगत्-पूज्ये जगत्-वन्द्ये सर्व-देव-स्वरूपिणि, पूजां गृहाण कौमरि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।

२ त्रि-मूर्ति (३ वर्ष) : ॐ ह्रीं त्रिमूर्त्यै नमः
ॐ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रि-वर्ग-ज्ञान-रूपिणीं, त्रैलोक्य-वन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम्।

३ कल्याणी (४ वर्ष) : ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः
ॐ कालात्मिकां कलातीतां कारुण्य-हृदयां शिवां, कल्याण-जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।

४ रोहिणी (५ वर्ष) : ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः
ॐ अणिमादि-गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकां, अनन्त-शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।

५ कालिका (६ वर्ष) : ॐ ह्रीं कालिकायै नमः
ॐ काम-चारां शुभां कान्तां काल-चक्र-स्वरूपिणीं, कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।

६ चण्डिका (७ वर्ष) : ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः
ॐ चण्ड-वीरां चण्ड-मायां चण्ड-मुण्ड-प्रभञ्जनीं, पूजयामि महा-देवीं चण्डिकां चण्ड-विक्रमाम्।

७ शाम्भवी (८ वर्ष) : ॐ ह्रीं शाम्भव्यै नमः
ॐ सदानन्द-करीं शान्तां सर्व-देव-नमस्कृतां, सर्व-भूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।

८ दुर्गा (९ वर्ष) : ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवार्णव-विनाशिनि, पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति-नाशिनीम्।

९ सुभद्रा (१० वर्ष) : ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः
ॐ सुन्दरीं स्वर्ण-वर्णाभां सुख-सौभाग्य-दायिनीं, सुभद्र-जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।

२ षोडश कुल-कुमारी

आवाहन-मन्त्र : भगवति, कुमारि ! पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थय ।

पूजन-सङ्कल्प : अमुक-फल-प्राप्तयेऽमुक-कर्मण्यमुक-देव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये ।

षडङ्ग-न्यास : 'ॐ क्लां कुल-कुमारिके, ॐ क्लीं कुल-कुमारिके, ॐ क्लूं '' इत्यादि से ।

'शङ्ख-कुन्देन्दु-धवला०' इत्यादि से ध्यान कर मानस-पूजन कर गन्धादि उपचारों से बाह्य पूजन कर पहले 'कुल-कुमारी-नाम-मन्त्रों' से, जो नीचे दिये हैं, पूजन करे, फिर 'नव-दुर्गात्मिका कुमारी-नाम-मन्त्रों' से । अन्त में 'ॐ ह्रीं हंसः कुल-कुमारिकायै नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर पिछले पृष्ठों में दिये पूजा-मन्त्रों से प्रणाम करे । उन मन्त्रों में 'पूजयामि' के स्थान पर 'प्रणमामि' व 'पूजयाम्यहं' के स्थान पर 'प्रणमाम्यहं' कर ले ।

१ सन्ध्या : ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः
२ सरस्वती : ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः
३ त्रि-मूर्ति : ॐ ऐं त्रि-मूर्त्यै नमः
४ कालिका : ॐ ऐं कालिकायै नमः
५ सुभगा : ॐ ऐं सुभगायै नमः
६ उमा : ॐ ऐं उमायै नमः
७ मालिनी : ॐ ऐं मालिन्यै नमः
८ कुब्जिका : ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः
९ काल-सङ्कर्षिणी : ॐ ऐं काल-सङ्कर्षिण्यै नमः
१० अपराजिता : ॐ ऐं अपराजितायै नमः
११ रुद्राणी : ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः
१२ भैरवी : ॐ ऐं भैरव्यै नमः
१३ महा-लक्ष्मी : ॐ ऐं महा-लक्ष्म्यै नमः
१४ पीठ-नायिका : ॐ ऐं पीठ-नायिकायै नमः
१५ क्षेत्रज्ञा : ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः
१६ चर्चिका : ॐ ऐं चर्चिकायै नमः

'मन्त्र-महार्णव', पृष्ठ ८६२-६३ के अनुसार उक्त नामों के पूर्व 'ऐं ह्रीं श्रीं हूं हसौं.' और अन्त 'कुमार्यै नमः' जोड़कर पूजन करने का भी निर्देश है ।

विविध मन्त्र

१ गौरी

पृष्ठ ८६ पर गौरी देवी के तीन मन्त्र संग्रहीत है। मूल 'मन्त्र-कोष' का निम्न मन्त्र उन्हीं में संयोजित कर लेना चाहिये।

षोडशाक्षर—ह्री गौरि रुद्र-दयिते योगेश्वरि स-वर्म फट् द्वि-ठान्त: षोडशार्णोऽयं मन्त्र: सद्भिरुदीरित:—ह्रीं गौरि रुद्र-दयिते योगेश्वरि हुं फट् स्वाहा

२ कर्ण-पिशाचिनी

१ षोडशाक्षर : (१) तारो माया कर्ण-पिशा स-दृशौ कूर्म-घान्तिमौ, कर्णे मे विधि-दण्डीरो ठ-द्वयं षोडशार्णकं—ॐ ह्रीं कर्ण-पिशाचिनि कर्णे मे कथय स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १६६। ऋषि पिप्पलाद, छन्द निचृद्, देवता कर्ण-पिशाचिनी। मन्त्र के १, १, ६, ३, ३, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

चितासनस्थां नर-मुण्ड-मालां, विभूषितामस्थि - मणीन् कराब्जै:।
प्रोतां नरान्त्रैर्दधतीं कु-वस्त्रां, भजामहे कर्ण-पिशाचिनीं ताम्॥

पुरश्चरण में श्मशान में एक लाख जप कर विभीतक की समिधा से दशांश होम।

(२) ॐ कर्ण-पिशाचि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा 'मूल मन्त्र-कोष'।

२ अष्टादशाक्षर : कह-युग्मं कालिके च गृह्ल - युग्मं तथैव च, पिण्डं पिशाचि स्वाहेति द्वीपार्णः कथितो मनु:—कह कह कालिके! गृह्ल गृह्ल पिण्डं पिशाचि स्वाहा

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ १२२१। ऋष्यादि का उल्लेख नही है। ध्यान—

ध्यायेत् पिशाचीं चल-शूल-हस्तां, श्यामां सु-दीर्घां युवतीं त्रि-नेत्राम्।
क्रुद्धां विवर्णां तनु-वृत्त-मध्यां, गुञ्जा - फलै: कल्पित-हार-यष्टिम्।

पुरश्चरण में सूर्योदय से सूर्यास्त तक इक्कीस दिन जप करे। नित्य सायंकाल अपने आहार का पिण्ड बनाकर छत पर रख दिया करे। तीन सप्ताह में पिशाचिनी प्रत्यक्ष होकर सब कुछ बताती है।

३ कर्ण-मातङ्गी

त्रि-चत्वारिंशाक्षर : वाग्भवं हृदयं चाथ श्रीमातङ्गि-पदं वदेत्, अमोघे सत्य-वादिनि मम कर्णे-पदं तत:। अवतर-पद द्वेधा सत्यं कथय युग्मक, एह्येहि श्रीं च मातंग्यै नमस्त्र्यब्ध्यर्णको मनु:—ऐं नम: श्रीमातङ्गि अमोघे सत्य-वादिनि मम कर्णेऽवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नम:

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ८३२। वाग्भव से षडङ्ग-न्यास। पुरश्चरण में एक लाख जप कर पायस से दशांश होम।

४ वार्ताली

अष्टाक्षर : वाक् चन्द्र-शेखरो शार्ङ्गी पिनाकीशौ मनु-स्थितौ, लाङ्गलि-त्रितयं सेन्दु-वर्म-दीर्घे शुचि-प्रिया। वस्वक्षर-मनो: शत्रु-घातिन:—ऐं ग्लौं ठं ठं ठं हूं स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १६५ । ऋषि कपिल, छन्द अनुष्टुप्, देवत वाराही वार्तालो । मन्त्र के २, १, १, १, १, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

विद्युद्-रोचिर्हस्त-पद्मैर्दधाना, पाशं शक्तिं मुद्गरं चांकुशं च ।
नेत्रोद्भूतैर्वीति-होत्रैस्त्रि-नेत्रा, वाराही नः शत्रु-वर्गं क्षिणोतु ॥

पुरश्चरण में ८ लाख जप कर बिल्व-पत्र, हयारि (कनेर), धात्री-फल (आंवला), भृङ्गराज (भांगरा) और कुशो से दशांश होम ।

'वाराही वार्ताली' के अन्य दो मन्त्र प्रस्तुत कोष के पृष्ठ १६६-७० मे द्रष्टव्य हैं ।

५ आसुरी दुर्गा

दशोत्तर-शताक्षर : कटुके कटुकान्ते तु पत्रेऽन्ते सुभगे पदं, अनन्त-सुरि रक्तेऽन्ते पदं स्याद् रक्त-वाससे । अथर्वणस्य दुह्निते केशवोऽग्रो भगो बलो, अघोर-कर्म-शब्दान्ते कारिके अमुकस्य च, गतिं दह-द्वयं वर्णः पविष्टस्य गुदं दह सुप्तस्य तन्द्री नो दह-युग्मं प्रबुद्ध च, भृगुः स-चाली हृदयं दह-द्वन्द्वं हन-द्वय । पच-युग्मं तावदन्ते दह तावत् पचेति च, यावन्मे वशमायाति वर्मास्त्रे वह्नि-वल्लभा । तारादिरासुरी-मन्त्रो दशोत्तर-शताक्षरः—**ॐ कटुके, कटुक-पत्रे, सुभगे, आसुरि, रक्ते, रक्त-वाससे, अथर्वणस्य दुह्निते, अघोरे, अघोर-कर्म-कारिके ! अमुकस्य गतिं दह दह, उपविष्टस्य गुदं दह दह, सुप्तस्य मनो दह दह, प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह, हन हन, पच पच, तावद् दह, तावत् पच, यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ ६१७ । ऋषि अङ्गिरा, छन्द विराट्, देवता आसुरी दुर्गा, बीज 'ॐ', शक्ति 'स्वाहा' । मन्त्र के ६, ६, ७, ८, ११, ६५ के अक्षरों के समूहो मे से प्रत्येक के अन्त मे 'हु फट् स्वाहा' जोड़कर क्रमश. षडङ्ग-न्यास । ध्यान—

शरच्चन्द्र-कान्तिर्वराभीति-शूलं, सृणिं हस्त-पद्मैर्दधानाम्बुजस्था ।
विभूषां वराढ्याहि-यज्ञोपवीता मुदेऽथर्व-पुत्री करोत्वासुरी नः ॥

पुरश्चरण मे दस सहस्र जप कर घृताक्त राई से दशांश होम ।

६ स्वयम्वर कला

पञ्चाशदक्षर : तारो माया योगिनीति द्वयं योगेश्वरि-द्वयं योग-निद्रा भकरि स्यात् सकल-स्थावरेति च । जङ्गमस्य मुखं प्रोच्य हृदयं मम सम्पठेत्, वशमाकर्षय पवनो वह्नि-सुन्दरी—**ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगेश्वरि योग-भयङ्करि सकल-स्थावर-जङ्गमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षया-कर्षय स्वाहा**

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १७३ । ऋषि पितामह, छन्द अति-जगती देवता, गिरि-पुत्री स्वयम्वरा । षडङ्ग-न्यास के मन्त्र—१ जगत्-त्रय-वश्य-मोहिन्यै, २ त्रैलोक्य-वश्य-मोहिन्यै, ३ उरग-वश्य मोहिन्यै, ४ सर्व-राज-वश्य-मोहिन्यै, ५ सर्व-स्त्री-पुरुष-वश्य-मोहिन्यै, ६ सर्व-वश्य-मोहिन्यै । इनमे से प्रत्येक के आदि मे 'ॐ ह्रीं' जोड ले । ध्यान—

शम्भु जगन्मोहन-रूप-पूर्णं, विलोक्य लज्जाकुलितां स्मिताढ्याम् ।
मधूक-माला स्व-सखी-कराभ्यां, सम्बिभ्रतीमद्रि-सुतां भजेयम् ॥

पुरश्चरण मे चार लाख जप कर पायस से दशांश होम ।

७ मधुमती

१ एकाक्षर : दामोदरो विन्दु-युक्तो मधुमत्याः परो मनुः—ऐं

इस मन्त्र के ऋष्यादि और ध्यान अष्टाक्षर-मन्त्र के समान ही हैं। 'कुमारिका देवी' रूप में मधुमती का ध्यान करते हुए ५० लाख जप कर यथोक्त होम करे।

२ अष्टाक्षर : नारायणो विन्दु-युतो हृल्लेखांकुश-मन्मथा, दीर्घ-वर्म-ध्रुवो वह्नि-प्रेयसी वसु-वर्णवान्—आं ह्रीं क्रों क्लीं हूं ॐ स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १७८। ऋषि मधु, छन्द त्रिष्टुप्, देवता मधुमती। मन्त्रस्थ वीजों से पञ्चाङ्ग-न्यास कर शेष 'ॐ स्वाहा' से छठा न्यास करे। ध्यान—

नाना-द्रुम-लता-कीर्णे कैलास-गत-कानने—

अहि-लता-दल-नील-सरोज-युक्-कर-युगां मणि-काञ्चन-पीठगाम्।
अमर-नाग - वधू - गण - सेवितां मधुमतीमखिलार्थ - करीं भजे॥

पुरश्चरण में आठ लाख जप कर विल्व-पत्रों से दशांश होम।

८ वाणेशी

पञ्चाक्षर : सत्योऽग्नि-युक्तोऽनन्तेन्दु - संयुक्तं वीजमादिमं, एतस्यानन्त - संस्थाने शान्ति-युक्तो द्वितीयकं। ब्रह्मेन्द्र-शान्ति-विन्द्वाढ्यस्तृतीयं वीजमीरितं, भूधरो वसुधार्घीश-चन्द्राढ्यस्तत् तुरीयकं। सर्गी हंसः पञ्चमः स्यात् पञ्च-वीजात्मको मनुः—द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २१०। ऋषि सम्मोहन, छन्द गायत्री, देवता वाणेशी। विपरीत-क्रम से एक-एक कर पाँच वीजों से क्रमशः पञ्चाङ्ग-न्यास कर सम्पूर्ण मन्त्र अर्थात् पाँचों वीजों से छठा न्यास करे। ध्यान—

उद्यत्-भास्वत्-सन्निभा रक्त-वस्त्रा, नाना-रत्नालंकृताङ्गी वहन्ती।
हस्तैः पाशं चांकुशं चाप-बाणौ वाणेशी नः काम-पूर्ति विधत्ताम्॥

पुरश्चरण में पाँच लाख जप कर दशांश होम।

९ कामेशी

पञ्चाक्षर : माया-मन्मथ-वाग्-वीजे ब्लूं स्त्रौं पञ्चाक्षरो मनुः—ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रौं

वही, पृष्ठ २१५। ऋष्यादि 'वाणेशी' के समान, केवल देवता का नाम भिन्न है—कामेशी। षडङ्ग-न्यास में उसी प्रकार विपरीत क्रम से एक-एक वीज एवं सम्पूर्ण मन्त्र द्वारा। ध्यान—

पाशांकुशाविक्षु - शरास-बाणौ करैर्वहन्तीमरुणांशुकाढ्याम्।
उद्यत्-पतङ्गाभिरुचिं मनोज्ञां कामेश्वरीं रत्न-चितां प्रणौमि॥

पुरश्चरण में पाँच लाख जप कर पलाश (टेसू) के पुष्पों से ५० सहस्र होम।

१० कामेश्वरी भूतिनी

त्रयोदशाक्षर : तार-कूर्चास्त्र - युक्कामेश्वरि भूतिन्यतः परं, टेऽन्तं क्रोध-त्रयं कामेश्वरी-मन्त्र उदाहृतः—ॐ हूं फट् कामेश्वरि भूतिन्यै हुं हुं हुं

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ १२२५। ऋष्यादि का उल्लेख नहीं। ध्यान—

धाम-स्कन्ध-समागता मधु-लता-वासन्ति - पुष्पान्विता,
गायन्ती मधुराधर-स्मित-मुखी वीणावती चञ्चला।
रक्ताम्भोज - विलोचना मधु - मदैर्मत्ता समन्तादियम्,
पायात् पुष्प - धनुर्धरा मधुमती कामेश्वरी भूतिनी॥

पुरश्चरण मे रक्त का अर्घ्य देकर मास-भक्षण कर मासादि की बलि देकर सात दिनो तक प्रतिदिन एक सहस्र जप करे, तो कामेश्वरी भूतिनी सन्तुष्ट होकर सभी अभीष्टो को पूर्ण करती है।

११ बन्दी देवी

१ एकादशाक्षर : तारो हिलि-युग बन्दी देवी ङेऽन्ता नमोऽन्तक, एकादशाक्षरो—ॐ हिलि हिलि बन्दी-देव्यै नमः

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ १८३। ऋषि भैरव, छन्द त्रिष्टुप्, देवता बन्दी देवी। मन्त्र के १, २, २, २, २, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

स-तोय-पाथोद-समान-कान्तिमम्भोज-पीयूष - करीर-हस्ताम्।
सुराङ्गना-सेवित-पाद-पद्मा, भजामि बन्दीं भव-बन्ध-मुक्त्यै॥

पुरश्चरण मे दो लाख जप कर पायस से दशाश होम।

२ अष्टादशाक्षर : वाग्बीज भुवनेशानी रमा बन्दि च केशव, ऽमुष्य बन्ध ततो मोक्ष कुरु-युग्मं च ठ-द्वय। वसु-चन्द्रार्ण-मन्त्रोऽयं क्षिप्र बन्ध-विमोक्षदः—ऐं ह्रीं श्रीं बन्दि अमुष्य बन्ध-मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा

ऋष्यादि एकादशाक्षर-मन्त्र के समान।

१२ स्वप्नेश्वरी

त्रयोदशाक्षर : प्रणवः कमला स्वप्नेश्वरि कार्यं च मे वद, स्वाहा त्रयोदशार्णोऽयं मन्त्र.—ॐ श्री स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', पृष्ठ २०१। ऋषि उपमन्यु, छन्द बृहती, देवता स्वप्नेश्वरी। मन्त्र के २, ४, २, १, २, २ अक्षरो से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

वराभये पद्म - युगं दधाना, करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम्।
सिताम्बरां शारद - चन्द्र - कान्ति, स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर बिल्व-पत्रो से दशाश होम।

१३ शीतला

१ अष्टाक्षर : माया श्री शीतला ङेऽन्ता हृदन्तोऽष्टाक्षरो मनु—ह्रीं श्रीशीतलायै नमः

'मेरु-तन्त्र'। ऋष्यादि नवाक्षर मन्त्र के समान। ध्यान—

ध्यायेच्च शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बरा, मार्जनी-शूर्प हस्तां च रक्त पुष्प हिमार्चिताम्।
तैलादि मल-सपुक्त-वस्त्र-पोटलि शीर्षकाम्।

२ नवाक्षर . ध्रुव शिवा रमा शीतलायै हार्दं नवाक्षर—ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नम.

'मन्त्र-महोदधि' पृष्ठ २००। ऋषि उपमन्यु, छन्द बृहती, देवता शीतला। षडङ्ग-न्यास 'ह्रां श्री, ह्रीं श्री, ह्रूं श्री' इत्यादि से। ध्यान—

दिग्-वासस मार्जनिका च शूर्पं, कर-द्वये सन्दधतीं घनाभाम्।
श्रीशीतलां सर्व-रुजार्ति-नष्टौ, रक्ताङ्गराग स्रजमर्चयामि॥

पुरश्चरण मे दस सहस्र जप कर पायस से एक सहस्र होम।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ ११३१ में उक्त मन्त्र का उद्धार—'तारो माया रमा शीतलायै हृच्च नवाक्षरः।' वहाँ ध्यान भिन्न दिया है—

ध्यायामि शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बरां, मार्जनी-कलशोपेतां सूर्पालंकृत-मस्तकाम्।

१४ स्वप्न-वाराही

पञ्च-दशाक्षर : वेदादि-बीजं माया च हृद् दीर्घौ जल-पावकौ, घं स-दृक् सद्य-युग्-मेघा रे स्वप्नं सर्गिणौ च ठौ। कृशानु - वल्लभान्तोऽयं मन्त्रः पञ्च - दशाक्षरः—ॐ ह्रीं नमः वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा

'मन्त्र-महोदधि', २६५। ऋषि ईश्वर, छन्द जगती, देवता स्वप्न-वाराही, बीज 'ॐ', शक्ति 'ह्रीं', कीलक 'ठः ठः'। मन्त्र के २, ५, २, २, २, २ अक्षरों से षडङ्ग-न्यास। ध्यान—

मेघ-श्याम - रुचिं मनोहर - कुचां नेत्र-त्रयोद्भासिताम्,
कोलास्यां शशि-शेखरामचलया दंष्ट्रा-तले शोभिनीम्।
बिभ्राणां स्व-कराम्बुजैरसि - लतां चर्मापि पाशम्,
सृणिं वाराहीमनु-चिन्तये हय-वरारूढां शुभालंकृतिम्॥

पुरश्चरण मे एक लाख जप कर नील-कमल व तिलों से दशांश होम।

'पुरश्चर्यार्णव', पृष्ठ मे उक्त मन्त्र का उद्धार भिन्न शब्दों मे दिया है—'ॐ ह्रीं नमश्च वाराहि घोरे स्वप्नं विसर्ग-युक्, ठ-द्वय वह्नि-जायान्तो मन्त्रः पञ्च-दशाक्षरः।' वहाँ ध्यान भी भिन्न दिया है—

ततो ध्यायेद् घन - श्यामां त्रिनेत्रामुन्नत - स्तनीम्,
कोलास्यां चन्द्र - माला च दंष्ट्रोद्धृत - वसुन्धराम्।
खड्गांकुशौ दक्षिणयोर्वामयोश्चर्म - पाशकौ,
अश्वारूढां च कोलास्यां नानालङ्कार-भूषिताम्॥

संक्षिप्त नित्य-पूजा-पद्धति

अथ सर्वासां नित्य-पूजा-विधिः संक्षेपतो लिख्यते। आदावृष्यादिकं न्यासः, कर-शुद्धिस्ततः परं। अंगुली-व्यापक-न्यासौ, हृदादि-न्यास एव वा। ताल-त्रयं च दिग्-बन्धः। प्राणायामस्ततः परं। ध्यानं पूजा जपश्चेति सर्व-मन्त्रेष्वयं विधिः।

पूजा तु मूल-देवतायाः। एवं च मातृका-न्यासोऽप्यावश्यकः। तथा च जपार्थं सर्व-मन्त्राणां विन्यासं च लिपेर्विना, कृतं च निष्फलं विद्यात्, तस्मादादौ लिपिं न्यसेत्।

—मूल 'मन्त्र-कोष'

* * *

[अ]

अंशुः—ड़
अंशुमान्—अ, ऐ
अंशुकम्—ह्सौम
अकुलम्—हूँ
अकूपारः—रूं
अक्रूरः—ठ
अक्षति.—ट, य, यँ
अक्षम्—ॐ, ग्रौं
अक्षरात्मिका— :, अः
अक्षि—इ
अगः—द, रूँ
अगस्त्यः—ओ
अगिर.—र, रँ,
अगुणः—ॐ
अग्निः—इ, ऋ, ए, ऐ, र, रँ, हूं
अग्नि-क्रान्ता—स्वाहा
अग्नि-वधूः—स्वाहा
अग्नि-वल्लभा— स्वाहा
अग्नि-शुद्धः—ई
अग्नि-सुन्दरी— स्वाहा, ई
अघोरः—ओ, अं, हूं
अंकुशः—ई, क्रों, ञ, ट
अंकुशजः—ऋ, ऋ
अंकुशी—अ, ञ
अङ्गदः—ओ
अङ्गिरा—ए, ऐ
अंगुलिः—ञ
अंगुलि-मूलं—घ
अंगुष्ठं—आ
अचलः—द, ब, रूँ
अचलकीला—ल, लँ
अचला—ई, ल, लँ
अच्छासिनी—न
अच्युतः—अ, उ, ग्लौं
अजगत्प्राण—ट, ।, यँ
अजपा—हंसः
अजरः—अ, हुं
अजरामरः—ग
अजः—ऐ, स,द्रां, ध्रु
अजा-पालः—लृ
अजितः—अ, इ, उ ग, ग्लौं
अजेशः—ज, झ
अजेश्वरः—झ
अञ्जनम्— इ, ज
अञ्जनी—ड
अटवी—ज
अट्टहासः—ए, ग, स, ह, झ
अट्टहासिनी—न
अण्डजः—क, क्रँ, म
अतिथीशः—ऋ
अति-कालः—म
अतीता—ख
अतुला—ग
अत्रिः—द
अत्रि-नेत्रजः—ऐ, स, द्रां, ँ, ध्रु
अत्रीशः—द
अत्ययः—घ्रं
अत्युग्रः—ख्रौं
अथर्व-देहजा—लृ
अद्धा— ठ, न
अदितिः—ल, लँ
अद्रिः—द, रूँ
अद्रि-सुता—ऋ
अद्रीश्वरः—द
अधरः—ए, ऐ, ऐं
अधरोष्ठः—ऐ
अधि-घण्टिका— :, अ.
अधि-रूढ़ा—इ
अधोक्षजः—अ, उ, ग्लौं
अधोदन्तः—ओ
अधोदन्तगः—औ
अध्यर्णम्—ए
अनङ्ग.—ई, क, ख, ह, हँ, ग्लौं
अनङ्ग-मदनातुरा—त
अनङ्ग-मालिनी—लँ
अनङ्ग-मेखला—च
अनङ्ग-वादिनी—यँ
अनङ्ग-रुत्—आ
अनङ्गा—ज
अनङ्गांकुशा—श
अनन्तम्—आ, क्ष, ख, ह, हँ
अनन्तः—आ, ऋ, लृ, अं, अः,
लँ, ह, क्ष
अनन्त-क्षयः—क्ष
अनन्ता—:, ल, लँ
अनन्तेश.—आ
अनन्यजः—इ, क, ग्लौं
अनलः—र, रँ
अनल-मण्डल.—क्ष
अनल-वल्लभा—स्वाहा
अनादिः—ॐ
अनादिकः—ए, त
अनामिका—ऋ
अनिरुद्धः— अ,:, अः, वं
अनिलः—ट, द, य, यँ
अनुकम्पिनी—झ
अनुग्रहेशः, अनुग्रहेश्वरः—अ।
अनुच्चार्या—अः

अनुत्तरः—अ
अनुत्तर-वर्णकः—ॐ
अनुत्तराक्षरः, अनुत्तराक्षरी—अ
अनु-नासिकः—ङ, ञ, न, ँ, ꣳ
अन्तम्—म
अन्तकः—क, ग, ण, म, य
अन्तरिक्षम्—आ, क्ष, ख, ह, हँ
अन्त-विता—न
अन्त-स्थिता—ॠ
अन्तिकम्—क
अन्तिमः—क्ष
अन्त्यः—क्ष
अन्त्य-बाणः—सः
अन्धक-रिपुः—ए, ग, स, ह
अन्धकारः—ड
अन्धकारिणी—ओ
अन्धतमः—औ
अन्धम्—व, वँ
अन्यः—न
अपपारिकः—र, रँ
अपराजिता—लृ, वँ
अपर्णा—च
अपां नाथः—ॡँ
अपां पतिः—ॡँ
अपारः—ॐ
अप्पितम्—र, रँ
अबलम्—व, वँ
अब्जः—ऐ, द्रां, स, ꣳ
अब्ज-योनिः—कं, फ, म
अब्धि—ॡँ
अब्धि-द्वीपा—ल, लँ
अब्धि-मेखला—ल, लँ
अब्धि-रूपा—ड
अब्धि-शयनः—अ, उ, क्लीँ
अभ्रम्—आ, ख, च, यँ, ह, हँ

अभ्र-पुष्पम्—व, वँ
अभावः—ठ
अभिख्या—ए
अमतिः—ऐ, द्रां, स, ँ, ꣳ
अमरः—क्ष
अमर-नायकः—उ
अमरेशः—इ, उ, :, ल
अमर्त्य-कृत्—स
अमृत-दीधितिः—ऐ, द्रां, सं, ँ, ꣳ
अमृतम्—अ, लृ, ए, ओ, :, व, वँ, जूं
अमृता—ए, ऐ, अः
अमृताकर्षिणी—अं
अमृतादः, अमृताद्यः—ट
अमृताधरा—अः
अअमृताधार-शायिनी—ऐ
अमृतान्धः—ठ
मोघा—ठ, लँ
अम्बरम्—आ, आं, ख, ह, ह, हसौं
अम्बा—ॠ, लृ, अं
अम्बिका—घ
अम्बु—व, वँ
अम्बु-जन्मा—ॠ
अम्बुजं—ठ
अम्बुदः—ॠ, वँ
अम्बुधा—व, वँ
अम्बुधिः—आ, थ
अम्बु-भृत्—चं
अम्बु-भूः—ॠ
अम्भः—व, वं
अम्भोजं—ठ
अम्भोधिः—ॡं
अम्भोनिधिः—ॡँ
अम्भोराशिः—ॡँ
अरणिः—र, रँ
अरि-युक्—लँ

अरि-सूदनः—अ, उ, क्लीं
अरुः—न
अरुणः—उ, म, ह
अरुणा—ड, ठ, त, हँ, ज्रौं, स्फ्न
अर्कः—ॠ, लृ, म, ह, हं
अर्क-बन्धुः—घ
अर्क-मण्डलः—अ
अर्घः—उ
अर्घीशः—ऊ, लृ
अर्णः—व, वँ
अर्णवः—ॡँ
अर्ध-गण्डी—ख
अर्थः—श
अर्धः—ए, ड
अर्ध-चन्द्रः—ँ, ट
अर्धनारीशः—ढ
अर्ध-नारीश्वरः—ढ
अर्ध-बन्धुकः—ओ
अर्ध-मात्रा—:, अः, ए
अर्ध-मात्रिका—लृ
अर्धचः—लृ लृ
अर्धेन्दुः—अं, अः, ट
अर्बुदः—ॠ
अर्यमा—आ, म
अर्हः—इ, ल
अलकनन्दा—लृ
अवनिः—ल, लँ
अवनि-धरः—द, रु
अवनी—ल
अवलम्बिनी—च
अवहारिता—लं
अवमः—ऋ, ञ, थँ, :
अव्यक्तः—न, ॐ
अश्मन्—नमः
अश्मरी—नः.

अश्मरीश:—ओ
अश्व:—अः
अश्वर:—न
अश्विनी—स
अश्वी—अ
अष्टक:—अ, ए, ट
अष्ट-कर्ण:—क, फँ, म
अष्टमी—ऋ
अष्ट-मूर्ति:—ए, ग, स, ह
अष्ट-सिद्धि-भू:—ॐ
अष्टाक्षर:—ॐ
अष्टाशब्द:—ॐ
असि:—भ
असित:—लु, लृ, भ
असिता—ल, लं
असिताङ्ग:—इ, ग
असि-भीषणा—ओ
असुरा—अः
अस्त्रम्—फट्
अस्थि-धातु—श
अस्थि-माली—ए, ग, स, ह
अस्थि-संज्ञ:—श
अहं—हं
अहर्पति:—म
अहङ्कार:—फ, ड
अहङ्काराकर्षिणी—इ
अहस्कर:—घ, म
अहार्य:—द, रूँ
अहि-द्विट्—इ, ल

[आ]

आ:—क, फँ, म
आकर्षणम्—वषट्
आकल्पित:—क्ष
आकार:—अ
आकाश:—आ, ख, ग, ह, हँ
आकाश-तर:—इ
आकांक्षा—आ, भ, ध्रै
आकूत—रमरलमर क्षइहसईं
आकृति:—स
आखण्डल:—इ, ल
आखुग:—गँ
आगम-मालिनी—ण
आग्नेय:—य, र
आज्ञा-चक्रेश्वर:—क्ष
आज्यपा—क्ष
आत्म—अ
आत्मकम्—प
आत्म-ज्ञ:—भ
आत्म-ज्ञाना—ऐ
आत्म भू:—इ, क, फँ, म, क्लीं
आत्म-मुखी—ट
आत्म-शक्ति:—च, छ, ज
आत्मा—अ, आ, ऊ, अं, हं, हसौ.
आत्माकर्षिणी—ए, औ
आत्मानामिक—ड
आत्मान्तकेश्वर:—ऋ
आत्मिक-भू:—ओ
आदर:—अः
आदर-सू:—ऊ
आदि:—क, ॐ
आदित्य:—म, ऋ, ङ
आदित्य-वर्णा—ठ
आदि-देव:—अ, उ, ऊ, क्लीं
आदि-विन्दु—ड
आदि-भूता—ठ
आदिम:—घ, ध
आदिमा—ल, लं
आदि-शक्ति-भू:—आ
आदि-स्वर:—अ
आद्य:—अ
आद्या—ल, लं, ज, ट, क्रीं
आधारामभू:—प
आधार-शक्ति:—ए
आनन्दम्—उ, ड, हं
आनन्द:—उ
आनन्दा—ऋ, ठ
आनन्दाकर्षक:—ओ
आन्त:—इ
आन्वीक्षिकी—ज
आप:—व, वं
आप-सन्धि.—ऊ
आपूर्णम्—ऋ
आप्त.—अ
आप्त-तम:—आ
आप्यायनी—ओ
आमुक्ति:—य
आमोदा—ह्र
आम्नातेश्वर:—ऌ
आयुधम्—फट्
आलय:—क्ष
आलापिनी—च
आवक:—ट, य, यँ
आशयाश:—र, रँ
आशुग:—ट, ढ, ण, य, यं
आशु-शुक्षणि:—र, रँ
आश्रयाश.—र, रँ
आषाढी—त
आषाढीश:—ण
आसिका—ऐ
आसुर —म
आस्फुजित—श्रीं
आस्यराट्—आ
आह्लादिनी—द

[इ]

इक्षु:—प

इच्छा—झ
इडा—ल, लं
इडिका—ल, लं
इन्दिरा—इ, ई, लृ, श्रीं
इन्दुः—ऐ, स, म, द्रां, ँ, ठं
इन्द्रः—इ, ल, लं
इन्द्र-चापः—ऊ
इन्द्र-जनकः—क्लीं, ॡं
इन्द्र-धनुः—झ
इन्द्र-धाम—ऊ
इन्द्र-सूः—इ
इन्द्राक्षी—प
इन्द्राणी—इ, ऐ, च, प
इन्द्रादिः—ॐ
इन्द्रावरजः—अ, उ, क्लीं
इन्द्रियम्—घ
इन्धिका—उ
इरः—य
इरा—य, ल, व, लं, वं
इरेशः—अ, उ, क्लीं
इला—ल, लं
इलिका—ल, लं
इषु—:, अः

[ई]

ईकारः—श्रीं
ईरः—य
ईरा—ल, लं
ईशः—ए, ऋ, लृ, अं, ग, न, श, स, सौ, ह, हं
ईश-नेत्रम्—झ
ईशानः—अं, ए, ग, स, ह, हं
ईशान-पतिः—ड
ईशान-वल्लभा—ह्रीं
ईशानी—ई
ईश्वरी—द, र, ह्रीं
ईश्वरः—आ, ई, ऊ, ए, ओ ग, न, प, म, स, ह
ईहा—ॐ

[उ]

उः—ए, ग, स, ह
उग्रः—उ, ए, अं, ग, ढ, स, ह, हूं
उग्र-कालः—म
उग्र-गन्धिकः—क्लीं
उग्र-दर्पः—हूं
उग्र-बन्धनम्—म
उग्र-भैरवी—ऐ, ऐं
उग्र-शूल-धृक्—घ
उग्र-शेखरा—लृ
उग्र-हासिनी—लृ
उग्रा—आ, ऋ, क, ख, भ, रें
उग्रायुधः—ख
उच्च-सहर्ता—न
उच्चाटनम्—ज
उच्छूनकम्—च्छ्रीं
उज्जयिनी—थ
उज्जयिनी-पतिः—थ
उडु—त्रां
उडुपः—ए, ऐ, द्रां
उड्डीशेशः—प
उत्कारी—च
उत्तमः—ज, ट
उत्तर-भैरवः—ऐ
उदम्, उदकम्—व, वं
उदजः—आ
उदधिः—ॡं
उदधि वस्त्रा—ल, लं
उदरम्—म
उदर्चिः—र, रं
उदार-वेशः—ड
उदितात्मा—ङ
उद्गारिणी—व
उद्गारी—व
उद्दाली—ज
उद्देश्यः—ओ
उद्भिज्ज-रूपिणी—ओ
उद्यान-प्रदेश्वरी—ल
उन्नतिः—त
उन्मत्तः—ऐ, स
उन्मत्त-भैरव—लृ, ङ, ॐ
उन्मत्त-भैरवी—ऐ
उन्मत्तोन्मत्तकः—इ, क, क्लीं
उन्मादनम्—स
उन्मादिकः—घ
उन्मादिनी—ई, लृ, छ
उपघातिका—ओ
उप-ध्वनिः—ड
उपलम्—क्रूं
उपलः—क्रुं
उप-शान्ति-कृत्—लृ
उपस्थः—म
उपस्थाना—च
उपहारकः—प
उपान्त्यः—ल
उपान्त्यगः—लु
उपेन्द्रः—अ, उ, क्लीं
उभयदः—ॐ
उमा—इ, उ, अः, ख, दं, फ
उमा-कान्तः—ए, ग, ण, स, ह
उमा-पतिः—ए, ग, स, ह
उमेशः—आ
उरगः—द
उरोजः—ज, जं
उरोरुह—ज
उर्वरा—ल, लं
उर्वशी—आ

कालाः—अः
कालाग्निः—क, ह्स्त्रौं
कालादिः—म
कालानलः—हूं
कालान्तकः—उ
कालिका—ऋ, त, क्रीं
काली—अ, क, ख, ङ, क्रीं
कालेशः—म
काव्यम्—स्रौं
काव्यः—लृं, लृं, वौं, स्रौं
काशिका—आ
काशी-नाथ—ए, ग स, ह,
काश्यपी—ल, लें
काष्ठा—ट
काष्ठ-रूपा—घ
किङ्करः—झ
किङ्करी—ऊ, ऋ, दौं
किङ्किणी—ऋ, घ, ह्लौं
किञ्जल्कः—भ
किन्नरः—नमः
किन्नरी—ज
किल्विषम्—ऋ
कीनाशः—न
कीर्तिः—अ, इ, ऋ, ए, घ
कीलालम्—व, वं
कुः—ठ, ल, लं
कुक्कुटी—ड
कुक्षम्—क्ष
कुक्षिः—भ, प
कुचः—ज
कुच-मण्डलम्—झ
कुज्ञानी—ञ
कुञ्जरः—क्रां, पां
कुञ्जा—फ
कुटिलः—उ, ल
कुटिल (कुटिला)-रूपः—द
कुटिला—ट, द
कुटिला-श्रोत्रम्—ठ
कुट्टारः—द, रू
कुण्डलम्—अः, ठ, स
कुण्डल-द्वयम्—अः, :
कुण्डल-वक्त्रम्—अः, :
कुण्डली—ग, स, ह्रीं
कुण्डलीशः—ॐ
कुण्डिका—फ
कुण्डोदरी—लृ
कुत्सनः—क
कुत्सिता-वेषः—क
कुन्ती—क्रां, क्रीं
कुबेरः—द, सं
कुबेर-दृक्—लृ, लृ
कुब्जः, कुब्जा—अं
कुब्जाभा—छ
कुब्जिनी—न
कुमारः—ङ, श
कुमार-सूः—लृ, लृ
कुमुदः—ट, स, ं
कुमुदिनी-पतिः—ऐ, द्रां, स, ठं
कुमुदेशः—ऐ, द्रां, स, ं, ठं
कुमोदकः—अ, उ, क्लीं
कुम्भः—लृ, प
कुम्भ-तृतीयकः—व
कुम्भी—क्रां
कुरङ्गाक्षी—आ, स्त्रीं
कुरु-कुल्ला—अ, ऐ
कुलम्—ए, श, स, ह्, हें
कुल-कौलिनी—श
कुल-नायक—ऋ
कुल-मार्ग-स्थितः—ख
कुल-मालिनी—क
कुल-शालिनी—ट
कुल-सुन्दरी—लृ, घ
कुलाचलः—ए
कुलान्तक-निवासिनी—ग, द
कुलान्तक्षम्—ड
कुलान्तालय-वासिनी—ड
कुलीरः—फ
कुलेश्वरः—ए, ग, स, ह
कुल्ला—इ, ख
कुल्लुका—अं
कुशम्—च, वं
कुसुमम्—क
कुसुमायुधः—श, क्लीं
कुसुमी—लृ
कुसुमेषुः—इ, क, क्लीं
कुहूः—ऊ, भ
कूजिनी—व
कूटम्—श, क्लौं
कूट—ह
कूट-त्रयम्—ऐं क्लीं ह्रौं
कूट-पाणिः—ट
कूर्चम्—हूं
कूदिनी—ब
कूर्परः—ख, छ
कूर्मः—च, फ
कूर्मेश्वरः—च
कूलङ्कपः—रू
कूष्माण्डी—ओ
कृत्—घ, ज
कृत-रूपिणी—ह्रौं
कृतान्तः—ञ
कृतान्तकः—अं
कृतान्त-कृत्—ठ
कृतिः—श्रं
कृती—स्

कृतीशः—लृ
कृत्ति-वासाः—ए, ग, स, ह
कृपा—ऋ, ॠ, ऐं
कृपाद्वैतः—क
कृपीटम्—व, वं
कृपीट-योनिः—र, रं
कृशा—ह्रीं
कृशाङ्गिनी—ऐ
कृशानुः—ण, र, रं
कृशानु-रेता—ए, ग, स, ह
कृपा—ए
कृष्णः—अ, उ, थ, द, र, क्लीं
कृष्ण-गतिः—र
कृष्ण-वर्त्मा—र, रं
कृष्णा—थ, र, क्रीं
कृष्णाध्व—र
कृष्णार्चिः—र, रं
केकराक्षी—ञ
केतुः—ल, हुं
केदारः—ॐ
केदार-पीठः—अं
केनः—फ
केलि-वल्लभः—ओ
केलिनी—ॐ
केवलः—अं
केशः—उ, ध, प
केशरी—ठ
केशवः—अ, उ, क्लीं
केशी—अ, उ, क्लीं
कैटभ-जित्—अ, उ, क्लीं
कैटभारिः—ख
कैरवी—क
कैलासः—ओ
कैलास-निकेतनः—ए, ग, स, ह
कैलासेशः—ओ
कोकः—ऋ

कोटरः—इ, ई
कोटरा—क
कोटराक्षी—ए, ऐ
कोटरी—इ, ण
कोटरी-श्रोत्रम्—ण
कोपः, कोप-तत्वम्—क्ष
कोप-निवारणः—ह्
कोमलम्—ऋ, व, वं
कोल-वक्त्रा—उ
कोल-गिरिः—उ
कोल-गिरि-पीठ-निवासिनी—उ
कोशः—ष
कोष्ठपीशः—ऐ
कौमारी—उ, ऐ, ओ, घ, च, ञ, ड
कौमुदी—आ
कौमुदी-पतिः—ऐ, स, द्रां, ँ, छं
कौलिनी—ओ, ॐ, क, श, क्ष्मीं
कौशिकी—आ
क्रतु-ध्वंसी—ए, ग, स, ह
क्रिया—ऋ, ल
क्रुद्धः—म
क्रूर—ं (ॐ), : (अः)
क्रूर-तरः—ं (ॐ)
क्रूरेशः—ं (ॐ)
क्रोङ्कारः—क्रों
क्रोड़-कान्ता—स, सं
क्रोड-पुच्छः—द, त
क्रोड़ाङ्गः—च
क्रोधः—ऋ, : (अः), क्ष, क्रूं, हुं, हूं
क्रोधनः—ऊ, क
क्रोध-नायकः—फ
क्रोध-संहारः—स
क्रोधिनी—र
क्रोधीशः—क
क्लिन्ना—उ, म
क्लीव-वक्त्रम्—ड

क्लेदिनी—लृ, ब, क्रों
क्लेदुः—ऐ, स, द्रां, ँ, छं
क्लेशितः—म
क्वाणः—भ्रौं
क्षणदा—त्त
क्षतजः—व
क्षतजोक्षितः—र
क्षत्रिणी—छ
क्षपा—त्त
क्षपाकरः—ऐ, स, द्रां, ँ, छं
क्षमा—उ, ट, ठ, ध, न, ल, लं
क्षमावती—क्ष
क्षयः—लृ, क्ष, ॠं
क्षया—ठ
क्षरम्—व, वं
क्षरः—ऐ, फ
क्षान्तिः—उ, ड
क्षान्तिदं, क्षामकम्, क्षामिकम्—ॠं
क्षाम-खण्डा—ं (अं)
क्षामा—ह्रीं
क्षायिनी—ड
क्षारम्—न
क्षारोदधिः—अ
क्षितिः—ज, ल, लं
क्षिति-भृत—द, रू
क्षीरम्—य, यं
क्षीर-समुद्रजा—श्रीं
क्षीराब्धिः—रू
क्षीरिका-पीठ—ध
क्षीरोद-नन्दनः—ऐ, स, द्रां, ँ, छं
क्षीरोद-सम्भवा—श्रीं
क्षुधा—य
क्षुरकः—ॠं
क्षेत्रपः, क्षेत्र-पालः—क्ष, क्षं
क्षेत्र-रूपिणी—ऋ
क्षोणिः—स, सं

क्षोणि-प्राचीरम्—रूँ
क्षोभणम्—द्रां
क्षोभिणी—म
क्षौणि:— ल, लँ
क्षौणि-प्राचीरम्—रूँ
क्ष्मा—ल, लँ, क्ष
क्ष्मात्मक:—ऐ
क्ष्मा-भृत्—द, रूँ

[ख]

खम्—लृ, ह, हँ
खग:—आ, आं, लृ, ख, ह
खग-वती—ल, लँ
खगा—ट
खचमस:—ऐ, स, द्रां, ँ, ॐ
खञ्जन:—झ
खड्ग:, खड्क:—ख, खँ
खड्गिनी—ख
खड्गी, खण्डी—घ, ल, व
खड्गीश:, खड्गीश्वर:—घ, व
खण्डनम्—ल
खण्डनी—ल, लँ
खण्ड-परशु: (पर्शु:)—ए, ग, स, ह
खद्योत:—ह्रं, ह्रां
खनदा—ट
ख-प्रबन्धक:—(अं)
खर:—प
खरु:—ए, ग, स, ह
खर्व:—ड
खल:—श
खश्वास:—ट, य, यँ
ख-सस्थित:—क्ष
ख-सर्पण:—क, कँ, म
खान्त:—क, ग
खापगा—लृ
खेचर:—ट
खेचरी—अ, उ, ऊ, ऋ, च, ट, ठ, ह्स्ख्फ्रें
खेचरी-ध्वनि:—ण
खेजर:—ए, ग, स, ह
खेट-मुखी—ट
खेरक:—प
खेलक:—इ, क, क्लीं
ख्यातम्—ख्यूँ

[ग]

गगनम्—उ, भ्रं, ख, म, व, ह, हं
गगन-पति:—ध
गगन-रत्नम्—ग्लूं
गगनाम्बर-धारिणी—ण
गङ्गा—लृ, लॄ, ग
गङ्गा-धर:—ए, ग, स, ह, रूँ
गज:—आ, क्रां, प्रां
गज-कुम्भ:—ग
गज-गामिनी—ऋ
गज-मुख:—ग, गँ
गज-वक्त्रक:—ए
गज-साधनम्—क्रों
गजांकुश:—उ, ट
गजानन:—लृ, गँ
गजास्य:—गँ
गजेन्द्र:—क, ख
गजेश्वरी—झ
गडव:, गण्ड:, गण्डनामा—लृ
गण-नाथ—: (अ:), क
गण-नायक:—ऋ, क
गणपति—गँ
गण-पालक:—ल
गण-राट्—ख
गणाधिप:—लृ, ढ, गँ
गणाध्यक्ष:—ग
गणाम्बा—ए
गणिका—ह्रीं
गणेश:— : (अ:), क्ष, ग, गँ
गणेश्वर:—ग, क्ष
गणेश्वरी—ऐ
गत:—च, ल
गति:—ज, र
गदाग्रज:—अ, उ, क्लीं
गदाधर:—अ, उ, क्लीं
गदा-भृत्—अ, उ, क्लीं
गदिनी—इ
गदी-गदीश:—ख
गन्ध:—ट, त, श
गन्धर्व—इ
गन्ध-वती—ल, लँ
गन्ध-वह:, गन्ध-वाह:—ट, य, यँ
गन्धाकर्षिणी—ऋ
गन्धिनी—न
गभस्ति-मान्—म
गरुड:—ख, क्षि
गरुड-ध्वज:—अ, उ, क्लीं
गर्ग:—झ
गर्जनम्—ह
गर्जितम्—ट
गर्जिनी—इ, प
गर्भ-विमोचन:—स
गर्भ (गर्व)-शक्ति:—: (अ:)
गलत्—च
गल:—स
गाथा—ग, ल
गाथा-गन्धर्वग:—ग
गान्त:—ख, घ
गान्दिनी—ल, ल
गायक:—र
गायत्री—ओ, ग, भ, ॐ
गायत्री-बीज-पञ्चाश:—ॐ
गायन:—इ, क, ज, ल, क्लीं
गारुडी—ऋ
गार्ण—ग
गिरि—उ, ट, द, व, रूँ

चक्रभृत्–अ, उ, क्लीं
चक्र-वालुका–ख
चक्राधारः–हुं
चक्रि–द
चक्रिणी–च
चक्री–अ, उ, क, क्लीं
चक्षुः–वौषट्
चक्षुषः–म
चञ्चलः–च, झ, ट, य, यें
चञ्चला–ध
चञ्चलाक्षी–र
चञ्चुः–अं
चटी–ह्रीं
चण्डः–उ, ऊ ओ, ख, न, ऐं
चण्ड-भैरवः, चण्ड-भैरवी–औ
चण्ड-मुण्ड-धरः–च
चण्ड-मुण्डा–ए
चण्डला–द
चण्ड-वल्लभ.–उ
चण्ड-वारुणः, चण्ड-विक्रमः–च
चण्डा–इ, ग, ड
चण्डांशुः–म
चण्डिका– आ औ, अः, ठं-ठं
चण्डिकेश्वरः–ए, ऐ, एं
चण्डी–इ, अः, च, फ, वषट्
चण्डीभम्–ह्रीं
चण्डीशः–ख, श
चण्डोग्रा–ई
चतुराननः–क, कं, ज
चतुरानना–ज
चतुर्थाद्यः–त
चतुर्दश-स्वरः, चतुर्दशो–औ
चतुर्मात्रः–ॐ
चतुर्मुखः–अ, एं, क, कं
[चतुर्मूर्तिः–छ
चतुष्कलम्–हुं चतुष्कलः–हूं

चतुष्पादः–ॐ
चतुस्तनः–छ
चतुस्तारा–भ
चत्वरा–ए
चन्दनः–घ, च, छ
चन्दिनी–न
चन्दिरः–ए, स, द्रां, छं
चन्द्रः–इ, ई, एं, अं, च, छ, ल, स, एं, ग्लौं, द्रां, छं, स्वं, स्वौं
चन्द्र-कान्तः–ख
चन्द्र-घण्टिका–श्रं
चन्द्र-पुर-पीठः, चन्द्र-पुरी–अः
चन्द्र-बिम्ब, चन्द्र-मण्डलम्–ठ
चन्द्रमाः–ए, ड, च, स, द्रां, छं
चन्द्र-युग्मम्–स्वाहा
चन्द्र-रुक्–त
चन्द्र-रूपः–च
चन्द्र-वसनम्–ऐ
चन्द्र-वेगः–च
चन्द्र-शेखरः–ए, ग, स, ह
चन्द्राद्याधः–क
चन्द्रान्त.–ह
चन्द्रापीड.– ए, ग, स, ह
चन्द्रिका–लृ, थ
चन्द्री–म
चपला–ड
चरः–ए, च
चरण·–ल
चरमा–ण, प
चरित्रा–च
चरित्रेशी–द
चरुः–घ
चर्म–ए, ऐ, घ, व
चर्मण्यम्–ऐ
चर्म-वसनम्–ऐं

चर्माणम्–ऐ
चलः, चलनः–च
चलापकः–ड
च-वर्गमः–झ
चाणूर-सूदनः–अ, उ, क्लीं
चापः–ऊ, क, घं
चापिनो–ट
चामी–य
चामुण्डा–अ, ए, श्रो, अं, अः, च, छ, य, व, द्रां, चीं
चारः–ण
चारणः–ए
चारी–छ
चारु–व, छीं
चारुकम्–छीं
चारु-हासिनी–ञ
चार्वङ्गी–ऐ, ऐं, छीं
चालकः–इ, च
चालु-बाधा–त
चित्–ऐं
चित्-कारी–च
चित्त-जन्मा–क, क्लीं
चित्त-तर्जः–ऋ
चित्त-वासिनी–ट
चित्त-विद्राविणी–ऐ
चित्ताकर्षिणी–लृ
चित्तेन्द्राणी–ऐ
चित्र-कारी–च
चित्र-कूटः–लृ, लृ
चित्र-कोणः–ऐ
चित्र-चारी, चित्रधारी–च
चित्र-भानुः–म, र, रं
चित्र-मूर्तिः, चित्र-मूर्तीशः–ई
चित्र-वसना–अ
चित्रा–ट
चित्राटीरः–ऐ, स, द्रां, ं, छं

चित्रिणी—इ
चिच्छक्तिः—औ
चिन्ता—घ
चिन्ता-मणिः—क, कँ, रक्ष्म्र्यीं
चिह्नम्—हूं
चूड़ा—वषट्
चूर्णिता-बुद्धिः (सिद्धिः)—ञ
चेटिका—उ
चेटी—ह्लौं
चेतनः—च
चेष्टा—य
चैतन्यम्—ह
चैलम्—ह्सौम्
चौरकः—त

[छ]

जगदीशः—अ, उ, क्लीं
जगद्—लृ, स
जगद्धात्री—ॠ, औ, ड, द
जगद्-भावी (भावीन्द्रः)—व
जगद्-योनिः—ऐ
जगद्-द्रावी—व
जगन्नाथः—अ, उ, क्लीं
जगन्मयी—लृ
जगन्माता—ओ, ञ
जङ्घकः, जङ्घजः—ए
जङ्घा—ए, प
जङ्घिनी—म
जटा—ऐ
जटा-धरः—ए, क, कँ, ग, स, ह
जटालः—ज

जयन्ती-पुरम्—त
जयन्ती-प्रदा—आ
जय-श्रीः—औ, श्रौं
जया—उ, लृ, क, ज, झ, य
जयाननः—क
जया-पादः—फ
जया-वहः—भ
जया-वहा—ज
जयिनी—ग, ठ, य, प, ह्स्ल्ब्यूं
जरा—ख, ट
जराट्—ओ
जरामरः—ख
जरायु-रूपिणी—अः
जरा-हरा—ट
जल-कङ्कः, जल-काङ्क्षः (कांक्षः) —क्रां

त्रि-पुरान्तका—ए, ग, घ, स, ह
त्रि-पुराम्बा—ॠ
त्रि-पुरेशी—ऊ
त्रिपुरेश्वरी—आ
त्रि-बलि-प्रियः—ब
त्रि-बिन्दु—छ
त्रि-मातृका (मातृकः)—औ
त्रि-मात्रा—ॐ
त्रि-मात्रा—ऊ, ॠ
त्रि-मूर्तिः—इ, क्लीं
त्रि-मूर्तांशः—ई
त्रि-यात्रकः—ण
त्रि-रण्डा—म
त्रि-रामी—थ
त्रि-रेखः—ण
त्रि-लोका—ॠ
त्रिलोकी-वश्य-कारकः—ख
त्रि-लोचनः—ए, ग, च, स, ह
त्रि-लोचन-प्रियः—म
त्रि-लोचना—अः
त्रि-वक्रः—उ
त्रि-वर्णा—द
त्रि-वर्णिका—उ
त्रि-विक्रमः— अ, इ, ॠ, ए, क्लीं
त्रि-विन्दुः—छ
त्रि-वृत्, त्रि-शिखः—ॐ
त्रिशूलः—औ
त्रिशूली—ज
त्रि-स्रोताः—ए
त्रैपुर-कामः—ह्स्क्लरीं
त्रैपुर-वाग्भवम्—ह्स्क्लरैं
त्रैपुर-शक्तिः—ह्स्क्लरौं
त्रैलोक्य-प्रसना-मकः—क्ष
त्रैलोक्य-मोहनः—क्लीं
त्रैलोक्य-विजया—ओ
त्रैलोक्य-विद्या—घ, इ
त्रैलोक्य-हर्ता—घ
त्र्यक्षः, त्र्यक्षरः, त्र्यङ्कः—ॐ
त्र्यम्बकः—ए, ग, स, ह, ॐ
त्र्यर्णः, त्रैगुण्यः—ॐ
त्वक्—य
त्वरा, त्वरिता—ऐं
त्वष्टा—इ, ई, मं
त्विषाम्पतिः—म

[थ]

थान्तः—द

[द]

दंष्ट्रिका—छ
दंष्ट्रिणी—अः
दकम्—व, वं
दक्ष-कटिः—ट
दक्ष-कपोलः—लृ
दक्ष (दक्षिण) कर्णः—उ
दक्ष-कारः—घ
दक्ष (दक्षिण) कूर्परः(कूर्पगः)—ख
दक्ष गण्डः, दक्ष-गतः—लृ
दक्ष-गुल्फः—ड, घ
दक्ष -गुल्मगः—ड
दक्ष-जङ्घा—ओ, ड
दक्षजा—ठ
दक्ष-जानुः—ए, ठ
दक्ष-जान्वग्रग.—ठ
दक्ष-दारणः—द
दक्ष-नादः—हुं
दक्ष-नासः—ॠ
दक्ष-नासाधिपः—थ
दक्ष-नासिका—इ
दक्ष-नेत्रम्—इ
दक्ष-पदाग्रगः—ण
दक्ष-पादः—ढ, ण, व, स
दक्ष-पादगः (पादांगुलः)—ट
दक्ष-पादांगुलि —ण
दक्ष-पादांगुलि-मूलगः—ढ
दक्ष-पादादिः—ट
दक्ष-पादामृतः—स
दक्ष-पार्श्वः—त, प
दक्ष-बाहुः—क्ष
दक्ष-बाहु-मूलम्—क
दक्ष-मुखः—ङ
दक्ष-स्कन्धः—क
दक्ष-स्फिक्—ट
दक्ष-हस्तः, दक्षिण-हस्तगः—श
दक्षहृत्—श
दक्षा—ए, ऐं
दक्षागुल्यग्रगः (ग्रजः)—ड
दक्षास्यः—ट
दक्षिणः—ॠ, क
दक्षिण-बाहुः—क
दक्षिणागुलि-मूलगः—घ
दक्षिणांगुल्यग्रगः—ङ
दक्षिणांशगः—र
दक्षिणा काली—ठ
दक्षिणी—ज
दक्षिणोखः—झ
दण्डः—अं, नमः
दण्डनः—द
दण्ड-विधायकः—ढ
दण्डिनी—ख
दण्डी—अं, थ
दण्डीशः—थ
दण्डोदरी—लृ
दण्डयः—अं
दनुजः—लॄ
दनुज-प्रभुः—लॄ
दनु-जातीशः—ख
दन्तः—ओ, व
दन्त-नामा—ॐ
दन्तान्तः—ऐ

दन्तावलः–क्रौं
दन्तिका–घ
दन्ति-शीर्ष-विभेदनः–क्रौं
दन्ती–क्रौं
दन्तुरः–इ, न
दमा–द
दमुना–र, रँ
दया–ऋ, ज, द
दर्दुरः–म
दर्पः–हूँ
दर्पकः–इ, क, क्लीं
दर्शकः–ओ दर्शनम्–घ, च,
दश-विपत्–ऐ, ह्रीं, स, छं
दशमी–लृ
दशाश्वः–ऐ, ह्रीं, स, छं
दहनः–न, र, रँ
दहनाङ्गना–स्वाहा
दाक्षायणी–उ, द
दाता, दात्री–द
दानम्–ण, व, र
दानवेज्यः–ओम्
दान्तः–घ, घ
दामोदरः–अ, उ, ऐ, अः, क्लीं
दारकः–ड
दारदः–हूँ
दारुणा–अं
दावः–र, रँ
दाशार्हः–अ, उ, क्लीं
दाहः–र, रँ
दिक्–स
दिगम्बरः–ए, ख, ग, स, ह
दिगम्बरा–ओ, घ
दितिः–ड, च, त
दिन-करः, दिन-मणि.–म
दिन-स्पा–प्र

दिवस्पतिः–म
दिवाकरः–ए, थ, म
दिवा-नाथः–क
दिवौका–क्ष
दीनः–द
दीनदः–घ
दीपः–र, ल
दीपिका–उ, ऊ, ऋ, ए
दीप्ता–म
दीप्ता–रँ
दीप्तिः–लृ, म
दीर्घः–आ, ई, अं, ज, न
दीर्घ-घोरणा–उ, ऊ
दीर्घ-जिह्वा–लृ, न
दीर्घ-तनुच्छदः–हूँ
दीर्घ-त्रयं–आ, ई, ऊ
दीर्घ-द्रोणा–न
दीर्घ-नासावती–ओ
दीर्घ-प्रणवः–ओम्
दीर्घ-बाहुः–छ, म
दीर्घ-बाहुकः–च, ज
दीर्घ-मारुतः–क्रौं
दीर्घ-मुखी–ऋ, ऋ
दीर्घ-वक्त्रा–ओ
दीर्घ-वाहा–ज
दीर्घ-सूः–म
दीर्घा–अ, इ, ठ, न
दीर्घायुः–ऊ, ऋ
दीर्घास्य-वृत्तकः, दीर्घी–आ
दीर्घेन्दु.–ई
दीर्घेशः–ऊ
दुर्गः–ख
दुर्ग-निवासिनी–ओ
दुर्गा–अ, ऐ, अं, ख, द, प, स, हं, दुं, दुं
दुर्दरा-शेखरा–ऋ

दुर्भगा–ल
दुली–म
दुश्च्यवनः–इ, ल
दुःख-प्रवर्तकः–अं
दुःख-सञ्चयः–अः
दुःखापहारी–अं
दृक्–इ
दृढ.–ल
दृश्–इ
दृश्य-केतुः–प
देवः–च, ट, क्ष
देवकी-नन्दनः(सूनुः)–अ, उ, क्लीं
देव-तरु.–ऊ
देवाताधिप.–इ, ल
देव-देवः–ए, ग, स, ह
देव-माता–ऋ, ॠ
देव-राजः–इ, न, ल
देवी–ऋ, फ, स, ह, ह्रीं
देवी-कोटः (पीठाधिपः)–च
देवी-प्रणवः–ह्रीं
देशः–प
देहिनी–ल, ल
दैत्य-गुरुः, दैत्य-मान्यः–सं, श्रीं
दैत्य-मान्य.–श्रीं
दैत्यारिः–अ, उ, क्लीं
दैवज्ञ.–ऋ, ऋ,
दोग्धी, दोग्ध्री–ऋ, हूँ
दोला–क्रौं
दोषाकरः–ए, ऐ, ह्रीं, स, छं
दौर्ग-माता–ऋ
द्युतिः–छ, ज, क्ष, क्लीं
द्यु-भङ्गी–ड
द्यु-मणि –म
द्यो, द्यौः–अ, ए, ह, हं
द्रावणः-बाण–क्लीं

द्राविणी—उ, ग, भ, ल, ण, द
द्रुघण:—क, कं
द्रुमारि:—क्रां, द्रुम:—अं, ल
द्रुहिण:—क, कं
द्लूद्लू—भ
द्वन्द्व:—ह
द्वयम्—अ:
द्वादशात्मा—म
द्वारकेश:—अ, उ, क्लीं
द्विज:—ओ, ग
द्विज-पति: (राज:)—ए, स, ग्रां, छं
द्विजा—ट
द्वि-जिह्वा—ड
द्विद्-स्तम्भन:—ल
द्वि-ठ:—स्वाहा
द्वि-तारी—ह्रीं श्रीं
द्वि-नटा—ट
द्वि-नेत्री—ण
द्विप:—क्रां, प्रां
द्विपा—ऋ
द्विपेज्य:—क्रों
द्वि-भुजा—ऊ
द्वि-मात्रा—ऋ
द्विरण्ड:, द्विरण्डेश:—न, प, व, भ
द्वि-रद:, द्वि-रदन:—क्रां
द्वि-रूपा—भा
द्विरेफ:—ण
द्वि-शीर्षक:, द्वि-स्व:—छ
द्वीप-वान्—ह्रं
द्वै-मातुर:—गं

[ध]

धनम्—क, घ, र
धनञ्जय:—र, रं
धनद:—द
धनदा—ग
धनार्य:, धनी—प
धनु:—ट, ॐ
धनुर्धर:—प, ल
धनेश:—घ
धनेश्वरी—लृ
धन्या—लृ, ऐ
धरुणा—ध
धरणि:, धरणी—ल, लं
धरणी-कीलक:—द
धरणी-धर:—अ, उ, द, क्लीं
धरणीध्र—च
धरणी-पूर:—ह्रं
धरणीश:, धरन्धरा—घ
धरा—ग, ल, लं, व, क्ष, ग्लौं
धरा-धर:—च, द
धरा-रुह:—अं
धरित्री—ल, लं
धर्म—अ, घ
धर्म-कृत्—ध
धर्म-गृह:, धर्मद:—अ
धर्म-द्रवी—लृ
धर्मैक-पाद:—ज
धवलम्—व, वं
धात-कर्तरी—ज
धातरी—व
धाता—क, कं, व, घ
धातु:—र
धातृ-भृत्—ध
धात्री—अ, ल, लं, ह्रीं
धान—य
धान्त:—न
धाम—ऐ
धामिनी—फ
धारण-शक्ति:—ए
धारणा—ध
धारयित्री—ल, लं
धारिणी—ट, द, ल, लं
धिय:, धी—ऐं
धी-मती—ई
धीर:—ङ
धीरा—ए
धुनी-नाथ—ह्रं
धू:—घ
धूप-भाजन:—फट्
धूम:—ग
धूम-ध्वज:—स
धूम-नेत्रा—आ
धूमर:—व
धूमा—ए
धूमावती—आ, धूं
धूम्र:—लृ, य
धूम्र-भैरवी—इ, ई, ट, ह्रीं
धूम्रा—ओ, ग, ज, व, य
धूर्जटि:, धूर्जटी—ए, ग, स, ह
धूलि-ध्वज:—ख, ट, य, यं, ह, हं
धृत:—य
धृत-पीठक:—फ
धृति:—ह, उ:, ऊ, ऋ
धेनु:—ग, व
धेनु-कारि:—अ, उ, क्लीं
धैर्याकर्षिणी—लृ
ध्रुव:—अ, उ, ए, ग, स, ह, क्लीं
ध्रौवम्, ध्रौव्यम्—अ:
ध्वजी—त
ध्वनि:—ट, ङ, न
ध्वांक्ष:—प्रीं
ध्वान्तम्—ल, लं

[न]

नकुली, नकुलीश:—ह, हं
नक्तम्, नक्षत्रम्—भ, ग्रां, ग्रों
नक्षत्र-नेमि:, नक्षत्रेश:—ऐ, ग्रां, स, छं
नखराधिप:—ड
नग:—द

नगात्मा—ढ
नगोत्तमः—ङ
नटः—च, हूँ
नटनम्—चँ
नटी—धोम्
नतिः—नमः
नदी, नदीनः—न
नन्दकः—इ, क, ग, क्लीं
नन्दजः—ट, ठ
नन्ददः—ठ
नन्दनः—इ, क, ग, घ, ठ, क्लीं
नन्द-नन्दनः—अ, उ, क्लीं
नन्दनेचरः—ग
नन्दयिता—इ, क, च, क्लीं

नरः—ट, ढ, थ, ध, न
नरक-जित्—अ, उ, ण, क्लीं
नरकान्त-कृत्—ढ
नर-भैरव—ऊ
नर-सिंहः—अ, उ, क्लीं, क्ष्रौं
नर-हारः—क्ष्रौं
नरायणः—अ, उ, क्लीं
नरुहः—ड
नरेश्वरः, नरेश्वर-प्रियः—घ
नर्त्तकम्—चँ
नर्त्तकः—इ, क, च, व, क्लीं
नर्त्तकी—ऊँ, खौं, थ्रौं, स्त्रौं
नलः—ग, थ
नलिनी—ट, ठ, ल

नाद-देवः—श, न, ॐ
नाद-रूपः—न
नादिनी—ए, न
नादी—न
नादेश-कृत-मण्डल.—भ
नाभसः—हं
नाभावः—ध
नाभि-गतः—भ
नाभि-जन्मा—क, कं
नाभि-देशः—व
नारम्—च, वँ
नारक-जित्—ण
नारदः—न
नारसिंहः—क्ष

निरक्षरः—अं, ॐ
निरञ्जनः—ऐं, ह्स, ज, प, न, हुं, ॐ
निरन्तरा—आ
निरामयः—म
निरालस्या—भ
निरीहः—प
निरीहेशः—द
निर्ऋति —क्ष
निर्गुणः—ढ, र
निर्जया—ए
निर्जरः—क्ष
निर्झरः—फ्रां
निर्झरी—द
निर्णयः, निर्णेता—न
निर्दीपकः—र
निर्धन.—ढ
निबलः—छ
निर्भरः—क्ष
निर्मला—ग
निर्वाणः—ण, ओ, ॐ

निष्कला—अः, य
निष्ठुरा—ञ
निष्फलम्—ण, फ
नीति.—ठ, ध
नीरम्—व, वँ, स्वाहा
नीरजम्—ठ, ठः
नीरुजा—अ
नील:—त, न
नील-कण्ठ.—ए, ग, स, ह, त्रीं
नील-केतुः—क्ष
नील-चरणः—लृ
नील-पताका—भ, ञ
नील-पदः—लृ, न, फ
नील-लोहितः—ए, ग, स, ह
नील-सरस्वती—ओ
नुतिः—न, नमः
नृ—म
नृरयम्—च
नृ-वाचकः—उ
नृसिहः—क्ष, क्षौं

पञ्च-दशी—अं
पञ्च-देवः—ॐ
पञ्च-धन्वा—इ, क, क्लीं
पञ्च-नखः—च, क्रौं
पञ्च-नाराचः—छ
पच-प ।ात्मिका—घ
पच-प्रणवः—ॐ, ओं, ऐं, ह्रं, हूं
पंच-बाणः—इ, क, क्लीं
पचमः—प, ॐ
पंचमी—उ
पच-यज्ञः—ठ
पंच-रश्मिः—ॐ
पच-राजः—छ
पंच-शरः—इ, उ, क, क्लीं
पंच-सुप्तः—च
पचाननः—ए, ग, स, ह
पंचान्तकः—ख, ग
पंचान्तकेशः—ग
पचास्त्रम्, पचेषुः—क्लीं
पण्यस्त्री—स्त्रीम्

पीतम्—ल
पीता—ल, प
पीताक्षः—ल
पीताम्बरः—अ, उ, क्लीं
पीयूषम्—ओं, ॐ
पीयूष-महाः—ए, द्रां, स, छं
पीलुः—क्रां
पीवरः—च
पुच्छक —त
पुण्डरीकम्—श
पुण्डरीकाक्ष —अ, उ, क्लीं
पुण्य-वर्धिनी—प
पुनः—अ, उ
पुनराश —औ
पुनर्नवः, पुनर्भवः—ट
पुनर्वसुः— अ, उ, क्लीं
पुनीता —अः
पुन्नादः—अं

पुष्पम्—घ
पुष्प-चापः—ठ
पुष्प-धन्वा—ज, झ, ञ, च
पुष्प-पूरः, पुज्य-वंशः—व
पूत-क्रतुः—इ, ल
पूतना—त, ल
पूतनारिः (नारी)—अ, उ, क्लीं
पूरणम्—ब
पूर्ण-गिरिः—ऋ
पूर्ण-चन्द्रः—ठ
पूर्ण-मण्डला—औ
पूर्ण-वान्—ऐ
पूर्णा—अ, अः
पूर्णिमा—अं
पूर्णोदरी—अ
पूर्वः—क, कं
पूर्व-दिक्-पतिः—इ, ल
पूर्व-फल्गुनी—छ

प्रकाशकः—क
प्रकाशनः—र
प्रकाशिनी—ञ
प्रकृतिः—अ, अः, र, स
प्रचण्डः—उ, ख, झ, प
प्रचण्डकः—प
प्रचेताः—व
प्रजा—ग, घ
प्रजा-पतिः—क, कं, म
प्रजेशः—ऊ
प्रज्ञा—ध, ॐ
प्रणवः—ॐ
प्रणवादिः, प्रणवादि-युक्—अ
प्रण्या—प
प्रतिपन्नः—क्ष
प्रतिरञ्जन-रूपिणी—अं
प्रतिष्ठा—आ, उ, ऋ, घ
प्रतिष्ठा-कला—ह्रीं

प्रमोदः—ट, ठ
प्रयागः—फ
प्र लम्बुपा—र
प्रलयः, प्रलय-क्षयः—ग्नुं
प्रलयाग्निः—न, फ
प्रशस्तिका—ह्रीं
प्रसादः—हं, ह्रीं, ह्सौं
प्रसूतिः, प्रसूनम्, प्रसूनः—घ
प्रस्यम्, प्रस्थः—ग्लौं
प्रस्य-वान्—द
प्रहर-रूपिणी—झ
प्रहारः—ण
प्राचीन-र्बाह —इ, ल
प्राज्ञः—ऐं
प्राणः—अ, क, य, स, ह, हं, प्रूं
प्राण-घोषः—हं
प्राण-जीव —ह्सौं
प्राण-धारकः—ओ
प्राण-रूपिणी— च
प्राण-शक्तिः—क
प्राण-सन्धि.—हं
प्राणात्मा, प्राणात्मिका—म

प्रीति-देवी—ऐं
प्रेतः—ह्सौः

[फ]

फट्-कारः, फट्-कारिणी—फ
फणाधर-धरः—ए, ग, स, ह
फणि-प्रियः—ट, य, यं
फणी—द्र
फरारः, फलम्—फ
फली—फ्रों
फादिः—प, व
फुत्कारः—फ
फेत्काटी—ह्स्ख्फ्रें
फेत्कारः—फ, न
फेत्कारिणी—घ, स्फों
फेत्कारी—हें, ह्स्ख्फ्रें
फेरुः—ड

[ब]

बकः—अ, लृ, द, श
बकेशः—श
बकोदरी—स
बगला—ध, ह्लीं, ह्सौं, ह्लीं
बधूः—स्त्रीं

बलि-प्रियः—ब
बलि-भुक्—च
बलि-भोजनम्—ह
बलि-भोजी—द
बलि-युद्धः—ब
बली—य, य, र
बहिः—म्रं
बहु-रूपः—क, कं, म
बहु-रूपी—म, ॐ
बाणः—ण, द्रां
बाधा—झ, थ
बालः—व, ग्लौं
बालकः—ह्रीं
बाला—अ, त्र, ऐं, य,
ऐं क्लीं सौः
बाला-त्रिपुरा—ऊ, ऐं क्लीं सौः
बालाद्य., बाला-प्रणवः—ऐं
बाली—उ, य
बालीशः—य, ॐ
बालेन्दुः—ट
बाहुः—श
बाहुगः—लृ
बाहु-मध्यगः—ध

बिलम्–थ
वीजम्–श्रं
वीज-प्रसूः–ल, लं
वीज-योनिका–अं
वीजाकर्षिणी–ओ
वुद्धिः–इ, ख, ठ, त, थ, द
वुद्धि-वर्द्धनः–ऐं
वुद्धयाकर्षिणी–आ
वुद्‌वुदम्–अं
बुधः–च
बृहत्–ब
बृहद्-भानुः–र, रं
बृहस्पतिः–ट
ब्रघ्न॰, ब्रघ्नः–म
ब्रह्म–अ, आं, क, ख, घ, ज, द, म, य, ॐ
ब्रह्मणः–अ
ब्रह्म-विद्या–ट
ब्रह्म-शक्तिः–ऐं
ब्रह्म-शब्दः–र
ब्रह्म-शङ्खी–ङ
ब्रह्म-सूः–इ, क, क्लीं
ब्रह्म-सूत्रम्–ओ
ब्रह्मा–क, कं, म, क्ष, ॐ
ब्रह्माणी–अ, ऋ
ब्राह्मी–आ, उ, लृ, अः, स

भग-वान्–अः
भग-सर्पिणी–छ, ज
भगस्या–छ
भगा–ऐ
भगाक्षी–ज
भगाली–ए, ग, स, ह
भगिनी–ङ
भगोदरी–घ
भद्रम्–म, म, व, य, स, सँ
भद्रः–क्रां
भद्र-कालिका–ऊ, ओ
भद्र-काली–थ, द, म, गँ
भद्र-पद्मम्–ऐ
भद्रा–इ
भद्रिका–म, भं
भद्रिणी–आ
भद्रेशः–ङ
भ-पतिः–ऐ, द्रां, स, छं
भम्–त्रां त्रों
भयद –ऐ
भयम्–ब, ब्लों
भया–ए, ब
भयानकः–य
भयङ्करः–ब
भयङ्करी–ऋ
भयावहः–म

भवेशः–अः
भव्या–आ, इ, ग
भा–हँ
भागीरथी–लृ
भाग्यम्–अः
भाग्या–छ
भानुः–क, ट, म
भाभू–र
भामिनी–ठ
भार-भूतिः–ऋ
भार्गवः–अ, लृ, अः, व्रौं
भार्गवी–ऋ
भालम्–अ
भाल-वद्धः–ग
भावनम्–अः
भास्करः–क, म
भास्वती–म, म
भास्वरा–ऋ
भास्वान्–इ, च, म
भी–ओ
भीगणः–ए, ड, ब, म, स, ह
भीमः–इ, ए, ग, च, ड, म, य, स, ह
भीम-दंष्ट्रिका–घ
भीम-नादिनी–घ्रीं
भीम-रूपिणी, भीमसेनः–म
भीमा–ठ, म, भं

भुवनम्–ओ, औ, व, वँ, स्वाहा
भुवन-माता–ल, लँ
भुवनेन्द्रः–ओ
भुवनेशः–ह, हँ
भुवनेशानी–आं, ह्रीं
भुवनेशी, भुवनेश्वरी–ह्रीं
भुवनाधीशा–ह्रीं
भूः–ऊ, भू, औ, ल, लँ, व, ग्लौं
भूतं–उ, फें, स्फें
भूतः–उ, घ
भूत-रम्पा–उ
भूत-धात्री–ल, लँ
भूत-धारिणी–ठ
भूत-नाथः–ए, ग, स, ह
भूतपः–ओ
भूत-भव्य भवत्तिथिः–ॐ
भूत-माला–छ, ज
भूतरिः–छ
भूताधि.–ङ
भूतिः–ऋ, ट, ह्रीं
भूतेशः–ए, ग, स, ह
भूतेश्वर-मन्त्र.–ऍं

भृङ्गेशः–इ, क, क्लीं
भृति.–श
भेकी–म
भेरण्डा–ई
भैरवः–ए, ग, ङ, ड, स, ह
भैरवी–इ, ऋ, घ, ज, ठ
भोगदा–ज
भोग-बीजम्–द
भोगिकान्तः–ट, य, यँ
भोगिनी– ं (अं), ग
भौतिकः–ए, ऐं
भौतिकासनः–ऐं
भौमजः, भौमिजः–ङ
भौवम्– : (अः)
भ्रमः–ढ, थ
भ्रमणः–इ, क, ठ, म, क्लीं
भ्रमघ्यः–इ
भ्रममाणः–इ, क, क्लीं
भ्रमरः–ण, भ
भ्रमा–ध, भ य
भ्रमावहः, भ्रमोऽपरः–इ, क, क्लीं
भ्रान्तः, भ्रान्त-चारः, भ्रामकः,
भ्रामणः–इ, क, क्लीं

मखान्तकः–ङ
मघवा–इ, ल
मघा–घ
मघाभूः–लृं, ब्रौं
मङ्गला–इ, लृ, क
मङ्गली–ढ
मज्जा–प
मज्जापाढा, मज्जास्था–थ
मञ्जरी–ठ, ड
मञ्जु-घोषः–क, कँ, म
मठम्, मठ-संज्ञः–ग्लौं
मणः–हँ
मणि-बन्धनः (बन्धनः)-
मणि-ग्रन्थ-पदात्मकः–ज
मण्डलम्, मण्डलः, मण्डूकः–म
मतङ्गः–म, क्रौं
मतिदा–ए
मत्तः–व, य, हुं
मत्तकः–भ
मत्त-नाशनः–य
मतिः–ई, घ, प, व
मत्स्यः–प
मथुरेशः– अ, उ, क्लीं
[illegible]– ङ, क, ङ, भ, क्लीं

मनः—ढ, प
मनसिजः—इ, क, क्लीं
मनस्विनी—ं (अं), अ
मनुः—औ
मनोगतम्—अ
मनोज्ञम्—छ्रीं
मनोधृतिः—ऋ
मनोन्मनी—उ, क्ष
मनोभूः—क, क्लीं
मनोभवः—क्लीं
मनोरथः—ऋ, क्ष
मनोरमा—ॠ
मनोहरी—ह्रीं, ह्लीं
मनोहारी—छ्रीं
मन्त्रः—म
मन्त्र-नाथः—ओ, औ
मन्त्र-मनुः—स्वाहा
मन्त्र-पूजा—छ
मन्त्र-विद्या-प्रसून-युक्—ॐ
मन्त्र-शक्ति—आ, ङ, च, छ
मन्त्रसूः, मन्त्राद्यः—ॐ
मन्त्रादि-शक्तिः—ड
मन्त्रेशः—ओ, म
मन्दः—घ
मन्दगमा—आ
मन्दाकिनी—ऌ
मन्दाक्षम्, मन्दास्यम्—ह्लीं
मन्मथः—इ, उ, क, म, श, क्लीं
मन्मथस्था—झ
मन्मथा—ज
मन्मथाधिपः—उ
मन्मथास्त्रम्—क्लीं
मपरः—श
मरीचिः—ऌ, घ, प
मरुत्—आ, ए, ट, ढ, त, य, प, स, यं
मरुत्वान्—इ, ल

मरुद्-गुणः—र
मर्त्य-रत्नम्—म्लूं
मलयः—य
मलिनम्—ढ
मल्ल-वर्या—घ
मस्तक-बीजम्—स्वाहा
मस्तिकः—त
महा-कच्छः—ऌं
महा-कान्ता—ल, लं
महा-काम-कला—ऌ
महा-कायः—ऊ
महा-कालः—ए, ग, ड, म, स, ह, हूं
महा-काली—क, ख
महा-कूर्चम्—हूं
महा-क्षोभः—क्ष
महा-अंकुश-बीजम्—क्रौं
महा-घोषः—ह
महा-जीव—म
महा-ज्वाला—आ
महा-ज्वाली—ठ
महा-मनुः—च
महा-तेजाः—क्ष
महा-त्रिपुर-भैरवी—ऌ
महा-त्रिपुर-सुन्दरी—ः (अः)
महा-देवः—क
महा-धनः—अ
महा-धन्वा—ट
महा-ध्वनिः—च
महा-नटः, महा-नरः—ए, ग, स, ह
महानन्तः—ड
महा-नलः—ऋ
महा-नादः—च, ॐ
महा-निशा—आ
महा-पथः—ठ
महा परा—ॐ
महाप्रेतः—ह्सौं

महा-बाहुः—व, म
महा-बिलः—अ, आ, ख, ह, हं
महा-ब्राह्मी—अ
महा-भैरवी—क्ष
महा-मतिः—न, श
महा-माता—स्वाहा
महा-मायः—ई, म
महा-माया—आ, ई, ठ, ह्रीं, ह्लीं
महा-यन्त्रा, महा-रथः—ठ
महा-रात्रिः—अ, ओ, ं (अं)
महा-रौद्री—ॠ
महा-लक्ष्मीः—औ, ं (अं), श
महा-लक्ष्मी-पुरेशः—ह
महा-विजया—श्म्यूं
महा-विद्या, हा-विद्येश्वरी—ऊ
महा-वेद-सारः—ॐ
महा-शक्ति-प्रसादः—ह्स्त्रौं
महा-सरस्वती-बीजम्—ज
महा-श्री-बीजम्—ज
महा-सिंहः—ह्स्क्ष्म्रौं
महा-सेनः—ः (अः), ड, ट
महिषघ्नीः—च
महिषघ्नी—ज
मही—उ, ल, लं
महीध्रः—व
महीरुहः—ं (अं)
महेशः—आ, ई, ऊ, ओ, ठ
महेश-शक्तिः—ह्रीं
महेश्वरः—ऐ, ः (अः), क, ह, ॐ
महेश्वरी—इ, व
महेन्द्रः—ऌ, श
महोत्सवा—उ
महोदरी—ए, औ
मांसम्—ल, लं
मांसात्मा—च
मा—श्रीं

माग्रग:–क्ष
मातङ्ग:–इ,क, ख, ञ,म,क्रां,क्लीं
मातरिश्वा–ट, य, यँ
माता–लृ, ल
मातृक:–ए, ऐ
मातृ-कण्टकी–ढ
मातृ-कला–: (अ:)
मातृका–ऐ
मातृकाद्य:, मातृकादि:–अ
मातृकान्त:–क्ष
मातृका-सू:–ॐ
मार्केश्वर:–ऐ
मात्रा–ञ, द
मात्राकर्षिणी–ओ
मात्रा-द्वादशी–ऐ
मात्रान्त-जीवन:–ठ
माद:–इ, क, क्लीं
मादन:–क
मादना–ए
मादिनी–म
माधव:–अ, इ, ऊ, क्लीं
माधवी–ध, ल, व
मानज:–ज
मानदा–लृ
मानदाकाशी–आ
मानव:–: (अ:)
मानसी–ङ
मानिनी–घ
मानी–म
मानुषी–ण
मान्या–भ, ल, म्लहौं
मायवी–स
माया–आ, इ, ई, उ, ऋ, लृ, लॄ, : (अ:), घ, भ, य, श, ह्रीं, ह्लीं
मायाकला–ई
मायात्मज:–घ

माया-पुरम्, मायापुर-हर:
माया-पुरेश्वरी–म
मायावी–लृ
मायी–ओ, व
मायोत्तरम्–उ
मार:–इ, क, क्लीं
मारजा–छ
मारसम्–अ
माराग्नि:–ऋ
मारुत:–इ, क, द, ठ, य, यँ
मारुतेश्वर:,मारुतेश्वर-पीठस्था–ज
मार्गण:–ण
मार्ज:–उ, उ, क्लीं
मार्तण्ड:–ञ, म, ह्रसौं, ह्सूं, ह्स्रौं
मार्तण्ड-भैरव:–ह्रयक्षोउ
मालव:, मालवेश्वर:–घ
मालव-प्रिया–य
माला–ई
माला-मयी–य
मालिनी–ऐ, ओ, अ:,घ,म, ह्लीं
मालिनी-विन्दु:–म
मालूर:–क्षौं
माहेन्द्राद्रि-निवासिनी–श
माहेशी–य
माहेश्वरी–इ, उ, ए, क, ख
मितानन्दा–ं (अं)
मित्रम्–इ, ऐ
मित्र:–म
मिथुनादया–ॠ
मिहिर:–म
मीन:–ध, प, य
मीन-केतन:–इ, क, क्लीं
मीन-नेत्रवरम्–स्त्रीं
मीन-केतु:–क्लीं
मीनेश:, मीनेश्वर:–ध, प
मुकुटम्–ट

मुकुन्द:–अ, उ, ट, क्लीं
मुकुर:–इ
मुक्त:–ऋ
मुक्त-केशी–ओ, अ
मुक्ति:–ओ, य, ह ॐ
मुखम्–अ:, क, ट, ध, प, व, क्ष
मुखज:–आ
मुखद:–अ
मुख-निष्ठ:–व
मुख-विन्दु, मुख-विष्णु:–व
मुख-वृत्तम्, मुख-वेष्टनम्–आ
मुखांकुरम्–इ
मुखी–ए, ओ, क
मुखेश्वरा–: (अ:)
मुग्धा–ण
मुञ्ज-केशी–अ, उ, क्लीं
मुण्डम्–ओ
मुण्ड-धर:–च
मुण्ड-मालिनी–आ
मुण्डी–र, ल
मुत्–ट
मुद्रा–ओ
मुरली-धर:–अ, उ, क्लीं
मुरारि:–ओ
मुसली–च
मुहूर्तादि-रूपा–ज
मुह्यक:–इ
मूक:–ङ
मूर्च्छा–प
मूर्ति:–ई, स
मूर्धज–ऊ, य
मूर्ध-बीजम्–ऐं
मूर्धा–आ, ऐ, स्वाहा
मूलम्–म
मूला–प

मृगपिप्लु:—ऐ, द्रां, स, ष्ठ
मृग-लोचना—स्त्रीं
मृग-वाहनः—ट, प, यं
मृगाङ्कः— ं (अं)
मृडः—ए, ग, स, ह
मृणालिनी—भ्क
मृत—ह्रीं
मृत-देवी—ल
मृता—औ
मृत्तिका—ह्रीं, ह्लीं
मृत्युः—क, ल, श
मृत्यु-कारकः, मृत्यु-देवः—श
मृत्युञ्जयः— ए, ग, स, ह, जूं
मृत्युञ्जय-प्रणवः—हं
मृत्यु-जित्—ॐ जूं सः
मृत्स्ना, मृद्रो रा—ह्रीं
मेखला—च
मेघ.—ऋ, ध, न, म, ल, व, वृ
मेघ-धूम्रः—लृ
मेघ-नादः—लृ, च ह
मेघ-पुष्पम्—व, वँ
मेघ-वान्—इ, ल
मेघ-वेश्म—आ, ख, ह, हं
मेघ-श्याम —ह
मेघ-श्यामा—ल
मेघानन्दा—घ
मेचकः—न
मेद.—व
मेदिनी—च, ल, लं
मेघः—ऋ, न
मेधा—घ
मेरुः—ल, प, क्ष
मेरु-गिरिः—ल
मेरु-बन्धः—क्ष
मेषः—अ, ऋ न, ह
मेषादिः—अ

मेषेश्वरी—न
मेण्ठमोमः—प
मोक्षम्, मोक्षदः—ॐ
मोक्षः—ए, ओ
मोचा—ध, ल
मोचिका—ऋ
मोदकः—ब
मोदनः—क
मोद-वर्धनः—फ
मोदा—ठ, ल
मोदिकः—लृ
मोदिनी—आ, क
मोषणः—न
मोहः—इ, क, फ, म, रं,
ल, लं, क्लीं
मोहक.—उ, प
मोहनी—ः (अः)
मोहनः—इ, क, क्लीं
मोहनास्त्रा—ओ
मोहिनी—ई, क, ए, ऐ, ग, ल
मोह-रूपिणी—ओ
मोह-वर्धनः—इ, क, फ, व, क्लीं
मोह-वासिनी—ज

[य]

यकारान्तः—र
यक्षेशः—ढ
यक्षेश्वरः—ह
यजुः-क्रिया—ज
यज्वनाम्पतिः—ऐ, द्रां, स, ं, ष्ठ
यज्ञः—ज, य
यज्ञकर—ज
यज्ञ-क्रिया—ट
यज्ञ-सूत्रम्—म
यतिः, यदिः—ख
यदुनाथः—अ, उ, क्लीं
यमः—ओ, ज, म, श, ष, मं

यम-बीजम्—मं
यम-मुखी—त
यम-साधनः—श
यमान्तकः—ए, ग, स, ह
यमेश्वरः—म
यमोजेश.—य
यशः—ः (अः)
यशस्करी, यशस्विनी—य
याकिनी—ः (अः)
यात्रा-निवारकः—र
याद-पतिः, यादसाम्पतिः—रूं
यादवः—अ, उ, क्लीं
यादवेशः—फ
यादिः—म
यामिनी—न, फ
यामिनी-पतिः—ऐ, द्रां, स, ष्ठ
यामुनः, यानेयः—य
याम्या, युक्—ः (अः)
युक्तः—क्ष
युक्ति.—च
युगम्—फट्
युगन्धरः—ब
युगान्तः—य, क्ष
युगान्त-कारकः—स्फ्रें
युवतिः—स्त्रीं
युवा—ल
योग-गम्या—ऊ
योग-माता—लृ
योगिनी—ऋ, अः, ज्ञ, द, ध,
यां, छीं
योगिनी-प्रिय.— ड, ण
योगिनी-प्रिय-कृत्—ण
योगिनी-प्रियङ्कम्—ड
योगेश्वरः—उ
योद्धा—च
योनिः—ए, ऐं, ऐं

वरदः–श
वरदा–थ, व
वरा–ए, ख, ञ
वराकः–ए, ग, स, ह
वराकी–ए
वरादरः–ज
वरानुजः–ल
वरायुधा–ए
वरारोहा–ऐ
वराहः–न
वरिः–ह
वरुणः–ई, क, वँ
वरुणेशः–स
वरेण्यः–व, स
वरेण्या–ट
वरेश्वरः–ए, ग, स, ह
वर्गादिः–क
वर्गान्तः–क्ष
वर्चिकः–ड
वर्ण-कर्णः–ण
वर्ण-तरणिः–न
वर्ण-राट्, वर्णान्तः, वर्णान्त्यः–क्ष
वर्णिनी, वर्त्तः–ऐ
वर्त्तकः–उ
वर्धमानः–अ, उ, ग्लौं
वर्धिनी–ण
वर्मः–हुं
वर्हा–थ
वह्निः–र, रँ
वह्नि-शुष्मा–रूँ
वलक्षगुः–ऐ, द्राँ, स, छं
वल्लभः–क
वल्ली–ए
वशः–र
वशिनी–अ, ओ, क्लूं
वशी–य

वश्य-त्रि-वराटकी–हैं
वश्यम्–वौषट्
वश्या–उ
वषट्-कारा–ङ
वषट्-कारी–च
वष्टम्–व
वसनम्–ऐ
वसुः–ए, ग, स, ह
वसुधा–म, य, ल, ह्रीं
वसु-धात्री–ञ
वसुन्धरा–ऋ, ल, लँ
वसु-प्रिया–स्वाहा
वसु-मान्–एँ
वसु-स्वरः–ऐ, ऋ
वस्त्रम्–औं, एँ, ह्सौं
वह्निः–र, रँ
वह्नि-जाया(कामिनी, गृहिणी, प्रिया वल्लभा, सुन्दरी, स्त्री)–स्वाहा
वह्नि-पञ्चकः–रां रीं रूं रैं रौं
वह्निशः–ङ
वाः–व, वँ
वाक्–ऐ, ऐँ
वाक्-पतिः–आ
वाक्-प्रदा–ऋ, ञ
वागीश्वरः–ञ
वागीश्वरी–इ, उ, ऐ
वागुरा–क्रीं
वाग्भवं, वाग्भवा, वाग्, वाङ्–ऐं
वाग्मी–य, क्रीं
वाङ्कः–रूँ
वाचालः–य
वाणी–ए, ऐ, अः, ग, च, ह्रीं
वाणीशः–य
वातः–अ, ई, उ, ढ
वातावर्तिः–ह्रीं
वातुदा–क्रीं

वादनी–ं (अं)
वाद्यः–ल, स
वानरः–प
वान्तः–ऊ ल, श
वान्तदा–क्रीं
वापी–य
वामकः–लृ
वाम-कर्णः–ऊ
वाम-कङ्कणः–ज
वाम-करोटिका–ट
वाम-कपोलः–लृ
वाम-कुक्षिः–फ
वाम-गण्डः–लृ, लृ, ए
वाम-गुल्फगः–व
वाम-जङ्घा–ऐ
वाम-जङ्घिका–औ
वाम-जानु-वासः–थ
वाम-देवः–ए, क, ग, प, स, ह
वामदोर्मणि-बन्धगः–ज
वामदोर्मूलम्–च
वामनः–अ, उ, ऋ, ऐ, य, ग्लं
वाम-नासिकः–ॠ
वामनीकः–थीं
वाम-नेत्रम्–ई
वाम-पन्मूलम्–त
वाम-पाद-स्थितः–ह
वाम-पादांगुलिगः (लीगः)–ध
वाम-पादांगुलि-तलगः–ज
वाम-पार्श्वगः–फ
वाम-मणि-मध्यगः–न
वाम-लोचनम्–ई
वाम-लोचना–ॠ
वाम-शक्तिः–स
वाम-शाखा-मूलः–ऊ
वाम-श्रुतिः–ऊ
वाम-स्कन्धः–च, स

वाम-हस्ताग्रगा—ञ
वाम-हस्तांगुलि-तलगः—झ
वाम-हस्तांगुलि-मूलम्—झ, द
वाम-हस्तांगुल्यग्रगः (ल्यग्रः)—ञ
वामा—ञ, ओ, स्त्री
वामाक्षिः, वामाक्षी—ई, ओ
वामांशः, वामांस-गतः—च
वामी—झ, न
वामोदः—ज
वामोरुः—थ, स
वामोरु-निलयः, वामोरु-मूलगः—त
वायवी—ऐ, ओ, श, प
वायुः—ख, ङ, ञ, ट, ढ, य, यँ, स
वायु-पूज्या—प्रौं
वायु-वेगी—य
वायु-सखः—र, रँ
वारणः—ख, क्रौं
वारणम्—ऐ, ऐं, क्रौं
वारणा—आ
वारणार्णम्—ह्रौं
वारणी—ॠ
वारां निधिः—व्हें
वाराही—अ, ओ, ए, च, त, हुं, हूँ
वारि—व, वँ
वारि-चारकः—व
वारिजम्—ठः
वारिजा—ऐ
वारिदः—व
वारिधिः, वारि-निधिः(राशिः)—व्हें
वारुणः—क
वारुणम्—क, घ
वारुणिकः—व
वारुणी—ॠ, र, श
वार्त्ता—व, घ
वार्त्तादा—प्रौं
वार्धिः—व्हें

वार्षः, वार्षिकः—क्रुं, क्रूं
वालः—व
वासः—व, ह, सौः
वासङ्करी—ओ
वासना—ई, ए, ऐ, ऐं, ऊं, श्रीं
वासवः—इ, ल
वासिनी—ॡ
वासुः, वासुदेवः—अ, उ, औ, क्लीं
वास्तु-देवता—ं (अं)
वास्तोस्पतिः(ष्पतिः,ष्पतिः)—इ,ल
वास्या—ट
वाहनम्—घ
वाहिनी-पतिः—व्हें
वाह्लिकं, वाह्लिकम्—ग्लौं
विः—अः
विकटम्—छ
विकरालः, विकराली—ं (अं)
विकामा—उ
विकृतः—ओ
विकृतः-मुखी—ऐ
विकृता—क्ष
विकृताकृति-मण्डलः—झ
विकृतिः—आ, ऐ, अः, क, ख
विघ्नः, विघ्नम्—इ, ग, गं
विघ्नपः—ज, ग, गँ
विघ्न-राजः—आ, उ, ऋ
विघ्न-वारणम्—फट्
विघ्न-हर्ता—उ, क्ष
विघ्न-हारिणी—क्ष
विघ्न-हृत्—उ
विघ्नेशः—अ, द
विचित्रा—अं, च, क्रौं
विजया—अ, ऋ, ह्स्फ्रें, श्रौं
विजयी—उ
विज्ञानात्मा—अं
विदुषी—ओ

विद्या—अ, इ, ऊ, ॠ, ग, च, ऐं
ह्स्र्ह्सौं
विद्या-धरः—ॡ
विद्यामुखी—अं
विद्य-जिह्वा—अ, ग, ञ
विद्युत्—ट, प
विद्युतिः—प
विद्येश्वरी—ओ
विधाता—आ, क, ॐ
विधिः—क, म, कं, वँ
विधु—इ, लं
विनदा—ट, ठ
विनसः—न
विनायकः—आ, घ, ञ, प
विन्दुः—ं (अं)
विन्दु-माली—ई
विन्ध्याद्रि-शिखर-स्थिता—ठ
विपुलम्—श
विपुला—ल, लं
विप्र-चित्ता—ऊ
वि-प्रियः—फ
विभावसुः—ग, र, रँ
विभूतिः—ऊ, ऐ, ट, ठ, ह्रौं
विमत्तः—म
विमलः—ल
विमलर्धितः—ॡ
विमला—क, घ, ल, प, ग्लूं
विमलाकृतिः—म
विमुक्तकः—भ
वियत्, वियद्—अः, ङ, ञ, म, श, ह
विरजतिः—ज
विरजा—आ, ञ, झ
विरजेशः—झ
विरतिः—ए
विरला—ट
विराट्—झ, ॐ

विराविणी—प
विरुद्ध-धीः—न
विरूपा—इ, ल
विरूपाक्षी—ॠ
विरोधिनी—उ
विलः—थ
विलासिनी— उ, लृ, स्लौं
विवरम्—प
विवर्णा—ज
विविस्वान्—ऐ
विशल्या—ठ
विशाखी—ढ
विशालः—ल
विशालाक्षः—थ
विशालाक्षी—ऐ, घ
विशालार्चा—क
विशिखः—छ, द्रां
विशिष्टरा,विशुद्धिमाद्-ऋ
विश्वम्—लृ, अ', म,न,
ऊ॰ ॐ ह्रिं

विश्वाद्यः— अः
विश्वान्तः—ज
विश्वेशी—श्री
विश्वेश्वरी—ॠ, अ
विष', विषम्—ङ, म
विषघ्नी—इ
विषयेच्छा-भोग-वती—इ
विष्टराङ्घ्री—ज
विष्णुः—इ, अः, उ, फ्लौं
विष्णु-माया—ऐ, ह्रौं
विष्णु-शक्तिः—श्रीं
विष्णु-शयनम्—आ, अ.
विसुः—घ
विस्मिता—लृ
विहगः—फ
विह्वलः—ढ
वीचि.—म, प्लूं
वीति-होत्रः—र, रं,
वीरः—ई, य, ह्रौं
वीरकः—त, श

वृष्टिः—क्रौं, फ्रूं
वेदः—र
वेद-धारा, वेद-मस्तक.-ॐ
वेद-माता—इ, ठ
वेद-मूर्तिः—लृ
वेद-मूर्द्धा—ॐ
वेद-सप्तकः—व
वेदादिः—र, ॐ
वेदाश्वः—ल
वेधाः—क, म
वेपवती, वेप-वती—स
वेश्या—ङं, घ्रौं
वेपा—फ
वैकुण्ठः—लृ, म
वैतालिक —प्लें
वैद्युतः—ए
वैश्य , वैश्वः—प
वैश्वानरः—र, रं
वैष्टर-श्रवा —घ
वैष्णवी—उ, ऋ, ॠ, ओ,

व्योम-वक्त्रा—ङ
व्योम-रूपा—ऋ
व्योम-रूपिणी—उ
व्योमाकार'—ग
व्योमातीता—ऋ
व्योमम्—ह्रां, ह्री

[श]

शक्तः—ल, शक्तीशः—त
शक्ति.—आ,ई,ॠ, लृ,ए, ऐ
अं, क, घ, स, क्लीं,
सौः, ह्रीं ह्सौः, ह्सौं
शक्ति-खेचरी—ख्फ्रें
शक्ति-प्रणवः—फ्रें
शक्ति-वराहः—ग्लौं
शक्त्याकर्षिणी—औं
शक्र —इ, लं, लृ,
शङ्करः—उ, ए, ग,
श, स, ह
शङ्खा— स, सौः
शंभु —ओ, य, फ्रें

शत-ह्रदः—ष
शतानन्दः—क, म, कं
शतावर्त्तः, शतावर्त्ती—अ, उ, क्लीं
शत्रुः—त
शत्रुघ्नः—उ
शनिः—छ, त, प
शनि-कुम्भः—ब
शफरी—प
शब्दः—य
शब्द-ब्रह्म—ॐ
शमना—क
शम्पा—ष
शम्बरम्—व, वं
शम्बरारिः—ङ, क, क्लीं
शम्भुः—ए,ग,घ,श,स,ह,हें
शम्भुदः—हें
शम्भु-पत्नी—ह्रीं
शम्भु-वनिता—ह्रीं
शम्भु-स्त्री—ए, ह्रीं
शयः—ब
शयनः, शय्या, शय्या-स्वरः—आ(ा)
शरः—फट्
शर-जन्मा—ङ, ठं, णं
शरणार्ति-भिदा—ऐ
शरत्—स, सौः
शरभी—ड
शरीरार्कापिणी—अ
शम—ए, स, औ
शर्मा—श, स, शां, सौः, हूं
शर्व—ज, म
शर्वरी-पतिः, शर्वरीशः—ऐ, द्रां, स, ॐ
शलमली—इ, ई
शवः—मौं

शशः—ं (अं)
शश-धरः—ऐ, द्रां स, ॐ
शश-बिन्दुः—अ, उ, क्लीं
शशाङ्कः—अ, अं, व, स
शशाङ्क-धारिणी—औ
शशिः—ं (अ)
शशिनी—ॠ, ए, ऐ, श
शशि-प्रभः—स
शशि-प्रियः—फ
शशी—अं, न, ठ, फ, स
शसोनः—ट, य, यं
शस्तम्—श्रं
शस्त्रम्—य, फट्
शस्त्रादिः—फट्
शाकनी—औ, र, स
शाङ्करी—ॠ
शाङ्कला—म्रों
शाखा—ज, हें
शाखान्तराकृतिः—ढ
शाखिनी-प्रियः—न
शाखी—ं (अं)
शाखोक्ता—ज
शाणः—ह
शान्तः—औ
शान्तिः—इ, ई, उ, ऊ, क, ङ, स्वाहा
शान्तिकः—औ
शान्ति-कृत्—लृ
शान्दुलः—य
शान्त्यतीता-कला—ल्हूं, ल्हें, ल्हौं, ल्हूं, हसूं
शाम्भवम्—ॠ
शाम्भवः—ट, ण
शाम्भवी—अ, सृ, अ
शारदा—ऐं
शार्ङ्ग-भृत्—अ, उ, क्लीं

शार्ङ्गी—अ, उ, ग, क्लीं
शार्ङ्गीशः—ग
शालाक्षी—क
शालिका(की)—म्रों, घ्रों
शालिगी—ड
शालिनी—णं
शाल्मली—इ, ङ
शाश्वतः—घ
शास्ता—श
शिखण्डिका—वषट्
शिखण्डिनी—च
शिखण्डी—फ
शिखरम्—ग्लौं, म्लौं
शिखरी—द
शिखा—न, वषट्
शिखा-वान्—र, रं
शिखि-वाहः—व
शिखी—त, फ, र, ल, रं
शिति-कण्ठः—ए, ग,स, ह
शिनी—उ, र
शिपि-विष्टः—ए, ग,स, ह
शिरः—अं, क, ह, नमः, स्वाहा
शिरसिजः—थ
शिरा—नम.
शिरोऽन्त्यगम्—स्वाहा
शिरोभ्रम.—घ
शिरोमाला—ॠ
शिरोरुहः—क
शिली—थ, म
शिलोच्चयः—थ, द
शिवः—अ, इ, उ, ए, मं, क, ग, ङ, न, प, म, स, प,स, ह
शिव-कीर्तनः—अ,उ,क्लीं
शिव-म्रेषरी—ह्स्क्लीं

शिव-दर्शनम्—ग
शिवदा—ल
शिव-दूती—ॠ, लृ
शिव-प्रणवः, शिव-प्रसादः—ह्रौं
शिव-प्रिया,
शिव-वल्लरी—लृ, ह्रीं
शिव-शक्ति-मयम्—ह्सौं
शिवा—इ, उ, ऊ, लृ, ज, ट, ढ, द्र, प, ह्रीं
शिवात्मकः—घ
शिवादि.—आ
शिवि-पिष्टः—ए, ग, स,ह
शिवेशः—श्रं, ल
शिवोत्तमा—उ
शिवोत्तमः—इ, घ, च, घ
शिशु-प्रियः—ङ
शिष्टम्—य
शिष्यः—फ
शीघ्रम्—ऐं, य
शीघ्र-पाणिः—य
शीत-भानुः (मरीचिः, रश्मिः), शीतलः, शीतांशुः—ऐ, द्रां, स, ॐ
शुक्तिः—ट
शुक्रः—श, स, लं, ब्रों, स्रों
शुक्लः—सृ, स, ॐ
शुक्ला—स, घ्रों
शुचिः—सृ, ऐ, छ, र, ष, श, रं
शुचि-स्मिता, शुद्ध.—लृ
शुद्ध-गामी—त
शुद्ध-सरः—सृ
शुद्ध-बुद्धि-प्रवर्तनः—ऐं
शुद्धिः—त
शुद्धि-माता—औ

शुभम्–श, शं
शुभा–ए, ट
शुभांघ्रि:–ड
शुभ्रा–ऌ, ण
शुभ्रांशु:–ऐ, द्रां, स, छं
शुम्भ-मर्दिनी–ओ
शुष्कला–ध्रीं
शुष्मा–र, व, रं
शूकर:–ण, न, हूं
शूद्र:–ऊ, ऌ, प
शूद्र-प्रणव:–औं
शून्यम्–आ, श्रं, ख, ठ, ह, आं, ह्सौं
शूर:–ढ, ण, प, म, व,
शूर्पक:–ग, गं
शूर्प-कर्ण:–ख, ग, फ्रां
शूल:–द, फट्
शूल-धर:–ए, ग, स, ह
शूल-धात्री–ध
शूलिनी–ई, ऌ, ऐ, ख
शली–ए, ग, ज, द, न,

शोभा–फ, हें
शोषिणी–ओ
शौक्रम्–ॡ
शौरि:–छ, थ, ध, न
शौर्यम्–उ
श्मरि:, श्मरी–नम:
श्मशानम्–आ
श्मशान-वासिनी–क्रीं
श्मश्रु:–हूं
श्याम-मुखी–ऋ
श्यामा–ऋ,ल,लृं,क्रीं,ध्रीं
श्रद्धा–अ, उ, ए, ख
श्रम:–घ
श्रव:, श्रवण:–उ
श्रवणा–म
श्री:–अ, उ, छ, र,श्रीं
श्री-कण्ठ:–अ,ए,ग,श,स,ह
श्री-कर:–अ, उ, क्लीं
श्री-करी–र
श्री-कान्त:, श्री - गर्भ:– अ,उ, क्लीं

श्रुति-पथ:–ॐ
श्रेष्ठ:–ई, ऋ
श्रेष्ठा–ए, प
श्रोता–उ
श्रोत्रम्–त
श्लेष्मक:–छ
श्वसन:– ट, य, यं
श्वापद:–आ
श्वास-रूपिणी–च
श्वेत:–अ:, प, स, लृं, ग्लौं, ब्लौं
श्वेत-रथ:–स,लृं,ग्लौं,ब्लौं,
श्वेत - वाहन:–ऐ, द्रां, स, छं
श्वेता–अ:, स
श्वेताक्ष:,श्वेतेश्वर:–प,स

[ष]

षट्-कर्ण:–ओ
षट्-चक्र:–उ
षट्-तर्क:–भ
षट्-पदा–ओ
षट्-दीर्घ:–आं ईं ऊं ऐं

[स]

संक्रन्दन:–इ, ल
संज्ञा–क, ङ
सम्मोहन:–ॡ
संयोगज:, संयोजक:,
संवर्त्तन:–क्ष
संवर्त्तणम्–घ्रं
संवर्तिका–श
संस्थिनी–ङ
संहार:–घ, क्ष, फट्
संहारिणी–लृ, ट
संहारी–ण
संहृति:–ं (अं)
सकला–आं, ह्रीं
सङ्कर्ण:–व
सङ्कर्षण:–औं
सङ्कुचक:–ङ
सङ्कृति:–त्त
सञ्जिनी–ं (अं)
सत्–ऐं,ओं, भ, द, य
सती–ड, द
सत्य:–द

सनत्—फ, म, फं
सनन्दः—स
सनहा—स, घीं
सनातनः—अ, उ, क्लीं
स-नादः— (अं
सन्ध्या—झ, ट, श
सन्ध्या-नटी—ए, ग, स, ह
सन्ध्याराम—क, म, फं
सप्तति.—ं (अं), नमः
सम्मनाः—ऋ
स-परः—ह
सप्त-जिह्वः—र, रं
सप्त-तुरगः—छ
सप्त-मात्रः—ॐ
सप्तार्चिः—र, रं
सप्ताश्वः—म
सप्तिक.—छ
सफरी—फ
समयः—स
सम-वर्त्ती—ल
समस्ता—ह्लीं
समा—लृ, च, छ
समाश्वरा-ल
समासनम्—ठं ठं ठः ठः
समीरः,समीरण.—ट,ढ,य,यें
समुद्रः—रूं, व
समुद्रजा—ऊ, श्रीं
समुद्र-नवतात.—ए, ऐ, द्रां, स, ष्ठं
समुद्र-शुभगा(सुभगा)-लृं
सम्पत्ति.—नमः
सम्पूर्ण-मण्डला—ओं
सम्बलम्—व, वं
सम्मूढा—: (अः)
सरः, सरम्—व, वं
सरसी—उ

सरस्वती—अ, उ, क, ए, च, म, स, ऐं
सरस्वान्—रूं
सरित्(सरितां) पतिः—रूं
सरिद्-वरा—सृं
सरिलम्—व, वं
सरोजी—फ, म, फं
सरोरुह-निवासिनी—श्रीं
सर्गः—: (अः)
सर्पः—थ, द
सर्पाकारः—थ, द
सर्वः—ए, ग, ट, ञ, स, ह
सर्व-क्रमः—ञ
सर्वगः—ग, ङ
सर्व-गतिः—क्ष
सर्व-जृम्भिणी—ज
सर्वज्ञः—ए, ग, स, ह
सर्व-तर्क-विवर्जिता—ट
सर्वतोमुखम्—व, वं
सर्वतोमुखी—ञ, र
सर्व-दाहकः—प
सर्व-दीप्तः—द
सर्व-देहाश्रयः—ह
सर्व-पाचकः—ण
सर्व-पीठेश्वरी—ठ
सर्व-प्रियः—त
सर्व-प्रियतमः—च
सर्व-बीजकः—ह्सौः
सर्व-भावनी—ज
सर्व-भुज-मध्यम्—छ
सर्व-मङ्गला—अ, ओ, स्वों
सर्व-मन्त्रेश्वरी—ड
सर्व-मित्रम्—ठ
सर्व-योनिक—स
सर्व-रक्षिता—घ
सर्व-रञ्जिनी—ञ

सर्वला—घ
सर्व-वर्गान्तः(वर्णान्तः)—क्ष
सर्व-वशङ्करी—क्ष
सर्व-वागीश्वरी—च
सर्व-विद्येश्वरी—घ
सर्व-विद्राविणी—ग
सर्व-वीरेश्वरी—ञ
सर्व-व्यापी—ऊ
सर्वशः—ग
सर्व-संक्षोभिणी—क, घ
सर्व-संज्ञः—ञ
सर्व-समर्थः—ढ
सर्व-समुद्भवः—ए
सर्व-सम्मोहिनी—च
सर्व-सिद्धीश्वरी—ज
सर्व-स्तम्भिनी—छ
सर्व-स्रोताः—ठ
सर्व-स्वामी—ड
सर्व-हरः—घ
सर्व-हिंसकः—प
सर्वाकर्षिणी—घ, क्ष
सर्वाङ्गागमः—झ, सर्वाङ्ग-सर्वाङ्गुलिः—न सागरः—क्ष
सर्वात्मा—क्ष
सर्वादिः—ग
सर्वान्तक.—क्ष
सर्वार्थ-साधिनी—ग
सर्वालङ्कार-सयुतः—च
सर्वाह्लादिनी—ड
सर्वेश्वरी—क्ष्म्ल्रूं
सर्वेष्टः—थ
सर्वोक-घटना-बली—ज
सर्वोन्मादिनी—ट
सर्वोपकारकः—क्ष
सलम्, सलिलं, सलीलं, सवः—व, वं

सव-कर्ता—क, म, फं
सव-मुखः—र, रं
सवरम्—व, वं
सविता—म
स-विलासिनी—ऊ
सव्य-च द्रः—थ
सव्य-बाहु-मूलम्—च
सव्य-स्वरः—ऊ
स-शिखा—फ
सहजात्मा—स
सहस्र-भुजः—ख
सहस्र-वदनः—अ, उ, क्लीं
सहस्रांशुः—म
सहस्राक्ष.—ढ, ल
सहस्राक्षा—ल
सहा—ल, लं
साक्षी—ल
सागमः—क्ष
सागरः—व, रूं
सागर-मेखला—ल, लं
सागरा—ष्ठ, ज
साङ्ख्य-योगोद्भवा—ज
सागराम्बर—र, रं
सागराम्बरा—र, रं
साञ्चला—ऊ
साट्टहास-पदेश्वरी—झ
साढि-पुष्पम्—त
सात्वतः—घ
साधुः—छ
सानुः—ग्लौं
सानु-मान्—द
सानु-लोमाग्र-सन्धिका—उ
सान्तः—ह
सामगः—स
साम-गर्भः—अ, उ, क्लीं
सामजः, साम-योनिः—क्रों

साम्बु:—रू
साम्राज्य:—ह्सौं
सार:—ट, प, ल, यं
सारङ्ग-द्युति:—ग
सारणक:—स
सारस:—ऐ, द्रां, स, छं
सारस्वत:—त्र
सार्ध-चला—घ्रौं
सार्ध-श्रृङ्गम्—क्रों
सिंह:—ग, हस्क्ष्म्रीं
सिंह-नाद:—न
सिंह-नादिनी—औ
सिंह-भैरवी—म
सिंहास्या—अ
सिंहिका—ड, ढ
सिंहिनी—च
सित-भानु:—ं (थं)
सित-सिन्धु:—लृं
सित-जिह्वक:—अ:
सिद्ध-देव:—ए, ग, स, ह
सिद्ध-लक्ष्मी:— अं, ज
सिद्ध-सिन्धु:—रू, लृं
सिद्धापगा—लृं
सिद्धाम्ला—छ
सिद्धि:—ख, ग, ञ, ढ
सिद्धिदा—द
सिद्धि-प्रद:—ग
सिद्धेश्वरा—ट
सिद्धार्णव:—ड
सिद्धाकर्षिणी—आ
सिन्धु:—रू
सिन्धु-जन्मा—ऐ,द्रां,स,छं
सिन्धुर:—क्रां, प्रां
सिन्धुर-तिलक:— क्रां
सिन्धु-सुता—घ्रौं
सिप्र:—ऐ, द्रां, स, छं

सीता—ठ
सुकेशी—: (अ:)
सुखम्—व
सुखाक्ष:,सुखाश:—ट,य,यं
सुगम्, सुगन्त:—त
सुग्रीव:, सुघोर:—व
सुत्रामा—इ, ल
सुदृशा—ङ
सुधन्या—लृ
सुधा—श्रं, य, लृं, वं, ह्रौं
सुधा-कर: सुधाङ्क, सुधा-धार: (निधि:)—ऐ, द्रां स, छं
सुधा-रश्मि:—द्रां
सुधा-रस-मयी— स
सुधा-वर्षी—क, म, क्षं
सुधा-सूति:—ऐ,द्रां, स, छं
सुधा-स्रव: (स्रवा)—क्लां
सुधांशु:—ए, द्रां, स, छं
सुधी:, सुनन्दा—ठ
सुनासीर:—ल
सुन्दर:—इ, छ
सुन्दरी—अ, औ, श्र, त
सु-पूजया—घ्रौं
सु-प्रजा—घ
सु-प्रसाद:—ए, ग, स, ह
सु-भग:—श
सु-भगा—अ, उ,ए,अ:, श
सु-मना:—ई
सु-मालिनी—लृ
सु-मुख:—त्र, ट, म
सु-मुखी—अं, ज, ञ
सु-मुखेश्वरी—प, र
सु-युक्ति:—छ
सु-युक्तिका—च
सुर:—क्ष, ह

सुर-ज्येष्ठ:—क, म, क्षं
सु-रता—ऊ
सुर-दीर्घिका, सुर-नदी, सुर-निम्नगा—लृं
सुर-पति:—इ, ल
सुर-पुरम्—घ
सुरभि:—ठ, व
सुरभी—ऋ
सुर-वर्त्म—आ, घ, ह, हं
सुर-श्रेष्ठ:—ङ
सु-रस:—व
सु-रसा—अ:, ड
सुरा-सिद्धा—लृ
सुरान्तक:—हुं
सुरापगा—लृं
सुरारिहा—प
सु-रूपिणी—च
सुरेश्वर:—अ, ई
सुरेश्वरी—अ, ञ, प
सुलापिनी—च
सुलोचन:—ङ
सुवर्ण-बिन्दु:—अ, उ, क्लीं
सु-वासा—स
सु-शक्ति:—ए
सु-शिखा—फ
सुषमा—ह
सुषिरम्—प
सु-सता—ड, सु-सुता—छ
सु-स्मिता—त्र
सु-स्वन:—प,
सू:—ऐं
सूकर:—न
सूक्ष्म:—इ, लृ, लृ
सूक्ष्मा—अ, ई, लृ, ए, ऐ, ओ, य
सूक्ष्मेश:—ई

सूति:—छ
सूतेश:—औ
सूनम्—ऊ
सूत्रात्मा—य
सूर:—क, ढ, म
सूर्य:—लृ, म, र, प
सूर्यास्त:—प
सृष्टि:—अ, उ, लृ, क
सृष्टि-कर्मा—उ
सेन्दु-वत्—घ
सेवक:—म
सेवका—उ
सैन्धवम्—न
सोम:—ऐ, अ:, घ, य, स, द्रां, छं
सोमम्—च, वं
सोमपा:—क, ण
सोम-क्रिया—ड
सोम-सिन्धु:—अ,उ, क्लीं
सोमेश:—ट
सौख्यदा—त, स
सौख्य-दु:ख-प्रवन्धक:—थं
सौवर्णी—घ
सौभग-भू:—थ्रं
सौभाग्य —सौं
सौभाग्या—घ्रं
सौम्या—ऋ, ए, अ:
सौर:—छ
सौरानन्द —उ
सौमनसम्—नम:
स्कन्द:—क, टं
स्कन्दम् ह्रां, ह्लां
स्तनम्—ज, ठ, ठं
स्तन:—ज, ज
स्तन-द्वयम्— ठ: ठ:
स्तम्बेर, स्तम्बेरम:—क

सनत्—क, म, फं
सनन्दः—स
सनहा—स, धौं
सनातनः—अ, उ, क्लीं
स-नादः—ं (अं
सन्ध्या—ड्ग, ट, श
सन्ध्या-नटी—ए, ग, स, ह
सन्ध्यारामः—क, म, फं
सन्नतिः—ं (अं), नमः
सन्मनाः—ॠ
स-परः—ह
सप्त-जिह्वः—र, रं
सप्त-तुरगः—छ
सप्त-मात्र—ॐ
सप्तार्चिः—र, रं
सप्ताश्वः—म
सप्तिकः—छ
सफरी—फ
समयः—स
सम-वर्ती—ञ
समस्ता—ह्रीं
समा—लृ, च, छ
समाश्वरा-ल
समासनम्—ठं ठं ठः ठः
समीरः,समीरणः—ट,ड,य,यं
समुद्रः—रूं, व
समुद्रजा—ऊ, श्रीं
समुद्र-नवतातः—ए, ऐ, द्रां, स, ॐ
समुद्र-शुभगा(सुभगा)-लृं
सम्पत्ति.—नमः
सम्पूर्ण-मण्डला—औ
सम्बलम्—व, वं
सम्मूढा—: (अः)
सरः, सरम्—व, वं
सरसी—उ
सरस्वती—अ, उ, फ, ख, ध, ञ, स, ऐं
सरस्वान्—रूं
सरित्(सरितां) पतिः—रूं
सरिद्-वरा—लृं
सरिलम्—च, वं
सरोजी—क, म, फं
सरोरुह-निवासिनी—श्रीं
सर्गः—: (अः)
सर्पः—थ, द
सर्पाकारः—थ, द
सर्वः—ए, ग, ट, ञ, स, ह
सर्व-क्रमः—ञ
सर्वगः—ग, ङ
सर्व-गतिः—क्ष
सर्व-जृम्भिणी—ज
सर्वज्ञः—ए, ग, स, ह
सर्व-तर्क-विवर्जिता—ट
सर्वतोमुखम्—व, वं
सर्वतोमुखो—अ, र
सर्व-दाहकः—प
सर्व-दीप्तः—द
सर्व-देहाश्रयः—ह
सर्व-पाचकः—ण
सर्व-पीठेश्वरी—ठ
सर्व-प्रियः—त
सर्व-प्रियतमः—च
सर्व-बीजकः—ह्सौः
सर्व-भावनी—ज
सर्व-भुज-मध्यम्—छ
सर्व-मङ्गला—अ, ओ, स्वीं
सर्व-मन्त्रेश्वरी—ङ
सर्व-मित्रम्—ठ
सर्व-योनिकः—स
सर्व-रक्षिता—घ
सर्व-रञ्जिनी—ञ
सर्वला—घ
सर्व-वर्गान्तः(वर्णान्तः)—क्ष
सर्व-वशङ्करी—क्ष
सर्व-वागीश्वरी—च
सर्व-विद्येश्वरी—घ
सर्व-विद्राविणी—ग
सर्व-वीरेश्वरी—ञ
सर्व-व्यापी—ऊ
सर्वशः—ग
सर्व-संक्षोभिणी—क, घ
सर्व-संज्ञः—ञ
सर्व-समर्थः—द
सर्व-समुद्भवः—ए
सर्व-सम्मोहिनी—च
सर्व-सिद्धीश्वरी—ज
सर्व-स्तम्भिनी—छ
सर्व-स्रोताः—ठ
सर्व-स्वामी—ड
सर्व-हरः—घ
सर्व-हिंसकः—प
सर्वाकर्षिणी—घ, क्ष
सर्वाङ्गागमः—क्ष, सर्वाङ्ग-सर्वाङ्गुलिः—न सागरः—क्ष
सर्वात्मा—क्ष
सर्वादिः—ग
सर्वान्तकः—क्ष
सर्वार्थ-साधिनी—ग
सर्वालङ्कार-संयुतः—च
सर्वाह्लादिनी—ङ
सर्वेश्वरी—क्ष्म्लरूं
सर्वेष्टः—थ
सर्वोक्त-घटना-वली—ज
सर्वोन्मादिनी—ट
सर्वोपकारकः—क्ष
सलम्, सलिलं, सलीलं, सवः—व, वं
सव-कर्ता—क, म, फं
सव-मुखः—र, रं
सवरम्—व, वं
सविता—म
स-विलासिनी—ऊ
सव्य-च द्रः—थ
सव्य-बाहु-मूलम्—च
सव्य-स्वरः—ऊ
स-शिखा—फ
सहजात्मा—स
सहस्र-भुजः—ख
सहस्र-वदनः—अ, उ, क्लीं
सहस्रांशुः—म
सहस्राक्षः—ङ, ल
सहस्राक्षा—ल
सहा—ल, लं
साक्षी—ल
सागमः—क्ष
सागरः—व, रूं
सागर-मेखला—ल, लं
सागरा—ॠ, ज
सांख्य-योगोद्भवा—ज
सागराम्बरं—र, रं
सागराम्बरा—र, रं
साञ्चला—ऊ
साट्टहास-पदेश्वरी—ह्व
साढि-पुष्पम्—त
सात्वतः—घ
साधुः—छ
सानुः—म्लौं
सानु-मान्—द
सानु-लोमाग्र-सन्धिका—उ
सान्तः—ह
सामगः—स
साम-गर्भः—अ, उ, क्लीं
सामजः, साम-योनिः—क्रों

साम्बुः—ह्रूँ
साम्राज्यः—ह्स्रौं
सारः—ट, य, ल, यँ
सारङ्ग-द्युतिः—ग
सारणकः—स
सारसः—ऐ, द्रां, स, ष्ठं
सारस्वतः—त्र
सार्ध-बला—ध्रौं
सार्ध-शृङ्गम्—फ्रौं
सिंहः—ग, हस्क्ष्म्रीं
सिंह-नादः—न
सिंह-नादिनी—औ
सिंह-भैरवी—म
सिंहास्या—अ
सिंहिका—ड, ढ
सिंहिनी—ब
सित-भानुः—ं (अं)
सित-सिन्धुः—लूँ
सित-जिह्वकः—अः
सिद्ध-देवः—ए, ग, स, ह
सिद्ध-लक्ष्मीः—अं, ज
सिद्ध-सिन्धुः—ह्रूँ, लूँ
सिद्धापगा—लूँ
सिद्धाम्ला—घ
सिद्धिः—ख, ग, ज, ढ
सिद्धिदा—ढ
सिद्धि-प्रदः—ग
सिद्धेश्वरी—ट
सिद्धार्णवः—ड
सिद्धार्कविणी—आ
सिन्धुः—ह्रूँ
सिन्धु-जन्मा—ऐ,द्रां,स,ष्ठं
सिन्धुरः—क्रां, प्रां
सिन्धुर-तिलकः—क्रां
सिन्धु-सुता—श्रीं
सिप्रः—ऐ, द्रां, स, ष्ठं

सीता—ठ
सुकेशी—ः (अः)
सुखम्—व
सुखाक्षः,सुखाशः—ट,य,यं
सुगम्, सुगन्तः—त
सुग्रीवः, सुघोरः—व
सुत्रामा—इ, ल
सुदृशा—ड
सुधन्या—लृ
सुधा—श्रं, य, लृं, वं, ह्रौं
सुधा-करः सुधाङ्गः सुधा-धारः (निधिः)—ऐ, द्रां स, ष्ठं
सुधा-रश्मिः—द्रां
सुधा-रस-मयी—स
सुधा-वर्षी—क, म, फँ
सुधा-सूतिः—ऐ,द्रां, स, ष्ठं
सुधा-स्रवः (स्रवा)—ब्लां
सुधांशुः—ए, द्रां, स, ष्ठं
सुधीः, सुनन्दा—ठ
सुनासीरः—ल
सुन्दरः—इ, छ
सुन्दरी—अ, औ, श्रा, त
सु-पूजा—प्रीं
सु-प्रजा—घ
सु-प्रसादः—ए, ग, स, ह
सु-भगः—श
सु-भगा—अ, उ,ए,अः, श
सु-मनाः—इ
सु-मालिनी—लृ
सु-मुखः—ञ, ट, म
सु-मुखी—अं, ज, ञ
सु-मुखेश्वरी—य, र
सु-युक्तिः—छ
सु-युक्तिका—च
सुरः—स्क, ह

सुर-ज्येष्ठः—क, म, फँ
सु-रता—ऊ
सुर-दीर्घिका, सुर-नदी, सुर-निम्नगा—लृं
सुर-पतिः—इ ल
सुर-पुरम्—घ
सुरभिः—ठ, व
सुरभी—ऋ
सुर-वर्त्म—आ, ख, ह, हँ
सुर-श्रेष्ठः—इ
सु-रसः—ब
सु-रसा—अः, ड
सुरा-सिद्धा—लृ
सुरान्तकः—हूँ
सुरापगा—लृं
सुरारिहा—प
सु-रूपिणी—च
सुरेश्वरः—अ, ई
सुरेश्वरी—अ, आ, प
सुलापिनी—च
सुलोचनः—इ
सुवर्ण-बिन्दुः—अ, उ, ब्लीं
सु-वासा—स
सु-शक्तिः—ए
सु-शिखा—फ
सुषमा—ह
सुषिरम्—थ
सु-सता—ड, सु-सुता—छ
सु-स्मिता—ञ
सु-स्वनः—य,
सूः—ऐं
सूकरः—न
सूक्ष्मः—इ, सृ, लृ
सूक्ष्मा—अ, ई, लृ, ए, ऐ, ओ, व
सूक्ष्मेशः—ई

सूतिः—छ
सूतेशः—ओ
सूत्रम्—ऊ
सूत्रात्मा—प
सूरः—क, ढ, म
सूर्यः—लृ, म, र, प
सूर्यास्त्रः—प
सृष्टिः—अ, उ, लृ, क
सृष्टि-कर्मा—उ
सेन्दु-वत्—घ
सेवकः—य
सेवका—उ
सैन्धवम्—न
सोमः—ऐ, अः, घ, य, स, द्रां, ष्ठं
सोमम्—व, वँ
सोमपाः—क, ण
सोम-प्रिया—ड
सोम-सिन्धु—अ,उ, ब्लीं
सोमेश—ट
सौख्यदा—त, स
सौख्य-दुग्ध-प्रबन्धकः—श्र
सौवर्णी—घ
सौभग-भ्रूः—श्रं
सौभाग्य—सौं
सौभाग्या—श्रं
सौम्या—ऋ, ए, अ,
सौरः—छ
सौरानन्द—उ
सौम्यकम्—नम.
स्कन्दः—क, टँ
स्कन्दम्—ह्रीं, ह्रां
स्तनम्—ज, ठ, ठँ
स्तनः—ज, ज
स्तन-द्वयम्—ठ. ठः
स्तम्बेर, स्तम्बेरमः—क्ष

अंक-कोष

['मन्त्रोद्धार' के अन्तर्गत प्रायः यह भी सूचित किया जाता है कि निर्दिष्ट मन्त्र के अन्तर्गत कितने अक्षर हैं। अक्षरों की संख्या या अङ्क ज्ञात होने से मन्त्र के प्रामाणिक स्वरूप को निश्चित करने में सुविधा होती है किन्तु गोपनीयता की दृष्टि से अङ्क-सूचना भी प्रायः सांकेतिक शब्दों में दी जाती है। इन शब्दों का ज्ञान 'तन्त्र' के विद्यार्थियों को होना आवश्यक है। तभी वे 'मन्त्रोद्धार' का अर्थ ठीक-ठीक समझ सकते हैं। *उनकी सुविधा के लिए ऐसे सांकेतिक शब्दों का विवरण प्रस्तुत कोष में दिया गया है। यहाँ* सांकेतिक शब्दों के आगे दी गई संख्या 'मन्त्र-कोष' के उन पृष्ठों की द्योतक हैं, जहाँ इन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि एक से अधिक संख्यावाले अङ्कों का निर्णय करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि—'**अङ्कानां वामतो गतिः**' अर्थात् निर्दिष्ट अङ्क का निर्णय करने के लिए उलटी ओर से गणना करनी चाहिए। उदाहरण के लिए पृष्ठ १२७ पर '**गुण-राम-धरा**' को स्पष्ट करने के लिए पहले '**धरा**'=१ को, फिर '**राम**'=३ को, तब '**गुण**'=३ को ग्रहण करना होगा, जिससे मन्त्राक्षरों की संख्या १३३ विदित होती है।]

भवानीशंकर

'निदान' या 'संकेत' का निरूपण

निदान 'सङ्केत' का पर्याय है अर्थात् सङ्केत से तत्व का बोधन ही निदान है। सर्व - प्रथम वर्ण अर्थात् रङ्ग का निदान किया जाता है। निम्न तालिका से विदित होता है कि किस वर्ण (रङ्ग) से किन भावों का द्योतन होता है–

कृष्ण वर्ण–शोक, कष्ट, असाध्य, तम, तमो-गुणादि।
लोहित-वर्ण–साहस, उत्तेजना, विजय, हर्ष, सौभाग्य, उष्णत्व, रजो-गुणादि।
नील वर्ण–आकाश-वर्ण, व्याप्ति, शुद्ध सत्व-गुणादि।
पीत-वर्ण–विभव ऐश्वर्य, भोग, स्तम्भन, श्री, रजो-गुणादि।
हरित-वर्ण–निरुपद्रवता, अनिष्ट-नाश आदि।
इन्द्रनील-वर्ण–अन्तर्लीनता, अन्तर्मुखता, मुक्ति आदि।
स्वर्ण-वर्ण–वैभव, श्री, प्रभाव, सौभाग्य, आरोग्य आदि।
श्वेत-वर्ण–कीर्ति, सुख, सत्व-गुण, शान्ति, प्रकाश, स्वच्छता, सारल्य आदि।

इस प्रकार एक वर्ण से बहु प्रकार के विषयों का निदान अनुभव होने से स्थान-विशेष पर वर्ण-प्रयोग का प्रयोजन अमुक विषयक है, इसका निर्णय परम्परा और व्यवहार द्वारा करके निदान निश्चित करना चाहिये। स्थान, काल और सन्दर्भ पर ध्यान देने से ही विविध वर्णों का वास्तविक भाव समझ में आता है।

विविध वर्णों के ही समान विभिन्न फलों, पुष्पों, वनस्पतियों, शस्त्रास्त्रों, प्राणियों और शरीर के अङ्गों आदि के भी सांकेतिक प्रयोग ऋषियों द्वारा बहुधा किए गए हैं। इन सबके रहस्य को न जान कर प्राचीन 'मूर्ति-कला' को देखकर कुछ लोग, वास्तविक अर्थ को नहीं समझ पाते और उल्टा-सीधा तात्पर्य निकाल कर भ्रम में पड़ जाते हैं। सावधानी से मनन करनेवाले गूढ अर्थ को समझकर प्राचीन कलाओं के प्रति नत-मस्तक ही होते हैं। किसी मूर्ति - कला से ब्रह्म - ज्ञान होता है, तो किसी से इतिहास का, किसी से काव्य का और किसी से व्यावहारिक ज्ञान मिलता है। मूर्ति के समान ही 'यन्त्र-कला' में भी सांकेतिक रूप से यही विषय स्पष्ट हुये हैं।

'देव-मूर्तियाँ' बहुत प्रकार की होती हैं। किसी मूर्ति के कुछ हाथ होते हैं तो किसी के कुछ–इस प्रकार शरीर के अङ्गों में न्यूनता या आधिक्य, तो किसी में विभिन्न प्राणियों के अवयवों का सम्मिश्रण दृष्टिगत होता है। किसी देवता का पु रूप, किसी का स्त्री रूप, किसी का बाल्य-रूप, किसी का युवा तो किसी का वृद्ध-रूप प्रतीत होता है। इसी प्रकार आसन, वेष, वर्ण भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं। 'यन्त्र' के आकार भी बहुत प्रकार के होते हैं। इस प्रकार की प्रत्येक 'मूर्ति', 'यन्त्र' और मन्त्र' विभिन्न सांकेतिक रहस्यों को सूचित करते हैं। सभी मूर्तियाँ और यन्त्रों का रहस्य जानना किसी एक व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं है। अपनी अपनी गुरु परम्परा से मन्त्र-यन्त्र-ध्यान-संकेत जाना जाता है। मन्त्र-यन्त्र-ध्यानादि ग्रन्थों में मिल जाते हैं किन्तु उनके संकेतों का ज्ञान नहीं होता। ऐसे कुछ संकेतों की तालिका आगे उद्धृत है–

वस्तु	निदान
वरद मुद्रा	अभीष्ट-सिद्धि
अभय-मुद्रा	निर्भयता
ज्ञान-मुद्रा	ज्ञान
खड्ग	वामे ज्ञान, दक्षिणे सिद्धि—क्वचिद् मारण
अंकुश	स्तम्भन, आकर्षण
पाश	वशीकरण
नाग-पाश	विष, मारण
परशु	आग्नेय-ताप
शूल	वायव्य-ताप
शक्ति	बल
घण्टा	अनाहत-नाद, नाद-ब्रह्म
शङ्ख	प्रतिध्वनि, अनाहत-नाद
तीक्ष्ण वाण	पाप-मोचक
पुष्प वाण	जृम्भण
वंश धनु	ज्ञान, वैराग्य
इक्षु-धनु	मोहन
तुला	विवेक
त्रिशूल	त्रिविध उत्पात नाशक
गदा	स्तम्भन, वीरत्व, वैराग्य, ब्रह्म-ज्ञान
सुवेणु (वंशी)	आकर्षण, मोहन, निनाद
वीणा	निनाद, आहत नाद, गान
खट्वाङ्ग	ताप-त्रय-नाशक
कुम्भ	सकल ऐश्वर्य
कलश	श्री
असि	विजय
खेटक	रक्षा
श्वेत कपाल पात्र	सत्व गुण, ज्ञान
श्वेत-कपाल-पात्रस्य मद्य	ज्ञान, जीवन
चषक	पोषक, पोषण
चषक मद्य	तृप्ति, दर्प, मोह
कमल	पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, हृदय-स्थल
रक्त-कमल	पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, श्री, शोषण
श्वेत-कमल	ब्रह्म-रन्ध्र, बुद्धि, विद्या, सन्दीपन
नील-कमल	ज्ञान, मोक्ष, निर्वाण-पद, तापन

वस्तु	निदान
रक्त करवीर पुष्प	पौरुषेय, मोहन
श्वेत करवीर पुष्प	कामना-पूर्ति
सहकार	मादन
अष्ट-दल पद्म	अष्ट-सिद्धि, हृत्पुण्डरीक
मातुलुङ्ग	भोग, ऐश्वर्य, विभव
यज्ञोपवीत	धर्म
कुश-मुष्टि	वैराग्य
दूर्वा-मुष्टि	आरोग्य
पारिजात पुष्प	शीतोष्ण सुख-दुःख-समता
पुस्तक	विद्या, ज्ञान
अक्ष-माला	मोक्ष, मन्त्र-शक्ति, विश्व-चक्र, घूर्णन-क्रिया, प्राणा-
मुण्ड-माला	अक्षर-लिपि, विवेक-सहिता बुद्धि
वन माला	वैराग्य
भूषण	रजो गुण, साम्राज्य
मुकुट	राज चिह्न, साम्राज्य
खण्ड-चन्द्र-मुकुट	अमृत, नाद, विमर्श
पूर्ण-चन्द्र-मुकुट	अमृत, बिन्दु प्रकाश
नाग भूषण	शीतलीकरण, परमौषधि
रक्त वस्त्र	रजोगुण, सौभाग्य, माध्वम (भय)
श्वेत-वस्त्र	सत्वगुण, कीर्ति, शान्ति
नील-वस्त्र	तमो गुण, सत्व गुण, व्याप्ति
हरित-वस्त्र	निरुपद्रवता
पीत वस्त्र	विभव, स्तम्भन
कृष्ण-वस्त्र	तमोगुण, निद्रा, आलस्य, अविद्या, मृत्यु
काषाय-वस्त्र	वैराग्य
दिग्वस्त्र	मायातीत
मुक्त-केश	निर्विकार
बद्ध-वेणि	प्रपञ्च
क्रोध-मुख	तमोगुण, कष्ट
रुदित	तमोगुण, क्षुत, तृषा, तृष्णा
अट्टहास	परमानन्द
मन्द-स्मित	रजो गुण, आनन्द
दर्शित-दन्त हसित	सत्व-गुण, आनन्द
हस	जीव

वस्तु	निदान
वरद मुद्रा	अभीष्ट-सिद्धि
अभय-मुद्रा	निर्भयता
ज्ञान मुद्रा	ज्ञान
खड्ग	वामे ज्ञान, दक्षिणे सिद्धि—क्वचिद् मारण
अंकुश	स्तम्भन, आकर्षण
पाश	वशीकरण
नाग पाश	विष, मारण
परशु	आग्नेय-ताप
शूल	वायव्य-ताप
शक्ति	बल
घण्टा	अनाहत-नाद, नाद-ब्रह्म
शङ्ख	प्रतिध्वनि, अनाहत-नाद
तीक्ष्ण बाण	पाप-मोचक
पुष्प-बाण	जृम्भण
वंश धनु	ज्ञान, वैराग्य
इक्षु धनु	मोहन
तुला	विवेक
त्रिशूल	त्रिविध उत्पात नाशक
गदा	स्तम्भन, वीरत्व, वैराग्य, ब्रह्म-ज्ञान
सुवेणु (वंशी)	आकर्षण, मोहन, निनाद
वीणा	निनाद, आहत नाद, गान
खट्वाङ्ग	ताप-त्रय-नाशक
कुम्भ	सबल ऐश्वर्य
कलश	श्री
असि	विजय
खेटक	रक्षा
श्वेत कपाल पात्र	सत्त्व गुण, ज्ञान
श्वेत-कपाल-पात्रस्थ मद्य	ज्ञान, जीवन
चषक	पावक, पोषण
चषक मद्य	तृप्ति, दर्प, मोह
कमल	पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, हृदय-स्थल
रक्त-कमल	पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, श्री, शोषण
श्वेत कमल	ब्रह्म-रंध्र, बुद्धि, विद्या, सन्दीपन
नील कमल	ज्ञान, मोक्ष, निर्वाण-पद, तापन

वस्तु	निदान
कर-मेखला	अन्तर्लीन-कला
किङ्किणी	नाद-ब्रह्म
तुङ्ग-कुच	पोषक, पालक, स्थिति-कला
कुच-भर-नति	कुल-कुण्डनी, सहार-कला, मोक्षदा, मोचिका
ध्वज	राज-चिह्न, राष्ट्र, रजोगुण
यम-दण्ड	मृत्यु, काल, सहार-कला
अग्नि-ज्वाला	प्रकाश
दण्ड	शासन, राज-चिह्न
वज्र	ऐन्द्र-पात
छत्र	राज-चिह्न, रजोगुण, व्यापकता
चामर	राज-चिह्न, रजोगुण, पञ्च-प्राण
कर्तरी	अभय, विद्वेषण
पुष्प-माला	लक्ष्मी
मुद्गर	ज्ञान, वैराग्य
नदी	वैराग्य, ब्रह्म-ज्ञान
चक्र	ससार-चक्र, रक्षा
पर्वत	आधार-शक्ति, प्रचुरता
तर्जन	सावधान
कुक्कुट	वशीकरण-शक्ति
कुक्कुर	नैतिकता
षडस्त्र	षड्-रस
अष्टास्त्र	अष्ट-सिद्धियाँ
कमण्डलु	पवित्रता, तीर्थ
स्रुक्, स्रुव	तृप्ति, यश
दर्वि, तर्दू, व्यञ्जन-पचनी (कटाह-भेद)	तृप्ति, पोषण
मृग	मन
कूर्म	आधार-शक्ति
वृक्ष	रक्षा, आराम
डमरु	प्रतिध्वनि, अक्षर, सब-नाद
भुशुण्डी, परिघ	विकर्षण-शक्ति
शतघ्नी	महा नाद, अन्तर्लीन-क्रिया
रथ	परिवर्तन-शील
सिहासन	राष्ट्र साम्राज्य, नायकत्व
शूर्प, मार्जनी	लक्ष्मी-नाश

वस्तु	निधान
मयूर	चैतन्य
चैत्य	चित्त
सिंह	महत्त्व, नृपत्व, ज्ञान
गौः (धेनु)	पृथ्वी, लोक-लोकान्तर
वृषभ	धर्म
वानर	कुण्डलिनी शक्ति, साहस, उत्साह
हस्ती	आधार-शक्ति, वैभव, राज-चिह्न
अश्व	वेग-शक्ति, तेज, किरण
ऋक्ष	भूचर-शक्ति
मकर	जलचर-शक्ति
गरुड़	खेचर-शक्ति
शुक	वाग्मिता-शक्ति
शिवा	धी - शक्ति, बुद्धि
द्विप (गज)	योग-शक्ति
व्याघ्र	अष्टाङ्ग-योग
वराह	आधार-शक्ति
महिष	काल, लय-शक्ति
मत्स्य	सगुण
शव	अचर, जड़, ब्रह्म
श्मशान	शून्याकारी, तेज -पुञ्ज, केवल-प्रकाश
दन्त	सत्व गुण
घोर-दंष्ट्रा	केवल सत्व गुण
मिलित-दन्त	प्रपञ्चात्मक सत्व गुण
कृष्ण-दन्त	तमोगुण
जिह्वा	रजोगुण, षड्-रस, स्वाद
मुण्ड	बुद्धि, विवेक, ज्ञान
कर्ण	श्रुति, श्रवण-शक्ति, नाद
नेत्र	संसार, दृष्टि, ईक्षण-शक्ति, बिन्दु
त्रिनेत्र	बिन्दु-त्रय, सूर्येन्द्वग्नि—त्रय-प्रकाश
युवावस्था	स्थिति-कला, अनुग्रह-कला, अन्तर्लीन कला
बाल्यावस्था	सृष्टि-कला
वृद्धावस्था	अन्तर्लीन-कला, संहार-कला
रजस्वलावस्था	अनुग्रह-कला, विश्व-सोम
हस्त	आत्मा, कर्म

वस्तु	निद्राल
कर-मेखला	अन्तर्लीन-कला
किङ्किणी	नाद-ब्रह्म
तुङ्ग-कुच	पोषक, पालक, स्थिति-कला
कुच-भर-नति	कुल-कुण्डली, संहार-कला, मोक्षदा, मोचिका
ध्वज	राज-चिह्न, राष्ट्र, रजोगुण
यम-दण्ड	मृत्यु, काल, संहार-कला
अग्नि-ज्वाला	प्रकाश
दण्ड	शासन, राज-चिह्न
वज्र	ऐन्द्र-पात
छत्र	राज-चिह्न, रजोगुण, व्यापकता
चामर	राज-चिह्न, रजोगुण, पञ्च-प्राण
कर्तरी	अभय, विद्वेषण
पुष्प-माला	लक्ष्मी
मुद्गर	ज्ञान, वैराग्य
नदी	वैराग्य, ब्रह्म-ज्ञान
चक्र	संसार-चक्र, रक्षा
पर्वत	आधार-शक्ति, प्रचुरता
तर्जन	सावधान
कुक्कुट	वशीकरण-शक्ति
कुक्कुर	नैतिकता
षडस्र	षड्-रस
अष्टास्र	अष्ट-सिद्धियाँ
कमण्डलु	पवित्रता, तीर्थ
स्रुक्, स्रुव	तृप्ति, यश
दर्वि, तर्दु, व्यञ्जन-पचनी (कटाह-भेद)	तृप्ति, पोषण
मृग	मन
कूर्म	आधार-शक्ति
वृक्ष	रक्षा, आराम:
डमरु	प्रतिध्वनि, अक्षर, सर्व-नाद
भुशुण्डी, परिघ	विकर्षण-शक्ति
शतघ्नी	महा-नाद, अन्तर्लीन-क्रिया
रथ	परिवर्तन-शील
सिंहासन	राष्ट्र, साम्राज्य, नायकत्व
शूर्प, मार्जनी	लक्ष्मी-नाश

वस्तु	निदान
दध्यक्षत	सौभाग्य
माष-भक्त	ग्रह-शान्ति
कज्जल	मोहन
वसु-पात्र	लक्ष्मी, सौभाग्य
आदर्श	श्री, कान्ति
धान्य-मंजरी	पोषण
मूषिक	सर्वांग-शक्ति
उलूक	वैभव, ध्यान
सपरीत-रतासन	पूर्वाम्नाय-सूचक, सर्ग-प्रवृत्त शिव-शक्त्यात्मक ब्रह्म
विपरीत-रतासन	दक्षिणाम्नाय-सूचक, स्थिति-प्रवृत्तोक्त ब्रह्म
मृगादिक-रतासन	पश्चिमाम्नाय-सूचक, संहार-प्रवृत्तोक्त ब्रह्म
ताण्डव-रतासन	उत्तराम्नाय-सूचक, अन्तर्लय प्रवृत्तोक्त ब्रह्म
चणकाकृति-रतासन	ऊर्ध्वाम्नाय-सूचक, अनग्रह-रूपोक्त ब्रह्म
चुम्बनादि रतासन	अधराम्नाय-सूचक, विश्रान्ति-रूपोक्त ब्रह्म

जिस प्रकार आज शक्ति के प्रमाण को जानने के लिये अश्व-शक्ति (हॉर्स पावर) का व्यवहार किया जाता है, उसी प्रकार ऋषियों को आर्ष-पद्धति में 'हस्त' (हाथ) को आत्म-बल और अकर्म-बल का प्रमाण माना जाता है। इसी प्रकार विद्युत्-तेज का प्रमाण जानने के लिए सिक्थ दीप (कैण्डल पावर) का व्यवहार किया जाता है, तद्वत् आर्ष पद्धति में 'शिर और मुख' बुद्धि, विवेक तथा विचार के प्रमाण-सूचक हैं। जिस-जिस जीव के जितने और जैसे हाथ, शिर और मुख होते हैं, उन्हीं के निदानानुसार उसकी बुद्धि, रूप और शक्ति का प्रमाण होता है।

'मन्त्र-विद्या' एक गोपनीय विद्या रही है और उसकी गोपनीयता इसी प्रकार के निदानात्मक संकेतों में निहित है। इन संकेतों के विस्तृत शोध की आवश्यकता है। यहाँ दिए विवरण से जिज्ञासुओं को यदि कुछ भी उद्‌बोधन प्राप्त हो सका, तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे।